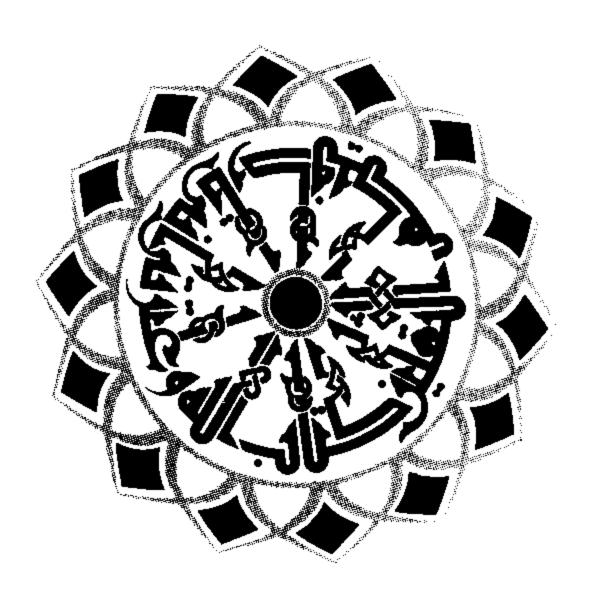
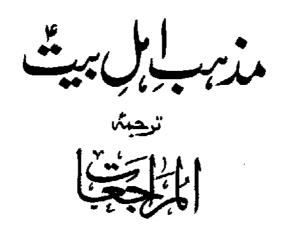
آیت الله عبد الحبین شرف الدین موسوی

مرس ایال برد



مَجْمَع بَجَهْإِلَىٰ الْمَالِيٰ الْمُ

4



تالىيەن آيىت اللەي ئىرىنىڭ لدىن ئۇمۇى قدىل ئىدىسۇ

يتصح اذوكط بؤعات



| ¥ 61 | نام کتاب |
|---|--|
| سيال بيت | ۱ · بولف |
| آیت الله عبدالحسین شرف الدین موسوی | |
| مولانا سيد محمد باقراً صدر الا فاض ل | ترجم |
| مجنع جمان الل بيت | اثر ــــــــــــــــــــــــــــــــــــ |
| ذی الحجه ۱۹۹۳ یون ۱۹۹۳ و | أرتخ اشاعت |

جمله حقوق تجق ِناشر محفوظ ہیں



| 44 | پیشرافظ۔ |
|--------|--|
| 44 (| عالبينات يخسل البشرى دعالم المسنت مح مختفر طالات زنر كو عالبينات بين سيام البشرى دعالم المسنت مح مختفر طالات زنر كو |
| گن ۲۸ | عاليهناب، قائي ببارع الحبين سنو الدين مودى كالمفضوالة فنع |
| ۳٠ | <u> </u> |
| ای ۳۰۰ | شام كي أبك معزز عالم دين علامه شيخ مخدناجي غفري كالمتويك |
| ۳۱ | ان بى عالم دىن كا دوسرا كاتوب كرا بى - |
| ۳۲ | مولامات موصوت كالميسرا كمتوب كراى |
| ٣٣ | مجة الاسلام علامشيخ محرّبين المظفركا مكنوب كاى |
| ro | مکتوب بخبرا |
| ۳٧ | ساظره کی ام ازست |
| ٣٨ | جواب کنزب |

| ٨٣ | 🔾 — مِناظره کی اجازیت ۔ |
|-----|---|
| ٣4 | 🦳 ــــــــ مكنؤب نمبســـر۲- |
| 44 | سنيديمي حفزات المنت كاسلك كيون بني |
| | احتيار كرييه بم |
| ۴. | 🔾 ـــــــ انحاد واتفاق کی صرورست ۔ |
| ۲. | انحاد واتفاق کی صرورت ۔ انجا دمہور اہلسنت کا مذہب اختیار کرنے ہی ہے |
| | ہوسکتاہے۔ |
| 41 | 🔾 ــــ جواب مکتوب ۔ |
| ۱۶ | جواب مکتوب ۔ شرعی دلیلیں مجبور کرنی ہیں کہ ذریب المبییت کو اختیار |
| | _ , , / |
| 4. | کیا جائے۔ ہو المہسنت کا مسلک اختیار کرنے کی کوئی دلین نہیں تی سے جہو المہسنت کا مسلک اختیار کرنے کی کوئی دلین نہیں تا |
| 44 | بہلے زمانے کے لوگ جمہور کے مذہب کو جانتے ہی |
| | · / |
| 64 | اجتماد کا در وازه اب بھی کھلا ہواہے۔ احماد کی سان صورت یہ ہے کہ مذمرب المہببت کو |
| 40 | - اتحاد کاسان صورست یہ ہے کہ مذمب المبیت کو |
| | معنبر تمجيا مائے۔ |
| ٨٨ | ر مکتوب نمب م ^۳ |
| 4 ک | جواب مكتوب - |
| ~9 | اتباع المبين ك وجوب براكي الكى مى دوستى د |
| ۵٠ | - اميرالمؤنين كادون دينا ندسب اللبين كي طرف. |
| 4 | — امام زين العابدين كاارسشاد گرای . |
| · | |

| ۵۸ | مکتوب نمبرم |
|------------|--|
| ۸۵ | كلام مجيديا احاً رسيث بيريرس دليل كي خوامش. |
| a 9 | ر جواب مکتوب . |
| 4 | ہماری تخریر برعور نہیں کیا گیا . |
| 29 | حديثِ ثقلين ـ |
| 4 W | عديث ثقلين كامتواتر مونا- |
| 40 | جس نے المدین سے تماک زکیا اس کا گراہ ہونا . |
| 44 | المبيت كى مثال سفينه نوخ اور باسب حطّه كى باور |
| | وه اختلات في الدين سيم بجانب واليه ب. |
| 4 ^ | المبيت سے كون مراوي - |
| ۷. | المبيث كوسفينة نوع أورباب عطر سي كبون نشبيه |
| | رىگئ- |
| 44 | مكتوب منبره. |
| 4 س | 🗀 ــــ مزيدنفسوس كي خوام مشس - |
| 44 | جواب مكتوب |
| 44 | نصوص کا محنقرسا نذکرہ ۔ |
| 40 | مکتوب نمب و |
| A 4 | ہماری تحریرانلہارِ بیندیدگی. |
| ۸۵ | حيرت و د مشت كه ندكوره اما ديث اورهمبوركي روثن |
| | كواكيب كيونكركيا جائے؟ |
| ΑЧ | كلام مجيد سے ادلّه كى خوامش - |
| | |

| A 4 | جواب مکتوب . |
|----------------|---|
| A 4 | ○ كلام مجبيـد سے دلائل . |
| 114 | ⊃۔۔ مکتونب منب۔ ۷۔ |
| (14 | ─— جواب مكتوب. |
| \ / ' • | مکنوب منبسد ۸ |
| 141 | → جواب مكتوب |
| | الهند: |
| IFI | —— ابان بن تغلب بن رباح فارى كونى. |
| (4) | ابراميم بن يزيد بن عرد بن اسود بن عرد تخفي كوفي ـ |
| 144 | — احمد بن مفضل ابن كو نَ حفزي - |
| 144 | اسماعیل بن ابان ۔ |
| ırr | ← اسماعبل بن خليفه ملائي کونی ۔ |
| 1 km | ← اسماعيل بن ذكريا خلقا ل كوفي ـ |
| irr | —— اسماعيل بن عباد بن عباس طالعاني ـ |
| ی ۱۲۴ | - بمماعيل بن عبدالرحن بن الى كرييمت بهورمعنس جومد |
| | کے نام سے شہرت دکھنے ہیں۔ |
| (74 | اسماعیل بن موسی فراری کونی ۔ |
| 11- | ن ا |
| 140 | ر ــــ تليرن ليان كوني . |
| ,. | ث : |
| (P 4 | ثابسندبن دینار |
| 11 ' | • |

•

| PY | → توبربن إلى فاحنسنسه. |
|-----------------|--|
| | · ट |
| (۲4 | 🔾 — جابرىن يز يەجىھى كو تى - |
| 146 | → جـــرين عبدالميد مني كوني - |
| ٤٧٤ | جعفر بن زیاد اثمر کو نی به |
| [YA | - حعفر بن سليان صنعي بقري - |
| 4YA | — جميع بن عميره بن ثعلبه كوني تنبي |
| 14.v | ر — عارمن بن حصیره کو بی . |
| 1 /4 ··· | 🥏 ــــ حاريث بن عبدالشُّد ممداني - |
| 1 79 | حبيب بن ابي ابت امدي . |
| 179 | — مسن بن حق - |
| 18. | علم بن عننيه كونى - |
| 1944 | حماد بن عيبني به |
| 114. | حمران بن اعين - |
| | ت خ: |
| 14. | خالدىن مخلەقطوانى كو بىٰ - |
| · | <u>ن</u> : ز |
| [m] | تربيب ماريث بن عبد الكريم كوني. |
| ۱۲۰ ۱۳۱ | زيد بن الحباب كوفي نميمي. زيد بن الحباب كوفي نميمي. |
| [F ' | س: س: |
| l sali | لم بن ابی الجعد الشجعی کو فی - |
| (Ini | - 0,0, 10,0, |

| 144 | سالم بن ابی حفصہ عملی کونی - |
|---------|--|
| 144 | سعد من طربیت الاسکاف حنظلی کونی . |
| 144 | سعبد بن استوع - |
| IPP | سعيد بن خينتم- |
| ١٣٣ | سلمة بن الفضل المابرش . |
| المالما | سلمين كهيب لبن عقيين حفزى - |
| 144 | 🔾 — سيليان بن مرد خزاعي كونى - |
| الدلر | سيلمان بن طرخان تنبي تصري - |
| 144 | سيمان بن قرم بن معاذ صبى كونى |
| مهاسم ا | سلیان بن بهران کالی کونی مشهور ساعمش |
| | ش : |
| 114 | تاصى شركيب بن عبدالمترين سنان بن الن تخنى كوفى - |
| 144 | شعبه بن حجأج عنهي - |
| | <i>ص</i> : |
| 114 | 🔾 ـــــ صعصعه بن صومان بن مجر بن مارسند عبدی |
| | ظ: |
| 141 | —— ظالم <i>بن عروبن سفيان ابوا</i> لاسود دۇلى - |
| | ع : |
| ۱۴۲ | ابوالطفيل عامر بن والكه بن عبدالله بن عمرو اللبتي- |
| lám | عبادبن ميفوب الاسدى - |
| 144 | 🥏 ــــــ ابوعبدار حن عبدانتدین داو که بهدانی کوفی |

| ١ ډره | عبدالندىن مىشداد . |
|-------------|--|
| 144 | _ عبدالتُّد بن عمر مشهور به شكدانه . |
| ነ ሉሲ | عبدالله مبيعة فاحنى وعالم مصر- |
| 100 | عبدالله بن ميمون قداع صحابي أمام حبفه صادق - |
| ١٣٥ | الومحدعبدالرحمن بن صالح أزدى . أ |
| 144 | · عبدالرزاق بن همام بن نافع حميري - |
| 14- | عبدالملك بن اعبين . |
| já • | عبدالله من عبسي كوفي |
| 141 | 🥏 ــــــ ابواليفطان عثمان بن عمير تفغي كوني تجلي - |
| 101 | عدى بن ثابت كونى |
| IDY | عطبه بن سعد بن جياده عولى . |
| (55 | 🔾 ــــــ علاربن ما لى نيمى كونى - |
| 147 | علفمەن غىس بن عبدالىتەنخنى |
| (05 | على بن مديميه |
| 164 | → الوالحن على بن جعد جوم رى بغدادى |
| 100 | على بن زيد بن عبدالتُدنني تجرى |
| 100 | على بن مالح |
| (0.0 | 🔾 — ابریجیلی علی بن غراب فیزاری کو نی |
| P &) | 🔾 ــــــ الوالحن على بن قاوم خراعي كو ني |
| וא | ○ على بن منڌريطرائغي' _ |
| 104 | 🔾 ـــــــ ابوالحن على بن أسمم بن بريد كو ني |
| | • |

| 104 | عاربن ذرین کونی |
|-------|--|
| 104 | عمارين معاويه |
| 101 | ابواسسحاق عروبن عبدانشد مهلان کونی |
| 104 | الويهل عوف ابن الي جبله البصري - |
| | ن : ر |
| 109 | 🔾 — فضل بن وکین |
| 14+ | الرعب والرحن فضيل بن مرزون. |
| [4] | 🔾 فطربن فليفيه خناط كوفي. |
| | هم: |
| 141 | هم: الوغسان مالک بن اسماعیل بن زباد بن درسم کوفی۔ |
| 144 | محدين خازم. |
| 144 | محدين خازم · محدين خازم · محدين عبدالله شيث الورئ تهور به امام ما كم ، |
| 144 | — |
| MM | · ابوعبدالرحمٰن محربن نضيل مِن غروان كو في - |
| 146 | محدين سلم بن طائفي - |
| ly p' | محدین موسیٰ بن عبدانندانغطری المدنی- |
| (44 | — معاویه بن عمار دین به کونی. |
| 140 | — معرد من بن خراد و کرخی . |
| 144 | — منصور من المعترين عبدالتذبن رسبعيكو في |
| {44 | منهال بن عمره تابعی |
| 144 | — موسیٰ بن فتیں حضری |
| | , |

| | ုပ |
|------------|--|
| 144 | 🔾 — الوواؤ دلفينع بن حارست شخعي كوني ـ |
| 144 | · نوح بن قيس بن رباح الحدالي - |
| | هر: |
| 144 | بارون بن سعد عجلی کونی - |
| NFI. | — ابوعلی ہاستم من بربد کو فی ۔ |
| API | 🔾 سبيرهٔ بن برنيم حميري - |
| łav | ابوالمغذام مثالم بن زيا دبهرى - |
| 144 | 🔾 ــــ ابوالولېدراشام ئن عمارىن نغىيرىن مىيسرە - |
| 44 | هشیم بن سشیر بن قاسم بن دینارسسلمی واسطی به |
| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| 149 | ھے: ص — وکیع بن صب ان بن ملح بن عدی - |
| | : 65 |
| 14. | 🔾 — يىپى بن حبسىۋارىرى كونى - |
| 14- | يخيىٰ بن سعيد قطان |
| 14. | 🦳 — يزيدېن ابي زياد کوني . |
| 141 | 🦳 — ابوعبدالتُدجد لي- |
| 164 | ○ مكۈب،ئىب، و |
| 160 | جوابِ مكتو <i>ب</i> . |
| 144 | ○ مكتوب نمىيسىر ١٠ |
| { | باب دوم |
| | , |

| 144 | امامىن عامىيى خلانىت بېنىر- |
|-------|---|
| 144 | ن جواب مکنوب - |
| 149 (| 🔾 ـــ دعوست عشيره كے موقع برسینيم كاخلانسنداميلونير |
| | بريض فرمانا - |
| JA1 | بیس فرمایا - سینمبسطندگی اس نفس کا تذکره کن کن کمتابوں بیس |
| | موجود سبے - |
| 144 | ر — مکتوب منب براا |
| IAM | 🔾 — حديث مذكوره بالاكى سسندىيى تردّد - |
| IAD | ر — جواب مکتوب . |
| 140 | نص کا ثبوست |
| '(A4 | نفس مي كبول اعرامن كميا ؟ |
| 144 | ر سے مکثوب نمب مر۱۲ |
| [/4 | 🥏 — مدیمیث کی صحبت کا اقرار |
| 144 | |
| | جوبكر ديوسن عشره والى مدست مرتوانزكونهي المسترال ميخ نهبي زياده بهنجى أسس يداس ساستدال ميخ نهبي زياده سركها ماسكتاب كرمضوص فتم كى خلافت |
| | سے زیادہ برکہا ماسکتابے کہ محضوص فنم کی خلافت |
| | تابت ہونی ہے۔ |
| | . |
| 19 • | - يە حدىيث منسوخ ہوگئى تقى - |
| (4. | O — جواب کمتوب · |
| 14. | - اس مدیث سے استدلال کرنے کی وجہ۔ |
| 191 | - مخصوص خلا سنت كاكو كى بھى قائل بنہيں - |
| | |

| | ··· |
|-------|--|
| 39 1 | حدیث کانسوخ مونانا ممکن ہے۔ |
| 19 4 | مکنوب نمنیسر۱۳۰ |
| 191 | جواب مکتوب . |
| 191 | ص حضرت على كى كسس اليى فضيلتين جس ميس كى كو كى |
| | ایک بھی کسی دوسرے کوحاصل نہیں اور جس سے آب |
| | کی خلامنٹ کی صراحت ہوری ہے ۔ |
| 144 | اس حديث سے شوت خلافت امبرالمؤمنين أ |
| 4.14 | ر سے مکنوب تمب سرم۱ |
| 4.5 | جراب كمنوب - |
| 4.14 | مدریف مزدلت صبح تر ین مدیث ہے۔ |
| 7-0 | اسس کی صحبت بر دلائل مجی موجود ہیں - |
| 4.0 | وه علمائے المسنت حضوں نے اس مدیث کی روایت |
| | کی ہے۔ |
| 411 | ے ۔۔۔ آمدی کے شکے کرنے کی وجہ۔ |
| ץו ץ | ر — مکتوب نمب د ۵، |
| rir | سندحدمیث کی صحبت کا ا قرار - |
| ķir | عوم مديث منزلت بين شك |
| yım | _ اس مدریث کے حجتت ہونے میں شک، |
| \$11¢ | ر — جواب مکتوب . |
| ric | - عرب کے ال زبان عموم مدسیث کے قائل ہیں - |
| 110 | - اس کا ٹوست کر مدیث کسی مورد کے ساتھ مخصوص نہیں - |
| | |

| | ······································ |
|------|---|
| 416 | أسس قول كى تردىد كەپ مارىيىت مجيست بېيى . |
| KIV | → مکتوب نمبر۱۹ |
| AIA | مدریث منزلت دمقامات - |
| 414 | جواب مكتوب . |
| 414 | مجلهمقامات مدريث منزلت ملاقات أرسيم ب. |
| YYA | → مكتوب للبرى |
| 444 | جواب مكتوب ـ |
| *** | ○ يوم سنبروشبيرومبشر |
| 444 | يوم مواخات |
| 424 | <i>سترِ أبواب -</i> |
| 44/4 | ر — مکتوب ننب د ۱۸ |
| 46,4 | ← جواب مکتوب - |
| 742 | → مکتوب منبسر ۱۹ |
| YOF | ○ جواب مكتوب . |
| 104 | ر مکتوب نمب مرب |
| 401 | ر — جواب مكتوب- |
| 744 | — مکتوب نمبرا۲ |
| 4414 | جواب مكتوب ـ |
| 444 | علامه زمخنشری کا نکتهٔ |
| 444 | ایک اور لطیف کننه |
| 144 | مکتوب نبسسر۲۲ |

| 444 | يېال آميت دلالت كرتى ہے كه ولى سے دوسىن يا |
|---------|--|
| | المی چیسے معنی مراوبیں - |
| 74. | ر — جواب کمتوب . |
| ۲4. | جواب مكتوب و جواب مكتوب و جواب مكتوب و التي تعليظ و التي تعليظ و التي التي التي التي التي التي التي التي |
| Y4¥ - | بسيان أيت ادله محد مقاطع من كو بي المهبت نهيس كفنا |
| 424 | رے مکتوب نمب رسرہ اللہ مراد آئیت میں نادیں عزوری ہے تاکہ سعت برآئے |
| y 41.4° | مراد آبیت مین نادی هزوری ب ناکستند برآیخ |
| | ر آسیکے ۔ |
| 420 | ○— جواب كمنتوب . |
| 466 | جواب مكتوب. سلعن كاأحترام مستلزم نهين كه آيت كمعني بين |
| | تاویل کی مبائے : نادیل ہو تھی کہا سکتی ہے۔ |
| 744 | ر ـــــ مکتوب نمیب ۱۲۴۸ |
| 444 | ○ — جواب كننوب. |
| ۱۱۲ | → مکتوب نمب ۸۵ |
| ان ۳ | امیرالمومنین کے فضائل کا عترات ۔ |
| rim | فضائل سننازم خلافت نهبین - |
| بما إسا | ○ جواب مكتوب ـ |
| بهايم | - إميرالمومين كوفضائل سے آب كى خلانت برامندلال. |
| 711 | ○ — مكتوب نمنب ۲۲ |
| ٨١٨ | 🔾 صحابے فضائل کی حدیثیوں سے معارضہ ۔ |
| MIX | 🔾 — جواب کمتوب ۔ |
| | · |

| MIV | دعوائے معارصنہ کی رد۔ |
|-------------|---|
| rri | مكتوب منب ر٧٤ - |
| 441 | حديث فدير كى باست استفسار |
| ۳۲I | ○ جواب مکتوب ـ |
| 474 | ○ — مكتوب منب مهرم. |
| haha | ○ جواب مكنوب . |
| PP4 | حدیث غدیر کا توانز اور اکسس کی غیر معمولی انہیست. |
| 7 44 | ر سے مکتوب نمب۔۔۔۔ ۲۹ |
| ran | ے مدیث غدیر کی ناویل <i>پر</i> قربنہ |
| ۹ ۵۳ | جواب مكنوب. |
| ra 9 | 🔾 جدست غدیر کی ناویل ممکن نهبیں . |
| 444 | ○ مكنوب منبسر.۳ |
| 444 | → حن كابول بالا - |
| r49 | ○ جواب مكتوب - |
| 260 | → مكتؤب نمب دا٣ |
| 464 | شبول كے سلسلہ سے نصوص كي خوابش. |
| 444 | ر ــــ جواب مکتوب - |
| 444 | مکتوب منب روس |
| 444 | - سنيعون كى مدريث محبت بنبين الرب مديثين صحيح بي تو |
| | المسنست نے کیوں نہیں ان کی روایت کی ۔ مزبدِنفوص |
| | ذكر فرما يين |
| | |

| 498V | جواب مكتوب . |
|--------------|--|
| 4 | مكنؤب تمنير ١٣١٣ |
| ۲. | ← جواب مکتوب ـ |
| 4 | — على وارس <u>ث</u> سغيب م |
| 4.4 | → مکتوب نمب ر۱۳ |
| 4.4 | بخصيت وهبيئت - |
| 4.4 | ← جواب مكتوب. |
| 4.4 | امیرالمومنین کے وصی بینی اس سونے کے منعلن |
| | بيغم شرك ارسشادات. |
| لر ا بر | مكتوب نمب م |
| 419 | ر ــــ جواب مكتوب. |
| ساسو ئح | ○ مکنوب نمب ۱۲۷ |
| 4mm | —— انصنل ازواج٠ |
| 44.84 | جواب مکتوب |
| الماسال | جناب عائشه انصنل ازواج سبی نه تعیس · |
| ه۳۶ | 🔾 ــــــ جِناب مدیج بتمام ازواج میں انصل ہیں . |
| 6,4,4 | O — مكتوب منبسد، m |
| LLV | ر ــــ جواب مكتوب |
| 444 | — معزست عائشہ سے اعراض کی وہے۔ |
| 440 | - عقل بتان ب كرسني برائية وصيت فرمائ. |
| 444 | 🔾 عاكشه كادعوى معارض بيد ديگر اماد ميث سے . |
| | |

| r4. | ○ ــــ مكتوب نمبسر ٢٨٨ |
|--------------|--|
| 40. | حضرت عائشه ابی مدیول بس مذباست سے کام |
| • | ز کنتر مختصور |
| MAI - | مدین بین بین . حن د نبع المسنست کے بہاں عقلی نہیں مشرعی ہیں دعویٰ عائشہ کے معارض کوئی صدیث نہیں ۔ |
| 401 | دعویٰ عائث، کے معارض کوئی مدیث نہیں۔ |
| 404 | ○ جواب مكتوب - |
| رنا ۲۵۲ | - عائشه كار وابت مديث بي عد بات مجور |
| ('6 Y | · س حسن وقبع کے عقلی ہونے کا ثبوست ، |
| 600 | —— |
| 444 | المّسلم كي حديث مقدم بع حصرت عائشهر |
| 446 | - مكتوب منسيد ٣٩ أ |
| 446 | · جناب المسلمه كي مدسيث كونز جي كيونكر- |
| 444 | 🤾 — جواب بمكتوب . |
| 444 | - جناب أم سلم كى مديث ك مقدم وادج بون |
| | کاساب- |
| 424 | ○ مكتوب نمب، بم |
| 4.50 | ○— اجماع وِمْلانت |
| 444 | ○ — جواب مِكتوب. |
| لادم | ← اجماع ہوا ہی نہیں۔ |
| 444 | O مكتوب نمب مراه |
| MAM | اختلافات ختم ہونے کے بعد اجماع منعقد ہوگیا۔ |
| | |

| 444 | جواب مكتوب |
|-------|---|
| 404 | ر سه مکتوسی نمب بر ۲۲ |
| 490 | جواب مکتوب ۔ |
| 4.6 | ر سه مکتوب ننب رسام |
| 4.4 | دەمغامات جہاں صحابے ارشادات پیریر کی |
| | مخالغسىنىدكى . |
| 4.4 | ر ــــ جواب مكتوب . |
| 4.6 | ر وانعه قرطاس |
| 516 | بينبيرسف زبروستى فرشنه كالمركبون نبين لحالا |
| 414 | → مکتوب نمب ریم |
| 414 | ے۔۔۔ وافغہ قرطاس پر عذر ومعذرست۔ |
| .4 11 | ← جواب مگتوب۔ |
| sti | عذر ومعذرست صيح نبين - |
| 589 | ر سے مکتوب نبر ۵۸ |
| 279 | عذرومعدرت كلنوجوك كااعترات بقيه |
| | موار د کے متعلق اسستنفتار |
| ۵۳۰ | ر سے جواب مکتوب ۔ |
| 25. | — مِیش اسیامہ |
| 229 | ے۔۔۔ مکتوب نمب۔ ۱۹۸ م |
| 6 mg | مربيرًاس مهين صحاب كن مائيك كى معذريت . |
| 241 | ر جواب مکتوب - |
| | |

| 449 | ○ سىرىسىسىر ٧٤ |
|-------------|---|
| <u>۵</u> ۴4 | ← جوابب مكتوب. |
| کو ۹۷۵ | |
| | قتل كرة الويا |
| 444 | ○ مکتوب نمبیر۸۸ |
| 404 | ← جوانب مكتوب |
| 444 | ○ مكتوب نمبسروم |
| 00 A | —— جواب _و مكتوب. |
| 444 | مقامات جهال صحاب نه عکم سپنی سرینل دکیا- |
| 411 | ○— مكتوب ننبسه. ۵ |
| 441 | () — معابر كامصلحت كومنقدم مجبنا . |
| ayr | باتی موارد کی تصریح برا مرار |
| 444 | ○ — جواسبه مکتوب . |
| AHY | موصوع مجست سے اہر ہوجانا۔ |
| 444 | مکتوب نسب اه |
| کی ۵۲۹ | · · · · معزت علی انے بروز سقیغه اپنی خلانت وجانشینی |
| | احاديث مصاحنها جي يون زفرمايا . |
| 64- | ○ جواب مكتوب. |
| 44- | ○ — اخباج زكرنے كى وجوہ |
| ٥٤۴ | ○— مكتوب نمبر۵ |
| 54 | حضرست على شئے كب احتجاج فرما إ؟ |
| | , |

| 974 | ر جواب مکنوب ، |
|--------|---------------------------------------|
| 0 6 N | حصرت علي اور آپ کے شیعہ کا احتماع ۔ |
| DAY | جناب بسيّده كااحنباج - |
| 444 | ر سه مکنوب نیسب ۲۵ |
| 440 | ر — جواب مکتوب. |
| 6 A 8' | — عبدالش <i>د بن عباس كا احتباع -</i> |
| 041 | ر ـــه مکتوب نمبر ۲۹ ۵ |
| 491 | ر — جواب مکتوب |
| 4.4 | ر ــــ مکتوب منسب ر ۵۵ |
| 41- | ← جواب مکتوب. |
| 41+ | مدمهب شبعه کا المببیت سے ماخوذ ہونا۔ |
| 411 | —— تفنيف وناليست كالبندا شبول سيهول· |
| 424 | ر سکتوب نبسسره ۵ |
| 442 | ○ جواب کمتوب |
| | |

د است او دروازهٔ شهسبرعلوم زیرمِن مانش حمب از ومین وروم سر

آپ کی ذات تمام علوم کے شہر کا دروازہ ہے اور ان کے زیرمسندمان حجاز و چین و روم سمایت ہیں

بيم التالزيني

پيش لفظ

شہرہ آفاق کتاب " المراجعات " کا ترجم بیش فدمن ہے۔
یہ کتاب عربی ذبان ہیں لبنان اور ایران سے کئی مرسبہ جھیپ بہل ہے۔
او دو کا ترجہ بھی اب تک تقریباً بنن دفعہ جیب چکاہے ۔
سشیعہ دستی اختلافت براب تک بے انتہاکتا ہیں جھیب بی ہیں ایکن اس موضوع پر تخریر کی جانے والی کمتب ہیں سے یہ کتاب اپنے منفر د ایکن اس موضوع پر تخریر کی جانے والی کمتب ہیں سے یہ کتاب اپنے منفر د میبلی خصوصیات کی وجہ سے ایک خاص متفام رکھتی ہے ۔
میبلی خصوصیات کی وجہ سے ایک خاص متفام رکھتی ہے ۔
درمیان بہ خطو کتا بہت انجام بائی ہے ، مرقم کے دونوں فراحین و میت و میت ایک حصول کا جہر برطور کا میں اسلامی مقاصد ومصالے کے حصول کا جہر برطور کا لی موجو دہ ہے۔ امسین سلم برگزرنے والی دوئیدا درسے اشنا ہونے ہوئے عالم موجو دہ ہے۔ امسین سلم برگزرنے والی دوئیدا دسے اشنا ہونے ہوئے عالم

اسلام کے زبر دست مامی ہیں ان دولوں کا مقصد ہرگر نشیج شنی مجدت کوچیر ٹرنادر اس کے نتیجہ ہیں اتست کی صفوت ہیں اختلافات اور تفرقہ کے مواقع فراہم کرنا نہیں بلکرنہا بہت ہی شائست ماحول ہیں" فرسب اہلبیت "کوجھنا اور اسس سلسلہ ہیں موجود مغرض اور منعقب وجابل است او کی بید اکردہ فلط ہنیوں کا ازالہ ہے ،" فرم ہب المبدیت " برسے بڑے ہوئے ان پردوں کوسٹانا ہے جنیں معمن تنگ نظراور نفعت پر افزاد نے وال کرامسیم سلمہ کواس مکتب عظیم سے دور کیا ہے ۔

مسنی وشیبر دونوں ہی عالم دین ہسسلامی *رقع سے سرشا د*نظر آستے ہیں ج*ق برکسنی کا جو ہر کتا ب*ے مختلف حصوں میں بکٹرے قابل مشاہرہ کہیے۔ مھردونوں ہی اینے اپنے مکتبہ فکر ہیں صعب اوّل کے علمار ہیں سے ہیں ، اوراً پنے زمانہیں حرب ہے خرشار کیے جاتے تھے۔ اہلستیت کے محترم عسالم جناسب شخ سلیمالبشر**ی بین ح**وا بلسن**ت وا**لجاعسندگی بین الانوا می مرکزی علمی درسگاه مباسته الا دسریکشیخ اورمربراه بیر - دومری طرمند حصرسند ۲ بنه النّد بدرشرف الدین الموسوی ہیں جواس زمانے ہیں مشیوں کے سب سے برسعتى مركز بخعث الشرف مين صعب اول كاساتيد مين شارموت نفه. مناظره کی اکثر کستب میں مدال وخطاب کا رنگ غالب نظر آنا ہے جبکہ اس كتاب كامتيازات مي سايب به بدكريان يراكثر على وبرهاني روش استدلال کواختیار کیا گیا ہے ۔ آبست الله مرحوم کااستدلال معنبوط اور مستحكم اولديراستوارنظراماب مستلك كاختلافي وحساس مون ك باوجود ادب ومنقابل احترام كردائره مي رست بوسك نهايت شسندران ہسستنمال کی گئی ہے۔ تجرکیجایی سائل اور موضو عاست بھی مختلعت مناسبتوں سے زیجہ اسکے ہیں جو کلام کی یا دوسری کتابول میں کمتر پائے جاتے ہیں۔ مشکا آریخ اسلام میں شیعوں کا حقہ سیشیعدا صحاب روابیت کی ملمی خدمات اوران کاسٹی کمتب ومصادر میں تذکرہ ایسے موضوعات ہیں جم میں کم از کم اوروز بان میں بہت کم کم معا اور لولاگیا ہے۔

ان تمام خصوصیات اور بہت سی دو مری خوبیوں نے اس کتاب کی افادیت وابمیت میں خاطر خواہ اضا ذکرہ یا ہے جس کی وجہ سے یہ کتاب کا کم کام کی مختب میں سے شار کی جاتی ہے۔

کلام کی علمی کمتب میں سے شار کی جاتی ہے۔

کم نے اسے طباعیت کے زیورسے از مرنو اگر است تر رنے کی کوشش کی ہے۔ امرید ہے کہ حق کے متلاستیوں کے لیے مشعل راہ تابت ہوسکے گی۔

____ ئاشر



عالیجناب شیخ سلیم البنتری (عالم ابل سنّت کے مخصّر حالات زندگی

جنابشیخ سلیم البشری جو الکی مسلک رکھتے تھے مشکل جنا مطابق سیم اللہ مسلک کے تعصیر مسلک مسلک مسلک میں مسلک میں م میں صلی مجیز و کے محل بشریں بیلا ہوئے اور جاسعۃ الا زہر د قاہرہ مصر ، بیر تعسیم مامل کی ۔

بعدیں دو مرسبہ اس علیم الشان درسگاہ کے انجارج بھی قرار پاستے ۔ ابک دفندسکاسائی مطابق سنندولہ یہ سے مستعملہ چے مطابق س<u>نن ول</u>ی نکسب اور دومری دفتر مختصلہ چے مطابق سونولئ سے مصصلہ چے مطابق س<u>ان و ا</u>ی تک۔

آپ ہی کے زمانہ میں جامعۃ الا ذہریں تدرسیس کے فرائض انجام دینے کے خوام شمند محصر است کے بیا درکھی گئی جس میں کبڑست اہل علم نے مشرکست کی .

آئب ئے جامعۃ الا زہر کو بورے نظم ومنبط کے ساتھ میلایا اور انجاری

| ہونے کی حیثیبت سے جو قرم دار پال آسید برعا مُرتقین الفین درس و تدرسین |
|--|
| میں مائل نہونے دیا (بلکسٹیخ الجامد بوٹے کے ساتھ ساتھ طلب کو درس مجی |
| دية سي ا |
| اسب كى قلى نىڭارشات بېيىت بىن جن كا زيار ە حصە قدىم علما ركى تابو |
| یرحاشیرا درگفتارم قدم کے عنوان سے ہے ۔ مثلاً : ادب کے مومنوع ہر : حساحت یع قصفہ العلیاب لیشوے |
| - ادب كمومنوع بر: حامنسية تحفة الطلاب لشرح |
| رسالة الآداب. |
| قرید کے موضوع یر: حامثیة علی رسالة الشیخ علی۔ |
| 🔾 ــــ ادىب كىمۇخوع ير: شورح منهج المسبوده - |
| — علمُخُوكَ مُومُوع بر : الاسستشناس نى بىيات الاعلام و |
| اسماء الإحساس بجرس توى طالب |
| بریسٹ کی گئے ہے ادر بر (اتن اعلیٰ دومیہ |
| کی کتاب ہے کے ہاستة الاز هریں درسس د |
| <i>تدلیسیں کے سلسلیمیں اس ک</i> ٹاب پر مبہعت |
| زیارہ اعمار کیا گیا ہے۔ |
| جناب شيخ مليم العبشرى <u>نه مستس</u> لية مطابق سلنا قليثر مي دفات بإني أ |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| |



عالیبنائے فائے سیدعبدالحبین شرفالدین موسوی ہلارہ کے مخیقتر مالاست زندگی

(مناد نئیدهالم) جناب علام میده الحین نفرون الدین موسوی علبه الرحمة کاظین (عواق) بین منافع مطابق سل کلیت بین بیدا ہوئے کاظین اور نجعت استرون بین نئید مالم وین جناب استرون بین نئید مال کی اوراس زمانے کے انتہائی بلنده ترب عالم وین جناب آقائے شیخ محرکاظ المؤاسال (صاحب کوفایی) سے مشروب المدّد مالمل کیا ۔ مواق کی مرزمین پر فرانس کی مامراجی حکومت کے فلات انقلابی اقدامات میں مشروع ہوئے جن بین آب نے مثبت معتد بیا جس کی باد اس بین آب کے زماند میں مشروع ہوئے جن بین آب نے مثبت معتد بیا جس کی باد کا میں آب کے اس بنایہ میں کرد بیا میں آب کے اس بنایہ سے بنا میں تبین تبیت معلوط است مجی نفرا مش کرد ہے کے اور آب کو گرفت کی کوششش بھی کی گئی ۔

| اسموقع برآب مع مناسب مجاكدا بي وازكوتمام اسلامي ممالك تك |
|--|
| بہنجانے کے بیے سفر کریں ،چنانچہ آپ ڈسٹن تنظیمیت مے طفے اور وہاں سے |
| فلسطين اورمه کاررهٔ کها |
| اورم مربی میں اس زمانہ کے سینے الاز مرحباب شیخ ملیم البشری سے آپ کے سلسل مذاکر است ہوئے اور ان ہی ذاکر است کے نتیجے میں یہ کتاب ترمید ہائی۔ |
| كمسلسل مذاكرات موسے اوران بى فاكوات كے بتيے ميں بركتات زمنيا أنى- |
| مولاناسيم موصوصت مع منعدد موصوعاست برنها ببند جميني كتابين تحرير فراكي |
| بين بن يس سے چند يہ بين : |
| المسراحيعات (المنصول المهمه (اجوبة |
| مسائل موسى حبارالله ن الكلمة الخرار في تفضيراً للزهراء |
| المجالس المناخره (النص والاحب تهاد. |
| ن فلسفة الميشاق والولاية ن الوهسويره بغية |
| الساغبين (المسائل النتهيه (ثبت الانتبات |
| في سلسة السرواة - (الى المجسم العلمى العربي بدمشت. |
| رسائل ومسائل - رسالة كلامية |
| اوران کے علاوہ وہ بکٹرمت الیفات جنعیں دشمنان وہن وارب سے |
| نذراً تشركر ديا - |
| آب نےاس کے ساتھ ببست سے دین واجماعی منصوبے مجی سروع |
| کے کتے جن کے ذکر کا موتع منہیں۔ |
| اً قام منزون الدبن موموى ني من المايية مطابن من 190 مريد بي والمت |
| ىنىدىمانى - |
| |

کا با میخان علمائے اعلام کے مکتوبات شام کے ایک معزز عالم دین علامشنے محدناجی عفری کا مکتوب گرامی

ا مّا ئے محترم واستاذ مكرم أقائح شروف لدين عبدالحيين صاحب قبلدوام مجده قبله محمد م

قبلت تحترم! بین نے آپ کی کتاب المراجعات "کامطالعد کیا اوراسے ایک ایسی کتاب با جور کوشن و محکم دلائن و برابین سے الا مال ہے۔ برور دگار عالم آپ کو ہوری قوم کی طرف سے جوائے فیرد سے کہ آپ نے حاکمت و دانان اور دنیں لدکن اندازا ختیار مستمدمایا ہے۔

آگر کمچه دشواد پال اورمشکلاست مقرراه زیونتی تواسب بکس بی آپ کی فکست میں ماصر بهوکر دسست بوی کارشوے حاصل کردیکا جو تا لیکن امبدسے کرمہت جلد میں آپ کے چہر والورکی زبارست کی معاوست حاصل کرسکول گا۔

میں نے (آپ کا تاب بڑے سے کے بعد) پناسابی مدم سے منفی ترک

کردیا اورحفزسندا مام حبفرسادن علیهاستبام کے زمرب کوانننیار کر المیاب ۔
اکب سے التماس ہے کہ کوئی الیمی کتاب میرے بیے بھیمیں جس سے بین اس نمب کے احکام ومعارف سے پوری طرح واقعت ہوسکوں ۔
دانستام ومعارف سے پوری طرح واقعت ہوسکوں ۔
دانستام محدنا جی غفری (۸۱ صفر سنستالہ میر)

اکُ ہی عالم دین کا دوسرا کمتوبِ گرامی

بخدمت عاليمنا سب وقائ ببدع بدالحيبن سرون الدين صاحب وام مجده مسلام عليكم: مزاج سترتعيث! جناسب محتزم مترصت العربن صاحسب إآسب ذميرست فهربان وبإسبال ميرس دمثدادر داوحن وحراط منتقيم كمستهنيخ كاسب سع برا وسبار ثابست موے میں مصرت محدوا ل محد علیهم السلام کے دسیا سے بردردگارمالم کی بارگاہ یں وست بروعا ہول کہ آمیہ کا سابہ مومین کے سروں پر اوبرسلامیت رکھے کیونکہ ان کی سعادست وخیرخوابی آسیب کی ذاست والاصفاست سے وابستہ ہے۔ بین معاوندِ عالم کی قتم کھا کر کہنا ہوں کہ مجھے آج تکسب نہ آپ ہیسا کوئی عالم ملانهیں سے آمیب مبیلی منعامت رکھنے واسے کسی عالم کے بارسے میں شنا۔ آمیب البين مبداعلى مفرست دمول فداصلى لتدعلبه والدكوسيم كي مزيدسيت مغدسه كي طوست سے دفاع كريسي ميں اور و مخوف د گرا ، لوگس جوخت يريرو ، والنا جاہتے ميں ان كى ساز شول كوطنت ازام كردب بي اوران سكما عندايس محكم دليلي اوردوشن بران فائم كريسے بيں جن كانہ تو وہ كوئى جواسب دسے سكتے ہيں ۔۔ زان ولاكى

ے انکاد کی بہت کرسکتے ہیں (اور گوالیی روشن ولیلول کے بعد بھی) جونوگ ندیج حق کو قبول ندکر می اور حق و باطل میں اقدیاز ندکر می ان کے لیے بریم بی اور عذاب بقیبی ہے میر در درگارِ عالم آپ کو جزائے خیر دے (کد آپ نے حق کو آشکار کیا) واست الم محد نامی غفری ۔ حاربی اثنا فی سنستارہ

مولانات موصومت كانتيسر ككتوب كرامي

بخدست جناب آفائے میروبرالحیین نٹرف الدین موسوی دام مجدہ سلام علیہ ا جناب محترم !

میں آب کی واست والاصفاست پرفخ کرتا ہوں ۔میرا دل بلکمیرے مت م اعمنا روجوارح آب کی عظریت کے تصوّر سے مالا مال ہیں اور دنیا بھر کے الرعلم کے درمیان آپ کے نفنل ومٹرنٹ کا بھر لوراعترات کرتے ہیں ·

کیونکہ آپ نے اپنے قام مبادک سے بہت سی اقرام و ملل کوحیات نو مخبٹی اورمنلائست و گراہی کے اندھروں سے نکال کرایخیں ہایت کی روٹن سے مؤرکمیا اور بے وہ معینشند ہے جس کا انکار کرنے والا یا تو اپنی جہالت کے سبب انکار کرے گا یا ملہ بیت کی رکڑی اورعنادک بنار پر۔

اور دارالسلطنست میں بی*ن سے جنا* سب ۔۔۔۔۔۔۔ ملا تا ست کی۔ ادران سے مذاکراست مجی کیے ۔ وہ حفرت ... ہے .. . بہت بڑے فائن کے منصب پر فائز ہیں داور بہت زیادہ اثر ورسوخ کے مالک بھی ہیں) ہیں نے ان سے محمث ومباحثہ کیا تو محمدہ نعانی وہ لوری طرح سے مذہب من کی طومت مائن ہو گئے ہیں ۔

چنانچراکپ کی کتاب "المراجعات میں شدائ کی خدمسندیں پیش کر دی ہے جسے انھوں نے پڑھا اور آ ہب کے حیرت انگیز دلائل نے انھیں تعجیب و مسترست کے دوراہیے پرمپنجاویا۔

کیونکہ آپ ہے اپنے علم سے مجر ذخارا ورقلم کے شاہ کارسے ان کے ہیے اس امرکومتناز ونمایاں کردیا کہ دونوں راسستوں میں سے حق وصدا قسست کا راسستو کون سا ہے۔

> دانست لام - آب کامخلص محدناجی غفری - ۱۷ محرم مستئسسات

حجة الاسسلام علام مشيخ محسين المظفر كامكتوب رًا مي

مجابدملت حجة الاسلام على مربع بالحبين شرسف الدين واست بركات كانم... سلام مليكم ورحمة الشروبركات ا

آب كى ماعى جيله كومترق وغرب عالم مين جو پذيراني اورمتوليسند ومجوبت

ے بست خصیمی معالے کی بنا پر اسس جگر قامی کرکھا کام اوران سے متناق متندد بایش بوخط کے اپر بست بست متناق متناز م ا اور موجود تقین اس کتاب کی طباعت کے سو کے بر مذاب کردی تھی ہیں ۔ ماصل ہوئی ہے وہ لائق تعجب ہرگر بنہیں ہے کیونکہ آپ را و خدا کے ایک ا ہے مجا ہدا ورحق کا ایسا و خام کرنے والے ہیں جوعنوان حیاست سے مسلسل خدمست وین اور نھرست سے مسلسل خدمست دین اور نھرست سرا لمرسین مسل انٹرعلیہ وا کہو ہم کے خوگر ہیں۔
ایپ کو دین کی خدمست کرتے ہوئے ندکسی متم کی تسکان محکوسس ہوئی ہے تربیا بیانی ندر و د (ایک جہا و مسلسل کو آپ نے اپنی زندگی کا شعا ر بنار کھا ہے اور یہ وردگا دعالم کا وعدہ ہے کہ) :

والدنین حباد دوا دنین استهدینه مسبلنا دادرجونوگ به بماری رابول بین جهاد کرتے بین ان کے بیے بم اپنی وابول کو نمایال کرد بنتے بین) اور نیتینا ان مجابرین کو صراطِ مستقیم برجمام ون رکھتا ہے -اور مجھائی دن انتہائی مسترست ہوتی حبب ملب دشام سے شنخ محد کا مجھے خط موصول ہوا۔

مكتؤب نمبرا

میراسلام بوسربیست النفس عالم بزرگ جناب عبدالحیین شونالدین میوی ا دران برخداکی دحست دبرکسنت مو-

جناب عال بین را دگزشته بی شیعول کے اندرونی مسأل سے باخبر نہیں شیعول کے اندرونی مسأل سے باخبر نہیں مقا ور درجیے ان کے موکس ور نتار کی خبر متی کیونکہ میری ذکس کے ساتھ نشست ہی اور زان کے عوام اناس کے اندرونی مالاست کا بیں سے مائزہ نیا تھا۔ مصیر شوق تو تقا کہ میں ان کے بزرگان کی تقریب نوں لیکن عام پلکس سے میں مہین دورو با زان کے افکاراور آرار سے مجست کی اور زان کے نظر یاست بیں مرافلہ سند کی ۔

البترجب عداوندعالم نے مجھے یہ توفیق عطا کی کرمیں آب کے علوم ومعار کے مندر کے کنار میں بنچوں اور ساغ لبر منے سے اپنی پیابی بجھاؤں تو مجداللہ آب نے نہا بیت شیری پان سے مجھے سیاب کیا جمیری عامی شنگی کو دکور کیا اور علوم اللی کے مشہر حضرت مجمد صطفیٰ علیا لٹرعلیہ و اکہ وسلم اور باب مدینۃ العام حضرت علی مرتفیٰ عابیات لام جو آپ کے احداد کرام تھے ان کے معارفت سے مجھے اس طرح سیاب کیا کہ اس سے زیا دہ شیری جام کمی پیاسے کو نہ ملا ہوگا اور ذکمی بجیار کو ایسی شفا لی ہو گی جیسی شفا مجھے آب کے بجر فغارسے ملی ۔

میں لوگوں سے سنتار بہنا تھا کہ آپ شیعہ حطرات اپنے شنی تھا میوں سے ملنا پسند نہیں کرتے ان سے احتماب کرتے ہیں ، ننہا ل کولیسند کرتے ہیں اور ہمیشہ گوشد نشینی اختیار کیے دستے ہیںدراس سم کی بایش میں مناکرتا تھا۔

لین دب بین نے آپ کو دیجا تون بہ بالا کہ آپ انتہال کی طیعت اور
پاکیزہ مراج کے انسان ہیں بجسف و مباحثہ کی گہرائی تک اُتر نے ہی تبادل خیالا
کے ارزومندر ہے ہیں ، مناظرہ میں انتہالی توی اور میا در ہیں ، آپ کی گفتگو مہت پاکیزہ ، آپ کا سلوک بہت مٹر بغاز ، آپ سے لناق لائق نشکر اور آپ سے
گفتگو نہا میت لائق تحیین ہے ۔ اس لیے اب میری راسے یہ ہے کہ شیع چھزات
معفل کی خوست بواوراوب و تہذیب کی ارزوں کا مرکز ہیں ۔

مناظره كى امازىت

جناب عالی! اسب جبکہ میں آپ کے اونیا نوس علم کے سامل برگھڑا ہوں آپ سے اجازت طالب کرتا ہول کہ مجھے اس کی گہڑیکوں کس انز سے کا اور جوابر ظائل کرنے کا موقع عطا فرما ہیے۔ تواگر آپ نے مجھے اجازیت دی تو میں ان باریجیوں اور المجنوں کو آپ کی خدمت میں بیٹیں کروں گا جو مدمت ورازیے میں سینہ ہیں موجزن ہیں اور اگر آپ نے اجازیت زعطا فرمائی تو بھی آپ مختار کل ہیں کیونکہ میں جن باتوں کو بوجھنا جا ہتا ہوں ان ہیں نہ نؤ کسی لغزیشس کا طلب گار ہوں ذکسی بات کا بر وہ فاش کرنا جا بتنا ہوں ۔ نہ فننہ انگیزی برا مقصود ہے اور نہ اسس مسللہ میں کوئی بڑا اوا وہ رکھنا ہوں بلکہ ایک تلامش گفتدہ کی طرح ہیں اسس مسئلہ کو حل کرنا جا ہنا ہوں اور حقیقت کو بہجا ننا جا ان موں کی خرج میں اس مسئلہ کو حل کرنا جا ہنا ہوں کی بیروی کرنا جا جیے اور اگر موں موامعے توانسان کواک کی بیروی کرنا جا جیے اور اگر موں واضح میں ہوسکا تو میں شاع کے اس سیمر بھل بیرار ہوں گا کہ :

نحن بماعندنا وانت بماعندك

رامن والسبرأي مبختلعت

" أگرميد مهاري دايش مختفف مين ليكن أب اين نظريم

يرخوش ربي مماين مسلك بررا عنى ربي "

اگراکپ نے بحث کی امبازست دے دی تو بیں صرفت دومسائل ہر آئی سے داستے طلب کروں گا۔

منبرا - آب کے مرمب بیں امامت کی اصول اور فروعی حیثیت اور نمبر ۲ وہ عمومی امامت جوسے رست وسول اکرم صلی اللہ علیہ واکر کوسٹم کی مانٹینی کے طور برکسی کو حاصل ہوتی ہے ۔

یں اپنے سرخط کے افتدام ہر کوسنخط کی مگرس کھاکروں گا اور آب اپنے کوستخط کی مگر من لکھ دہا کیجے گا ۔ آخریں ہیں اپنی ممکند لعزشوں سے معذریت چاہتا ہوں۔

جواب ميكتوب

مناظره كى اجا رئست

عاليجناسب يشنخ الاسسلام دام مجده السسلام عليكم ورحمة الشروبركا ننه

آب کا مکنوب گرامی موصول ہوا ۔ آپ نے ضط کی شکل میں وہ نعست فراداں بھیمی اور میرے لیے ایسے نغیس فیالات کا اظہار کیا جن کاحق اواکرنے سے زبان قامرہے اور میں کے شکریے سے بیں زندگی تعبر عاجز ہموں ۔

آب نے اپنی ارزؤوں کو جو سے وابسند کھا اور بلند تو تعات قائم کی باہ کو ہے۔
جبدا ک ذات لوگوں کی امیدوں کا مرکز اوران کے افکار د نظریات کی بناہ گاہ
ہے جہال لوگوں کی امیدی آب سے وابست رہتی ہیں اوروہ آب کے وسع وعولین
دیلرزیرائز کر آب کے علم سے فیصنیا ہے ہوئے ہیں ، آب کے نفل ومٹر فت
کی بارس سے میرا ہوئے ہیں ، اس لیے مجھے امید ہے کہ میں بھی اپنی امیدوں
کی بارس سے میرا ہوئے ہیں ، اس لیے مجھے امید ہے کہ میں بھی اپنی امیدوں
میں کامیا ہے ہول گا اور جو تمنا بی میں نے وابست کر کھی ہیں وہ توی ایست ہولگ ایست ہولگ اور ایست کے بارے میں بات کی گفتگو فیصلا کن بھی ہوگی اور انشار اللہ آب جو کر کے دو مدل کے مطابق ہوگا۔
مکم فرائیں کے وہ مدل کے مطابق ہوگا۔

والستسلام

مكتؤب مبرا

شيعه عن السنت كاملكيون برامتباركية؟

مولانا ئے محترم! تسلیماست زاکسیاست!! اس کی دجہ آپ بتاسکتے ہیں کہ آخراک لوگسیمی دی ندمہ کیول نہیں اختیار کرلیتے ہوجہ ورسلین کا پذمہب ہے ؟

 سلعتِ صالحان عی اس کے باہندرہے اور اس کوسبتر وافضل سمعتے رہے۔ نیز ہر زمانداور سرخطہ ارمن کے جملے سالمانوں کا ندم ب بھی ہی رہا اور ب کے سب ان ائمترا ربعہ کی عدالسند ، اجتہاد ، زہر و ورع ، تفدس ورہ کارئ باکیر و بعنسی ، حسن میرسند اور علمی وعملی حبالاستِ قدر رہا بتدا سے ہے کہ آئے باکیر و بینک دل و زبان متنق رہے ہیں ۔

اتحادواتفاق كى منرورت

یریمی ورسندای کراس زمانی بریم لوگوں کے لیے اتحاد وا تفاق کس قدر مزوری ہے۔ دستنانِ اسلام میسلانوں کے خلافت محافقائم کیے ہوئے ہیں ، ایذارسانی بر کمر باندھ لی ہے دل و دمانے اور زبان کی ساری طاقتیں ممارے خلاف استعمال کر رہے ہیں۔

> اتّحادیمہودالمسنّت کا مزمہب امتیار کرنے ہی سے ہوسکتا ہے۔

ہم لوگ غفلت ہیں پڑے ہوئے ہیں اور فرمند بندی سے اپنے ظاف دشوں کی مدوکر رہے ہیں۔ اہذا ایسی حالمت میں ہم لوگوں کے بیے بہتر ہی ہے کہ ایک مرکز: پر جمع ہوجائیں . ایک نفظہ پر سمن کا بین اور یہ اتفاق ا اتحاد حسب ہی ہوسکتا ہے کہ ہما را مسلک و خدم ہے بھی ایک ہواکپ لوگ بھی اس خدم ہے کواختیار کر لیں جسے عامۃ المسلین اختیار سے ہوئے حسیں ۔

كياميرى راسع سے آپ كواختلات ہے ؟ خداكر اس برا كمندگى

اور فرقه وارسبت سے نجات کی راہ نطح اور ہم لوگوں کے متخدم و مائے کی سببل

جواب مكنوب

شری دیای*ں مجبوُر کر*تی ہیں کہ مذمہب اہلیب^{ین} کوامنیا <u>کیا جا</u>

کری تسیم! گرای نامه ملا عرض به ہے کہ ہم جواصولِ دین میں اشاعرہ کے ہم خیال منیں اور فروع دین میں ائت ارب میں ہے کسی ایک تقلید منہیں کرنتے تو یرکسی تعقیب یا فرفز برستی کی وم سے نہیں بلکاس کی وجرحرف یہ سے کہ مشرعی دلیلیں بہیں تمجود کرتی ہیں کہم مذمهب البدیت جم ہی کوافنڈیا د کریں ہی وجه بع جوم عمورسه الك موكر اصول وفروع دين مس استادات ائمة طاهري الى كے يا مندي كيونكداد لرواي كاليبي فصل اورقت نوی کی اِندی بھی بس اسی صوریت سے ہوسکتی ہے اگر دہلیں بہیں ذرا مھی مخالعنست۔ اہلِ ربینٹ کی احاز سند دیں یاان کے مرمبب کو حجو ط کر دوسرے نمسب کی بابندی بی تقرب النی مکن ہوتا توہم صرور حمبوری کی روش برطینتے باک باہمی رشتهٔ احویت اچی طرح سنوار رہے لیکن مجوری یر ہے کہ قطعی اور محکم دلیلیں سنگب راہ بنی ہو کی بیں اور کسی طرح مذہب المبيت جبولا كركسى دومرس فرمب كواضنب اركرس كاحا دستنبي دتيس ـ

جهُوالمستن كامسلك اختيار كرن كى وئى دليان بيرملتى

اس كے علادہ الن چارول مذامب كوكسى تم كر جے بھى ونہيں . ان نالمسكى يابندى كا داحب ولازم بونا تواور جيز بيئان كيبتر اور قالى ترجيع موفى يريميوركونى دىيل مجى ليش مبين كرستي يم ف توجيم وسلمين كادلا كولورى تختيق سے ديجما- مهيں نوايك دليل مجي البيء ملى حوان ائمته ادمبه في تقليد ويبروى كو واحبب بتالي بويبس له دے كريمي كبرجيز لی ہے جے آپ نے بھی ذکر کیا ہے۔ یعنی یہ کہ وہ مجتبد وعادل اور بڑے ملیل القدرعلمار سے لیکن برسویے کی بات ہے کراجتہاد اما شت، عدالت ملاست علی بران ی ماروں بزرگوں کے ساتھ محتق زمہیں ، ایھیں میں مخصرتونهیں لہذامعین طور برفقط ان ہی کی بیروی اوران ہی کے مذاہب میں سے کسی زکسی ایک کا پائند مہور سنا واجب کیونکر مہوما سے گا؟ اورمسرا يه دعوى ب كمسلاول بس كون ايك شخص يجى ايسانه نيك كابوب كرسك كريه جارون أئمة المسنعة بمارسك ائمة عليهم السلام س علم ياعل كى أيك جيزين براع كرتھ - بارے ائمة قر البيت طاہري بي -جوسفين منجات بين امست اسلام كيد باب حطر بين استارة باسب بن اورتقل سينمر بير. اتست بين رمول كحبر لريم و كانشاني اں جن کے شعلق رسول کا یہ ارمث دہے کہ:

* ویجوان سے آگے نرطِ صنا ورنہ ملاک میوماؤگے اورنہ انسی جیجے کردینا ورنہ ننب بھی ہلاک ہوماؤگے اور انحییں سکھانا بچھانانہیں، بہتم سے زیادہ ہانتے ہیں ؟ لیکن کیا کہا جائے کہ رسول کے مرنے کے بعد سیاست نے کیاکیا کرشم وکھائے اور کیا سلوک کیاگیا الجدیت کے ساتھ ؟

آسب کامرن رہے
اورا مخول نے ای کومندل و معتبر مذہب سمجا بھے حیرت ہیں ڈال وہا بتا یہ
اورا مخول نے ای کومندل و معتبر مذہب سمجا بھے حیرت ہیں ڈال وہا بتا یہ
آپ نہیں مانتے کوسلانوں میں تقریباً اُ دھی تندا و شیوں کی ہے اور شعا اِن
آل می کے سلفت و ضلفت اِس زانے کے شیعہ ہوں یا اُس زانے کے بہا یہ
صدی بحری سے نے کر اس جودھویں مدی تک مذہب اہلہ بیت کے پابند
میں شیعہ سلک اہلہ بیت کی اتباع عہدا میرالموسین اور جناب سیوہ سے
کر ہے ہیں حبب کہ زاستمری کا وجود تھا اور ندا مُت ادامہ میں سے کوئی کا
وجود میں آیا تھا .

بلے زمانے کوگے جہورکے ندم کو جانتے ہی نہ تھے

اس کے علاوہ زمانہ بغیر سے قربیب زمانہ کے مسلمان خواہ سنجہ ہول
یاستی انفول ہے ان فرام سب اربعہ بیں سے کسی ایک کواختیا رہی نہیں
کیا ۔ الن بیں سے کسی ایک کے ہابند ہی نہیں ہوئے اوران فرام ب کو وہ
افتیار کھی کرتے تو کیے جب کہ ان مذاہب کا اس زمانے میں وجود بھی
نہ تفا۔ اسٹوی (اصول دین میں آب لوگ جن کے ہیرو ہیں) سنگ ہیں
میدا ہوئے اور سلام بیں استقال کیا ۔ ظام ہے کر سنگ ہے کے قبل کے
مسلمان عقالم میں اشتری کینے کے جاسکتے ہیں۔ احدین عنبل سمال ہے
مسلمان عقالم میں اشتری کینے کے جاسکتے ہیں۔ احدین عنبل سمال ہے

میں پیدا ہوئے اور اس میں انتقال کیا۔ شامنی منظم میں پیا ہوئے اور سينطب عيم بنتقال كمياء امام مالك مصورة بين بيدا بوت اور والعقي بن انتقال كيا - امام الوصنيف سنشير بي بيلا بوسة ا ورسف المعالي من اسقال كيا -خلاکے لیے انعامت توفرما تبے کردب اصول دین میں آپ کے بیٹیوا اسعری سنت یہ بیں بیل ہول اور فروع دین ہیں آپ کے انگر آ اراب است ایر وران اسلام سے استے زمان کے بعد عالم وجود میں آئیں ، مجواس سے میلے کے مسلمانوں کے متعلق میکہناکیو مکر رواہے کہ وہ بھی ان ہی مذاسب اراجہ کے پابند تنے اوران کا مذمب مجی وی تخابو آج کل جمپور ابن کا ہے ۔ ہم شیمان البیت توائم آ البیت کے بیرو ہی اور آپ اوگ بعى جهور الين البيسة كوچور كرصحار اور ابعين معارك برويس تودور اقل کے مندکے تمام سلمانوں پران خام سب میں سے کس زکسی ایک کواختیار كرلبنا أسى ذكس أيك كالإبندموربنا واجب كيوكرموكيا اوران جارا مذابه سعيش جومذابب البئ تفان بسكياخامي مقى كدان سيكناريش كرنى كئ اورآب كے ان مزامب ميں جوبہت بعدييں عالم وجود ميں آئے الیی کیا توبی تقی کرابلیست سے روگر والی کی گئی جو ہم باید کتالب الہی کستی نجات اورمورن درمالت ہیں۔

اجتهاد کا دروازہ اب بھی کھلاہواہے

میمجی تورطلب امرہ کم اجتہاد کا دروازہ اب کیوں بندموگیاجب کر ابتدائے زمانۂ اسسلام ہیں پالوں پاسٹ کھُلا ہوا تھا۔ ال اب اگراپنے کو الکل عاجرة قرار دے دیا ما سے یہ طے کر لیا جائے کہ ہم اجہا دکر انجی جا ہیں تواب ہم سے نہیں ہوسکتا ہم اس مشرفت سے محوص ہی رہیں گے تو یہ دوسری بات ہے ورد کون تخص اس کا قائل ہونا ہے ندکرسکتا ہے کہ خدا و ندعالم نے مفرت خاتم المرسلین کو مہترین شریعت کے ساتھ مبعوسٹ فرایا اور تمام کست ہما ویہ سے افضل وارش ن کتاب قرآن مجید تازل کی ۔ دین کو ممکن اور اپنی فنوں کو تمام کیا اور اپنی فنوں کے مائل و معنار ہو رہیں ۔ انفیس سے پوچھے ، انھیں سے بوجھے ، انھیں سے بوجھے ، انھیں سے بوجھے ، انھیں کرکے معنوم کرنا جا ہے ہو و مورے ذریعے سے حاصل کرنا جا ہے خود مور وجہ دوجہ درکے معنوم کرنا جا ہے ہے قرن معلوم کرسکے ۔ معنقر ہر کہ پوری شریعت اسلامیہ قرآئی مجبد اسنت و رسول تمام وائل و بنیا سن سمیدت ان کی جاگر ہو مال کرنا ہے ملک ہونے کا کمی کو جبور کرکسی دور سے کی رائے پرعمل کرنے کا کمی کو جبور کرکسی دور سے کی رائے پرعمل کرنے کا کمی کی والے دیا ہے کہ کا کہ کا جا کہ رہ کہ کا کہ کا کہ کا کہ کا کہ کا کہ کا کہ کو میں کہ کا کہ کا کہ کو کہ کو جبور کرکسی دور سے کی رائے پرعمل کرنے کا کمی کا کہ کا کہ نہوں کہ کا کہ کو کہ کو کہ کا کہ کو کہ کا کہ کرنے کا کہ کوری کرنے کے کا کمی کو کہ کو کہ کا کہ کا کہ کرنے کی کہ کا کہ کوری کرنے کی کرنے کی کا کہ کا کہ کین کو کہ کی کرنے کی کرنے کو کہ کا کیا کہ کا کہ کا کہ کا کہ کیا کہ کا کہ کا کہ کی کا کہ کیا کہ کا کہ کوری کی کرنے کی کرنے کی کا کہ کوری کرنے کی کھی کرنے کی کرنے کے کہ کرنے کی کرنے کی کرنے کے کرنے کے کہ کرنے کی کرنے کرنے کی کرنے ک

كيايى ائمة ارىسب وارىث بتوسن مقع بالني برخدا وندعا لم نه المحد و الموسية المعرف المعرف المعرف المعرف المعرف الموسية المحرف الموسية المحرف الم

اتحاد کی اسان صوریہ ہے کہ مدیر البہیت کمعتبر حجماحا

آپ نے جس اہم امر کی طومت ہمیں متوجہ کیا ہے بینی ہے کہ فرفہ واربیدت خنم کی مباسے اور تمام مسلمان شیعرمتی ابکہہ ہو مبایل توبسم اللہ یہ مبہ ہے ستحسن

اقدام ہے لیکن میراخیال ہیہ ہے کہ مسلما **نون** میں اتحاد واتفاق کاہونا بس اسی پر موقوف ومخصرته بي كرمتيعه ابنا مزمب جيور دي بالبسنت الين مامب سالگ ہر ما ب*یں اورخام کرشیوں سے یہ کہنا کہ*وہ انیا مذ*یب جب*وڑ د*یں ترجیع* بلامرج ہے بلکہ درجنیفنٹ مرجے کوزجسیع دینا ہے۔ اس یراگندگی تب ہی دور ہوسکتی ہے ادراتخاد دانفان حبب ہی بیدا ہو سکتا ہے حب آب مذہب المبسیت مح مجمی نرمب سمحيس اوراس كمعى ان مبارول فرمبوں ميں سے کسی آئيسے مبيدا قرار دہن تا کہ حنفیٰ شانعی ، مالکی ،منبلی،شیعه کوبھی ان ہی نظروں سے دیجیبر جن نظروں سے اپس بس ایک دورس کو دیجھتے ہیں . اگراک بائزہ لیں توخور فرامب البسنت میں جننے اختلامت موحود ہیں وہ شبر مشتی اختلافات سے کم نہیں۔ لہذا صرف غرب شبعول بيتقاب كيول كياما آاب كدوها بسنيت كير خلاف بي رحفراست المسنست كويجى مثيبول كى مخالفىت پرىرزنش كيون نہيں كى ما نى - يكرنو دالمسنت یں جواکیا۔ دورے کے مخالف ہیں کوئی منفی ہے کوئی شانعی کوئی ما کی ہے کوئی مبل واخبر اختلامت سے منع كيوں نہيں كيا جانا لئندا حبب لمست اسلاميہ بي جار ندمهب موسكة مي - جار فرمهب موسع يركوني سب كشائ نهين كرتا توياغ ہوئے میں کیا قباحت ہے ؟ کس عقل میں یہ بات اسکی ہے کہ میار مذامب تكسمون بس كوئى مزابى نبير، جار نرمبول مين مبط كرمسلمان متخد ره سكتے ہيں اتحاد واتفاق باتى رە سختاسى دىكن اگر ميارست براھ كر يا يخ برطائ توانخاد رخصست بومائے گا جمعیت اسلام براگنده ومنتشر بومائے گی۔ آپ نے بمشیول کو زہری ومدست کی طرفت جو دعوست دی ہے کاکشش کہ آہیں ڈیوسٹ خام سب اربعہ کو دبیتنے یہ دیوسٹ آپ سے لیے تھی اسان تھی اوران کے بیے بھی۔ یہ ہمیں کو مخصوص کرے دعوت کیوں دی گئ ش

مكتؤب منبرا

مولانائے تحترم تسیلم!
اَپ کامفعس گرای نام ملا۔ اس بیں شکس نبین کراپ نے اصول و فردی دین دولوں بیں جہورکے ندمہب کی بیردی واجب ندم و نے کو بہت تفعیل سے بیان کیا۔ اجتہاد کا دروازہ مئوز کھلے رہنے کو بھی تشقی بخش طور پر شعبیل سے بیان کیا۔ اجتہاد کا دروازہ مئوز کھلے رہنے کو بھی تشقی بخش طور پر شاہت کیا۔ اکب نے گرامی نام بیں ان دولوں سسکوں پر ایسے نا قابل کرد وائل و البین اکھا کردیئے ہیں کہا تھا گائی گرائش باتی نہیں رہتی اب تو بی براہین اکھا کردی تہیں بنر میں اب کو بی مسلک کا اتباع کو کی عزدری جہیں بنر یہ کہ اجتہاد کا دروازہ اب بھی کھلا ہواہے۔

یں نے آپ سے پوجھا تھاکہ آپ وک مجی دہی ذرب کیوں افتیار نہیں کر ایس کے آپ سے بوجھا تھاکہ آپ وک میں در ایس کا سبب اُدِلّہ

شرعیہ ہیں۔آب کو ما ہے عظا کہ اس چیز کو ذرا تفصیل سے بہان کرنے بڑی مہر بان ہوگی اگر آب کلام مجید بالعادیث بنوی سے المی قطعی دلیلیں پیش کرمین مہر بان ہوگی اگر آئے اللہ مجید بالعادیث ہی کی بیروی واحب ولازم ہے نہ کہ ان کے فیری

جواب منحتوب

محرمیشسیم:

اتبارع المبيت محے وتوب بر ايک ملکی ک روشنی

اُن کاکوئی ہمسر ہوا نہ نظیر اسمفول نے سینب سبرسے تمام علوم سیکھے،
اور دین و دنیا دونوں کے احکام حاصل کیے ، اسی وجہ سے بینی بر نے اتخب قرآن کا مثل صاحبان عفل وبصیرت کے لیے یا دی و بینیوا اور نغاق کے طوفان و تلام بین سفین مخاست قرار دیا کہ جوان کے زمرہ میں داخل ہوگیا اس کی بخشش تینی ہوگئ ۔ وو و د تفیٰ (مصبوط دسی) فرایا جو کہی او کے گنہیں ۔
کی بخشش تینی ہوگئ ۔ وو و د تفیٰ (مصبوط دسی) فرایا جو کہی او کے گنہیں ۔

امبرالمومنين كارعورت دينا مذبهب لمبييت كى طرت

اورحفزست امبرلونين فرمات بير.

" تم كبال مارب بو كده معتلك رب بو ومالانكمام البت نسلب بس، نشانیال واضح بین سنارسے کھ طسے بی پختھاری برسرگردانی کہاں مینیائے گی تھیں ؟ الکہ میں براوجھ رہا ہول کرتم بجثكث كيب ربيء بوطالانك بمقادست ورميان ابل بهين ببنير موجود ہیں جوحت کی زمام ہیں، دین کے جھنڈے ہیں بھیائی کی زبان بي ابندا الحبين محى قرأن كى طريم البيى مسزل برد كهوا ورخصيامٍ كم مح بیران کی خدمت میں ہنو بھی حس طرح پیا سے اور منعک ارسے چو<u>ا ئے نہر کے کنارے پینے ہیں ،اے بوگو! یہ یا</u> در کھو برارشادِ ببغیر ہے کہ میں ہے کہ مشخص کو اگر موسند اُ جائے نو ظاہرت^{یت} مع وه مرحات گاليكن درحفيفت رنده موكا اور بول اس كاجم خاكب بين لَ ماسئة كالميكن واقعًا خاكب بين نهطي كاللذائم جو باتیں ما سے نہیں ہواس کے متعلق الب کشائی زکر و کیونک زیاد ہر وى بايس من بي جن كاتم الكاركرت بويماني ما نكواس سيحب يرتم غلينهي باسكحة اوروه بين مون كيابين في تضارب دريان

ئے کیونکدان کی روح عالم ظہورمیں کارصندرما ہے ۔ دنیاکومٹورخاستے ہوئے ہے جبیباکرشنے محریحدۂ مفتی ویادمصروغیرہ نے کہاہے ۔

نُقْلِ اكبر (ببنی سنگرآن) برعمل نہیں كیا؟ اور تم ہیں تُقلِ اصغر (بعنی اہنے دولؤں ح*گر گوشے حن وحین) چھوڑنے* والانہیں ہوں؟ كیا میں نے تمقارے درمیان ایمان كا جند نہیں گاڑا؟ "

نير حفزت الميرالونينٌ فرات بي:

" ا پنے بی کے اہل سکھیے پرنظر کھو، ان کی بہان کا پورا دھیان رہے، ان کے نقش قدم پر مبلنے رہو، یہ تھیں را و راست سے الگ ندکریں کے اور نہ ہاکست ہیں ڈالیں کے ، اگر وہ تھہری توقم مجی تھہر ماؤ اور اگر مبل کھولے ہوں تو تم مجی جل پڑو ۔ ان سے اکے نہ بڑھ مانا کہ گمراہ ہوجاؤ اور نہ بیچے رہ جانا کہ بلاکن بیں بڑ ماؤ "

ایک مزبہ آئی نے اہلیت کا ذکر فرماتے ہوئے کہا:

اوہ علم کی زندگی ہیں (ان کے دم سے علم زندہ ہے) جہالت کے لیے (پیام) موت ہیں۔ ان کے عمل کو دکھے کرتم ان کے علم کا اندازہ کرسکو گے ، ان کے ظاہر کو دکھے کران کے اِ طن کا اندازہ تھاری تھے میں آجائے گا۔ ان کے سکوت سے تم مجبو گے کہ ان کا کلام کس قدر جہا تلا ہوگا. نہ تو وہ حق کی مخالفت کرتے ہیں اور نہ ان کے ماہین حق میں اختلاف ہوتا ہے، وہ اسلام ہیں اور نہ ان کے ماہین حق میں اختلاف ہوتا ہے، وہ اسلام

اے نبج البسلاخة - مبلد اوّل ، صغر ۹۸ طعب ۹۳ کے نبج السسلاخة - مبلد ۲ ، صغر ۲۵۹ خطب ۲۳۲

کے منون ہیں ہمفیوط مہارا ہیں ۔ ان ہی کے ذریعے عن انی منزل پرینجا ۔ اطل کو زوال ہوا اور باطل کی زبان مرط سے کٹ می ایخوں سے دین کو ماصل کیا ۔ اس برعمل کرنے اور ذہن نتیبن کرنے کے بیے عرف سفنے سنانے کے بیے ہیں کیونکہ علم کے داوی تو ہبہت بیں لیکن علم برعمل کرنے والے ، علم کا حق اواکرنے والے میت کم ہیں !!

الك دوسر محفليدس أكب فرلت بن :

پیم کی عربی مام عرق ایس بهرن عتربت ہے۔ آپکا گھرا تمام گھراؤں سے بہر گھرانا ہے ، آپ کا غوہ بہرن عجرہ ہے۔ حرم کی جارد ہواری میں وہ روئیدہ ہوا۔ اوج بزرگ تک بلند ہوا۔ اس درخت کی شاخیس دراز اور مجل اس کے نامکن الحصول ہیں ۔

نيز مصرسه اميرالونين فرات بي :

" ہم ہی بینی مرک نشآ میاں ہیں ،ہم ہی اصحاب ہیں، ہم ہی خریراد ہیں، ہم ہی دروازے ہیں ، گھروں میں دروازے ہی ہے آیا جاآ ہے ۔ جو تخص دروازے سے نہ آئے اسے چور کہا جاتا ہے " اکے چل کر آ ہب اہل بریت کی قوصبعت فرمائے ہیں : " انفیں کی شان میں کلام مجید کی مہترین آتیں نازل ہو میں میں

> کے بنی البسلانة، جلد اوّل صغر ۵۱ منطبہ ۱۹۰ کے بنیج البسلاغة جلد ا صغر ۵۸ خطبہ ۱۵۰

اہلِ بہینے بندا کے منسہ زانے ہیں ۔ اگر بولیں گئے توسیج بولیں گے ، اور اگر خاموشس رہیں گئے توان پرمسبقسند نہ کی جاسکے گی " ایک ان خط میں مراہ نے ہار ترمین ،

ايك اورخطيه مي آپ فرانغ مين: وسمجة وكحوتم بإليت كواس وفنت بك مان نهين سكنے جب تک تم یہ زامان لوک کون رام ہوایت سے منحرت ہے۔ کتاب خدا کے مددیمیان برعمل نہیں کرسکتے جب بک تم یہ نہمعلوم کراو ككسكس مع بدشكى ك قرآن سياس دنست كأستسكنيب موسكفة جب كد فرأن حجوط وبيف والول كوبيجان زلو للمذاس كوقراك والول سے يوجيو، إلى مبيت اسے دريا منت كرو و و علم كى زندگ ہیں جہالست کے لیے موست ہیں ۔اہل بہیت ہی ا ہے ہیں کم ان کے حکم سے تھیں بنیمیلے گاکہ وہ کتنا علم ریکھتے ہیں۔ان کی غاموش سے تھیں معلوم ہوگا کہ وہ کس قدر متین اور جی آگھنتگو كرف واسع بن ال سل ظا مركو ويجه كر تعبي ال ك باطن كا ا تدازه ہوگا۔ تہ تو وہ دین کی مخالفت کرنے ہیں اور نہ دین ہیں ان سے ابین کوئی اختا مت ہوتا ہے ۔ ہیں گریا دین ان سے درمیان شا پر بھی ہے، صادق بھی، خاموش بھی ہے گویا بھی۔"

اس موصوع پر بگرست ارشاداست آپ کے موجود ہیں چنائمبیہ ایک ادرمونع پراک بے ارشاد فرایا :

ا ہم ای سے تم نے الیکوں میں بالیت بال ہمارے ہی ذریب

بنداوں پر فائز ہوئے۔ ہاری ہی وجہ سے تاریجوں سے نکلے۔ بہرے ہوجائی وہ کان جوسنیں اورسُن کریاد نہ رکھیں۔" ایک اورموفع پر آ ہے۔ نے ارشاد نہایا :

" اعمے لوگر! روستی مامس کرواکس شخص کے جرائے کی لؤسے جو محمیس نفیجست کرنے والا بھی ہے اور خود بھی مطابق نفیجت عمل کرنے والا سبے اور بائی مجر لواس باک وصاف جہرے جس کا بان نتھرا ہواہے ہے

ایک اور موتع برآب نے ارشاد فرایا ،

" ہم خرو نبوشند ہیں۔ ہم مزل رسالت ہیں ، ہم ملائکہ کی جائے اند ورضنت ہیں ، علم کے خازن ہیں ، حکمتوں کے مرحبیّہ ہیں ، ہمارے مدد گار اور دوست منتظر دھسنت اور ہمارے دشن ہم سے کہت رکھنے والے خدا کے قہر دغضب کے منتظر ہیں " ایک موتے پر آب نے ارشاد فرایا :

" كَمِلْكَ سِنْكَ وه جوتم سے ركني كرسے ہم بركذب وافر اكر كيمار

مقلبيه بني كوواسى ون في العلم تباتت محق آ بير اورتيب كريم كوخدا في وهنت يخثى الخيل ليست كبا بهي الامال كرويا انغين كودم دكها بمبيراني دجمسنت بين دكها انخيبن ليكال إلمكيا مس باست جابى مال ب ممس انكور بن ورباما ا بع نقنیا ای قرایشس می سے بیں جو اعظم کی نسل سے بول محالات بنی اسم کے سوائس کے بیے لائن وسر اوار بی بہیں اور نبی اسم کے علوه کئی کومکومت زیب دے سکتی ہے "

اس سلسه بن أب ف اين مفالفين سے فرما يا :

» ایخوں نے دنیا کواننڈار کیا اور آخرت کو تیکھے کر دیا ۔ ہاک۔ و مان جٹے کو چیوڈ کرگدے پانی سے سیراب ہوئے ۔"

اسی طرح است رخطبہ نکسیعوان کلام سبے ۔

آب ہی کا بر قول مجی ہے کہ:

« تم بيك مع بي خص ا بياب ترير مراء اورو دا بيني برورد كاراب رمول ادرا بلبيت رمول كح عوق كويهما تا مردا مرت توسمب مدے گا۔اس کا اجر خلاکے ذمر ہوگا اورجس نیک کام (جباد فی سبل اللہ) کی نیت رکھتا تھا اس کی مجی جزا یا نے گا۔اور اس كى بنت اس كى الواركشى كى قائم مقام بوجائے ك

الك اورمونع يرآب في ارشاد فرايا:

، عم بی سندفار بی بهارے بزرگ بزرگان انبیار بی بماری

ك بنيج البلاغة ملد ٢ صغم ١٥٦ خطب ٨٥ سع مواعق محرف معمد ١٧١

مماعدن خدا کی جماعدت سیر اور بائی گروه نتیطان کی جماع*دت* ہے . جوشف ہیں اور ہا رے وشمن کو ہرابر رکھے وہ ہم سے نہیں " الم حن الميد ا بميد موقع برخطبه ارشاد فراست بوست كها:

" ہارے بارے میں خداسے ڈروکیونک سم تھارے امیروماک ہیں۔"

اماً ازین العابرین کاارشادِ گرامی

المم زين العابرين علياست لام حبب اس آيت كي تلاوست فرات : ساخے ہوماؤی اسے ڈرواور صادقین کے سانھ ہوماؤی

تو ایب دیرتک ندا ہے د عافرانے جس میں ما د نتین کے درجے سے ملحق ہونے ادراندان عالیه ی خواستگاری فرائے ،مصائب و تدائد کا ذکر کرستے اورائد دین خانواد ، رسالست کومچوڑ وسینے وائے برعتی لوگوں نے جن چیزوں کی دین کی طرفت سبست دے رکی ہاس کا تذکرہ کرتے بمجر فراتے:

" اور کھو لوگ ہیں ہارے درجے سے گھانے برائز آئے کا معجید كى متشابراً بنول سے كام كالنے مكے الحول في ان أينول كى مالى تاوليس كس اور بمارس لمنعلق جوكيدارشاداست بينيربي ال كونتيم قراروے دیا۔

اكسلىمي كب فرائة :

" اسے پالنے والے! اس است کی نافران کی سے فریاد کی جائے مالت بيب كراس ملت كى نشا نياك فاك بين ل مكين اورأست

فے فرقہ پرسنی اوراختلاف کوا بنا دین بنالیا ایک دوسرے کو كافرنباً في ملك حالانكه خدا و در عالم كاارشاد ب كرتم ان لوگول كى طرح نه موما و جو فرفد فرقه موسكة اوراختلافات مين بركة بعداس کے کہ ان کے پاس روسشن نشا نیاں آ چکی تغیب لبندا حجست بہنجا نے اور حکم کی تاویل میں سواان کے جوم بلد کتاب اہی ہیں ابنا ئے المة ہلیت ہن اریکوں کے روسٹن جاغ بین من سے ذرائع ملاسے بندول برائي حبّت فائم كى اورائى مخلون كوبغيراني حبّت كے نہيں عميورا كون تحروسه كے قابل موسكتا ہے . نما تغبر بيما ننا اور بانا مِا ہوتو پھرہ مبارکہ کی شاخ اوران پاکس ویاکیزہ ڈواسٹ کے بقتیہ افراد یا دُسے نَجن سے خوانے ہرگندگی کو دور رکھا اوران ک طہارت كى تكيل كى الخيس تمام كفؤل سے برى دكما أور كلام مجيد بس ال كى

براهٔ م کی اصل عبا رسند کا ترجر سبے بعورسے ملاحظ فراشیے۔ بہ عبارست اولم کملونی آ ك مِنْ فقرے بم نے ذركيے يہ نماياں طور مرين فرمب شيع كو پيش كرنے ہيں اليے بی متواز اقوال دینے ائم کام مے ہارے صماع میں موجود ہیں۔

مكتوت مبرم

کلام مجیب یا اما دسیث ببغیرسے دلسیسل کی خواہش<u>ن</u>

مولانائے محترم!

رم کلام مجبید یا حدیث بنوی سے کوئی ایسی دلیل سینی سی سے معلوم بوکرائم آبل بهیت بی کی بیروی وا حبب ہے . قرآن و حدیث کے ماسوا چیزوں کو رہنے دیجیے . کیونکہ آپ کے ائمہ کا کلام مخالفین کے لیے حجست نہیں ہوسکتا ۔ کیونکہ ان سے کلام سے استدال اس مسئل بر دور کا مستلزم ہے ۔ آپ تابت یہ کرنا چا ہتے ہیں کہ ائر المبسیت بی کی پیروی واحب ہے اور آپ دلیل ب انھیں ائمہ المبسیت کا قول پیش کرتے ہیں جن کی پیروی ہی محل محت ہے ۔

جواب مكتوب

ہماری *تحریر پرغور نہیں کیا گیا*

آب نے عور تہیں کیا۔ ہم نے مدیریٹ سے ابتدا ہی ہی جو صند پیش کردیا
سفا، اپنے کا توب ہیں یہ وکھتے ہوئے کرس انحہ المبسبت ہی کی بیروی ہم برواب
ہے نہ کو غیر کی ۔ ہم نے صدیث اشارتًا ذکر کر دی تھی ۔ ہم نے یہ وکھا تھا کہ پیمبر ہونے
انھیں کتاب خدا کے منفارات صاحبان عقل کے لیے مقتدی ، مخابات کا سغینہ ،
انھیں کتاب خدا کے منفارات صاحبان عقل کے لیے مقتدی ، مخابارت انھیں مفاہن
کی امادیث کی طوف اشارہ محتی جو کہ اکثر و بیشیز کستب امادیث میں موجود ہیں بم
نے یہ بھی لکھ دیا تھا کہ آپ ماشارات ان توگوں میں ہیں جن کے لیے اشارہ ہی کا فی
سندی کی مزورت نہیں ۔ انہذا حب ہمارے انمہ کی اطاحت و ہیروی کے
سندی انٹی کشرت سے اماد میٹ موجود ہیں تواب ان کے اقوال مخالفین کے مقابلہ
مشاق انٹی کشرت سے اماد میٹ موجود ہیں تواب ان کے اقوال مخالفین کے مقابلہ
میں بطور استندلال بیش کے جاسکتے ہیں اور کسی طرح دور لازم نہیں آتا ۔ ہم خطاق ال
میں بینے ہیں کہ طرف انہ ارشاد فرایا :

مديث ثقلين

ببانگ دن اعلان فرمایا:

" بياايهاالساس اً نى نناركالخ"

" اے اوگو! میں نم میں ایسی جیزی چھوڑے جاتا ہوں کہ اگر نم ایس اختیار کیے رہو تونمبی گراہ نہ ہوئے ۔ ایک کتاب خدا دومرے ميرك الليبيت "

بهمجی ادست و فرمایا .

مویس نے تم میں الیے جبزی جبوری کداگر تم ان سے محبت کرو تو تمجی گراہ نہ ہو۔ ابک کتاب خدا جواکیک رسی ہے اسان سے زمین تک کھینی ہو لُ ، دوسرے میرے عقرت وابل سیت عدید دونوں کمبی مدانہ ہوں گے بہاک تک کہ میرے یاس ومن کور برميني ركينا ميرب بعدتم ان سيكيو كريش سي تموي يا بھی آسيت نے فرايا كه :

" میں نم میں اپنے رومانٹین جیوٹرے ماتا ہوں ، ایک کناب خدا جرابک دراز رتی ہے آسان سے بے کرزبین تک ۔ د د مردم مبري عرّ سه واېل مېينځ ريد د ولو کېږي مبلا نېون مر بہال کے حومن ور بر میرے باس مہنی <u>ہے "</u>

ے ترندی دنسائی نے جناب بابرے روابینٹ کی ہے اوران دونوں سے مائنق في كمنز العال مبداد ل صفويهم . إب اعتصام الكتاب والسنة كم شروع بي نقل كياب، ت ترخری نے زیدا بن ارتم سے روابیت کی ہے بحرز العالی مبلد اوّ ل صفی ہم پیجی موہورہ سے الم اہرے زیرابن است دوسم طرفیوں سے اس کی روابسند کی ہے پہلے مندمو مديد عد عد ك بالكل اخدي طرال في مح مربر بن زيد بن البست سعروايد كيا ب كنزانعال جداد لصفيم بم يرمى موجودي -

يىمجى آپ نے فراياكه:

" یس تم میں دوگرانفندرجیزی جھوٹرے مانا ہوں کتاب فعدا اور میرے المبین است دونوں مجمی جدانہ ہوں کے رہاں اسکے دہاں میک کے دہاں اسکے دہاں میک کوئر میرے باس ہنچائے "

يى مى آپ نے فرايا كر:

" قرب ہے ہیں بلایاماؤں اور مجھ مانا پڑے ہیں تم میں دلو گرانقدرچیز یں حجوشے جاتا ہوں ۔ ایک خدائے بزرگ وبرنز کی کتا ہے دو سرے میری عرب کتاب خدا نوایک رستی ہے جواسمان سے زمین کا دراز ہے اور مبری عن سند میرے اہل مبیت ہیں ۔ اور خداو ندعالم لطیعت وخیرتے مجمع خبردی ہے کہ یہ دونوں کمبھی مبدا نہ ہوں گے بیمان تک کہ حوض کوئر پر بہنی ۔ بس دیجھو میرے بعد تھا را سلوک ان کے ساتھ کیا رہتا ہے ہے۔

یے الم ملکم متندرک جلد ۳ صفی ۱۲۸ پر اس کو درج کرنے کے بعد نکھتے ہیں کہ یہ حدیث بیخین مین مسلم دکاری کے شرائط کے کمافلے سیمی جیجے ہے لیکن ان در نوں نے اس کو دائے ہنیں کیا۔ سے الم ماہم نے اس حدیث کو ابوسید نعدری سے دوط نقول سے روا بیٹ کیا ہے ایک جلد م صفی ابر دومرے خوا ۲ مبلد ۳ پر ابن ابی شبید میلی اور ابن مورے ایوسید فعر ری سے اس صلایت کی روایت کی ہے۔ کمتر العمال حبلہ اور کی صفی کرم پر بھی ہوجود ہے۔ سے الم ماکم ہے اس عدیث کو متذرک میلد صفی ۲۰ پرموفوعاً نقل کیا ہے اور فقل کرنے

كىلىد كىلى أي كريد مدريك مسلم دىخارى كىمسارىم يجي سى مىكان دونون (باتى أكل مغريه)

ا ورحبب حفارست بچ آمسنسری سے بیلٹے اور مقام غدیر پھم پر پہنچے تواکس سے ارشاوفرماباكه :

« تجھے ایسامعلوم ہور اسبے کہ جلدہی میری طلبی ہوگی اور مجھے جا آ بٹرے گا۔ میں تم نیں ووگرانفتر رجیزی جبور سے مانا ہوں جن میں ایک دوررے سے بڑا ہے۔ کماب خدا ، دومرے میرے اہلیت ا دیکھیوخیال رکھناکہ ان کے ساتھ نم کس طرح بیش آ نے ہو بر دوز^ں کبی ایک دومرے سے جدا نہ ہوں کے بیمان تک کہ ومل کرڑ يرمبر إس يني ا

بچراً ہے نے کہا کہ خدا سے توی وتوانا میرا مولا وا قاہے اور میں ہرمومن كا مولاً بهول - تيراً بي في حضرت على كا بانحه بكراا ورائيت وفرما باكه : " بین جس کا مولا ہوں یہ علی مجی اس مے مولا ہیں بیرے بعد خدا وندا! دوسنت دکھ اس **ک**وجو ان کو دوست رکھے اُورڈن ر کھاس کوجوان کو رشن ریکھے ی^و

بقيرماشيمك سے: فادع بنين كيا بجرائ مبلد اصفي ٢٥٥ برد ومراح ويق ساس مرت كونقل كرف كع بعد ككماكم يمدميث صيح الاسناد ب يكن بخارى ومم في ذكرمني كباعلام ة بى ئے بى تى تى تى اس كوباتى دكھا ہے اوراس كے ميرى مونے كاموتران كياہے ۔ العصراني في المريث كودرج كياب جبياك علام نبعان كي اربيبي في الاربيب او والمستوملي كى احبااليست بن نركورب أب ناوافقت زبول مے كرا مخفرست كاس ون كافليد مرست اى نقره يرخم نهيى تفاكيونكم ومندا تناجي يرطيل كالفظ صادق بني أأ. ليكن ساست فیشتر عمیم کی زبانی مندکردی اور یکھنے والوں کے تلم روک، دیے گر باوجود اس كمون يدايك فتره اس مندركا يدابك فقوه بيت كافياس .

عبداً تشرب اخطب سے روابیت ہے کہ رسول تے مقام مجف برخطیار شا و فرمایا جس میں کہا:

" كيا مِن تم يرتم سے زيادہ اختياد نہيں ركھتا؟" لوگوں نے كہا ہے شكس يارسول اللّٰہ "آپ ئے اس برارشاد فرايا: " بيں تم سے دوجيزوں كے منتلق پوچوں كا ايك كتاب خوا دومرے ميرسے اہل بسينت "

حدسيث ثقلين كامتواريهونا

امادیث صمحری کاقطی فیصلہ یہ ہے کہ اس تعلین (اہل ہیت و قرآن کی ہیروی واجب ہے) معولی درجہ کی مدیثیں نہیں بلکمتواز حدیثیں ہیں اور بین سے اوبرصحابیوں سے بکٹرت طریقوں سے مردی ہیں اہلیت کی ہیروی کو واجب بتانے کے لیے ایک مرتبہ نہیں بار اور منند دمواقع پر بیغیم رنے علی الاعلان کھلے لفظوں ہیں فرایا کیمی غدیری میں اعلان کیا بیلیا ایمی بین برائ کو جی اموں ۔ ج آخری کے موقع پرعوف سے دن اعلان کیا بیلیا منبر میران کردیا ہوں ۔ ج آخری کے موقع پرعوف سے دن اعلان کیا جی منبر میں سے اور آب کا جم صحابیوں سے بحرا ہوا تفاء آب نے ارشاد فرایا :

ایمی میں سے بحرا ہوا تفاء آب نے ارشاد فرایا :

ایمی میں تا ہوں ۔ بین میں دو چیزیں جھورٹ ہوں جا ہوں ۔ بین سے ایک کہ بین تم بین دو چیزیں جھورٹ ہوں جا ہوں ۔ بین کہ بین تم بین دو چیزیں جھورٹ ہوں جا ایک ہوں ۔ اینے پروردگار

كى كتاب اوراين عنزمت والبيبيت" "

بھرآب نے حفرت علی کا انھ پُرٹاکر ملند کیا اور ارشاو قرایا کہ:
" دیجیو یہ علی ہیں، یہ شکرآن کے ساتھ ہیں اور قرآن ان کے
ساتھ ہے۔ یہ وونوں کبھی جدانہ ہوں گے ریباں تک کر حون کوٹر پرمیزے پاس پہنچ پٹے "

رسالست ماک کی اس وصبت برهمپورسلین کے سرم اورده افراد کی ایک جماعت فاقرار واعترامت كباب، بيال كك كدابن مجرف ايى كتاب مي مدييث تقلین درج کرکے لکھاہے کہ عدمیث تمتیک کمٹرت طرفیوں سے مروی ہے اور بین سے زیادہ محابوں نے اس کی روامیت کی ہے ربھرآ گے میل کر کہتے ہیں کہ بهال ایک شبه ونایس اور وه بهب که صریب کنوت طریق سے مروی توہے گرکہیں یہ ہے کہ آپ نے جمۃ الوداع کے موقع برع فات میں فرمایا۔ کہیں بیسے کہ مینرمیں جب آب بستر ہیماری پر سنے نب آرشا د فرایا آور جره احماب سے عمرا سوا تھا۔ کہیں یہ ہے کہ غدیر تم میں فرایا۔ کہیں تئے كحبب آب طائف سے والي ،و ئي تو دوران خعبه آب فرايا. ليكن يبشب ورست بنبس كيونكم وسكتاب كرا مخصرت ع كلامات اور ال بينت كى علىن وملاست كالحاظ كرت بوت ادر الوكول كوان كى طوت زياده سے زياده توجه ولائے كے بيان تمام مواقع يراس مديث كو بنكوا ر ارشاد خربایا ہوتاکہ اگر میلے سے کسی کے کانوں میں یہ بات نہ برای ہوتواب يرُ مِاست م بيك كسى شع زمصنا مو نواب سن سائيه اور حبب المبيب على طاهري

اے ملاحظ فرایئے.علام ابن جرکی صواعق محرفنہ باب و فقل اکی آخری سعاری ۔ عد دیجیے صواعق محرقہ صف ۹۸ باب ۱۱ فقل اوّل

خداا درسول کے نز دیک قرآن کے ہم آبہ وہم وزن بین توج قرآن کی شان ہے وہی ان کی بھی شان ہوگی جس طرح قرآن کا انباع واطاعت ہرسلم برفرض ہے اس طرح ابل بمیت کی اطاعت بھی ہرائیہ بروا جب ولازم ہے لہٰ ذاب ان کی اطاعت اوران کے مذہب وصلک کی پابندی سے مفر ہی نہیں بمجور ہے انسان کہ بس انھیں کا انباع کرے کیونکہ کوئی مسلمان بیر نہیں ہی نہ کرتا کہ کہ آب فلا کو چھوٹ کو کسی اور کیا ہے کہ کسی اور جبر کو اس کے بدھے ہیں ابنا و تورالعل فلا کے جبر کے بدے ہیں تھی و ورسری چیز کو اختیار کرنا سلمان بنا ہے توجب کتاب فلا کے بدھے ہیں تھی و ورسری چیز کو اختیار کرنا سلمان کے لیے ناممکن ہے توکتاب فلا کے برے ہم قراری چیز کو اختیار کرنا سلمان کے لیے ناممکن ہے توکتاب فلا کے برے ہم ورب جو ہمتیاں ہیں ان سے واکوانی کرکے دو مرے افغامی کی پیروی بھی اس کی نظر چی و رست نہوگ ۔

جس نے اہلبیت سے تمسکت کیا اس کا گمراہ ہونا

اس کے علاوہ سرور کائناسن کا برارشادکہ:

" اِنْ تَسَادِلِكُ فِيدُكُمُ مَسَادِنَ نَسَعَسَّكُ ثُعُرُ بِسهِ كَنْ نَفِيدَّنُوا كِنَابَ اللَّهِ وَعِستُرُبِيُ * "

" یں تم میں ایسی جیو چیوڑے جا آ ہوں کداگر تم اسے معنبوطی سے کے پیرٹے رہو توکسی گمراہ نہ ہوگے۔ ایک کتاب خدا و دسرے میری عنزمننہ ؟ میری عنزمننہ ؟

اس کا صریحی مطلب بہ ہے کہ جس نے ان دونوں کو ایب سائف ا متیار ندکیا ، دونوں کی ایب سائف اطاعت ندکی وہ گراہ ہوگا ۔اس مطلب کی اائید اس مدیث تقلین سے بھی ہوتی ہے جس کی طبر ان نے روایت کی ہے۔جس یں

المحضرمت كيالغاظ مي بيكه:

اہلبیت کی ثال سفینہ نوع اور احطر کی ہے اور دُہ اختلات فی الدین سے بیانے والے ہیں

نیزایک اور بات جو برسلم کوتیراً البسیت کا بیرو بنال ہے اور مجور کرن ہے کہ دین معاملات میں بس ان ہی ک بیروی کی مبائے سرور کائنات کی میٹیور مدیت ہے :

" آگاہ ہوا ہے توگو! تم میں میرے المبسین کی مثال بالکل ایسی ہی ہے جیبے نوع کاسفینہ کی جوشخص اس پرسوار ہوا اس نے مخاست بائی اور جس نے گریز کیا وہ ہلاک ہوگیا ؟

نبزاً تخضرت كابارشاد:

« تھارے درمیان میرے المبیت کی شال باکل ایسی ہے جیبے بی سرا کے نے باب حقہ کر جو تخص اسس میں واغل ہوا و کی بن و باکیا ہے۔

زگر شده منی که ماشید) اور دشتویت می ال بهت سے دوگروانی کی اوران کے مقامین کے نعش قدم بر بیلے ۔ انھوں نے مدیث تقلین اوراس جیری دیگر میٹیوں پرین ہیں اتباری ال بیبت کا مکم ویا گیا ہے کہاں اور کیونکر عمل کیا اور وہ یہ وعویٰ کیونکر کرسکتے ہیں کہم اہل بیبت سے تسک کرنے والے ہیں سفیہ آئی ۔ بریمی ان کے باب معلّم ہی وافل ہیں ۔

ا امام ملکم نے من درک مبلد م صفحہ کا پرسبلد اساد جناب ابو ذرے دوابیت کی ہے۔ معد طب رانی نے اوسط میں ابوسید سے اس مدیث کی دوابیت کی ہے۔ معد طب نیونان نے کا میں موجود میز علامہ بنعان کی کتاب اربعب بن سے صعنہ حلالا پر بجی موجود

نيز آنخصرت كايول كر:

"مستنارے زبین کے باشندول کے بیے عزقابی سے امان ہیں اور میرے البسین میری است کے بیے دبنی معلوات ہیں اختلاف کے دفشت امان ہیں ہیں اگر میرے اہلیسین کی مخالفت کو لگردہ عرب کرے گا (بینی احکام اللی میں) تو وہ ایک دورے سے مختلفت ہوکر اہلیس کی جماعیت بن جائے گائے،

اہلِ بیت سے کون مُرادین ؟

ملاحظ فرمائے ان دوایاست کے دبد کیا گنجائش باتی رہتی ہے اور اہل بیٹ کی بیردی کرنے اوران کی مخالفت سے باز رہنے کے سوااور کیا چارہ کار رہنا ہے ۔ رسول سے اس مدیث بیں جیسے صاف اور بھی الفاظ بیں اس امرکو واضح فرایا ہے میں تونہیں مانتا کہ کسی اور زبان بیں اس سے بھی زیادہ وضا حسند ممکن ہے ۔

یبان المبیبت سے مراد تجوع المبیبت من حیث المجوع ہیں لین جملہ المبیبعث سب کے سب علی سپل الاستغراق مفقود ہیں ۔اس ملے کریر مزلت عرف انفیس کے بیے ہے جو خواکی حجست اوراس کی طرف سے ورج اما دیت بر فائز ہیں جیب اکر عقل بھی کہتی ہے اورا ماد میت بھی بٹاتی ہیں جنا بچ جمہور لین کے علمائے اعلام نے بھی اس کا اعراف کیا ہے موائن محرفہ

ے الم حاکم نے مندرک حلام صغر ۱۲۹ برابن عباس سے دواست کی ہے اور روابیت کرنے کے بعد کھا ہے اور روابیت کرنے کے بعد کھا ہے اور ما بیت کرنے کے بعد کھا ہے اور ما بیت کرنے درج میس کیا۔

یں علامه ابن مجرمئی تربیست رماتے ہیں:

" اور البعن اوگ كينة بي كافاله المبديت عندين رسول اشدامان فرايا به ان سه مراد علما ئه المبديت بي اس يد كه الخيس سه برايدن ماصل كي جاسكتي سه جيب سنار ول سه لوگ برايدن پات بي اورجو بها رسد درميان سه اگرمه شه مايش تو رفسك زين مح باشندون كواياست اللي كاسا منا بوجس كاان سه وعدم كيا كياسه يه

ابن فركيت بن :

" کہ بہ اس ونشت ہوگا جب مہدی تشریب لایش محے میبا کہ امادیث بس مجی ہے کہ حصرت عیلی ان کے پیچیے نماز بڑھیں گے اوراس کے اوران نیس کے زانے میں وقال میں قتل کیا جائے گا اوراس کے بعد ہے وربیے خداکی نشانیاں فہور ہیں آتی رہیں گی ہے۔ دور ہے مقام پر ابن حجر کھھتے ہیں :

" سرور کا نات نے پوچھاگیا کہ ابل بیت کے بعد لوگوں کی زندگی سے کیے بعد لوگوں کی زندگی سے بعد لوگوں کی زندگی میں ایسی ہی ہوگی میسے اس گذی وسطے کی زندگی جس کی ربیات کی بڈی وسطے کی زندگی جس کی ربیات کی بڈی وسطے کی زندگی جس کی ربیات کی بڈی

کے المعنظ فرائیے مواعق محق إب ۱۱ صفح ۱۹ پر ساؤی آیت کی تفییر۔ کے العنظ فرائیے مواعق محرف صفح ۱۸ ۱۰ اب ہم ملاصا بن مجرسے بوجھینا جا ہنے ہیں کھ جب علامے المبیب ملیم اسلام کی یرمنزات ہے تو آپ لوگ کہ حرمایش سے۔

اہلبیت کوسفینہ نوئے اور باحظتے سے کیول سنت بیہ دی گئ

آب اس سے بھی وا نفست ہول گے کرمر در کا کنات نے المدیبت ہے کوسفیت کوسفیت کوسفیت کوسفیت کوسفیت کوسفیت کوسفیت کوسفیت کوسفیت کی ہیروی اوراتباع کیا کا مسلک اختیاد کیا ،اصول وفر وع میں ائمۃ المبیبت کی ہیروی اوراتباع کیا وہ عذاب جبہہ سے محفوظ رہا اور جس نے ان سے گربز کیا سی مواجو جان ہجائے ہے ہے پہاڑ ہر جراسے گیا تھا۔ سفینہ نوع سے گربز کرنے والے کا ہوا جو جان ہجائے میں ڈو با اور المبیب ہے کہ اس فرق یہ ہوگا کرنے کے دالا تو بالی میں ڈو با اور المبیب ہے کہ کارہ کئی کرنے والا تو بالی میں ڈو با اور المبیب ہے کہ کارہ کئی کرنے والا تو بالی میں ڈو با اور المبیب ہے کہ کارہ کئی کرنے والا جہم کی اگھ بیں بی بی تون ہوا۔

اورمرور کا نمات کی المبیت کو باب مظرت نشیبه دی ہے تواسس میں دو تشیبه یہ بے کہ خدا و ندعالم نے منجلہ اور بربت سے مظاہر کے جہاں اس کے جاہ وجرونت کی مرزیان کم آگے بندوں کی عاجزی اور برنیاز م کرنے کا مظاہرہ ہوتا ہے باب حطہ کو بھی ایک مظہر قرار دیا تھا اور اس وجہ سے سے ذریعیت مغفرت بنایا تغا ، اس طرح خداوند عالم نے امست اسلام کے بیے ذریعیت میغفرت بایا تغا ، اس طرح خداوند عالم نے است کو اپنے جاہ وجروت کے آگے بنوں کی خاکسا دی وعا بری اوراپنے احکام کے آگے برت کیم کرنے کے مظاہر کی فاکسا دی وعا بری اوراپنے احکام کے آگے برت کیم کرنے کے مظاہر کیں سے ایک مظہر قرار دیا - اسی وجہ سے انباع المبیت سبب مغفرت ہے۔

ذكرك كم بعد لكصفة بي كر:

" انخصرت نے آن المبیب کوسفینہ سے جوتشبید دی ہے
تو وہ دج تشبیہ ہیہ ہے کہ جوان سے مجتن دکھے گا اور ان
کومعزز ومحتزم قرار دیگا اور ان کے علمار کی ہا بیٹ سے
مستفید ہوگا وہ مخالفت کی تاریجیوں سے نجات بائے گا
اور جوان سے تخلف کرے گا وہ کھڑان نعمت کے سمند سے
میں خوق ہوا اور طخبان و مرکشی کے بیابا نوں ہیں ہاکہ ہوا۔"
اس کے بعد دکھنے ہیں کہ :

، باب مقرسے جونشیہ دی ہے تواس میں دجہ تشبیہ بہ سہے کہ خداً وندعالم نے باب مقلمیں خاکساری وعاجری کے ساتھ استغفار کرنے ہوئے واخل ہونے کوئی امرائیل کے ہے ہیں ہوئے کوئی امرائیل کے ہے ہیں ہوئے معفوت قرار دیا تخفا اور اس طرح امسنب اسلام کے ہیے المبیت پینج بڑکی مودیت ومحبّت کو قریع پر خبشت ش قرار دیا ہے ہیں ۔

ے آب ان کی برعبارت دیجیے اور انصاف فرائے کہ علامہ ابن حبسس نے بھر فروع دین وعفائر فقر کے اصول وقواعد بیں اند طاہری کی رمبری کمیوں نہ قابل قبول مجھ ان کے ارشارات برکیوں نہیں عمل کیا ؟ کماب وسنت ، علم الاخلاق بمسلوک و آواب میں ان سے استفادہ کیوں زکیا ؟ کس بنا پران سے و دگر دانی کی اور کفوان نغیت کے سمندر میں ایتے کو ڈلو دیا اور طغیان و مرکشی کے صحاف میں بلاک بوئے ۔ ایخوں نے بمشیوں کے متعلق جو تہمت تراخیاں کی بیں اور برا بحالکہ ہے ضدا انعین معاف کرسے۔

غرمنیکہ ان ابلِ بسیت علیم استام کے انباع واطاعت کے واجب و الازم ہونے کے منبکہ ان ابلِ بسیت علیم استام کے انباع واطاعت کے واجب و الازم ہونے کے منعلق کبڑست مبح اور منوا تر صدیثیں مروی ہیں ۔ اگر آ ب کی مفکن کا خیال نہ ہوتا تو انفیس بھی مشرح واسط سے ذکر کرتے لیکن جو کچھ لکھ چکے ہیں وی بہت کا فی سے ۔

ىنن

مكتوب ماره

مزيديضوص كيخواسش

آپ میری تھان کا خیال زکیجے مزید تشریج فرمائیے ۔ خوبی نشمت سے آپ سے استفادہ کا موقع ملاہے ہیں ہمہ تن متوجہ ہوں آپ کے مکیما زاستالال نے دل میں فرصنت اور طبیعیت ہیں شنگھنگی پیدا کردی ہے ۔

س

جواب مكتوب

نصوص كامخنقىرسا نذكره

آب کی اس توجه اور انهماک کا شکر به بهبرسید تغییل مکم میں کچھ اور روشنی ڈالتا ہوں۔ طبران نے مجم کبیریں اور امام راننی نے اپنے سندہیں سبلسلہ اسسنا د ابن عباس سے روایت کی ہے ۔ ابن عباس کہتے ہیں کہ صنرت رمولی خدا سے صند مالا :

* وہ تخص جے یہ لپند ہوکہ میرا جینا ہے اور میری موت مرے اور

اع عدن ہیں ساکن ہو وہ علی کو میرے بعد اپنا ما کم نہائے اور

میرے بعد میرے المبیب کی بیروی کرے کیونکہ وہ میری ویئر

ہیں اور میری طبنت سے بہا ہوئے ہیں اورا نھیں میرا نہم میرا

علم عطا ہوا ہے۔ لماکت ہواس کے بیے جوان کے نفنل در شون

کو جھٹا ہے۔ اور ان کو مجھ سے جونز ابت ہے اس کا خیال نہ

کرے۔ فعل ابیے لوگوں کو میری شغا عست نفیسی ندکر ہے ہے ۔

مطیر یا رودی ، ابن جریر ، ابن شاہین اور ابن مندہ ابل اسحان کے واسط سے

مطیر یا رودی ، ابن جریر ، ابن شاہین اور ابن مندہ ابل اسحان کے واسط سے

زیاد بن مطرف سے مروایت کرتے ہیں ۔ زیاد کہتے ہیں کہ :

« ہیں نے فود رسول اللہ م کو یہ کہنے صنا کہ جوستی ہیں کہ :

مع خیک ان بی انفاظ میں یہ مدیث کنزالعال ملدہ صفی ۱۱ میروج دہے۔ منتخب
کنزالعال میں بی بہ مدیث اِن رکی گئی ہے۔ ما منفر ایک نتخب کنزالعال برحاشیہ
مندا حدین منبل مبلدہ صفی م المبناس میں عرف انتا ہے کا تھیں براہم ویا گیا
ہے علم کا لفظ نہیں ۔ غالبًا یہ کا منب کی غلطی ہے ۔ حافظ الوننیم ہے می اس مدن کی اس مدن کی اب سے ملم کا ایف ملید بین دوایت کی ہے اوران سے علام محز لدا بن الی الحد برنے مثر ح نبیج البلاع د دارتانی صفی مدر بنظ کیا ہے ۔ ا) ما حدین منبل نے مجی ایس مدین منبل نے مجی ایس کی دوری منبل نے مجی ایس کی مدریث الرمنا ورشا فت علی دولوں کی اوران میں نتی ہے۔ ایس مدریث الرمنا ورشا فت علی دولوں کی الم میں نتی ہے۔ ایس مدریث الرمنا ورشا فت علی دولوں کی اوران میں نتی ہے۔ ایس مدریث اللہ مدریث اللہ میں نتی مدریث اللہ مدریث اللہ میں نتی مدریث اللہ میں نتی مدریث اللہ مدریث اللہ میں نتی مدریث اللہ مدریث اللہ میں نتی مدریث اللہ مدریث اللہ میں نتی مدریث اللہ م

کرمیرا جینا جیئے اورمیری بوت مرے اور اس جنّست بیں وافل ہو
جس کا وعدہ مجھ سے میرے بروردگار نے کیا ہے بین حبنت خلاوہ
علی کو اور علی کے بعدان کی اولاد کو اپنا حاکم بنائے کیونکہ وہ ہرگر الماسیت کے دروازے سے تغییں باہر کرنے والے بنہیں اور نہ گرائی
کے دروازے بین پہنچاتے والے بین والے مرائی اس کے دروازے بین ہے کہ انحصرت نے فرایا کہ :
ای طرح زیرین ارتم سے مروی ہے کہ انحصرت نے فرایا کہ :
«جو تخص میرا جینا جا بہنا ہوا ورمیری موت مزا چا بہنا ہو اور جست کا فدائے تجھ سے وعدہ کیا جنت نے فدیں دیا جا بہنا ہوجس کا فدائے تجھ سے وعدہ کیا ہم نہ کے دو مائی کو اپنا حاکم بناسے کیونکہ وہ ہدا بیت سے بخصیں اہم نہ کریں کے اور نہ گرائی ہیں بھیں ہے جا بین گے "

نے کنزالعال مبلد ہمنے ۱۵۵ منتخب کنزالعال برماشیدندا مرجلہ حمنی ۱۳ علام ابن جوعقان فی مختصر العال مبلد منوری کو اس کے جدائیت بیں کہ اس معدیث کوابی کتاب اصابہ بیں زیاد کے مالاست میں اکھا ہے اس کے جدائیت بیں کہ اس معدیث کو میں مندیث کے سلفہ رواق میں کہ بی بریان مار ہی ہے اور صعیعت ہے ۔ بس کہ تا ہوں کہ ابن جرسقانی کا ب محصر کا بالاتفاق گفتہ اے گئے ہیں خود الم مجاری نے معیم بالای میں مغرورہ مدید بیرے کے ذکرہ میں ان سے مدیث ہیں ۔ الم ملم ہے کہ کتاب الحدود میں ان سے مدیث ہیں ۔ الم ملم ہے کتاب الحدود میں ان سے مدیث ہیں ۔ الم ملم ہے کتاب الحدود میں ان سے مدیث ہیں ۔ روابت ک ہے ۔ علام قبیر ان کو گول ہیں شاکھ اسے اور مدید کو معربیت کو معا ہے اور مدید کی گئی ہے کہ بعد علی مقبیر ان کو گئی ہیں ۔ مدید کو کھا ہے اور مدید کی گئی ہے کہ بعد فرانے ہیں کو دری ہیں کیا ۔ طران نے کمیری اور فرانے ہی کو مدید کی معالی مدید کو مدید ہیں کیا ۔ اور مؤتر کم مزالعال ہر ماری مدید معذ ۲۲ پر بھی موج د ہے ۔ الم ماری بر بھی موج د ہے ۔ مدید میں موج د ہے ۔

جناب عاربن بامس صمروی ہے کہ آن عنرست نے فرا با :

* بیں ہراس شخص کو جو مجھ برا بمان لا با اور میری تعدیق کی وصیبت کرتا ہوں علی کی ولا بہت کے متعلق جوا تغییں دوست رکھے گادہ مجھے دوسست درکھے گا وہ فدا کو دوت مسلمے گا اور جو مجھے دوسست درکھے گا وہ فدا کو دوت مسلمے گا اور جو مسلمے گا اور جو محب میست کرے گا اور جو اور جو اور جو محب بنت کرسے گا اور جو علی سے معبت کرسے گا اور جو محب بغض درکھے گا اور جو مجھ سے بغض درکھے گا دو مقداست بغض درکھے گا اور جو محمد سے بغض درکھے گا دو مقداست بغض درکھے گا درکھے گا دو مقداست بغض درکھے گا دو مقداست بغض درکھے گا دو مقداست

جناب عارسے به مدیث بمی مروی ہے که اکفرست نے ارشاد فرما !!
" جومجه پرایمان لایا اورجس نے میری نفسد بن کی وہ علی بن الی طاق کو دوست در کھناہیے اور جھے دوست در کھنا خلاکودوست دکھناہتے ہوں

اکیب مرتب حفزت سرورکائنات نے خطیہ فرمایا بعیں میں کہا : * اے لوگو! ففنل وسرف اور منولت و ولایت خداکے رسول کی فرتبین کے بیے ہے المذاتم لوگ باطل میں نربط جانا ہے:

سے طران نے کبری ابن عساکرنے پی آئریج ہیں اس مدریث کونغل کیا ہے کہ زالعال ہلدہ میں ہے ہے۔ سے طرانی شفاس مدیث کوکیری درج کہا ہے ، کھڑ العال جلد 4 صفیے 4 ہر بھی موجود ہے ۔ پھتے ب کمنزانعال بری ہی ہے ۔

سله الوالمشيخ نه ايك طولان مديث بي اس فقل كياب اوران سے تعنير كيم وقت كے خن بي ابن جونے مراعن كرة مغره ١٠ يرنس كياب .

المنخفزن في بيجي ارشا ومستسدما إكر:

" میری است کے بادی ہرد ورسی میرے اہلیبنٹ کے عاول افراد ہوں گے جواس دین اسلام سے گراہوں کی تخربیت ابل باطسیل ک جہست تراخی اور عابلوں کی تاویل کا ازالہ کرتے رہیں گے ،آگاہ ہو کہ مخصارے ائم تر خدا کے حضور میں مخصارے تمائندہ ہیں للہٰ واسوچ مجھے لینا کہ کے ابنا نمائندہ بنا کرمجو کے ہے،

يهمي آ مخصرست افے فرایا کہ:

* دیجوان سے آئے نہ بڑھنا ورنہ ہلاک ہوجا ؤگے اور نہیجے رہ مانا ورنہ ہلاک ہو جا ؤگے اور انفین سکھانا پرطھا ہیں کریہ تم سے خود زیادہ جائے ہیں ؟

یہ مبی ادمیٹ وفرا اکی ہ " میرسے المبسینہ کوا ہساسمجوجیسا سر بدن کے بلیے اوراً تکھیں م

سیرے ہیں ہوری محوسی سربرن سے بے اور ا کے لیے ہیں اور سرا تھوں ہی کے ذریعے راہ باتا ہے ہے

ئے ملّاے اپی *پرمتیں یہ مدیث* درج کی ہے جیسا کہ آبیت وقتو ہسمہ امن**ھ**ھ مسسٹولون کی تغ*ییری این تجرکی نے موامل تم قدمنائٹ پرنتخ بریکیا*ہے ۔

سنه طرانی نے مدیث تعلین میں اسے مکھلے اوران سے عامراین جرنے آبت و معنو ھم ان ہم مستوون کی تغیری موامق محرف اب الا مسائلے ہم فعل کیا ہے۔

پیمبی ارسٹ و فرمایا کہ :

* ہم اہل بریت کی عبت کواپنے اوبرالازم کرلوکیونکہ بریخف خدا سے ملاتی ہوا ور مہیں دوست بھی رکھنا ہو فدا و ندفالم اسے ہماری شفاعت کی وجہ سے جنت ہیں واخل کرے گا رقتم ہے اس معبو و برین کی جس کے قبطۂ قدرت ہیں میری جان ہے کسی نبدے کواسس کا عمل اس و نشت کک فائرہ زبہنچا ہے گا احیب تک وہ ہا درہے توق فرہنے یا تنا ہے ہے ۔

زبہجا نتا ہے ۔

زبہجا نتا ہو ۔

برمبی تخطرت منے فرایاکہ:

« آلِ مَدُ کی معرفت عذاب جہنم سے دائی اوران کی معست بل صراط سے گزرما نے کا پروانہ اوران کی ولابت عذاب سے امان ہے ہے "

العطران نداس مدیث کواد معلیں درج کیاا درطائر بیل ندا میارا لبت بی علاد بهان نے
اربین الاربین بیں اور علاما بن جونے صواعتی تحرقہ بی اسے نشک کیا ہے۔ فرارول کے اس جلہ کو
اجھی طرح سوچید کہ کس بندے کواس کاعل اس و انت تک قائدہ زیہنچائے کا جب بک وہ مائے
مقری کو زیمیجا نتا ہو ۔ اور خدار بھے بنائے کہ وہ می ہے کون ساجے خدان دعا لم ہے اعمال کی صن
کے لیے شرا قرار دیا ۔ کیا دہ می بینیں ہے کہ معزات اہل بیت کی اتباع و بیروی کی جائے ۔
ان کے امکام پر نشیم فم کیا جائے اور ان کے فدیع خدا تک بہنچا جائے اور ہوا نیوت و خلافت کے وہ کون
سامت ہو مکتا ہے جس کے اثرات اسے ہم گر ہوں ۔ لیکن ہما ارسانی توالی قوم ہے ہے جو
سامی ہو مکتا ہے جس کے اثرات اسے ہم گر ہوں ۔ لیمن ہما ارسی ایمن و البیان قوم ہے ہو
تامل د فکریت کام ہی نہیں لینی ۔ افادی کے واسا المسیسے واجعون ۔

کے شفار فامنی عیامن مسکوتم ٹانی معلوع آستا زستستاندہ آپ بھی سکتے ہیں کہ بیال مونت سے مراد محص ان میناداتی اعلام موجد کو میان بیناداتی اعلام موجد کو میان بیناداتی اعلام موجد

يربعي آپ نے فرمایا کہ:

" قیامت کے دن موقعت حساب سے کسی شخص کے بیر نہیں ہیں گئے ۔ یہاں کک کداس سے بوجھا مبائے گا کہ تم نے اپنی عمر کن باتوں ہیں گراری - ا بہنے جم کوکس کام میں لائے - مال کوکن امور میں حرف کیا اور کہاں سے مما البدیت کی محبت مجے سنعاق موال کیا جائے گائے ہے۔ سنعاق موال کیا جائے گائے ہے۔

یه مجی ارشاد مسند را یا که :

" اگر کوئی شخص رکن و مقام کے درمیان اپنے دونوں قدم جمائے عمر مجمائے مرکبر میں ان محروب کا استحاد کر استحاد کا میں مائے گائے اور دوجہے میں مائے گائے ا

د گوشته صفی کاماشید) بنیس کیزی تر اولهب وابوی باری جانتے تھے بلکه موفت سے رادید کے لیدریول المستن مفی کا مستردید کے ابدریول المستن وقع بعد رون امام زمان و سات مید تر جا الحدید تا برختی این این الم کا موفت عامل یک الفیری این ایم کا موفت مرا بر محتار است المبیت کی موت مرا برای الم کا موفت عامل یک الفیری ایم کا ایم کا موفت عامل یک الم می موفت مرا برای ایم می المبیت کی موت و دلایت مرادید بروما مبال من ایم می الم بیت و می میت و دلایت مرادید بروما مبال من ایم میت می می میت و دلایت الم دواجب ب دری میت الم میت الم میت سی الم بیت می میت الم میت میت و دلایت الم دواجب ب دری میت الم میت سی الم بیت می میت الم بیت می میت الم بیت می میت الم بیت الم بیت میت الم بیت الم بیت میت الم بیت الم

اے اگر صفرات ال بیت نداو دعالم کی جانب سے اس مصیب پرفائز نہ ہوتے جو ستوب اطاعت واتباع میں مصیب نوان کی جانب سے اس مصیب پرفائز نہ ہوتے جو ستوب کیا ہے اور ان کے علائے اس سے دوایت کیا ہے اور ان سے علائے سیوٹی نے احیارالیست میں اور نہمان نے اپنی اربین میں نیزادر می متعدد علائے اعلام شاخت کیا ہے ۔ اعلام شاخت کیا ہے ۔

عداس مديث كوظران اورامام ملك ووايت كيدب عبداك علام شهانى كالهبن (بان المومغي

يهمى ارست د فرمایا كه

" جوشف محرست آل محرا برمرے کا دہ شہید مرسے گا۔ دکھو ہوئیت ال محرا برمرے گا وہ مغورمرے گا۔سارے گناہ اس کے بخشس دیدے جائیں گے۔ دیکھوجومحست آل محرا پرمرے گا گویا وہ الیتے تمام گناہوں سے توہ کرکے مرا، دیکھوجومحبت آل محرا برمرا وہ مومن اور کامل الابیان مرے گا۔ دیکھوجومحبت آل محدا بر مرا

(التيماشيرساك)اورعلكسيولى كى احيارا البيعندين فركور بعديد مدريث سابق والى مدريد التمريد امی دان برس کی جرم کے فیغد تذریت ہیں میری جان ہے کی مبدے کو اسس کا عمسل اس وقت تك فالده ندينج الي كالعب تك ومهامي حق وي كربها إنان بوك فالرب الفعات ذائب كرال كا سے دُین مداور الا سے وقمی رہونی آبان کے وقت کے اعمال وانظاں کیوں مانے اور اگر برحصرات مباننين دفائه تعام بيريس من ترييمنولت اعنبس كيسيماصل بوسكتى عنى والماماكم اواين ال ف ای مدیث کی تناوی بس (میدا که علامت ای کی اربین اور یولی کی احیا بالبیت بس فرکورم) الدميدے دوايت كى بے كرميني الفظرا "قنم ہاس فاسندكى سب كے قبندي ميرى مان بع ويتفس مى بم المبيت لعن و كليكا ومنم من مائكا اورطران نع (جيها كرنهان كى الدين ادرسيطى كى احيار الميسندين فركورس المحن يحص روايت كى ب المحن ين معاديان مديج مع وزايا " وكيونرواد مم إلى بيت سعافض نه ركمنا كيونك معزست مردر کا ناسند فراچے ہیں کہ جاتف ہم سے بعض رکھے گا یا ہم سے حد کرے گا فياست كدن حون كو ترسه النتي كورون كدر نو معبالا ما سكال المدرتم كام فغطيرا إلى المع توكو مستخض في مالبين مع البين المعان ركا خداد المالم تباست کے دن اسے دین بہودیر محتور کرہے گا۔ طران نے اس مدیث کی اوسط میں روابیت کی ہے جيها كداحيار المبست ادر اربعين بين سع.

ملک لموسن اسے جنت کی بشارمت دیں گے بچھ منکر و کیرحبنت كى خۇشخىرى دىل كى . دىكىومومىست الىلىمىت يرمراحىتىن يىل بول سنوار كرف مايا مائك كاجيب دلهن ابين فاوند كمرع مائي الى ہے . دیجوج محبست الى ربيت پرمرااس كے بيے قيرس دوررواز جنت كي كول ديم اين على وكيوج مست الى بيت يرمرا اس کی قبرکوانڈ زیادست گاہِ ملائکہ دیمسنٹ بنا دسے گا۔ دیکھیوجو عبست اكم محرميم مرا وه سننت وجهاعت يرمرك كاديكيوم وبغض ال مير پرمرا و مقياست كے دن يوں ائے كاكماس كى دولوں التحول ك درميان يه مكما برگاك"به رحمن فداس ايوس سع" " غرضك وخطبة نك آب في في اسى كى تؤميع فوائى سبى ديد قطبه صفرت كا خطبه عص كام معشروب اورتمام عقبين علار المستن الي كتابون مي اسس خطبه كودرج كياب واس خطبه بي المخصرت في منهول كي تمناول برإني بيه فيا عقالان ا ماديث كے كل مضاين متواز بين حصوصًا بطريقِ المبسبت واورز بادة آنخفزت نے اُں محرکے اس قدریفنائل جوبیان کیے۔ان ک*ی حب*ت کی اتنی ناکید حج ک ان کی ولایت کو بکرانند و مرّانند اعظمے بیٹے بیان جوکیا و مکیامرف اسس وجه سے کدیر مصرات آپ کے عربیز و قرابت دارستھ ؟ اس بنا پر تو رسول کی

شان عوام ک شان سے بھی لیست ہوجانی ہے ککہ رسول مسنے اتنا استمام حرصت

کے امام ثُعلی نے اس مومیث کواپنی تغییر کمیر میں آب مودت کی تغییر بیں جرمِ بن عبدالشر کِلی سے مروایت کیاہیے ا ور ملامہ زمخسے ہری نے بطور مسلّماسٹ اس مومیث کواپئی تغییر شیں ورج کیاہے ۔

اس ليكياكريد مفزات خلاكي تخل حبست تقع اس كى شراعين كم مرسمير تقفاورام و ضى ميں ديول كے قائم مقام عفے اور ديول كى بدايت و تبليغ سے اثر يزيم و نے كابت بى دكست اوروا فع موز فق المذاجواك ساى حيثيت سے كر برحبت مدابي، مانشين ومول بس اور دروال اسلام كامكل زين موزبس ميتن كريكا وه خداى مجت مجى ر كھنے والا ہے اور دسول كى كى اور حوال سے بنعن ر كھے كا وہ خدا سے مجى بغض رکھنے والا ہے اور رسول سے بھی۔ انخفرت فراچکے ہیں کہم سےلس وہی محست دمكه كاجهومن ويرميز كارب اوروى بغفن دسكم كاجومنانن وبرجست سے ای وجے سے فرزوق نے ان معزات کی شان میں کما ہے ۔ حن معشر حبهم دين وبغمنهم كمعود فتربهم صنبى ومعتصم إن عُدَّ اهل التي كانوا أسَّمتهم اوقيل من خيوا هل الاين نيلم ۱۱ بداملم زین العا پرین اس جماعیت سے بیجن کی محبیت دین ا ور مِن کی دشمی کغرسے ۔اورجن سے نزدیجی ذریعی مخاسدا ورجائے بنا و ہے ۔ اگر بربر گار نوگ شار کیے جابل تو برابل ببیت ان کے امام وبینیوا ہوں کے یا اگر یہ سوال کیا مبائے کرمیترین إلى ارمن كون سي تويي جواب طے كاكر برابل ميت بي مين يه

ادر امرالومنين علياسلام فرائ بي كه :

ا یں اور میری پاکیر و نسل اور میری نیکو کارعز سے بچپی میں تام نوگوں سے زباد و علیم اور بڑے ہو کر سب سے زیاد و علم والیں اور ہا دے ذریع سے خدا حجوث کو زاک کرے گا۔ ہما رے ذریع

ا لما خاس مدیث کی روایت کی ہے کا مناہو صواس محرقہ باب ۱۱

سے خونخ ا بھیر اول کے دانت توڑے کا ہمارے فدلوی تعین رائی ولائے گا اور تقاری گرونوں کی رتی مبدا کرے گا۔ خدام سے ابتدا

کرتاب اور ہم برختم ^{یا}

لبذا بم حديوًا لِمحدَّكُوان كے اغبار رِرْمِيح دی اورمقدم مجعا تواس فيے كم خداوند عالم نے الخیس مسب پرمقدم رکھا اور ہراکی۔ پرترجیح دی پہاں کے کہ نمازس ان پر در در دهجینا تمام بندول بر دا حب قرار دیا تمیا اگر کوئی پوری تماز یره دامه اوران بر درود نه سیج تواس کی نماز صحبی نبین به سکتی خواه وه کسیا ہی صاحب نفنل کیوں ندہو بلکہ ہرنما ز گزارے بیے صروری ہے کہ اس طرح نما ز پڑھے کہ نمازیں ان پر در ودیمی سے جس طرح کائے شہادین کا ا داکرنا صروری ب بنیرت بدک نماز بیس اس طرح بغیردرود کے میج بہیں - اہل بن علیم اسلا كى بدوه مىزدلىن بيئيدوه درجه ومرتبه بيعجس كماشف تمام است كى گردىيى حم ہوگئیں اور آپ نے جن اماموں کا وکر کیا ہے ان کی نسکا ہیں بھی اہل مبیت^ہ ك علوت مرتبست ك آك خيره موكيس دالم مث عنى فرات بي -

يا احسل ببيت رسول المتَّاءِ حسبكم فرض مس اللَّه في القرابي استزل ه

كعاكم من عظيم النصل أيكم من لم يصل عليكم لاصلاة له

" اے ابل بیت دیول فدا آب وگوں کی مبت خطوند عالم نے ابنے ازل کردہ قرآن میں فرمن تبائی ہے۔ آپ کی بزرگ ولمنعی نفتل وسرن کے بیے بس مین کانی ہے کہ جونماز میں آب پر دروو

ئے عبدالنی بن سبید نے ایعناع الاشکال میں اس روابیت کو درج کیاہیے ۔ کمنزانعا ل طد بصخ ۱۹۲ برمجي وجود ب-

سيجيج اسس كى تماز انماز بى بنبين ا

یرجیت دبیلی جوابل بریت بینی رکی اطاعت وا تباع اوران کے قدم ب قدم جلنے کو داجب بتاتی ہیں اماد میٹ بنوی سے بیش کر کے فتم کرتا ہوں کی آپ کے بیے کانی ہول گے . فران مجید میں بے شار محکم آئیس ہیں ان کا مجی بہی فیصلہ کے کس اہل بریت میں کی بیروی واجب والازم ہے . آب جو کہ خود میں ب فیم وبعیرت ہیں اور ذکی و ذہین ہیں اس بیے میں اشارہ کیے دیتا ہوں آب کام مجید کا مطالعہ فرمایش آسانی سے آپ کواندازہ ہوجا گا۔

ينثى

مكتؤب فبالرا

ہمار*ی تخریر پر*اظها رکسیندیدگی

ن ایپ کا کتوب گرامی با کرمٹرف باب ہوا۔ آپ کی قوت بخریز دورہیا علی تبخر اور محققانہ شان کا میں قال ہوگیا۔ آپ نے تو کو فی گوشہ اتی نہیں رکھا اور تحقیقات کے خوالے آنکھوں کے سامنے کردیے۔

> حبرت و دہشت کہ مذکور امادیث اور جہر کی دش کو ایک کیونکر کیا جائے ؟

حب میں ہے آپ کے احتدالال پر عور و فکر کیا اور آپ کے او آروبا بین پر گہری تگاہ کی تو میں عجیب تر د د کے عالم میں پڑا گیا۔ یں آپ کے او آر پر نظر کرا ہوں تو اخیں بالک ناقابل رو دیجتا ہوں جنے نبوت آپ نے بیش کے ہیں ان کو دیجتنا ہوں توسوات ہے کو دیجتنا ہوں توسوات ہے کو دیجتنا ہوں تو خدا ورسول کے تر دیجت ان کی وہ منز لست معلوم ہوتی ہے کہ سواعا بری و خاکسا می سے سرحجکا دینے کے کوئی چارہ نہیں اور جب جہور سلین اور سواوا عظم برنظر کرنا ہوں تو ان کا طرز عمل ان او آسے معہوم کے بالکل برعکس ہے۔ اور سواوا عظم برنظر کرنا ہوں تو ان کا طرز عمل ان او آسے مورجہور ہرکس و ناکس کا بچری کرنے ہیں کہ بس ان ہی کی بیروی واجب ہے اور جہور ہرکس و ناکس کا بچری کرنے ہیں کہ بس ان ہی کی بیروی پراکا اور نہیں۔ بی عجب کش کمش میں مبتلا کرنے ہیں تا ہوں گی اور فوا مواد اعظم کی روشش برجانا جا ہے۔ ہوں گی جا موں کا تف میں جانے والا کی جا سے اور آپ کے اخذ سے جانے والا کی بیروی وجہ سے آب کے اخذ سے جانے والا مہیں میکن دوسرا جو ہے وہ اپنے عاد کی وجہ سے آپ کے ان خدیں جانے والا مہیں نیکن دوسرا جو ہے وہ اپنے عنا دکی وجہ سے آپ کے انتقاب کا برتبار نہیں اور نا فرانی پر تاکا ہوا ہے۔

كلام مجيدے ادله كى خوامش

آب کتاب خارے کھا ورائی قطعی دلیلیں پیش کرنے جو برکر شافن مجی قابویں آجا آ۔ اور رائے عامر کی مقابعت کی دھن دماغ سے تکلتی۔

جوابب مكتوب

کلاً) مجیدسے دلائل

آسب بحده ان لوگول میں سے ہیں جو کلام مجید برگہری نظر رکھتے ہیں اور

اس کے دموز واسرارظا ہروباطن سے واقعت ہیں آہے۔ تودعود فرائیے کہ کمیاا ورکس کے متعلق مجی ایسی واضح آئیس نازل ہو بئی جیسی کہ اہل ہمیت طاہری ہی گان میں نازل ہوبئی کیا کام مجسید کی ممکم آئیوں نے سوا اہل ہمیت کے کسی اور کی طہارت و باکیزگ کا حکم سگالی۔

المربیت کے لیے جیسی آبتِ تظہیر ازل ہوئی کیا دنیا بھر کے توگول میں سے کمی ایک کے لیے نازل ہوئی عیم ؟

کیا قرآن نجیدے اہل بہت مسمے علاوہ کی اور کی مجتسن ومودنت واجب ہوسنے کو بتایا ہتے ؟

علیہ کیا آی مباہد اہل بیت ایک علادہ کسی اور کے متعلق نے کر جبر ٹیل ماز ل ہوئے؟

اع ميداكد ايت تعليران عروس وكندكى دور موسف كوتات ب-

الع بركزنين المبيت كى يدوه نعنيات درون بيجرين الكاكد فى شكيبنين .

سے برگرنیں بکھرناخین کے مائی بر نفیلیت بھنومی ہے۔ فداوندگریم نے بس انہیں کی مجبت فرمن قطر دی ہے اوراس محقومی نفیلیت سے ان کو مرکب و مدہر برخون بجنا بچا در فائد ہوتا ہے کہ دو اسے دمول کریم تم سے بنی دمالت کا کو کی اجرنہیں طلب کرنے سوالہ نے قرانبوار سی کی مبت کے اورجو مشخص نہیں مامل کرے کا دہیں ان سے عبت و سکھا ہم اس کے بیاس کی خوب بس اصافہ کریں گے۔ بخت دائوں کی بڑا بخشنوا لاہ (اوران کی مجت کا بڑا فدروان ہے) تغییر فیلی میں ابن عباس سے دوایت ہے کہ بڑی سے اگر کی دوستی مراو ہے اور علاس و محتری مارو ب اور علاس و محتری دوا بہت کی ہے و دیکھیے تقسیر کھٹا ہوں سے جد سے معروب سے معرو

سے ہیں ماہر میں سب اخیں کے منتلن بانعصوص نازل ہوئی چنانچارشاد خداوند عالم ہے کہ دولے دمیل کہ داجھامیدان ہیں آک ہم اپنے پیٹول کو بائین تم اپنے میٹوں کو باؤ۔ كياال بيت كعلاه وسوره هلا في كس اورى شان بين فقيدة مدجب بن كرنازل بوآج

كميا الي بينة بى خداكى وه رئى نبي جن كمنعلق خداف فرايا به : " واعتصموا بحبل الله جميعاً ولا تعنرقوا " " تم سب خداک دی کومضوطی سے پکڑے دمواور میراکسندہ نہو" كماً الرابينة مى وه صادقين نبير بن جن ك ستلق خداف فرايا ب:

ا وراسورة مل الله المبينة كى مدع اوران ك وتنول كى مدمن من اللهواب . عدام تعلى الما المنافغير في المسلك الماد المن المنافعة ال

ردايع كب المعبغرملق زرات تع كريم وه نعاك دى بين بن كم سنان مدان زاياب كى خلاكى رسى كو معنبوط يكرشت ديمواور يراكنده نهرو- ابن جرسكى فيصفى ادل باب المواعق

موقد مين دو آيين اكتفائي مي والربيت كم متعلق مازل دويُن جنافي اس اكت كوان آيات بين شار

كمياب اورائمون في تفيى سنقل كرك المجيع مادن عليات ام كاقول ذكر كياب وشفنة العادي

یں اام شائنی کے یا شار خدوریں سے

ولما وابيت الناس قد ذهبت بهم مذاهبهم في ابحرالني والمجهل

ركيت على اسم الله في سفن النجا وهم احل بيت المصطفى خاتم الول

وامسكت حبل الله وعو ولاومهم كماقد اموناب التمسلت بالحبل

جب یں نے دیجے اکد ال بہیند کے بارے یں لوگوں کوان کے خرب گراہی وجہالت کے مندر میں مے جا دہے ب توس خوا کا نام نے کرسفید بھاسہ پر کوار ہو گیا این حصرت محرصعلیٰ خاتم المرسلین کے اہل میت سکے ماتھ ہوتھیا اور پسنے خدا کی دی جوان ہل بہیندہ کی محبت وا طاعت ہے معنبوطی سے بکیرا ہی ۔جبیبا کہ ہیں

حكمى دياكيلىپ كەخلاك دى كومىنيوملىسى بكرا در

« وكسونوا مسع المساددتين "

كباال بين مى وه فداكى راه نهين جس محمنعاق فداف فراياب:

" ان هٰذا صرالمي مسستتيكًا مَا تَبْعُوهُ ـ"

کیاابل به بنه بی خداکا وه واحد داسته نهیں جس کے متعلق خدانے امست اسلام کو حکم دیا:

م " ") "." * ولاتتبعوا السسيل مُتشوق سِكم عن سسبيلة "

الى بىيت كوچھوڑ كر دومرى دا بين نداختيا دكر وكدا صلى داسته بى

معدمدا برماد.

كيا الى مين يى وه اولى الامرانيس جن كم متعلق خلانے فرايا ہے:

« يَـاايهـاالّــذِينُ امــنوا اطــيعوااللّه واطـبعواالرسول و

اولىالامسومستكع "

" اسے ایماندارو! اطاعست کروخداکی اوراس کے رسول کی اور شہر سے جواول الامرائی ا

ئ صادفین سے مرادیها ن معزت دیول فدا اور انسابل میت علیم استام می میداکد به ری میج اور شوات مدینی تباقی به است علاوه معزان این سنت کریمان می میش به دورد بین جو باتی بی کرماد قبن معراوی معزات بی میداکد ملفظ ابولیم اورد فق این احدث روابت کی ب اوران سابن مجرث مواعق می قدیاب ۱۱ مغی می پرفتل کیا ہے۔

نه الم محرباتر وجعز صادق مليبال الم فراتيب كدعران تنيمت مرادانام ب اور الامتبعوا المسبل دومرى واين زاختياد كرو) سع مقفود به ب كر گراه كرف والدامون كيبروى نركرو كرامل است رايين بم سى تم مدا جوما و.

سه تقالاسلام حمرن ليتوب كلين في نداي بريه على سدوايت كى بع بريده كمن بن (باتى الملم مؤر)

كيا اللهيت من وه صاحبان ذكر منه بن كم متعلق خط نے خوايا ہے:

" حناساً لواا حسل السذكو ان كسنت و لاتعلى مون "

" أكرتم نه بن مباشة توصاحبان و كرسے بوجيو "

كيا الله بيت " بى وه مومنين نه بن جن كے متعلق خدا كا ارمشاو ہے:

" وحسن يشا قق السوسول حسن بعد مسا متبين لسه الهدى

ويستبع عنب وسيد المومنين نولسه حسانولى ونصلسه
حهد عن "

· جوشخص بدابیت کاداست وا منع بوجانے کے بعد درسول کی مخالفسند

بقيد حامشيد علش كري شاملم كرباز على قول فلا وبرعالم اطبيعوا الله واطبيعوا الرسول واولى الاصو حسنكم " كرمشلق در يا نست كيا تواكب ني جواب بي بدائيت برض والحطاعة السع توالى الدحت اولى السندين اوتنوا مصيباً حسن الكتاب يومسنون بالمجبت والمطاعة ويتقولون المدوين كم عنووا هسو لاي احسدى حسن المدوين امتواسببيلا" مكياتمان اوك كونين ديجية جنين خوراً بهت كاب كامل الهد وه شيطان اور طافوت برايمان وي مي اوركز اختيار كر في والى كرية بي كريه ايجان الات والول معزياه والواست بربي يه في اوركز اختيار كر في والى كرية بي كري المجان المراب عام المول المراب كريت المجان الله والول معزيات براي المحترات بربي يه مي المواد المواد المواد المواد المواد المحترات المعن المناف المواد المحترات ال

ك الم شبى نعابى تعييري جناب جابري روايت كى به كرجب برايت ازل بول قاميلومنين شف فايا كرم بى وه الى ذكرين بى جدائم طابرين سے نعز ل سے معادر بحرى نديسے زياده عدشيں اج ابن درج كى بي ب كامنى در بي ہے ، کرے گا در دومنین کا داستہ جبور کر دومری داہ چلے گا ہم اس کو
اس کی دوگردان کا مراح کھا ہیں گئے ۔ "
کہا اہل میت " ہی وہ بادی نہیں جن کے متناق مسترا الب :
" اہندا انت حسندر و سکل شوم ھاد !"
" اے دسول " تم ڈرائے والے ہواور ہر توم کے لیے ایک بادی ۔ "
اور کہا اہل میست " ہی وہ توگ نہیں جن پر خلا ہے اپن نمتیں نازلکیں اور جن کے متعلق خداوند عالم نے سورہ فائحہ میں ارشاد فرایا ہے :
" احسد ناالحراط المستندید حیراط السذین آ کہ حست علیهم "

" خداوندا نہیں راہ راست کی ہدائیت کران لوگوں کی راہ مین پر توشعہ اپنی نعنئیں نازل فرائیں ؟ اور دویمری مجدمت رما باسے :

* مَنَا ولم لله مع السدين انعم الله عليه عرمن النبيين والمسلم عن والمسلم قداء والمسلم »

* اوروه مومنین بندے ان لوگوں کے ساتھ ہوں محے جن بر خدانے اپی منعن نازل کی ہے ؟

كى خدا وندعالم نے انجیس كے بيے ولايت عامر نہیں قرار دى اور دسول كے بعد ولايت كا الخصار الخيس ميں نہیں كرديا ويلا جيد سيت :

اسنما وليسكم الله ورسول والسذين آمنوا السذين
 يعتيمون المسلوة ويونون الوكوة وهدر المصعون "
 است لوگو المقارا ولى ضراب اوراس كارسول اور ده لوگ جو
 ايمان للسك جونماز قائم كرت مي اورمالنند ركوع مي زكاة يعتين "

له قبلی نے اپی تعنیری بسلسانظیر سودہ فاتخد ابو ہریرہ سے دوایت کی ہے کے حراط مشتم سے مراد محد وال محد کا دامست ہے اور وکیج بن مبدل سے اس آیت کی تغییری مری ہے ایھوں نے سنیان ٹوری سے انفوں نے مدی سے انفوں نے ارباط و نجا برسے اور انفوں نے جناب ابن عہاس سے دوایت کی ہے کہ احسد نا المصور اط المست تقیدہ کا مطلب یہ ہے کہ تم کہوا سے معبود محدواً کی محبت کی طوت ہاری رہ ما اُن کر۔ یہ کو کی شربہ بین کہ انج المبید بینے باسلام میدومردار میں مجلم عدیقین وم ہرار وصالیون کے۔ سے تمام مغیری کا انجاع وانغان ہے میسا کہ علام تو بی سے نرس تجربی اس کا احتراف کیا ہے (ادر یہ علام تو شی اشاع ہ کے ایک سے بیں) کہ یہ آبیت (باتی حاشیا گئے صفی ب اوركيا فدأف مغفرت كوهنق نهي كرديا عرف ان توگول كے ساتھ جوتوب كري اورائيان لابئ اورعمل مسالح كري اورسائق سانظ ولابيت آل محداكی طرف بوليت ياب بحی ہوں جيباك خود خداد ندعالم شے فرايا ہے: " افتى لغ خار لمدن تناب و آحدن وعد مل صالحہ اُستام احداث " " بے تنك ميں بخشے والا بول اس كو جو توب كرے ائيان لائے اورعمل مسالح كرے مجر بوليت باب مجى جوتو،

دنتیہ ماشیرمنوگرشتہ)ا مبالونین علی عابیسسلام ک شان بین ا زل ہوں جہ آپ نے نماز میں مجالت مکرے انگوئی خیارت کی بھی۔ امام نسائی نے مجی ابنی میچ میں عبال ٹرین سلام سے روایت کی ہے کہ یہ آبیت امبالونین علیل سلام ک نٹان میں تا زل ہوئی ای طرح صاحب انہے میں العماری استہ نے مجی مورہ اکہ ہی کہ تعدیری ہی آبیت کے امبالونین کی شان میں تا زل ہوئے کی روایت کی ہے شعلی نے میں اپنی تعنیری اس آبیت کے المیلونی کی شان میں نازل ہوئے کی روایت کی ہے شعلی نے میں اپنی تعنیری اس آبیت کے المیلونی کی شان میں نازل ہوئے کی روایت کی ہے۔

كباانحين كى دلاين وه المنت تبين ص كمتعلق خداوند عالم كالشاويطة « إن عرصنا الامسائة عسل السماوات والارمث والحيبال فتأميين آن يحسملنها وأشفتن مسها وحسملها الإنسان ً امنسهُ كان ظلومًا جهو لًا " - ہم نے امانت کو آساؤل زمینوں اور پیارلوں بیرپنیں کیا .سب ئے اس کا بوجد اٹھانے سے انکارکیا اور اس سے خاند ہوئے اور انسان نے امٹمالیا اور وہ تو ظالم وجا ہلسیے ہی " كيا الى بيت مليلمسلام بى صلح وسلامتى نبير جس بي واحل بوسف كا مداوندعالم نے مکم دیا ہے جیا کدارشاد اللی ہے: • بيا ايسما السذين آصنوا ادخلوا فى السسلم كافية ولا تستبعوا خطوات الشسيطان " · اے بوگو اسب محسب سلامتی میں واخل موما و اورسٹیطان کے نقش قدم پر نہ میلوق

(جنیگزشته مؤکامانیه) باپ سه انحول نے معنوت علی سه امی مغمون کی روابت کی ہے۔ امام ما کم نے امام معمون کی امام محد باقتر و مبعد معاوق گا ان بن الک ان معنون کی مدید و دوایت کی ہے۔ مدید دوایت کی ہے۔

سلدد عکیماس آیت کے سن جوتند پرمانی اور تغییر علی بن ابراسیم حتی میں بیان کیے گئے ہیں۔ نہرابی بلوی باور علامہ بلوی نے اللہ میں اور علامہ بلوی نے اللہ میں اور علامہ بلوی نے اللہ میں اور علامہ بحرش نے اس آ بیت کی تغییر میں کتا سب فابندا لمرام باب 11 میں حصرات المسعدن کی حدثیں درے کی میں اسے بھی واصلا فرائے ۔

عدم المرجين المكتاب عاية المرام مع اب مهوم من المرضي مدشي (باتي الكامغري)

کیاابی بهت می ده منست خداد نر عالم نہیں جب کے متعلق ارست در الی ہے :

« ولنسألن يومث ت عن النعيم »

« تبامست کے دن منرور بالصرور تم سے اس نعست کا سوال کیا جائے گا ؟

کیا حفزست سرور کائنات کواسی نعست کے پہنچاہے کا ٹاکب دی مکم نہیں ہوا ؟ اورائن سخی نہیں کی گئی جو دھمکی سے مشابر تھی ؟ جیسا کہ آیت کا دراز متا تا ہے :

" ياايهاالرسول بلّغ ماانزل إلبك من تبك و إن سع تنعل ضما بلّغت رسالت ه والله يعصمك من الناس "

ا ا مردل بہنجا دواس جیر کوجوتم پر مخارے بروروگار کی جاب سے نازل ہو گا اُر تم سے ایسا ترکیا تو گویا تم سے کارسالت انجام ہی ایسا دیا۔ تم ڈرونہیں فعل تحمیل وگر سے محفوظ رکے گا شے

(بقیعاش صفر گرشته) اس آیت کے والیت امیلومبنی وائر طابرن کے ایسے مین ازل ہونے کے متنق کمی ہیں اور باب ۲۲۳ میں کھا ہے کا مغمانی اور نے امیلومین سے متعماری سے اس کی دوایت کہ ہے۔ سے علار کری نے کتاب نماینہ افرام باب اڑا ایس میں معرفین معزات المسنت کے طریقوں سے کمی بیں جن سے مستفاد ہوتا ہے کرنیم سے مراوبہا ان والیت معزمت مرور کا نمات اور امیلامینی اور انگر علیم السلام ہے ۔ جس سے خلا نرعا کم شعب مول کو مرز (زکید اور باب ۲۹ بین مشعول کی السیم حقیقی اس معنون کی دروی کی بیں ۔

الكدوريس بكرت مدائين سيام واحدى وخيوك إلى متاب (باقي الكلصفير)

کیاای کے بہنچانے پر دیول اسٹر فدیر کے دن مجوز نہیں کیے گئے ؟ اور جب آپ پرااہتام کرکے اس فریعنہ کو اتجام دے چکے تؤخداوند عالم کی مبانب سے اسی دان یہ تہنیست نامہذا زل ہوا:

"اليوم اكسمات لكع دينكم والتسمين عبلبكم نعمتي ورضيت لكيم الاسبيلام دييناية سرك

" آن کے دن ہم نے متعارے دین کو مکمل کیا تم بر اپنی نعتوں کو تمام کیا اور متعارے لیے دین اسلام کولیسند کیائی،

كيا آب كوعل بين كراس دن من ف ان كي ولايت سے علانيہ انكاركيا مخا اور دمول استرسے اس إرساس ابھا مخااوركها نفا :

« خدا وندا اگری سبب کھے حق سے اور تیری مانب سے ہوا ہے تو مجھ

(بَیرِکِرِشِیعَوْا ماشِب) اسباب تودنی بین مورهٔ ما تُره کی اس آبیت کے متعق جذاب الوسید ضدری سے روایت کی ہے ابوسید ضدری افرایش نے اپنی تشیم ابوسید ضدری افرایش اندان الذین از لیاد کی ای مضول کی موریث کو تشیمی نے اپنی تشیم میں موسندہ وابیت سے اور علامہ توزی شامنی نے اپنی کتاب فرائد میں متعدد طریقوں سے الجبر بریسے روایت کی ہے ایک ابورا فع کیا ہے اور الجامنی ہے بھی اسی صفول کی موسیط اپنی کتاب نوول الفراک جمی دومندہ واسے روایت کی ہے ایک ابورا فع سے موسرے اکن سے انفول نے مطبہ سے اور فایٹ المرام میں اسٹین میں بھراتی اہلست اور یہ معرشیں بھراتی شید اسی عنمون کی درج ہیں ۔ الماسفاتی فاین المرام باب ۲۰۰۷ ۔ ۳۰۰

العامام مداقر وجعزماد قاسم مع موهي اس كيت كي شال نزول بين وارو بين - ان بين مان مان اس امر كي تفريح موجود سه ا درحه واست ابل سنّت شے جه مدنييں دول سے دواميت كى بين جاسى منون كى ومناحت كرئى بين برلاحظ فرا كے ۔ غاينة المرام باب موسر - برم . پرآسان سے پتر رہا۔ یا ہمیں در دناک مذاب بینچا ہے اس وقت ندادندما لم ہے اس پراکیہ آسانی پھر بھیلکا مبیدا کہ اصحاب فیل کومزا وے حیکا نضا اوراس وقت یہ آبیت نازل ہوئی ہے

> • سسأل سائل بعداب واقع للسكاوزين ديس لسنة واضع ... «ايك مانتك واسك شكاووں كے بينے ہوكر رسبنے واسے عذاب كو مانكاجس عذاب كو وفع كرنے والاكوئى نہيں "

ا درمبادی توگوں سے ان حصوارن کی والا بہنند کے منتعلن بوجھے گمچھ کی جائے گی جدیدا کہ آیہ :

· وتفوهسه اسْهم حسستولون؟

« عشراةِ انحين ان سے سوال كيا مائے گا " كى تعنيرين سيني كي صرمي احادث

اے ملاحظ بہت بنائی ملاکمشانی کی کتاب أورالا بصار مدے میرت الحقید میلا مستدر کسی الم

وارد ہوتی ہیں اور درحقیقنت ان معزاست کی والایت ہے بھی الیی ہی اہم بیسند کی مالی کیونکہ ان کی والایہ ان کی والایہ ان کی والایہ ان ان چیزوں میں سے ہے جن کی تبلیغ کے بیے خدا واد عالم نے انبیام موسف کیے۔ انبیار وا وصیار کے ذریعے اپنی حجتیں قائم کیں میب اکدا ہے :
" واسب اُں مسن ارسسلنا من قبطلاہ من دسلتا "

* ہمارے ان رمونوں سے پوھیو حبنیں ہم نے تم سے پدیٹر بھیجاتھا ؟ کی تفییر یں علما نے مراست فرمائی ہے ملکدان کی والبیت نو وہ مہنم بالشان امر ہے جس کا خداوندِ عالم نے روزِ السست ارواح خان سے عہدو بیان بیا میسیا کہ :

مواذ اخت وتبك مسن بسن آدم سن ظهبورهم دربیتهم و أد اخت و میل مسن بسن آدم سن ظهبورهم دربیتهم و أست بویكم فالوا سل النسسهم الست بویكم فالوا سبل اورات رسول وه وقت بحی یاد ولاؤ حب متفادے پروردگار نے آدم كی اولاد سے ایم نیکال كران كی اولاد سے توران كے مقابے میں اقرار كوابا بوجها كر كيا بين متفادا برود كارنہيں ہوں - توسب كے سب بوسے - إل سے

پ ایر در این برون و بست برون کی سے وسیلہ مامل کرے آدم نے وہ کلان سے جن کے آدم نے وہ کلان سے جن کے ذریعے اللہ کی قدم نے وہ کلان سے جن کے ذریعے اللہ کی قدم نبول موتی ہے

یمی و وحفزاست بی جن کی وجست خدادندعالم نے امریت سے اپناعذاب دررکھائیے

ا ملبة الادلياء اونجم مبهان تعنير تعبي تعنير يشا ورى -

سله فردکوسس الاخبار علام دیلی باب ۱۹۰۰ میخدم.۳۰ ـ

سمت تغنيردرمننوُرملِدا صغ ٩١ كمنزالعالُ ملاصوْم ٢٠ ينايِن الودة صغ ٤٩ -محت مدامق محرّد إب١١ تنبيرك "دماكات ادتك ليبعذبهم ... الخ"

یز مین والوں کے بے جائے بناہ اور خدا تک پہنچنے کا ذریعہ و وسید ہیں یہ وہ توگ ہیں جن سے مسلمیا گیا اور خلا والد عالم شان کے بارے میں فرایا:

« ام پیسد دن الدن اس علی منا الشد ہو الله من دخت لئے "

« یول کیوں میل رہے ہیں ہمارے ،ان مخصوص توگوں ہے جن کے

وامن میں ہم نے اپنے دفعل سے نعمین محمد دی ہیں "

میں وہ علم میں واسسنے معزات ہیں جن کے ستعلق خدا و ند عالم نے فرایا:

وال واسعنون فی العلم یقولوں استا یا"

علم میں گوئے ہو ہے کہتے ہیں کہ ہم ایمان لا سے "

علم میں گوئے ہو ہے سائے ہو سے کہتے ہیں کہ ہم ایمان لا سے "

میں وہ اموان کے رمال ہیں جن کے ستمانی خداوند عالم کا ارت دے :

« وعسلی الا عدوات رحب ال بیعد وقون کلا بسیما ہے "

اے مواعن محقد باٹ آیت و ۔

ا من الم الم على الملين ك الم جعزمان أس روابين كى ب " الم بى وه وكسبي بن ك اطاحست معداد المسلام على الماحست معداد المستن الم المعامل الم المعامل الم المعامل الم المعامل الم المعامل الم الم المعامل المعامل

سے بنایع المدد و صفی ۱۸ روح البیان بلدا صفی ۱۲ بن عباس سے مردی ہے کدام اف کمراط سے ایک بلند مجہ ہے جربیم باس مرز اعلی ، اور جوز ذوالجنامین برد سے اور البنا دورتداروں کو ان کے دوشن بہروں سے اوراً ہے وہٹوں کو ان کے سیاہ چہروں سے بہیجان ایس سے ۔ امام ماکم نے لبلدا مناوح میر علی سے روایت کی ہے کہ بم بروز قبیا سن جنت و تا در ہے در سیان کی ہے ۔ ہوں کے میں نے ہادی کا مدول ہوگی اسے بم بہیجان کو جنت ہیں اور شیس نے وہٹن دکھا ہوگا اسے مہتم میں وافل کریں گے انتماد ن کی وہ مدیث بنی تا ایکر کرتی ہے جو وارفعلی نے روایت کی ہے۔ (کا مظاہر صواحق چوفر این بنم) (اتی المحاصف بنی ۱۶ اعرافت پرایسے مردموں کے جو ہر خص کو بہتی ہو یا جہتی کس کی بیٹیان سے بیجان لیں مے 4

يهى وه رمال مدق بي جن كي متعلق ارسشا و جوا:

« رحبال صدقوا مساعاهدوا الله عليد فعنهم مسن فتعنى نحسبه ومسنهم من بينتظرومسابداوا نتسدديلا ٢

ایمانداروں بیں سے کچھ لوگ ایے میں ہیں کہ خداسے اتھوں نے جان نداروں بیں سے بعض ہے جان نداری کا جوعہد کیا تھا اسے بولا کرد کھایا ان بیں سے بعض وہ جان ندا ہیں جو مرکزا بناونت بورا کر گئے اور ان بیں سے بعض حکم خدا کے منتظر بیٹے ہیں اور ان لوگوں نے اپنی بات ذرا مجی نہیں بدلی ہے۔

له علامه ای جرنے موامق فوقہ اب و صن ۵ بس تخریکیا ہے کر حفزت ایرا لمومنین مبزکون پرششر لید دسکھتے تھے کہ کسی نے اس کا بہت کے متعلق موال کیا۔ آپ ے فرالیا یہ آب سے میرے ادرمبرے چھا عروہ اور جھا زاد مجانی عبیدہ بن مارٹ کے شنت (باقی انگلے صفح پر) يبى وه رمال تيم بين جن كم بارس بين ضاوند عالم في ارشاد فرمايا:

« بيسب بول ه فيها بالسندة والأصال رحيال لاتله يهم

عبارة ولا بيع عن ذكرالله واقتام الصلوة وابت اء الزلاة

يخاون يومنا تنقيل منيه القلوب والا بصار"

« ان گرول بين خداوند عالم كرت بين مي وشام ايس مرد

جنيين فريد وفرومن خداك ذكراور مناز قائم كرن (كواة اوا

(بننیگزشته مذکاما شید) ازل بوئی عبیده توبروز بدروامل بحق بوسنے . چچا بمزه اُمُدیب تبید بهت ره گیا بی سویں اس بر نجنت ترین مردم کا انتظار کرر با ، موق جومیری ڈاڑھی کومیرے سرے خون سے معنا کی لود کرے کا میرے جیب محرصطفا مجھ تبلیکے میں اللم حاکم نے می اس معنون کی معرض علی سے دوایت ک^{ہے} ل مهدوليتوب بن سفيان شعابن عباس سعاك " وَإِذَا دَاوَ الْعِبَ اوَقَا اُولَتُهُ وَالْمُعْتَمَدُواْ إِيَّهُا وَتَوكُوْ لَكَ قَاسُمًا وَ "اورب ووكى تجارت ياكميل تلف كوركيم إن بن واسطون دوڑ پڑتے ہیںا ورتھیں کوڑا چھوڑ جائے ہیں " کی تغنیریں روابیت کی ہے کہ وعیر کا ڈم سالٹ تجارت ہے جد کے دن پلے اور مدینہ سے باہر آکر شکے اور طبیل ہجایا ناکر لوگوں کو ان کی آمدک اطلاع ہوسکے طبل كالكاوا واسسن كرسب كعدسب دواز برسعا وروسول النتر كومنبر ميضطب يزعق عهود وبالمرت حصرت على مسن وحين ابودر ومغداد ره مكت يبغيم سايت وفوا ما مداد ارعالم ف آق کے دن میری اس مجد ک طوف نگاہ کی اگر بیچند نغر نہ ہونے تو بورا مرمنیہ اگ سے مجو تک دیا ماآ ادران وگوں پراس عرح پنجو پرائے ما نے میسا کہ قرم ہوا میرمیسائے گئے اورجولوگ بینی ج كيسس سيدي بالده كه ان ك إرسيين خدا وندعالم سع يراب از ل وسدالي " ويسبع له فيها بالمعدد ١٠٠٠٠٠١٠١٠١٠١٠١٠١١ الخ

كرف سے غافل بنين كرنى وہ لوگساس دن سے درستے بس جس دن ين ول اوراً تحيي الث بليث موما يسُ في ا النين كالكروه كريقا جن كا ذر ضواوندعالم عدان شاندارالفاظين فرايا: « فى بىيوت ا ذن الله ان مشوضع وببذكر فيها اسسعىه " " وہ تندیل ایسے گرول میں روستن ہے جس کی سنبت خدا ہے مكم دباب كان كانعظيم ك مائ اوران يس اس كا نام دبا ماسة جن بس صبح وشام وه لوكس اس يى لتبيح كميا كرت بيك يه خداوندعالم نے ایت فریش انفیں کے مشکوہ کو آپینے نور کی مثال قرار ویا ہے اور اس کے قرابین داکسان میں ملیندنز نمونے ہیں . وہ بڑی توست و مکرمت والاسے يهى سبعتت كرسة واسه ميى مقربان بالكاتمة يهى مدينين بيي سهدارومالين بي. خد ثلبی نے اس آیت کا تغییری اس بن الک وریرہ سے معامیت کی ہے کہ پیر مرتے گایہ فی میون النج كة للادست فرأ لي توسع مست الربكر نے تحرف مير كومل وقا المرا كے تكر كي عرف است رو كرسكے بوجھا يا رول الله يكر ان كرون بن صب ؟ يرفيم نظا إن بكران ع بنز كردن بن ب-عدا شاره بكايه مستل من رو كمد شكوة ... الخ كى طون جس كم متعلق حن بعرى اورا إدا لحن مفارلى نشامنى سے رواب ب كرمشكون ب مارد مفرن فاكلة مصباح سيحسنين اور شجر مبارك سيحفرت المايم شرقا وغرله نه وت سعفرت فاطركا يمودى ونفران نهوما يكاه ذيستهد ان ككرن علم اور فزاعی فررست ایک الم کے بعد دومرا الم م اور میصدی اللک مؤدیا سے ان کی اولاد کی مستعمل ہ تت دلی مصناب عافشه اورطرانی این مردوبه سے جناب ابن عیا سے روایت کی ہے کر بیفرم ف مؤلیا مبعنت کرنے والے ہی ہوستے موکی کی طون مبعنت کرنے والے ۔ یوٹنی بن فون . عیسیٰ کاظرن يامين أورميرى مؤمد علين إلى طالب رمواعن يحرقز باب إصفل ٢ نکھ این مخارے جناب این عباس سے روایت کی ہے کہ پغیر سے اوشنا دفرایا (باقی انگلے صفر بر)

اخیں کے متنان اور انھیں کے دو توں کے بارے میں خدا وند عالم نے ارشا و فرایا :

« وحد حن خدلفنا احد قدید ون بالحن وسید بعد لون "

« اور بہاری مخلوفاست میں سے کچہ لوگ ایسے بھی ہیں جو دین من ک

علابیت کرتے ہیں اور حق ہی حق انفیا ہت بھی کرتے ہیں ہے "

انھیں کی جماعت اور ونٹول کی جماعت کے متعلق ارسٹ و ہوا :

« لا یستوی اصعاب المن روا صعاب المجسنة ، اصعاب المجسنة ، اصعاب المجسنة ، اصعاب المن وون "

المجسنة هدم الفار کون "

: جہنم والے اور حنیت والے وونوں بار بہیں ہوسکے تعین والے ہی المقار ہیں ہوسکے تعین والے ہی المقار ہیں ہوسکے تعین والے ہی المقار ہیں ہوسکے تعین والے ہی المدین میں ہوسکے تعین والے ہی المقار ہیں ہوسکے تعین والے ہولائی ہوسکے تعین والے ہی المقار ہیں ہوسکے تعین والے ہی ہوسکے تعین والے ہولوں ہوسکے تعین والے ہیں ہوسکے تعین والے ہوسکے تعین والے ہولوں ہولوں ہوسکے تعین والے ہولوں ہولوں ہوسکے تعین والے ہولوں ہولوں

فیزا بخیر معزات کے دوستوں اور وشنوں کے منفق یہ بھی ارست او ہوا:

د نتیب گرستند صفی کاملین مدان بین بین بعبیب عجار مومن آل یامین و دومرست موقیل مومن آل فرحون تیبیری علی بن ال طالب اور بیعلی سب سے اختل میں .

اے زازان نے معزن علی سے روایت کی ہے کہ عنقریب اس است کے تبکیر فرنے ہوں گے ان میں سے مہد تر جبی اور ایک میں سے مہد تر جبی اورا کیس مبتی ، یوی وگ میں جن کے ارسے میں خدا و عمالم نے فوایا و صعن خلفنا الج اور یولگ ہم میں اور ہا درے نتیع میں ۔ کتاب علام جن مرد دیر صفر ۲۷۲

سه سین طوی نے اپی ا ال یں بر اسنادمیم امیرالوشین شے دوایت کہے کہ بیغیر نے اس آبیت کی قادہ نوائن سے کا قادہ نوائن سے بھا کری جا ب معدون نے بی حضرت علی سے اس معمون کی روایت کی ہے اور علائرا المسنت موثی بن احد نے جناب معدون نے بی حضرت علی سے اس می میٹی ہے اور شاہ و فرایا حتم مجدا یہ (علی اوران می شیر می اوران می شیر می تریاست کے دن رست نگار ہیں۔

«أم تجعل السنذين آمسنوا وعسلوا الصالحات كالمقسدين فى الارص ام نجعل ا لمتعتين كا لفجار " " كيا بم ان نوگول كوجرا بمان لا ئے اور عمل صائح كيا ان نوگور مبيا قراردی محجوزین می ضاد بھیلانے والے میں یا ہم نیکو کار و پرسیز کارسندون کو بدکارون جیبا قرار دیں گئے۔ انعيس دونون جماعتول كمستغلن ارست د خداو ندعالم بوا . « ام حسب السذين احب تزحوا السسيتّات ان نجسعله م كالسذين آمسنوا وعسعلواالصالحات سواء يحبياهم ومسانته حساءما يمسكمون ٤ " جولوك برك كام كباكرن بي كباوه يستحق بي كريم ان كو ان وگوں كى برابركر ديس كے جوايمان لائے اورا بھے كام مبى کرتے رہے اور ان سب کا جینا مرنا ایک ساموگا۔ یہ لوگ کیا بۇ ئەمكىم ئىگائى بىن ي النميس كم منعلق اوران ك شيون كم منعلق خداو ندعالم كارست ادب :

خصائن عباس سے دوایت ہے کہ یہ آبہت جناب علی اور حمزہ ما اور عبیدہ بن الحاریث کے حق میں نا ول ہول سینئیں اس آبیت میں وہ فرگ کہ کرتے ہیں ہرا کبال عبد اور شیب اور ولید بی اور وہ لوگ کہ ایمان لائے ہیں اور اچھے کام کرستے ہیں وہ جناب علی اور حمسسترہ اور عبیدہ ہیں۔ بند صواحق تحرتہ - باب و نفق ادّن

* ان السدين آمسنوا وعملواانصسالمات اولمشك هم

حشبيرالبيربيه ٤

، برتحیتی و ، لوگ جوائیان لائے اور عمل صالح کیا وہی مہترین خلائی ہیٹے یہ

اخب كم منعلق اورا مخبس كم وتمنول كم سنعلق خدا وندعاً لم ك ارتشاد فرايا :

« طلق ان حنصد حان احت تعدموا فى رسيهم خالس ذيت
كسفدوا فطعت لسهم شياب من ناريجسب مسن عنوق
رقوسهم الحسميم "

" یہ دونوں مومن و کافر دوفرنتی ہیں جو اکبس ہیں اپنے پروروگار کے بارے میں دولئے ہیں لبس جو لوگ کد کا خر ہیں ان سے بیے یہ آفٹیں دباس قنطع کمیا جائے گا اور ان کے سروں پر کھونتا ہوا بانی انڈیلا جائے گا ۔ "

اخیں کے بارے میں اوراخیں کے وشوں کے متعلق یہ آبت ارل ہو اُن :
" افسمن کان مومنا کسمن کان فاسقا لایسستون

سله امام بخاری نے اپنی صعیبے بخاری پارہ مو صفر ۱۱ بیں البلد تغیبر سورہ تے بہ سستا ا صعید حصرت علی سے روایت کی ہے کہ آپ نے فرایا بیں سب سے بہلے فداو فرقائم کے مصور بروز قیامسند ابنا فیکڑ مافیش کروں گا ۔ امام بخاری کہنے ہیں کہ قئیس نے کہا یہ آبیت ان لوگوں کے حق میں نازل ہول حضوں سنے بدر سے دوز جنگ کی وہ جناب جمزہ ا اور علی اور عبیدہ بن المحار سند اور عتبہ ہمشیبہ اور ولید ہیں الم مجاری نے اس مغیر بہناب ابو فدے روایت کی ہے جناب ابو فد متم کھا کر کہنے ہیں کہ یہ آبیت جناب جمزہ اور علی ا ورعبیدہ بن انحار شد اور عنبہ برشیبہ اور ولید کے حق میں نازل ہوئی۔ اماالسذین آمسنوا وعسعلوالصالحات فسلهم حبقت السماً وی نزلاسها کانوا بیعسعلون واماالسذین فسغوا فسعاً دسهم الشارکلسما ۱ دادوان پخسوجوا مسئهااعیدوا فیها دقیل لهم دوقواعسداب الشارالسذی کسنتم مبه مشکذه دن یه

" مجلا و مخص جوابیان والا ہو فامق جیسیا ہوسکتا ہے ؟ دہرگر:

ہیں) دولوں برابرنہیں ہوسکتے لیس وہ لوگ جو کہ ایمان لائے
اورعمل صالح کیا ان کے لیے جنامت ماؤی ہیں و ہاں وہ فروکش
ہوں گئے یہ ملہ ہے ان کے اعمال خیر کا اور جو لوگ کہ فاسق
ہیں ان کا ٹھکانا جہنم سے حبب وہ اس ہیں سے نکلنا چاہیں گے
دوبارہ اسی حبنم ہیں بلٹا دہے جا بئ گے اور ان سے کہا جائے گا
کو اس آئش جہنم کا مزہ حکیم جس کوتم حصلہ یا کرتے تھے ہے۔
کو اس آئش جہنم کا مزہ حکیم جس کوتم حصلہ یا کرتے تھے ہے۔
ان سے اجہالیا کرتے تھے ہے۔
انھیں حصرات کے متعلق اور ان لوگول کے بارے ہیں حضوس نے ان سے عاجہالیا

اله برایت باتنان معسری و محدثین معرصه امرالمومنین اور ولیدین عبرین ای معیط کے مشاق ال اور اله برایت باتمان این عباس به بول الم واحدی نیک بدار البرالزول می سعیدین جبری اعضوں نے جناب این عباس به دوایت کی ہے کہ ولیدین عبرین این معیط نے معارضا امرالمومنین اسے کہا میرافیز ، مختا کے فیرس نیادہ نیز اور میری زبان محتاری زبان سے کہیں زیادہ چلتی ہو کی اور شکر فیرس میری وجہ سے کہیں زیادہ مجراسولم ہی اسے بدند بعت محالے ماس برحمز سند علی فیرا فی المندی ماری واللہ بریدی المان وی المندی میں میں دو کہ تو فائن کے سوانی مجروب کا در ماس ماد معروب میں اور ماس سے مراد معروب عبر اور ماس سے مراد و دیوین عبر ہے ۔

کو پان بلا شے اورسسجد حرام کی آباد کاری کی بدولست فخرومبالات کی منتی ہداوندہ الم نے به آبیت نازل فرائی ۔

"اجبعلم ستاسة الحسآج وعمادة المسعبدالعسام كمن أمن ما لله والميدو المسعبدالعسام كمن أمن ما لله والميدو المندو المند في سبيل الله لا يستون عندادله وادله لا يبهدى المقوم المغل المين يستون عندادله وادله لا يبهدى المقوم المغل المين يسمر منا من كواس هن كما من وكون كواس هن كما الموروز أخرست برايمان البا اورخدا كى راه مين جهاد كميا - خدا من دو كيب تويد وكس برابر منهي اور خدا و ند عالم طالم وكون كى باميت بهبين كرا "
خدا وند عالم طالم وكون كى باميت بهبين كرا "
خدا وند عالم طالم وكون كى باميت بهبين كرا "

» ومسـن النساس مسن يبشـرى مفنســند ا بشغـاء مسرحنا قائلُه والملُّه روُون بـا لعباد ؟

" لوگوں میں کچھ ایسے مھی ہیں جو خدا کی ٹوسٹنودی کے البے اپنی حان بیج ڈالسٹنے ہیں اور خدا اپنے بندوں پر بڑا ہر پان ہے ۔" بیزیہ کھی ارشاد فرا با:

ان الله است ترى مسن المسومتين أنقسهم وأمسوالهم
بأن لهم الحبينة يقاتلون في سسبيل الله فيقتلون
ويقتلون وعدداً عليه حقاً في التوراة والإنجسيل
والقرآن ومن أونى بعهدة من الله فاستيشرواببيكم

سله ۱۱ ماکم نے مستدرک جلام صوفم پرجنا ب ابن عباس سے روایت کی ہے کہ فنال مشوی علی فغنسته ولدیس نئوب البتی المحدیث ، جاب ابن عباس سے کہا کہ معزمت علی نے اپنا نفس ذوّت کم کیا و در اور میں۔ الم ماکم نے تعریح کی ہے کہ بر مدیث بخاری و کم کے معیار و شرالط کیا میں میں کہا کہ میں ہے کہ بر مدیث بخاری و کم کے معیار و شرالط کیا ہے میں اس کی صحب لیکن ان دو فول نے لکھا نہیں ، ذبی البیہ منتثر دبز دگ نے بھی تلخیص مندرک شربی اس کی صحت کا احتراف کیا ہے ، الم ماکم نے اس صوبی المام زین العبادین اسے بر معامل ہے ہی و دمیل بن ابی طاهب بی کی ہے کہ ہے و دمیل بن ابی طاهب بی حب کہ ہے کہ دو شعب بھرت بغیر کے بستر بر سور ہے ۔ بھرالم ماکم نے اس موتی بر معنرت ما الله جوات اور استار نوا کے بیارہ مارک کے بیادہ کیا ہمارت کے بیادہ کیا ہمار کے بیادہ کو بیادہ کیا ہمارک کے بیادہ کیا ہمارک کے بیادہ کو بیادہ کیا ہمارک کے بیادہ کو بیادہ کیا ہمارک کے بیادہ کو بیادہ کے بیادہ کیا ہمارک کی بیادہ کیا ہمارک کے بیادہ کی بیادہ کیا ہمارک کیا ہمارک کے بیادہ کیا ہمارک کے بی

وقیت بنشسی خیومین وط آلحصا و من طاف بالبیت العیثین و بالحدجو *یں شعبال پرکھیل کاس بزدگ کی حفاظت کی جوان تمام ٹوگوں میں جومرزین بطی پر چلے اور مغیوں نے خاد کعبراور مجرا مورکا طواف کیا مہتروانعل ہیں !!

السدى با يعستم مبسه و لحلك هسوالسنوز العنطسيير -الت الثبون العاميدوك الحسامسدون السساعتون الزاكعون المستجددن الأمسرون بالمسعووث والمشاهون عنائمتكو والحسا فظون لحسدود الأله وببشسوا لمؤمسين ٥ «اسس میں نوشک بنیں کہ خدا نے مومنین سے ان کی جانیں أور ان کے مال اس باست پرخرید سیے ہیں کہ (ان کی فیمت) ان کے بیے بہشست ہے (ای دجہسے) یہ ٹوکٹ خداکی داہ میں اور (خود کھار کو) مارسنے ہیں اور (خود کھی) مارے مانے ہیں (یہ) لیکا دعدہے (جس کالوراکرنا) خدا پر لازم ہے (اور ایسا پکاہے کہ) تودمیت اور اکبیل اور قرآن (سب) میں (مکھاہوا) ہے اورائیے عہد کا پورا کرنے والا خداسے برطم كراور كون بے تو تم اپنى (خريد) فروخت سے جوتم نے مداسے ک ہے خوستیاں ساؤی ہی تو بڑی کا میابی سیے (برنوکس) توب کرنے واسے عبا دست گرار (منداکی)حمد و شنا کرنے والے (اس ک راہ میں) سعر کرنے والے رکوع کرتے ولية سجده كرنے والے نبكسكام كامكم كرشے والے اور بوے کام سے دو کتے وائے اور خداکی (مغررکی ہوئی) مدول کے اویرنگاہ رکھتےواہے ہیں اور واے دسول ان) موسنین کو (بہشنت ک) خوشخبری دے دو۔"

نيزارشاه فرايا:

" السنَّدين بنغقون أموالهم باللِّيل والنهاد سرأً

وعسلانيسة فللهما حبرهسم عندربهسم والاحؤن عبليه مرولاهسم يعسزنون 2

» جو لوگ کہ اپنے مالوں کو راست اور دن ہیں ظام رہ طاہراور چھپاکر (را ہ خدا میں) حسن رچ کرتے ہیں ال کے بیے ان کاصلہ شہے ان کے برور د گار کے نزدیک ان کے بیے زکوئی خوت ہے اور نہ وہ اندوہ گیں ہول گے یا

انعیں مے مدق دل سے پنے بوکی سجائی کی تصدین کی اور خدا و ندعالم نے ان کی اس تعدیق کی ان الغاظ میں گواہی دی :

٠ اور یا د رکھوکہ جو دسول مسجی باست سے کرا سے بیں اور جس نے

کے المد ذی جا و بالصدی سے مراد ہوئی صدی بدہ سے مراوا پر اَنوین ہیں میں کا ام مختر ا وجعفرماوق ومون کا فاق وامام دمنا اور عبداللہ بن جاس این مغلقہ عبداللہ بن حن زیر شہید وقیر ہم سے تقریب کی سب منود ابرائونین اس آبست کے ذریعہ احتیاج فرایا کرتے تھے کہ یہ آبست میرسے دشتین از ل ہوتی اور میں مراو ہوں۔ ابن مغاز لی تیم می ابنی مناقب بس مجا ہدسے ہس سفون کی روایت کی سے اعداد عافظ ابن مردویہ اور حافظ ابر نعیم سے مجمی۔ ان کی تصدیق کی بہی توگ تو بربہبندگاریں ؟ کسست می تصدیق کی بہی توگ تو بربہبندگاریں ؟ کسست معزات معزات کی مستدی رشتہ دار جی حفیس خداد ندعا لم نے اپنی بہترین رعابت اور بلند ترین توجہ کے ساتھ محضوص فرایا ورایٹ دفرایا :

« واندر عشر يوتك الافرسين »

دوامے پنجیبر اینے نز دیکی رست تدداروں کوخدا کا خوف ولاؤیا

یہ بیٹیبرکے اولی الارمام ہیں اور اولی الارمام بعن بعن سے مقدم واولی ہیں کتاب ابنی ہیں ہی بیٹیبر کے قری رشتہ واریں اور قریبی دشتہ وار کھلائی کے نیادہ حق دار ہوستے ہیں ہیں بروز تیامسن پیٹیبر کے در بے میں ہوں سے اور قریب نیادہ میں ہوں سے اور قریب کے سانے ساتھ ہوں کے جس پر دویل خداو ہما کم کا یہ قول ہے۔

" والسدین آمسنوا واننہ عتہم ذریب تبھیم باید مان الحقا میں اسے میں آمسنوا واننہ عتہم میں عملے میں میں الحقا استحاد میں تابی اللہ کے اور ان کی قریب نے میں ایمان لا کر انباع کیا، تو ہم ان کی قریب کو میں ایمیں سے ملی کر دیں گے اور ان کی قریب کو میں ایمیں سے ملی کر دیں گے اور ان کے اعمال میں سے رتی برابر کی نہ کریں گے یہ ان الفاظ اور ان کے اعمال میں سے رتی برابر کی نہ کریں گے یہ ان الفاظ وہ حق دار حصرات ہیں جن کے حتی کی اوائیگی کا وست کی آن نے ان الفاظ

ے الم حاکم نے سندرک ع ۲ صغوم ۲۷ پرسبلد تغییر مورہ طوران عماس سے اس کیسیت کے سندن دوایت کی ہے اللہ عالی نے کہا جس میں وہ کی ہے تاہت کا این میں درجیس رکھے گا جس میں وہ مون برگا گھرید ہے اللہ تعداد مون برگا گھرید ہے اللہ اللہ اللہ تعداد ہے مون برگا گھرید ہے اللہ تعداد ہے مون برگا گھرید ہے کہ در المعقد ما المعقد اللہ ہے ہے کہ در المعقد مدن اہم ہے ہی تاہم کوئی کی زکریں گئے ۔

يں حکم سسنايا:

" وأمت ذى القربي حسقته "

« مساحیان مسنندابیت کوان کامن وسے و و ی

یمی وه صاحبان منس بس كرمب كك ان كومس زمينجا ديا ماسك انسان برى الذمه موى بهي سكتا ، ارشاد الني ب

> « واعسلموااتهما عسينم من شيخ فان الله خمسه وللرسول ولذىالقربي يجعه

«سمجه رکھو کہ تم جو کمچھ مال نتیمنٹ مامل کرو تو اس کا پانچیا حصہ خدا کا ہے اور رسول کا اور رسول کے قرابت داروں کا يبى وه صاحبان فى بى جن ك منعلق خداوند عالم ف ارشاد فرايا: " مسأ ا فياء الله عسيل وسولسك مين اهدل القوئ فيلكِّه و

للوسول ولذىالقوبي يُـ

خدا وبديما لم نے دبہا سنت والوں سے جو مال لبطور خالصہ بلا حرب ومنرسیب رسول كودلوايا ب وه الله ك يلي ب اوردسول كي ي اورماحب ب قرابست کے بیے اور کی وہ اہل میت بیں جن سے آیہ استعاب رسبد ادلا

المصمري في المعاب كعب يدايت ازل مولى والخفرت تعجير أيل سع بوجها، قرامت وال كون بي اوران كاحق كيا ہے . جاب ديا فاطركو فدك دسے ديكيے كريا النين كاحق سے اور جو کے دندک یں خدا و رول کا من ہے وہ مجی انھیں کے حوالے کرد بیجیے لیں رمول مندا نے جاب فاطرً كو الم كروشية لكن كرندك الن كے حوالے كرويا - تغييره را شورملدى صفى ١٥١ وطيع -يه تعنيرون العال طِنتام فورا العنيرية الدوى ملد اصور 10 وفيرو لبندهب عنكسد السرحس احسل سببت ويطه وكم تطبع يما ين خطاب كياكيا .

یہی وہ آل کیسین ہیں جن پرخداوندعا لم نے سلام بھیجا اورادشا و ہوا: سلت لام عدلیٰ ال دئیسین میہی وہ ال محدّ ہیں جن پر درود وسلام بھیمنا خداو مد عالم نے مبدوں برفرض قرار ویا اور ارشا و ہوا:

" ان الله ومُسلك شكت له بيصلون عسلى اللبي باليها الذين

آمنواصاراعليه وسلموا متساياك

، تخقیق که خداوند عالم ادر ملائکه بی میر درود بھینے بیں اے ایمان والونم بھی درود وسلام سیجا کرو ا

وگول نے سپیر سے پوجھا یا رسول افتار کم آب پرسلام کیونکر کریں یہ توہیں معلوم سے دیکن یہ ارشاد ہوکہ درود آپ کی آل برکیونکر معیاما سے نواس نے ارشاد

فرمایا یول کها کرو:

الكستزيُّ

"اللسهم حسل عسلى محسمه وعسلى آل محسمه "

لبذا اس عدبيت سے معلوم بواكران حفزات پر در در درجيجنا بيغير مي در و د

بيجيخ كا جزوب جب بيستك آپ ك آل كو بحى شامل كرك ور دو درجيجا بائي البت كر بيغير بر در دو د ليوا نه بوگااى وجهست علمار و مخفين نے اس آبيت كو بحى ان أباست بيں خمار كيا ہے جو ابل بهبت كى شان بيں الزل بو بي بچنا نجي علام ابن تجركى نے بحى صواعت مح فراب الابل اس آبيت كو منجلاان آباست كے شاركيا ہے جو ابل بهت كى ظان بيں نازل ہو بي ليس بهي متمنب و برگزيده فيدگان الذي بيں بحكم خوان يكوں كى طوت سينت كرنے والے بہي بيبي وارثان كر اس خوابي جن كے بارسے بي خاور شان الله اللہ بين بحكم خوان يكوں كى طوت سينت كرنے والے بہي بيبي وارثان كا ب خوابي بين وارثان كا ب خوابي بين خوابي بين خلا و مدا ہے :

منسم أور شنا اللك آب السذين اصل عباد نا حسم خواد و منهم حق تصد و منهم حق تصد و منهم مسابق بالح ب بالح ب الحن ادائه د ذالك هوالد خواس مسابق بالح ب بالح ب الحن ادائه د ذالك هوالد خواس مسابق بالح ب بالح ب الحن ادائه د ذالك هوالد خواس مسابق بالح ب بالح ب الحن ادائه د ذالك هوالد خواس مسابق بالح ب بالحد بالح بالح ب بالحد بالح بالحد بالے بالحد ب

ا تقدالاسلام کینی المبروست بسندسی سال دوایت کی بسالم بختابی کوی نام محراقر سے اس کین بار شال کتاب المدین اصطفیا من عباد فاک سفل دریافت کیا تو آپ نے فرایا آبری سال این اصطفیا من عباد فاک سفل دریافت کیا تو آپ نے فرایا آبری سابی الخیاب (نیکیول کی اس معتبور رسانی المحراد الم اور تعتقد (سابی المحسود سے مراد الم کی مونت و کھنے والا اور ظالم المفنسد (این نفتی بر ظالم کرنے والا) سے مقصود وہ ہے جوالم سے برگان و آباشنا ہو ای معتبون کی دوایت کلیتی نے الم مجعز صادق الم موکن کالم والم مام دوایت کالم مون کا ہے ۔ ملا تے المسنت میں ما نظ ابن مرد دیر نے اس مدیث اور امام دوایت امرافر دائی سام سے می کہ ہے۔

میریم نے اپنی کتاب کا وارث بنایا ان لوگوں کو جنیں ہم نے اپنے مبدوں ہیں منتخب کیا ہے اس لوگوں ہیں بعض تو ایسے ہیں جو لینے نعدوں ہیں منتخب کیا ہے اس واوریہ وہ لوگ ہیں جوالم کی معرفت نیس رکھتے) اور بعض میان دو ہیں (بیٹی دوستداران ائمہ) اور بعض نیکوں کی طوف بحکم مدا سبقت کرنے والے ہیں (بینی الم) اور بیر بہت بڑا فقل ہے "

اہل بیت طاہرینا کی مشان میں نازل مثدہ اتنی ہی کیات بیان کرنے پر ہم اکتفا کرنتے ہیں -

جناب ابن عباس فرایا کرنے کے کہ تنہا حصرت علی کیمث ن میں بین سوآ یہ ننازل ہو یک ا در ابن عباس کے علاوہ دورے دوگوں کا بیان ہے کہ ایک چرسکائی قرآن اہل بیت کے متعلق نازل ہوا ۔ اس میں کوئی شعبہ بہب کا المیت اور قرآن ایک جڑکی دومث فیں ہیں جو کمجی عبائنہیں ہوسکیس ہم انفیں چند آیوں پرلیس کرنے ہیں۔ انھیں میں سخور فرائے آپ پرحقیقت وامروانع بخوبی واض موما کے گا۔

ش

اے جیبا کہ ابن عدا کرسے ابن عیاسس سے دوایت کے سلامظ بومواسق باب و دفق ۲ صفح ۱۲،۱۲

مكتؤب مهبرك

جناب مولانا ئے محترم إنسيلم گري كارسبب عوزت اخرائى ہوا سبحان استراپ كے زور بيان قوت تخرير كى دائبيں دى جاسكتى آب ئے حتى بايش تخرير فرايش ان بيں كى كو مجال تكامنيں جو كچھ آب ئے لكھا معج كھا اُلبترا كيس كھنك ول بيں دي حال سب اعترائ كرنے والے كبر سكتے بيں كہ وہ لوگ حضوں نے اہل بریت کے متعلق ان مجالت كے نازل ہونے كى روابيت كى ہے وہ شعبہ جماعت سے تعلق ركھتے جي اورشيوں كى روابيت كردہ حديثيں حصرات الى سنّت كے فيے حجست بنيں براہ كم اس اعتراض كا دند بر فرائيے ۔

س

جواب مكتوب

محترمي يما

آپ نے جواح تامن ہیں کی وہ درست بہیں ۔ اعترامن کے دونوں میکی نے فلط ہیں۔ یہ جواح تامن ہیں کا ان آبات کے شان نزول کے متعلق روایت کی شان نزول کے متعلق روایت کردہ حدیثیں حفرات اہل سنت کی ہے ہے ہے ہیں کہ شیوں کی روایت کردہ حدیثیں حفرات اہل سنت کے بیے جست بہیں کہ ان آبات کے شان نزول کے متعلق موتی شیول ہی نے دوایت بہیں کہ ہکم متبرو موثی علام شان نزول کے متعلق مرمت شیول ہی ہے دوایت بہیں کی ہلکمت و موثی علام الل سنت نے بھی روایت کی ہیں۔ ان کی سنن اور مسانیدا کھا کر دیکھیے آب کو نظم آسے کا کہ انتخوں نے ان کی متعلق جا رطوبیوں سے کہیں تیادہ طریقوں سے ذکر کیا ہے۔ اگر شید کا مار میں اور میا نیوا کی شان میں نادل ہوئی نوع فراحت المسنت نے وی طریقوں سے دوایت کی ہے دواست کی ہے۔ دواست کی ہے۔ دواست کی ہے۔ دواست کی ہے۔ دواست کی ہے۔

ره گیااعظم کا دومرا گارا که شیول کی روایت کرده حدثین المستنت کے
یے جب بنیں تویداور مجی فلط ہے جیا کہ علمار اہل سنت کی کتب حدیث گوا ہ
جن حزات اہل سنت کے طرق دا سنادیں ایک دونہیں کرترت شیعر اوی ملتے ہیں
اورشید مجی کوئی معول نہیں بلک نامی گرائ جن کی شیعیت سے دنیا وا فعت ہے۔
ده شیعی بلاکہا جا تا ہے ، گراہ محجا جاتا ہے ، رفضی کہ کردیارا جا تا ہے ۔ انھیں
شیعول کی روایتیں آپ کے معام ست میں مجی وجو دمیں اوران کے علاق دیگر حدیث
کی تابوں ہیں مجی ۔ خود امام بخاری کے شوئے ہیں سبت سے ایسے شیعوں کے نام ملتے ہیں
کی تابوں ہیں مجی ۔ خود امام بخاری کے شوئے ہیں سبت سے ایسے شیعوں کے نام ملتے ہیں

جفیں رافقی مخالفت وغیرہ کہا جا آہے مگر کھر مجی امام مجاری نے ان سے استفادہ کیا ،ان سے رواتیں لیں۔امام مجاری نے میں اور دیگرا معاب صحاح نے بھی۔ان نمام حفائق کے با وجود میں درج کی ہیں اور دیگرا معاب صحاح نے بھی۔ان نمام حفائق کے با وجود برکہنا کس طرح درسست ہوسکتا ہے کہنا کس دوامیت حصرات ابل سنت کے لیے حجست نہیں ۔

اصل باست یہ ہے کہ اعتراض کر نے والوں کو حفیقت کا علم ہی نہیں۔ اگر معترضین اس حفیقت کو جس نشید اہل بہت کے بیروا تھیں کے اصول سے پاندا وران کے اوصاف و محاسن کا پر تو ہیں تب اندازہ ہو کہ وہ کس تلا اعتماد واغتیار کے لائق ہیں لیکن نا وانقیت نے ایک اشتباہ کی کیفیت ہیں بہلاکر اعتماد کا اختیار کے لائق ہیں لیکن نا وانقیت نے بہلاکہ دیا ہے ہی ورکھ جنیں دنیا تھ ملا الاسلام کے لفت سے یہ امر کہ محد بن نابویہ الفتی ہو سلما لوں کے مدون کے جانے ہیں ، محد بن حمد بن جن بالا میا ہے ہو ما وی شخیص میں محترضین کے جرم ما الاسلام کے لفت سے باد کرتی ہے جو علوم آل محتر کا خریب اعتبار کے قابل نہ مجھے جائیں اوران کی اکیزہ صفاست ہو علوم آل محتر کا خریب ہیں حقارست کی نظر سے دیجی جائیں اوران کی اکیزہ صفاست جو علوم آل محتر کا خریب ہیں حقارست کی نظر سے دیجی جائیں ایسے بردگوں کے شفات شک و شبہ سے کام لیا جائے جو جامع علوم و کما لاست تھے۔ دو سے زبین پرقیط ہے ابرال کی جنین و کہ جنیت دکھے جنوں نے خدا و دسول کی اطاعت ا حکام اللی کی تبیین و اداعت مسلماؤں کی خیرخواہی و درہری ہیں اپنی عربی تنام کردیں .

معولی سے معولی تخص وانف ہے کہ مقد سی معرات جموت کو کتنا برا ا گناہ سمجھتے تنے ، انفوں نے ابنی ہزاروں کتا بوں ہیں جموٹوں پرلسنت کی ہے اور صاحبت کی ہے کہ حدمیث مینیم میں جموسٹ بولٹا الماکت وعذاب دائم کا معبب ہے صدمیث میں جموسٹ بولٹا تواتنا بڑا گناہ سمجہ ہے ان وگوں نے کہ روزہ تورڈ شیئے والی چیزوں میں قرار دیا ہے اگر کو کی شخص ما و رمضان میں عمداً تحجو لی صورت بیان کرے توان حصرات کا فتوی ہے کہ اس عض کا دوزہ باطل ہوگیا اس پر روزہ کی تعنائجی لازم ہے اور کھارہ بھی دنیا حزوری ہے جس طرح دیگر مفظرات کا حکم ہے بعیبہ چھوائی حدمیث بیان کرنے کا مجھی حبب کذب کو وہ ایسا اعظیم مجھتے ہیں تو خدار الفاح ن ے فرایے کہ خود ایسے مصرات کے متعلق جوصالی و ابرار ، عابیش زندہ دار موں ایسا وہم وگان بھی کیا جاسکتا ہے ؟

ائے ائے ایک ایشیعان آل تحدالی سیت کے بیرومتی مجھے جائی اوران کی بیان کی ہوئی مدینوں پر کترب وافر اکا فکس و شرکیا جائے۔ ان کے اقوال تھکا ویدے کے قابل سجھے جائی اور خارجی نامبی خدا کو مجم ماننے والے افراد کی صیفی مرآ تھوں پر رکھی جائیں ۔ وہ جو کچے بیان کریں آمنا وصد قنا کہ کرتیا م کریا جائے۔ اس میں کسی شکس وشرکی کمنائش زمجی مبائے۔ یہ تو کھی برقی ناا نعمانی مربی مبغا پروری ہے خدا محفوظ و کھے۔

ش

مكتوب منبرم

حصرت مولانائے محترم اِتسلیم! آپ کا آن مکتوب موصول ہوا۔ آپ کی تخریراتی متین ولائل سے پر اور حقائق سے لبریزیھی کہ مبرے لیے جارہ کار ہی نہیں سوا اس کے کہ جو کچھ آپ نے تخریر فرمایا ہے ایک لفظ اسلیم کر لول البتہ جو آپ نے بخریر فرایا ہے کہ حضرات اہل سمّت نے بکٹر مت شہوراولوں سے رواتیاں ل ہیں ا اسے آپ نے بہت مجل رکھا۔ آپ کو ذرا تفعیل سے کام لبنا چاہئے بھا۔ ساب مقاکد آپ ان شیعہ راولوں کے نام بھی تخسر بر فرمائے نیز ان کی شیعیت کے متعلق صفرات اہل سنست کا افراد بھی ذکر کرتے ۔ امید ہے کہ آپ میار مفعد محمد ہے۔ موں کے۔

جواب مكتوب

بہتر ہے یں مخفراً حرومب نہی کی ترتیب سے ان شیعد راولول کے اسمائے گرا می تخریر کا ہول جن کی رواست کردہ مدیثیں آب کے میاں صحاح و د *پگرسنن ومسانیدین موجود پین* .

ابان بن تغلب بن راح قاری کو فی

علامد ذسي ان كے مالاست ميں لکھتے ہيں:

، ابان بن تغلب كوفه كرسينه والے تقے اور بڑے كر شبعه بي ليكن صدوق ہیں۔ ہمیں ان کس<mark>جا لی سے عوض ہے ان کی برعت کا باران کے سرج</mark> احدب منبل، ابوماتم اورا بن سين ف الحيس موثق قرار ديا ہے . ابن عدى نے ان کے متعلق لکھا ہے کہ بڑے غالی شعبہ متھے ۔ان سے امام مسلم اور ا بودا وَ و زندی ، نسانی ، ا بن ماجه نے مدیثیں روایت کہ بس آپ کمانتھال راہلے میں ہوا۔

ابرابيم بن يربد بس عمروبن امودبن عمرو تخفى كوفي

ملامهابن تبيه في معارف ين الهيس مشام يرشيعه بن شاركيا ب

ان کی مدیبی صبح بخاری بسلم دونوں میں موجود بیں - ان کی پیدائش مندے ا اور انتقال مقصمة اسلامی میں مجائ کے مرنے کے جار مبینے کے بعد ہوا۔

احمد من معفنل ابن كو بی حفری

ان سے ابوزرعہ و ابوعاتم نے روابیت کی اوران کی بیان کی ہوئی مدینے
سے اسپنے سلک پردلیل بیٹس کی ہے مالانکہ ابوزرعہ و ابوعاتم نے ان کی شیبیت
کی صراحت بھی کی ہے علامہ ذہبی نے ابوعاتم کا بدفقرہ احمد بن معنفل سے
متعلق نقل کیا ہے کہ احمد بن معنفل روسارسٹ بید میں سے تنے اور صدوی تھے
ان کی روابیت کردہ عدشیں سنن الی واؤ دہسنن منسائی دولوں میں موجود ہیں۔

اسماعيل بن ابان

امام کاری کے بیٹے ہیں ۔ بخاری وزندی دونوں نے ان کی حدیبیت سے اپنے ملک براستدال کی اس بھا مہ سے اپنے ملک براستدال کہا ہے جبیا کہ علامہ ذہبی نے کوریکیا ہے علامہ ذہبی نے برجی ان سے حدیثیں لی مہیں ۔ اور بخاری نے متعدد حکمہ ضبح ہیں ۔ اور بخاری نے متعدد حکمہ ضبح بہا ۔ اور بھا واسطران کی حدیثیں ذکر کی ہیں ۔ سخاری ہیں بلا واسطران کی حدیثیں ذکر کی ہیں ۔

اسماعيل بن خليف ملاك كوتى

ان کی کیزست ابواسرائیل ہے اوراس کے ساتھ منہور بھی ہیں علامسہ ذھبی شے ان کا نذکرہ میزان الاعتدال میں ان الغاظ میں کیا ہے ۔ کہ بطیسے منعصب شبعہ اوران لوگوں میں سے تھے جوعثمان کو کا فرکھتے ہیں اور مجی بہت تمجان کے منغلق لکھا ہے لیکن ان سعب کے با وجود ترفذی نے اور ور میگر اصحاب سنن نے ان سے روابیت کی ہے۔ ابوما تم نے ان کی حدیثوں کو حن کہا ہے۔ ابورا تم نے الازرعہ نے کہا ہے کہ صعروق ہیں اگرجہ خیالات خالیا نہ نظے امام احمد نے کہا ہے کہ ان کی حدیثیں درج کرنے کے قابل ہیں۔ ابن معبن نے تعذکہا ۔ فلاس نے کہا یہ حجوث بولے والوں ہیں بنہیں ۔ ان کی حدیثیں صحح ترفذی میں موجود ہیں۔ ابن قبیبہ نے معاروف ہیں امغیں مشاہر شبعہ بیں شار

اسماعيل بن ذكربا خلقا نى كونى

ذہی نے مہزان الاعتدال ہیں ان کے متعلیٰ لکھاہے کہ صدوق ہیں اورشیعہ میں اوران لوگوں میں سے میں جن سے صحاع سند میں حدیثیں کی گئ ہیں۔ ان کی حدیث بخاری اور سلم میں موجود ہے سمایا ہے میں مغباد میں انتقال کیا ۔
انتقال کیا ۔

اسماعيل بن عباد بن عباس طالقاتي

صاحب بن عباد کے نام سے سند ہور ہیں ابو داؤد و ترمذی نے ان سے
رواتیب ہی ہیں۔ جیسا کہ امام ذھبی نے میزان ہیں صراحت کی ہے نیز بہ
میں لکھا ہے کہ برط ہے باکمال ارسب اور شیعہ کتے ۔ ان کی سٹیعیت ہیں کسی کو
شبر نہیں ہوسکتا اور شیعیست ہی کی وجہ سے سلطنت بوہیہ کی وزارت عظمیٰ
پر فائز ہوئے۔ یہ پہلے وہ تخفی ہیں جو صاحب کے لقتب سے ملفنب ہوئے اس
لیے کہ یہ مؤید الدولہ بن بوہ کے جوانی کے زمار نسے مصاحب وسے اور

مویدالدولہ بی نے ان کانام صاحب رکھا اور برابرائ نام سے پکا دے جاتے تھے۔
یہاں تک کرائ نام سے شہور ہوگئے اوران کے بعد بوٹھ فن وزارت کے درجرب
آیا وہ مجی صاحب بی کے نام سے بیکارا گیا ۔ بربیلے مویدالدولہ کے وزیر رہے ہی
کے مرفے پراس کے بھائی فخ الدولہ نے بھی انھیں وزارت عظی پر برقرار رکھا جب
ان کا انتقال ہوا (۲۲ مفر صفحت ہوں یہ ۹ برس کی عربی) تو منہر رہے کے
دروازے بندمو کئے اور تمام لوگ ان کے مکان پر آگر جنازہ کا انتظار کرنے لگا
خود باوشاہ فخ الدولہ اور وزرار وسرواران فوج جنازہ بیں ساتھ ساتھ تھے۔
برسے مبیل الغدر عالم اور گرانفندر کہ تب ورسائل کے مصنف شخص تھے۔

اسماعیل بن و الرحن بن ابی کرمینهمونسر جوسسدی کے نام سے شہرت رکھتے ہیں

علامہ ذہبی نے ان کے حالات ہیں اکھا ہے کہ مہم بالتینے ہیں اور یہ والیت ہیں اور یہ والیت ہیں اور یہ والیت کی ہے کہ الفوں نے اسلام وعم کو سب مشتم کرتے سنا تھا مگران سرب کے اوجود توری ابو بکر بن عباس دعیہ و نے ان سے معرشیں ایس اور امام سلم و ترفدی وابو واؤ د ، ابن ما جہ ، نشال معا حبابی صحاع نے ان کی حد شیں این اسلام کی تائید میں درج کی ہیں ۔امام احمد ہے انھیں تھ ، ان کی حد شیں اینے مسلک کی تائید میں درج کی ہیں ۔امام احمد ہے انھیں تھ ، ابن عدی نے صدوق کہا ہے ۔ یجی بن سعید کا قول ہے کہ ہیں نے مراکب ابن عدی ہے صدوق کہا ہے ۔ یجی بن سعید کا قول ہے کہ ہیں نے مراکب کو دیچھاکہ وہ سدی کو اجھا ہی کہنا ہے اور سبی نے اس سے حد شیں لی ہیں سے تالیج ہیں انتقال کیا ہے۔

اسماعيل بن موسئ فرارى كو في

علامہ ذہبی نے میزان الاعتذال ہیں ان کے مالاست ہیں اکھا ہے کہ
ابن عدی ان کے متناق کہتے ہتھے کہ مثبیع بہت ہیں بہت زیا وہ غلور کھنے کی وج
سے لوگ۔ ایھیں نابیند کرنے تھے اورع بران بیان کرنے تھے کہ ہناو اور
ابن شیبہ ہمارا اسماعیں کے پاس جانا بیند نہیں کرنے تھے اور کہا کرنے تم لوگ
اس فاس کے پاس ماکر کیا کرتے ہوجو ہزرگوں کوسب کوشتم کیا کرتا ہے ۔ ان
مسب کے باوجو دابن خزیمہ ، ابوعود ہ اور بہت سے لوگوں نے ان سے صوبیت
کا استفادہ کیا اور یہ اس طبقہ کے مشیخ سے جیسے ابوداؤ د و تر فدی و فیرو ۔ ان
سب حصرات نے ان سے حدیث کی اورا ہے اپنے میرے ہیں درج کی آبوماً کی مسب حصرات نے ان سے حدیث کی اورا ہے اپنے میرے ہیں درج کی آبوماً کے انھیں صدوق کہا ہے۔ نشائی شے کہا ہے کہ کوئی سعنا لگتہ نہیں ان سے حدیث بین سری کا نواسہ حدیث ہیں ۔ سے بین انتقال کیا ۔ بعق لوگ انتخیں سدی کا نواسہ جدیث بین ۔ سے بین انتقال کیا ۔ بعق لوگ انتخیں سدی کا نواسہ جناتے ہیں۔

ىت

تليب بنسليمان كوفي

ابن معین نے ان کے منعلق لکھاہے کہ یہ عثمان کوسب وہم کیا کہنے تھے ۔ لبعض عثمانیوں نے سمن لیا ۔ انھوں نے اسے تیر مارا جس سے ان کا پیر لوٹ گیا ۔ ابو داؤ د نے ان کے متعلق کہا کہ یہ رافقنی ہیں۔ الویکر وعمکو سب وشتم کیا کرتے تھے مگران سب کے باوجود احمد و ابن تنبر نے ان تقیں صربین کی امام احدنے ان کے متعلق کہا کہ تکبیر شیعہ ہیں مگران سے مدین کے امام احد نہیں ۔ صبح تر مذی میں ان کی صدیثیں موجود ہیں۔

ري

ثابهت بن دمینار

بوابو مره مثالی کے نام ہے سعم دہیں ان کی شیعیت اظہر مان شن ہے۔ تر فری میں ان کی حدیثیں موجود ہیں۔

تومربن ابى فاخته

ام بان بنست ال طالب كے آزاد كردہ غلام تھے - ذہبى نے ان كے رافئى ہونے كى فرامست كى ہے ۔ الم محد با فرائے عقیدت مندوں ہیں تھے ترندى میں ان كى حدثیں موجود ہیں ۔ ترندى میں ان كى حدثیں موجود ہیں ۔

7

مابرين بريد حبي كوني

علامہ ذہبی ہے ان کے مالاست میں لکھا ہے کہ یہ علمارشیعہ میں سے تھے۔ نیز سفیا ل سے ان کا قول نقل کیا ہے کہ انھوں نے جابر کو کہتے سے نا - علم پنجیبڑسے علیؓ کی طویت منتقل ہوا اور علی سے حسن کی طرت - ایک امام سے دومرے امام تک منتقل ہوکر امام حجع خرصاو ن ایک ہنچا یدامام جعز صادق کے زمانہ میں نتھ اور آپ نے کہ ترت مدیثیں ماصل کیں چنانی خود جا برکہا کرتے تھے کہ میرے پاس ستر ہزار حدیثیں امام محد باقر کی داری میں بہا برجب امام محد باقر کی داری میں بہا برجب امام محد باقر کے میرے کو کہ مدیث روا بیت کرکے بیان کرتے تو کہتے مجھ سے ومی الاوصیار نے بیان کیا ۔ علامہ ذہبی نے میزان میں زائدہ کا بی تول نقل کہ ہے کہ جا بر رافقی ہیں اسب کوشتم کیا کرتے ہیں ان سے ام ابو واؤد و ترندی ، نسائی نے مدیثیں روا بیت کی ہیں ۔ سفیان توری نے انفیں مدیث میں بہت مخاط کہا ہے ۔ میں بنتال کیا ۔

جرير بن عبدالحييد منبى كوفي

علامه ابن قتیب نے اپنی کتاب معارف میں انھیں مشامیر شید میں شاہر م کیا ہے۔ علامہ وہی نے میزان الاعتدال میں ان کا تذکرہ کرنے ہوئے بڑی جمد م مناکی ہے۔ چانچہ کلفتے ہیں کہ بربر اہل رے کے عالم اور معدوق ہیں اور ان کے اقوال سے کتابوں میں استدلال کیا جا آ ہے اور ان کے تقدم و نے برجسلہ محدیث کا اجماع دانفاق ہے۔ ان کی مدیثیں صبح بخاری و کم دونوں میں موجود میں بری کا اجماع دانفاق ہے۔ ان کی مدیثیں صبح بخاری و کم دونوں میں موجود

حعفربن زبإد اثمركو في

امام ابو واؤد نے ان کا تذکرہ کرنے ہوئے اکھا ہے کہ یہ مدوق ہیں اور شیر ہیں۔ ابن عدی نے انخیں صالح اور شیع کھا ہے۔ ابن معین نے تنقہ ، ا مام احمد نے مالح الحدیث فرایا ہے۔ صبح تر ذی وسسن نسائی بیں ان کی حدیثیں موجود ہیں۔

كليلة بن انتقال كيا.

جعفرت سيامان صنبى بهرى

علامه ابن تتیبه نے معادمت معنی ۱۰۰ بی انھیں مشا ہیر شیعہ میں اکھیا ہم ابن سعدے ان کی شیعیہ سند اور تفتہ ہونے کی تھرکے کی ہے۔ ابن عدی ان کے متعلق کہنے ہیں کہ پر شیعہ ہیں ہیں توقع کرنا ہوں کہ ان ہیں کو لی حرج بہیں اوران کی حدیثیں قابل انکار نہیں اور میرے نزویک اس قابل ہیں کہ ان کی حدیثیں قبول کی حائیں۔ علامہ ذہبی نے میزان الاعتدال ہیں انھیں تا ہدعلمائے شیعہ میں سے لکھا ہے ان کی حدیثیں میچمسلم ونسائی ہیں موجود ہیں بھے ہے ہیں انتقال کیا۔

<u>جمع بن عمير بن تعليه كو في نتمي</u>

میزان الاعتدال میں ہے کہ ان کے متعلق ابوحاتم کا یہ فقرہ ہے کہ صالح الحدیث اور شرفال الشیع سے ہیں۔ ما مع ترمذی ہیں ان کی مدشیس موجود ہیں۔

7

مارث بن حميره كوني

ابوماتم رازی ، ابواحرزبیری ، ابن عدی ، یحییٰ بن میین ، اسار نسانی و طیرو شدان کی شیعیت کی نفریج مجی ک سبے اوران کے ثقہ ہونے کا سبی اقرار کیا ہے ۔ اسام نسائ سے اقرار کیا ہے ۔ اسام نسائ سے ان سے صدیثیں ہیں۔ ان سے صدیثیں ہیں۔

مارىث بن عبدالله مهدانی

صحابی وحواری امیرالمومنین ، ابن فتیب نے مشاہیر شیعہ میں بہلے ان
کابی نام لکھا ہے ۔ ذہبی نے لکھا ہے کہ برکہا رعامار تابعین سے تھے اور ابن
حبان انھیں بربت غالی شیعہ کہا کرتے تھے جہورالمسنست انھیں ای شیعبیت
کی وجہ سے بہت وشن رکھتے تھے گریا وجوداس کے ان کے علم ونعنل اور ٹھتہ
ہونے سے کسی کوانکار نہیں سنن تر فدی ، نسائی ، ابن ماجہ وابوداو ومیں ان
کی مدیثیں موجود ہیں بسطانہ میں انتقال کیا ۔

حبیب بن ابی ثابت اسد<u>ی</u>

کوفہ کے رہنے والے اور تا ہی ہیں۔ ابن قتیب نے معارف بی شہرستانی نے ملل و مخل میں انفیس مشا ہیرشیعہ میں شار کیا ہے۔ ان سے جملا ارباب صحاح سند نے بلاتر دو روایتیں لی ہیں بسالست میں انتقال کیا۔

حسسن بن حتى

علامہ ذہبی میزان الاعندال میں ان کے متعلق کیھتے ہیں یہ املہ علمار میں سے ہیں اوران میں شہیدست کی برعت موجودتی ، نماز حمید میں شرکے بہیں ہو سے بیں اور ان میں شہیدست کی برعت موجودتی ، نماز حمید میں کھانے تھے ابن سعد نے طبخات جلد ہیں ان کے اورے میں لکھا ہے کہ ثفہ ہیں ۔ ان کی شیب میری اور بر شیعہ تھے ۔ ابن فیتیہ نے بھی ان کی شیعیست کی نفریج کی ہے بیجے مسلم اور دیگرسن میں ان کی حدثیں موجود ہیں بنناہ میں پراہوئے اور موالے مسلم اور دیگرسن میں ان کی حدثیں موجود ہیں بنناہ میں پراہوئے اور موالے مسلم اور دیگرسن میں ان کی حدثییں موجود ہیں بنناہ میں پراہوئے اور موالے مسلم اور دیگرسن میں ان کی حدثیں موجود ہیں بنناہ میں پراہوئے اور موالے م

مين انتقال كيا.

حكم بنءتيبه كوفئ

ابن تینب فی معارست بین انھیں مشاہیر شید بین شاد کیا ہے جی بخاری مسلم بین ان کی مدیثیں موجو دہیں مطالبہ میں انتقال کیا۔

حمادين عيبئ

صاحب منتهی المنفال وغیسده نے انھیں علما دشیعہ میں سے اکھاہے اور مراکیسٹ انھیں ثقہ ومعتد تھجاہے ۔ امام جعفر صادی موامام مولی کا فام کے اصحاب میں سے ہیں۔ منغد دکتابوں کے مصنعت ہیں۔ تریذی اور دیگرسنن میں ان کی حدثیبیں موجود ہیں ۔

حمران بن اعين

مشهورترین محالی امام محد باقرم والم حبعر مادق ایسسن ایی دا دوغیر بین ان کی مدنیین موجود بین .

<u>خالدین نخلد قطوانی کو بی</u>

امام بخاری کے شیخ الحدمیث بیں -علامه ابن سعدے طبعًا من حبلہ اصطلابیں ا درامام ابودا وُدسنے انھیں شہر اورصدوق اکھا ہے ۔ امام بخاری وسلم و وتوں نے ان کی حدثیں اپی میح میں درج کی ہیں اور بھی دیگرا معاسب سنن نے ان کی شیعیب سے وانغٹ ہوتے ہوئے ان کی مدیثوں سے کام دیا ہے۔

ز

زىبىدىن ھارىت بن عبدالكر<u>ىم كونى</u>

علامہ ذہبی میران الاعتدال میں ان مے حالات میں لکھتے ہیں کہ بیہ ثقاست تامبین میں سے ہیں اور ان میں تشیقے تھا۔ اس کے بعد ذہبی نے بہت سے ملار و محد ثین کے اقوال ان کے ثقة ہونے کے متعلق نقل کیے ہیں۔ ان کی حدیثیں صبح بخاری سلم وغیرہ میں موجود ہیں سسسلیع میں انتقال کیا۔

زىدىن الجاب كونى تىمى

ابن تنیب نے معاروت میں انھیں مشا ہیر ننید میں ذکر کیا ہے اور علامہ ذہبی نے انھیں عابد ، ٹنقہ اور صدون فکھاہے اور ان کے ٹننہ وصدوق ہوسنے کے متعلق دیچ سبت سے علارکے اقوال نعل کیے ہیں ۔ ان کی حدثیمی صحیح مسلم میں موجود ہیں ۔

سر

سالم بن ابی الجعدانتیمی کونی

ابن سعد سے طبقات ملدہ صفی بیں ابن قتیر نے معارف مسك

علامهٔ هرمشانی نے ملل وخل مبلد ۲ صفی پس انفیں مشا ہیرشے بید ہیں شارکیا ہے علامہ ذہبی نے انفیں ثقاست نالبین ہیں اکھا ہے ۔ صبح سخاری وسلم دو نوں ہیں ان کی مدیثیں موجود ہیں ۔

سالمهن الىحفصى عبلى كونى

علامین پرستانی نے ملل وخل میں اخیں مشاہیر شبعہ ہیں ٹاکہا ہے علام ذہبی شے میزان الاعتدال میں اورع کا مرابن سعد نے طبقات حلدہ صکت ہیں اور علام ابن سعد نے طبقات حلدہ صکت ہیں ان کی صدیویں مبامع تریذی میں موجود ہیں سکتالہ بیں انتقال کیا ۔

يسعد مبن طربعيث الاسكامية تظلى كوني

علامہ ذہبی نے علمار محدثین کے اتوال ان کے تشیع کے متعلق درج کیے ہیں۔ ان کی مدیثیں مبھے ترمذی میں موجود ہیں۔

سعيب ربن انثوع

ملامہ ذہبی میزان الاعتدال میں ان سے متعلق کیستے ہیں کہ کوفد کے قامنی شخصے اور شہور معروق ہیں۔ امام نسائی نے ان سے ہارسے میں کہا ہے کہ ان میں کوئی خرابی ندیمتی ۔ جوزمانی نے کہاہے کہ براسے عالی ا درشیعیست میں مدسے پڑسے ہوئے منتے ۔ فیج بخاری وسلم دولوں میں ان کی مدسیش موجود ہیں۔

سعبدرن خد<u>ثم</u> -------

یجی بن مین سے ان کے منعلق بوجھا گیا کہ سعید بن خیٹم شیعہ ہیں آپ ان کے منعلن کیا فرماتے ہیں ۔ انتھوں نے کہا شیعہ ہوں سے مگر ہیں تقریبان تریذی وسنن نشائی میں ان کی حدیثیں موجود ہیں -

سبلمهن الفضل الابرشش

رے کے فاصی تھے ۔ان کی شیعیست کی علمار نے مراحت کی ہے مگر ارباب صماح ہے ان سے حدیثیں ل ہیں ۔چٹانچہ جامع ترندی اورسنش ابی واؤ د ہیں ان کی مدشیں موجود ہیں -

سلمهن كهيل برجعين حصرمي

علامہ ابن تتیبہ نے معارف م<u>لات میں ، علام تنہ کر</u>ستان نے ملل وکل طد ۲ صکا میں ان کومشا ہے رشیبہ میں لکھا ہے ۔ جملے ارباب صحاع سنہ نے ان کی مدینوں سے کام دیا ہے جسچے بخاری وسلم ہیں ان کی مذیبیں موجود ہیں سلسلنٹ میں انتقال کیا ۔

سسيلمان بن صردخزاعي كول<u>ى</u>

شیعیان عمان کے بزرگ نزین فرداور مرجع مومنین بزرگ تھے اُبتقام خورج مین کینے والوں کے راس ورسیس اور قائد بھی تھے جملمار ابسیسرو تاریخ نے ان کے علم وفعنل زہد و ورع عبادت کا فرافدل سے تذکرہ کیا ہے جَنگ صنین میں امیرالمونین کے ہمراہ تھے . ریشنان اہل مبیت کو گراہ سمجھتے تھے ان کی مدشیں صبح سلم وصبح سخاری دولؤں ہیں موجود ہیں ۔

مسيلمان بنطرخان تبي بقرى

ابن قتیب نے اپنی کتاب معارف میں انھیں مشاہیر شید میں وکر کھیا ؟ ان کی حدیثوں سے ارباب صحاح نے بھی کام لیا ہے اور دیگر محد بین نے بھی صیح بخاری و کم دولوں میں ان کی مدیثیں موجود ہیں سے کالمات میں انتقال کیا۔

سسيلمان بن قرم بن معا ذمنى كو في

علامہ ذہبی ہے میزان الاعتدال ہیں ان کے متعلق ابن حبان کا یہ قول ذکر کیا ہے کہ بڑے عالی دافقی تھے اور ابن عدی نے ان کے متعلق یہ کہا ہے کہ ان کی حدیثیں عمدہ ہیں۔ میرچے سلم سنن ابی داؤر ، جامع تریزی ہیں ان کی مدشیں موجود ہیں ۔

مسبليان بن مهران كابلي كوفي مشهور اعمش

بہ بزرگان سنیعہ سے ایک علیال تقدوفرداور کہار محد بین بین نامور بزرگ بین بہت سے محققین علمارا بل سنت مثلاً ابن قبیبہ نے اپنی معارف میں اور علام شہرستان نے اپنی ملل ونحل میں اور دیگر معزات نے ان کے شبعہ برنے کی صاحت کہ ہے۔ علامہ وہبی نے میزان الاعتدال میں جوز مبان کا یہ فقرہ نقل کیا ہے کہ باشندگان کو فریس سے ایک جماعت الیہ بختی کہ لوگ ان کے عقائرو غرب کونا لین مجنے سے مگر وہی معزات محدثین کو فرکے راس و رئیس محقے

اعمش کے چندعجیب وغرب نوادرہ برجوان کی ملالت فدرکوظاہر کرنے ہیں چنانچے علامہ ابن خلکان ان کے مالات بیں یہ واقعہ اکھتے ہیں کہ فلیقہ ہشام بن عبدالملک ہے ان کے پاس اپنا قاصد مجھے کہ عثمان سے فضائل اور علی کی برائیاں مجھے لکھ بھیجہ و اعمش نے مہشام کا خط ہے کر نفسائل اور علی کی برائیاں مجھے لکھ بھیجہ و اعمش نے مشام کا خط ہے کہ کری کے مذہبی وے دیا اور وہ اس خط کوچیا گئی اور قاصد سے کہا و ہشام نے تم کھائی سے کہدوینا کہ مشام نے تم کھائی میں کہ اگریں متھا را جواب ہے کر زاگیا تو مجھے متن کر ڈائے ہے اور وہ اس خط کارٹریں متھا را جواب ہے کر زاگیا تو مجھے متن کر ڈائے واصد ہے اعمش کے اعرب و احباب سے بھی سفارش کو ائی ۔ حب سب نے امرار کیا تو اکھون نے جواب بیں مکھا ۔

" اگر د نیا تجرکے نوگوں کے نضائل عثمان کو حاصل موجا بی اور

دنیا بھرکے نوگوں کی برائیاں علیٰ ہیں اکتھا ہوما میں نو تھیں کیا تم لینے آیب کو دیجھا کرو ہے

علامدابن عبدالبرن ان كاليب وافغه بنقل كياب كدففن بن موئى بيان كرف عضام ابومنيف كي بيان كرف مختص كدامام ابومنيف كي بها اعش كي عيادست كوگيا ابومنيف في كما اسابوجيد (اعمش) اگر تمفار سبار خاطر نه بوتا توجن منتی بار تمفاری عيادست كوآ آ ابول اس سے زياده آتا - اعمش في كما كه خداكی متم حبب نم اپنے گھریں ہوتے ہو تو بحق مير كيا بارگراں ہوتے ہو تو بحق مير باس ہوگے تومير اكميا حال ہوگا؟

ایک اوران کا وانغه شرکیک بن عبداستد قامنی کی زبانی ہے۔ شرکیب کہتے ہیں کہ میں اٹمنش کے مرص الموست میں ان کے پاس حاصر تھا کہ استے میں ابن سشبرمدا درابن الی بیلی اورا ما م ابومنبغدان ک عبا دست کوست. دوگوں نے ان ك مزائ يُركى ك الخول ف انتهال كمزورى ونقابست كا ذكركيا - ابنى خطاؤل بر اپی مراسان ظا مرک اور مجه آب دیده سے موسے امام ابوصنی مراسے اور تھو نے فرایا اے ابومحد ؛ خلاسے ڈرسیے اورائیے اوبرٹرس کھاسیے آ سے حصرت علی ے متعلق ایسی مرشیں بیان کرنے تھے اگرا ہاں سے توب کر بینے تو آپ کے بیے امچا ہوتا۔ اعمش سے کھا۔ تم میرے ایسے شخص سے بیے الیی بات کھنے ہواورخوب سخنت ومسست ساباء مختفر ببكه اعمش مراسه تفة ومعتذعالم وفاصل مزرك شنصان کے صدن ومدالسند تقوی وہرہرگاری پرسب کا اتفاق ہے رجہ ارباب صحاح سند وخبیسسره سعان کی روابیت کروه حدیثول سے کام میاہے۔ صیح بخاری صحبیع سلم سب بی بین ان کی مدشین موجود میں ۔ سلك ه مين بيدا موت بشهالي مين انتقال كيا.

ۺ

قاصى شركيب بن عبدالندمن سنان بن انسخعى كونى

ابن قتید نے معارف میں الخبین شاہیر شبید ہیں ذکر کیا ہے۔ میزان الانتظا علامہ ذہبی میں بہ ذیل مالات مشرکب ندکورہے عبداللہ مِن الرسیس خواکی تم کھاکر کہتے ہیں کہ شرکی شیعہ ہیں۔ اسی میزان میں بریجی ہے کہ ابو داؤد رہاوی روایت کرتے ہیں کہ ہمنے شرکی کو کہتے سناکہ:

« على خليرالبشر عنمن ابى نفند كعر "

« علی تمام خلائق میں سب سے مبتر ہیں جس نے اس کا انکار من من میں نہ اس ا

کیا وہ کا فرہوگیا یا

مطلب بہ ہے کے حفرت علی بعد رسول اللہ است سے بہتر ہیں۔ مثر یک منجلہ ان حصرات کے ہیں حضوں نے امیر لومنین کے نص خلانت کی مذیب روایت کی ہیں جنانچ میران الاعتدال میں ایک مرفوع مدیب ابو ہر رہے سے ہے:•

" لکل منبی وصی و وارث و ان عسلیاً و حسیبی و وارثی " "ارتشاد فرایا بینجی کر سربنی کا وصی و وارث ہواکرتا

ہے اور علی میرے ومی و وارث بن "

یر شرکب ایرالمومنین کے فضائل و مناقب کی نشرواشاعت بی بڑے مستعدوں گرم اور آب کے فضائل و مناقب بیان کرے بنوامیہ کوخوب رخ کیا کرتے تھے۔ رخ کیا کرتے تھے۔

مُوْرِحُ ابن مَلكا ن سے ابی كنتاب ونسيانت الاعبان ہيں بسلسلے مالات شركيب كتاب درة الغواص سيروا تغدنقل كيلسيك ، « ایکسساموی پخفس مشرکیسب کی متحبسنت میں انتھا ببیٹھا کرتا بخفل کیک مرتب مثر کہب نے حفزمت علیٰ کے فضائل بیان کیے۔اس پر اموى نے كہا:"ضعدم الدحسيل عسلي" " ايھے شخص تھے عَلَّ "اسس برش كيب كوعف م كبا اور بكرما كريكنے ككے كركيا على كي يي بس يهي كهر ويناكاني ب: "منعسع الدوجل" " ایجے شخص تھے " اس سے زیادہ کھے اور بنہیں کہنے کوا؟" مشر کیب کے مالات کا مائزہ بینے کے بعد کئی کو بھی اس بیں ذرہ برا پرشک و شبهنين دسي كاكريه وومثداران المبييت يسست يتح اورعلام الجبيت سے بکٹرسٹ مدیثیں انھوں نے دوابیت کی ہیں ۔عیدائٹڈین مبادک۔ان سے متعلق کہا کرتے تھے کہ بیسفیان سے زیادہ مدیث کے عالم ہیں اوردیمنان علیؓ کے پخست ترین دشمن شختے اورا بھیں بہت بڑا کہا کرستے ۔ ایک مرتب عرائسلام بن حرب نے شرکیب سے ہو بھاکہ اپنے ایک بھائی کی عیادت کو ملیتے ہو؟ بوحصا - کون ؟ - عبدالسلام نے کہا مالک بن مغول ۔ رو کیب نے كها جوشخف على وعاركوعيب لكائے وہ ميرا عجائى بنبيں ـ ا کیس مرتب نثر کیب سے سامنے معاویہ کا تذکرہ ہوا ۔ لوگوں نے کہا معاق برسے ملیم تھے. منر کیس نے کہا ، جوشف حق سے اعراض کرے اور علی اسے جنگ کرے وہ علم مرکز بنیں - انھیں مشریک نے بی یہ حدیث بغیر روایت

ادارأيتم معاوية على منبوى شاقتلوه "

" حبب تم مير عسبر برمعاوي كود يجينا تن كرادالنا "

محتقر برکران کا شیعہ میں اظہر من انشمس ہے گر با وجود اس کے علامہ ذہی نے ان ہے منعلن انھیں مانظ وصدوق اور بیجے ازائمہ کہا ہے اور ابن معین کا ان کے منعلن بہ فقرہ میں نقل کیا ہے کہ بہتر کیب صدوق و تقریقے۔ اور ان کے مالاست کے مائز پر مکھا ہے کہ بہ سخ لم خزینہ واران علم سختے ۔ ان سے اسسحاق ارزق شے نوہزار حدیثیں ماصل کیں ۔ الامسلم اور و بیج ارباب صحاح سے میں ان کی دواتیں حدیثوں سے اپنے مسلک پرامندلال کیا ہے اور اسپنے صحاح میں ان کی دواتیں میں بیا ہوئے اور اسپنے صحاح میں ان کی دواتیں لیہیں ۔ فواسان یا بخال میں صفاح میں بیا ہوئے اور اسپنے عام میں انتقال کیا۔

منت عبربن حجاج عثكى

محققین اہل مِنت مثلّا ابن تتیب نے معارف بین متہرستانی نے ملل دکل میں امخیں مشاہ بیرشید میں شارکیا ہے ان کی مدیّییں جی بخاری میح سلم ودیگرصماح ہیں موجود ہیں بسٹ ہو ہیں سبب دا ہوئے سنزل ہویں انتقال ہوا۔

ص

صعصعه بن صومان بن حجربن مارست عبدی

ابن ِ قبیب نے (معارف ص<u>ت) یں انھیں مشاہیر شیعہ بیں شمارکیا</u> ہے ۔ علامہ ابنِ سعد طبقات مبلہ ۲ م<u>یں ۱</u> بیں ان کے منعلق لکھتے ہیں : « یہ کوفہ کے اصحاب خطط سے مقرد تفے اور حفزت کی کئے صحابی نفے ۔ یصعصعہ اوران کے بھائی زیداورسیمان جنگ بہت کہ اس محابی نفی ہیں ہیں ہے جبل میں حضرت علی کے ساتھ تھے سیمان کے انفون میں اسٹ کے اعلم ما کھوں میں اسٹ کے اعلم ما کھوں میں اس کے لیا صعصعہ نے حضرت علی اور عبدالمتدابن عباس سے حدثیں رواست کی ہیں ۔ بربوے معتمد وموثق شخص کھے۔ مگر ان کی حدثیں کم ہیں ۔ ا

علامدابن عبدللراستیجاب بین ان کا ذکر کرنے ہوئے وکھنے ہیں کہ عہدینی بریں اسلام ان می گرستے ہیں کہ حبیب پیریس کی وجہ سے پیٹی کی زبارت ذکر سکے اور منجد مردادان قرم سے جڑے نصبے ویلینے مقرر، زبرک و دانا، دیا تمت دار، عالم وفا منوانسان سنے جھزت میں کے صحابیوں میں شارکئے جاتے ہیں ۔ محینی ابن سعین ان کے متعلق میں کہ صعصعہ، زید اور سیجان فرزندان صوحان سب کے سب خطب سے تھے۔ زید وسیحان جنگ جمل میں منہ بدہوئے عہد خلاب سے دریا درکھنیں ہوا حصرت عرفے دوگوں عبد مطلانت حصرت عرف ایک بیر ہوئے مدلان تقریر کی جس میں تمام شک وشید دور کر دیا اور جو میری جواب تھا اسے مدلل تقریر کی جس میں تمام شک وشید دور کر دیا اور جو میری جواب تھا اسے مدلل تقریر کی جس میں تمام شک وشید دور کر دیا اور جو میری والے اختیار کی بخر منک بیان کیا مساب شاہ کے قول کو تسلیم کیا اور انھیں کی والے اختیار کی بخر منک بیان کیا میں مدال سے بی صوحان سرداران عوب اور مرکز وضل جسب شاہ ۔

علامه ابن قتیبہ شے مبی آپئ کتاب معاریت صغیہ ۱۳۸ بیں شہرہ آ فاق معززین وشرفا اورمصاحبین سلطان کے سلسلہ بیں ان کا ذکر کیا ہے ۔ زبد بن صوحان کے نصائل میں بیغیرس کی ایجب عدیث مبی درے کی ہے ۔

علام عسقلان اصارفتم ثالث يس صعصعه بن صومان كا ذكر كرست

موے لکھتے ہیں کہ اکفوں نے حفرست عنان اور حفرست علی سے روائیں کیں چھٹر علی کی معیبست میں جنگے صفین میں مشر کہب ہوئے براے منصبے و بلیغ حنط ب تھے معاویہ کے ساتھ ان کے بڑے معرکے ہوئے ہیں بشعبی ان کے ستلت کہا کرتے کہ میں نے ان سے خطب کی تعلیم حاصل کی۔

علائی نے مالات زیاد میں ذکر کیا ہے کہ مغیرہ نے ہم معاوی النفیں کونہ سے مبلا وطن کرے جزیرہ یا ہرین کی طرف میں ویا یعمل کہنتے ہیں جزیرہ ابن کا فان میں ہے گئے اور وہیں انتقال کیا جس طرح جناب ابو ذریا دبنرة میں مبلا وطن ہوکر انتقال کیا۔

علامہ ذہبی نے میزان الاعتدال میں انھیں تغرامع وف مشہور وحرف موثق لکھا ہے نیزان کے ثقہ ہونے کے متعلق علامہ ابن سعدا ورنسا کی کے توال ذکر کیے ہیں۔ان کی مدیثیں سنن نسائی ہیں موجود ہیں۔

ظ

ظالم بن عمروبن سعنيان ابوالاسود وُلى

ان کاشیعہ و مخلص اہل بہت ہونا دنیا جائتی ہے ملاحظہ ہو اصابہ حلد م صفر ا۲۲ ۔ حملہ ارباب صحاح سند سے ان کی حدثیمیں سر انتھوں پر لی ہیں ۔ صبیح سفاری وصبیح سسام سبی ہیں موجو دہیں بچانو پھر ہوں کی عمر میں سفاف یہ ہیں سٹہر رہے وہیں انتقال کہا۔ یہ وہی ابوالاسود دو لی ہیں حضوں ہے ایرالمومنین سے تعلیم حاصل کرے علم نمو کی بنیا در کھی اور دنیائے عربیت ہیں موجد علم نموکے نام سے یا دکیے جانتے ہیں ، ع

ابوالطفيل عامرين وأئلة بن عبدالله بن عمرواللبثي

غزوہ اُمدیکے سال پدا ہوئے علامہ ابن تنتبہ نے معارف میں آخیں اول درجہ کے غالی شیوں میں شار کمیا ہے نیز ذکر کباہے کہ ممننار سے علمداریٹ کرا درمختار کے آخری وقت نک رفیق تخفے۔

علامه ابن عبدالبر استیعاب بس ان تے متعلق لکھتے بیں کہ یہ کوف بیں وارد ہوئے اور صفرت علی کے ساتھ ہرموکر بیں مشرکیب دیہے ۔ جب حضرت علی سنہ یہ ہوگئے تو یہ مکہ چلے کئے ۔ برطرے عالم وفاضل ذیرک ودانا فیسے و بلیغ صافر جواب متھے جعزت علی سے بیرو خاص محفے ۔ بعد موت امیرالموئین آیہ ابوطفیل ایک مرتب معاویہ کے پاس پہنچے ، معاویہ نے پوچھا تم اپنے دوست ابوالحسن (علی) کی وفات پر کفتے ریخبیدہ ہو ؟ اکھوں تم اپنے دوست ابوالحسن (علی) کی وفات پر کفتے ریخبیدہ ہو ؟ اکھوں نے کہا آتنا ہی جتنا ما در موسی ، موسئے کے انتقال پر ریخبیدہ تضیب فیدا وزا میری اس کونا ہی کومعادے کرنا (بینی امیرالموئین میزادار شفے کہ ان کا عم اس سے بھی زیا دہ کیا جا ہے ک

معادبہ نے ان سے پومجا۔ عثمان کا محامرہ کرنے والوں ہیں تم ہی شخے ؟ اکفوں نے کہا۔ محامرہ کرنے والوں ہیں پہیں کھا ادبتہ ہیں ان کے قربیب حزدر موجو دکھا - معاویہ نے بوحجا۔ تم سے ان کی مدد کیوں نہ کی ؟ ابوطنیل نے پومچھا ۔ اور تم ؟ تم نے کیوں مددسے جان چرائی ؟ تم نوسشام ہیں تخفے ادرسشام والے سب کے سب بمتھا اسے تا بع شخے۔ معادیہ نے کہا : میراخون عثمان کا انتقام لینا کیا ان کی مدد نہ تھی ؟
ابو لمغنیل نے کہا : متھاری شال اوا ہی ہے میساکہ شاعر نے کہا ہے :
« میری موست کے بعدمجھ پرنشو سے بہاتے ہوا ورمیری زندگ ہیں
تم نے ذرہ برابرمیری مدونہ کی "
صیح مسلم میں ان کی حدیثیں موجود ہیں -

عبادين ليقوب الامدى

وارقطنی نے ستبعدا ورصد وق لکھا ہے ۔ ابن حبان نے کہا ہے کہ یہ رفض کے سلغ تنے ، ابن خز بمبدان کے ستنت کہا کرتے کہ ہم سے حدمیث بیان کی عباد بن سیقوب نے جوروا بہت ہیں ثقہ اور مذمہب ہیں ستہم (مینی شبعہ) شخھ ۔

انخیں عباونے روابیت کی ہے کہ ابن سعود مشہورے ای کی پیٹر آبیت "وکئی اللّٰہ المومنسین الفتال" کو ہوں پڑھاکرتے تھے" وکھی اللّٰہ المسومنسین الفتال بعلی " نیز برصریت میں کہ " اذا داکیتم معای^{یہ} عسل منسبری ضافتندہ ہے "

ا جب معاویہ کومیرے منبر میہ دیجینا تو قتل کر ڈالنا ؟ یہ عباد کہا کرتے تھے کہ جوسٹی نماز میں دسٹمنان ال محد میر تیرا نہیجا کرے گا وہ انخیں کے ساتھ محشور ہوگا۔ یہ بھی انھیں کا قول ہے کہ خداو ندعالم اس سے کہیں زیادہ الضاف کرنے والا ہے کہ وہ طلحہ وزیر کو جنت میں داخل کرے حجصوں نے علی کی بیعت کرنے کے بعد مجھران سے جنگ کی۔ صالح جزرة كابيان مع كرعبادا عمّان كوسب وشمّ كياكرت من ان سب باتون كربا وجود بخارى، نرمذى، ابن ماجه وغيره بين ان كى مديثين موجود بي بسطيمة بين انتقال كيا.

ابوعباليمن عبداللبن داور بمداني كوني

علامدابن فتیب نے انھیں مشاہیر بیدیں لکھاہے جیجے بخاری ب ان کی مدیثیں موجود ہیں۔

عبسدالآبن سنتداد

ابن سعدا بن طبقات ملد 4 صلا بران کے منعلق مکھنے ہیں برط تعته ، فقید ، کثیر الحدمیث اور شیعد سند بین موجود ہیں ۔

عبب دالآبن عمرشهور سمشكدانه

امام سلم وابو داؤد بغوی وغیروک استاد میں ۔ ابن ماتم نے انجیں صدوق اور شبعہ مکھا ہے ، صالح بن تحدین جزرہ ہے ان کے متعلق کہا کہ بڑسے غالی شیعیہ تنے ۔ ان کی حدیثیں مبح مسلم ، سنن ابی داؤ دمیں موجودی۔

عبيب دالكه بن لهبيعة فاحنى وعالم مصر

ابن نیتبہ نے انھیں شبعہ لکھا ہے۔ ابن عدی نے ان کے متعلق لکھا ہے کنشیتے میں مدسے بڑھے ہوئے تھے۔ الوبعلی نے عبداللّٰد بن لہبعہ سے روا بت کی ہے اور انھوں نے بسلسلہ اسسنا دعبداللہ بن عمرے کہ رسالت ما بہ نے مرض موست میں فرمایا : میرے بھائی کو بلادو ۔ لوگوں نے ابو یکر کو بلادیا ۔ اسخفرت نے مذہبے رہا اس بھر فرایا کہ میرے بھائی کو بلاؤ ۔ لوگوں نے اب کی عثمان کو بلاد یا اس مرائب بھی آب نے مذہبے رہا اس مرائب بھی آب نے مذہبے رہا اور ان برجھک گئے ۔ آپ نے انھیں اپنی چا در سے دیا اور ان برجھک گئے ۔ جب ملی جا درسے با ہر آکے تولوگوں نے پوچھا ۔ دسول اسے کیا با بن کیس ۔ علی نے بنایا کہ انحفزت آپ میں میں میں ہوار باب ملم کے تعلیم کے کہ مربا بسسے ایک ہوار باب مشکشت ہوستے ہیں ۔

ان کی عدشیں ما*رج ترفدی ہسسنن ابی واو*کر وعنیو میں موجود ہیں۔ سکاکست^ہ میں اُستقال کیا ۔

ع<u>الڭ بنىم</u>ون قد**ار**صحابى امام جعفرصا دق

ترمذی نے ان کی مدیثوں سے اپنے مسلک پراستدلال کیا ہے۔ جامع ترمذی میں ان کی مدیثیں موجود ہیں ۔

ايوحم يحبرالهن بن صالح ا زدی

ابن عدی نے ان کے متعلق کہ ماہے کہ احسانی بالنشیع " شیعبست بیں مجن محق سفے رصائع جورہ نے کہا ہے کہ بیعثمان کو گرا کہتے متے۔ اسام ابو داور دے ذکر کیا ہے کہ عبدالرحمن سے صحابہ کی نرمت بیں ایک کتاب لکمی سمنی ربیسے برسے اور می تھے۔ ان سب کے باوجود عباس ووری امام لبوی و نشائی ہے ان سے مدشین روایت کیں بعن نشائی بیں ان کی مرشين موجود ہيں - علامہ ذہبي نے ابن معين تے متعلق لکھا ہے كروہ الخيں ثقة كہاكرنے تنفے .

عبدالرزاق بن ہمام بن نا نع مميري

یه اکابر وعما نگرستبعه اورسلعت صالحین سے تنے ۱۰ بن تتیب نے معار پی انحیبی مشاہ بیرشیعی میں مکھا ہے مورخ ابن ا ٹیرنے تاہیخ کا مل مبلد ۲ صعنتا میں سائلے کے حوادث کے سلسل میں ان کی وفات کا ذکر کمیا ہے جنائجہ مکھتے ہیں :

« آس الماع کے آخری عبدالرزاق بن ہمام نے وفات بائی سے الم الم کے اساتذہ میں سے تھے اور شیعہ تھے ا

ملّامتنیٰ صاحب کنزالعمال نے حدمیث م ۹۹۹ کے سلسلیں ان کا ذکر کیا اور ان کی شیعیت کی مراحت ک ہے (کمنزالعمال علیہ ط^{وع})

علامه فهى ميران مير ان كم متعلق الكصيري :

"عبدالرزاق بن تا فی بیک از علما سے اعلام و تقان سے بیت ہے۔
ک کتا ہیں اکھیں۔ جامع کیر تصنیعت کی ۔ بر فزائ علوم سکتے۔
علم کی تحصیل کے بیہ لوگ دور وراز سے سفر کرکے ان کے
ایس آتے شلاا مام احد واسحاق ، ہمیلی ، وصلی رمادی وغیر
ممل حفاظ معریث وائم علم نے ان کی معریوں سے اپنے
مسلک پراستدلال کیا ہے۔ طبیالسی سے منقول ہے۔ وہ
مسلک پراستدلال کیا ہے۔ طبیالسی سے منقول ہے۔ وہ
کہتے ہیں کہ ابن معین بیان کرستے سے کھے کہ میں شے عبدالرزاق
کی زبان سے ایسی یا نیں سی جن سے مجھے ان کے شبعہ ہونے کا

لقین ہوگیا بیں نے عبدالرزاق سے پوچھاکہ تھارے اسا تذہبن سے تم نے بڑھا ہے وہ تؤسب کے سب تی تھے معمر ، مالک ابن جریح ، سفیان ، اوزاعی وغیرہ بھرتم شیعہ کیسے ہوگئے ؟ انھوں نے جواب دیا کہ عفر بن سیمان ہارے یہاں آئے تھے ہم نے انھیں مالم و قاصل اور بڑا نباب سیرت پایا انھیں سے متاثر ہوکر میں نے یہ مذہب افتیار کیا۔"

عبدالرزاق کی اس گفتگوسے نسکاتا ہے کہ وہ جعفر صنبتی کی وجہ سے شبعیم و کے مکر لطفت یہ ہے کہ خود جعفر صنبی عبدالرزان کی معد میں ابی بکر معند می کا خیال ہو ہے کہ خود جعفر صنبی کی وجہ سے شبعہ ہوئے کے جعفر صنبی کی وجہ سے شبعہ کردیا ۔ ایسے نوگوں کو اسس نے شبعہ کردیا ۔

این میں مین کا تولیم نے اوپر ذکر کیا باوجود کی عبدالرزاق کی شیعبت سے بخوبی آگاہ تف لیکن اتفول نے بہت زیادہ ان کی حدیثوں سے استفادہ کیا۔
احمرین خیٹمہ ببان کرنے منے کہ ابن معین سے کسی نے کہا کہ امام احمد تو کہتے ہیں کہ عبدالرزاق کی حدیثوں کو ان کی شیعیت کی وجہ سے مردود سجھتے تھے تو ابن معین نے کہا نغدا کی حتم عبدالرزاق، عبدالنہ بن موسی سے مردود سجھتے تھے تو ابن معین نے کہا نغدا کی حتم عبدالرزاق، عبدالنہ بن موسی کی حدیثوں سے کئی مرسی سے مدین سے مدین کی حدیثوں سے کئی گان رہادہ حدیثیں عبدالرزاق سے سن بیں (میزان الاعتدال)

آبومہ کے محدین اسماعیل صزاری کا بیان ہے کہ ہم لوگ شہرصنعا میں عبدارزاق کے پاسخفیل علم مدیث ہیں منہاک متھے کہ ہم لوگ شہرصنعا میں عبدارزاق کی صریتی کی کوشیعہ ہوئے کی وجہ سے معزوک قاردے دیاہے ہیں اسس خبرسے برطا صدر ہوا کہ ساری محنست اکاریت گئی

مجرہم ما بیوں کے ہمراہ مکہ آئے وہاں ابن میبن سے ملاقات ہوئی ہم نے ان سے دریافت کیا انفول نے کہا - اگر عبدالرزاق مرتد بھی ہوجایش تو (وہ است ثقہ ہیں کہ) ہم ان کی عدیثیوں کو متروک بہیں قرار دے سکتے (میران الاعتدال تذکرہ عبدالرزاق)

ابن عدی عبدالرزاق کے متعلق <u>لکھتے ہیں</u> کہ انھوں نے نصائل داہلہتے ، یں الیی مدیثیں بیان کی ہیں جس کی تا ئبد کسی و وسٹھے شے نہیں کی۔ ۱ ور

ئے ابن عدی کا برکہنا سوا ان محے تعسب کے ادرکیاسمے امائے عبدالرزاق نے نصائل المبسیٹ کی جو میشی دوایت ک بی انعماف ببندعالم را بل سنت نے اس کی تا نبیر بھی کی ہے اوراے معیرے مدینیوں پس شارکیاسے: اِ ن خارجی وامبی دشمنان اہلیدیت سے البندنمالفنت کی ہے۔ منجہ ا النامدينيوں كے ايك وہ معرشيت جوا مربن ازبر جو با نفاق حميت بي نے روايت ك ہے کرمچہ سے مہدالرزاق نے بیان کہا ک سے معمرے ان سے زبری نے ان سے مبیداں ٹرنے ان سے ابن عباس نے کہ بیٹی پڑے معزمت علی کی طرفت انٹھاء اٹھا کر کہا تم ونیا ہیں بھی مروار ہواور اکومن بیں بھی جس سے تھیں دوست رکھا اس نے مجھے دوست رکھا اورجیں سے تم سے دیشنی کی اس نے مجہ سے دیشنی کی ۔ متھیں دوسنٹ زیکھنے والا خدا کو دوسنٹ ریکھنے والا اورتنیس وشن دکھنے والا خواکو دشن رکھنے والا ا در مذاب جہنم سے متفارسے وشق کے بئے۔امام ماکم مسئندک جلد ب صفر ۱۲۸ براس صوبیٹ کو درنا کرنے کیستے ہیں کربر صوبہ ہے المارئ وسلم كم مسيار يمي ميج ب كران دونول ف الى معيمين بس در نبي كيادومرى مدیث جعج عبدالرزان نے لبلدامناہ این عباس سے روایت کی ہے کہ منا برمستیدہ نے رمالند کاک سے مومن کی بابان اب نے مجھ فریب وارار شخص سے بیا اس مخفرت سنے فرایکیاتم اس سے خوش نہیں ہو کہ خداوند کریم نے باسٹندگان زبین کی طرف (اتی اُنگل مغربر)

اہل بہت کے دشمنوں کے معالب میں منکر حدثیب بیان کی ہیں۔ لوگوں نے ایخیں شیعہ مکھاہے۔

منقری کہ با وجود عبدالرزان کے کھلم کھلاشید ہونے کے علمارا ہل سنت نے انتہائی جلیل الغذر عالم محدث اور بے مداثقہ ومعتبر محجا ہے امام احمد سے کسی شے بوجیا عبدالرزاق سے بطرہ کرمجی آپ کو مہبر صدیث والا ملا ؟ انھوں نے جواب ویا پنہیں ان سے بہتر کوئی نہیں ۔

علامہ نتیران ابن کتاب جع بین رجال الصیحیین بیں سبلہ حالات عبدارزاق الم احد کا تول نقل کرنے ہیں کہ حبب لوگ بینی جرائی کسی حدیث بیں اختلات کریں نوعبدالرزاق جو کہیں وہ صیح ہے۔ ان کی جلالت قدر کا ای سے اندازہ ہوسکتاہے کہ علامہ ابن خلسکان عبدالرزاق کے پاس (ملاحظہ ہو وفیات الاحیان) ان سے اپنے ذان کے اتمہ اسلام نے حدیثیں روایت کیں جیبے سفیان بن عیب مار محال من میں دوجرہ ہیں بیا اس میرین حنبل ، کی بن میں دوجرہ ہیں بیا ہو ہے اور سائلہ یو میں انتقال کیا ۔ الم حبفر مادن میں موجود ہیں بیا ہے۔ الم حبفر مادن ا

(پیتیدگرسشندمؤ کا ماسشبہ) فیلم کی ان بین سے حروت ورخفسوں کو نتخسب کیا ایک کو بخفاط اِ سبب بنایا دومرے کو بمقارا نوہر-اس مدمیث کو المم ماکم شے کسیلدا سنا د ابوہرم بیا سے محی دوایت کیا ہے ۔ ملاحظ ہومسسندرک مبلدس صعابیہ

ے وشنان ہل بیت کے متعلق عبدالرزان کی بیان کردہ مدشین معاویہ اوران کے ہیرو وُں ہی کے نزدیک منان ہل بیرو وُں ہی ک نزدیک منکر ہوسکتی جی مثلاً بہ معریث جوعبرالرزاق نے سبد اساد مرفوعاً روایت کی کہ ا ڈا دائیتم معاوسیة حسل مند بری فاشتادی سیب ساویہ کومیرے منزم ردیجنا تن کر دینا ہ

عبب دالملكب بن اعين

یہ زرارہ ، حمران و بجیر و عبدالرحن و غیرہ کے بھائی ہیں۔ یہ سب
کے سب بندگان شیعہ سے ہیں اورا کھوں سے فدمست مرابعین کرے برط ب
درجے ماصل کیے ۔ ان بھائیوں نے اولاد بھی بڑی صالح و مبارک پائی باب
کی طرح بیٹوں نے بھی مذہب جفنہ کی ترویج واشا عست میں برا احصہ لب
عبدالملک کے متعلق علامہ ذہبی میزان الاعتدال میں لکھتے ہیں ابووائل ولم مرابع بیان ہے کہ ابوماتم تے امنیں صالح الحدیث کہا ہے دو سروں نے صدون
اور رافقی کہا۔

ابن قبسران، کتاب جع بین الرجال الصحیحین بیں ان کا ذکر کرستے ہوسے فکھنے بیں کرعبدالملک بن اعین حمران کوئی کے بھائی بیں اور شبعہ ستھے۔ بخاری دستم بیں ان کی حدیثیں موجود ہیں۔

عصرالهم مبعزصادق جمیں انتقال کیا۔امام سے ان سے بیے دعائی اور یہ بھی ردامیت بیں ملتا ہے کہ امام نے اپنے اصحاب کے ساتھ ان کی قبر ک زیارت کی ۔

عبدالشربن سيكوني

امام بخاری کے مشیوخ ہیں سے ہیں ۔ابن فتیب نے اپنی کتاب معارف مسئنے میں اضحاب مدمیت ہیں ان کا ذکر اوران کی شیعیست کی تھر کے کی ہے مچرمشا ہیرشیعہ کے حنن میں بھی ان کا ذکر کیا ہے ۔ (ملاحظ ہومعارف ملکے) علاماین سعد سے طبقاست علد 4 مسالاً پران کے مالات کھے ہیں اوران کے شبہ مونے کی صراف سند کی ہے۔ ابن اثیر نے تاریخ کا بلی مبلسلہ واقعات سند ان کی وفات کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ عبیدالتہ بن موئی موئی عبی نقیہ ۔ پیسٹینہ نظے اور الم مجاری سے شیخ ہیں ۔ ان کی شیخ میں علامہ ذہ ی نے میران الاعندال میں ان کے متعلق کھا ہے۔ عبیدائٹہ بن موئی بخادی کے شیخ ہیں اور فی نفسہ تعتہ ہیں لیکن یہ شیعہ اور مذہب المسنت سے منحوف کے شیخ ہیں اور فی نفسہ تعتہ ہیں لیکن یہ شیعہ اور مذہب المسنت سے منحوف تھے۔ ابوما تم وابن معین شدان ہوئے وارد یا ہے . احد بن عبداللہ عجل ان کے متعلق کہتے ہیں کہ عبیدالد ہوں موسی بوئے عالم قرآن وہا حب معرفت سے منعوب معرفت سے منافع ہیں کے عبدالد ہوں موسی بوئے یا منستہ ہوئے بین وہا حب معرفت سے میں مدین میں مرمانی میں ہوئے یا میستے ہوئے بین وہا حب معرفت سے میں سے ایک میں مرمانی میں ہوئے یا میستے ہوئے بین وہا حب معرفت سے میں شاہد کے ہوئے یا میستے ہوئے بین وہا۔

انحیں علامہ فہبی نے مطرب میمون کے مالات کے صن میں بھی بہلا انحیں علامہ فہبی نے مطرب میمون کے مالات کے صن میں بھی بہلا کا ذکر کرنے ہوئے لکھا ہے کہ بہ تقاور شبعہ تھے۔ ابن معین عبدالتہ بن سی ا اور عبدالرزان سے حدیث کا استفادہ کرتے ، یہ جانتے ہوئے کہ بر دونوں شبعہ مسلک کے بین ان کی حدثیں صبح بخاری وسلم اور بھی حات بیں موجود ہیں۔

ابواليقطان عثمان بن عميثقفي كوفي بجلي

سنن ابی داؤد اورجامع ترمذی میں ان کی حدثیں موجود ہیں -

عدى بن تابىت كو في

ابن معین نے انفیں فالی سشبعہ لکھاہے ، وارقطنی ال کے منغلق لکھتے ہیں کہ فالی رافقی ہیں اور ثقہ ہیں -

۔ علامہ ذہبی ان کے مالاست میں آکھتے ہیں کہ برشیوں کے عالم صاد ن ان کے قامنی اوران ک مسجد کے الم ہیں ۔اگرا بخیس جیسے دومرے شببہ کمبی ہوا کریں توشیول کی برائیاں بیمنت کم ہوجا بئی ۔ واقعلی ، احمد مِن صبّل ، احمد عجلی احکسائی سبعی انحبس ثقہ مباہنتے تھے ۔ ان کی مذہبی میح سلم ویجاری میں موجود ہیں ۔

عطيهن سعدبن جناده عوبي

بڑی شہر ور تھے ہے ہورگ ہیں علامہ ذہبی سالم مرادی سے نقل کرنے ہوئے معلیہ شیعہ بتھے۔

ابن قبیب نے عطیر بن سعد کے بوتے حین بن من ابن عطیر کے حالات کے صنی میں مکھا ہے کہ الات کے صنی میں مکھا ہے کہ م کے صنی میں مکھا ہے کہ یہ عطیہ حجاج کے زائد ہی فقید سفے اور شیعہ تقے بجر مسلسلہ تذکرہ مشاہیر شیعہ بھی ان کا تذکرہ کیا ہے۔

علام ابن سعد نے ان کے جومالات اکھے ہیں اس سے انزازہ ہوتا ہے کہ بیشیعیت میں کنتے واسخ وثابت قدم بزرگ منتے ۔ ان کے باپ سعد بن جناوہ امیرالمومنین کے اصحاب میں سے تھے ۔ امیرالمومنین کونہ میں تھے ۔ سعد معنرت کی خدمت ہیں آئے بعرض کیا : امیرالمومنین میا میرسے میہاں فرزند ہیں ا جواہے اسس کا نام دکھ دیجئے ۔

آپ نے فرمایا: یہ عطبۂ خداوندی سے رچنانچہ عطبہ کام رکھ دہا گیا۔ ابن سعد یہ بھی لکھتے ہیں کہ :

• عطیہ نے ابن استعدث کی ہمرای میں حجاج میرخ دیے کیا جب ابن استعدث کوشکست ہوئی توعطیہ فارس مجاگ گئے۔ جہاج نے فارس کے ماکم محدبن قاسم تفتی کو لکھا کہ عطیہ کو ہلا کہو کہ علی پر نبترا کریں ورزتم انخبیں مچارسو کو طبسے مارو رسر اور وارسی مونڈ ڈالو۔ محدبن قاسم نے بلاکر حجاج کا یہ خطاس خلیا انفول نے انکارکیا تو اسس نے انھیں چا رسوکو طبے مارے
اور سراور طارط می مونڈ طالی ۔ جب قتیب والی خراسان ہو اتو
عطیداس کے پاس پنجے اور برابر خراسان ہی ہیں دہے ۔ بھر
حبب عمر بن ہبیرہ عواق کا گور نر ہوا تو اسخوں نے عمر کو خط
کھا اور عواق آنے کی اجازت مائی ۔ اس کی اجازت بریہ
کوف آئے اور برابر کوف میں رہے بہاں تک کوساللہ ہی ب
وہیں انتقال کیا ۔ یہ برطے تقد بزرگ ہیں اور ان کی میڑی ب
عطیہ نے برطی پاکیزہ ہیں دطبقات ابن سعد حلد ہو مسئلا) "
عطیہ نے برطی پاکیزہ نسل پائی ۔ ان کی اولا وسب کے سب شبعہ تقے او ر
برطے عالم وقاصل ما حی عز ورش من اور ممتاز شخصینوں کے مالک جیب
برطے عالم وقاصل ما حی عز ورش من اور ممتاز شخصینوں کے مالک جیب
حبین بن حین بن عطیہ و محد بن سعد بن محد بن من عطیہ وغیرہ ۔
عطیہ کی مدنہ بن سن ابل واؤد و تر فری بیں موجود ہیں ۔
عطیہ کی مدنہ بن سن ابل واؤد و تر فری بیں موجود ہیں ۔

علاربن مسالح تنمى كوفي

میزان الاعتدال میں اسبارا مالاست علار ابوحاتم کا یہ قول مذکور سے کہ بہ خالص شیعوں ہیں سے یخے امام ابوداؤد و تربذی نے ان کی حدیثوں سے اپنے مسلک برات دلال کیا ہے ۔ ابن معین نے تقد کہا ہے ابوما آ وابو زرعہ نے ان میں کوئی ٹراپی منہیں مجی ۔

ان کی حدشیں سن ابی داؤ د وجامع ترندی بیں موجود ہیں۔ یہ شاعر بھی سقے امیرالمومین کی مدم میں بڑھے معرکہ کے قعیبہ سے اور صفرت سیدالشہدار کے مرشے لکھے ہیں۔

علفرين فبس بن عبدالله تخني

برخفوص مبان ابل بربت اسے عقد علامی برسان نے ملل وکل میں انھیں مشا میں بیت ہے۔ علامی برسان نے ملل وکل میں انھیں مشا میں شہر بر کے معانی ابل امیرالمومنین کے صابی ہیں ۔ جنگ صعفین میں حصرت کے ہمرکاب تقے ۔ اُبل جنوبی کثر مت عبادت کی وجہ سے اُبل العملاة اُبل العملاة اُبل کے ہمرکاب تقے ۔ اُبل جنوبی کثر مت عبادت کی وجہ سے اُبل العملاة اُبل العملاة اُبل کہا مانا کھا ۔ جنگ صفین میں شہر ہوئے علقہ نے ہمی برط ۔ کار اِسے نمایاں انجام دید ۔ وشنوں کو خوب ند نہنے کمیا ،ان کی اُناک دخی موقعی ۔ یسدست العر معاویہ کے مرکم مخالف دیہے ۔

علقہ کی عدالت وحلالت فکر دحفزات ابل منست کے نزد کیک با وجود ان کی شیعیہت کے ہم النوسٹ عبشیت دکھتی ہے ۔ ارباب صحاح سنۃ نے ان کی صدیتوں سے احتجاج کیا ہے جیمے مخاری وصبح مسلم بیں ان کی حدیثیں موجود ہیں بسکال سرھ ہیں کوفہ ہیں استقال کیا۔

علی بن بدنمیسہ

علام ذہب نے میزان الاعندال میں ان کے متعلق لکھا ہے۔ الم احد بن صبّل انھیں صالح المحدمبیث اور مبلیل القدرسشیعہ بیان کرنے تھے۔ ابنِ معین نے ایٹیں نُعْدَ فرار وہاہے۔ اصحاب سن نے ان سے روایت کی ہے

الوالحن على بن جعد حومبرى بغدادي

امام بخاری کے شیوخ میں سے ہیں۔ این فنینبہ نے معارف میں انھیں

مشام پیشبدیں لکھاہے۔ میزان الاخذال میں ان کے مالات بیں ہے کساتھ برسس تک ان کا وطیرہ بر ہاہے کہ ایک دن روزہ سے رہتے دوسرے دن بحالتِ افعار۔ قید انی نے کتاب جمع بین رمال الصیحین میں ان کا ذکر کیاہے بخاری نے اپنی میمے میں ان سے بارہ حدثیمیں روابیت کی ہیں۔ ۲۹ برس کی عمیں سنتانہ میں انتقال کیا۔

على بن زيدين عبالشد تتمي بقري

احمدعجلی نے انفہ کشیعہ اور دانفی لکھا ہے گر باوج وان کے سندید رانفی ہونے کے علماد تابعین نے ان سے سنفا وہ کبابہ بھرہ کے نفہ ایس سے شخصے اور البیے جلیل انفذر وعلم ونفل میں ممثار کہ جب حسن بھری کا انتقال ہوا معرہ والوں نے ان سے کہا کہ ہے جسن بھری کی مگر پراتئے رہی فرما ہوں -اس زمانہ ہس بھرہ کے اندرکوئی کوئی شنیعہ ہواکرتا ۔

قیسانی نے اپی کناب جمع مین رمال العیمبین بیب ان کا ذکرکیاہے۔ ساتالہ میں انتقال کیا۔

على برصسالح

حن بن صالح کے بھائی ہیں جن کے مالاسٹ ہیں ہم قاشے ان کا ذکر کر چکے ہیں جبی مسلم میں ان کی مدشیں موجود ہیں سلف یہ میں انتقال کیا۔

ابونحيل على بن غراب فرزارى كونى

ابن حبان نے انھیں سشیعہ لکھاہے۔ ابن مبین و دارقطتی سے انھیں تُق

قرار دیاہے۔الوحاتم نے ان کی مدینوں یں کوئی مصنا مُنت بہیں مجعاد الوزرعہ نے کہا ہے کہ میرے نزد بک صدوق ہیں ۔

امام احدکا ایست دہے کہ میں توا بخیں صدیق ہی سمجتنا ہوں ۔اصحام سنن نے ان کی صریبی درج کی ہیں ۔ إرون دست بد کے نعاز میں سکھلے میں انتقال کیا ۔

الوالحن على بن قادم خزاعى كو فئ

یہ بہت سے محدیثن کے شیخ ہیں -ابن سعدنے طبقات ملد 4 متھے۔ بران کا تذکرہ کیا اور مکھا ہے کہ بڑے شبعہ متھے سیسٹن ابی واؤد و مامع ترندی ہیں ان کی صرفین موجود ہیں -

على بن مهت ذرطرا نعيٰ

ترمذی ونسائی اوردیگرمدین کے مشیخ بیں - علامہ ذہبی نے عالم نسائی اوردیگر محدیثن کے مشیخ بیں - علامہ ذہبی نے عالم نسائی کا قول نقل کیا ہے کہ علی ابن مندرخا نصیب صدوق وثقة لکھا ہے - الم منسائی گواہی دسینے میں کہ علی بن منذرخا نص شعید نفے بچوان کی مدیوں کی روا میت قابل اعتبا نہیں اور سیم دین اسلامی الله منت نے دوا بہت ہی ہے کس حدیک لائن ماتم ذہنیہ نسب سے ساتھ ہیں اہل سنت نے دوا بہت ہی ہے کس حدیک لائن ماتم ذہنیہ نسب سے ساتھ ہیں انتقال کیا ۔

ابوالحن على بن مصنم بن بربد كو في

امام احد كاسائذ هيس سعين امام ابوداؤد في الفين تحوسس

شیبه کصاہے۔ ابن مبان کا قول ہے کہ علی بن إسٹم غالی شیبہ تھے۔ جعفراین ابان کہتے ہیں کہ ہیں ہے ابن دنبر کو کہنے سے شاء علی ابن اسٹم شیعیدست ہیں حدسے بڑھے ہوئے تھتے۔

بخاری فراتے ہیں کہ علی بن ہاشم اور ان سے باب دو آؤں اپنے مذمب میں بڑے خالی عفقاسی وجہسے بخاری نے ان کی مدشیں مسیح ہیں درج نہیں کیس لیکن ہاتی پانخ ارباب معام نے ان کی مدشیں ابنی معام میں درج کی ہیں اوران کی مدینوں سے اپنے مسلک پرا منجائے کیا ہے۔

ابن میین وجیرہ سے ایخیں تقد فرار دیاہے ۔ابوداؤ دسنے اثبات میں شارکیا ۔ابوزرعہ نے صدوق کمیا ۔ امام شائی سے ان بیں کوئی مصالفت پہیں سمجھا۔سلشاری میں انتقال کیا

عماربن زربت كوتى

سلیا نی نے انفیں رافقی شمارکہا ہے اور با وجودان سے رافقی مونے کے میج سلم وسنن ابی داؤد وسنن سائی میں ان کی مدیثیں موجود ہیں۔

عماربن معاوب

ان کی کنیست ابرمعاویے متی بہ جلیل الفقدر شبعہ تنفے محبت اہلسیت کے جرم ہیں جرم ہیں الخیس بڑی اندیش کے جرم ہیں جرم ہیں الخیس بڑی اندیش وی گئیں بہ شیر بن مروان سے مشیعیت سے جرم ہیں ان سے دونوں ہیں کا استفادہ کیا اوران کی مدینی سے اسینے مساکب برات دال ان سے مدین کا استفادہ کیا اوران کی مدینی سے اسینے مساکب برات دال کی مدینی سے اسینے مساکب برات دال کی مدینی سے اسینے مساکب برات دال کی مدینی سے البینے مساکب برات دال کی مدینی کا درب بہت سے ذکوں شے انجیب تی آدادیا ہے

بخاری کوچوڈ کر باتی سجی ارباب محام نے ان کی حدثیب اپنے معلی میں درج کی ہیں۔ علامہ ذہبی نے معلی میں درج کی ہیں۔ علامہ ذہبی نے میزان الاعتدال ہیں ان کے متعلق تمام مذکورہ بابین نقل کی ہیں اور ان کے متعلق کسی اور ان کے متعلق کسی اور زان کے تقد ہونے بین کلام کیا سوا عقیل کے ۔ سے بین کا مربا کہا ۔

ابواسخت عمروبن عبداللهمدان كوفي

ابن قینب نے معارف میں عمامہ پہرستانی نے ملل و کل میں ان کی سخفیدت کی نفریج کی ہے ۔ بیرو رگ کو کے انفیں علی القدر محدثین میں سے ہیں جن کے سکے کو دستمنان اہل مبیت نا لپندیدگ ک نسکاہ سے دیجھتے ہیں کیونکہ اکفوں نے حمہور کی دوشش کو چھوٹ کرا ہی مبیت کی اتباع وہیروی کو بہن کھول اور ہر دبنی سسئل میں ۔ اہل مبیت کی طوف دجوی کرنے ہیں انفوں بہن کے اس وجے سے توجوز مان کا یہ نقرہ ہے ۔

"کونہ کے کچہ ایسے افراد شخے کہ با وجود کیے لوگ ان کے عقائد و خیالات کو بہند نہیں کرتے شخے گر فن حدمیث ہیں وہ مرجے آنام اور محدثین کو فہ کے راس ورشیس تھے جیسے ایوبہی ' منصور ، زبید یا می ، اعمش وغیرہ لوگوں نے ان افراد کی سچائی و دیانڈاری کی وج سے ان کی بیان کردہ حدیثوں کو مراشکھوں بررکھا اور جوحدثیمیں ان توگوں نے مرسلا بیان کیں ان بیں توفف کیا یہ

ا ہوہسمات کی مرسلًا بیان کی ہوئی حدیثوں میں ناصبی ذہنیبت والوں نے

ترقعت جوكيا الخيس مي سے ايك مدميت يہے:

" تنال رسول الله عملى كشجرة اننا احسلها وعلى نرعها والحسن والحسين شمرها والشمية ورقها "

" علی کی مثال درخست جیسی ہے۔ بیں اس درخست کی جرط موں ، علی اس کی شاخ ہیں حسن وصین اس کے کھل ہیں اورسٹ بداس درخست کے بیتے ہیں "

ان کی حدیثوں سے جملہ ارباب صحاح سے استجاج کیا ہے بہاری وسلم اور دیگرکتنے میاں سمجی میں ان کی حدیثیں موجود ہیں -

ابرسهل عون ابن ابي جبيله لبعرى

ابن فنیبر نے معادت میں انخبیں مشا پھیر تبدیس شارکیا ہے۔علامز ہی میران الاحتزال میں ان کے منعلق لکھتے ہیں کہ"؛ کان بیتال نسد عون العدیق" انخبیں لوگ سجائی والے عوف کہتے ہیں جعفر بن سلیمان انخبیں شبعہ اور مندا ر انخبیں رائفتی میان کرنے ہیں۔ ان کی مدشہیں میرے مجادی میرے سلم میں ہمی ہیں اور در بیگ کمشیر صحاح میں ہمی۔

فت

فقتل بن دكين

كنيت أب كى الونعيم مقى يرنارى كمشيون من سعبي محققتنن

المسمنت مثلاً ابن قبيب وغيره مع الخيس شيعه لكهاسيد. علامه ذبي ميردان الاعتدال مي لكميت بي :

> " العنصنىل بن دكسين البونسعيم حافظ حسجسة إلا انسه يستشيع "

" ففنل بن دکین جن کی کنبست الولنیم تنی یہ مدیث کے مافظ اور مجست ہیں مگر یہ کرمشبید تھے ؛

ان کی شیعیست بس کسی کو تا مل کی گنجا نشش مہیں -ان سے مہدار باب مِعاع ججاج کرنے ہیں -ان کی مدیثیں میچ مخاری جمیع مسلم اور دیگرم حا صبحی ہی ہوجوہ ہیں۔ مسئل پیٹو زمانۂ مکومست معتصم ہیں انتقال کیا ۔

ا علامه ابن سعد طبعاست مبلد ۹ صغر ۱ ۲۵ پران کے منعلق لکھتے ہیں۔ « وکان شقسة حساحہ و ناکشہ پرالحہ دیث ، حصیہ آ ، « یہ مجروسہ کے لائق ہرطرح قابل اطبیان مہبت زیاد ، حدیثیں سے رادی اور مجست ہیں "

ابوعبدالرحن ففيل بن مرزوق

علامہ ذہبی ان کے متعلق میزان الاعتدال میں کھنے ہیں کہ بیمشہور و معرومیت شبعہ ہیں ۔

سفیان بن جیبینہ ، ابن مبین ، ابن عدی وطیروحبلہ انتہ حدیث نے انھیں ٹھٹ قرار دیا ہے۔ ہیٹم بن جیل نے ان سے متعلق کہا ہے کہ فعیل بن مرزوق ' بلحاظ زیر وضنل ہیکے از انکہ ہواسیت سننے ۔ صبح مسلم ہیں ہن کی حدشیں موجود ہیں ۔

فطب ربن فليفيه خناط كوني

عبدالتدین احمد نے اپنے والدامام احمدین منبل سے فطرکے متعلق بوجها توامضوں نے فرایا:

« ثقة صالح العديث ، حديثة حديث دجل كيت الا انده ستشيع ؟

• نطر ثقتهی اصالح الحدیث ہیں۔ ان کی مدیثیں زیرکے م دانا درگوں مبیی ہیں نیکن یہ کہ وہ شبیہ شتھے "

ابن معین کا تول ہے کہ فطرین خلیفہ تعدّا ورسشیعہ ہیں میچ کاری وسنن ایم میں ان کی حدیثیبی موجود ہیں بستاہ ہے ہیں انتقال کیا۔

م

ابوعشان مالكسبن المعيل بن ديا دين درم كوفي

امام بخاری سے شخ ہیں۔ ابن سعد طبقانت عبلہ ۲ می^{۲۸} پران کے معالم نے ہوئے آخر میں لکھتے ہیں کہ :

" ابوضان ثقدا درصدوق اوربطے مشدیدنتم کے شیدتھے!" علامہ ذہبی نے بمی ان کی علالت و ملالتِ قدر پر دکشنی ڈالی ہے اور ومناسن کی ہے کہ اکنوں نے غربہ تشیع اپنے استناد حن مالح سے ماصل کیا ۔ اور ابن معین کہا کرنے کہ کوفہ میں ابوعنسان جبیبا بھٹوس آدی منہیں ۔ ابوما تم بھی ان کے متعلق یہی دائے رکھتے شتھے ۔امام بخاری ہے بلا واسطران سے متعدد مدیثیں رواست کی ہیں بخاری وسلم میں ان کی مدیثیں موجود ہیں سفل کی چیس انتقال کیا ۔

محسيسدين خازم

جوابرمعا ویرصنریمتیی کے نام سے زیادہ شہور ہیں۔علامہ ذہبی میزان الاعتدال بیں ان کا ذکر کرتے ہوئے فکھتے ہیں کہ : " یہ بڑے ثقہ ،کھوس اور پیچے از انراعلام بھے۔ دیری وانست بیں کمی نے بھی ان کے متلق کوئی ایسی باست مہیں کبی جو ان کی شان کے شانی ہو ہے

امام ما کم فراتے ہیں کہ ان کی مدیؤں سے بخاری وسلم دونوں سے لینے مسلک پراسندلال کیا ہے ۔ ان کے متعنق مٹہورہے کہ بڑے خالی شیعہ کنے ۔ ان کی حدیثوں سے حملہ ارباب معاح سنز نے احتجاج کیا ہے اور سبی معاح میں ان کی حدیثیں موجود ہیں مستلاح ہیں پیدا ہوئے اور شالیرہ ہیں انتقال کیا۔

محدبن عبالك ينيثا بورئ ننهوتر امام حاكم

بہزرگ۔ مفاظ ومحدیثن کے الم م اور سبکر اول کتابوں کے مصنعت ہی تھیں ا علمی مفاطر کا سس کے مفرکیے اور دو مہزار سٹیوخ مدیث سے اما دیں شد کا استفادہ کیا - ان کے زمانہ کے مرج انام علما سے اعلام جیبے صعلو کی امام بن فور اور دیگر جیج انکہ اعلام انحنیں اپنے سے مقدم دہم ترسم جیسے تقے اور آپ کے علم وضن کا کھا ظریصتے تھے ۔ معزز ومحترم ہونے کے معیز من اور بے ملک سٹیر امام سمجھتے تھے ۔ ان کے بعد کے جینے محدیثن ہوئے وہ سب آپ کے خوان علم کے زلہ خوار میں - بزرگ اکا برسٹ بیدا ورنٹر نعیت مصطفوی کے افظوں کے افظوں کے افظوں کے افظوں کے افظوں کے منظو میں سے منتھے ۔ جبیبا کہ علامہ ذہبی کی تذکرة الحفاظ بیں صراحت موجود ہے میران الاعتدال میں جمیل المسلم کے الاست امام موصوب تقریح ہے میں انتقال کیا ۔ پیدا ہوئے اور شن کھر جی انتقال کیا ۔

محدبن عبيدالله بن ابي داخ مد بي

ان کا پورا خاندان سشبیر تھا۔ان کے خاندان والوں کی نفعایفت دیکھے سے اندازہ ہوتا ہے کہ برحصرات شبیبت میں کنتے راسخ اور ثابت قدم تھے۔ محمد بن عبیداللہ کو ابن عدی نے کوفر کے سربر اور دہ شیوں میں شمار کیا ہے۔ ملاحظ ہو میران الاعتدال علامہ ذہبی۔

تزمذی و دیگرامحاب سنن ندان کی حدثین این صحاح یں درج کی میں علی این معرکم میں درج کی میں ۔ طبران نے اپنی معرکم برس سلداسناد محدین عبیدائشہ سے اورانفوں نے اپنے باپ داداک وساطست سے معرضت بغیر برخداکی به مدمیث روابیت کی ہے کہ آنخفرت سے معزمت علی سے ارشاد فرایا :

" کرسب سے بہلے ہم اور تم اور حن وصین اجتنت میں جائی گے ہمارے بیعیے ہم نوگوں کی اولاد رہیے گی اور ہم نوگوں کے سطیعہ ہمارے واپن اور جائی رہیں گے !!

ابوعب الرحن محرب فنبل بن غزوان كوني

ابن متیبہ نے اپی معاریت ہیں انھیں مشاہیے جب شارکیا ہے علامہ ابن سعد نے اپنی طبقات جلد 4 صلع پران کا تذکرہ کرنے ہوئے مکھا ہے: ، کہ یہ تف ، صدوق اور کیترالحدمید ہیں ۔ بیشید تف ، بعن علما ران کی صدیوں سے احتیاج بنیں کرتے "

علام ذہی نے انفین میزان میں کی مجھوں پر صدوق اور شید لکھا ہے۔
امام احد نے ان کے متعلق فرا یا کہ ان کی حدثیں پاکیڑہ ہیں اور پیشید ہیں۔
امام ابوداؤ د نے ان کے متعلق کا کھا ہے کہ بڑے سے سے نت وسٹ دید
شیعہ نتھے ۔ صدیث ومع ونت والے ہیں اور جمزہ سے انھوں نے علم قران مال
کیا ۔ ابن میں نے انفین تقد قرار دیا ہے ۔ امام احدونسائی نے ان کی صدیوں
میں کوئی مضا نفتہ نہیں دیکھا ۔ ان کی حدثیں میرے کا ری وسلم اور دیگر صحاح میں
میں کوئی مضا نفتہ نہیں دیکھا ۔ ان کی حدثیں میرے کا ری وسلم اور دیگر صحاح میں
میرے دیں ۔

محدثن للم بن طائفی

یامام جفرصادق کے سربراً وروہ اصحاب میں سے تنفے میشیخ الطائع ابوجعفر لوک شے اپنی کتاب رجال الشیعہ میں ان کا نذکرہ کیا ہے جس بن حبین بن واؤ دنے نقة لوگوں کے سلسلہ بیں ان کا ذکر کیا ہے۔

علامہ ذہبی ہے میوان الماعترال ہیں بکٹرست جلیل الفذر میر ٹین المہینت کے افوال ان کے ثقہ ہوسے کے متعلق نقل کیے ہیں۔ ان کی عدشیں میچے مسلم میں موجود ہیں ۔

محربن مورئ بن عبالتشيرالفطرى المدنى

معت ابوحاتم نے ان کے شیعہ اور تر مذی نے ان کے تقتہ ہونے کی مرا کی ہے (میروان الاعتدال علامہ ذہبی) ان کی صرفیبی میمیمسلم ودیگرسنن میں

موجو د پېري.

معاوییبن عمار دینی بجلی کو ن

یہ بورگ علیا ہے اما میہ کے نزد کی بھی بڑے معرز و محترم اور علیا کے المستنب کے نزد کی بڑے تقد ، عظیم المرتبت اور جلیل العدری ان کے والد عمار حق بروری ، حق کوش کا بہترین منونہ تنفے بٹیمیست کے جرم میں دسٹنا لِ آل محمد نے ان کے بیر فطئ کر جیدے تھے ۔ بٹیا مہی فقدم بہ قدم ہوجوبا ببدکے ۔ معاور بھی اپنے باب کی مکل شہیہ تھے ۔ امام جعزما دق اور موسی کا فلم کی صحبت میں دست اور آپ کے علوم کے عالی ہوئے ۔ آپ کی حدیثیں میں موجود ہیں ۔

معرومت بن خرلود كرحى

ذہی سے میزان الاعتدال میں اسخیں صدون وشعیہ لکھا ہے۔ نیز برکر بخاری وسلم اور ابوداؤد ہے ان کی حدثیب اسپے معال میں درج کی ہیں۔ ابن خلکا ن نے وضیات الاعیان میں امام علی رضا کے موالی میں اسخیں ذکر کیا ہے میسے ملم میں ان کی حدثیبی موجود ہیں پسند ترج میں بعث داد ہیں استقال فرمایا ۔ ان کی فرزیادت گا وعوام وخواص ہے سری سفعلی شہورمونی ان کے ظامدہ ہیں سے ستھے۔

منصورين المعنرين يجداللهن دبيعكوفي

امام محد باقرا وامام حبفر صادق محداماب سے تف عببا كدما حب

منتی القال نے دصاحبت کی ہے۔ ابن قیتبہ نے معارف بیں انھیں مشاہیر شیعہ میں شادکیا ہے۔ یہ دبی مصور ہیں جن کے متعان جوز جانی کا یہ ففرہ ہے کہ «کوفہ میں کچھ ایسے افراد نفے کہ لوگ۔ ان کے عقائہ کو نا لیسند جھتے نفے نگران کی ہیان کردہ صریح کوان کی غیر عمولی صدا و دیاست کی وجہ سے سرا تھھوں پر دکھا۔ جیسے ابوا کا ق ہمفور ' زبیریا بی اوراعمش وغیرہ … "

جلدارباب صحاح وسسنن سے ان کی حدیثوں سے اپنے مسلک پراستدال کیا ہے۔ صبح بخاری و لم سب ہی میں ان کی حدیثیں موجود ہیں .

منهال بنعمروابعي

کوذ کے منہورشیوں ہیں سے تھے ان کی مدیثیں صبح سلم دیجاری ہیں موجد ہیں۔

موسسىٰ بن قنيس *حفر مي*

ان کی کنیست الومی محتیل نے انھیں خانی رافعنیوں ہیں شارکیا ہے ان سے سعنیان نے صفرت ملی اور الو بکر کے سفلت دریا ضت کیا توجواب وباکہ علی محد کر بہت زیادہ مجوب ہیں ۔

موئی نے بسلساکہ اسنا دجناب امّ سلمہ زوم بہنجیم سے دوایت کی ہے کہ جناب ام سلم فرایاکر متن کہ علی حق پرسہے جوعلی کی بیروی کرسے گا وہی حق پر ہوگا ۔ اورجس نے مل کوچپوڑا اس نے حق کومپیوڑا ۔

موی نے فضائل ابلیدیت بس بہت سی صبح مدشیں دوابت کی بس موعقیل ب

شان گزری اورایفیس غالی دانفنیوں میں قرار دیا۔

ابن مین نے انھیں تقہ قرار دیاہے ۔ امام ابی داؤد اور دیگرامحاب سنن نے ان کی حدثوں سے ابنے مسلک پر استدلال کیاہے۔ ان کی حدّیں سنن ہیں موجود ہیں ۔

رن

الوداؤ دنفع بن حارث تخنی کوفی

عفیل ان کے منعلق کہتے ہیں کہ رفض ہیں بہت غلوسے کام لیتے تھے ہخاری فراتے ہیں کہ ان کی شیعیت ہفاری فراتے ہیں (ان کی شیعیت کی وجہ سے) ان سب کے با وجود محدثین علمانے ان سے استفادہ کیا اوران کی حدیثیں ملائے ان کے حدیثیں ہا مع ترذی ہیں موجود ہیں ۔ کی حدیثیں جا مع ترذی ہیں موجود ہیں ۔

<u>نوح بن قنيس بن رباح الحدا بی</u>

علامہ ذہبی مبہدان الاعتدال بیں ان کے منعلق <u>لکھنے</u> ہ*یں کہ* یہ صامح الحدمیث ہیں ۔

امام احمد و ابن سین نے انفیں تقدقرار دیا ہے۔ ابودا دُوفرائے بیں کہ بدلتیعیت کی طرف مائل تھے۔

ىسَا نُ سِے فرایا کہ ان میں کوئ معنا نعۃ بہنیں ۔

رہ۔ مسلم و دیگراصماب سنن شے ان کی مدیثیںاسپنے صحاح ہیں درج کی ہیں۔

A

بارون بن سعد عملي كوني

ذہی ان کے متعلق فرما تے ہیں کہ بی نفسہ صدوق ہیں مکین سخت سے کے رافقی ہیں۔ ابن معین ان کے متعلق فراتے ہیں کہ یہ برطسے فال شیع ستھے مسمجے مسلم میں ان کی حارثیں موجود ہیں۔

الوعلى إشم بن بريد كوتى

ابن مہبن نے انھیں تُعدِّ قرار دیا ہے اس افرار کے ساتھ کہ وہ رافعی تخط امام احمد نے ان کی حدیثوں ہیں کوئی مضا نعہ نہیں بھیجا ۔ ان کی حدیثیں سسسن ابی واؤد بسنن نسائی میں موجود ہیں ۔ یہ ہائم مشہور شیعہ گھرانے کے فرد تلقے مبدیا کہ علی بن ہائم ، کے حالاست ہیں ہم اوپراکھ استے ہیں ۔

مبيره بن بريم ميري

امرالمونین کے صحاب ہیں۔ امام احران کی مدینوں میں کوئی مضائف نہیں تصور فرمائے ۔ مثیر مشائل میں کوئی مضائف نہیں تصور فرمائے ۔ مثیر مشائل کے مثیر مشائل کیا ہے ۔ ان کا شبیہ مونا مسلماست سے سے بیسن نارید میں ان کی مدشین موجود ہیں ۔

ابوالمقدام شام بن زيا دبصرى

شهرستان في ملل ونفل بين المحين مشامير بيد مين شاركميا ب- ان كي

عدشیس می**ح ترمذ**ی وعنیرو میں موجود ہیں۔

ا *دالولب دم*شام بن عمار من تقبير بن ميسر*و*

انهبی ظفری دشتی بھی کہتے ہیں۔امام بخاری کے شیخ ہیں۔ابن تینب نے معارف بیں انھیں مشا ہیرشبعہ کے سلسلہ بیں ذکر کیا ہے ذہبی نے انھیں امام ، خطبیب ، محدث، عالم ، صدوق بہست زیادہ حدیثوں کا راوی لکھا ہے بخاری نے صبح ہیں مبہت می حدیثیں ان سے بلا واسط روایت کی ہیں سلالے بیں پیدا ہو تے سف کی ہیں انتقال کیا۔

بشيم بن بشير بن فاتم بن ديبارسلمي واسطى

ابن قبیب نے معارف بیں ایخیں مشامیر شعید میں شار کیا ہے۔ الم احد اور ان کے مجعور علما کے استادیں۔ ذہبی نے ایکی سو علما کے ارتعلام اور باقی سمجی حال میں وجودیں۔ اعلام لکھا ہے۔ ان کی حدثیمیں میچے مخاری وسلم اور باقی سمجی حال میں وجودیں۔

و

وكيع بن جراح بن شع بن عدى

ان کی کنیسند ابوسفیان کتی ، ابن قتیبه نے معارف بیں اسخیاں مشاہیر شیعہ میں فرار دیا ہے ۔

ابن مدینی نے کی تہذیب ہیں ان کی شیعیدن کی مراصت کی ہے مروان بن معاویہ ان کے مشیعہ ہونے ہیں کوئی شہنہ بس کرتے -ان کی حدیثوں سے حملدار باسب صماح سند ف احتباع كباب ميئيسلم وعير سبى بيان كى منتين موجود مين ر

ى

<u>یجیٰ بن جب زار حرنی کو بی</u>

یامیرالمومنین کے محال ہیں۔ علامہ ابن سعد نے طبقات حلد ہ مسال میں انھیں شعبہ کھا ہے۔ نیز یک یہ سیعیب میں فلوکیا کرنے سے اور انھوں نے بہرت سی عدشیس روائی کے اور انھوں نے بہرت سی عدشیس روائی کی ہیں۔ کی ہیں۔

ذہبی ہے انحیس صدون اور ثقر لکھا ہے۔ ان کی حدثیب صمح مسلم ودگر سسنن ہیں موجود ہیں ۔

<u>بچیٰ بن سعیب دقطان</u>

ان کی کنیت ابرسبری ابنی ابنی داند کے محدث ہیں۔ ابن قتیب ہے معار میں انفیس مشاہیر شہر میں شارکہا ہے جملہ ارباب معاح سنہ نے ان کی مدیرہ سے احتہاج کیا ہے میرم بخاری ومیح مسلم اورسبی معام میں ان کی مدیبیں موجود ہیں ۔

يزيد بن إلى زياد كوفي

ابن ففيل ان محمنلق بيان كريز بي كدير كمبارعلما يستبع سي بي

ذہبی نے بھی اکھا ہے کہ ہے کوفہ کے مشہورعلمار بی سے بہیں مگر لوگوں نے ان سے تفصیب بڑنا جس کی وجہ ہے ہے کہ انفول نے سب لسل اساد ابو برزہ یا ابوبردہ سے روابین کی ہے کہ :

" ہم لوگ سینیبر کے ساتھ نفے کر مینیبر نے گانے کی آوازسنی بنہ میلاکہ معاویہ اور عمرو بن العاص گارہے ہیں۔ اس پر نبیر م نبہ مبلاکہ معاویہ اور عمرو بن العاص گارہے ہیں۔ اس پر نبیر نے بروعافرائی کہ خداد ندا ! دونوں کو نشذیں اچھی طرح مثبلا کراوراً تش جہنم کی طوت بلا !"

صیح سلم وسسنن اربع بیں اَن کی مدینیں موجود ہیں ۔ نوشے برس کی عربیں سلت لمدھ میں اُمتغال کیا۔

الوعبب رانتدمبدلی

ذہی شھا تھیں سندید تحنت شید اکھا ہے۔ جوزم الی نے ان کے منعل بیان کیا ہے کہ بین مخاد کے معلم الدائشکر تھے ۔ امام احدا کھیں تعدّ قرار دیتے ہیں۔ منہرستانی نے بھی ملل ونحل میں شید اکھا ہے۔

ابن فتیبر نے معارف میں غالی ، وافعنی ذکر کیا ہے ۔ ان کی صرفیب مامع ترمذی اور سنن ابی داؤد اور دیگرسنن و مسانید میں موجود ہیں ۔ علامہ ابن سعد نے طبقات ملد ، صفط بر انفیس شدید النشیع شید اکتاب نیوی کہ لوگ کہتے ہیں کہ یہ مختار کے سپاہیوں کے اصر تنے ۔ مختار سے انفیس عبداللہ بن زبیر کی طرف آٹے سوسیا ہیوں کے ساتھ روا نہ کیا تاکم انفیس عبداللہ بن زبیر کی طرف آٹے سوسیا ہیوں کے ساتھ روا نہ کیا تاکم این زبیر سے جنگ کرے تھ ابن صفیہ کو ان کی فیدسے نیکال ابن - ابن زبیر این نربیر سے جنگ کرے تھ ورکر رکھا تفاا ورکھ یا این اکھی کی تقدیب کے ساتھ کو ان کی تقدیب کے ساتھ کی تقدیب کو ساتھ کی تقدیب کے ساتھ کی تقدیب کو ساتھ کی تقدیب کی تقدیب کو ساتھ کی تقدیب کی تقدیب کو ساتھ کی تقدیب کو ساتھ کی کی تقدیب کی تقدیب کی تقدیب کو ساتھ کی تقدیب کو ساتھ کی تقدیب کی تعدیب کی تقدیب کی تعدیب کی تقدیب کی تعدیب کی تعدیب کی تعدیب کی تعدیب کی تعدیب کا کھی کی تعدیب کو تعدیب کی تعدیب کی

اعلی ملا ڈالیں کیونکہ ان توگوں نے ابن زہر کی مبیت سے انکار کیا تھا۔ ابوعب دانٹر عدلی نے مینے کر ان حصرت کور اکیا۔

برسینکووں بیں سے چند تام ہم نے درج کیے ہیں۔ یہ نوگ علوم اسلام کے خزینہ دارہیں ان سے آثار بنوی محفوظ ہوئے اوران برصحات ونن د مساتید کا مدار رہا ہے۔

ہم نے آپ کی خوامش کے مطابق ان کے منتلق علیائے المسنت کی تویش اوران سے احتمان کو بھی ذکر کیا۔ اس سے آپ کی رائے میں صرور ندلی ہوگ کہ اہل سنست رحال شیعہ سے احتجائ نہیں کرنے ، اگر شیعوں کی حدثیب صرصت ان کے نشیع کے جرم میں روکروی جامیں تومبیا کہ ذہبی سے میزان میں ا بان بن تغلب کے ذکر میں کہاہیے ۔ کُل آٹا رِنوی صابح وبر ماہ ہوما بیں -ان کے علاوہ ہواروں کی تعداد میں ایسے شبعہ میں جن سے اہل سنتے احتب ج کیا ہے اور وہ ان سے معی سند کے اعتبارسے اور کٹرمن مدیرے سے زیادہ کشادہ وامن اورعلم کے اعتبارسے زیادہ کسین النظر تھے اور زمانے کے لحاظ سے ان سے بھی مقدم تھے اوران سے بمی زیا دہ ان کے قدم کشیع میں اسم تھے المحاب دول مي برى تعداد رمال شيدى سيرخبر، م خصفول بهد كا تزمير بيان كيا "العين بيراليت حافظ وصدوق ولغزمشيع م برجم سندا المبريت كى فرانى يريحبنيث يطمصت سے منص ملاول كياكيا مراين ويكين ، قتل كياكيا سولياك وي كين اورجو علوم وفنون کےمکےسعس وموجد بہوئے ۔ بیرصدون و دیا سنٹ و ورج و تنوی کہو عبا دست واخلاص کے دوشن سارسے شقے۔اوران سے دین اہی کولامتزاہی فائے۔ بہنے ۔ اوران کی خدماست کی برکتوں سے اسلام کا بحربے کنار آٹ بھی موجون ہے۔

مكتؤب منبره

سیم ؛ یں نے اپ ایسا آزہ دم سریع الخاطروزود فکرنہیں دیجھا اور نہ میرے کا نول نے آپ سے زیادہ صاحب بھیرت بخص کا ڈرمشا ۔ آپ کی نرم گفتاری شیری بہان فاہل دادہے ۔ آپ کے کل مکا تیب ہیں آپ کی شیوا بیانی دامن دل کو کھینینی ہے ۔ آپ دل و دیا نے ، ہوشش وحواس پر جھیا مبائے ہیں ۔ آپ کی مدال و بخیدہ تخریر ہے گرذیں جھیکا دیں اور صالانست کو من کے ساسنے سسز سکوں کر دیا ۔

حتینت به بے کسی کے لیے کوئی مانع نہیں ہے کہ اپنے شید کھائی سے احتہائی سے احتہائی سے احتہائی سے احتہائی سے احتہائی سے احتہائی کی داستے متن وحداً استحاد میں آپ کی داستے متن وحداً استحاد رستکر کی راسے عناد و تنگب دبی ہے ۔

مم كل إسن البي رايمان لائے اوران اكتر السات اللي ريمي ايمان لائے جن من سے اکثر کوات سے ذر کیا ہے جوامبرالمؤنین اور ائم ال میت کے نفل شرست پر دلاست کرن بین الله بی ماستے کرا بل فتله سے ائمدابل بہیت سے کیوں باعتنائى ؟ اورا صول وفروع بين ان كمسكك سه دوررسيا وراختلافى مسائل بیں ان کے بیروزہوئے علما ئے امنت نے اہل بین کے افکار وٹیالا سے بحث نک ملک بی اے ان کی نقلید کے ان سے معار مذکر نے رہے اور ان ک مخالعنست کی پروا نہ کی اورسلسن<u>ہ سے ہے ک</u>رخلعت تکبعوام امست ،غیبر المسبية كاشانون يرنظراك وبناكلام مبدى اتبي اوصبح اورسلم النوت مدثیمیںاگرائمہالمبیبین کی اطاعت وہیروی کے واحب وفرض پونے کے متعلق تص صريح بونن توجهورا بل سنسند كوبيروى البيبين كي سواجاره كاري ندبوتا رادرائمه المبيين كوحيوه كرودكن كوابنامقتدا وببينوا نبانا بسندمي لهبن كرت يكن وه آيات الني اوراحادميث سيغير كوسمية نهين و ووان آيات اور ان احادبیث کوجن میں اہل مبیت کے مشرف و کمال کو میان کمیا کھیا ہے صرف مدی وثنا سمجے اور بیکان سے ممبت رکھتا اوران کعرت وتعظیم کرا واجب سے ان کے نزدیک ان کیا منت وا ما دریف کا ما معل یہ ہے کہ اہل مبین سے مودت^و محبت وامناص واحب ہے اوران کا احترام کرنا منروری ہے۔ اگر آبات تر آن مجد وا مادميث بينيرس تصريح بولي كدنس ائمه البسية عيى ك بيروى فرض سب توابل قبله علما ے المبسبین سے انخراف نہ کرنے ۔ اور نہ سجا سے ان کے کمی دومرے کی طرحت رموع کرستے ۔اور بہ ظاہرستے کدا نگلے بزدگس زبادہ میمی سمجھنے وائے معے اور کتاب اللی وا حادیث بینیش کا مطلب آئ کل کے لوگوں سے بہنسس

جواب مكتوب

اسس تاچیز سے آپ کے حن طن کا شکرہ ۔ آپ کے تطف و عن ایات کے سامنے میرا دل جھا جا آب کے ہمرا نی وحق جوئی کی ہیں ہے جھ برہسلط ہے لکین میں آپ سے ہرگزارٹ کرنے کی اجاز سند چا ہناہوں کہ آپ ہے مکتوب ہر نظراً ان کر ہی جس میں آپ نے مکھا ہے کہ اہل قبلہ نے اہل ہیں سے عدول کیا۔ یہ لفظ زیادہ کوسیح استفال ہوگیا۔ اہل قبلہ نوسٹ بدیمی ہیں انفوں نے ابتداسے آئی تک اصول و فروع کسی چیز میں اہل ہیں ۔ ایل نہیت کے سلک سے انخوات نہیں کیا۔ یشبہ توسک الل بیت ہوئے واست نے کہا جب الل بیت ہوئے واست نے معاون مواسف نے کہا جب کوف کو اس میں اہل ہوئے ہیں۔ اہل بیت سے عدول رؤسار ملت نے کہا جب کوف کوف کے موستے ہوئے واست کے متعلق ہوئے کو کوف ایران کو میں کی مصابح کے محالات سے محود مرکز بنا سے اور کا اب وسندند کی مصابح کے محالات اور ہیں اس میں اور کیا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگیر کوا ہی سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دگیر کی جو سیکھ کی گئیں۔ اما مست انگر سے عدول کوا ہوں کے دو سبب ہوا کہ فروع میں ہی ان سے طیح دو سبب ہوں کی موسلے کے دو سبب ہو کہ کو میں ہوں کو سبب ہوا کہ فروع میں ہوں کے دو سبب ہوں کی موسلے کے دو سبب ہوں کی موسلے کی گئیں کی سبب ہوں کی موسلے کی سبب ہوں کی موسلے کی کو سبب ہوں کی موسلے کی سبب ہوں کی موسلے کی سبب ہوں کی موسلے کو کی کی سبب ہوں کی موسلے کی کو سبب ہوں کی موسلے کی کو کی کی کی کو کی کو کر بیا گئیں کی کو کر بیا گئیں کی کو کر بیا گئیں کی کو کر بیا گئی کو کر بیا گئیں کی کو کر بیا گئیں کی کو کر بیا گئیں کی کر بیا گئی کر بیا گئیں کو کر بیا گئیں کو کر بیا گئیں کی کو کر بیا گئیں کی کر بیا گئیں کی

قطع نظر کیجے ان نصوص وا دلّہ سے جن سے اہل مبین ہے تمسک کو نا واجب ثابت ہونا ہے جرف الجبین کے علم وعمل اور نفویٰ کو دیکھیے۔ امام اضعری اور انکہ ارب کے مقابلہ میں ان کی کیا کمی پال گئ کدا طاعت وا تباع سے معالمہ میں اہل مبیت پیچیے کوئے ، اور یہ افراد فابل ترجی سمجے گئے۔ کون سامحکر افعان سے جویہ نبیع کو سے کہ ال مبین ہے منگ کرنے واسے ان کی ہوا یات پر جینے والے گراہ ہیں۔ اہل منت کے لیے ایسا نبیع نام کان معلم ہونا ہے۔

مكتوت مكبرا

وانغہ ہے کہ بپروان اہلیبیت کوا ذروئے عدل وانصاف گراہ کہا ہی نہیں ماسکٹا اور نہ انکہ الملیبیت دیگر انکہ سے لائق بپروی واقتدا پہون میں کسی طرح کم تقے جس طرح انکہ اربومیں سے کسی الم کی تقلید کرکے انسان بری الذر ہوسکٹا ہے اس طرح انکہ الملیبیت کی بیروی کرکے ہی۔

اکم بہاں کہ کہاجا سکتا ہے کہ اندا ہدیت کا بسنیت اندارہ وفیرہ کے اتباع ویبروی کے زیادہ سراوار ہیں اس سیے کہ اندا شاعشر کا مسلک و خرجہ اس کے اتباع وی کے زیادہ سراوار ہیں اس سیے کہ اندا شاعشر کا مسلک و خرجہ اصول وفروع مسب ہیں ایک ہے ان بیں باہم کوئی اختلات برخلاف کی نسکا ہا ہم کہ ان کا باہم اختلات و نبا جائتی ہے اور یہ ظاہرہے کہ بار شخف عور وفکر کرے ایک نتیجہ پر بہنجیں ایک رائے قائم کریں اور اکیلا شخف دوری عور وفکر کرے ایک نتیجہ پر بہنجیں ایک رائے قائم کریں اور اکیلا شخف دوری

رائے قائم کرے تواس باڑ<mark>م کے متعقد فتو کی کے متعابلہ میں اس ابک اوراکیلے کا فتو کی</mark> کوئی وزن ندر کھے گا۔

اس میں توکسی منصعت مزاع کوعذر زیہونا مباہیجے۔

ال ایک بات ہے نامی خیار کہ اور اپنے ہیں۔

المبسبت ان میں نامل کرتے ہیں۔ ہیں آپ سے درخواست کروں گا کہ آپ المبسبت المبسبت المبسبت ہی ہے۔

آگے میل کراس پر دکشنی ڈالیس کہ خدم بسبب شیع خرمب المبسبت ہی ہے انھیں مطالت سے اخود ہے۔ نی الحال میری گزارش ہے کہ آپ توگ حصرت علی کی امان وظالت برجن نصوص کے مرعی میں وہ نصوص صاف داکر فرایل۔

باب دوم

امامت عامه ييعنه خلافت سيغير

جواب مكتوب

اگرسرورکائناست کے مالاستِ زندگی کا گہری نظرے مطالع کہب جائے۔ دولمن اسلامیری بنیاد فائم کرنے ،احکام مقرد کرنے ،اصول و تواعد بنانے ، کوستورم ترب کرنے ،سلطنت کے انتظام وانقرام عزمی جملہ مالات میں ہر پہلوسے آپ کی بیرست کا جائز ، لیا جائے توصف ست امرالمؤنن رسالست مآب کے ہرمعالمہ میں ہوجو بٹانے وائے ، وشنوں کے مقابلہ میں بہت نہا آپ کے علوم کا گنجینہ ،آپ کے علم وحکست کے وادست ،آپ کی زندگی میں آپ کے وابع بداور آپ کے بعد آپ کے جانئین ، اور آپ کے تمام امور کے مالک و مخاد لظرا آئیں گے ۔ اول ہوم میشن سے پنجیم کی رحلست کے وفت تک مرافع بیں ،حصر بیں اول ہوم میشن سے پنجیم کی رحلست کے وفت تک مرافع بیں ،حصر بیں آمضة بیطفت اکب کا منال آب کے اقدال کی جہان بین کی جائے توحفر علی کی طامنت کے متعلق کبرست صاحت و تفریخ مد تواتر کا پہنچے ہوئے واض تھوص میں گے۔ اسخفرت مے مرمحل برانی دفتار وگفتا کوداراور مرممکن ذریج سے اپنی جانشین کے ملاکی وضاحت کردی تاکیمی کے بیے تامل کی تنجائش نروجیئے

> دعوت عشره كيموقع برسنميت كا خلاف البرالمونين ريض من رمانا

پہلاواقعہ دعوست ذوالعثیرہ کا مے لیجے جواسلام کے ظاہر ہوتے کے قبل مکہ بی بیشیں آیا حب آیہ دائیں مکہ بی بیشیں آیا حب آیہ دائیں مامی رسشتہ داروں کو بلاکر دعوست موا اور دسول مامور ہوئے کہ خاص خاص رسشتہ داروں کو بلاکر دعوست اسلام دیں ۔ توحفزست سرور کا کناست نے تمام نی ہاشم کوجو کم وسیش میالیس نفر نصے جس میں آب کے چہا ابوطالب ، حمزہ ، عباس اور ابولہ سب بھی تنے اپنے جہا ابوطالب کے گھر میں دعوست دی ۔ دعوست کے بعد آپ نے جو خطرارت دفرایا وہ تمام کشیدا مادیث ومیر و تواریخ میں موجود ہے۔ ای خطرین آب نے خوا با :

"باسبن عبدالمطلب إن والله سا اعلم شاباً فالعسرب حباء فتومسه بأفصل مسعاعب شنكم به ، حبثتكم مجسيرال دنيا والآصوة ، وفند أمسر في الله أن أد عسوكم الديسه ، ف أبيكم يؤازر في عسلى المسرى هسذا ، على ان سيكون أحى و وصبى وحنايعتى ونيكم ؟ ف أحجم القوم عشها عنبيرعسلى وكان اصعفوهم واذ تام فتال:
أنا بياسبى الله اكون وزبيرك عليه ، فأخذ
وسول الله بردسبنه ، وهتال : ان هدا احني
ووصيبي وحنليفتى فنيكم ، فناسمعوا له
والمسبعوا ، فتام القوم بيمنحكون ويقولون
لا في طالب : فتدامرك أن تسمع لإبنك و
نظيم ... الإ

« فرزنداً لِ عبدالمطلب إمتبى بهترے (بین امسِسلام) مبیں متعالے باس مے کرایا ہوں میں تونہیں مانتا کرعرب کا کوئ نوجوان اس سے بہتر چیزائی قوم کے باس لایا ہو۔ یں دنیا و انخرست وونوں کی تحبلائی کے کڑایا ہوں اور خداو ندعا لم نے محصمكم وباسبيح كمتحبس اس كى طرفت وعومت دول الب بناوتم بن كون ايسا بعجواس كام بس ميرا بوجه شائه متعادے درمیان لیرا بھال وصی اورخلید مو ؟ نوعلی کے موا سب خاموش رسبے بحصرسن علی جواس وقسن بہیت ہی کمسن صفائه كفرس موسة اوركها: إرسول الله! بين آب كا برجه بنادُ ل كا - رسول الله است آب كى كرون بر إته ركما اور بورے مجمع کو وکھاکرارسٹ و فرایا : کہ یہ میرا بھال ہے، میر وصی ہے اور تم میں میرا جائٹین ہے ۔اس کی بات سننا ادراس کی اطاعین کرنا ۔ بیمن کرلوگ مینیتے ہوئے امٹے کھڑے ہوئے اور ابوطانب سے کہنے لگے کہ یہ محمد آپ کو مائم وے رہے میں کر آپ اپنے بیٹے کی بات سنیں اور ان کی اطاعت کریں یے

> پینمبسکرگی اس نفس کا تذکرہ کن کن کتا بول ہیں موہوُد ہے

بینبیرکے اس خطبہ کو تبینہ انہی الفاظ میں اکثر علما سے کبار واحیّہ می بینبیر کے اس خطبہ کو تبینہ انہی الفاظ میں اکثر علما سے ابن جریر ابن محدثین نے اپنی کتابوں میں درج کہا ہے جیبے ابن اسحاق ، ابن جریر ابن الله حالتی ، ابن عرد ویہ ، ابونیم اور امام بیم قی نے اپنے سنن اور ولاک دونوں میں سور ہ شعرار کی تعزیر میں اور طبری سند اپنی اپنی عظیم اللہ اللہ کے ذیل میں نیز علا سطبری سے ابنی تاریخ طبری کی دومری جلد صفر ۲۱۷ میں معنقست طریقول سے اس کو دکھا ہے اور علا مدابن ایشر جزری نے آریخ کیا ہے ۔
کا بل کی دومری جلد صفر ۲۲ میں بطور سلمات ذکر کیا ہے ۔

مورخ ابوالفدار نے ابی تاریخ کی پہلی مبلد ملال میں سب سے پہلے
اسلام لائے والے کے ذکر میں ورج کیا ہے۔ امام ابوجھ اسکانی معتزلی نے
ابنی کتا ہے۔ نقفی عثا نہ میں اس مدیب کی صحت کی صواحت کرتے ہو سے
مکھا ہے (مثرح بنج البلاغہ میلد میں مسلال) علامہ ملی نے آنخفرت اوراصحاب
کے وار ارتم میں دو بہرسشی ہونے کے واقعہ کے صنی میں بیان کیا ہے (میر مین معنی معنی مان کیا ہے (میر معنی معنی مان کیا ہے (میر معنی معنی مان کیا ہے معنی معنی معنی معنی معنی معنی معنی مان کیا ہے۔

ے ملاحظ فرمائیے صفی ۱۸۱۱ مبلد اوّل مبرست ملید ۱۰ بن تیب نے اس مدمیدہ کو معینلا نے اور خلط تا سبت کرنے کی جو کومشٹیں کی ہیں۔ اپنی مثہ و رصعبیت کی وجہ سے (باتی انگلے معنی پر)

سب سے قطع نظر امام احدے اپنی مسند علد اوّل صفر و حا پرحفزت
علی سے دوایت کی ہے۔ بھراس علد کے صفر ۳۳۱ پر ابن عباس سے برا ی
عظیم انشان مدیب اس معنون کی دوایت کی ہے جس میں معزمت علی کی دس
الی حضوصتیں مذکور ہیں جن کی وج سے حصر سن علی اپنے تمام ماسوا سے ممتاز
نظراً تے ہیں ۔ اس مبلیل انشان مدیرے کو امام نسائی نے بھی اپنی کتاب ضعا نص
صفر ۲۰ پر ابن عباس سے دوایت کرکے مکھا ہے اور امام حاکم نے محے متدرک

البند مجید صفر کا ما مشید) ده درخورا مننا بنیس کسس مدید کو معر که وشد ادید بر عمود نانی جو ۱۲ ر

می نکھا ہے کا معنا فرائید ان کے رسال سیاست شارہ نبراہ ۱۵ من عدر عمود نانی جو ۱۲ ر

در المانی میں من ان جو ان ان مفول نے کائی تغییل ہے اس مدید کو تنان کیا ہے اورشاره

فر ه ۱۵ من صفر ان جو عمود را بن میں انفول نے کائی تغییل ہے اس مدید کو میخ سنم استدانام العداد رعبدالله با احدی زیادت سسندا در ابن جو ایشی کی جو العوائد ، ابن تیتبہ کی جیون الا خبارہ احدین عبدات ورشار با معدد تولی کی عفدالعزید ، علام جاحظ کے رسالہ بن باشی ، اسام نشلبی ک تفییر فرکورہ بالا تمام کنب سے معدد کا کر استان ہے باشی منالہ ان الاسلام بس مجی سے سے نقل کیا ہے ۔ مزید براک بر حسب انگلیزی نے بئی کمتاب مقالہ ان الاسلام بس مجی اس مدید کو درج کیا ہے جس سے اس مدید کو درج کیا ہے جس سے اس مدید کو درج کیا ہے جس کا برد تسستان نے کے محد نے بول میں ترجم کیا ہے جس سے اپنا تام الم مورث کو درج کیا ہے ۔ اس صورت کی جب سے در اس مدید مورشین دائی کا ب ابنا تام الم مورث اس کو ذکر کیا ہے اور امس کا دلائل سے ابن کا ب ابطال بی محد قرک کھا ہے ۔ اس مدید کی مورت سند دمورشین دائی کا ب ابطال بی محد قرک کھا ہے ۔ اور الم سی کا دلائل سے ابن کا اب ابطال بی محد قرک کھا ہے۔ اور الم الم کا کھا ہے ابول کی کھا ہے۔ اور الم سی کا دلائل ہے بی کا اب

جلد ۳ صفی ۱۳۲ پر اور علامہ ذہبی سے تلفیص مندرکسہ بی اس صوبہ کی صحبت کا اعتراب کرتے ہوئے نقل کیا ہے

کمنزالعمال حلد و ملاحظ فرایسے -اس میں بھی یہ وانقد بہت تعصیل سے موجود ہے ۔ منتخص کمنزالعمال کودیکھیے جومسندا حد بن صنبل کے ماسٹیر پر طبع ہوا ہے ۔ ماشید ملد ۵ صفر ام تا صفر ۲ م پراس وافغہ کا ذکر موجود ہے اور ایوری تعصیل کے ساتھ ۔ اور ایوری تعصیل کے ساتھ ۔

میرے خیال میں بیم ایک وافقہ جے تمام علمار محدیثین و مورضین بالا تفا اپنی کمالوں میں مکھتے آئے ہیں حصر سناعلی کی اما مست و خلا سنت کا بین شوست اور صریحی دلیل ہے کسی و ور مری دلیل کی صرورت، بی کہیں -ادر صریحی دلیل ہے کسی و ور مری دلیل کی صرورت، بی کہیں -

سك ملاحظ ذرائي كنزالعال صنى ۲۹۲ مديدة غهر ۲۰۰۸ جوابن جربرست سنعزل سيصن ۲۹ پر حديث ۲۵ ، ۲ جوالم احد كي مسند خرصيار مغلبى ك مغارة طوادى وابن جرير كي ميح سه سنغزل سيد صفر ۲۹۷ پر معربیث ۲۵۰۱ جوابن کسسمان أبن جرب ابن ابی حاتم ابن مردد بر ادرابونيم غربم بنى كي شفس الا بيان اور د لاكل سيسنتول سيد صغر ۲۰۱۱ پر معربیت ۲۰۱۲ چو ابن مردود سيد منعول سيد معربی ۵۵۱ جوام ما حمد كي سندا ورابن جربر اور منبا دمندى كي مخاره سيد منعول سيد بحرزانعال مين بدعد بيث اور مي مقالمت بر مذكور به منراع بنج البلاغ جلرس صغول سيد بحرزانعال مين بدعد ميث اور مي مقالمت بر مذكور ب

مكتؤب منبراا

مدسیث مذکوره بالا کی سندمیں تردّ د

تسليم زاكياست!

آب کا مالعت اس مدمیث کی مند کو معتبر نہیں سمجھتا نکسی طرع اس مدیب کومیح سمجے پر نیادہ کیونکہ شیخین بین بخادی وسلم سے اس مدیث کو نہیں کھا۔ نیزشیخین کے علاوہ ویکرا محاب محاج نے میں نہیں اکھا براتو پیال ہے کہ بیمدریث معتبرومعتذراو بان المبعنت سے مروی ہی نہیں ہوئی اور فالبًا آب بی بطریق الی سنت اسے میچ نہیں تر محصنے ہوں گے ۔ آب بی بطریق الی سنت اسے میچ نہیں تر محصنے ہوں گے ۔

س

جوابب مكتزب

نص کا ثبوست

اگرمیرے نز دبیب اس حدیث کی صحنت خود بطراتی ا بلسنست ثابت نم بری قریب اس حدیث کی صحنت خود بطراتی ا بلسنست ثابت توابسی اظهر من المشرست که ابن جریر اورا مام ابوجه عز اسکافی نے اس حدیث کی معلورستان نه ذکر کیا بیشتہ اور کہا رمحققان اہل سنست نے اس حدیث کو صحیح قرار دیا ہے۔ اس حدیث کی صحنت کا صحفر آ آپ اس سے اندازہ کر لیمیے کا احماب صحاح جن ثقا ورمعتبر داویوں کی روایتوں سے استدالال کرتے ہیں اور آ تھے نبد کرکے بڑی خوش سے جن کی روایتوں کو لے لیتے ہیں انھیں معتبر وثقہ را ویوں کے طریقوں سے اس حدیث کی روایت ایمیں معتبر وموثق احتاس حدیث کی روایت ایمیں معتبر وموثق احتاص حدیث کی روایت ایمیں معتبر وموثق

اے ملاحظ فرما شیے کمنزالعال ملہ ، صغرہ ۳۹ پر حدمیث ۵۸ بہ جہاں کہ کو معلوم ہوگا کہ ابن صب میریٹ کوصیح فرار دیا ہے ۔ حاسشیہ منداحمد حبل مبن جات کے حبیب کہ معلوم ہوگا کہ ابن جریر سے مبن مبند که معلوم ہوگا کہ ابن جریر سے ہسس حدیث کوصیح قرار دیا ہے ۔ امام الوجعز اسکان نے تو اس حدیث کو برش ی پختی کے ساتھ میں سندار دیا ہے ۔ ملاحظ فرما نیے ان کی کتا ہے نعتی عثما نیہ مشرح نیج البلائد مبلد سے معلی میں سندار دیا ہے ۔ ملاحظ فرما نیے ان کی کتا ہے نعتی عثما نیہ مشرح نیج البلائد مبلد سے معلی سندار دیا ہے ۔ ملاحظ فرما نیے ان کی کتا ہے نعتی عثما نیہ مشرح نیج البلائد مبلد سے معلی سندار دیا ہے ۔ ملاحظ فرما نیے ان کی کتا ہے نعتی عثما نیہ مشرح نیج البلائد مبلد سے معلی سندار دیا ہے ۔ ملاحظ فرما نیے ان کی کتا ہے مبلا سے سندال مبل سے سندال مبل سے سندال مبل سن

مسندا حدبن صنبل مبلدا قل صغیر ۱۱۱ ملاحظ کیجیے ۱ کفول نے اس مدیث کو اس دیش اس مدیث کو اس دین مامرے اکفول نے اس مدیث کو اسود بن عامرے اکفول نے عباد بن عبداللہ اسدی سے اکفول نے معزمت علی منبال سے اکفول نے عباد بن عبداللہ اسدی سے اکفول نے معزمت علی سے مرفوعاً دوابیت کر کے لکھا ہے ۔ اس سلسلہ اسنا و کے کل کے کل رادی مخالفت

سے الم مجاری وسلم دونوں نے اس کی حدیث سے احتجاج کیاہے ۔ سنبہ نے الم مجاری والم سم دونوں کی صحبت میں امود سے روایت کرکے حدیث میان کرتے ہوئے سنا ادر عبدالعزیز بن الک سلمہ نے الم مجاری کوان سے دوایت کرتے ہوئے ادر زمیر بن معاوب ادر حاد مین سلم نے الم مجاری کوان سے دوایت کرتے ہوئے سنا جہے مجاری میں معاوب ادر حاد مین سلم نے الم مسلم کوان سے دوایت کی ہوئی حدیث موج د سبے اور جی مسلم میں میں جدین حاتم مزدی کی ان سے دوایت کی ہوئی حدیث موج د سبے اور جی کی ان سے دوایت کر دہ جارون بن عبدالشراور نا قداور ابن ابل شیب اور ابو زمیر کی ان سے دوایت کر دہ حدث بی موجود ہیں ۔

نے امام سلم نے ان مدنیوں سے اپنے میم سلم ہیں؛ حقّان کیا سہتے مبیباکہ ہم نے مسسد پر ان کے تذکرہ کے صنن ہیں وضاحت کی ہیے ۔

سے ان سے امام مخاری وُسٹم دد اون سنے اپنے اپنے می**ے** ہیں ا منبان کیا ہے جبہاک ہم سنے م^{سمع} پروضاست ک ہیے ۔

سے امام بخاری شے ان سے احتیاج کیاہے طاحظہ و مسلك

ی ان کامسئسلانب بر ہے عباد بن عبداللّٰہ بن ذہیر بن عوام قرمستی اُسدی ۔ ان سے بخاری وسلم دونوں نے اپنے اپنے میم بین استجاج کیاسیے ۔ انفول نے ابو بکر کی دونوں صاحبرادیوں عائشہ اور اسماء سے حدیثیں شنیس ۔ میم میجاری وسلم میں ان سے اِل ملیکہ اور محدین جعفر بن زمیر اورسٹ م وعودہ کی روایت کم دہ حدیثیں دوجود کے نزوکیے جبتہ ہیں اور سرتمام کے تمام رحال صحابہ ہیں۔ چنانچہ علامق سرائی نے اپنی کتاب انجے بین رحال الصیحیین میں ان کا ذکر کیا ہے۔ لہٰذا اس حدسیٹ کومیح ماننے کے سواکوئی چارہ کارہی نہیں ۔اس کے علاوہ یہ حدسیث حرفت اس طرائیۃ وسلسلہ اسنا و سے نہیں بلکہ اور سجی ہے شار طریقیوں سے مروی ہے اور مبرطرائیۃ دوسرے ماریقہ کا موید ہے۔

نص سے کیوں اعرامن کیا؟

اور شیخین لین بخاری و کم نے اس بیاس روامیت کواپی کتاب بی مگر بس دی کہ بر روابیت مسکه خلافت بیں ان کی بہنوائی نہیں کرتی تھی ان کے منشا کے خلاف تھی اسی وجہ سے انھول نے اس حدمیث نیز دیگر مہمری ایسی حدیثوں سے جوامیرالمومنین کی خلافت بر صربی نفس تھیں گریز کیا اور اپنی کتاب میں درج زکیا۔ وہ ڈرتے شخے کریٹ بیول کے لیے اسلی کا کام دیں گ نبذا ایمنوں نے جان ہو بھر کراس کو ہوسٹ بیدہ رکھا۔

بخاری و لم بی بنیں بلکہ بہتر کے شیوخ اہل سنت کا دسرہ یہی تھا۔ اس قتم کی ہر بیز کو دہ جیپانا ہی بہتر سمجھ نتے ۔ ان کا بیکتان کوئی اچینے کی بات نہیں بلکہ ان کی بر پرانی اور سنسبور عاوست ہے بیٹا کی ما نظ ابن مجر نے نتے الباری میں علمار سے نتل مجی کیا ہے امام مجاری نے مجی اس مطلب میں ایک فاص باب قرار دیا ہے۔ جنا کیے میم مجاری حصد او ل کے کتاب العلم میں انھوں نے بینوان قائم کیا

" سباب مسن حنص بالعلم تومسادون قوم "

" باب بیان میں اس کے جوا کیس قوم کو محفوص کرکے علم تغلیم کرے اور دوسرے کونہیں "

امیرالوسین سے منعلق الم بخاری کی روسش ادر آب کے ساتھ بیز حملہ ال ببيت كسائه ان كسلوك سيح وانقت بصاور برما ماسك ان كا قلم امپرالمومنین وابل مبین کیمشان بیں ارشادات دنفوص میغیم کے بیان سے گریزاں رہتا ہے اوران کے حنصا نفن ونضائل میان کرنے وقت ان سکے رواست کی روستنائی خشک موجانی ہے۔اس میلے الم مخاری کی اس مدیب یا ر سے ہے۔ اس میسی دیگر مدیثوں کے ذکر نہ کرنے پر تعجب نہونا جائیے۔ (فقر م

مكتۇب ئىسبىراا مدىي*ت كى صحت ك*ااقرار

چونکہ دعوت پڑوال عد عربوار کونہیں ہے اسلے اس التال کے ا

زيادة زياده بركهام اسكتاب كمعفوضم ك خلافت ابت بوق

اب کے ارشاد کے بہومب میں سے سنداحد بن منبل ملداق ل سے مند احد بن منبل ملداق ل سے مند احد بن منبل ملداق ل سے بر مدمیث مروی ہے ان کی جہان ہیں کی ۔

اب سے کہنے کے مطابق وہ مسب کے سب ثقاست اہل سنست نکلے بچر ہیں سے اس مدمیث کے دور سے تمام طریق کو بغائر نظر مطالعہ کیا ۔ بے شار و بے اندازہ طریقے نظر اسے ۔ مجھے ماندا پڑا کہ یقیناً یہ طریقے نظر اسے ۔ مجھے ماندا پڑا کہ یقیناً یہ

مدييث پاية ثبوسند كوپېني بهو ل ہے ۔اس كے ثابست وُسلّم بونے ہے انسكا ر نبس كما حاسكتا .

البترابک بات ہے آپ لوگ انباب امامت بیں اس مدیث میج سے استدلال کرتے ہیں جومتواتر ہی ہو کیونکدامامت آپ کے نز دیک اصول دین سے ہے اور یہ مدیث جو آپ نے بیش فرال ہے اس کے متلق بیکہنا غیر ممکن ہے کہ یہ تواتر کا کسینچی ہوئی ہے اور حب مدنو اس کا کسینچی ہوئی نہیں ہے۔ تواس سے آب لوگ استدلال مجی نہیں کرسکتے۔

يەمدىشىنسوخ بوگى تى

یہ بھی کہا ماتا ہے کہ برمدیث خوت ہوگئ تھی اِس ہے کہ آنھوست سے اس مدیث سے مفاد کی اوٹ کبھی توجہ نرکی اسی وجہ سے صمابہ کو خلفار ثلاث کی بیدسند میں کوئی مافع زنفل یا۔

س

جواسب مكتؤسب

اس مدسیشے سے استدلال کرنے کی وجہ

حصرات المستن اما مت کے اثبات میں سرحدریث میرے سے اللال

کر تے ہیں خواہ وہ متوازی ویا غیر متواز ۔ المنداخود حصرات المست جس چیز کو حضر اللہ مت جس چیز کو وہ خود است میں م حجہ سمجتے ہیں ہم اسی چیز کو ان پر بطور حمدت بیش کرستے ہیں جس چیز کو وہ خود است میں ہم اسی سے انھیں قائل کرنے ہیں ،

رہ گیا ہے کہ ہم جو اس مدسیق سے اسامت براستدلال کرتے ہیں تو، اس کی وج ظاہرہے کیونکہ بر مدسیت ہم لوگوں کے طریق سے مرف صیح ہی نہیں بلکر مدتوانز کاسے بہنی ہوئی ہے۔

منفوص خلافت كاكونى بمى قائل نبي

یہ وعویٰ کرناکہ یہ مدیث والات کرتی ہے کہ حضرت علی خاص کر المبیت یہ وعویٰ کرناکہ یہ مدیث والات کرتی ہے کہ حضرت علی خاص کر المبیت یہ بھرائے مہل ہے کیونکہ جوشف الم بہیت رسول میں حضرت علی کو جانفین رسول سمجت ہے وہ عامر سلین میں مجانشین مجت ہے اور جو عامر سلین میں جانشین رسول نہیں مانتا وہ اہل بہیت میں جی نہیں مانتا وہ اہل بہیت میں جی نہیں مانتا ہو الم بہیت میں خون کہاں سے مانتا ہوں کا آن تک کوئی قائل نہیں ۔ یہ توجیب سے کا ان تک کوئی قائل نہیں ۔ یہ توجیب سے کا ان تک کوئی قائل نہیں ۔ یہ توجیب سے کا ان تک کوئی قائل نہیں ۔ یہ توجیب سے کا ان تک کوئی قائل نہیں ۔ یہ توجیب سے کوئی ملاحت ہے۔

مديث كالنسوع مونانا مكنب

برکہناکہ یہ مدریث مسنوخ ہوم کی تفی یہ بھی غلط ہے کیونکہ اس کانسن م ہوتا عقلاً وسرعًا دو نوں جہنوں سے محال ہے کیونکہ و تست آنے کے پہلے ہی کسی م کامنسوخ ہوتا براہنڈ باطل ہے۔ اس کے علاوہ اس مدسب کو منسوخ کرنے والی آب کے نیال کی بنا پر زیادہ سے زیادہ ایک جیز تسکلتی ہے اور رہ بیکہ دسول اللہ نے مفادِ مدسیف کی طرفت بچرتوجہ نہ کی بچراعادہ نہ کیا۔ مگر بیمی میجی بہیں کیونکہ دسول نے مفاد مدسیش سے کبھی ہے توجہی بہیں گی ۔ بلکہ اس مدسیش کے ارشاد فرانے کے بعد بھی وضاحسن کرنے دسیے۔ کھیل فظوں بیں ، مجرسے مجمع ہیں ، سفریس ، حصر میں ، میرمو تع ہرمحل برحراحة اعلان فرائے رہے ۔

اگربہ مان مجی مبا مائے کہ ہب مرت دعوت عشیرہ ہی مے موقع پر حصرت علی کو اپنا مائٹین فراکے رہ گئے بھر کمبی اس کی وصاحت نہیں کی شب بھی ہر کیسے معلوم کو رسول سے بعد میں مغاد مدیث سے اعراض کیا آگے جل کرا سب کا خیال بدل گیا اینے تول سے بیٹ گیا۔

مكتؤب مبراا

یں نے ان نفوص کے آسنا نے پر اپنی پیشانی حبکادی کیجہ اور مزید شوست - خدا آپ کا تعبلا کرے -

س

جواب مكتوب

ت على كى النفيلة جس كى كوئى الكي يم كور كالكي المراب كالمال المالية المراب كالمراب كا

اورسے اپ کی خلافت کی صراحت ہوری ہے

دعوت ذوالعشیرہ وال مدمیث کے علاوہ یہ دوسری مدیری ملافظ کیجیے جے امام احدین منبل نے اپنی مسندکی پہلی مبلدصغیہ ۳۶۳ بڑا مام نسائی نے اپنی کتاب خصائص علوبہ کے سخم ہ پر ، امام حاکم نے اپنے صحیح مشددک کی شیری حلد کے صفح مشددک ہیں اسس حد سینے کا بخت اپنی تلخیص مشددک ہیں اسس حد سینے کی محدت کا اعترافت کرتے ہوئے نیز دیگرار باب حدمیث نے لیے طریقوں سے جن کی محدت براہل سنست کا اجماع واتفاق ہے نقل کیا ہے ۔ حروبن سیون سے روابیت ہے وہ کہتے ہیں کہ ہیں ابن عباس کے باس ہ عرواران قبائل آسے امخوں باس میٹھا ہوا خفا استے ہیں ان کے باس ہ مرواران قبائل آسے امخوں باس میٹھا ہوا خفا استے ہیں کہ یا تو آپ ہا دے ساتھ اٹھ جلیے یا اپنے باس کے بیس کہا کہ یا تو آپ ہا دے ساتھ اٹھ جلیے یا اپنے باس کے بیس کہا کہ یا تو آپ ہا دے ساتھ اٹھ جلیے یا اپنے باس کے بیس کفتگو کیجیے ۔

ابن عباس نے کہا، یں آپ ہوگوں کے ساتھ فود ہی جلا میلیا ہوں۔ ابن عباس کی بنیائی چیم اس وفنت باقی تھی ۔ ابن عباس نے ان سے کہا : * کہیے کہا کہنا ہے ؟ "

تَعْتَلُومُون عَلَى مِين برنبين كبرسكا كركيا كفتكومونى مان عبال وإلى عان عبال عدال عدد وامن معتلكة موسعة است كين مك :

" وائے ہو۔ یہ لوگسہ ایسے شخص کے متعلق برکلای کرتے ہیں حس کی دس سے زیادہ ایسی فضیاتیں ہیں جوکمسی دو سرے کونصبب نہیں - یہ لوگس برکلای کرتے ہیں ایسے شخص کے متعلق جس کے إرسے ہیں رسول کے فرمایا :

« لأبسعتن رحسلاً يخسزميه الله أمسداً ، يحسب الله ورسوله ، فاستفق الله ورسوله ، فاستفق لها من استنفرت ، فقتال : أين عسل ؟ فجاء وهو أرمسد لابسكاد أن يبصو ، فنقت في عينيه وهو أرمسد لابسكاد أن يبصو ، فنقت في عينيه

منسم هدر السراية شلافًا ، ضأعطاها إياه ، نجاء عسلى دمسفية بنت حيي ، خال ابن عباس : شع بعث رسول الله صلى الله عليه والسه و سلم، مشلاناً ىبسورةالىننوبة ، فبعث عليا خىلانه ، فأكشذ هأمنة وشال: لابيد هب بها الارحيل هسومي وأنا منه فتال ابن عباس ۽ وفتال السيني صليادتُه عليه واله وسسلم، لسبنى عسمه : اسيكم يوالسينى في السدشيا والأحشرة ، مثال: وعسلى حبالس معه فشأبوا ، فعنال عسلى: أننا أو البيك فيالسدنيا والآعشرة ؟ قال: النت وليي في المدونيا والآحدرة ، تنال ف تؤكد، شع تنال: أسيكم بوالمسيني في السدنياوا الآحشرة ؟ مَسَّابُوا ، دسّال عسلى: أننا أوّالهيسلة فىالسسدنيا والكّحشرة ،نعّال لعلى: انت دليي فالسدنيا والكَحشرة ، مثال ابن عباس: وكان عسلي أوّل مسين آحسن حسن النشياس مبعد حذيجة ' تال: وأخسد وسول الله مسسلي الله علىبيدو ألمسه وسسلم نثوميه ، فتوحنع له على ومشاطلة وحسن وحسين، وقال: اشما بيربيدالله ليذهب عسنكع الوحيس احسسل الببيت ومبيطهس كمسع تعلهيراً ، مشال: وشرى عملى نفسه فلبس شوب العبي، شم شام مسكاعشته وكات المنشسركيون بيوميومته ، الى ان قاله وحنوج وسول الله فئ شذوة ننيوك وحنوج النناس معه منقال لسنه عسلي :آخرج معك؟ منتال حسلي الله عليه وآلسه وسلم: لا ، فيكى على ، فقال له رسول الله صلى الله عسلسية و آلمست ومسسلم : احمأ نتوحَتى أكن ستكون مسئ فينمسئلالسه هنارون مسن مسوسى ، إلا انسه ليس ميعدي سبي ، است لا يسبغي أن أذ عب إلا وأنت خليمتني، وتنال نسه رسول،الله : أنت ولي كل **مؤم**ن سبع*دي* وصومند**ة** ، شال ابن عباس: و سيداً وسول الله البواب المسحد غيرب بعلى نكان سيدحنال المسجد حبنبا وهوطرمقه لبين لندطريق عتيره، قال: وقال رسول الله صلى الله علبيه وآلسه وسسلم: مسن كمنت مولاه ، فنان مولاء سبلي ، والحديث) « میں ایٹ تحق کومبیوں کا جے خدا کھی ناکام نہ کرے گا۔ وہ تتخف خدا ودمول كو دوسست دكمنا سبے اور خدا ورسول ا اسے دوسنٹ رکھنے ہیں کس کس کے دل میں اس فھنیالت کی تمناییدا نہوئی مگر رسول سے براکیب کی تمنا خاک میں ملا دی اورمیح بوئی تو در یادنت فرما یا که علی کمیاں ہیں ہے حضرسن على تشريعيت لاست حالانكه وه أشوب عثيم سي عبتلا تنع دیچهه با نے تنے درول سے ان کی انکھیں کھ کیے ب تھریتن مرتبہ علم کو حرکست دی اور حصرت علی اے انفول میں متناديا بمعزست على جناك فتح كركية مرحب كومار كراور اس کی بہن صفیہ کوسلے کر طومست دسول میں بینیجے ۔ تھیپسہ

رسول النرنے ایک برزگ کوسور کا توب دہ کردواند کیا ۔
ان کے بعد پیچے فورا ہی حفرت علی کو دواند کیا اور صفرت علی کو دواند کیا اور صفرت علی کے دار سے نہیں میں ان سے سورہ ہے لیا کیونکہ رسول کا کا حکم مخفا کہ بیسورہ بس وہی شخص پہنچا سکتا ہے جو مجھ سے مہوں ۔ اور رسول سے جود نیا و آخرت قرابت مندوں سے کہا کہ تم ہیں کون ایسا ہے جود نیا و آخرت میں میراساتھ دسے میرے کام آئے چھزت علی نے کہا میں میراساتھ دسے میرے کام آئے چھزت علی نے کہا میں میں اس فدمست کوا مجام دول گا . ہیں دہن و دنیا میں آ ب کی ضورت کرول گا ۔ آئی سے فرایا ۔ اسے علی اور این و دنیا دول کی خورت کی دول ہو ،

ابن عباس کیتے ہیں کہ رسول اللہ سے حصرت علی کو بھیا کے مجھر لوگوں سے اپنی باست دہرائی اور بوجیا کہ تم میں کون شف سے جومیرا مدو گار ہو دنیا میں اور آخرست ہیں رسب نے انکار کیا صرف ایک حضرت علی ہی تھے جنھوں ہے کہا کہ بس آب کی مدد ونصرت کروں گا دین و دنیا دونوں میں یا دیول اللہ رسول اللہ ہے فرمایا کہ علی تم ہی میرے ولی ہو دنیا بی میمی اور آخرست میں میں۔

ابن عباس کینے ہیں کہ علیم ہی پہلے وہ شخص ہیں جوجناب خدیجہ کے بعد دسول پرایمان لا سے ۱۰ بن عباس کہتے ہیں کہ در لائٹرا شے اپنی روالی اورا سے علی وفاطرہ وحس وصیری کواوڑھایا اوراس ہیت کی تلاوست کی : " استما بيوبيد الله ليسذهب عنكسم الوحس احلاليين ويطهبوكسم تنطسهب وا "

" اسے ال بیت افدا بس میں جا ستا ہے کہ تم سے ہر برائی اور كسندگى كواس طرح دور ركع مبياكه دور ركمنا ماسيد ابن عماس مجتنے ہیں: اور علی ہی سے اپنی مان راہ معامیں فروخست کی اور دسول الندکی میادر ا وفره کر دسول کی مکبر يرسورى ورائخالىكى مشكين تخفر برسارى تق . اسی سلسله کلام میں ابن عباس کہتے ہیں : کہ پیغیر حبُگ تبوک محارادے سے نیکے اوگ بھی آپ کے ہمراہ سے معزمت على فف يوجها: يا دسول الله! مين ممركاسب رمهول كا ؟ آب نے فرایا: نہیں اتم نہیں رہوگے ۔ اس میرحفزن علی عبیرہ بو کئے تواکب نے فرایا : کہ یا علی ! تم اسے بیند نہیں کرتے کہ تم مبرے لیے ولیے ہی ہو جیسے موسیٰ کے بیے بارون تقے - البت میرے بعد نبوست کا سلسلہ بندہے ۔ جنگ ہیں میرا جانا بس ای صورست سے حمکن ہے کہ میں تمقیں ایٹا قائم مقام حجور كح حاوس ـ

نیوحفزست سرورکائنات نے حفزت علی سے فرمایا ؛ که اے علی ! میرے لبدتم ہرمومن ومومنہ کے ولی ہو ۔ ابن عباس کہتے ہیں ؛ کہ رسول الٹرنے مسجد کی طرفت سب کے دروازے بندکرا دبیے بس حرفت علی کا دروازہ کھلاد کھا ادر حفزت علی حنیب کی حالت ہیں ہی مسجد سے گور کر جاتے تنے۔ وی ایک راستہ مخنا دور اکوئی راستہ ی نہتا۔

ابن عباس كمنة مي كرسول الله في يرسى ارشاد فراياك: بين حس كامولا جول على اس كمولا بي "

اسس مدیث ہیں سب کشت مسولاہ کو امام ما کم نقل کرنے کے بعد تقریر فراتے ہیں کہ یہ مدیث مبیح الاسسٹاد ہے اگرمیشیخین بخاری مسلم نے اس نبیج سے ذکر نہیں کیا ۔

علامہ ذہبی نے بھی ہمنجہ مستدرک بیں اس حدیث کونقل کمباہے اورنقل کرنے کے بعد مکھا ہے کہ یہ عدیث صبح ہے۔

اس مدسيف سي بوست خلانت الميلومنين

اسس عظیم است میں ار المومین کے دلیعہ رسول اور بسہ رصلہ میں اور المومین کے دلیعہ رسول اور میں میں اور کا کنات ملیفہ دجانتیں ہوت کے بعد جو قطعی دلائل اور دکشت براین ہیں وہ آپ کی لگا ہول سے محفیٰ نہوں گے۔ ملاحظ فرات ہیں آپ انداز بینے بڑا کا کر حصرت علی کو دنیا وا خرست میں اپنا و ل قرا ر دیستے ہیں ابنا و ل قرا ر دیستے ہیں اس اہم منصب کے لیے نتخب فران ہیں ۔ دوسرے موقع برحصرت علی اس اہم منصب کے لیے نتخب فرانے ہیں ۔ دوسرے موقع برحصرت علی کو وہ منزلت وخصوصیت عطافرائے ہیں جو جناب ارون کو جناب موئی سے ماصل کے وہ میں سوائے درج سے ماصل کے دوسب کے سب حصرت علی کو مرصت فرائے جا ہے ہیں سوائے درج نبوت کی میں سوائے درج بنوت کے میں جو جو کر مینے خصوصیات بنوت کے میں موائے درج بنوت کے میں سوائے درج بنوت کے میں کو میں کے میں ہوگئی کو میں کو م

جناب إرون كوماصل نقے وہ ابكب ابك كركے معزمت على فاست بيس مجتع مختے۔

آپ اس سے بھی ہے خرنہ ہول گے کہ جناب ہا رون کو منجلہ دبگر خصوصیات کے سب سے بطی حضوصیت جوجناب موسیٰ سے بھی وہ یہ کہ جناب ہارون جناب موسیٰ کے وزیر سننے ۔ آپ کے قوت بازو تھے ۔ آپ کے شرکیب معاملہ سننے اور آپ کی عثیریت میں آپ کے قائم مقام ، مہانشین دخلیفہ ہواکرتے اور جس طرح جناب ہوسیٰ کی اطاعت تمام است موسیٰ پر فرمن تھی اسی طرح جناب ہارون کی اطاعیت بھی تمام امست پر وا میب ولازم تھی اس کے شوست میں ہے آیات ملاحظہ فرائے :

خلافدعالم نے جناب موسیٰ کی دعا کلام مجید میں نقل فرمائی۔ جناب موسیٰ نے دعا کی مسین نقل فرمائی جناب

" واحسجل في وزميراً مسن أهسسلى هسارون اخي أستده

سبة أزرى وأستسوكسه في المسوى "

« معبود میرے گھروالول میں سے بارون کو میرا وزیر مینا ۔ ان سے میری کر معنبوط کراور انتجبیں میرسے کار نبوت ہیں

ر کے میری کر ا

دوسرے موقع پر جناب موسیٰ کا قول خلاو ندعالم نے مستنصرات ہیں نعل کیا ہے۔

« الهــلفني في قومي و اصـلح ولا ستتبع ســبيل

المفسيدين ي

" اے ارون تم میری است میں میرے مانشین رمو ،

تعبلاتی ہی پیشس نظررہے اور دنسا د کرنے والوں کی بیروی

تنيسري مُكِه ارست وِ خدا وندعا لم ہے :

« <u>ت. د اد تيت سسۇلك بيا موسىٰ -'</u>

« اے موسیٰ! بمقاری النجایش منظور کی گئیں !"

لہٰ۔ ذاجس طرح جناب { روان جناب موئی کے وزیر منفے اقوستِ بإزو يخفى، مثر كبب كار دميالسنت يخفى، خليف ومانشين يخفي إسى طرح الميلجمين تھی ارشاد بینیم کی بنا پرسینیٹ رکے وزیر ستھے است میں سیمیر کے جانشین ننے، کاررسالت میں شرکی تھے (زیادہ سے زیادہ یہ کرسب بابتی سیبل نبوت نخفیں بک لمحا ط خلافنت ماصل کفیں) اور تنام است سے افض کھے اوراً مخفرتن کی میات وموست د واؤل مالنول بین برنسیست تماماست كراب سيرزياد وحضوصيت ركھنے وائے منے اور حس طرح جناب موسی کی امسنت پرجنا ب {رون کی اطاعست فرض کنی اسی طرح تما ماست.اسلامیر پرحصرت علیم کی اطاعت بھی لازم تھی ^ہ

ہرسننے والا مدمیث مز لت کوسفن کریہی معجمتاہے اورمننے سے بعداس کے ذہن میں ہی بابت آئی ہی اور انفیس بانوں کے مقصود ہونے میں کسی نتم کا شک بہیں مونا۔ خو درسول اللہ اسے بھی الچی طرح وضاحت فرادی اورکسی شکب و سنبه کی گنجائش باتی ندر کمی - آب کا به فرا اکد :

« إن له لا ينسعي أن أذهب إلا وأنت حنليفتي؟ ً

« ميرا قدم بامر نكانا مناسب بنهي حب كم تنفيل اپن عَكِربِ قَائِمُ مَقَام نه حَجُورُ مِا وُل ال

صریحی نف ہے کہ معزست علی ہی خلیفہ رسول شغے ۔ بلکداس سے بھی کچھ بڑھ کہ رکسٹن ومنا حسنت بیے اس امرکی کہ اگر انخطرست علی کو اپنا خلیفہ بنا ئے بعیر چلے جائے تو نامناسپ منل کے مرتکب ہونے ۔

دسول کا بدارشاد که میرے بیے به مناسب بی بہیں کہ بنیر بھیں اپنا خلیفہ بنائے ہوئے چلا جا وُل به بتاتا ہے کہ رسول اوٹر ما مور تقی آپ کو حکم دیا تھا خلا و ندعالم نے کہ علی کو اپنا خلیفہ نبا جا نا جیب کہ آبہ بلغ کی تفسیر و تکھنے سے تاب نہونا ہے ،

> " سيا اسها السرسول سبلغ مسا اسنول السيك من دسبك وان لم تغدسل وندما مبلغنت دسسالت ه " " است رسول"! بيبنجا دو تم اس حكم كو جو تم پر نازل كيا گياداگر تم في نهيں بينجا إ تو گو إ تم في كارٍ دسالت انجام بى نهيں ويا "

آیت کے کر اوں کو خوب انجی طرح دیکھیے سے اسب السوسول بلغ کے بعدی دوسرا کھوا ۔ ایت کے اس محلے کے بعدی دوسرا کھوا ۔ ایت کے اس محلہ کے ساتھ لا سسنبنی ان ا ذ هسب طحوٰے کو مدیث رسول کے اس مجلہ کے ساتھ لا سسنبنی ان ا ذ هسب الا و اُسنن حسلیمنی سے سلائیے تو معلوم ہوگا کہ یہ دونوں فقرے ایک پی مطلب کی ترجما نی کرتے ہیں۔ آبیت بھی یہی کہتی ہے کہ اگر علی کوئلینہ نہیں ہنایا تو گویا کار رسائست ہی انجام نہیں دیا اور رسول مجی اقرار کرتے ہیں کہ میرا بیر متوب خلیفہ بنا نے ہوئے جانا سناسب ہی نہیں۔

ابن عباس کی اسس مدیث میں رسول کا یہ فقرہ بھی مجو لیے گا نہیں کہ: اے علی تم میرے بعد ہرمومن کے ولی ہو۔ یہ تفر مربی ہے۔ کہ رسول کے بعد است کے مالک و ختار آب ہی تھے۔ آب ہی رول ا کے مقرر کر دہ ماکم وامیر سننے ۔ اور است اسلام میں رسول کے قائم مقام سننے جیبا کہ کمیت رم نے کہا ہے :

و نسعه ولي الأسدسعد ولسبه ومنتصع التقتوى ونعم المؤدب « رسول كے لعداكپ بهترين مالك و مغنار امور سخے اور تقوئ اور بهترين اوب سكھانے والے مخفے " :

مكتوب منبري

حدیث منزلسن صح تھی ہے اور تنہور تھی میکن مدتن آمدی کو (جواصول میں امتاذالہ ساتذہ قضے) اس حدیث کے اسا دمیں شک سے اور وہ اس کے طرق میں شک وشیرکتے ہیں۔ اکھیے تمالفین آمدی کی رائے کو درست بھیں تو آپ انھیں کیونکر قائل کریں۔ گے ؟

جواب مکتو*ب*

عدمیث منز لت میخ زین عدمیث ہے

اً مدی به شک کریے خود اپنے نفس بر ظلم کے مرتکب بروسے کیونکہ عدمیث منز لست تمام اماد میث سے صبیح تراور تمام روایات سے زیادہ پایٹ ہوت کو تنجی برتی ہے۔

أسس كى صحست برد لاكلى بمى وجود بي

سوائے آمدی کے آج کہ اس کے اساد ہیں کسی کوشک نہوا۔ نہ اس کے نابت وسلم البنوست ہونے میں کسی کولیب کشائی کی جآست ہوئی علا فرجی عید منتصب بک نے کہ اس کے صحبت کی صراحت کی ہئے۔ اور ابن جرابیہ ویٹن کشیعت شخص نے صواعت مح قد کے مدالا پر اس مدیب کو فرکر کیا ہے اور اس کی صحبت کے مشائل کا ان انکہ حدیب کے اقوال درج کیے ہیں جو فن حدیث میں حضرات الی سنست کے ملجا و ما وی سمجھے جائے ہیں ہے اور برحدث ون حدیث میں محالت ابل انساد نہ ہوئی توامام بخاری ابسا شخص مجمعی ابنی میری بخاری میں ذکر نرکر آا۔

وہ علما مے ہل سنسٹ ت<u>خیول نے</u> اس مدسیث کی روابیت کی ہے

امام بخاری کی نوید حالست ہے کہ امریلمومنین یا المبیبت کے نفشائل و خصائص کسی حدیث میں دیجہ لینتے ہی تواس کو بوں اٹرا مائے ہیں جیسے دسول ا نے فرایا ہی نہ ہو۔ تومیب امام بخاری تک مجبور ہوگئے اورصیح بخاری میں واس کرکے رہے تواب اس کے متعلق شک وشیر کرنا زبروستی ہے۔

اے آپ اس سے پہلے صلاح ہو فرما چکے ہیں کہ علام ق بی نے خود اس معرمین کا صحبت کی تقریح کی ہے۔ کا صحبت کی تقریح کی ہے۔ کے صحبت کی تقریح کی ہے۔ کے صحبت کی تقریح کی ہے۔ کے صحبت کی تقریق میں ہے۔ کے صحبت کی تقریق کی ہے۔ کے صحبت کی تقریق کی ہے۔ کے صحبت کی تقریق کی ہے۔ کے صحبت کی ہے۔ کے صحبت کی تقریق کی کے حصرت کی تقریق کی تقریق کے تقریق کی تقریق کی تقریق کی تقریق کے تقریق کی تقریق کے تقریق ک

معادیہ جو دشمنان امیرالمومنین اورآب سے بغاوت کرنے والوں کے مرغنہ تنے بخیوں نے امیرالمومنین اسے جنگ کی ، بالا شے منبر آب کو گالبال دیں ۔ لوگوں کوسب وشتم کرنے بچہور کیا لیکن با دجودا تنی ہرنزین علاوست کے وہ بھی اس مدمین منز لمن سے انکار نکریسکے اور نہ سعید بن ابی وقاص کو جھٹلانے کی انھیں ہمت ہوئی ۔

چنانچ میچ مسلم میں بر رواست موج دسہے کہ:

" حبب سعدبن اٰبی وقاص معاویہ کے پانٹ آسے اور معاور نےان سے فرائش کی کہ منبر برجاکر امیرالمومنین پرلسنت كرس -----اورائفون نے انكاركيا توساوير فيوجيا كداكر وجد البكادكيا سبت ؟ اكفون شيجاب دياك رسول كمن علی محسنعلق بین التی ایسی کمی بین کرحب بیک و ه بایش یا درایں گی میں مرگز انھیں سسب وشتم نہیں کرسکتا ۔ اگر ان بین بانزں سےابکے باست بھی مجھے نصیبہ ہوتی ت وه سرخ اونول كى قطارى زياده ميرے ييے عبوب موق. یں نے فود دسول اللہ کوعلیٰ سے کہتے سسٹا ہے میب کہ اس کسی عزوه میں تشریعیت میار ہے تھے اور حفزت علی کوایتی عبد جبورے جارے تھے تو آب نے فرمایا ک کیا تم اس برراحی نہیں موک محصیں مجھ سے دہی مزالت ہے جوموسی سے بارون کومتی سوائے اس کے کربائب بترست میرے بدتہ ہے ۔ معاویہ کے لیے بہت اسان تھا کہ حجٹلادیتے سعد کو کہہ وینے کہ نہیں ، رسول کے ایسا فرایا ہی نہیں ہے ۔ لیکن یہ حدیث ال کے نز د کیس تھی اس قار ٹابت وسلم متھی کہ اس کے متعلیٰ چون وجا کی گنجائش ہی نہیں بائی ۔ اکفوں نے بہتری اس میں دیجی کہ فاموسٹ ہوجا ہیں۔ سعد کو مجبود نہ کریں ۔

اس سے بڑھ کرمزے کی بات سناوں آب کو۔ معاویہ نے خوداس معدیث مسر است کی رواسیت کی ہے ۔ ابن مجر صواعت نوقہ بیں کو برفراتے ہیں:

«ا مام احمد بن صنبل نے روابیت کی ہے کہ کسی شخص نے معاویہ سے ایک مسکلا در یا دن کہا ۔ معاویہ نے کہا کہ اسے علی ہے لیے مسکلا در یا دن کہا ۔ معاویہ نے کہا کہ اسے علی ہے جواب بوجھ و اس شخص نے کہا : آپ کا جواب مجھے علی کے جواب سے زیادہ بیسند برہ ہے ۔ معاویہ نے چھڑک کرکہا کہ یہ برترین بات مند ہے سے دسول اللہ سنے علم یوں ہم ایا ہے جب و مسول اللہ سنے علم یوں ہم ایا ہے جب معالی طرح طائر ایٹ ہے کو دانہ بھر آنا ہے ۔ اور جس کے متعلن طرح طائر اپنے ہے کو دانہ بھر آنا ہے ۔ اور جس کے متعلن

اے امام ماکم نے مجی اس مدیث کومسند دک ج ۴ صائد پر درج کیا ہے۔ اورکہا ہے کہ یہ حدمیش مجادی وسسلم سکے مٹرانکا کے سیباد پر مجی مبیح ہے اور علا رڈ ہی نے مجی کلحنیص مستددک ہیں اس معرمیٹ کو درج کیا ہے اور اعتراف کیا ہے کہ یہ مترش امام سلم کے مدیار پرمیرے ہے . سے صواعت محرفتہ باب اا صفی ۱۰۵ یہ ارمشاد فرمایا کہ مخبیں مجھ سے دہی سنبت ماصل ہے جو
موئ سے بارون کو سخی سوائے اس کے کہ میرے بعد نبوت
کاسلسلہ ختم ہے ۔ اور حصر من عمر کو حب کسی معاملہ ہیں بچیدیگ
ورہیں آئی سخی تواخیں کی طوف رجوع کرتے ہے، الح "
معتقریہ کہ معربیث من لت اتن ثابت وسلم ہے جس کے شوس میں
کسی شک وشبہ کی گنجائش ہی نہیں ۔ تمام سلمان خواہ وہ کسی فرقہ یا جماعت
سے تعلق رکھتے ہول اس معربیث کی صحبت پراجماع واتفاق کیے بینے ہیں ۔
سے تعلق رکھتے ہول اس معربیث کی صحبت پراجماع واتفاق کیے بینے ہیں ۔
اس معربیث من لسن کو صاحب الجمع مین الصحاح السن نے باب منائل اور غروہ توک مناقب علی میں اور صاحب الجمع مین الصحابین نے باب منائل اور غروہ توک کے تذکرہ میں ورکھا ہے۔

صیح سخاری میں عز وہ توکی ہے کے سلط میں موجود ہے۔ صیح سلم میں نفنائل علی مح منت میں مذکورہے۔

سسنن ابن ما تھے ہیں اصحاب بی اکے نصائل کے صنن ہیں موجود سے۔

اے علام ابن تجر فرات بیں کیسن ہوگوں نے بریمی لکھا ہے کہ معادیہ نے اس شخص سے یہ مجھ کہا کہ بہاں سے چلے جا و۔ فرا متعادیے پیروں کو استوار ذکرے اور اس شخص کا آم وفر سے کاٹ دیا اور بھی بہت کی یا بیش علام ابن حجر نے صواعت نحر قد صفا برنعت کی ہم بہر سبس سے بہت میں ایک اچھی خاصی ہی جب سبس سے بہت میں ایک اچھی خاصی ہی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بر سے مدا دیا ہے کہ علامہ معادیہ سے دوا بہت کی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بہت کے سے روا بہت کی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بہت کے سے روا بہت کی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بہت کے سے روا بہت کی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بہت کے دوا بہت کی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بہت کے دوا بہت کی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بہت کے دوا بہت کی ہے ۔ امام احدی تنہا معاد بہت کے دوا بہت کی ہے دوا بہت کی ہے دوا ہ

سے ملد ۲ مغر ۳۲۳

کے حلد اوّل صیم حلام ملت اس مے علادہ ادریجی مقابات پر ام ذکور نے اس مدیث کو وَکرکِوا ہے مِدیدا کرحیان بین کرنے سے معلوم ہوتا ہے۔ مندرک الم حاکم پین باب نضائل کے تنت موجود ہے۔ اورامام احمد نے اپنی مشٹ ندمیں سعد کی روامیت سے کبٹرت طریق سے روابیت کی ہے نیزاسی مند ہیں الم موصوف نے مندرجہ ذیل حفزات ہیں سے ہر ہر برزرگ کی عدمیث ہیں ذکر کیا ہے۔

ابن عباس ، اسمار جست عبیق ، ابوسعیر فقیمی ، معاویاب ابی سنتیان اور دیگرمما به کی ایک جاعت سے روابیت کیا ہے۔

طرانی نے اسار بنت عمیس ، ایمسلم ، جیش بن جنادہ ، این عمر ، ابن عمر ، این عباس ، جا بر بن سمرہ ، زید بن ارتم مراربن عازب اور علی بن ابی طالب و عیرہم سے ہر برسطف کی حدیث ہیں روا بیت کی ہے ۔ بزار نے اپنی متدرک میں روا بیت کی ہے ۔

له مسندا حرمید اوّل مستعل و صفعه رصفه و مدعه و صفط و صفط

للومسندن اصلك

تعربندج بر ملك ، ص<u>به ۲</u>

سيد ٢٥ ملك

هده میباکیم نے اسس کتاب کے شوع میں صواعن مح قد باب ۱۱ صفط سے نقل کیا ہے یدے صواعق مح قد باب و صلا سیویلی نے تاریخ انغلقا میں سبل احالات امرالمونین نقل کیا ہے کہ طبرانی نے اس مدمیث کوان ممام شفاص سے نقل کیا ہے سیویلی نے ایک نام اسما منت عمیس اور زیادہ کر کے لکھا ہے۔

ئے "اریخ الخلفار صفل مالاست امیرالومنین ۔

هد كمنزالوال ملد به صلفا كي مديث م ٢٥٠٠-

ترمذی نے اپی میچ میں ابرسمیدخدری کی مدیمیشد ہیں لکھا۔ ابن عسب دالبرنے استیعاب ہیں نبلسلہ مالاستِ امرائلونین اسس مدیث کوذکر کیا ہے اور ذکر کرنے کے بعد لکھنے ہیں خودان کے الفاظ ہیں : « وہب حسن اکشبت الآشاد و اُحسیسها ، دواء عن

المسبنى سسعدين ابى دستاص »

ی عدیث تمام امادیث برنیم بی سب سے زیادہ ثابت وسلم اور براکیس سے می ترب ،اس مدیث کوسعدن الی دقاص سنے بینم سے روایت کیا ہے ؟

میر فرماتے ہیں کہ :

" سعد کی مدیث کمٹرست طریقوں سے مردی ہے جے ابن المی نمیٹمہ ویزرہ نے اکھا ہے "

أفي بل كر تريز مات بن :

"اس مدیث کی روایت ابن عباس نے کی ہے ، اوسعبد خدری نے کہ ہے ، ام سلم نے کہ ہے ، اساء بنت عمین سنے کہ سے ، جا بر بن عبدالشرف کی -ان سے علاوہ ایس پوری جما عت امعاب ہے جس نے اس مدیث کی روایت کی ہے۔ جن کے ذکر میں طول ہوگا۔"

علمار محدثین اورابل سیر واخبار نے جس جس نے عزوہ تبوک کا ذکر کیا ہے۔ کیا ہے اس مدیث کو بھی مزور لکھا ہے اور جس نے مفر کیا ہے اکفول نے اس مدیث کو بھی مزور لکھا ہے اور جس نے مفر علی کے ملاست وسوائخ مرتب کیے بین خواہ وہ کسی ذرتہ وجماعت کے بوں منقد بین وستا خرین سب نے اس مدیث کا ذکر کیا ہے . ادر منا نتب اہلِ بہت وفعنا کل محابیں جتی کتا بیں اکمی گئی ہیں سبی ہیں ۔ یہ مدیث موجود ہے ۔ مختقر ہیکہ مدیدیث منزلت وہ جدیریث ہے کہ خلعت و سلفٹ سب کے نزد کہٹ ٹا بہت ومحتن ہے کسی شے اس کی محسن میں شک منہیں کہا ۔

آمری کے فٹکسکرنے کی وجہ

للذاحب اس کی ایم بیت کی مالت به به تو آمری کواس کے اساد
میں شک میر تو ہوا کرے ان کے شک سے کیا ہونا ہے۔ علم حدیث بیل خیس
دخل بی کیامامل تھا ؟ طرق واسسناد کے متعلق ان کا حکم نظا نا قر بانکل ایسا
ہی ہے جیسے عوام کا حکم نگا نا جغیر کسی بات کے سمجنے کی صلاحیت ہی بنیں
ہوتی ۔ بات بہ ہے کہ جیسا آ ب نے کہا کہ احول ہیں انفیں جھے ماصل تھا تو
اسی ہجر نے انفیں اس دلدل میں تعینسا یا ماضوں نے دیکھا کہ بتعنا ہے ہول
یہ صدیبی نفی مربح ہے۔ امرالومین کی خلافت پر امول آگے ہوجہ حفرت
علی کو خلیفہ مانے کے سواکوئی چارہ کار باتی ہیں رہتا۔ مغر کی صورت نہیں
الہذا راہ ذاریوں نکالی جائے کہ اس حدیث کے اساوری مشکوک قرار ف
دیدے جا بیل کہ اس طرح شاید اس حدیث کے اساوری مشکوک قرار ف
دیدے جا بیل کہ اس طرح شاید اس حدیث کے اسادر حضرت علی کو خلیف

ښ

مكتوب منبرها

سسندمدييث كي محدث كاقرار

اس مدین مزدن کے نبوت ہیں جو کچھ اسب نے فرایا بالکل میرے ذکر کیا ہے۔ اس مدین منزلت کے نبوت ہیں جو کچھ اسب نے فرایا بالکل میرے ذکر کیا ہے اس کے سلم النبوت ہونے میں مطلقاً شک وشر کی گئیا معلوم ہو اُندی نے اس مدیث میں ایسی کھوکر کھائی جس سے ان کا مجر م کھل گیا معلوم ہو گیا کہ انھیں علم عدریث سے دور کا بھی لیگاؤ نہیں تھا۔ میں نے ان کے قول کوذکر کے ناحق اُسپ کوان کے رُوک رجمت دی معانی کا خوالی مہول ۔

عموم مدربش منزلت بين شک

مجص خیال ہوتا ہے کہ امری کے علادہ آب محدیر مخالفین اس مدست

کے متعلق ہے کہتے ہیں کراس حدیث مزراست ہیں عموم ہیں بلکہ یہ اسپنے مور د
کے ساتھ مخصوص ہے بعی رسول کا حصرت علی کو اپنا جانشین اور اپنی ونا
کے بعد تمام سلانوں میں اپنا فلیفہ نبانا مفضود نہیں تھا بلکھرف عزوہ وہ تبوک
کے موقع پر مدینہ سے جننے دن آپ فا مئی رہے اتنے دن ہی آپ کومانشین
بنانا مفصود تھا عبیہ اکرسے یاق حدیث سے بنیہ جلتا ہے۔ اس لیے کہ یعدیث
آپ نے اس مونع پر فرائ ہے یوب آپ عادم سفر ہوئے اور حصرت علی اگر مارے میں اپنا قائم مقام بناکر جائے اور اس پر حصرت علی سف حول کیا
در اس پر حصرت علی سف حول کیا
در اس پر حصرت علی سف حول کیا
ہیں ہیں۔

تورسول شع كها:

" کیا تخیں بہب ندنہیں کہ تخییں مجہ سے وہی نسبت ہے جو موسیٰ سے إرون کو تھی ؟ سوائے اس مے کہ میرے بعد کوئی بنی نہیں ۔"

اس مدسیف کے جست بونے میں شک

گویارسول برکہنا چاہتے تنے کہ جس طرح کوہ طور برجانے کے وقت جناب ارون جناب موسیٰ کے جانشین تنے اسی طرح مزرہ نبوک برطبنے کے وقت تم میرے جانشین ہو۔ البذا مقصو د مینجیر کا یہ نسکلا کہ بیں جننے دن مزوہ تبوک میں مشعول دہوں تم مسلانوں میں میرے جانشین ہو حس طرح جناب موسیٰ کی غییب اور مناجا سند کے وانوں میں جناب اردن جانشین موسیٰ تنے۔ بعن ہوکت یہ کہتے ہیں کہ اس حدمیث کواگر عام مان بھی را ما ع تب بھی یہ عدمیت جست بنیں کیونکہ یہ حدمیث محقوم ہے اور وہ عام جس کی تخصیص ہے اور وہ عام جس کی تخصیص کردی مائے وہ باتی میں حبت بنیں ہوسکتا۔

س

جواسب مكتوسب

عرب كے الم زبان عموم مدسب كے قائل بي

خانفین کا یہ کہنا کہ مدیث مز لت میں عموم نہیں پایا جا گا۔ اسے ہم اہل زبان اور عرب والول کے عرف کے فیصلہ پر چپوٹر سے ہیں۔ وہ جو کہیں دبی ہم بھی کہتے ہیں ۔ اسب خود محسن عرب ہیں اپنا جواب نہیں رسکھتے۔ آب کی ہات ند کد کی جاسکتی ہے ندا سب کے فیصلویں جون وچ الی گنجا کش ہے۔ اسب حود فرمایش آب کیا کہتے ہیں ؟

آپائی توم (توب) کے متعلق فرائیے کیا کھیں ہی اس کے عموم ہیں شک ہوا ؟ نہیں اور ہرگز نہیں - ناممکن ہے کہ آپ جیبا ماہر زبان اسم حبس معناف کے عموم اور اپنے تمام معادین کوشائل ہونے میں شک کرے۔
اگر آب مجھ سے فرابئل کہ "حد مست سندی انتصافی" نیں نے کھیں انتصافی " نیں نے کھیں انتصافی " نیں نے کھیں انتصاف ہوگا اور انتصاف انتصافی " بی انتصاف ہوگا اور بعض امور سے نہیں - ایک معاملہ ہیں میر سے ساتھ انتصاف کیجے گا اور دوسرے معالم میں ناتھائی فرائے گا ؟ یا انتصاف عام اور اپنے تمام مصادباتی کوشائل ہوگا۔ خدا نہ کرے کہ آپ اسے عام ہونے کے علاو ہ اور کیچے سمجھ میں آئے۔ فرص کیجے کہ اور کیچے سمجھ میں اور سوا ہے استغراق کے کچھ سمجھ میں آئے۔ فرص کیجے کہ اور کیچے کے میں اور سوا ہے استغراق کے کچھ سمجھ میں آئے۔ فرص کیجے کہ

خليفة الملين اگراين ماكم واضرك كبين كدمين ك اوكون براني عكر متعبين بادشاه بنايا مجع جوسن است مامل موئى ہے وہ تفارى مزرست قرار دى يارعايا میں جومنصب میراہے وہ متھا رامنصب مقرد کیا ،یا میں نے ایا ماک متھا ہے حواله کیا توکیا بیسف نگرعوم کے ملادہ اورکوئی جیز سمجھ میں آسے گی اور اگر دعویٰ کرنے والاتخصیص کا دعوی کرے یہ کے کہ حرف بعض حالات ومعالما سند ہیں امتذار واختبار دباكيا سيسبعن مين نهبن توكبا وستغف مخالعت اورنا فران زيمجا مائے گا۔اوراگر وہ اینے کی وزیرے فرایش کرمیرے زان سلطنت یں متحارى وى منزلىن رسى كى جوعركى منزلىن كنى الويكر كے زائد مس بجر أسس كرئم محال نبين مرتو يدنفره بحاط عرف مبعن منازل ومرانب كمساتة تحفون موكا إعام مجاما عظم ميا توسى فيال بكراب عام بي مجين ك ادر مح توفين ہے کہ اس بھی اس مدریث میں عموم ہی کے قائل مول نتے جس طرح مذکورہ بالا شالو^ں میں عرف ولغنت کے قاعدہ پرسوائے عموم مانے کے کوئی دوسری صورت بہیں ۔ خصوماً استشنا ربنوسند کے بعد توا ور بھی عموم ایجی طرع وا من ہوما آہے کیونکہ دب دمول نے مرمت نبوسن کومستشیٰ کیا 'ڈا ثابت ہُوا کہ سوائے درجہ نبوّسن کے اور حتنے سازل کنھے جناب ارون کے وہ سب حفزت علی کو ماصل ہوئے کوئی ایک بہیں حیواً ا۔ ورند درسول حرصت نبوست ہی کومستنٹی ضغر استے بلک حیاں نبوّت كومنتى كيا و إل دومرى باتول كانجى استشا فرات أب فودعربي -عربون بررست بن اب خود سوچه عربول سع بوجهه كدانكاكيا فيله به اس كاسلة ؟

اسكانبوت كرمدب كى مورد كرساتة محفوث ب

نخالف کاید کہنا کہ میر عدمین مورد کے سائن مخصوص ہے دو دحیوں سے

فلط ہے بہلی وجریہ ہے کہ عدیث فی نفنہ عام ہے جیسا اوپر ہیں بیان کر چکا ہول لہذا اس کا مور داگراہے ہم خاص سیم مجی کرلیں اس کو عام ہونے سے مانے نہیں ہوسکتا۔ کبونکہ مورد وارد کا مخصص منہیں ہواکرتا جیسا کہ طے شدہ مسئلہ ہے۔

دیکھیا اگر آپ کی جنس شخص کو آیت الکری چوت ہوتے دیکیں۔
ادر آپ اس سے کہیں کہ محدث (جس میں جنب غیرجنب سب شال ہیں)
کو آبات قرآن بجونا ما نز نہیں تو آپ کا یہ ارشاد مور دے ساتھ محقوص ہوگا
باآپ کا یہ کہنا عام ہوگا اور تمام آبات قرآن اور ہر محدسف کو شامل ہوگا
خواہ وہ محدسف جنب ہو یا غیرجنب ۔ آبست الکری کو جھوتے یا دیگر
آباست کو۔ میں تو خیال نہیں کرنا کہ کوئی شخص بھی یہ کہے گا کہ یہ مکم مون
جنب کے ساتھ مختص ہے۔ ہر محدث کو شامل نہیں اور مرف آبست الکرسی ہی
جھوتے کی مما نعست ہے دیگر آباست کی نہیں ۔ اگر معالی مربعی کو کھوکھاتے
ہوئے کی مما نعست ہے دیگر آباست کی نہیں ۔ اگر معالی مربعی کو کھوکھاتے
ہوئے کی مما نعست ہے دیگر آباست کی نہیں ۔ اگر معالی مربعی کو کھوکھاتے
ہوئے کی مما نعست ہے دیگر آباست کی نہیں ۔ اگر معالی مربعی کی حقی سے
مرب مربی ہے کہ اس مور د کے ساتھ محقوص سمی ما ہے گی ۔ حرف کھور
سے مما نعست محبی ما ہے گی یا ہی مما نعست عام ہوگی ۔ اور ہر جیھے کو
شامل ہوگی ؟

میا توخیال بہ ہے کہ کوئی بھی اس کا فائل نہ نے گا جو یہ کہے کہ یہ ممالنست بخفوص ہے مورد کے ساتھ، صرف کھورے مریش کوروکا گیاہے یہ تو وہ ہی کئے گا جے املائے ہم وہ ہی کئے گا جے اصول سے کوئی سگا وُ نہو۔ زبان سے قواعدسے بالکل ہے ہم وہ مجہ محمد ہم وہ ہم عربی سے دور ہواور ہم لوگوں کی دنیا سے اجنبی ہو۔ المہ خاص ہونے کی وجہ سے حکم خاص ہنیں اسی طرح ان مثالول ہیں مورد کے خاص ہونے کی وجہ سے حکم خاص ہنیں اسی طرح

حدیث مزدست کامور داگرمیر خاص ہے بینی آپ نے غز و کا تبوک ہیں جاتے وقت فرمایا، ایکن حکم عام ہی ہے ۔ صدیث منز است اور ان شالوں ہیں کو فی فرق نہیں ۔

اس فول کی تردید که به حدمیث جحت بنہیں

دوسرى وجربطلان برسي كربيكبنا بى غلط سبے كرحديبيث كامورد خاص ہے کیونکہ رسول نے مرمن عزوہ تبوک، ہی کے موقع بیتے صرب علی کو منيدس اينا مانتين نبات موسئه نبي فرما باكه تهين مجدت ومي منزلت ماصل ب جوموی سے ارون کو تھی اکہ تحالفت کا بد کمنا صبح ہوکہ مرف عزوہ تبوک ہی کے موقع برجھ زمنہ مل کومنزان اور فی ماصل ہو کی اور آپ بِسُول کے مبانشین ہوستے بلکہ کپ نے اس مدیریٹ کو بار إمشکعن مواقع پرارشاد فرایا ہے چانچہ ہارے بیاں ائم طاہرن سے کمٹرت میے اور متواز امادیث مروی ہی جن سے ثابت ہونا ہے کہ رمول سے اور دوسرے مواقع بریمی اس مدمیث کو فرایے بخفیق کے حوا ہاری کااول میں دیجے سکتے ہیں معارت المسنت کے سسنن بھی اس کےموہد وشاہر ہیں جیساکہ ان کی ٹاکسٹس وجہ تجوسے معلوم موسکتا ہے البذامعز من کا یہ کہنا کر سیات مدیث دلیل ہے صرف اس کے عزوہ تبوک کے ساتھ مختص مونے کی ۔ با مکل ہی غلط اور نا قابل اعتباہے ۔ ره کمیا یہ کہناکہ وہ عام جس کی تخصیص کر دی مباسے وہ باق بس مجت نبیں . با نکل ممل لغواور مریکی طور بر باطل سے ۔ اور ماص کراس مدمیت کےمتعل*ق جوہاری آب* کی *مومّنوے مجن*ث ہے ایسا خیال تومعف زبردِستی ہے

مكتوب مبراا

مديريث منزلت ومفاماست

آپ نے برتو فرمایا کہ رسول اللہ نے مرمت عزوہ تبوک ہی نہیں المکہ اور مجھی متعدد مواقع ہر یہ مدیسیٹ ارشاد فرمائی کیکن آپ نے ان متعدد مواقع کی تفریح نہیں کی ۔ متعدد مواقع کی تفریح نہیں کی ۔

برطی عنامیت بهوگ ان موار دکی بهی تغییل فرائیے بغز وہ تبوک کے علاوہ اورکسب مخفرست کے ایسا ارسٹاد فرایا۔

سی

جواسب مكتوسب

منجلەمقامات مەرىيىت مىزلت ملاقاست أم سسلىم س

ال مواقع بیں سے ایکس وہ موقع ہے حبب آنخفرت صلی اللہ علیہ واک کوستم سے امّ سلیم شیسے فرایا متھا ۔ امّ سلیم سب سے پہلے اسلام لانے والوں

ے یہ ہمان بن خالدانصاری کی بیٹی اور درام بن کمان کی بہن تھیں ،ان کے باپ اور مجائی و ولؤں دمول اللہ کی حاست میں الم نے ہوئے سیست میں میٹیں دوابت کی بہ اوران سے اس نیرک و وانا خالان تھیں ، دمول اللہ سے مبہست می میٹیں دوابت کی بہ اوران سے اس ابن عباس نید بن فاہست ، ایک سلم بن عبداد حمل اور وہ مرے توگوں نے مدیثیں دوابیت کی بی اوران سے ایک بی اورسا بھیں بن ایک شار ہے ،اسلام کی طوف دعوست دیے والوں میں سے ایک یہ میں اورسا بھیں ، دان کا شار ہے ،اسلام کی طوف دعوست دیے والوں میں سے ایک یہ یہی تھیں ، دان جا بلیت بیں مالک بن نفز کی ذوجبیت ہیں تھیں ۔ الک سے امن بن مالک پیدا ہو ہے ، میں اسلام آیا آوا تعوں نے سعست کی ہمسلام تبول کیا اور اسپ می سوم سے میں کہا لیکن اس نے اسلام آیا آوا تعوں نے سان کیا کہا توالیوں نے اپنے بیٹے شوم سوم تعنین کہ ہو کرمٹ م کی طوف میا گیا ، ور وہیں ہما لیٹ کی خدرت گراری پر مائل کیا ایول اسٹر کی خدرت گراری پر مائل کیا ایول نے بیٹے دول اسٹر کی خدرت گراری پر مائل کیا ایول نے بیٹے دول اسٹر کی خدرت گراری پر مائل کیا ایول نے بیٹے دول کیا ۔ اسی وجہ سے ایس کہا کرنے تھے کہ خدا جواسے خوروں نے تھے کہ خدا جواسے کی جدول کیا ۔ اسی وجہ سے ایس کہا کرنے تھے کہ خدا جواسے خوروں کے بیٹوں پر ابوطانو (باتی اٹھ صفر پر) کری دالوہ کوانخوں نے میری اچھی مربیست کی کا تعین کے انتھوں پر ابوطانو (باتی اٹھ صفر پر) کری دالوہ کوانخوں نے میری اچھی مربیست کی گائیں کے انتھوں پر ابوطانو (باتی اٹھ صفر پر)

یں سے تغیب -اوربڑی ذیرکس و دانا خانون تغیب ۔سابقیبت اسلام خلق و خیرخواہی اورسٹ دائڈ میں ٹا بہت قادمی کی وجہسے ان کی دسول کے نزد یک بڑی منز لست بخی ۔آنخفرسٹ ان کی الماقات کومانے ان سے گھرمیں ببٹھ کر ان سے گفتگو کرنے ۔ آپ ہے ایک ون ان سے ارش و فرایا :

• اسے ام سلیم علی کا گوشت میرے گوشت سے بیے ان کا خون میرے حزن سے ہے اور انھیں وہی منز لت عاصل ہے جو موسیٰ سے مارون کو کئی ؟

ہ بالکل ظاہر سے کہ دسول انٹرنے یہ مدیث کمی خاص مذہب کے مانخت نہیں حزمال ککہ برمسستہ ملور پر سلسلہ کلام میں یہ جھلے زبان مبادک سے ادا ہوسے جس سے مقصو د صرفت یہ مخاکہ مبرے ولمبعہد اورمیرے جانشین

(بقیرمامشیر خوگزشت) انعماری سلام لاسکا اوطای نے جب کر اسلام زلاسکے تقعان سے شادی کی خوامش کی انفوں شے سلان ہوئے کی خول لگائی ۔ ابوطلی نے سلام تبول کیا اوران کا اسلام لانا ہی مہر ہوا ۔ یہ آئم کی انفون نے مسالان ہوئے کی خول لگائی ۔ ابوطلی ہے ہوئی تھیں ۔ جنگ اُ کدمیں ان کے ان ان کے مسافتہ جنگ میں مشرک ہوئی تھیں ۔ جنگ اُ کدمیں ان کے باس اُ سے اس سے بلاک کرد میں تاریخ اسلام میں تمام عود اوران سے زیادہ اسلام کی خدمت گراو ما ہی و محافظ مشکلات میں ثابت قدم ہی خالات میں تعلق ان کے تکم جاتے ۔ بیعنظ اہلی کے مقون آن سے سلنے ان کے تکم جاتے ۔ بیعنظ اہلی کے مقون آن تھیں ۔
کی دونت رکھنے والی اور ان کے حقوق کی ہواسنے والی خالون تھیں ۔

لله امسینم کی بر مدمیث کمنزانعال مبلد ۱ صفحه ۵ میں موجود ہے۔ بکرنتخفی کمنزانعال میں بھی نذکودسے۔ چنائجہ مستداحد بن صنبل مبلد ۵ صفحہ ۲۱ کے ماسشید کی آخری مطرطا متلہ ہو۔ ببینہ انخیس الفائل میں بہ مدمیث موجود ہے ۔ کی مزدلت سے لوگ آگاہ ہوجائیں۔ اتمام عجبت ہوجائے احکام الہی کے بہتائے میں آخیرند ہود لہذا اس صدمیث کو عرف خودہ تروک کے موقع سے مخصوص کر دنیا، حصرت علی کو صرف خودہ تروک کے موقع سے مخصوص کر دنیا، حصرت علی کو صرف خودہ کے موقع پر جانتین رسول اسلیم کرنا صربی ظلم ہے۔ اس جیسی مدمیث دختر جنا ہے جمزہ کے تفنید میں مجی انحفزت کے ارشاہ مسترمانی جیکہ حصرت امراکہ میں جنا ہوا۔ مست رمانی جیکہ حصرت امراکہ میں جنا ہوا۔ تو آنحضرت نے ارشاد فرمایا:

" اے علی تم کو مجھ سے وہی مز لت حاصل ہے جو موسیٰ سے اللہ وان کو تھی ہے ا

امی طرح یہ مدیبیت اس ون آنمی میں شارشاد فرمائی جبکہ ابو کم وعمر
اور ابو عبیدہ بن امجاح رسول کی خدمت ہیں جیلے تتے اور رسول محضرت علی پر سجیہ
کیے ہتے۔ آنمی موست نے انہا ہا مخد حفر سن علی کے کا ندھے پر دکھا اور ارسٹ وفرایا:
" اے علی تم مومبین میں سب سے بیلے ایمان لانے والے ہو
اور سب سے بیلے اسلام تیول کرنے والے ہواور تم کو مجھ سے وہی
تسبست حاصل ہے جو موسی سے ہارون کو تھی ہے یہ
بہی موافاست جو ہجرست کے قبل مکہ بیں حرصت جہا جرین کے در میان ہوگئے۔
نے قائم کی تھی۔ اس دن بھی رسول می نے بر عدیب ارشا و فرائی۔

اے منعالص عنوب امام نسان صغر 14

سے حسن بن پردماکم نے باب کیزست ہیں اود کشیرازی نے باب الانغاب ہیں اکمعدا ہے۔ این مجار نے می ذکر کہا ہے اور کمنز العال حلد ۲ سے ایک بیاری صغر ۲۹۵ پر دو مکرموجود ہے ۔ معدبیث ۲۰۲۹ و ۲۰۳۲ ۔

نیز دوسری موامناست جو مدینہ میں ہجرست کے پاننے مہینہ بعد دسول سے انفسار وجہ ابرین کے درمیان قائم کی وونوں موقنوں پڑتاپ تعصفرت علی کو ایسٹے نیے ہے۔ انسان میں کی اور ایشا دفرایا کہ ا

" أنت مسنَّى سِمنزلسة هارون مسن موسى، الَّا

أنسه لانسيي بعسدي "

" تم میرے لیے ایے ہومیے ارون کے لیے موسیٰ تغریبوا میں اس کے کہ میرے بعد کوئی بی نہ ہوگائیں

وانعة مواخاست كے متعلق بطريق المرّطا بري ايك وونهي منواتر حدثيمي بير - ائد طاہرن كے علاوہ عيروں كى روانتوں كود يجينا ہو تو يہلى وافا كے متعلق حرصف ابك زير بن الى او فى بى كى مدسيث كو بے ليميے جسے الم ماحد بن

ے ملامدابن عبدالبرنے ہستنبعاب میں لبلامالات ایرالومنین اکھا ہے کہ دمول نے ہاہوں بی بین دافاست فرار وی بھر دوبارہ جا جرین وانعمار میں موافاست فرائی اور دو ٹوں موقوں پرامبرالمومنین سے فرایا کہ نم دنیا واکوست میں میرسے بھائی ہو۔ ابن عبدالبر کہتے ہیں کہ درمیان موافاست فرائی۔ پوری تغییل کمتب میروا خیار یس موجود ہے۔ میرہ ملک پرموافاست اول کی تغییل کا منط فرائیے ادرموافاست تانیہ کی تفییل بھی اسی میرہ صلبہ ہے ہے کہ منتلا پرموج دہے۔ آپ ادرموافاست تانیہ کی تفییل ہی آسی میرہ صلبہ ہے ہے کونظر یہ آسے محکم کہ دونوں موقوں پر علی کوا نیا میعائی نیا کرسب پر خضیات عطاکی مسیرہ دما نیہ میں میں موافاست اولی وٹا نیہ کی تفعیل دی ہے وہ میں موافاست ہجرت ہے جو میرہ صلبہ بی موافاست ہجرت ہے۔

منبل نے کتاب منا نت علی میں ، ابن عساکر نے اپن ایک بیر بنوی وطبرانی نے اپنی مجم میں ، بادودی نے اپنی کتاب معرفة میں اور ابن عُدی وعیرو نے اپنی اپنی کتاب معرفة میں اور ابن عُدی وعیرو نے اپنی اپنی کتابوں میں درج کیا ہے ۔

مدىيى بېت طولان بادر پورى كىغىيىت موا مات برشتل ك ت كى عبارت بىستى كد:

"فقال على: يارسول الله لقد ذهب روجي، وانقطم ظهري، حسين وأيتك فعلنت بأصحابك مافعلت هندوي، فإن كان هذا من سخط على فلك المستبى والكراسة، فقال رسول الله صلى الله على السعتبى والكراسة، فقال رسول الله صلى الله على الله على الله على الله على الله على الله على والنه وسلم: والدي بعثني بالحن ما اخرجتك الالنفسي، وأنت مسني سماذلة هارون من موسئ عنبير انه لا منبي معدي، وأنت اخي و وارثي، نقال: ومنادث منك؟ قال: منا ورث الاسبياء من قبلي كتاب ربهم وسنة شبيهم، وأنت مي قبلي كتاب ربهم وسنة شبيهم، وأنت مي في نصوي في الجنة مع فاطعة ابني، وأنت مي

نه الم احد واین صاکرے بخزت معنبرد موثن علاد نے نقل کباب بنجدان کے علام سنی مبندی محمدی میں انھوں نے منازالعال مبدرہ معندی پر بھر میں انھوں نے منزالعال مبلد ہ صندی پر بھر میلاد مندلا پر بھر میلاد مندلا پر بھر میلاد مندلا پر باب مناقب علی میں الم احد سے نقل کرکے دکھا ہے۔

شده ان تمام اتمدابل مسنست سے انگیس جا حدت تُغَامنت سنے برمدریشت نغل کی سبے منجاران کے ایک علام متنی چی سال مغام وکسزالوال جار ۵ صغرام حدمیث ۱۹۹

ورنيقي ، مشم ستبلا حسل الله عليه وآلسه وسلم، اخوان أعمل سسور متقابلين ، المتحابين في الله ينظد بعضهم الى بعض "

« اميرالمونين تع رسول الشرّ سے كها : إرسول الله ميرى توجان نکل کئی، کمرشکسند ہوگئ بید دیکھ کرکہ آپ نے اصحاب میں تو مواخاسند قائم کی ایک کو دورسے کا بھائی بنایا مگرمجے مجبور دیا ۔ مجھے کسی کا تجھائی نربنایا ۔ اگربیکٹی نا دامنگی وضفگی کی وجہسے ہے توآب مالک دخمار ہیں آپ ہی عفو فرمایش کے اور آپ ری عوست بخیش گے . دسول کے فرایا : متم ہے اس معبود کی جس نے مجع من کے ساتھ سعوت فرمایا میں مے متعیں فاص اپنے لیے اٹھارکھاہے تم میرے بیرا ہے ہی ہوجیبے موسیٰ کے بیے اون تقے سوائے اس کے کہ میرے بعد کوئی بی نہ ہوگا۔ تم میرے بھائی مو،ميرے وارث مو-اميرالمونين فرائے بن كرس خوميا كرمين أب كاكس جيز كا وارث مون كا؟ أب ع فرايا : كاس چیزے حس کے انبیار وارث ہوئے لین کتاب خد استن بی ا اورتم میرے ماتھ جنت میں میرے قصر میں رم دیکے میری یارہ مگر فاطم کے ساتھ۔ تم میرے مجانی ہو ،میرے دمین کار ہو۔ مجرک تے ہے آبہت تکاومت فرائی : احذوانا عسل سد رمشقاب لمین یہ

ا در دومرے موا فاست کے سلسکہ میں حرف ای ایک حدمیث کو لے لیجے یوطران نے اپنی عج کبیریں ابن عباس سے روابیت کی ہے :

" وسول الله من المرالمومين اس فرا إكركيا تم ارامن بوكت كم

یں نے بہا برین وانعبار کے درمیان توموا فاست کی اورتم کو ان میں سے کس کا بھائی زبنایا کیا تم بربہ ندینہیں کرنے کرتم کو مجھ سے وہی نسبیت حاصل ہے جوموئ سے ہارون کو کتی ہے

ا ما منا منا منا را ما منال برماست بدسند احدى منيل مبلده طسب بينيركاس نغره يس ك . كمياتم ي سعن دارامن بو مكت ؟ * جوبيار ديمبسد ، دلدسي اور پدوا د شغنسند وناز برداري سترشح ہے و معنیٰ نہیں۔ اگراَپ فرایش کر جب پہی مرتب رمول ملی کواپنے لیے محصوص کر چکے ننے تو دومری موا خاست کے موقع بریمنام اصحاب بیں موا خاست کرنے اورعلی کوکسی کامجائی زبنا نے سے علی کو تردد اورشک وشبر زگرا جا ہے بھنا۔ اس مزیران کومعلن دہنا جا ہے مغنا کی میں طرح دیول کے میلی مرتبہ عجدا ہنے لیے مخصوص کر دکھا اس مرتبہ بھی دیرول کا الیسا ہی ارادہ سبے ۔ اک خرصفرست علی کوسٹ برکیوں ہوا ؟ اور اکب شے دوسری موافاست کو مجی مہلی مواخاسندیرتیا*س کیون دکیا لیویس عرض کرون گا* ۰ دومری مواخاست کو تیلی مواخاست پرتیاس کیا ہی زمباسکتا مقا ہسس بیے کرمہائ موا خاست مثام کرمہا برین کے درمیان ہو اُن متی بطِّات د در می موافات کے کہ وہ مباوین وانصار کے درسیان ہوئی تنی۔ ودبری موافات میں مها برکا بحاثی انعیاری *و بن*ایا گیا کتا ا درانقیاری کا بچال هها چرکو-اس مر*تب* چونکرینیم *او*ر عل دونوں کے دونوں جا برتھے لبادا تیاس بیکہتا ہے کراب کی مرتبہ دونوں مجا**ل** ہوائی ن مول مے۔ البذاحفزت علی مے دومرے اوگول کو دیکھنے ہوئے قیاس کیا کہ اب کی مرتب میراکھائی کوئ انھادی ہی ہوگا جس طرح ہرجہ ابرکا بھائی انھاری مغرر کیا گیا ہے ۔ اورجب دمول م نے کی انصاری کوعل کا بھائی زبنایا نوعلی کواضطراب ہوا، نگرخداو دمول دونوں اس مرتبہ تجی حفزت علی کو ہرایک پرتفنیاست ہی دینا چلسنتے شخصے اور قیامسس کے برخلات اس مرتب مجى ديول مضاينا بعال على مي كونايا.

ای طرح وہ حدثیں ہیں جوآ مخصرت کے اس دن ایرٹ د فرما ہیں۔ حب آپ نے سب کے در وازے بند کرا دیے اور حصرت علی کے در ازے کوسجد کی طومت کھلا رکھا عرفت ایک جابر بن عبداللّہ کی صربیت کا ذکر کر دنیا کانی ہوگا - جابھی عسب اللہ کہتے ہیں کہ رسول نے فرما یا کہ: "اے علی مسجد میں متھارے ہے وہی جا تر ہے جومیرے ہے اور تم میرے بیے ایسے ہی ہو جیسے موسی کے لیے ارون

ا ورمذیغہ بن انسسبیخنارتےسے مروی ہے کہ دمول انڈامسس ون خطبہ فرما نے کھڑسے ہو ئے اورادشاد فرمایا کہ :

"کچھ لوگ دل میں عم وعفقہ بیسے ہو سے ہیں کہ میں نے علی ا کومسجد ہیں رکھا ، دومروں کو باہر کر دیا ، ضدا کی حتم میں نے نہ تواہنے جی سے علی کومسجد ہیں رکھا نہ دومروں کو باہر کیا بلکہ خدا و ندعالم نے ایسا کیا ہے ۔ خدا و ندکر ہم نے جناب ہوئی اوران کے بھائی پر وحی فرائی کہ تم دونوں اپنی قوم کے بیسے معربیں گر بناؤا ورا ہے گھروں کو فبلہ قزار دوا وراس میں نماز قائم کر و "

الى سلىلى بال ين الخفرسة في داياكه:

" على كو مجه سے و كى منبست ما صل ہے جوموسى سے إرون كوكى

ئے ینابیع المودۃ باہ ہ تلہ جاسع المودۃ باہ 2) على ميرے جائى ميں يمى كے ليے جائز بنيں كمسجد ميں عورسند کے ساتھ اکتھا ہوسوا علی ہے یہ

ای حرح کے اور مبہت سے بے شارموار دمیں کہاں کک فکر کیے ما بئن ایخیں مبند مذکوره بالاموار دسے برخیال اجی طرح باطل ہوما آ ہے کہ ر*سول منے حرمت یخ وہ تبوک ہی ہے حوقع پر* اُسنت مسُسی سبعب خزلیے ھسادون مسن مسوس*ی فرمایا . حبب اس مدیبیٹ کے اتنے مواروموج و* میں اتنے مواتع پر دسول منے به مدیری ارشاد فرما فی تو به کیونکر لائق توجه

بوسكتاب، اوركيا وزن باقى ره ما ما جيداس قول مين . دسول الله کی میرسند کے مطالعہ کرنے والے کونظر آئے گا کہ دسول م حفیرت علی ادر خیاب بارون کی فرقدین (آسمان کے دوستایے) سے تفورکشی فرمانے ۔ فرقدین سے دونؤں کی شال ویتے جس طرح فرقدین برابر کے مستنا ہے ہیں اس طرح علیٰ د ہارون ا بیب جیسے ہیں ہسی کو دومسرے پر امتیا زہبیں ماصل ہے۔ بیٹمی منجادان قرائن کے ہے جوعموم منزات کیر دلالست کرنے میں رسبسے بڑی باست تو یہ ہے کہ اگر قرائن سے قطع ننظر کرہی ل جا سے متب بھی الغاظ حدمیث سے عموم ہی متنبا درمور ہے۔ سوا عموم مے مجھے اور ذہن میں آتا ہی نہیں جبیباکہ میں بیان کر حیا ہوں۔

مكتوب منبرءا

ہم آسپ کے اس جملہ کا کہ رسول اللہ اس علی و اور اُن کو فرقدین (دوست ارے ہیں جوالیک ساتھ رہتے ہیں) سے مشعب دریتے متف طلب نہیں سمھے .

س

جواسبب مكتوسب

دمول النّه کی میرسند کا مطالع فرائیے قوائب کو نظرا سے گاکہ پیغیب ہے۔ جناب ارون اورام الموسنون کو آسان کے فرفذین اور دونوں اسمحوں سے شال دیا کرتے تھے۔ دونوں اپنی اپنی امسنت ہیں ایک جیسے تھے یکی کوکس پر

المياز تنبس ماصل تفاء

لوم شتروشتيرومبشر

ملافظ فرمائی کورسول الله منائی کے جگرگوش کے نام إرون کے فرزندوں کے نام جرب رکھے ۔ حس وحین و محن اوراد شاد فرایا کہ :

" بیں نے یہ نام فرزندان ارون مثبتر وشبیتر و معبشر کے نام برد کھے ۔ "

رسول اسد کا معتصد ہے تھاکہ دونوں بارونوں میں مشا بہت گہری ہو مائے ادر وجرمشا بہت تمام مالاست و منازل میں عام ہو کے دہے۔

يوم موأخاســـــ

محن اس وجہ سے درول منے عام کو انہا ہمائی بنایا اور دوسروں پر
ترجیح دی یوش ہے تنی کہ دونؤں کو اپتے اپنے مجائی کے نزد کیس ہو مزالت
ماصل ہے وہ بالکل ایک دہت و و نوں کی مز لوں ہیں مشاہ ہے ہو ہوں ک
ہوجا سے اور یہ تمنا ہی محتی کہ دونؤں کے درمیان کوئی ہی وجہ فرق ندہ ہے ۔
رسول انے اپنے اصحاب ہیں وو مرتبہ بھائی چارہ قائم کیا پہلی مرتبہ ابو بکر وعسہ میمائی ہوئے ہوئے مقال وعبد الرحن بن تو وہ مجائی ہے گئے دوسری مرتبہ ہیں ابو بکر و فارجہ بن زید میں بھائی چارہ ہوا۔ عمو عتبان بن مالک میں بھائی چارہ ہوا۔ لیکن امیر الموسنین و و نوں مرتبہ دسول کے مجائی ہے ہے ہیں بھائی چارہ ہوا۔ لیکن امیر الموسنین و و نوں مرتبہ دسول کے مجائی ہے ہے اسس منا ہیں تو اسنے محکم تھومی میسی طریقیوں سے ابن عباس ابن عمر زید بن ابی اوئی اے اسن بن مالک ۔ حدیقہ بن کیان ، مخدوج بن زید بن ابی اوئی ا ۔ اسن بن مالک ۔ حدیقہ بن کیان ، مخدوج بن زید بن ابی اوئی ا ۔ اسن بن مالک ۔ حدیقہ بن کیان ، مخدوج بن

یر بد، عمر بن خطاسب، برار بن عازسی، علی بن ابی طالب سے وارد ہیں ۔ کرسب کو مکھنا مشکل ہے ۔

بيغير في البرالمومين الصفرايا إ

" أننت أبي في المسدنيا وا الآحنسرة "

. حم دنیا و آخرست بین میرسے بھائی ہو^سے ہ

المجى اوبراكسب يه عديب لما حظه فرما عِك بي :

" قتمد أخسف برقبة عملي وتال: إن هالما اخيي و وصيي وحاليفتي فيكم ناسمعواله واطبعوا ؟

" بیغبرنے علی کے سرم انتھ رکھ کر فرایا: یہ میرا بھائی ہے، میرا ومی ہے . تم میں میرا جانتین ہے ۔ اس ک بان سننا، اس کی اطاعت کرنا !"

ا کیس دن مینیم اصحاب کے پاس تشریب لائے ۔ آنخفزت کے جہرے کا رنگ کھلا ہوا متھا ۔ عبدالرحن بن عون نے اس خوٹی کی دج ہو ہمی اسپ نے فرمایا :

" بسشارة أمستني حسن رّبي في اخي وابن عمى وليني

اے امام ماکم نے مستدرک ہے ۳ صال پر دوصیح طریقوں سے بوشینین مخاری و مسلم سے معبار پرمسیح سے درن کیا ہے۔ علام ذہی نے تلحیص مستدرک ہیں اس کی صحبت کولئے کم کرتے ہوئے مکھا ہے۔ علام ابن حجر سکی سے صواحق محرف معنو ۳ ے پر تریزی سے نعل کیا ہے۔ اہل میرد اخبار ہیں سے جس نے وافزہ وافاست کا ذکر کیا ہے۔ اہل میرد اخبار ہیں سے جس نے وافزہ وافاست کا ذکر کیا ہے۔ ہراک ہے ہراک نے بواد مستن سے ذکر کیا ہے۔

بأن الله ذرَّج علياً من فاطمة "

" میرے میروردگار کی مانب سے میرے مجائی میرے مجا کے بیٹے اور میری عبر بارہ فاطر کے متلق خوشخبری آئی ہے کہ خود خداوند عالم نے علی کا عفد فاطر سے کردیا ہے " حبب جناب میڈہ امیرالمؤنین کے گھراکیں تو آنخصرت نے ام ایمن

ے کہا کہ میرے مجان کو الاؤ -

امّ ایمن نے کہا کہ:علی آپ کے مھائی مھی ہیں اور آپ ان سے اپنی بیٹی مھی بیا ہتے ہیں -

> آب نے فرایا: "ال اے ام ایمن الیا ہی ہے۔" ایمن اور المصنوع کو الا اور شھ

امّ المين ، أمير المومنينَ مَع كو بلا لا ين تلفيه . من من من كنزورة سيمنده من من من المارية وكار كرم من وكيور من كا

نه ما نے کتنی مرتبہ آ تخصر سن اے امیر المومنین اے بھائی ہونے ک طرف اشارہ فرمایا۔ چنا نچرار شاد فرمایا کہ:

> " یہ علی میرے مجان ہیں۔ میرے بچا کے بیٹے ہیں ، میرے واماد ہیں ، میرے بچوں کے باب ہیں یہ

له الد كرخوارزى نے اس ك روايت كى ہے. لما حظ ہو صواعق محرقہ مسلط

اے مسنددک ج ۳ صاف علامہ ذہبی نے مجی ہخیص متدرک بب اس صدمیث کی صحبت کو تنایم کے علامہ ذہبی نے مجی ہخیص متدرک بب اس صدمیث کی ہے۔ ان کے علاق میں میں کے میں میں نقل کیا ہے۔ ان کے علاق میں میں نے جناب میدہ کی مزور ذکر کیا ہے میں میں نے جناب میدہ کی شادی کا تذکرہ کیا ہے مراکیہ نے اس حدیث کو مجی مزور ذکر کیا ہے سے سنے مشیرازی نے کتا ب الانقاب میں اس کی رفاحیت کی ہے ۔ و بن مجار نے ابن عمر سے اس کی دفاجیت کی ہے اور علام منتق ہندی نے کسنز العال نیز منتخب کسنز العال برما شدیدسے ندا حد مبلد ہ صاب پر نقل کیا ہے۔ برما مشید سے مدا حد مبلد ہ صاب پر نقل کیا ہے۔

ايك مرتبه اميرالومنين علباسسلام سے دوران منتكو فرما يا:

" أُسُت أخي و صاحبي "

"تم میرے تجانی ہو میرے سابقی ہوا

دۇسسىدى مرتب دوران گفتگو فرمايا:

• اُسنت أخي وصاحبي ورنسيتي في العبهنة ٤

، تم میرے بھائی ہومیرے ساتھی ہو اور حنیت یں میرے رفین ہوا

ایک معاملہ میں جناب جعفر و زید اورا میرالومنین کے درمیان اختالات بریوا ہوا تو اب نے امیرالمومنین سے منطاب کرمے فرمایا :

• واكمسًا أثنت بيا عسلي نسأسني وأثبوك ولمسدى و

مِســنی والیخ ـــــ

" لیکن تم اے علی میرے مجائی ہو، میرے بچوں کے باپ مورمی سے میں اور میری سے "

ہو، مجھ سے ہو اور مجھ تک ہو "

اكيب ون أب في اميرالمرمنين است فرما ياكم:

" تم میرے مجانی ہو، میرے وزیر ہو، تم ای میرے

اے ابن عبدالبرنے استبعاب بیں لہلہ مالاست امیر للومین مبسلہ اسناد این عباس اس متربت کی دواہت کی ہے۔

تع تعلیب نے اس معین کی روابت کی ہے کمن العال ملدی مستن بمر مبر ۱۱۰۵ بھی حدیث ہے۔

سکے امام ماکم نے متددک جلدس مسکلا پریہ مدریث نقل کی جوا ام سلم کی شرافعاصحت ہِمجے ہے

دین اوا کردگے میرے کیے ہوئے وعدوں کو بورا کروگے، مجھے فارنے الذم کروگے ؟

جب انخصرت کی وفات کا وقت قریب آیا تو آپ نے لوگوں سے کہا کہ میرے بھائی کو بلائے۔

وكون في المرالمونين كوبلايا أب في المرالمومين المت فرايا:

ميرے قريب أؤيا

امیرالمومنین قریب ہوئے۔ دسول کا سرزا نوپرر کھے دہے اور دسول آپ سے گفتگہ کرتے دہے یہاں تک کہ آنخفزت کی روح نے جم سے مغارفتت کی اور آنخفرت کا بچھ لعامب وہن بھی امیرا لمومنین پرگا۔ آنخفرت نے فرما باکر حبنت کے دروازے پر نکھا ہوا ہے :

« لآانه إلاا تله معمدرسول الله على أخو

رسولالله يا

، کوئی معبور نہیں سوا اللہ کے محد خلاکے رسول ہیں اور علی رسول کے بھائی ہیں ایکھ

نه طبران نے مجوکیبریں ابن عمرسے اسس حدمیث کی روامیت کی ہے اورعلامتی ہندی نے کنزائعال نیزننخب کنزائعال میں اسے تعلی کیاہیے لاضع ہوما شیمندا میں صبی حلام ہے صالا سے طبقا مند ابن مسعد ج م متم ثانی اورکسنزالعال مبلدم ص<u>ھھ</u> سے طبرانی نے اس مدمیث کو اوسیط میں ضطیب شے کتاب المتفتی وا لمفتری میں **کھھا**ہے

ا درعلار منتی شدی نے منزالعال و منتخب کنزالعال بی نقل کیا ہے طاحظ موماً بیر ادرعد دند و درووں

مندامین منبل ع ۵ مص

شب بجرت حب امبرالمومنین استرسول پرارام فرمارید تعفداوند عالم نے جبرال دمیکائیل پر وی نازل فرائ کہ میں نے تحقین بھائی بھائی بنا یا ہے اور تم میں سے ایک کی عرد در سے سے زیادہ طولان کی ہے تم میں سے کون اپنی زندگی دومرے کو دینے پراکادہ ہے ، دونوں نے عذر کیا، زندگی دینا گوارا نرکبا ۔ تر خداوند عالم نے وی فر مائی کہ تم دونوں علی جیسے کیوں نہیں ہو مانے ، و سجو ہیں نے علی و محرا کو ایک دومرے کا بھائی بن یا ادر علی استر دسول پر سوکرا نی مان فداکر دستے ہیں اور اپنی زندگی ہلاکت میں ڈال کررسول کی ذندگی کی حفاظست کر دہے ہیں ۔ تم دونوں میں ڈال کررسول کی ذندگی کی حفاظست کر دہے ہیں ۔ تم دونوں میں ڈال کررسول کی ذندگی کی حفاظست کر دہے ہیں ۔ تم دونوں

دونوں مُلک اگرے جبریل سرائے ، میکائیل پائیتی کھرسے ہوئے جبریل کھنے جاتے کہ :

> · مبادکس ہو ، مبادکس ہو ، کون اکب کا مثیل ہوسے گا۔ اے علیّ ابن ا، بی طالب ۔ امتٰداکپ کے سبب ملائکہ پرفخومہا ہات محرد ہے۔ "

اورای موقع پر فداوند عالم نے یہ آئیت نازل فرمائ کہ: " لوگوں میں مجھ ایسے مجی نبدے ہیں جوابینے نعنس کو راہ خدا میں بیج دالتے ہیں ؟

ئے : صعامیسنن نے اپنے اپنے سانبدیں کسس صربٹ کو درن کیا ہے نیز امام مخ الدین رازی خوکسس آیت کی تعنیر کے ذیامیں ذکر کہا ہے طاصط ہو تغییر کمیر ن ۲ مسخہ ۹ کا تغییر سورہ بغزہ نیز لماضط ہوا مدانغا بہ حادم صف

اميرالمومنين فرايا كرتے:

" بیں خدا کا بسندہ ہوں ، بیں دسول کا مصائی ہوں ۔ بیں صدیق اکبر ہوں ۔ میرے علاوہ ایسا کہتے والا بھوٹا ہے ۔"

امیرالمومنین اسے فرایا:

" فتم نجدا میں رسول کا نجائی ہوں ، ان کا ولی ہوں ، فرزندعم ہوں ، ان کے علوم کا وارست ہوں ،مجھ زبادہ کون حقدار ہے اس کاشے"

شوری وائے دن آب نے عثان وعبدالرحن بن عومت اسعداور زمبرے منعاب کر کے فرایا تھاکہ :

" بی تحقیق منداکی فتم دے کر بوجیتنا ہوں کیا تم بیں میرے علاو کول ایسا ہے جسے رسول مے سے اپنا مجائی بنا یا ہواس دن جس دن مسلانوں میں مجائی جارہ کمیا سفنا !" نوگوں نے کہا: نہیں ، آب کے علاوہ کوئی نہیں ہے۔

ہے انام آنیائی سے خصائص علوبیں انام حاکم نے مستندرکہ جلدہ م<u>اللکے شر</u>دع میں ابن ابی شیب وابن عاصم نے السنۃ میں درج کیا ہیں اور علامہ ختتی مبندی نے کھنزالوال اپنتیب کمنزالوال میں نقل کیا ہے ملاطع و نتی ہے کمنزالوال برما شیمنداحرب منبل علیہ یہ صنتا

تے ملاحظ فرائیے متدرک بع ۳ صفی علامرڈ ہی شے بھی ہیں متدرک میں اس حدیث کی محت کا اعتران کرتے ہوئے لکھا ہے ۔

سے علامداین عبرالبرے لبندا مالات امبرالمومنین استبعاب میں اس حدیبیث کی دوا بہت کی ہے ادر میں اکثر علمائے اعلام سے لکھا ہے ۔ جنگب بررین حبب ایرالومنین ولیدے مقابلے کو نیکے تواسس صلب کا دیر تری ا

نے پوجھا: "کون ہوتم ؟ "

ابرا لمونین اے فرایا:

میں خدا کا بندہ ہوں ، اس کے رسول کا عماق ہو کے ا

امیرالومنین مین نے ابک ون عمر بن حنطاب سے ان کے زمانہ خلافت مجھاکہ:

> ۔ یہ فرائیے اگر بی اسرائیل کی کوئی قوم آب کے پاس آسے اور ان بیں کا کوئی شخص آپ سے کہے کہ میں موسیٰ کے چھا کا فرزند مول تو کیا اسے اسے اس کے ساتھیوں پر کچھ ترجیح دیں گے ؟"

انھوں نے کہا:" ہاں " امیرالوشین نے صندمایا:

" توسنیے ہیں خلاکی تنم! رسول کا مجھائی ہوں ۔ان کے چیاکا بیٹا ہوں !

معزت عرف رواکا ندھے سے انارکر بچھائی اور بوسے: و خداکی قیم! گہاس مگر کے علاوہ اور کہیں نہیں میھے سکتے حب تک ہم وگ جدانہ ہوں "

امیرالمونین اکسس روا پرتشرهیت فرما موسے اور اس وقت تک که لوگ متعرق موسے عرمائے بیٹھے دسہے ۔ یہ ومول الترم کے مجانی اور فرزند عم ہونے

عے دارتنانی نے اس کی روایت کی ہے ماحظ ہوصواعن محرفر باب ١١ مك!

لے ابن معدنے اپن کتا ب طبقا مت عبٰد ۲ قم اوّل صفہ لبلہ ہ تزکرہ غزوہ برر ذکر کیا ہے ۔

كى تعظيم تمتى يسرحيكا ما تقار

سترابواب

میرا قلم کبال سے کہاں بہکس گیا۔ ذکراس کا تفا کررمول نے تمام ممارکے دروازے بندکرا دیےادرحفزست علی کا دروازہ مسجدکی طرفت کھلامچوڑ دیا ممار کے دروازے اس لیے بندکرا دیبے کے مسجد کے اندر بحاکت جنب مانا جائزیہیں ۔ لیکن جس طرح ہا رون کے بیے بحادست جنب پہوتے ہوئے بھی مبیدے ہوکر گزر نامیائر تھا اس طرح حصرت علی کے بیے بھی رمول سے جائز دمیاح فزار دیا۔ لہٰذا یہ بھی ثبوست ہے کہ دونوں حضراست بافكل ايك جيبے تنے اور سرحينيت اور مرحببت سے ايک دومرے کے نظیر تھے پ*وری پوری مشاہرست تم*نی دو نؤں بزرگواروں ہیں ۔ ابن عباس فراستے <u>ہیں</u> : « دمول الٹرکمنے مسجد کی طرف کھلتے ہوئے سب کے وروازے بندكرا دبيه حرمت حفزمت علىكا دروازه كمملا دكها يحفزت عل المالست جنب میں مجی مسی سے مہوکر گزرنے ۔ کیونک وری ایک را و تحقی کوئی دوسرا راسته تفا می نهین یه عربن خطاب سے ایک مدمبث میج مروی ہے جومسلم دمخاری کے مىيادىرىمى مىم بىھ بىھ وە فراتے يى : " رسول انے علی کویتن چیزس ایسی مرحست فرایش کداگر ان

ئے پربہت طولا نی مدسیٹ ہے جس میں امپرالمومنین کی کوئٹس خصوصیاست ندکور جیں بیری مدسیٹ پرمنی ۱۹۳۰ تا صغر ۱۹۹ بیان کی جانچکی ہے۔

یں سے ایک بھی مجھے لی ہوتی توسٹرے اونٹوں کی تطارسے بڑھ کر ہوتی ۔ ایک یہ کوئی کی زومہ فاطر الیبی دختر رسول م ہوسٹر دوسرے مسجد میں رسول م کے ساتھ ان کی سکونٹ اور رسول میں کے لیے جواموز سجد میں مبائز نضے ان سمے لیے بھی سباح ہوتا۔ تیسرے جنگب جنبر میں علم ملتائے۔

ایک دن سعد بن مالک نے ایک عدیث قیمی بیان کی جس بی امیرالموئین کی بعض خصوصیات کا ذکر تقااسی بیں فرا نے بیں کہ : " دسول النہ شم نے اپنی مسجد سے جہاں اورسب کو بٹایا و باں اپنے چیاعباس کو بھی ۔ اس پر عباس نے کہا ، کہ نہیں تو آ ہب بٹا دہے ہیں اور عل کو دہنے دہنے ہیں ؟ دسول مے فرایا: کریں نے اپنی مون سے نہ سب کو بٹا یا نہا کو دکھا۔ بلکہ خدانے ایساکیا ہے ہے ۔ ،

زيد من ارتم بكته بي :

" جنداصحاب کے دروازے مسجد کی طرف کھلتے تھے ۔ رسول ا

نے حکم دیا کہ تم سب اپنے اپنے دروازے بندگر دو مرف
علی کا دروازہ کھلا رہے۔ لوگوں نے اس پر جہ میگو سُیاں
سٹروع کیں تورسول کے خطب ارسٹ دفرہ یا :
بعد حمد وثنا ہے البی کے ارسٹ دموا کہ یہ در وازے بندگرا
دوں اور علی کا دروازہ کھلا رہنے دوں ۔ اس پر کچپلوگوں
کواعۃ امن ہے مالانکہ فتم مجدا میں نے اپنی طون سے لوگوں
کے دروازے بند بنہیں کیے اور ندا بنی خوامسٹ سے علی
کا دروازہ کھ کلا دکھا ۔ نجے عکم دیا گیب میں نے مکم
کی بابندی کی ہے '
طبران نے مجم کمیریں ابن عباسس سے دوایت کی ہے وہ کہتے ہیں کہ :
طبران نے مجم کمیریں ابن عباسس سے دوایت کی ہے وہ کہتے ہیں کہ :
سرول النہ اس دن کھڑے ہوئے اور ارشاد فرا یا کہیں ہے ا

ابی طوت سے تم نوگوں کو سسجد سے نہیں ہٹایا۔ ندا ہے جی سے
علی کو باتی رکھا ، بلکہ خود خداو ند عالم نے ایسا کیا ہے میں تو
بندہ ہوں اور مکم کا تا بع ، جو مجھے حکم دیا گیا وہ میں نے کیا۔
میں تو دی ہی کی پابندی کرنا ہوں تھے "

دسول النزم نے ارمٹ و فرایا کہ" اے علی ! سوامیرے اورخا ہے کس اور کے لیے مائز بہیں کرمالسٹ جنابت ہیں مجدمیں رہتے ہے "

ئے مسنداح پربن صبی ہم صنی ۳۲۹ و کنزائعاً ل برماسٹ پرمندجلہ ہصنی ۲۹ سے نتخب کنزانوال برماسٹ پرمندجلہ ہ صنی ۹۹ سے نزندی تھاس مدیث کواچنے جیح بس دواریت کیا اوران سے متنی مبدی نے د اِلْ الْکُلِمِسْخ پر) سعدبن ابی وقاص ، برار بن عارب ، ابن عباس ، ابن عمر ، مذیغه بن اسید مغر ایست مراکب سے مردی ہے کہ :

السید بن اسید معاری النین سے ہراکیہ سے مردی ہے کہ :

السید بن النین مسجد میں اسے ادرا رشاد فروایا : کہ خدا نے مجھ کے ادرا رشاد فروایا : کہ خدا نے مجھ کے ادرا رشاد فروی نازل فروائی ہے کہ میں طاہر مسجد بنیا دُن جس میں مرن میں ادر میرے بھائی علی رہیں ہے ۔

اس مکوسیس گغانشش بی بنین که بم کبرست ان هر بمی دنا بت نفوم کودرج کری جواس باب بین ابن حباس ، ابوسعید خدری ، زبربن ارتم ا تبید خشم سے ایک محابی بین برم ، اسمار بست عبیس ، اسم سلم ، حذیف بن آسید ، سعد بن ابی وفاص ، برار بن عاز ب ، علی بن ابی طالب ، عم ، عبدالشر بن عمر ، ابو فر ، ابوالطین ، بریده اسلی ابی رافع غلام رول استر ، اور جا بربن حیوال را بین کبار محاب میں سے بربر بردگ سے مردی بین ۔

رمول الٹرکی مشہور دعاؤں میں یہ ہے آپ نے دعافر مائی کھٹی : * میرے معبود! میرے بھائی موسیٰ نے تجہ سے سوال کیا بھٹا

(بنیر ماشیع فرگزشت) کسترالعال ، نتخب کسترالعال برمارشیدسند ملد ۵ صفی ۲۹ برنق کیا سب- براز نداس مدیث کوسعدست روایت کیاسیت ۱ عظر بوصواعق محرقر (ب حضل ۲ صفوح ۵

اے ان سب سے رواست کرے محرفطیب نیتر شامنی معروب بابن مغاذل نے اپن کٹاب منا تب بیں مخلعت واسطوں سے مکھا ہے اور علام بلی سے پنایس المودۃ با ب میرے سینہ کو کتادہ کردے اور میرے معالمہ کو سہل بنا ہے

زبان کی گرہ کھول دے کہ لوگ میری بات مجھ سکیں اور

میرے ابل سے کارون میرے بھائی کو میرا وزیر بنا ۔ان کے

ذریعہ میری کم کو مضبوط کرا در انتھیں میرا مثر کیب کار بنا،

تو تو نے اے معبود ! ان بر وحی نازل فرائی کہ عنقریب

میں متھارے ہمائی کارون کے دریعہ متھارے بازوگوں کو

توی کر دوں گا اور تم دولوں کے بیے قلبہ قرار دوں گا

اے معبود! بیں تیرا بندہ اور تیرا رسول محد ہوں میرے

مینہ کو کشادہ کر میرے سمالمہ کو ہمان بنا اور میرے ابل

سینہ کو کشادہ کر میرے ممائی کو میرا وزیر قرار دیے ہے

سیم میرے بھائی کو میرا وزیر قرار دیے ہے

اسی میرے مدیدے برار نے دوابت کی ہے۔

"رسول الله الله على كا باتد البنة باتد مين مع كرارسا د فرايا كردون كى مدم فرايا كردون كى مدم معيست بين مسجد كو باك بنائين اور مين من ابنى برورد كار سعيست بين سوال كيا بي كرد منهارى مدوا ور بخارى معيست بين مسجد كو باكيره كرون بهرا بي النوب كو كملا مجيماً كم مسجد كو باكيره كرون بهرا بي النون خان الله وانا الب

ے امام ابواسسمان ٹنلی نے مبسلہ تغییر آیہ استعما و لیب سکھ جناب ابوڈرغفاری سے اپنی تغییر میبسد ہیں دوامیت کی ہے اور صاحب بنا بیع المودة نے مسنداحم سے نقل کیاہے۔

راحبعود " بِرُها اورکہا سدعاً دطاعدة ، بچرع کوحکم دیا بہر عبر کو حکم دیا بہر عبر استان کو ایسا ہی حکم فر ایا ۔ بھرار شاد فرایا ؛ کہ میں سفا ہے استان کی استان کو ایسا ہے اور علی کا دروازہ کھلا نہیں مجبوڑا بلکہ فدانے ایسا کیا ہے ۔ محرست علی کا دروازہ کھلا نہیں مجبوڑا بلکہ فدانے ایسا کیا ہے ۔ کا دروازہ کھلا نہیں مجبوڑا بلکہ فدانے ایسا کیا ہے ۔ بیرسے بورسے مثار ہونے کے بیے فالبا اتنی مدشیں جو ذکر کی گئیں کا نی ہوں گی ۔

ش

مكتؤب ضبروا

خدا آب کا بھلاکرے آب کی دلیلیں گئی واضح اور روشن میں طوا کرم ہوگا بنتینصوص مجی تحرمیست مائیں .

جواسب مكتوب

ابوداؤر طیالسی کی رواست کو میجے (جبیبا که استیعاب میں لبسلسلہ مالاست امیرالمونین مٰکورسیے) ابن عباس سے روابت ہے وہ فراتے ہیں کو « رسول نے امیرالمومنین کے فرایا : کہ تم میرے میدم تومن کے ولی ہوائی

اے او داؤد و دیگر اہل سنت نے اس مدمیث کو ابوعوان وصاح بن عبدالتد ایک را آق انگے مغیر

ای جین ایس میم مدیث عران بن حمین سے مروی ہے وہ کہتے ہیں کہ:

" رسول اللہ انے ایک بشکر دواز کیا اورا پر المونین کو افسر مقرد

کیا مال نش جو ہاتھ آیا اس سے ایک کنیز امرالمونین نے اپنے

لیے علیٰدہ کر بی ۔ لوگوں کو بر باست کھئی اور چار سخفوں نے باہم

طے کیا کہ رسول اللہ کی فدست میں شکا بہت کی جائے ۔ حبیب

رسول کی فدمست میں وہ پہنچ تو ایک سخفی کھڑا ہوا اور کہا: یا

دسول اللہ ! آب علی کو نہیں دیکھتے ہم اکفوں نے ایسا ایسا کیا

دسول اللہ ! آب علی کو نہیں دیکھتے ہم اکفوں نے ایسا ایسا کیا

دسول اللہ ! آب علی کو نہیں دیکھتے ہم اکفوں نے ایسا ایسا کیا

دسول اللہ ! آب علی کو نہیں دیکھتے ہم اکفوں نے ایسا ایسا کیا

دسول اللہ ! آب علی کو نہیں دیکھتے ہم اکفوں نے ایسا ایسا کیا

دسول اللہ ! آب من عمر ایسا تب بھی دسول اس نے بھی ایسا دوسا کھیوں کی طرع شکا پہتے

تیسرا کھڑا ہما اس نے بھی اپنے دوسا کھیوں کی طرع شکا پیت

(اہتیہ ماشیر مؤرد شر) سے انفوں نے ابو بلج مجی بن سیم فاری سے انفوں نے عرب میمون اودی سے
انفول نے ابن عباس سے مرفوعاً دوایت کھیا ہے اسس سلا ہسسناو کے کل دجال جست ہیں
مسلم اور بخاری و وؤں نے اپنے میرج ہیں ان دجال میں سے جرا کہ کو جست سجھا ہے
اوران سے مروی حدثیں ورج کہ ہیں سوا میری بن سیم کے کہ ان کی روامیت ان دوؤں
نے نہیں مکمی لیکن جرح وتعدیل کے مجتہدین نے کھی بن سیم کی وثافت کی نفریج کردی
ہوئے میران الاعتمال میں ابن سیبن نسل کی وارتعلی ۔ محدین سعد الی حاتم وخیو
ہوئے میران الاعتمال میں ابن سیبن نسل کی وارتعلی ۔ محدین سعد الی حاتم وخیو
کا میری بن سیم کو ثعر محبن نقل کھیا ہے۔

انظے ساتھیوں کی طرح اس نے بھی شکا بہت کی تو اس و تت رسول انٹران سب کی طرنب متوج ہوئے اور چیرے سے آٹا رِغضب نمایاں تھے آنخفز سندج نے فرایا: تم علی کے متعلق جا ہتے کیا ہو؟ علی مجھ سے ہے اور ہیں عل سے ہوں اور وہ میرے بعد ہر مومن کے ولی ہیں ہے۔

ایسی ہی ایکسٹ دوامیت ابوہ بربرہ سے مردی ہے جس کی اصل عبادست مندا حمدین عنیل ج ۵ صفحہ ۲ ۳۵ برموجود سہے ۔

م پربدہ کہتے ہیں کہ دمول کے دو دسائے ہین کی جانب روانہ کیے ایک پرحفزمن علی کو اصر نبایا دومرے پرخالدین ولید کواور ادر شاہ تو دولوں سکے کواور ادر میں ہوں گئے۔ ادر جب تم دونوں مل جاؤ تو دولوں سکے اسر علی ہی ہوں گئے۔ ادر جب تک الگ رمیو توہرا کیپ ایٹ

اپنے دستہ کا افسردہے گا۔ ہریدہ کہتے ہیں کہ اہل بین کے بی زبدہ اپنے دستہ کا افسردہے گا۔ ہریدہ کہتے ہیں کہ اہل بین کے بی زبدہ فتح ہوئی۔ ہم نے جنگ آزما کوں کو موست کے گھاسٹ آثارا اور ان کی عور توں بچوں کو قید کر لیا۔ حفزست علی نے انھیں اور ان کی عور توں بچوں کو قید کر لیا۔ حفزست علی نے انھیں کہتے ہیں: کہ فالد نے ایک نامر میرے انھوں رسول کی کہتے ہیں: کہ فالد نے ایک نامر میرے انھوں رسول کی خدمت میں ہجے اجس میں وافتہ کی رسول کو نمبردی تی بیں خفرست ہیں ہہنے کر وہ نامر بیشیں کیا۔ خط جب براما گیا تو خفرست ہیں ہہنے کر وہ نامر بیشیں کیا۔ خط جب براما گیا تو خفرست ہیں ہمنے کر وہ نامر بیشیں کیا۔ خط جب براما گیا تو خفرت کی مارہ بھی اور مجھے اس کی اطاعت کا مام دیا ایک سخف کے ہمراہ بھی ااور مجھے اس کی اطاعت کا مام دیا

ہیں نے اس کی مسندما نبرداری کی رسول سے فرایا: خبردار علی کے سندق کچے کہنا سننا تہبیں ۔علی مجھ سے ہیں اور ہیں علی سے ہوں اور علی میرے تبدتم لوگوں کے ولی ہیں ۔"

ك يه تووه روايت ب جهامام المدعم سند جلد ٥ ك صفيه ٥ ٣ پربطرني عبدالسُّرين بریده کلما ہے۔ دومری مگیمسند نے ۵ صفی ۱۳۲ پرسعید بن جبیرے روایت کی ہے تھوں نے ابن عباس سے اضوں نے ابن بریدہ سے بریدہ کھنے میں کہ میں معنوت ٹل کے ساتھ جنگ یں میں مترکیب تھا۔ معزمت عل ورشن سے چیش آئے تھے میں حب وابس پٹیا تورمول کی خدمت بین کسس کا ذکر کمیا اورحفرمت کی شفتعست کی . بیں سے دبیکھا کہ دیول کا چہرہ متغیر برگیا۔ درول کے بوعیا واے برید کیا بین تمام مومین کی جانوں کا مالک نہیں ؟ برید ہ نے کہا ۔ یے شک یا درول انتہ م - آپ نے فربایا کھی کا بیں موالا ہوں عل مجی اس کے موقا بین . الم ما کم شخرسنندرک ج م مغر ۱۰ پر اسس حدیث کو لکھا ہے . ان مح علاوہ اور کی مبہت سے محدثین سے اس مدمیث کی روابیت کی ہے ۔ برحشیں جو درج کی گیئن بارس معقود يربين وليل بيركودكرول كاجله المست اولى ب المؤمنسين حسن ا خنسسهم كومقدم فرا، قريد خالب ب كداس مديث بين مونى سے مراد أو في ب جيا ك بطا برعبارت سے معلیم برتا ہے اى جبى ايک مديث اور ہے جے بہت سے مذہب نے بیان کیا ہے بنمایان کے ایام امر نے مسئدہ r صفر ۱۸ پر عروبن شاس اسلی سەمسى مەيىث ك روابيت كى جے ۔ بەحەيىيى مىن مثر كيب بونىدوالوں بىن سے ستھے ۔ عروبن شاس كبتے ميں كدميں معزست على محرساتھ مين گيا۔سفريس معزمت على درستن سے پیش آسے بی ول یں مبہت برہم ہوا مب وسول کی خدمت میں واپس آ با تومیں سے مسجدیں ان کی شکا بہت کی ۔ دمول کو بھی اسس کی خبر ہوئی (؛ آن اٹھے صغیریر)

اورامام نسائی نے حفائص علوم میں برعبارسند لکھی ہے: "اے بریدہ! مجھے علی کا وکٹن نبانے کی کوسٹسش ذکر وکیؤکھ علی مجھ سے ہیں اور ہیں علی سے ہوں اور وہ میرے بعدتم لوگوں کے ولی ہیں "

اورابن مسدر کی عبارت بہے:

" بریده کہتے ہیں کہ ونعثا رسول کا چہرہ سرخ ہوگیا۔ انحفر ا ف فرایا : کہ بیں جس کا ولی ہوں علی اس کے ولی ہیں۔ یسسن کر میرے ول میں جو کچھ برسے خیالات امیرالمومنین کی طوف سے قائم ہو گئے تھے دور ہو گئے اور میں نے طے کر دیا کہ آن سے مجر برائ کے ساتھ یاد نرکروں گاھی

طران نے اس مدمیت کو درا تعقیل سے درج کیا ہے ان کی دوایت ہیں ہے: " بریدہ حب مین سے واپس آئے ادر سجد ہیں بہنچ تو رسول کے
جم اعست ہوگوں کی موجود کھی لوگ

ملے جیسا کونلام یستی مبندی نے کنزالمال ن ۱ مغد ۱۹۸ پرنقل کیا ہے۔ نیز ختنب کنزالعال یس می نقل کیا۔

انفیں دیجے کران کی طرصت براستھے۔سلام و مزائ میری کرنے ادرمین کے مالاست ور اَ فنت کرنے لگے کر کیا خبرے کے اُسے بریدہ نے کہا: اچھی ہی خبرے عدانے مسلانوں کوفتے کبتی، وگوں نے اومیا کہ آنا کیے ہوا، یں ے کہا کہ مال مس علی نے ایک کنیز ہے لی ہے ۔ میں اسی کی دمول کو فر کرنے آبا*ی^{ں ہو}گوں نے ک*یا سسنا کو سناؤ دسول کو تاکہ علی دمول^{ما} کی نظروں سے گریں۔ استحفرت وروازے کے معتب سے لوگوں کی پرگفتگوسٹن رہے تنے . آپ غیظ وغضب کی مالت ہیں برآمد ہوے اور ارشاد فرایا: کہ نوگوں کو کیا ہو گیا ہے کہ علی کی بڑائی كرتے بي جس نے علی كوغفنب اك كياس نے مجھے غفیناك كيا جومليس مبا موا وه مجسع مبابوا - ملي مجسعي ادريس عل سے بول میری طینت سے علی کی فلفنت ہو ای اور میں جناب ابرابيم كطينست سے ملت موا اور ميں جناب ابراميم سے بہتر ہوگ !

اے چو کرمعزست سرور کائناست تعافرایا کھا کہ علی میری طینت سے تملی تی ہوئے اور آ کھفرستہ اسے چو کرمعزست سے بھی طور پر علی سے افغال جی گا اس آ کھفرستہ کے اس جلا سے کہ بی ابراہم کی طینت سے طاق ہوا یہ وہم بیدا ہو تا کھا کہ ابرا بیم معفرسند سرور کا کناسنہ سے افغال ہیں اور بی تعلی طور پر منابعہ منابعہ داخت ہے۔ آ کھفرست تو تمام انبیار ومرسلین کے ماتم اور مسب سے افغال واحرت بی اسس ویم کو دور کرنے کے میلے یہ مسنسر مایا کہ بین ابراہم میں انفال ہوں۔

* ا بربدہ کیا تحقیں معلوم نہیں کہ علی کا حصفہ اس کہتر سے بہت زیادہ ہے جوانھوں نے لی ہے ۔ اور میرے بعد وی تم لوگوں کے ولی ہلے "

یہ مدیمیہ الیی عظیم الشان مدیث ہے جس کے منعلق شک کیا ہی نہیں ماسکتا بریدہ سے بکٹرت طن سے مودی ہے اور جین طاق معتبر و مستندیں۔
اسی میسی ایک اور عظیم السشان مدیث ماکم نے ابن عباس سے دوا اسے بیس نے دس میں امیرالمومین اسے دس مختص فضائل ذکر کیے ہیں ،
ابن عباسس کہتے ہیں کہ دسول منے علی سے فرایا ۔ تم میرے بعد ہرمومن کے ولی ہوں ،

شاین محبسر نے اس مدیث کوطران سے صواص محرفہ باب الا بیں نعتل کیا ہے دیان حبیاں جین بہیں جین بہیں جین بہیں جین بہیں جین بہیں اس سے بہت اس سے اس سے اس سے اس سے اس کے نفش نے کا تام دک علیا اوران کے نفش نے کوارا نہ کیا کہ جسسہ پورا نکھیں انفوں نے الی احت والحسب بیث نکھ کر عبارست ختم کردی ہے ۔ ابن محبسر عینے متعصب استخاص سے اسس ہتم کی بایش تنجیب فیرنہیں ۔ خدا کا شاک ہے کہ اسس نے ہم وگوں کو عصبیت کے بایش تنجیب فیرنہیں ۔ خدا کا شاک ہے کہ اسس نے ہم وگوں کو عصبیت سے محفوظ رکھا ۔

ی دام ما کم سے مستندرک تا ۳ میکا کے مٹروع میں امسین حدیث کو لکھاہے ۔ نیز علام فہمی نے بھی تلخیص مشدرک میں امسین حدیث کی صحبت کا اعز ان کرتے ہوئے در ب کیا ہے ۔ امام نسانی نے فعائش علوب صلا پراکھا ہے اور امام (حجرے مدید بچ ۱ صاحب پر تحریکیا ہے یم پودی حدیث مشاوات تا صرافیا پردد ن کرچکے ہیں ۔ ای طرح ایک اور مدیث ہے جس میں دمول اللہ کا یہ قول مذکورہے کہ:
" اے ملی میں نے مخفارے بارے میں فعا وندعالم سے بانچ چیزو
کا سوال کیا ۔ چار تو فعا نے مرحمت فرامین ا ورایک نہیں عطا
فرائی ۔ جو باتیں فعا نے مرحمت فرامین ان میں سے ایک یہ
ہے کہ تم میرے بعد مومنین کے ولی ہوں "

ای طرح وہ مدیث ہے جوابن سکن سے دمیب بن تمزہ نے روایت کی ہے و الاحظ ہو اصابہ تذکرہ وسمیب) دمیب کھتے ہیں :

" یں نے ابک مزنبہ حفزت عل کے ساتھ سفر کبا یہ فرکے ایام میں حفزت عل کی طرف سے درشتی وسختی دیجی تو میں نے دل میں تہید کیا کہ حب مدبنہ بلوں گا تورسول سے اس کی شکا بیٹ کر وں گا ۔ جب والیں ہوا تو ہیں نے رسول سے علی کی شکا بیٹ کی درسول سنے فرایا ؛ الیس ایس علی کی متعلق کمیں نہ کہنا کیونکہ وہی میرے بعدتم لوگوں ایس علی ہیں "

طبران نے بھی مجم کبیریں ومہب سے یہ دوایسنٹ نفل کی ہے گراسس بیں یہ عبارسنٹ ہے کہ :

" یہ باست علی کے بیے نہ کہو وہ میرے بعد تمام نوگوں سے ا زیادہ تم پرامنتیار رکھتے ہیں۔

> ئے یہ حدمیث نمزانعال حلہ 4 منحہ ۴۹ پرموجود ہے نیرمدمیت ۱۰۲۸ بلع کسزالعال ج 4 منخہ ۵۵ حدبیث ۲۵۸۹

ابن ابی عامم نے امیرالمومنین سے مرفوعاً روایت کی ہے:

" رسول مے ارساد فرایا کہ کیا یں لوگوں پر ان سے زیا دہ
اختیار واقترار منہ رکھتا؟ لوگوں نے کہا ہے شک ۔
اکھوزت نے ارشاد فرایا کہ: یں جس جس کا ولی ہوں ،
علی اسس کے ولی بیں ہے
امیرالمومنین کی ولایت کے متعلق انکہ طاہر س یا سے ستواز صحیحے
مدشیں منتول ہیں ۔ اتنا جو مکھا گیا ہے یہ امید ہے کا نی جویس سے بڑی
بات تو یہ ہے کہ ایت انساما ولیسے کے اللہ مجی ہارے تول کی تاسید

ش

مكتُوبٌ مُعابرها

لفظ ولی مدرگار و درست ، محب ، داما د ، پیرو ، حلیفت ، مسایہ اور ہراس شخص پر بولا ما آ ہے جو کسی کے معاملات کا نگراں و مخارکل موریہ اننے معنوں میں مشترک ہے۔ اہٰذا آ ہید نے مبتنی عدشیں ذکر فرائی میں غامباً ان تمام مدیثوں میں مرادیہ ہے کہ علی میرے بعد متفا دے مددگاری یا دوست میں یا محب میں ۔

النداان احاديث ساوراس لفظ ولى ساتب كفلافت كمان ابت بوتى بى

جواسب مكنوسب

آب نے توریفرمایا کہ جوکسی کے معالمات کا نگراں و مختار کل ہواسے بھی ولی کہتے ہیں توان تمام احادیث ہیں لفظ ولی کے سنے ہیں منی مراد ہیں اور لفظ ولی کے سننے سے بہی منی متبادر الی الذہن بھی ہونے ہیں جبیبا ہم لوگوں کے اس قول میں "ولی النقاعد اثبوہ وجدہ لا نبیبه ، مشعر وحدی احد ها مشعم الحداکم المشرعی "

" شخف قامر کا ولی اس کا باب ہے مچراس کا دادا اور ان دونوں کے نہ ہونے پر ان کا وصی اورسسب کی غیر موجودگی میں ماکم سرعی "

توبیاں نفظ ولی سے مرادیہی ہے کہ شخص قامر کے بہی ہوگ محران و مختار ہیں اس محمعالمات میں انہی کو نفرون کا اختیار ہے ۔

مذکورہ بالا اصادبیت میں ایسے واضح قرائن مجی موجود ہیں جن سے معلوم ہزنا ہے کہ میغیر نے لفظ ولی بول کر نگران و مقاربی مراد لباہے میں کمیں کے میار کا فرانا کہ :

میسا کے صاحبان عقل وادراک سے مختی تہیں کیونکہ رسول کا فرانا کہ :

" یہ علی میرے بعد تم ہوگوں کے ولی ہیں " بیّن ٹبوسن ہے کہ بہاں لفظ ولی سے مقصود بس بیہ معنی ہیں کوئی دورا منہیں کیونکہ' دھسو ولہ کے مبعدی ' بہی علی میرے بعد مخفارے ولی ہیں اس کا مطلب تو بہی ہوا کہ میرے بعد علی سے سوا مخفارا اور کوئی ولی مہیں - لہٰذا تعلی طور بر ال اماد میث بیں ولی سے بہی معنیٰ شیمت بڑیں گے کسی اور معنی کی گنجا کشس ہی منہیں نکل سکتی ۔اس لیے کہ نفرت ، محبست ، دوستی وینے ویہ کی فرد خاص میں توسخھ منہیں ، متسام مومنین ومومنا سند ایک دوسرے سے دوست او محب ہیں۔ ہم جو معنی

<u>مراد لینتے ہیں بینی نگران ومختار کل اگر بیمفضود نہ ہوا در آپ کے کہنے کی بنا</u> بر ووسن یامحب مفهودیت تو پیچراخ دسول اس شد و مدسے حفزت على كو ولى بناكران كوكون ساامتيازي درميددنيا جا ہتے تھے ياكون سستى نفيلت على كومل مال جداكر لغظ ولى سے مراد مددگار، دوست اور محب ہی کے معضور ہیں توان احادیث کے ذریعبر حفزت علی اکی و لابیث كااعلان كرككس ومكي هيي بول إست كودسول نماً يا ل كزا جاست تقع؟ رول کیسٹ ن کہیں ایل وار نے ہے اس سے کہ اِ سکل برسی اور اللہ ہ جيزك واصح كرف ك بيماتنا التمام فرائي المنحضرت كى مكمست بالغد المالد عصمسن ، شان خا تبیسند ان مهل خباً لاسند وا و کم سے کہیں بزرگٹ برتر ہے علاوہ اس کے کہ ان ا مادیث میں تقریج ہے کہ علی ابعد رمول لوگوں کے و لی بی بعددسول کی تیدکو دیجیتے ہوئے کوئی جارہ کار ہی نہیں سوا اس کے کہ و لی کے سنی دہی ہے ما میں جوہم لیتے ہیں مین نگران و مختار کل ۔ ورز رمولاً كايرتيدنگانا مبل مومانا ہے۔

کیا معزمت علی رسول کی زندگی میں مسلانوں کے محسب و مددگار تہ تھے ؟ کیا آپ کو کئی کھر ہے کہ انوں کی نفرمت سے سن مورشتے ہوئے دیجیا گیا ۔ معزمت علی توحیب سے آخوش رسانت میں بل کراور کنار تزمیت پنجیم میں پر درسٹ با کر نظامی و قنت سے دمول کی رملست کے دفشت تک مسلانوں کے دوست و محب دہے ۔ الملا بہ کہنا کیو تک میں مہرسکتا ہے کہ دمول کے دیاسے اکٹر جائے کے بعد علی معانی کے تاحرو مدد گارہی ، دوست اور محب ہیں ۔
کے تاحرو مدد گارہی ، دوست اور محب ہیں ۔
کے تاحرو مدد گارہی ، دوست اور محب ہیں ۔

پر منجلہ اور ترائن کے ایک وہی مدمیث کا نی ہے جوامام احد بن منبل نے مسند علد ۵ منٹر ۲۴ پر بعطرات صبح روامیت کی ہے۔ بریدہ سے روا بیت ہے۔ وہ کہتے ہمں کہ :

یں حفزت علی کے ساتھ میں کی جنگ ہیں مٹر کیب مقا حفزت علی کچے سے بیش اسے ستے ہیں جب دمول کی خدمت ہیں جہنے آواس کا ذکر کیا اور حفزت علی کی مجھے متعقدت کی میں نے دیجھا کہ دمول کا چہرہ متغیر ہوگیا۔ انحفر نے فرایا کہ اے بریدہ الست اولی بالمؤ حندین حسن افغی سالم حکوای براختیا رمنہیں افغی سے بڑھ کر ان براختیا رمنہیں افغی سے بڑھ کر ان براختیا رمنہیں لکھتا ۔ ہیں نے کہا ہے شک بارسول املاء آ ہے اوشا و فرایا کہ یا ورکھو : "جس جس کا میں مول ہوں علیم اس کے مول ہیں ۔"

اس مدیمیث کواہام ماکم ہے متدرک ج ۲ مغز ۱۲ پر درج کیا ہے اور امام سلم کے نزدیک جو مٹرالکا صحبت ہیں ان کے محاظ سے میجے قرار د باہت ۔ نیز علامہ ذہی نے بھی کھنیں ہیں اسے درج کہاہے اورلسٹرائط مسلم اس کی محست کا اعترات کیا ہے ۔

وسول کا جمله آنست او نی بالمومسین می اعتسهم کو مقدم کرنا بہلے براقرار مے لینا کہ کہا بیں تم سے زیادہ اولی نہیں ہوں بین دلیل سے کہ لعظ ولی سے مقصود و پی سعن ہیں جو بم سمحت ہیں کوئی دومرا نہیں -

ان اما دسیف پر اگر فہری نظر ڈالی مائے توخود بخود مطلب وامنے ہومائے گا اور ہارے تول میں کوئی شکس وشہ باتی زرہے گا

مكتوب مكبرا

جواسيهِ مكتوسي

وه آية ممكر كلام محبب د كروه مائده كى ير آميست سيے:
- انسما دليب كمرالله ورسول و دالسذين المسنواللذين يعنسيمون المصلوة ويو تنون السؤنة وهسم واكعون ومسن يتول المثله ورسول والسذين المسنوا منان حذب الله هسم الغلبون "

" بے شک۔ محمارا ولی خدا ہے اس کا رسول مے اور وہ لوگ جوایمان لائے اور نماز قائم کرنے ہیں ادر زکواہ ویتے ہیں دراً نخالیکه وه رکوع میں ہونتے ہیں . جو شخص خدا اور اسس مے رمول اوران ہوگوں کو جوابیان لاسٹے اپنا و لی سجھے گا تو پرسمچه رکھوکہ خدائی مجدیست ہی فالب دہنے وابی ہے! اس اً ببت کے امیرالمومنین کی شان میں نازل ہونے کے متعلق انمسہ طاہرین سے سنوازمیم اما دمیش موجود ہیں ۔ ائمہ طاہری اسے تعلع نظر دیگر طريقول سے متنی رواتيب اس ايست كے سلسليس إلى ماتى بي اور حوشان نزول ہمیشند کے متعلق تف حریح ہیں ان میں ایجسب ابن ہسسلام ہی کی متریث کو مے بیجیے جو رسول اسے مرفوعاً مروی ہے ملاحظہ ہومیرے نسائی پاکتاب الجع بین الفحاح ستر دبلسلاتغییر کسورهٔ ما نُده اسی مبیبی ایک مدسیت این عباس ے مروی ہے اور ایک مدیث ابرالمونین سے ۔ ابن عباس کی مدیث امام واحدی کی کتاب اسباب النزول بی نسسلیه تعنیراً بیت امنعاموج دہے جے كتاب متغنى ميں علامة طبيب نے مجى درج كباب - اميرالمونين كى مدت كيا ب داميرالمونين كى مدت بيندابن مردوبدا ورسندابوالسين مين موجود ب كسزالعال عبد ٥ صفه ٥٠٠٠ برمجى أسب ملاحظ فراكت مين -

علاده اس کے اس آبیت کا امیر الموسین کی شان میں نازل ہونا ایسا تم ہے جس سے انکاری نہیں کیا جا سکتا۔ تمام عشرین اجماع کیے جینے ہیں اور منسری کے اس اجماع کو سبکر لوں علمائے اعلام المسفت نے اپنی کتابوں ہیں ذکر کیلہ ہم منجل ان کے علامہ توشی نے بھی مشری جرید کے مبحث اماست میں اس اجماع کا ذکر کیا ہے۔

ر بیا ہے۔ فایندادام باب ۱۸ میں ۲۴ عدشیں بطرین جمہور مذکور ہیں جوشال نزو کے منتلق ہماری موتد ہیں۔ اکیب تواختصار المحوظ ہے دومرے برمسکد آفتاب سے بھی زیادہ وا منع ہے ورز ہم وہ تمام مبیح احاد بیث اسمقا کر دیتے جواسس آبیت کے حضرت علی کی شان میں نازل ہونے کے متعلق موی ہیں لیکن یہ تو وہ نا قابل ان کا دھفینٹ ہے جس ہیں کسی شکے وضیہ کی گنجائش ہی نہیں۔

بچرمجھی ہم اسس کتوب کوجہور کی حدیث سے خالی نہیں رکھنا چاہتے۔ حرصت ایک امام ابواسسے ان احمر بن محد بن ابراہیم نیٹنا پوری ثقلبی کی تفییر کا حوالہ دے دبیتے ہیں۔

ا مام مذکورانی تقنیریں اس ایت پرمہنج کرب لمسلنا سناد جناب ابوذر کی ایک مدیث درج فراتے ہیں۔ جناب ابو ذر فرائے ہیں کہ: * میں نے خودا پنے کانوں سے رسول اللہ کو کہنے سمٹنا (اگر ہیں غلط کہنا ہوں تومیرے دونوں کان مہرے ہوجا بین) اوریں

في إنى ان آ بحول سے دسول م كود كھا (ور شميرى وونول أنكيس

کورہومائی) دمول فرمانے تھے کھاٹنیکو کاروں کے قائد کافرو کے قاتل ہیں جوعلی کی مدوکرے کا وہ تصریف یا فتہ ہوگااور جوعلی کاسسانھ نہ دے گااس کی مدو ند کی مباشے گی میں نے ا کیسے دن دسول کے ساتھ نماز پراھی اکیسے ساک نے مسجد میں أكرسوال كميا كمى في كيه زويا حصرت على مالت ركوع بي تف __ أب ندائي انكى كى وف استار وكيابس بين الكومى بیہنے ہوئے تھے۔سائل ب**ربھااوراس نے انگوکٹی آبار لی۔اس** يردسول الله ن خلال باركاه مين كرد كلوا كردعا مانتي عوم كيا میرےمعبود! میرے مھان موی نے مجھ سے سوال کیا مخا ركها تفاكه اع ميرك معبود! ميرك سينه كوكشاده فرمامير معالمه کوسهل نباء مبری زبان کی گره کھول دے اکہ لوگ میری بانت تھے تھیں اور میرے اہل سے میرے مجانی بارون کو میرا وزبر نبا -ان کے ذریعہ میری کرمصنبوط کراسے میارٹر کم کیا قراردے تاکم م دونوں زیادہ نیری بیکے کرمی اور بہت زیادہ ذكركري توبهارى مالست كونجولي دنجصة والاسب نوخداوندا توني ان پر وی نازل فوائی کر تھا ری تمنا بیں بوری کی گئیں) اے میرےمبود! میں تیرانی موں میرے سینکو بھی کشاوہ فرما ميرے معالم كوسبل كرا ورميرے ابل سے على كوميراوزير ينااى مے ذریعیمیری کر کومفنبوط کر جناب ابوذر فرائے ہی کہ خداک متم رسول کاکلام بورا مجی نه موسے پایا بختا کہ جریوائین اس آ بیسند امنسعا کوئے کر ثازل ہوئے "جزایں نبیست کے تھاڑا

ما کم و مختار خدا ہے اور اس کا رسول اور وہ لوگ جوا بیان لائے جونماً زقائم کرتے ہیں اور مالت رکوع میں زکوٰۃ وسیتے ہیں جو شخفی خدا اوررسول اورا بیان لائے والوں سے وابستہوگا توكولى شبرنيس كرخداك عبيت بى غليد يا في والى يدي آب سے مخنی نہیں کہ اسس ملک ولی سے مراد ولی بالتقرف ہی ہے جبیے ہم نوگوں کے اس تول میں کہ فلال ولی القاصر ہے و لی سے مفتصود اولیٰ بالتقرمت ہے۔ اہل نقد نے نفر کے کر دی ہے کہ ہر وہ شخف حوکسی کے معالمات میں متفرصت ومختار ہو وہ اس کا ولی ہے لہٰذا اس آبیت کے معنی پیہیں کہ جوئمفارے امورے مالک و متاری اور تم سے زیادہ متفارے اموریس تفرون کامن دکھتے ہیں وہ خدا وندعالم ہے اور اس کا رمول اورعلیٰ کیونگرحفزن علی ای کی ذاست بس اکیب الیی ذاست سیعس میں آبہت کے مَدُكُوره بالاصَفاست مجتع تقررا بهان ، نَمَاز كو قائمُ كرنا اور بجالسي ركوع زكوة وينا اوراب بى كمعلق به أيت نازل مونى.

خداوند عالم نے اس آیت ہیں اپنے بیے ، اپنے دسول کے بیا بے ولی کے بیا ہے ولی کے بیا ہے ایک میں مانے ولا بہت کا بہت کی بیا ہے ولی کو بھی خود ولی ہے اس طرح بغیر کسی فرق کے اپنے دسول اور اپنے ولی کو بھی وگوں کا ولی قرایا ۔ برظا ہر ہے کہ خدا و ندعالم کی ولا بیت عام ہے المبند ابنی اور ولی کی ولا بیت میں عام ہونا جا ہجے ، وہ جن معنوں میں ولی ہور میں ہوں ہے اور میں منوں میں اور اس میٹیت کی ولا بیت اسے ماصل ہدتی جا اس میٹیت سے امیر المونین اکو کھی ولا بیت ماصل ہمونی چاہئے۔ اس میٹیت سے امیر المونین اکو کھی ولا بیت ماصل ہمونی چاہئے۔ اور میران تو بر ہو بی نہیں سکتا کہ ولی سے نفیر یا مجب وغیر مراد

ایا جائے ورند حصر کی کوئی وجہ باتی ند رہے گی۔ مب ولی کے معنی مدولاً
یا دوست ہی کے لیے جائیں تو بھراس کا انخصار مرف بین فردول ہیں
کیو نکر صبح ہوگا ۔ کیا بس خدا اور دمول اور علی ہی مومنین کے دوست میں اور مدد گار ہیں ۔ دوسرا کوئی نہیں ؟ حالانکہ خود خدا و ندعالم نے فر ما با سے کہ : مومنین ایک دوسرے کے اولیا رہیں ، دوست ہیں ، مدد گار ہی میں تو بہی مجمعتنا ہوں کہ ونیا میں حتنی برسی چیز میں ہیں انتخیس میں سے ایک میں تو بہی مجمعتنا ہوں کہ ونیا میں حتنی برسی چیز میں ہیں انتخیس میں سے ایک میں تو بہی میں ان نے محد وست وی سے مراد اول با تنظر حت ہونا ندکہ محد وست میں تو بی میں دوست مواد اول با تنظر حت ہونا ندکہ محد دوست میں میں دوست میں

سن

مكتوب منبراا

آپ کے جواب میں کہا جاسکتا ہے کہ لفظ السندین آمسنوا ہم جع ہے اور امیرالومین شخص واحد ہیں انسانا جع کا اطلاق مفرد بریمیون کم مسیح ہے ؟

سن

جوابب مكتؤسب

ا پل عرب عمواً جمع بول كرمعى خدر دمراد لياكرتے ہيں اس سے ايک خاص كند كمحوظ ہوتا ہے حس كى وجسسے وہ المياكرتے ہيں · اس كے ثبوست ہيں سورۃ آل عمران كى يہ آمينت پڑھيے : « انسسة بن مثال لمسھ مالسناس ان السناس عند جبعوا لكم ناخشوهم فنزادهم اميمانًا و متالوا حسبنا الله وبنعم الوكيل ؟

روہ لوگ جن سے لوگوں نے کہا کہ لوگول نے تمھارے خلافت ابیکا کر لیا ہے، تم ڈرو ان سے مگران کے ایمان میں اور اضافہ ہی ہواءا کھوں نے کہا کہ خدا ہما رے لیے کہا کہ خدا ہما رے لیے کہا کہ خدا ہما رے لیے کہا ہے۔ اور وی مدن میں وی کہا ہے۔ بر "

یے کا نی ہے اور وہی مہترین وکیل ہے۔" أبهت میں ہے کہ توگوں نے کہا۔ ناس کا لغظ استفال کیا گیا ہے جان کھ تمام معشرتن ومحدثين وابل اضاركا اجماع جيركم كجنے والا فقيط ايك مختا ىنېمىن مىعوداىتجى - مدا وندعا لم ئے صرف اكيب ىغيم بن مسعود برجومفرد ب تعظ ناس کا اطلان کیا ہے جوجماعت کے بیے بولا مانا ہے . ابیا کیوں کیا گیا ۔ ان لوگوں کی عظمسنٹ وماالست ظاہر کرنے کے بیاے حنجوں نے نغیم بن سعود کی با توں پر توج نہ کی اور اس کے ڈرائے سے ڈرسے تہیں ۔ وانغه برمقاكم ابوسغيان نيم بن مسعود كو دس اومنث اس مشرط بر د بیے کەمسلما بول کوخوفز دو کرے اورمشرکیین سے خومت وال سے اور اس سفایسا بی کیا تو دئیم تاس دن جو بایش کمی تیس انحبس س بحمله مجى تفا - لوگوں نے تمقالے خلات الكاكر ميا ہے ۔ تم دروان سے اس کے ڈرائے کا پتجربہ ہوا کہ اکثر مسلمان حنگ بیں جانے سے گھبراگئے لیکن مینیسر ۲ سواروں کونے کر نکل کھٹے ہوئے ۔ اور میج و سالم وابیں اُسئے ۔اس موقع پر بر ایست ان منٹرمسلانوں کی مدح بیں نازل موئی جورسول سح بجراه سے اور ڈرانے واے کے کہتے سے ڈرسے نہیں مداوندعالم نے بہاں معزو ﴿ يَسِيٰ مَنِيم بِن مسعود) بِرناس كانفظ جو بولا توعجیب پاکیزہ نکنہ اس اس کے کہنے اور ڈرائے سے نہیں ڈرسول کے کہنے اور ڈرائے سے نہیں ڈرسے کہیں ہماہ گئے یہ کہ کرنا کہ وہ لوگوں کے کہنے اور ڈرائے سے نہیں ڈرسے کہیں کے کہ اگر یہ کہا جاتا کہ وہ ایک شخص کے ڈرائے سے نہیں ڈرسے (کیونکہ ایک شخص کا خوصت دلانا اننا خوصت کا باعث نہیں ہوتا جب اس میں تاہیں ہما ایک جب است کا ڈرانا خوصت کا باعث ہوتا ہے)

اس میں مہیں مہیں گالی آپ کو کلام مجید، احادیث بغیر اور کلام عرب میں ملیں گ ۔ کلام مجید ہی میں ایک میارار شاد ہوتا ہے :

ایس میں ملیں گ ۔ کلام مجید ہی میں ایک میارارشاد ہوتا ہے :

ان جس میں ملیں گ ۔ کلام مجید ہی میں ایک میارارشاد ہوتا ہے :

از جسم متوم ان بیسسطوا الاسکم آئید دیمیم فکفت ایک دیمی میں ایک میں نومیت واصان ایک خدا کے اس نعمت واصان ایک خدا کے اس نعمت واصان کو یاد کرد حیب ایک توم نے ارادہ کیا کہ متماری طرف

"اکولوو؛ جوالیان فاسے خدا ہے اس سمنے واسان کو یاد کرد حب ایک توم نے ارادہ کیا کہ متعاری طرف بڑائی کا انتر بڑھائے تو خدا وند عالم نے اس کے انتے کو تم سے روک ویا "

اس آبیت میں قوم کا نفظ وارد ہوا ہے توم نے بڑائی کا اتھ بڑھایا مالانکہ ابھ بڑھائے والا حرمت ایب شخص مقا۔ فنبیا محارب سے جس کا نام عورت تھا۔ اور بعض علمار کہتے ہیں کہ وہ بنی نفیر کا ایک شخص عمر و بن جماش مفاجس نے کسی فضیہ میں جس کا مفسر بن و محدثین والل اخبار نے بھی ذکر کیا ہے تلوار کھینے ل مقی اور جا ہتا تھا کہ رسول کو تسل کر ڈا رہ مگر خلانے آہے کی حفاظ سن کی۔ ابن ہشام نے اپنی میرق کی حلمت کی۔ ابن ہشام نے اپنی میرق کی حلمت میں اے عزوہ واست الرقاع کے موقع پر مکھا ہے۔ تو خلاو ندعا کم نے اس

ایک اکیلے شخص کے بیے جومفر دسیے لفظ نوم استعال کمیا جوج با عست کے ایک استعمال کمیا جوج با عست کے ایک استعمال کیا جاتا ہے۔ اس سے مقصود درسول می کی سلامتی میں جونغمت المنی میں المی کا است المائی میں معلمات و ملالت جنایا تھا۔

اس طرح به آیئر مبالم میں خداوند عالم نے لفظ ابنار ، نسار اورانفن کے الفاظ جو حقیقتاً عموم کے لیے میں حنین و فاطر و حضرت علی علیم السلام کے لیے خاص کر ستعال کے ہیں۔ تمام سلانوں کا اجماع ہے کہ بدالفاظ موت البہ حصرات کے لیے استعال ہوئے اس کی وج بھی بہ ہے کہ ان کی خطبت البہ حصرات کے لیے استعال ہوئے اس کی وج بھی بہ ہے کہ ان کی خطبت شان و حلالسنب قدر کا اظہار مقصود تفا اور بھی برہنت سے نظائر ہیں شان و حلالسنب قدر کا اظہار مقصود تفا اور بھی برہنت سے نظائر ہیں بے شار و بے حساس ، برج بند مثالیں بطور دلیل نقل کر دی گئیں کہ جمع کا فظ مفرد بربہی بول سکتے ہیں ، جبکہ کوئی خاص عرص کوئی مخصوص نکسند بیش نظس مربو ۔

علامه زمخشري كالمحت.

علامطبی تقنیر مجع البیان میں اس آمیت کی تفیر لکھتے ہوئے گریہ فرانے ہیں کہ استعمال کرنے فرانے ہیں کہ استعمال کرنے میں کہ درست کو بکتہ یہ کھونا متحما کہ آمیب کی بزرگی ظام کرکے عظمت وجا استعمال آمیب کی بزرگی ظام کرکے عظمت وجا است بیان کرے الی لائے ہیں اور یہ بیان کرے الی لائے ہیں اور یہ ان کی میں بیان کرے الی خرورت میں دلیل کے بیش کرنے کی خرورت میں بیکسی دلیل کے بیش کرنے کی خرورت میں بیکسی دلیل کے بیش کرنے کی خرورت میں بیکسی دلیل کے بیش کرنے کی خرورت میں ہے۔

علامہ زمختری نے تفنیرکشاف بیں ایک دوسرا کنتہ ذکر کیاہے دہ لکھتے ہیں : "اگرتم بر کم و اسس آبیت کا حضرت علی کی شان میں نازل ہونا کیسے میچے ہیے حالا نکہ لفظ جن است تعال ہوا ہے تو میں کموں گا کہ گو بر آبیت شخص واحد ہی کے ستان ہے گر لفظ جمے ہی ۔ گر نفظ جمے ہی ان کے جبیبا کرنے کی رغنبت سیسی ان کہ دور روں کو بھی ان کے جبیبا کرنے کی رغنبت سیسی ان ہو۔ وہ بھی الیسی جزا پائیں جیسی علی کو ملی۔ ایک تو وجہ یہ سفی کہ خدا و نہ عالم متنبہ کرنا جا ہتا تھا کہ و بجیم و مومنین کی خصلت ایسی ہونی جا ہئے کرنا جا ہتا تھا کہ و بجیم و مومنین کی خصلت ایسی ہونی جا ہئے کہ اگر وہ نما ز جستے ویں اس درجہ آزرو مند ہونا جا ہیے کہ اگر وہ نما ز کی حالیت ہیں بھی ہول تواسے نماز سے خراعت پر نہ اسٹوا سکیں۔ بلکہ نماز ہی کی حالیت ہیں بجا لا بئی کا ان احتا ہیں بجا لا بئی کا

ايك اورلطيف نكته

میرے ذہن میں ایک بہنت ہی تطیفت وبادیک اکتہ آیا وہ برکہ خداوند عالم نے مفرد لفظ حجول ہے جمع کا تعظ جواستغال فرایا تواکٹر لوگوں پر اس کا بڑا نفتل وکرم ہوا بڑی عنا بہت ہوئی خدا وند عالم کی کبونکہ دشتان علی اوراعدار بی ہائم اور تمام منا نقین اور حسد دکینہ رکھتے والے اس آئیت کو بصیغہ مفرد مننا برواست کیسے کرنے وہ نواس طبع ہیں حلقہ بگوش اسلام ہوئے تنفے کہ ممکن ہے کہی ون نفیبا یا وری کرے اور دسول کی آنھ منبد موست ہی ماکم بن جا بی جب ان کو یہ بنہ چل جا آکہ خداوند عالم سے حکوست بس بین ہی زانوں میں منحصر کردی ، خدا و رسول مواور علی ہی بسب صحوص سے حکوست بس بین ہی زانوں میں منحصر کردی ، خدا و رسول مواور علی ہی بسب

ماکم ہیں۔ نو وہ ایوس ہوکر ندسلوم کیا گیا افتیں ہر پاکرتے اور اسلام کوکن کی خطات کا سامنا کرنا ہے ان کے فتنہ و ضا وہی کے خوصت سے آبیت ہیں باوجور علی کے شخص واحد مہونے کے جمع کا لفظ استعال کیا گیا۔ بھے ربعہ میں رفتہ رفتہ مختلف پیرا ہے میں ستعد ومتفالت برتصری ہوتی رہی اور ولا سبت امیرالمومین مہبت سے ولول پرشان مخی اس لیے فورا ہی کھام کھلا اعلان مہیں کردیا گیا۔ سے ولول پرشان مخی اس لیے فورا ہی کھام کھلا اعلان مہیں کردیا گیا۔ اگر استعال کر کے آپ کی ولا سبت کا اعلان کر دیا جاتا تو لوگ کا نوں میں انگلیاں دے لیتے اور سرکتی پراڑ ما سے میں افراز مکیا نہ قرآن مجد کی ان تمام آیات میں ماری و ساری ہو جو اہل سین کا مراث میں نازل ہوئی ۔ ہم نے ابنی کتاب سیل ساری ہے جو اہل سین کا مراث میں نازل ہوئیں ۔ ہم نے ابنی کتاب سیل المومیین میں اس کی باقاعدہ توضع کہ ہے۔ معکم اوقہ وبراہین ذکر کیے ہیں۔ المومیین میں اس کی باقاعدہ توضع کہ ہے۔ معکم اوقہ وبراہین ذکر کیے ہیں۔

مكتوب مبر٢٢

یبال یت دلالت کرتی ہے کدولی سے دوست یا ای میسے معنی مراد ہیں

خدا آپ کا تعبل کرے۔ آپ نے میرے شکوک دور کر دیے۔ شہرات کے إول حبیط گئے۔ حقیقنت بھر گئی۔ البندا بیس کھٹک ری جاتی ہے۔ بیعن لوگوں کا خیال ہے کہ یہ آیت اس موتع کی ہے جہا خداوند عالم نے کا فرین کو دوست بنانے سے منع کیا ہے جبیا کہ ہل بعد کی آیات سے بند جاتیا ہے۔ لہٰذا سلساد آیت قریبہ ہے کہ اسس مگر ولی سے مراد دوست یا محسب یا حد گارے ہیں۔ اسس کا آپ کیا جواب دیں گے ؟

جواسب محتوسب

سیافِ اسنے اس کم کے می نہیں سکلتے

اس کا جواب ہے کہ مطالعہ ہے اسانی سے بتہ میں مانا ہے کہ ہے ایست ابنے ماقبل کی ان ایتوں سے بن بین کفار کو دوست بنائے سے بنی کی گئے ہے کو کی تعلق نہیں بلکہ ہے امیرالمومنین کی اسلام سے اسے کوئی واسط نہیں بلکہ ہے امیرالمومنین کی مدح وثنا ہیں نازل ہوئی ہے کیونکہ اس میں مزندین کو آب کی شجاعت سے خون دلایا گیا ہے۔ آب کے مسطونت وغلیہ کی دھکی دی گئی ہے اور شجاران آ بات کے سنے جن ہی امیرالمومنین کے میزاوارا است وظلافت ہونے کی طوف اشارہ کے سنے جن ہی امیرالمومنین کے میلے بالکل ہی متقبل جوآ سے بینی :
کیا گیا ہے اس لیے کہ اس آبیت کے بیلے بالکل ہی متقبل جوآ سے بینی :
میا اکی اللہ اللہ میں سوست یہ مسئو میں ہے بینی :
دیبندہ فلسوف یا آتی اللہ بندوم ہے جبھع دیج بونا

أَدُلَمَة عسل المسؤمسنيان أعسزة عسل السكامنسوين يحباهسدون فن سبيسل الله ولا يعنا مؤن لومسة لاست عد ذلك مصنسل الله يوثنيه مسن بيشسا والله والسبع علم "

« اسے ایمان والوجوشخص بھی تم میں سے اپنے دین سے بھرا (وہ اور رکھے) کہ جلدی خلا ایک الیسی قوم کو لاسٹے گا جسے خدا مجی معبوب رکھنا ہے اور وہ لوگ بھی خلاکو مجبوب رکھتے ہیں موسین کے آگے منکسرمزاح وخاکسارہیں کا فروں کے مقابلہ پیں تؤست وطافتت والے ہیں۔ خداکی راہ ہیں جہاد کرتے ہیں اور کسی اور کسی الارست کرنے ہیں۔ خداکی پرواہ نہیں کرتے ہیں۔ خداکا حضل سے خداکا حضل وکرم ہے وہ جے جا بتنا ہے اپنے فضل سے اور خدا بہت وسیع علم رکھنے والا ہے ۔ "
واز اے اور خدا بہت وسیع علم رکھنے والا ہے ۔ "
یہ میت خاص کرامیرالموسین کی شان میں نازل ہوئی حس میں آب اور آپ

کے امحاب کی ہیست و شجاعت سے خوصت دلایا گیا ہے جبباگر خود امپرالموسنین نے جنگ جس میں اس کی حراصت کی ہے نیزاللم محد باست را جعفر صادق سنے بھی نفر کے فرائی ہے ۔ تعلیی نے بھی اپنی تعنیبر میں ذکر کیا ہے اور صاحب مجے البیان نے جناب عمار ، مذیقہ ، ابن عباس ان تمام بزرگوں سے مروی دوایاست ذکر کی ہیں .

منقریری بمشیوں کے بہاں اس آبیت کا ایرالومین کی سشان بی نازل ہونا اجماعی سئلہ اورائم طاہری سے بکٹرسن مبیح اور حد توانزیک سہنی ہو ل روایا سن بھی مروی بیں لہذا اس نبایر برحقیقت آشکا رہوجاتی ہے کہ بہی آبیت سے خداوند عالم نے بہلے والابت امرالمومین کا اشارة ذکر فرایا۔ آب کی المست کا محبل تفظوں میں ذکر کیا اوراس کے بعد آبیت انسما نازل فراکر سابقد اجمال کی نفیس فرادی ، اس اشارہ کو واصح کر ویا لہٰذا یہ کہنا کیونکر میرے ہے کہ یہ آبیت استماال آبیوں کے سللہ کی ایک

سسیاتِ آیت اولّہ کے مقابلیں کوئی اہمیست نہیں رکھتا

علاوه آسس کے مرور کا نناست نے اپنے اہل مبینٹ کومبز ۔ لہ قرآن قرار دیا ہے اور ریہ فرایا ہے کہ : « د ولاں تمجی حدا نہ ہوں گے ۴

المذابل مبست بم لم كتاب اللي بي ادرا كفين سے حقيقت ووا تقيمت كا پنیمیل سکتا ہے۔ کلام مجید اور اس کی آیوں کے منعلق ان کے اقوال جنسے معتبر ہوں مے کسی اور سمے نہیں معفراسند اہل مبین عمر فیرا براسی آمیت سے ا پی حقیقت پراستدلال کیا اس کوبطور تجست بیش کیا - انفول نے ول کی وہی تقسيرفران بصعوم سع بيان كباللذا ان حفزات كافزال كرسام عياق كوكونى وزن نبين دوا جاسكتا وراگرسسيان كلام كويمسيم محي كريس كه وه ان کی تفوص وتفریحات کے معارمن ہے تواکیٹ تونیس کیے مقابلہ میں ظاہر كاوزن بى كيا دومرے يرك تمام مسلمانوں كااتفاق ہے كرمسياق كے مقايل بس اولّہ کوتر ہے مامل ہے ۔ دلیلوں کے متا بلے میں سیاق کی کوئی معتبقت نہیں ای وجہ سے اگر کسی مونع پرسیاق اور دلیل کے درسیان تعارض بیدا موجا آہے تو سسیاق کے مدنول پرعمل نہیں کیا جاتا بکداسے میرو کردیل کے مکم کی یا بندی کی ماتی ہے اور اس کا راز یہ ہے کہ جس موتع پرمیاق ہمیت اور دلیل میں نعارض پیدا ہوتا ہے تواس ہست کے اس سیاق اور اسسی سلسلة كلام ميں نازل مونے كا وأق نہيں ہونا - بيننى طور برير نہيں كها مبا سکتا کہ برا گینٹ اسی ملیارکی ایکسے کوی ہے کیونکہ اس سے ممی کوبھیا شکار

سہیں ہے کہ کلام مجید مجمع کرتے وقت آیتوں کی وی ترسیب بنہیں رکھی گئی جس ترتیب سے وہ نازل ہوئیں ۔ کلام مجید کامطالعہ کیجیے ۔ اُپ کوہبت می اُ تیب للين كي جونظم أيات سيكوني والطالهين ركمتين ان أيات بين تحيه بيان كيبا كياب ادراس كى ما قبل كى آيات كاسلسل ببان كيدا ورسے جيسے آير تعليم ، کوییجیے جس کا پنجنن باک کی شان میں نازل ہونا ناست وستم سے معنومی بيس ائين حسة كيارس ديل ديل مي وانع بوئ سي مذكرة ازوان ميغم کے ۔ خلامہ کلام یہ کہ اس ہم ہے احسے اسے ایسے معنی کا مراد ومعقود ہونا ہو مغبوم سیاق کے مفائر ہے اس سے نو کلام مجید کی شان اعجاز برکو کی ون آ کا ہے اور زاس ک بلا نست میں کوئی کی بیدائیو آں سے پیز کے قعلی وہیلیں موجود بس جوتباتي بس كرب اسنسما وليبكعدادلله سصراد اولى بالتقرصت ہی ہے ذکہ غیر البذاكوئ ميارہ كاربى مبين سواسے اس كے كداس آبيت نحو ساق کے خاصف مفہوم برجمل کیا جائے اور ول سے مراد اول استفرت لبا مائے زکہ دومسنٹ بامحسب ۔

ش

مكتوب مبراا

مراد آیت میں تاویل منروری ہے تاکہ سلفٹ پر آیخ نہ آئے

اگر دربیان میں خلفائے را شدین کی خلافت نہ ہوتی جس کے میچ ہونے برم لوگ ایمان لائے بیپے ہیں توبھاری بھی وہی رائے ہوتی ہو آب کی رائے ہے اور آبیت کے معنی وی سجھتے ہیں ۔ آب کی رائے ہے اور آبیت کے معنی وی سجھتے ہو آب سمجھتے ہیں ۔ لیکن ان بردگواروں کی خلافت میں شکس وشبرکے نے کی مخبائش ہی تہیں لیکن ان بردگواروں کی خلافت ہے کہ اس آبیت کی ہم تا ویل کرویں ۔ تاکہ لہذا بجینے کی حرب میرے و درسست سمجھیں اور ان وگوں کو بھی حنیوں نے میان خلیفار کو بھی حنیوں نے سبیھیں اور ان وگوں کو بھی حنیوں نے سبیعیت کرے ان کو خلیفہ تسیلم کیا۔

جواسبب مكتوسب

سلف کا حترام ستارم نہیں کر آسے معن ہیں تاویل کی جائے ۔ تاویل ہو بھی کیاسکتی ہے

منلامنت ملفائے راشدین ہی کے متعلق توبجسٹ ہے ۔اسی پر تؤ گفتگو ہو رہی ہے ۔ لہٰذا ا و کہ کے مقا لمہ میں ان کی خلامنت کو لا ناکتنی مشحکہ ٹیز ماست ہے ۔

د ومرے بہ کہ ان خلفار کو اوران کی بعیست کرنے والول کومعت و درستی پر بیجنے ہے ہیے یہ کسب صروری ہے کہ آپ ادکہ بیں تاویل کرنے کگیں آپ ان کومعذ ور مجھ سکتے ہیں۔ اگر صرورست ہوئی تو ہم اگندہ اسسس پردوشی ڈالیں گے۔

ہم نے جن نفوص کا ذکر کیا ہے یا دیگر نفوص جن کے ذکر کی کوئی ذہت نہیں آئی ہے جیے نف عدر یا نفوص وصیت ۔ آپ ان کی تاویل کرمجی کیا شکتے ہیں ؟ حضوصاً ان نفوص کو حبب ہے شارالیی اماد میٹ مجی مو تدموں جرمجائے خود نفوص صربیحہ سے کم وزن نہیں رکھتیں ۔

نصوص حریجہ کوالگ رکھیے حرف انھیں امادمیث پراگرانفیافت سے کا م بیتے ہوئے عور کیجیے توحرف انھیں امادسیٹ ہی کوآپ قطعی لیس اور بین ٹبونت پاپیل کے جیھیں سوالشلیم کرنے کے کوئی جارہ کا رنطس رنہ آئے گا آپ کو۔

ۺ

مكتوب مسار ٢٨

آپ نے بن اما دیہ کی طرن اشارہ فرایا ہے کہ وہ بمی نفوص ک موید ہیں آپ نے ان کی تغییل نہیں فرائی ۔ براہ کرم آسس کی بھی تشریح فرائیں دس جواسی مکنؤ سسی

ان نفوص کی مو پرمرون جالیس مدشیں ہم اسس مقام پر ذکر کرتے بیں احدہ ہے کہ بہی آب کے بیدکا نی ہوں گی ۔ سردر کا کناست کے معزمت علیٰ کی گردن پر با تھ دکھ کر ارسٹ و فرا یا :

" هسدد اسام السبرية ، متاستل العجسوة ،

منصورمان نصر ، مخدول سن حناذلسم!!

بعلی سنی کوکاروں کے امام اور فاجروں کو قتل کرنے والے ہیں جس سنے ان کی مدد کی وہ کا سیاب ہوا اور جس سنے ان کی مدد کی وہ کا سیاب ہوا اور جس سنے ان کی مدوست سنہ موڈ اس کی بھی مدونہ کی جائے گئے۔"
برکہتے کہتے آپ کی آواز ملبند ہوگئی۔"
امام حاکم ہسس مدریث کو مستدرکشے ج سمن ۱۲۹ پر جناب جابرسے مروی احادیث کے ذیل میں درج کرنے جناب جابرسے مروی احادیث کے ذیل میں درج کرنے کے بعد مکھتے ہیں :

« یہ مدیث میرح الاسسنا د ہے لیکن مجاری دسکم نے درج رہیں کیا !

) — المخفزت في فرايا:

«ادَى أَلِيَّ فِي عَسَلِي شَلاث: استه سسيد المسسلمين وامام المتقسين وتناشدالغ المجيجلين "

· على محمنعلق محميين بانب بدويد وى تباكى

کے کنزانمال بیں بھی بہ صدمیث موجود ہے طاحظہ ہو صدمیث نمبر ۲۵ مصفی ۵۹ ا عہلہ ۲۰ - نیز تعلی شداپی تغیبرکیبرمیں مسیسلسلہ تفییر آمیت ولایت جناب الإؤر کی حدیثیوں کے مسیسلومیں اس حدمیث کو لکھا ہے ۔ گئ ہیں علیؑ مسلمانوں کے سردار ہیں ، متعتین کے امام ہیں اور روسٹین جبین نمازیوں کے قائد ہیں۔ اس مدیرے کو امام ماکم مستدرک ج ۳ صفر ۱۳۸ پر درج کرنے کے بعد الکھتے ہیں:

م یہ حدیث صبح الامسناد ہے لیکن بخاری ومسلم نے ذکر منہیں کیا ہے

اس حدبیث کو این مخارا ورمهبیت سے ارباب سنن نے ذکر کہا ہے ۔

🕜 — - أتخفرت من على سے فرايا :

" مسرحه بسسيد المسلين ، وامام المتعين ؟ « مرحبا المصلمانون كرسردار اورتعين كرامام ؟ اس مديث كو ملية الادليارين ابن ينم ف درج كيا ہے۔

ے بارودی ابن قائع الوئیم نے اسس مدیب کو درج کیاسے 'کرزانعال مبلہ ہ صخہ ۱۵۱ پریمی موجود ہے ۔ مدیبت ۲۹۲۸ ملامظیمو۔

ته ممتزالهال مبلدلا صخه ۱۵۷ مدمیث ۲۶۱۳ -

سیے ابن ا بی الحدیدے شرع بنے البلان ۲۰ صغر ۲۵۰ پر اسس مدیث کونعل کیا ہے ۔ کنز العال میں مجی یہ مدمیث موجو د ہے طاحنا، ہو حدمییث ۲۹۲۰ کنز العال حلہ ۲۰ صغر ۵۵ امام المتعتبين ، وسيدالمسلين وبيسوب المدين وحناتم الوصييين وقائدالغو المحيين في المحيين وقائدالغو

سبب لا وہ متفق جواس در وازے سے داخل ہوگا وہ متفین کا امام، مسلمانوں کا سروار، اور دین کا امیر اور وصیوں کا خاتم اور دوشن بیٹیانی والوں کا قائدہے یہ

سب سے پیلے حفزت علی آئے رسول نے دیکھا۔ تو آب کا چہرہ کھل کیا۔ دوڑ کر علی کو گلےسے سگا میا اور آپ کی بیٹنا نی کا پسینہ پوسمچھتے جائے تھے اور فراستے مار تر تھر:

> تم میری طون سے معوق ادا کروگے ، تم میرا بیام ہوگوں تک مینجا و سے ادرمیرے بعدوب انتلافاست پیدا ہوں گے تو تم ہی راہ حق واضح کر وگے ہے ا

إن الله عهد الي في عبي آند راية السهدى ، وإمام اوليا فى ونورمن الحامى وهدو كلة التى ألزمتها المنقين "

" على كمتعان محص خدا وندعالم في جما وياسي كه وه على المامين وه على الماست مين البراء ووستول كه المامين اورميري اطاعت كرف والول كي يد ورميمي المامين ا

آپ دیجے ہیں کہ ذکورہ بالا مدشیں معزت علی کی امت کے متعلق کتی صاف اور مریجی تعوص ہیں آپ کی اطاعت فرا نبرداری واجب ولازم ہونے کے روشن جوت ہیں۔ « ان هسندا اول مسن آمسن بی ، داول مسن یصانحسنی یوم المتیامسة ، وهسذاالعدین الاکبر، وهسذا فاروق هسذه الامستة،

برسير؛ وهسسه فارون هسيده الامسيد : يسغوق سبين المعنق والسياطل ، وهذا يعسوب المومنيان !!

* بہ علی ایہ وہ مختص ہیں جو مجھ پرایان لائے۔ قیامت کے دن سب سے پہلے یہی مجھ سے معانی کریں گے ۔ یہی صدیق اکبر ہیں ، یہی اس است کے فاروق ہیں جومق کو باطل سے عدا کریں گے رہی مومنین کے سید ومردار ہیں ہے۔

یه ملیندالادببار الی نیم اصفهان و مشرح بنی البلاغة مید به صفر ۱۳۲۹ سی معم کیرطرال سستن میمنی کامل ، این عدی وکنزانعانی میلد ۲ مفوده ا حدیث ۲۹۰۸ سب مسعت الأنصار ألا أدلكم على ما إن تسعد من به لن تعلوا أسداً ، هذاعلي فأحبوء بعدى ، وأكرم وه بكوام بي فيان حبوات لله أصر في بالدي قلت لكم عن الله عزد حبل عن ما كروه انفاري مختين البي جيز شها دول كرام أم است معنبوطي سيتما مدم و وكبي المراه منهو وكبي المراه معنبوطي سيتما مدم و وكبي المراه منهو وه بي تم مجه من طسرت منهو و مين تم مجه من طسرت مبوب ركمنا ، ميري مبوب ركمنا ، ميري مبوب ركمنا ، ميري البي عن مواسخين مجه وان كي مجي عرب كا يه المن وي جريئ من البي ولي بكم حرب كا يك المين وي جريئل فلا كي طون سي وكم المكالين وي جريئل فلا كي طون سي وكم له المين وي جريئل فلا كي طون سي وكم له

كراً ستة بن ك

ے سم کیرطران ، کنرالعال مبلد ، صن ، ۵ ؛ حدیث ۲۹۲۵ على ابن الى الى دید ف سرى نیج البلاخة مبلد ، صن ، ۵ ، بردری کیا ہے ملاط فرائے کہ بیفیر نے ان کے گرا، زیون کو مشروط کیا ہے علی کے تشک سے وجب تک علی کا داس کیوے رہی تب تک گرا، زیوں کے راس کا حریجی مطلب یہ جوا کہ میں نے علی سے تشک نہ کیا د ، مزور گرا، برکا ر نبز یہ بھی ملاحظ فرائے کہ بیغیر عکم دیتے ہیں کہ علی کے ماتھ بعینہ وئی مجبت کر دھیری فرد میرے ساتھ کرتے ہواور وئی ہی ہو، ست کر وجبی میری ہو، سن کرتے یوری بات اس مخف کے لیے ہوسکتی ہے جواب کا وقیع بدیمواور (باتی انگلے صفیر) أشا مدينة العلم، وحسلي بابها، فنهن أراد العلم خليات الساب "
 من شهر علم مول ، على أسس كا دروازه بي، جوشفص علم حامل كرنا جائے وہ درواز سے اسائے "

(بقیہ ماسٹیے صفی گزشنہ) آپ کے بعد مالک۔ دمختارا در فرما نروا ہو جب، آپ آ تحفز سنا کے اس جمار پر کہ " بیں نے جو کچھ کہا ہے اس کا مکم جبرئیں خدا کے بیاں سے سے کم آئے عقد !" خود ماور فرایش کے توصیفات ایمی طرے منکشعت بیومائے گی۔

اہ طرانی نے کیریں این عباس ہے اس مدیث کی دوابیت کی ہے میدا کرسیوطی کی اس مغیر صفی کا ایر مذکورہ اور امام ماکم نے متدرک و س صفی ۲۲۲ پر باب منافقب علی میں دومیج سندوں ہے اس مدیث کی روابیت کی ہے ایک عبداللہ بن عباس سے جود و مبیح طریقوں سے ہے دومری مبارین عبداللہ انصاری سے اس کے طریق کی صحت پر انھوں نے قبلی دلیلیں قائم کی ہیں۔ الم احرین محدین مدیث مدین مدین مغرب مدین مغرب ماری وارد قاہرہ نے تو ایک ہستنا عظیم اسٹان کتاب ماس کواس مدیث کی صحت ثابت کرنے کے لیے تو پر فرائی ہے ۔ کتاب کا نام فتح المک العلی جوت مدیث عبد بن معبد الاسلام معربیں مجمع ہوئی ہوئی ہوئی میں معبد بالاسلام معربیں مجمع ہوئی ہوئی ہوئی میں معبد الاسلام معربیں مجمع ہوئی میں معبد بالاسلام معربیں مجمع ہوئی ہوئی اس کا می مورد بال معلم خوابیش کی علوم کی ورد زبان ہے کی منتقل جو ہر فاص وعلم کے ورد زبان میں معبد اس می معزات اس می مورد ہودو مدین موسی کی منتقل جو ہر فاص وعلم کے ورد زبان میں معبد اس کا کوئی وزن بہیں ۔ ہم نے سامی معزات اس می موان اس کو عائر نظر سے دیکھا سواز بروستی اور کے حتی کے (باق انگل منوبر) ان کے امترا فاست کو غائر نظر سے دیکھا سواز بروستی اور کے حتی کے (باق انگل منوبر) ان کے امترا فاست کو غائر نظر سے دیکھا سواز بروستی اور کے حتی کے (باق انگل منوبر) ان کے امترا فاست کو غائر نظر سے دیکھا سواز بروستی اور کے حتی کے (باق انگل منوبر)

* علی میرے علم کا دروازہ ہیں اور سی جن چیزدں کو ہے کر مبعومت ہوا، میرے ببدیہی ان چیزوں کو میری امسند سے بیان کریں گے ان کی محبست ابہان اور ان کا بغعل نعاق ہے ہے "

(۱۲) --- " أنت تبين لأمستى مااختلنوا نبه من مواحتلنوا نبه من مودى "

" اے علیؓ میرسے بعد جب میری است اختلافات میں مبتلا ہوگی توتم ہی راہ مت وامنح کر وگے '' اس مدسیشہ کو امام ماکم نے مندرکٹے ج ۳ صفح ۱۲۲ پر درج کرنے کے بعد کھھا ہے کہ :

ب مدریث مسلم و بخاری دونول کے بنائے ہوئے معیار پرصیح سبے لیکن ان دونوں نے ذکر نہیں کیا '' ان اماد میش پرمخور کرنے کے بعد برحقیقت یا لکل واضح ہو جاتی ہے کہ حصرت علی کی دسول کے نزد کیپ وہی مزدلت منی جوخود دسول کی خدا کے نز د کیپ متی ۔ جو باست قدرت نے دسول کے متعلق فرائی بعینہ ولیں ہی باست دسول جمنے حضرت علی کے متعلق فرائی بعینہ ولیں ہی باست دسول جمنے حضرت علی کے متعلق - تذریت کا ادست و ہوا: « وصا اُسترلسنا علیہ لما الکتاب إلا لمتبین لمنے م السدی اختلفوا فنیہ و حسدی ورقعة لمنے م یہ واحدی

> « یں نے تم پر جوکتاب ٹازل کی وہ مرمت اِس لیے کہ لوگ جس مسُلہ ہیں اختلامت کریں ہم راہ حق واضح کر دد کے اور یہ کلام مجید وجہ

برامیت اور رحمت ہے ایمان لانے والول کے ہے ؟ اور رسول من في معرست على ك متعلن مستسرما با: ہ تم میری امست کے اختلافات میں مبتلا ہونے کے دقت راہ حن واضے کروگے " ابن ساک نے حفرست ابو کرسے مرفوعاً دوا بیت کی ہے: (ir • عسلي مسين سبعسكنولستن مسن ربي " « علی کومچے سے وہی منزلست مامل ہے جو مجھے منداک بارگاه میں مامل ہے " دارقطنی نے افراد میں ابن عباس سے مرفوعاً روابت کی ہے: • عسلي ابن ابي طالب بياب حطسة ، من ذل مسنه کان مسومیناً ، ومسن خسرے حسیشہ کان کا نسراً ـ " " على إب معلم بن جواس باب بين واخل موا وه مومن ہے اور جو نکل گیا وہ کا فریٹے یہ المخفرسة نے مج آخری میں مقام عوفات پروسندمایا: عسلى مسيني وأنا مس عسلي، ولايؤدي عبني إلاأنا أوعبل " * علي مجهد سے بیں اور میں علی سے ہوں۔ اور

> یه مواعن بوقد باسب ۱۱ مسغر ۱۰۷ سخه کمترالعال ع ۲ مسخر ۱۵ مدیث ۲۵۲۸

کاررسالت کی اوائیگی یا نویس کر دن گا یا علی یک کی رسالت کی اوائیگی یا نویس کر دن گا یا علی یک کی در کیاب میزان در کیاب شده میزانت مامل ہے ۔ شده میزانت مامل ہے ۔

عه إن ما به خے سن ابن ماج من ۱۲ جلد اول باب فضائل العجاب ميں اس كى موابینندگ به به متمدن اوراندا کی شفایخ میم بین نیز کمنزانعال مبار ۲ صفی ۳ ۱۵ عدیث -۲۵ ۲۰ - الم احد نے مسند علیری صفح ۱۹۴۰ پرمیشی بن جنا وہ کی صدمیث سے منغد د طريفول سے اس عديث كى روايت كى ب اورسى كى سب اريقى ميح بى مختقر أ يهمجه ليجيك الفول ف اسس مدميث كومجل بن أدم سدا كفول شار اليل بن يون س انفول نے اینے واوا الواسحان مبیعی سے انفوں نے مبتی سے روایت کیا ہے اور بدکل کے کل بخاری کسلم مے نزد کیے جست بیں اور ان دونوں نے ان سب سے اسٹ اپٹ مبیج میں استدال کیا ہے بسندا حرمی اس مدیث کو دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ مديث كنزست في مجدالوداع كمونع برارست وفرائ مس كع بعداب اس وارفان بس ببت مقور عدول زنره رہے اس کے نبل آب نے ابو کر کوسورہ برا، ت ک دسس آتی*یں دے کر بھیجا تھا کہ* وہ اہ*ل مکہ کر جائر بڑوں کرس*نا دیں بھیر آب في منات على كو إوا (جبيها كرا لم المدين مسند ملداة ل مغروه الإردايت کی ہے) اور فرایا کہ حلہ ماکر ابو کمرسے ملوجہاں بھی ان سے ملاقاست ہوان سے فوسشندے دواور خودسے کراہل مکرکی طرمت جا وَ اور بِراہ کرسسا اوَ رحفزت علیم مقام جحفریان سے ہے ازران سے وہ نوسشنزے بیا اورحفرمنٹ ام کم رمول کی خدست یں لیٹ است اور آگر کہا کہ یا رسول استرم کیا میرے إرسے میں کو لا ایت نازل ہو ک ہے۔ آنخسزسنا نے فرایا کرنہیں ، لیکن جرئیل اکسے اور (باقی انگے صغریہ)

خدارا آب ہی فرمایش ان امادیث سے کون سی راہ فرار آب نکال سکتے ہیں۔ا ہے میح اماد بیٹ اورم ریمی نفوم كسنال مين أب كيا زما كيس ك اكرأب اس ونت کا نفودفرایل ادر حکیم /سسلام کی اس گہری مکریت کوہومیں كرآب ايسے موقع برليني فريينہ ج سجا لات ہوئے مقام ع فاست برلاکھوں سلمانوں ہے ہوم میں براعلان فراتے ہیں تزا سبب پرحقیفات اجھی طرح دوسٹسن ہومباستے ۔ دمول کا ك الغاظ ويجعي كنت مختقر بي ليكن يدمخنقرالغاظ كنت مبليل الفندرسماني ومطانب كواجيف دامن ميں سبيے ہوستے بي جندالفاظ مين أبيا عصطالب كے وفر مودي : · لايودي عسني إلا أنا أرعسلى » [،] میرے فرائفن رسالت کی اوائیگی کسی ہے ممکن نہیں سوا میرے یا علی^{م کے یہ}

(بقیہ ماسٹیہ فرگزشت) انفوں نے کہا کہ تم اپنی طرت سے اپنے اس کی ایخام دی یا تو فوہ کرد

یا وہ جو تم سے موا ورد وسری مدیمیٹ پی سب (بیسے امام احد نے سسند جادل منشا

پر امبرالمومین عسے روا بہت کیا ہے) کر رسول امنڈہ نے میب معزست علی کوسورہ براد ت

مہنچا نے کے لیے روا نہ کیا توصف را با کہ ، ے علی کوئی میارہ کاری نہیں سوا اس

کے کہ میں جاؤں یا تم جاؤ۔ حعزست علی نے کہا میب ایسا ہے تو میں جاؤں گا، تو

انخفرست منے فرا با کہ اچھا روا نہ جو خوا مخفاری زبان کو تا بہت رسکے گااور تھا کے

دل کو برایت بخشے گا۔

اس جہلہ کے بداب کوئی گنہائش ہی نہیں رہتی ہوا علی سے کسی شعف کے بیداس ہاست کی المبیت اورصلامیت ہی انہیں نکلتی کہ وہ کاررسا است سے کسی جیز کی اوائی کرسے، فریشیۂ تبلیغ میں دسول کا با تھ بٹا سکے اور ہو مجی کھیے سکتا یہ عالی کے سواکسی اور ہیں گنجائش نکل مجی کھیے سکتا ہیں جے علی کے اموریا توخود نبی سے انہام پائے ہیں یا مجیراس کے وصی کے ذریعہ انجام بائیں گے ۔ بنی کا قائم نبی کا جاروں جہد سے انہام بائیں گے ۔ بنی کا قائم نبی کا جاروں جہد سے ہوسکتا ہے۔

الله ومن اطاعه في فقيد اطاع الله ومن الله ومن الطاع عصاني فقد عصى الله، ومن الطاع علياً فقند الطاعه في ومن ععى علياً فقند الطاعه في ومن ععى علياً فقند عصانى "

" مب شے میری اطاعست کی اس نے خداکی اط^{ات} کی اس نے خداکی اط^{ات} کی اورجس نے میری نافزانی کی اس نے میری افزانی کی سب سے میری افزانی کی س^ی کی جس سے عل^{یم} کی نافزانی کی اس سے میری افزانی کی س^ی

اس مدیبٹ کو امام ماکم نے متدرک نے ۳ مغی ۱۲۱کد درج کیا ہے اورعالم دہی نے تامیص متدرک یں ذکر کیا اوران دولاں نے تفریح کی ہے کہ یہ مدیث بخاری و سلم دولاں کے معیار ہر میم ہے ۔

(4) ـــــ " بيا على من فارتنى نقد منارت الله

ومسن شارتك منقد خارقنى "

" اے علی ا جو مجھ سے برگسشد ہوا وہ خداہے برگشتہ ہوا اور جوئم سے برگسنتہ ہوا وہ مجھ سے برگشتہ ہوا۔ اس مدیریٹ کو امام حاکم مستدرک ج ۳ صفحہ ۱۲ پر درج کر کے فکھنے ہیں کہ :

> " یہ مدمیث مَبِیح الاسسنا د ہے لیکن بخاری ُولم نے اسے ذکرنہس کیا ۔"

> > امسلمہ کی مدیث میں ہے :

" مسن سبت علياً منشد مسسبن "

ر جس نے علی کو دستنام دی اس نے مجے دشام دی !!

ماکم نے متدرک ج ۳ صعر ۱۲۱ پراسے درن کیا اور کم و

بخاری دونوں کے معیا ربرجیح قرار دیا ہے ۔ علام ذہبی
نے تعنیع متدرک بین اس کی صحب کی صراحت کرتے

ہو کے درج کیا ہے ۔ نیزامام احمد نے انمسلم سے برحدیث

مند ج ۲ صفر ۳۲۳ پر اور دنیائی نے مفعا نقس علویہ مسئلے

پرنقل کیا ہے ۔ نیز دیگر استم علمار محد بین نے اس کی روا

کی ہے اسی جیبا رسول کا وہ تول بھی ہے جوع وہن شارے

کی حدیث بین منعتول ہے :

" مسن أذى عسليًّا فنقتد أذاني -"

ئے عروین سٹاس کی صعیف صیص کے حاسشیرم گزر حکی ہے۔

" جس نے علی کواذبیت وی کسس نے مجھے اذبیت دی "

" مسن اُحدب عدلیاً ضقد احد بنی، و من ابغنی عسلیاً ضفند ابغض بن الله عسلیاً ضفند ابغض بن "

" جس نے علی کومجوسب رکھا اس نے مجھے مجوب دکھا اور عبن نے علی سے بغن درکھا اس نے مجھ سے بغنی درکھا اس نے مجھ سے بغنی درکھا اس نے مجھ سے بغنی درکھا یا

امام ماکم نے اس معمیث کو مستدرک ہے ۳ منو،۱۳ پر درے کیا ادرمبشرالعًا شیخین اسے میچ قراد دیاہے۔ نیر علامہ ڈ ہی نے تلخیعی مستدرک ہیں خدکورہ بالا معیار پر اس کی محمت کا احتراف کرنے ہوستے درن کیا ہے۔ اسی مبیبا خود معرست مل کا قوالہ ہے۔ آپ فرماتے تھے: « فتم ہے اس ذاست کی جس نے زبین سے وانہ کو روئیدہ کیا اور ہوا میلائی۔ دسول مجھ سے قول و قرار فرا میکے ہیں کہ ہمے وہی دوسست دکھے گا جو

ئه صیح سلم کتاب ایمان صخه ۲۷ مبلد اول این عبدالبرن استیعاب میں لبل ند مالات امیرالمومنین اس مدیث کیا ہے ۱۸۴ امیرالمومنین اس مدیث کے معنون کومحابہ کی ایک مجامت سے دوایت کیا ہے ۱۸۴ پربیرہ کی حدیث درج کی جاجی ہے کا حظ فرائیے ہے کا خطرت کا یہ قول حد توانز کو کینچ میکا ہے ۔ اللّہ ہے جا الله مدن حالا ہ دعیاد حسن عیادا ہ ، میریا کو متن فالا ہوسومہ به صلاح الفازه فی اللمادیث المتوازه میں اعترات کیا ہے ۔

مومن بوگا، وي وتن ركه كا جومنان موگان وي وتن ركه كا جومنان موگان وي وتن ركه كا جومنان موگان وي و مسيد في الدنيا وسيد في الاحنورة محبيب وحبيبي وحبيب و حبيب الله ، وعدوك عددي ، و عدد والله ، والويل لحسن و مدي ي المويل لحسن و مدي ي المويل المسن و مدي ي المويد الله ، والويل المسن و مدي ي المويل الم

" نم دنیا پس سمی سیدومردار مو ا درا فرست بس می الله مختصد دوست رکھنے والا مجمع دوست رکھنے والا مجمع دوست رکھنے والا مجمع دوست رکھنے والا مدا کو دوسست اور مجھے والا مندا کو دوسست اور مخفا را دمشن میرا دمشن ہے اور مخفا را دمشن میرا دمشن ہے اور میرے بعد تم سے بنوا ہی تصبیب ہواسے جو میرے بعد تم سے بنوعن رکھے !!

اس حدمیث کو امام حاکم نے مستدرک ے ۳ مشکل پردمن علی کیا ہے ادربشرال کا مشکل پردمن حالم دیا ہے گیا ہے ادربشرال کا مشخبین میرم قرار دیا ہے گیا ہے ا

ئے الم حاکم نے اس مدیدے کو بطری از ہر عبدالرزاق سے انھوں نے زہری سے انھوں نے داہری سے انھوں نے عبدالتہ بن عبدالتہ بن عبدالتہ بن انھوں نے ابن عباس سے دوایت کی ہے ہیں ہرسب کے سعب اشخاص عجست بہر آئی دجہ سے امام حاکم شے اس حدیث کو درج کرنے کے بعد لکھا ہے کہ یہ حدیث سلم دیجاری کے شرط پر بھی صبح ہے المام حاکم فراتے ہیں کہ ابوالان مریا جماع المسنسنت فقتہ ہیں اور حب کوئی تلقہ کسی حدیث کے جیان کرنے ہی سنفر بر تو دہ حدیث ان کے اصولی کہ نبا پر جیجے ہے اس کے بعد و باتی انگلے صفی پر)

(۱) --- " سیا عسلی طبو بی لمدن احسبات و صدق فیبات و وسدق فیبات اور است و وسدت است می است و کندب فیبات است می است و محتوب دوست در کھے اور مقارید معالم میں سیائی برتے اور الاکست ہوا سے جو متحوب و شن در کھے اور متحارے متعلق جھو میں وشن در کھے اور متحارے متعلق جھو بوسے یا

(بقيرماسشيم فرائد الم ما كم فرات بي كريس نے ابوعبداللہ قرش سے سنا وہ كينے تھے كري فاحربن يميى ملوال سيسنا وه كنة تف كحب الوالانبر صنعاس است ادرابل فِنرادے ا*س مدمیٹ کا ذکر کیا تو بھی بن مین نے اس کا انکار کیا ع*یدان کے نشست کا دن بوا توانفول شعة خرصح بسنديس كها كمدوه كذاب نيشا يورى كهاب سيندجوه بدالزاق ساس مدیث کو بیان کرا ہے۔ بیس کرابوالانبرا تی کوئے ہوئے اور کہا کر و میں ہو ان کے استھے اور بر کھنے پر کھیل بن میں بنس بڑے بھران کو اپنے قریب بلایا اور اپنے سے نددیک کیا بھرابولازمرسے بوجھاک عبدارزان نے تمے بدوریث کیونکوبیان ک مالانکر عمقارے سواکس ادرے اعفوں سے بہ مدیث نہیں بیان کی ابوالاز حراب سنے بس مسلمان بہنچاسلوم ہوا کہ عبدالرزاق موجود بہیں وہ ایک دوریے قریدیں فردکش ہیں - یں ان سے إس بہنجایس مماریمی تفاریب بن ان کے یس بہنجا توانخوں نے مجھ سے خواسان کی اِسنت دریا دنت کیا ہیں نے مالات با کے ان سے مدیثیں مکمیں بھوان کے ساتھ منعا وابس ہوا ۔ دیب میں رخصت مون نگا توعبدالرزان نے کہاکہ متھارا من مجد بر واحب ہے . بی تم سے ایک امی مدسب بیان کرا ہوں جس کو کھارے مواکس ادر نے (باقی انگے مؤیر)

الم ما کم نے مستدرک ج ۲ صغہ ۱۳۵ پر درج کیا ہے اور درج کرنے کے بعد ملصتے ہیں کہ : " یہ مدیریت میرج الاسستاد ہے لیکن بخاری و کم نے درج نہیں کیا :" نے درج نہیں کیا :" سسن آواد آن یعسیا حیاتی، ویدوت مسیست تی ، ویسسکن جینة العضلد التی

(بعیما سنبه مؤاز شنه) مجه سے منہیں سنا بہ کرا تھوں نے نتم مجدا یہ مدیث بیان فرما لی ۔ يسسن كريمي ابن مبين شدان كى تضديق كى اور يجرمنا في جابى بمنذرست كى. علام ذہی فے تلحیص میں اس مدین کے رواق کے تقر ہونے کا اعراف کیا ہے۔ اور ابوالازبركے تقریہو سے كى خاص كرم إست كى ہے اور يچر با وج دان سب إتول كے انھوں تھاس مدیث کی صحت بیں شک کیا مگرسوائے بھٹ دحرمی اور کھے مجتی کے كوئي ايسي إستنه نبين مبيشين ك جاس عدميث بين قاوح جو- ده گيا يد كرعيدالرزات اس مدیث کوکبوں جیسیاتے منع اس کی وجہ ظاہرسے انغوں نے ظا لمین کے منظو^ت و قهروغلبه کے خون سے ایسا کیا جبیا کرمسعیدین مبسیر ٹے ان کی طرف دیجیا اور کہا ک ٹم بڑے بے خوصت و ہے پروا معلوم ہوتے میو ۔ مالکس بھتے ہیں کہ سعید کے اس جوا ے مجھیہت عصر ایا اور میں ان محاحباب سے شکایت کا تفول نے سعبدک طومت سے معذرست کی کہ وہ حجاج سے فررتے ہیں بنوت سے کر تہیں کھتے كرمال دابت على تفقيمسس مدميث كوامام ماكم شيمستندك ج ٣ صفا پہ درج کیا ہے۔ بچرکہا ہے کربہ صبیبے صبیح الاسسنا د ہے لیکن شیخین نے درج نہیں کیا۔

وعددني دبي ، فليستولُّ على ابنِ ابي طالبُ منیانسه لن یخندحیکم مسن هدی ، و لن سِدخلكم في منبلالة " المجسشحف ميرى زندگى مبينا اورميرى موسن مزااور سدابہار باغ جنّست بیں جس کا خدانے مجے سے وعدہ کیا ہے رہنا میا ہتا ہو وہ علیٰ کو دوسست رکھے كبونكه على تم كوراه بدايت مص كمين الك نه کریں گے اور نہ گراہی میں کبھی ڈالیں گے ﷺ - "أوهي مسن آمسن بي وحسد فتني بو المنيسة عسلي ابن ا. بي ط الب، منسهن منسولان تتولانى، ومسن تولاني منت د تولى الله ، ومسن أحسبه ففت د أحسبني، ومن أحبني فعشد اخب الله ، ومسن أبغضيه فعشد انبغهنسنيء وحسن أكبغيضني فنعندانيعنق الله عزوحيل ي

" ہیں وصیست کرتا ہوں ہراس پنخص کوجو مھے پر ایمان لایا ادر میری نفدان کی کہ علی کا تا ہع فران دسے جس نے علی کی اطاعت کی اس نے میری اطاعت کی جس نے میری اطاعت کی اس نے خداکی اطاعت کی ۔اورجیں نے علی کو دوست دکھا اس نے مجھے دوست دکھا اور حیں نے مجھے دوست دکھا اس نے مجھے سے فیمن دکھا اس نے مجھے خد ا دکھا اور حیں نے مجھے سے بنعن دکھا اس نے مجھے خد ا سے بنعن دکھا ہے،

من سده ان يحياهيا في ، ويهوت مدن غرسها ري، فليت عدن غرسها ري، فليت وليت كن جنت عدن غرسها وليه ، وليوال عليا مسن بلية مسن وليه ، وليقتد بأهسل بيتي مسن بعدي، فإنهم عسترق، خلقوا من طينتي ، ورزقوا دنهمى وعلى فولي السمكذبين مهنضلهم من امتي ، المتاطعين فيهم صلتى ، لا أنالهم الله شفاعين فيهم صلتى ، لا أنالهم الله شفاعين فيهم صلتى ، لا أنالهم الله شفاعين فيهم صلتى ، لا أنالهم

ا جے یہ خومت گوار معلوم ہو کہ میری زندگی جیے اور میری زندگی جیے اور باٹ عدن میں سہے دہ میرے موت مرسے اور باٹ عدن میں سہے دہ میرسے بعد علی کواپنا امیر سمجے اور علی کے بعد ان سکے جانشین کی اطاعدت کرسے اور میرسے بعد میرسے اہل بہت کی ہیروی اختیار کرسے کیو بح

میرے ابل بیت میری عرست ہیں ، میری طینت سے بیدا ہوئے ہیں ، انفیس میرا ہی تنم وعلم مجشا کیا ، بیس ہلاکت ہو میری است کے ان توکول کے بیے جومیرے اہل مین کے دفعنل ومشرف کو مصلای اور میری قرابت کا خیال نرکیں . فعدا ان کو میری شفا عست سے محروم رکھے ۔"

" مسن اكسب أن يحسبا حياتي، وسيوت مسيستنى، وسيدخل الحسنة السيى وعدني ربي، وهى جسنت الحسلد، فليستول عليا و ذريسته مسن بعسده، نانهم لن يخوج كم سن باب هدى، ولن سيدخلوكسم باب صن لالية "

" جے برابسندیدہ ہوکہ میری زندگی جیے اور میری موسند مرس اور اس جنت بیں واخل ہوجس کا میرے بروردگار نے مجھ سے وعدہ فرایا ہے اور جبت خلد ہے ہیں وہ علی اور علی کے بعد ان کی ذرمیت کی اطاعت و فرا نیرواری کرے کیونکہ وہ مخصیں راہ راست سے کہی علیمہ نہ کیونکہ وہ مخصیں راہ راست سے کہی علیمہ نہ کریں گے اور نہ گراہی میں کہی والیں گے کی

ساعه ماد اذا دأست علياً فتدسلك وادياً وسسلك النباس وادياً عنسيره ناسلك مع على، ودع الناس ، فيانسه لىن بيدلك عسلى دى ، ولسن بعضرحيك مست هدى يا « اے عمار! حبب تم عل کو دیجینا کہ وہ اور کسی راسنه برمارسیر بی اور اوگ کسی اورراست برمل رہے ہیں توتم اس استرکو اختیار کرناجی پر علیّ ہیں ۔ وہ تمعیں کہی بلاکت ہیں نے والیں سے ز راہ راست سے مداکریں کے ہے "كمني وكعت عسلي في العدلسواء " «ميرا إحمد اور على كا إن عدل مين برايرب عي " ميا ضاطعة امُسا توعنين ان الله YA) فاختار رحبلين آاهدهما أبوك والآخنىرمعلك ٤ ۱۱ مبری یاره حگر فاطم کیاتم اس سے خوش

يله كترالعال حلد المفغرة ١٥ مديث ٢٥ ٢٥

اے ویلی نے عمار وابوابوس سے اس کی روا بہت کی ہے۔ جیساککرزامال

منہیں ہوکہ خداوندعالم نے روے زمین کے بالنندول يراكب نظرني تو دوسخنص منتخب كيے ايك تحقاراً بأب دوسراتهما راسوس . * أَسْا المستذر، وعلي السهاد، وبك ياعلي يهنندى المسهنندون مسن مبعدي " میں منذر ڈرانے والا ہوں اور علی ہادی ہیں واسے علی متھارے ہی ذریعہ میرے بعد ہایت یانےوالے ہا بت یا بن کے ع - "ساعل، لا يحسل لأتحد أن يعبنب في المستجد عنيدي وعنبرك " · اے علی ! میرے اور متھارے سواکسی او ترمیرے کے بیے مائز نہیں کہ وہ مسجد ہیں محالت جنابت ہو" اکیمیسی طبرانی کی مدیهیشد ام سسلمه سے اور بزار سے منغول ہے ۔امفوں نے سعدسے روابیت کی ہے۔ سعد

اے متدرک ہے ۲ مغر ۱۲۹ اور بھی کبٹرت اصحاب سن نے اس حدیث کی روایت کی ہے ادراسے میج قرار دیا ہے۔

سے دنبی نے ابن عباس کی مدینوں میں اسس کو لکھا ہے۔ کرز العال مبلہ ہ صفی 16 مربعی موجود سے - ملاحظ ہو حدیث ۲۹۳۱

سلے دیکیے م ۱۷ و اسم نے کسن مدہشہ دوماسٹید نکھا ہے اسے مزدر الماحظہ فرائیں ادر اس موتع برج مدشیں ذکر کی میں ان بریمی فا ژنگا و ڈالیں . سے این جرنے موافق مح تریں اس معمیش کو نکھا ہے طاخط ہو موامق مح قدیا ہے ہ كن إن كرآ خصرت في فرماياً:

" لا يحسل لأحسد أن يجسنوني هسذا المستحد الا أنا وعلى "

" کسی شخص کے کیا ہے جی جائز بہب کہ مسجد میں مجا

جنابت ہوسوا میرے اور علی کے ۔ ماریک میں نام

" أنا وهدا ، يعني علياً حجة على أمين يوم القيامة "

« یں اور یہ ، یعنی ملی قیامت کے دن میری است برحمیت ہوں گے !

خطیب نے اس کی مدنیث سے اس کو نقل کیا ہے تابل عود ہے ہے۔ معرب متھے ۔ مور ہے کہ امیرالمومنین منی کی طرح کیونکر حجت متھے ۔ آپ کا ابینہ بنی کی طرح حجت ہونا نواسی و تست میں ہوسکتا ہے جبکہ آپ رسول کے دلی عہد ہوں اور آپ کے بعد امور کے مالک و مختار ہوں ۔ امور کے مالک و مختار ہوں ۔

٣ --- مكتوب على باب العبنة : لاإله إلا الله معمد رسول الله ، عملى أخو رسول الله ، عملى أخو رسول الله ي

ہ جنست کے دروازے پر اکمھا ہوا ہے بعبودِ حفیقی س اسٹری ہے اورمحدمصطفیٰ خدا کے

رسول بیں اور علی وسول کے بھا تی بیائے « مسكنتوب عسلى سساق العسويش: لاالنسه إلاالله محسمد رسول الله ، البدشه بعلي، ولضرونته بعسلي 4 «ساق اَنْدَسِتْ بِرِ لَكُهَا جُواہِ : مَعْبُودِ حَتَّيْقَ لِسِ اللَّهُ ہی سے اور محرمصطفیٰ حداکے رسول ہیں جن کو علی ا کے فریعہ تفویت بخشی اور علی سے جن کی مدد کی۔ مسن أداد أن ينظر الى منوح في عسنمه والى آدم ني عسلمه ، والى آبراهسيم نى حلمه ، والى سوسى في فطنته ، والى عسيسى فى زهسده فىلينظر المي عسلي بن ابي طبالب " " جوشفس به مباسه که نوع کوان کے محکم اراد ، یں ، آدم کو ان کے علم میں ، ایراسیم کوان کے ملم میں موسی کو ان کی تیزی و باسنت لین عدلی

کے طبرانی نے اوسطیں ، خطیسب نے المتنق میں درج کہا ہے جبیا کہ کمنز العال علد یہ صفر ۱۵ کر میکے ہیں اور ایک مغید ماشیہ بھی مخسیر کیا ہے ۔ مغید ماشیہ بھی مخسیر کیا ہے ۔

سے طران نے کبیرس اور ابن عساکرت ابوالح ارسے مرفوعاً اس کی ووا بہت کی ہے ملاحظ ہو کمنز العمال مبلد ہو صفی مرہ ا

کو اُن کے زہریں دیجھے وہ علی کی طرفت دیجھے یہ اس مدمیشہ کوہیمنی نے اپنے میچ میں اورامام احمد بن منبل نے مسندمیں درج کیا ہے ہے۔

س ساعلي أن فيك من عيسلى منلًا أبغضته اليهود حتى بهنوا أمه وأحسبه النصارى حتى أنزلوه بالمنزلة النها يها يه

ا اے علی اتم میں عینی سے مشاہیست ہے۔
یہو دیوں نے عینی کو دسٹن رکھا اور دسٹن میں
استے بڑھے کہ الخوں نے ان کی ماں پر بہتان
باندھا اور نصاری نے الخیب دوست رکھا اور
اتنا غلو کیا کہ اس منزل پر بہنچا دیا جس پر وہ

کے نشرع نہے امبلاعہ مبلد ۲ صفر ۱۲۹ امام وازی نے مبی اپنی تقدیر کمیر صنی ۱۲۸۸ مبلد ۲ یں اس مدیبٹ کوسید القدیر آئی سالم ورج کیا ہے اور دوائق ویخالف وواؤں کے نزد کید بھورسلّات ہونا کا کھا ہے۔ ابن بعلہ نے ابن عباس کی مدیبی سے اس کی روائٹ کا کہ ہے مبیا کہ احمد بن تعمون معرفی وارد قابرہ کی کتاب نیخ الملک بعبوت کی ہے مبیا کہ احمد بن تعمون معدی اس کی مبغوں نے مدیبی اب دینیا العلم ملی کے صفی ۱۲ پر فرکورہے یم نجاد ان اعتمام کے مبغوں نے اعتراف واقرار کیا ہے کہ علی تمام انہا رہے اسراد کے جامع تنے می الدین ابن عولی بہن مبین ابن عولی بین ابن عولی بین ابن عولی مبدئ ۲۲ بین ابن مول سے نتا کھا ہے۔ بین ابن مول سے نتا کھا ہے۔

فائز منہیں بین خدا کا بیٹیا کہہ دیاہی

٣٧ - السيق شلاشة ؛ السابق الى موسى ، بوشع بن نون ، والسابق الى عيسى، ماهب ياسين ، والسابق الى محمد على ابن ابي طالب "

"سابقین بین ہیں: ایک نؤ وہ جس نے موکی اللہ کی طرف سبعنت کی، یعنی پوشنے بن نؤن - جوسب سے بہلے موسی پرایان لاسئے ۔ دوس وہ جس نے عین کی طرف سبقت کی بین صاب باسین تنہرے میری طرف سبقت کرنے والا اور وہ علی ابن ابی طالب ہیں ہیں ۔

سومن الهاسيان، قال: حبيب التجار مومن الهاسيان، قال: ياتوم التبعوا المرسلين، وحزقيل، مؤمن ال فرعون قال: اتقتلون رجلا أن يقول ربي ماله، وعبل بن ابي طالب، وهوانعنلهم معربي تين بي: مبيب نهار، مومن ال ياسين،

الع مستدرك ع ۴ مغر ۱۲۲

سے طبرانی وابن مردویہ نے ابن عباس سے اس مدیث کی روامین کی ہے اور دلمی نے جناب عائشہ سے ۔ یہ مدیث بہت مشہورعد پڑی میں سے ہے۔ حبنوں نے کہا تھا کہ اسے قوم والو مرسلین کی اطاعت کرد ، دوسرے حزنیل ، مومن آلِ فرعون ، حبوب کی فرعون ، حبوب کی خوص کو مرحن ہے گئی سخص کو مرحن ہے کہ میرار فردگار کا میرار فردگار اللہ کے کرمیرار فردگار اللہ کے کرمیرار فردگار اللہ کے این ابی طالب ، اللہ ہے اور نیسرے علی ابن ابی طالب ، اور قبل ہیں ہے ۔ اور نیسرے علی ابن ابی طالب ، اور وہ نینوں میں ا ففل ہیں ہے ۔

« ان الائمسة سستغدر بك بعدي ، وائت تعين مسلق ، ونتستل عسل سسنت ، مسن انعسبل مسن انعضات مسن انعسبل انعسبن ، و هسن انبغضات ابغضان ، و (ن هسذه سستخضب من هسذا ، يعبي لحصيته مسن دائسه " ميرى ارست مير بدنم سع به وفال كرك كل تم ميرى ارست مير برزنده ربوك اورميرى ، ى سنت بررست بوسة قتل كيم وكا ورميرى ، ى متضين معبوب ركها اس نع مجم معبوب ركها اور خما اس مع محموب ركها اور د منفارى يو دارسى معموب ركها اس معموب معموب

سے ابوسیم وابن عساکرنے ابولیل سے مرفوعاً اس مدمیث ک روابیت ک ہے۔ اور ابن نجار نے ابن عباس سے مرفوعاً اسس کی روابیت کی ہے ماہ مناز ہومد میش فہر ۳۱ ، ۳۱ با ب ۹ صفل ۲ موانق محرفز معنی به ۵۰ کے خون سے رنگین ہو گی ا

اورامبرالمومنین اسے مردی ہے آپ فرماتے ہیں کہ: " رسول " نے مجھے آگا ہی دی تھی کہ امست، اسلام رسول کے بعد مجھ سے بے وفائی کرے گئے ہے

ابن عباس سے مروی ہے وہ کھتے ہیں کہ :

» دسول منے امیرالمومین سے ادسٹ و فرا ای کہ میرے بعد پخصیں بہت مشقنوں کا سامنا کرنا بڑے

یرسے بہر حدیں ،بھ گا۔مصرت علی نے پوجہا ؛ کد میرادین محفوظ نہمے گا آپ نے زمایا کہ ہاں متھارا دین محفوظ رہے گا؛

اب حرمایا د بات مادون موه رست اله است الم الله المران - " ان مسنكم مسن يفنانك عسلى تاويل لفتران أ

كما متاتلت على سنزسيله ، فاستشق لها المتوم وفيهم ابوسكر وعسم، قال

البوسكر: أنناهو؟ مثال: لا ، مثال عمر:

أَنَّا هُوْ؟ قَالَ: لَا ، وَلَكُنَّ خَاصَفَ

ا علام فی مستدرک بلدم میلا علام ذہبی نے مجی تلخیص ستدرک بیں اس کی محست کا اعترات کرتے ہوئے کھا ہے

عه یه مدمین اوراس مے بعدوالی مدمیث ابن عباس ان دونق مدمیّوں کوا مام حاکم نے مستندرک ج س مشکل م درج کیا ہے - نیزان دونوں کو علام ذہبی سے مجی مستندرک ج س مشکل م دونوں مدنیّیں بخاری وسلم کا کھیے مساور میں ہیں۔ کے سیاد پرمیم ہیں۔

النعل يعني علياً "

"تم بين ايك يخفى وه مجى بيد جوقر آن كى تا وبل ك سندن اسى طرح تنال كرے كاجس طسره بين نے اس كى ننز بل كے متعلق قنال كيا ہے وگ كر بني الحقا الحقا كر ويجھنے لگے - ان مين ابو بكر وعر مجى تقے . ابو بكر نے پوجھا وہ شخف ميں موں يا رسول اللہ ؟ آپ نے سندما يا نبين - عرف پوجھا : بين موں يا رسول اللہ ؟ آپ نے فرايا بنيين - ليكن "وه جوتيوں كا مانيخ والا " يعن معرت على " - جواس وقت آپ ك نعلين مبارك درست كررہے تقے "

ابوسعید خدری کہتے ہیں کہ دسول انٹر کی زبان سے یہ انفاظ سن کر ہم معزمت علی ہے کہ اس آسے اور پہنوشخبری سنائی توحفرت علی ایٹ کام ہیں اسی طرح مشنول دہے، گردن ہمی ندا مطائی معلوم ہوتا مفاکہ وہ بیغیر سے بہلے ہی مصور میکھیں ہے ہے۔ ہم مصور میکھیں ہے ہے۔

ای جیبی ایس مدیث ابوایوسب انفداری کی مجی ہے .
خلانت عمر کے باب میں جس میں وہ فرائے ہیں کہ :
" رسول سے حفزت علی کو بیعیت تورٹ والوں ،
جادہ اعتدال سے با ہر نکل جانے والوں اور دین سے
خارج ہوئے والوں سے جہاد کونے کا حکم دیا ہے "
ایک مدیث جناب عمار سے سنفول ہے جس میں بہ جملہ
ایک مدیث جناب عمار سے سنفول ہے جس میں بہ جملہ

" ياعملي ستقاتلك الفئة الباغية ، و أنت عملى الحق ، ضمن لم ينصرلك يومسئذ نليس مسني »

۱۱ دسول کے فراہا: کہ اسے علی عنقریب تم باعی گروہ سے جنگ کردگے اور تم حق پر ہوگے اس ون جو بھی متفاری مدد نہ کرسے گا وہ مجھ سے نہ بہد گا یہ

جناب الوذركى مديث به جس بين يه جمله : « والسذي نفسي سبيده ، إن فيسكم لرجلاً

(بقیرحاسشیرمنی گزشته) حدیث سے درج کیا ہے بہتی نے شعب الایمان جی اسعیدین منصور نے ابی سسنن یں ابونیم نے ابت حلیتہ یں ابوبیلی نے اپنے سنن ہیں دکی کیا ہے بمزالعال ملد ۱ مُصفیا پر بمی ہر مدمیث موجود ہے ملامنط ہو مدمیث غرح ۱۹۸۸ ہے الم حاکم نے اس مدمیث کو دوط بیؤں سے مکھا ہے بمستندرک جلدی صفی ۱ و صل ۱ يفاتل النباس من بعدي على تأويل القرآن، كسما فناتلت المشركين على سنة ديله "

"آنخفار النصاب فرما! إقتم اس ذات افذس كجب كو تبعد قدرت بين ميرى جان ہے تم بين ايك ايسا شخص بجبي بيد توكوں سے تاويل ايسا شخص بجبي كا جيسا كديں نے مشركين سے اس كى تنزل بر قتال كيا ہے "

اور محربن عبدالله بن ابی را فع شدا بنے واداسے دوایت کی ہے۔ ابورا فع کہتے ہیں کہ : آنخفرت نے فرمایا : *ب اثبارا فع سیکون معسدی حشوم بیناتلون عسلیا ، حق عسلی الله جهادهم' فنسمن لم بیستطع جها دهدم مبیدہ فبلساند ، فنسمن لم بیستطع بلسانه فبلساند ، فنسمن لم بیستطع بلسانه

> ۱۰ ے ابو راضے ! میرے بعد ایک جماعت الیی بھی ہوگی جو ملی ہے جنگ کرینگی ۔ جوان ہوگوں سے جہا دکرے اس کا خلا پرحت ہے جوشخص انتھ سے جہا د زکرسکے وہ زبان سے کرے

ا دلیمی نے اس کی روابت کے ہے جیباک کمنزالعال ملد و مغیرہ ۱۵۵ برہے۔

--- "ياعلى اخصسمك بالنسبوة فلانبوة بعدي، وتخصم المناس بسبع، أنت أولهم اسمانا بالله، وأرف هم بعهد الله، واقومهم بأمرالله، واقسهم بالسوسية، وأعدلهم في السرعية وأبعسوهم بالقضية، وأعظمهم

ا طرائی نے کبریں اس کی دوایت کی ہے میں اکر کنز العالی علد ہ صفرہ ہ اپر خکورہ۔
عدد یہ ابن ابی الاضنو ہیں ابن مسکن ہے ان کا ذکر کیا ہے اور ان سے اس عدمیت کی بطریق حارث بن حصیرة من جارا لجمعتی من الامام الباقر عن اب الامام ویوالعا پر العمام الباقر عن اب الامام ویوالعا پر عن الامام العام میں الاحق من الله خفر محارب ہیں میں ہوئیں من الاحق من الله خفر من البنی موالیت کہ احتر من الاحق من الله بی مسئونیں اور اور المقام یہ ہیں اور وار قطنی سے احت راو ہی اس عدمیت اور کا معام ہے اور کہا ہے کہ کہ سس عدمیت سے تنہا داوی ما برعبی ہیں اور وار قطنی ہیں۔ ور دار قطنی ہیں۔

عسندالله مسزية "

۷ اے علی ! بیں تم سے برسبب نبوت بڑھ گیا میر بعد باسب نبوسٹ مبدہے اور تم لوگوں سے سات چیزوں بیں نوننیت رکھتے ہو ، تم سب سے پیلے خدا بر ایبان لانے وائے ہو ،سب سے زیادہ خداسے کیے ہوئے وعدوں کو پورا کرنے <u>قالے</u> ہو ، اور رحیت بس سب سے زیادہ الفاف برتنے والے ہو اورفقبوں بس تم ہی سب سے زياده بالغ نظر ببو ، بلماظ مُعَنل ومنرُمت خد ا کے نز دیک تم ہی سب سے عظیم تر ہوا ، اور ابوسعبد فدری سے مروی سے ۔ ابوسبد خدری کتے بن كه : المخفر من المشاوفرالي : " ساعسلي لك سبع حنصال لايحاجك فيها أنعَسد، أنسَن أوُل المؤمنيان باللَّهُ واوفناهسم بعهدانله وافتومهم بالمالله و أراكنهم بالرحبية واعلمهم بالقضية ، واعظمهم منزية ؟

ے ہوئیم نے معاذکی مدسیٹ سے اس کی رواسیت کی ہے اوراس کے بعدالی مدیریٹ بینی مدیریٹ ابو سعید کو علیہ میں ورج کیا ہے اور یہ دونوں منٹیں ممنز العال عبد ۲ صفر ۲ ۱۵ برموج د ہیں . "اے علی اسمبی سات البی حضوصیات ماصلی کہ کوئی شخص بھی ان بیں سے کسی چیز ہیں متحالے مقالم ہے کہ کوئی شخص بھی ان بیں سے کسی چیز ہیں متحالے مقالم پر آمادہ نہ ہوگا۔ نم سب سے زیادہ خدا پر کے وعدے کو پولا کرنے واسے ہو، سب سے زیادہ امور خداہ ندی کو درست کرنے واسے ہو رسیت کرنے واسے ہو رائے ہو رعیت پر سب سے زیادہ چریان ، مقدمات رعیب سے زیادہ چریان ، مقدمات میں سب سے دیادہ علم کے حاصل اور خدا کے بی سب سے عظیم بن دیک بلحاظ ففنل و مرز بن سب سے عظیم ہو گ

کہاں تک ان جا جا جا جا ہیں حدثیب ورج کی گئی ہیں ۔ ان جبی اے حد وحساب حدثیبی سن وصحاح ہیں موجو و ہیں سب کی سب اجہائی طور برداکیب ہی مطلب پر دلالت کرتی ہیں ان سب کا ما صحل لب ایک ہی ہے اور وہ برہے کر حفر سن ابرالموشین م بعد رسول اس است میں ثانی رسول مستنے ۔ اس است پر بعد رسول ان اخیس دہی حکومت واقتدار مال رسول مستنے ۔ اس است پر بعد رسول ان ان بی وہ حدثیبی ہیں جو معنا مقادیہ وہ حدثیبی ہیں جو معنا مقادیہ وہ حدثیبی ہیں جو معنا مقادیہ وہ حدثیبی ہیں۔ الفان ط متوانز ہیں ایک ہی معتصود ہے سب کا اگر چیفظا متوانز مہیں ۔ الفان ط برے ہوئے ہیں ہی آب کے بیے مکیل جست ہوں گئی۔

ښ

مكتؤب مكبوا

امبرالومنين كيصنائ كااعترات

احمد بن صنبل مسنسرمائے ہیں کی حصارت علی کی شان میں حبتی آتییں اور حیثیں وارد ہوئی ہیں اتنی کسی اور صحابی بیغیبر کے متعلق نہیں ہے۔ ابن عباس فرائے ہیں کہ کتاب اللی کی آیات مبتی حصارت علی کے متعلق نازل ہو بی اتنی کسی اور کے متعلق نہیں ۔ بھر دوسری مرتب فراتیا : حصارت علی کی شنان میں بین سو کتیبی نازل

النه مستدرک صخر ۱۰۷

کے ابن عساکر اور دیگر ارباب سنن نے اس کی روابیت کی ہے۔ تلے ابن عساکر نے اس کی روابیت کی ہے۔

ہویمی - ننبیری مرتب منرایا ! ک

حب جس مقام برخداوند عالم نے سااسد السندین آمدنوا فرمایا وال داس ورسیس معزمت علی ہی ہیں ۔ خداوند عالم نے اکترومین مقالت پراصحاب بینی بربر حتاب فرمایا مگر حضرت علی کا ذکر مہینہ اجھائی سے کیا۔ عبداللہ بن عیاس بن ابی رسید کہنے ہیں کہ حصرت علی کو علم ہیں پرری پوری گہرائی ماصل متی ۔ آب سب سے پہلے اسلام لائے ۔ اور رسول اللہ کی واماوی کا مثر فت آب ہی کو ماصل ہوا ۔ اماد بیث مجھنے کی مسل صلاحیت آب بی بین متی ۔ میران جنگ ہیں بہاوری وشجا عن ماصل منی ۔ بذل وعطا عبی نظیم نہیں دیکھتے ستے ۔

امام احربن منبلسے علی ومعاویہ کے ستان پرجہا گیا توجواب دیا: "کہ علی کے بہت دیمن سنے ان دیمنوں نے برلی کوسٹسش کی کوئی بین کوئی عیب نکل استے بیکن وصور نرنے سے بجی کوئی عیب ندطا نوجبورا وہ ایک ایسے شخص کی طرحت ماکل ہوستے جس نے علی سے جنگ وجدال کیا تھا۔ ایھوں نے علی کی سنتان گھٹانے اور دنیا والوں کو دھوکے میں ڈالیے

ے طرانی اور ابن ابی ماتم اور دیگرام ماہسن نے اس مدیث کو تکھا ہے۔ ابن مجر مکی فی اسے اور اس مدمیث کے ملک ہا۔ و نے اسے اور اس مدمیث کے قبل جو بیش مدیثییں ہیں ان سب کو مفل سا باب و معز ۲ سے برمواعق محر تہ میں نقل کیا ہے۔

کے ابن عیاش سے اہل اخبار واصحاب سنن نے نقل کیا ہے صواحق موفر ہر کمی موجود است کے سان نے طیور ایت ہو تا ہے۔ اور علارا بن مجر نے موائق موزین تا کیا ہے۔ اور علارا بن مجر نے موائق موزین تا کیا ہے۔

کے بیے یہ جال مبلی کہ کہ سس کی ہے انتہا مدے سرائیاں کیں -اس کی مدے میں خوب خوب مبالغے کیے "

قاحنی ایمئیبل ، امام نشائی اور ابوعلی نیشا بوری وینروسے کہاہے کہ جس تذرصیح اورعدہ اسسفاد سے معترست علی کی سشان میں مدیثیب مروی ہی کسی صحابی کے بارسے ہیں نہیں ۔

آن سب بانوں میں کمنی شک وشہ کی گنجائش نہیں ۔ ہم بھی سب ماننے ہیں کالم یہ ہے کہ رسول مذالے آپ کو اپنا خلیفہ کب بنایا ۔ ؟ یہ احاد میش و مسنن جو آپ نے ذکر قرائے بیشک صبح ہیں اور ہماری معتبر کتابوں میں توجود ہیں کہن یہ آپ کی خلافنت واما مست پر صربی نصوص تونہ ہیں ۔ یہ تو آپ کے حفعا تھ ہیں ۔ یہ تو آپ کے حفعا تھ ہیں ۔

ففنائل مستلزم خلافت تنهين

ہم خود کہتے ہیں کہ آپ کے دختائل ہے صدوحیاب ہیں دفتر ول ہیں آپ سماسکتے ۔ہم برمی ایمان رکھتے ہیں کہ امیرا لمونین ان تمام نبغائل ومنا فلب کے اہل کتے بلکہ اس سے ہمی زیادہ کے سراوار شخے بریمی درست ہے کہ ان احادیث دسنن ہیں آپ کے ستین خلافت ہونے کی طون انٹارے بھی موجود ہیں لیکن ستی خلانت ہوئے سے برکب لاذم آنا ہے کہ دمول سنے آپ کو اپنا خلیفہ وجانہ بنایا۔

س

ئے جیبا کہ ان حفالت سے ٹہودہے اور علا مدابن حجرنے صواعت محزنہ اِب و نقل *نانی صغر ۲ ۔ پرلنگ کیا ہے ۔

جواسب مکتوسی

امبرالمونین کے مفنائ<u>ں۔۔</u> آئیب کی خلافت پرات دلال

سب ایس این به ایم ، صائب نظر ، کلام کے ممل و مونع سے وافف مطا ، معانی سے باخبرد مولی معانی سے با نغراد مولی خدا اور آب کی حکمست بالعنداور نبوست خاتنہ کی معرفت رکھنے والے ، اس محفرت می دفتار و گفتار کی فذر و منز دست جانے دا ہے جس کا ایمان ہو اس پر کردمول می ہر خبین لب و زبان ترجبان دمی ہوتی محقی ایسے سخفی سے ان مسنن ، ا حادیث کے معانی و مطالب پوسٹ بدہ نو نہیں دہنے جائیں اور اوازم عقلی دعرف نو نہیں ہوں گے ایسا تو ہو ہی نہیں سکتا کہ ان حدیثوں کے فرانے سے دمول کا جومف دکھا جس مطلوب کوسیش نظرد کھ کر آب کے فرانے سے دمول کا جومف دکھا جس مطلوب کوسیش نظرد کھ کر آب نے یہ ارشاد است نہا ہے ہی ذہیعے ہوں ۔

آب جویوب کے نزد کید سلم البوت میڈیت رکھتے ہیں اس سے مفر نونہ ہوں ہے کہ ان سسن وا حاد بہت سے مفرت علی کا وورج و مرتبہ نابت ہوتا ہے کہ ان سسن وا حاد بہت سے مفرت علی کا وورج و مرتبہ نابت ہوتا ہے جو سوا جا نہیں بیغرم کمی کا ہو ہی نہیں سکتا۔ ممکن ہی نہیں کر خلا او اس کا دسول ہے وارج و مراتب اپنے خلیقہ و جانشین سکے علا وہ کمی اور کو کیشش دیں آگر ہم سے مجمی کر بین کران احاد بہت ہیں صفرت ملی اور کو کیشش دیں آگر ہم سے مجمی کر بین کران احاد بہت ہیں صفرت علی کو مساحت مما حت الفاظ میں خلیقہ و جانشین نہیں فرایا گیا تب مجمی ان احاد بہت کا نیتر وی نسکتا ہے۔

آخفزت کی ذات گرای بلند وبرترسیاس سے که آب مدارج دفید بجرابی وحی وجانشین کے کی اور کوم حمدت فرایش علاوہ اس کے کہ اگر آب ان تمام احادیث کوجو خاص کر حفر ست علی شان میں وار دہوئی گہری نظرے دیجیں اورا نضاف کی نظرے ملاحظہ فرایش تو آب کو نظر آسے گا کہ وہ سب کی سب سوا معدود سے جند کے حریبی طور پر آپ کی امامت و خابت کرتی ہیں ۔ یا تو صاحت صاحت ان میں اعلان ہے آپ کی امامت و خلافت کا جواب میں عوض کر چکے ہیں ۔ یا اگر صراحت آپ کی امامت کی اعلان ہی مین عوض کر چکے ہیں ۔ یا اگر صراحت آپ کی امامت کی اعلان میں موش کر چکے ہیں ۔ یا اگر صراحت آپ کی امامت کی اعلان میں موش کر چکے ہیں ۔ یا اگر صراحت آپ کی امامت کی اعلان میں موش کر دیا ہی کی دور ہیں اور جیسے دسول میں کی بید وہ عدیث ہو میت در بیان ہوئی اور جیسے دسول میں کی بید حدیث یہ در بیان ہوئی اور جیسے دسول میں کی بید حدیث یہ در بیان ہوئی اور جیسے دسول میں کی بید حدیث یہ دیا ہوئی اور جیسے دسول میں کی بید حدیث :

" عسلي مسع العتوآن ، والعتوآن مع عسبي، لن يغستوفنا حسبتي ببودا عسلي المحسوص ليمي " " على مسترآن كرساته مي ادرمست ران على كرساته مي

اے الم حاکم نے مندرک ج ما صغی ۱۲ پر بیر مدسیف درج کی ہے ا درعلام ذہبی نے میں مندرک ج ما صغی ۱۲ پر بیر مدسیف درج کی ہے ا درعلام ذہبی نے میں تعنین مستدرک بیں اسی مذکورہ بالا صف پر بیر عدمیث متجدا حاد بیٹ متجورہ ہے حضرات نے میرے ہوئے کی حاصت کی ہے بیر حدمیث متجدا حاد بیٹ متجورہ ہے اور وانٹر بھی بر ہے کہ حدمیث دُقلین کو دیکھتے ہوئے ملی وقرآن کے لازم د ماردم جو نے سے کون انکار کرسکتا ہے ہم انبدا بیں صفحہ ۹ ماصفی ۱۲ معربیث ثقیبن پر دوسشنی ڈال چکے ہیں ۔

دون کمبی جدانه مول کے بہاں تک کدروز قیامت حوض کونٹر برمیرے پاس مینجیں "

اور:

" على مسنى سمسنى سمسنولة دائسي مسن سندنى " " على كومحيس وى مزولت ماصل سے مبدا ميرے مركو ميرے بدن سے "

اورعسب دارجن بن عوصت کی مدیث بیں آنخفزست کا یرارسشاد: « والسسذي نفسسي سبيسده لمستُقسيمنَّ الصلاَّ ولمستُوْسَنَّ الزکاۃ ، اُو لاکبعث البیسکم دحالاً مسسنی اُوکنفسی ہے

" متم ہے اس ذاست کی میں کے تبعثہ قدرست ہیں مہیسری مبان ہے ۔ تم نماز قائم کرو ، ذکوۃ ود، در نہ بیں متعالی طرف ایسے شخص کو مجت ہے ۔ با مہیس مبیدا ہے ۔ با مہیس مبیدا ہے ۔

اے خلیبب نے براربن مازب سے اور دہمی نے عبدائٹربن عباسس سے اس صمیٹ کی دوامیت کی ہے ۔ ملامرابن حجرنے مجی صواعق بحرقہ صصے پر یہ میریث ورج کی ہے ۔

سے کنزانعال حلد ہ صف ۵۰۹ حفرست امرالومنین اے شل مغنی مینی موسے کے کنزانعال حلد ہ صف مینی موسے کے کے کا دی سے می تغیر میر کے بیے ابہت مبا لم دوسشن ترین جوست ہے ۱۰ م مخزالدین دازی نے می تغیر میر ملد ۲ صف ۱۸۸۸ براس معنی ومعہوم کی وضاحت کی ہے۔ اسس مدیث کے آخر میں ہے کہ آب نے حفزت علیّا کا باتھ بکڑا اورمست رمایا کہ :

* وہنخف یہ ہے ۔"

اس مبیی اور بیے شار مدشیں ہیں ۔

یہ وہ عظیم الش ن فا کرہ ہے جس کی طرف بحرحفائی کا ہر عوّا م م توجہ ہوگا اور مذبات ومیلاناست سے مہند ہوکر مہر شخص ان احاد میث سے مہی

مطلب ا فذكرسطگا-

ش

مكتوب مبراا

صماب کے نفتائل کی میٹویں مے عارضہ

اگرفشائل ہی پرامامست وخلافشت کی بناہے توہبت ہی صرفیب خلفار ٹلانڈ نیز وہ حہا برین وانصار حواق ل اقرل ایمان لاے تنقیان کی شان میں ہمی تووار د ہو تی ہیں اگران روایاست کومغالمہ میں چیش کیا جائے تواکیلے فرایمے؟

سَ

جواب مكتوسب

دعولىئےمعارصنہ كى ردّ

سابقین و بہا برین وانصار کے نفنل و شرمیت سے بہیں انکا ر نہیں ۔ بے شک ان کے بہت سے نفنائل ہیں ، بے مدوصا ب کام مجد یں بہت کا آئیں ان کی مرح ہیں نازل ہوئی اور جیح مدیثیں بھی بکھڑت ہیں ہم کے ان تمام احادیث و کیاںت بہر ان بزرگوں کی شان ہیں ملتی ہیں اور خور فارکی گرمیوں آؤکو کی ایسی چیز بھی نہ ملی جوان نفوص کی محارض ہوسکتی جو حصرت علی کی شان ہیں موجو د ہیں اور ندان آیاست واحاد میث سے بہاجرین و انسار کی کوئی الیسی خصوصیت شاہرت بر کی جو حصرت علی کی کسی حضوصیت کے معارض ہوتی معابلہ ومعارض کا سرا مارال ہی کہاں بہدا ہوتا ہے بجعث توامامت فی خلافت کی ہے حصرت علی ہے کہ متعال میں کہاں بہدا ہوتا ہے بجعث توامامت فی خلافت کی ہے حصرت علی کے متعال بے شاد آیاست واحاد بیت موجود ہیں خلافت کی ہے حصرت علی ہے متعال بوتا معترض ہوتا ہے اور عہا جرین و مناف کے متعال جو آیاست واحاد بیث ہیں وہ ان کے نعمن و میڑون کی مناف میں میں مناف کے نعمن و میڑون کی و می و مناور نظام کرتی ہیں مگر ان سے سنتی امامیت و خلافت ہونے کا و می و مناور کی منہیں بیدا ہوتا ۔

ہمارے، مخالفین صحابہ کے فصائل ہیں کچھا ہی صدیثیں صرور دوایت کرتے
ہیں جن کا ہمارے بہاں کوئی وجود نہیں، فظظ تن تنہا ہمارے مخالفین ہی ہی
کے داوی ہیں تواہی حدیثوں کو ہمارے مقابلہ ہیں ہینس کرنا دعویٰ بلا دلیل ہے۔
جس کی لوقع کھے جی اور بہط دھری کرنے والے ہی ہے ہوسکتی ہے۔ ایسی
دوایتیں جومرد نہ مخالف کے نز دیا ہے معنبر ہوں ہمارے بیہاں ان کا کوئی
وجود نہ ہو ہمارے نز دیا۔ قابل اعتبار نہیں اور نہ ہم ان روایتوں
کے مانے پر نیار ہیں، آپ مہیں و سکھیں کہ ہم ا بہت مقصود کے ثابت
کرنے کے بیے آپ کے جواب میں وہ حدیثیں پیش کرتے ہیں اور فقط انھیں
صدیثوں سے اسدالل کرنے ہیں جو آپ ہی کی کتا بوں میں موجود ہیں
موجود نہیں موجود ہیں۔ ایسی حدیثیں کہی زبیش کی ہوں گی چومرت

ہمارے بیہاں پائی مبائی ہیں آپ کے بیہاں نہیں ۔ جیسے فدہر یا اسس صیبی دیگر مدنیں کہ ان کے بیان سے آپ کے بیہاں کی کتا ہیں بھی بھری بڑی ہیں ۔ علاوہ اسس کے ہم نے اس بیلو کو بھی نہ چھوڑا ، ہم نے ان حدیثوں کی بی حیان بین کی جو مہا ہرین وانصار کے فضائل پُرشتن ہیں اور جے فقط آپ ہی لوگوں نے درے کیا ہے ۔ ہمارے بیمال ان کا وجو دنہیں مگر با وجو تلاش و حب نجو کے بھی کوئی ایسی حدسیث نہ فی جو ان احا دریث کی معارض ہوکئی جو امیرالمومنین آکے سندی وار دہوئیں ۔ معارض نو معارض ہیں کوئی حدیث بھی امیرالمومنین آکے سندی وار دہوئیں ۔ معارض نو معارض ہیں کوئی حدیث بھی خطور تک بیرا ہو تا ہیں وجہ ہے کہ آج تک آپ میں سے کی شخص نے بھی خطور تک بیرا ہو تا ہیں وجہ ہے کہ آج تک آپ میں سے کی شخص نے بھی خطائے ان روایا ت سے کام نہیں میا ان روایا گی طرف کمی سے نوج بھی نہی ۔

مكتؤب نمبري

مديبيث غدبرك باببت استفنيار

آپ نے بار بار صدیث فدیر کا ذکر کیا ۔ اگر صدیث فدیر بعراتی المبنت مروی ہو تو تحر بیسندرما ہے ہم بھی ذرایخد کریں ۔

س

جواسب مكتوسب

طران نے اوران کے علاوہ ویگر مودین نے مجی ایسے سلسل استاد سے موایت سے موایت میں کا اتفاق وام ماع ہے ہے زیدین ارتم سے روایت سے میں کا اتفاق وام ماع ہے ہے زیدین ارتم سے روایت سے اس مدیث کام ہونے کہ انٹرعلما نے اسلام نے تفریکی ہے یہاں تک زباتی انگے مغربی

کی ہے۔ ذبیر بن ارتم کہتے ہیں کہ معزست مرور کا گناسٹ نے عدیر تم ہی ارشاد سندما ا

> « أيها السناس يوشك أن أدى ضأُجييب، واني مسستول ، واشكم مسستوكون ، عنعا ذا أسنتع تاخلون؟ فتالوا: نشهد أنك بلغت وماهدت دىنسمى نجىزاك الله منيراً ، نقال: أليس تتشهدون أن لاإلسه إلّا الله ، وأن معسمدًا عسبده ورسوله ، و أن عسنته حق ، وأن سارة حسق، وأن الموت حق، وأن البعث حق سعد الموت، وأن السباعية آنتية لاديب فيها، و انُ اللَّهُ بيبعث مسن في الفيور؟ قالوا ؛ سِلمِ نشهد سذلك، مثال: الشهم الشهد، شع مثال: يااميهاالسناس ان اللهُ مولايُ ، وأمَّا مولى المِنين وانااولي سهم من انغسهم فمن كنت مولاه منهذا مولاه ـ ببن علياً - اللهم وآلِ من والإه وعادمن عاداه الخ وات بوگو! فربیب ہے کہ مجھے ملایا مائے اور مجھے جا ایرائے

⁽ لبتیہ ماسٹیرمنٹرگزشتہ)کہ فودعلامہ این مجرشے اس کی موست کا احترامت کیا ہے تعلاصلہ ہو مواعق محرفہ بابداول منول ما مس عن علا۔

ا بیج معزت مرور کائنات نے اپی وفات کے دن قریب آنے کی ﴿ بِاقَ اَکْلِ صَعْدِ بِرِ)

مجھ سے بھی سوال ہوگا آور تم سے بھی پوجھا مبائے گائی تم بتا وُ تم وگ کیا کہنے والے ہو سارے مجع نے کہا ہم گوای ویتے ہی کہ آپ نے پوری تبینغ فرما لی بہیں واوراست پرلانے کے سیے بے حد جد وجہد کی ہماری طبر خواہی میں کوئی کسرنہ اٹھارکی آپ

(نتیہ ماسٹیپٹوگزشتہ) میرسنائی۔اس سے بہ نتیبہ منصود کئی کہ وفنند آگیا ہے کہ اپنے مہد کے لیے خلیفہ شنین کر دیا ما سکتاب دیرکر نے کا ممل نہیں کیونکہ انرٹیٹہ ہے کہیں ایسا نہوکہ معالمہ خلامنند کواجی طرح استوارکہ سے کہ پہلے بیلم مرکب آپہنچے ۔

ان چونکر حدزت سردر کائنات کا پنے مجائی کو انیا ولیدبد مقرد کرنا اہل نفاق ولینسن وصد

پر بہت گراں نغیا آپ نے جا اک فتل اعلان خلا نست عذر معذرت کردی جائے ۔
عزمن بر بمتی کہ ان کا دل زمیلا ہو نیزان سے سٹور وشنب اور جاخی ایج ہوجا سے کا اند میں متعلاس ہے آپ نے ذبایا کہ ابی حسنول مجھ سے پوجھا مائے گا یا جملاسی ہے آپ نے ذبایا کہ ابی حسنول مجھ سے پوجھا مائے گا کہ مملاسی ہے خرایا تھا کہ لوگ یہ مجھ لیس کہ بیغیر مامور ہیں اور آپ سے پوچھا مائے گا کہ مملاس نے خرایا تھا کہ لوگ یہ میں کہ بیغیر مامور ہیں اور آپ سے پوچھا مائے گا کہ مملاس کے میرے اس مکم کو المتوی کوئے کی اب داہ ہی نہیں ام واحدی سے ان کا رسید مقدری سے امام واحدی سے ایک کا ب اساس اساز ول میں سیسلسلہ استاد ابو سید مقدری سے دوایت کی ہے۔ وہ ذبا تے ہیں کہ آب سیلن بیوم عند ہو جنم نازل ہو فی معزمت مل اللہ واست کی ہے۔ وہ ذبا تے ہیں کہ آب سیلن بیوم عند ہو جنم نازل ہو فی معزمت مل اللہ واست میں۔

نله فالباً انخفزت نے واستہ مستونون اورتم سیجی پیمچا ماسٹ کا فراکراشادہ فرا پا ہے کسس مطلب کی فوز میں کورلی وفرو نے (میبا کھوائق مح قریب ہے) اپوسیدے روایت کی ہے اپوسید کہتے ہیں کہ انخفزت کشفول تحول باری تماثل و قعنوہ ماشھم مستوجی ن مخبرات استیں ان سے بوجھا ما سے کا میں مقصوم ہے کہ ان سے وقایت (باتی انگے مغرب) کو قدا و ندِ عالم حب زائے نیر عطا فرمائے آپ نے فرمایا کہ تم اس کی گوائی بہیں دینے کہ بس معبود حقیقی اللہ تعالی ہے اور اس کے دمول ہیں اور حبنت حق ہے جہنم حق ہے ، موست کے جدی رزارہ ہوناحق ہے اور قیامت اگر دہے گی کوئی شک و مشربہیں اس کے اسے ہیں اور یہ کہ فرای دو بارہ زندہ کرکے تھا گیا گاؤگاں کے کہا یا اس بم گوائی دسے مرد وال کو دو بارہ زندہ کرکے تھا گیا گاؤگاں اسے کہا یا اس بم گوائی دسیتے ہیں کسٹ کی انخصارت نے فرایا

﴿ بتيه ماسفيه مؤكَّوتُ) ابرالمومين والمديت كم شفق سوال كياما سط كادام وامدى فرات بي ك امنهم مستولون سيغرم نندي سيدوم كالبيان دكول كوبو ولى وومي يغير كم كالك لمته بمسس فعلبه كو ذرا مؤرست ملاحظ فرا نيع يجتشعنى مجى كمسس منطب كركم رى نظرت وتيجه اور فكروتاس سكام معاس بريد منيننت اچى طرح منكشعت بو ماست كى كرولايت الماينين امول دین سے ب بیباکر مشیول کا مسلک سے کی کرد حفرت مرور کا گنامت میلے ہو میعتے بی کر کیا تم گوائی نہیں دیتے کہ کوئی معبود نہیں موائے معبود حقیقے کے اور محد خوا کے بندے بير اوراس كورسول بيراورير كر تياست كاف وال بعداس كرا فيدر كو كرسشينين ادرضا فنسبد سے مردوں کو لکاسے حکاان امور کے اصندارہ استقا دمی موال کرنے کے بعدہی آسیب نے وال بہنند کا تذکرہ فرایا تاکہ میرشمن مجھے کہ اسس کی مجی انجیبنشوہی ہی ہے جیبی مذکورہ بالا امورکی ۔ بن کے فائل ۔ و معتقد مونے کے متعلق پنے سیر نے انجی سوال کیا کھا۔ یہ بات ایس وا منع و الما برب که بروه مثن جواسلوب کام ا ورمقفود کام سجعت ک ملابیت دکمتا ہے سمجہ سکتا ہے۔

خداوندا تربھی گواہ رہنا بھیرآپ نے فرایا اے نوکو! خداوند عالم میرا مولی ہے اور میں تمام مومنین کا مولی ہوں اور یں ان کی مانوں بران سے زیادہ قدرت وا فنیا ررکھنا ہوں جے نو یا درکھنا کہ حس جس کا میں مولی وا قا ہوں ۔بیعیی علی بھی اس کے موالی دا قامیں ۔ خدا وندا تو دوست رکھ اسے جوا نحبس دوسنت دکھے اور دکٹن رکھ است جوانمنیں دکٹن کھے میراک نے فرایا: اے اوگر! یس تم سے بہلے بہنچنے والا ہوں اورنم بھی مومن کوٹر پر آنے والے ہو۔ وہ ابسا حومن ہے جس کی چوڑان بھریٰ سے مسندا کے درمیا ل مسانت سے بھی زیادہ ہے۔ اس میں ماندی کے اتنے بیائے ہیں مبننے اسمان پر ستارے جب تم حومن کو تربر میرے اس بینجو کے تو ہیں اسس ونست تم سے تقلین کے سعلق برجھوں کا کہ میرسے بعد تم نے ان ك ساته كبيا ملوك كبا؟ تقل اكبر كتاب الني سي حس كابك منارا خدا کے المقوں میں ہے دوسرا منفارے المفول بیں للذامصنوطی سے بیڑے رہنا ، گراہ نہ ہونا نداس میں

ے دیول کا برنقزہ وانا او الی نفتل تریز ہے کہ وال سے مراد اوالی ہے المیڈامطلب یہ ہوگا کہ خداد کد مالم مجھ سے زیادہ قدرست واختیار رکھتا ہے اور میں مومنین بران سے بڑھ کر قدرست واختیار رکھتا ہوں اور میں حب سے نفس براسس سے زیادہ اختیبار رکھتا ہوں ۔ علی مجمی ہسس پر اسس سے زیادہ اختیبار رکھتا ہوں ۔ علی مجمی ہسس پر اسس سے زیادہ اختیبار رکھتا ہوں ۔ علی مجمی ہسس پر اسس سے زیادہ اختیبار

تغیرونب آل کرنا ، دوسرے میرے عرب والمبیت ہیں . ان کے متعلق خدانے مجھے خردی ہے کہ یہ دونوں کھی مدا نہ ہوں گے بیماں کک کروز قبامت میرے پاس ومن کوثر رسین سائے "

اورامام ماکم نے مستدرک کے باب سنافٹ علی میں زیدین ارتم سے ایس مدین کے باب سنافٹ علی میں زیدین ارتم سے ایک مدین ایک مدین و دولزیقوں سے دری کی ہے اور ان دونؤں طریقوں کو مسلم و بخاری کے مٹرائط ومعیار رمیج قرار دیا ہے .

امام بخاری وامام سلم نے کمی روابیت کی صحبت کے بلیے جو مثرا سکط قرار دیے وہ تمام مثرا لکا اس مدمیث بیں بدرجا تم بلے عبلت ہیں۔ زید بن ارتم فراتے ہیں کہ :

* رَمُولُ عَبِ مِجَة الوواع سے فارغ ہوکہ لیٹے نومقام غدر خم پر اتر پڑے اور کم اوول کا منبر تیار فراکر بالاسے منبر تشریعیت کے گئے اور انشا و فرا با : مجھے ایسا معلوم ہوتا ہے جیسے مجھے بلایا جا را ہے اور میں جانے والا ہول ہیں تم میں و وگوا فقد رجیزیں جمود جاتا ہوں جن میں کا ایک و و سرے سے بزرگ ترسیے ۔

ے یہ زیربن ارتم سے دوا بہت کردہ صدمیث کی اصل عیادست ہے جوطرانی ، ابن جریر ادر مکیم دامام ترمذی نے اپنی صدمیث کی کنابوں ہیں فکمی ہے۔ علامہ ابن مجرتے مجی اسس مدمیث کوطرانی سے نقل کمیا ہے اور اس کی صحست کو مستقات ہیں قرار ویا ہے ملا صفار فرائیے صواحق صفا

ایک کتاب خدا دوسرے میری متربت -اب دیجھنا ہے کہ میرے بعد پھارا ان دولؤل کے ساتھ کیساسلوک رمتا ہے یه دوکوں تھی حدانہ ہول گئے بیبال نک کہ حومن کو نزیر ميرے پاس بينيں يا

مچراک مے فرایا :
" ان الله عسدوحه مولائ ، واکنامولی کل مومن شمراحف ذبب على فقال: من كنت مولاه مشهدًا وليسه ، اللهج والي مسن وا لاهُ ، وعسادٍ

· خلاوندعالم میرامولی ہے اور میں سرمون کا مولی ہوں۔ بير الخصرت في حضرت على كالمائد يركر كرارست وفرمايا: حب جس كايس مولى مول اس كے بيمولى بي خداوندا تو دوسست رکھ اس کو جو ان کو دوسسنت دیکھےا ور دیمن د کھ اس کو جو ان کو دشن رکھے <u>"</u>

یہ بوری طولان صربیٹ ا مام حاکم سے ورج کی ہے اورعلا مرذ ہیں نے می ہمیمیں اس کو درج کیا ہے۔ انی مدیث کو اسام ماکم سے زیر بن ارخ کے مالالی کیسے ہوئے دو بارہ اکھا ہے اور اس کے میج ہونے ک ومناصت مجى كردى ب-علامه ذہبى با وجودا يض شد د كے اكفول سے ہمی تلخیع*ی متد دکے ا*س باب بیں اس کو درجے کیا ہے اوراس کے

صیح ہونے کی مراصت کی ہے ۔

اورامام احدی زیر بن ارتم سے رواست کرکے بر مدیث لکھی ہے وہ فراتے ہیں کہ:

" ہم لوگ رسول کے سائھ ساتھ ابک وادی میں انرے ۔ جے وادی تم کہتے ہیں آ مخصرت کے تماز کا حکم دیا اور اسی دوہریں تماز اوا ہوئی ۔ بچر آپ نے خطب ارشاد فرمایا رسول کے لیے ایک ورخت برکیراد الکرسایہ کردیا گیا تھا خطبہ میں آب نے ارسٹا و فرمایا:

"السستم تعسلسون أولسستم نششهدون إني أولى سبكل حومن مسن نغسسه ؟ قالوا: سبل، مثال: نسعن كنت مولاه ضعبلي مولاه،اللهم وال مسن والاه، وعياد مسن عيادا ه يُ

" کیا تم نہیں جانتے ، کیا تم نہیں گواہی دستے کہ میں ہرمون پر اس سے زیادہ تصرف و اقتدار رکھننا ہوئی ۔ لوگوں نے کہا ہے ننگ ۔ آپ نے فرمایا ؛ توجن کا بین مولیٰ ہوں علی اس کے مولیٰ بیں ۔ خدا و ندا تو دوست رکھ اس کو جو علی کو دوست رکھ اس کو جو ان کو دشن مکھ اس کو جو ان کو دشن مکھے ۔"

امام نسائی زیربن ارتم سے دوایت کرتے ہیں ۔ زید بن ارقم مشدلتے

ہیں کے رسول کی گزسے فارغ ہوکر بلیٹے اور مقام غدیر تم برا ترے واں آپ نے کہا ووں کا منبرتیا رکرایا جس پر ماکرارشاو فرمایا:

"كأي دعيت فالجبت، وإني تارك فيكم الثقلبن الحسدهما اكبر من الآخر، كناب الله وعالى المسل بيني ، فانظرواكيت تخلفون فيهما ، فانهما لن يفتر فتا حتى بيردا على المعوض ، شم قال: ان الله مولائي ، وأنا ولي كل مؤمن ، شم إنه أخذ بيد على ، فقال ؛ من كنت وليه فهذا وليسه فهذا وليسه د... "

" مجھے ایسا سنوم ہور ہاہے کہ میری طلبی ہے اور میں مائے والا ہوں ، میں نم میں دو گرانقدرجیزیں مجبورے مباہو جن میں کا ایک دومرے سے بزرگ تر ہے ، ایک کتاب فدا اور دومرے میرے المبیبت . اب دیجینا ہے کہ تم ان دولان سے کیا طرز عمل افتنار کرتے ہو۔ یہ دولوں کم میں میدا زہوں کے بیما ں تک کہ حومن کوثر پر میرے باس میدا زہوں کے بیما ں تک کہ حومن کوثر پر میرے باس میدا زہوں کے بیما ں تک کہ حومن کوثر پر میرے باس میرومن کا مولا ہوں ۔ مجبر آپ نے حدامیرا مولا ہے اور میں ہرمومن کا مولا ہوں ۔ مجبر آپ نے حدارت علی کا انتفاد فرایا :جس کا بین ولی ہوں علی اس کے کے داکران میں ولی ہوں علی اس کے کے داکران میں ولی ہوں علی اس کے

اے خصائص نشائی صال حیں موقع پر امام نسائی شے مینید بھر کا یہ ایرٹ د کامدا ہے : مسن کشت ولدید منہ خا ولدیدہ -

ولی بیں۔ خداوندا نو دوست رکھ اس کو جوال کو دوست رکھے اور دشن رکھ اس کو جوان کو دشن رکھے ؟ ابولطین کہتے ہیں کہ بیں سنے زیدسے پوچھا کہ آپ نے خو درسول؟ کوالیا فرماتے ہوے سنا ؟ زید نے جواب دیا ؛ مجع میں جتنے لوگ موجور تقصسب رسول کوائن آئکوں سے دیجے رہے تقے اور اپنے کالوں سے آپ کے انفاذاس رہے تھے۔

ہے ایوالنطفیل کا پیموال کسس امسنت کے نتجسب کو ظام کرتا ہے کہ | ومو دیجہ امسنت کسسالمام ندير محدون ايرالونين كم منعن بغير كان ايرشا واست كى رواييت كرتى بصحبور يين بان كرت بي كرينيم نع غريم بي إلات منرع كومول فرايا كرا وجودان اماديث کرداست محیمبورسلین شعامل سے انفوں یں نام مکوست زما شادی اور ورروں کو خليفهمة دكرهيا اودكويا ابوالعنيل كوستكث بيدا جواكرامست امسسام ال اماديث كيجوروايت كرنى ہے تووافشاً يہ مدشيں ميم بحى ہيں يا يوننى وصنع كر لگئ بہيا اس وبر سے انعوں سے زير ے اسس مدمیث کومشن کر دریا منت کیا کہ ؟ با کپ نے خود دمول الڈسے بے مدمیش سی ہے جيب منيروسنب عيران دركرشنز اورشك وشبرس متبلا انسان جے وا تعيبت و معتبقت كا ية ميلانا دثوار بهزا سبندسوال كركاسير اسىطرت ابوالعلفيل ننصهوال كميا تؤ زيرسف جواب دباك اسس دم باوج دامس اثره إم ادرانوه خلائق كے مجمع ميں كو كى ستنفس مجى ايسا نرمخا میں سے دیول کوا بی بی کھوں سے نہ دیکھا ہوا وراسے کا نوںسنے یہ ادمث د فراتے ہوئے دمسنا ہو۔ زیر مے جواب کو سفنے کے بعد ابوالطین کو بنہ میلا کہاست مشبک ب اور ایسابی ہے مبیاک کمیت نے کہا ہے ، کمیت علیاز حد فرائے میں ؛ ويوم الدوح دوح غديرخم ابان نعالفلانة لواطيعا (باَق أَنْمَاصِورِ)

امامسلم ہے بھی اس حدمیت کو باہب فضائل امبرالمومنین ہیں زیر بن ادتم سے متعدد طریقوں سے نغل کیا کیکن انھوں سے عبادست مختقراد رقطع و بریدکر کے لکھی ہے اور سے کوئی تی باست نہیں (ایں گنا میبسنٹ کہ درتہ پرسشہا نیز کنند)

الم احدے براربن عازب کی حدمیث دوطرلیوں سے لکھی ہے۔ براربن عازیے کہتے ہیں کہ:

" ہم نوگ رسول کے ہمراہ تنے ۔اشنار راہ میں مقام غدر ہم ہر ہم ہوگ انتہ ۔ اشنار راہ میں مقام غدر ہم ہر ہم ہوگ انتہ ۔ مناز جماعت کا اعلان ہوا ورختوں پر جا در تان کر رسول کے بیے ساید کیا گیا۔ آپ نے ظہر کی نما ز ہڑمی اور سمجر معزب علی کا انتہ کیرا کر نجت سے خطاب کیا :

"السنع تعلمون إني اولى بالبؤمنين من انفسهم الله الله منال: السنع تعلمون إني اولى مكلمؤمن

(بغبرماسشبهمعخ تزمشت)

فَدْرُمْ تَكَ مَیْداَنْ مِیْ مَعْرَتْ مِرْدُکانات کے آپ کی خلافت کا اعلان کیا بہمش پیٹیر کی اِت اَلَّ مِنْ اَ ولکن الوجال نئب بیعو ہا۔ خلع اُر حشل جا حضوراً مہیت ہوئے ہیں ہے ایس اہم اِست پرمہیت ہوئے ہیں دکھا میکن وگوں ہے ہس خلافت کو نہ نیمیریت ہے کہا ۔ جن ہے ایس اہم اِست پرمہیت ہوئے ہیں دکھا ولع اُرْمیٹل ذالے الیوم یومنا دلے در ایسا من کیس منائع ہوئے دکھیا د تو خدیر کے میسا اہم دن ہیں نے دکھا اور ز ایسا من کیس منائع ہوئے دکھیا

> سك معتر ۲۲۵ ت ۲ نکه مستند ش ۱ متح ۲۸۱

مسن دننسده ، قالوا ؛ سبل ، قال ؛ فاحد بيدها ، فقال ؛ مسن كنت مولاه فعي مولاه ؟

د كياتم بني جائت كوي مومنين ك جانون بران سے زياده قدرت واختيار كه تابول - لوگول في كها ؛ به شك ، آب في مين بومن كي جان كان في بين جائت كو بين برمومن كي جان كان سے زياده مالک بول ، لوگول في كم بين برمومن كي جان كان سے زياده مالک بول ، لوگول في كها ؛ به شك ، تو آب في محدرت على كا ات كي الم كرا الله بين مول جو الله و دوست د كه اور ومن ركه الله جو الله و دوست د كه اس كوجو الله و دوست د كه اس كوجو الله و دوست د كه اور ومن ركه الله وجوان كو ديش د كه الله كان برادين ما ذب كيت بين كو اس كه بعد معرزت عمر حدرت مي محدرت ملى كل المات كوات الله الله كوت بين كو اس كه بعد معرزت عمر حدرت ملى كل المات كوت ساد كوت الله كوت بين كو اس كه بعد معرزت عمر حدرت ملى كل المات كوت شاور كها ؛

"مبارکسہو آپ کو اسے علی ابن ابی طالب آپ ہرموس و مومنہ سے مول ہو گئے "

امام نسائی مائٹ منبیق سعدسے روامیت کرنے ہیں ۔ وہ فرماتی ہی کہ ، میں نے ہوم جھنم ، بیں نے ہیں کہ بی نے ہوم جھنم دس نے اپنے کہ جسنا وہ کہتے سنا وہ کہتے سنے کہ بیں نے ہوم جھنم دسول سے سستا - دسول انے حصر مند علی کا التھ کہوا ا اور خطبہ ایرٹ و فرایا جس میں بعد حمد و ثنام البی کے ارشاد فرمایا:

" ایبھا السنا میں این ولیس کم متا لوا: حسد قت یا دسول الله شام دفع بید علی ، فقال: هدذا ولمینی ویؤدی عین

دبینی، د أنا موایی من والاه دمعاد من عاداه "
ا ا و لوگوا بین محقارا ولی موں ، لوگوں نے کہا : بے نگل
بارسول الله آب سے فراتے ہیں ، پھر آب نے حفرت علی کو او نیا کر کے فرایا کہ یہ میرے ول میں اور میرے مرف کے ابدان کو دوست لکھے کے ۔ جو ان کو دوست لکھے گا اس کا بین دوست ہوں اور جوان کو دستن دکھے گا ۔ اس کا بین دشن موں "

انفیں سٹھ سے یہ حامیث بھی مروی ہے۔ سعد کہنے ہیں کہ: *ہم دسول کے ساتھ تقے حیب آب مقام خدیر م پر بہنچے نوگوں کو کھٹر ایا۔ جو آ گے بڑھ چکے تقے ان کو والیں بلایا۔ جو پیچے تقے ان کا انتظار کیا جب سعب جع ہو گئے ٹوآپ نے ارمث دفر ایا:

" ايهاائساس من ولمبيكم ؟ قالوا: اللهورسولية سنم اخسة بهيدعلي فاتتامه ، سنم قال من كان الله ورسوله ولبيه ، منهذا ولهيه ، اللهم والي من والاد ، وعاد من عاداد ."

ا اے نوگو! تمقارا ولی کون ہے ؟ نوگوں نے کہا؛ کہامٹر اور اس کا رمول کی بیسٹنگر آب نے مفرن علی کا ہاتھ کیرا کرا تخییں کھڑاکیا اور ارشاد فرایا ۔ اللہ ورمول جس کے ولی ہیں بیمجی اس کے ول ہیں - فداوندا! تو دوست رکھ اسس کو جوان کو دوسسنٹ رکھے اور دیمٹن رکھ اس کوجو ان کو دیمٹن رکھے یہ

وافغہ فدیر کے منتلق ہے حدوصاب حدیثیں موجو دہی اور وہ سب
کی سب صریحی نفوص ہیں اس با رسے ہیں کہ حصرت علی آ ب کے ولیم بد
تنے اور آ ب کے بعد آ ب کے جل امور کے مالک و منار بھی آ ب ہی سفے
حیا کہ نفال بن عباس ابن ال لمب کا ایک سٹر بھی ہے ہے

دكان ولي العهد معدمه على وفي كل المواهن صاحبه

• دسول کے ولی مہدعلی ابن طالب ہیں اور ہرمقام پر آپ کے رمبیتِ کاریمی " ۔

ښ

مكتؤب مُعبر٢٨

بالاتفاق تمام حفزات شیعرسکد فلانت بین جن امادیث سان دلال کرتے بی ان امادسی کا منوائر ہونا بھی صروری مجعنے بیں بس ان بی مدینوں سے کام بیتے بیں جوحد توائز بہت ہوں ہوں ہوں کونکہ اماست حفزات شیعہ کے بیاں اصول دین سے جو لہذا آپ اسس حدیث فدیرسے کیوں تدلال فرماد ہیں ؟ کیونکہ اگر یہ حدسیث حفزات اہل سدنت کے بیب ان صبح طریقوں سے تا بہت وستم مجی ہے تو متوائز قطعاً نہیں۔

جواسب مكنؤسب

مدیث غدیرکاتوانزادرا<u>س کی غیرمولی مهبت</u>

مم من وجوه سے اس مدیث کواسندلال میں بیش کرتے ہیں وہ م ۱۲ پر تغصیلاً ہم بیان کر جکے ہیں براہ کرم ایب نظر تھے دیکھے مائیے۔

اس کے علاوہ عدمیث غدر کا منواز ہونا توابسالیتین امرہے جس بی کمی شکے دشبہ کی گنجائش ہی نہیں ۔اس کے تواتر بر انسانی نعابت گواہ ہے فطرت کے اصول شاہد ہیں جس طرح دنیا کے اور بدیت سے عظیم ترین الریخی وانتقع وابيئ مخصوص مالاست وكيقياست كى وج سے نسلاً بعدنسل ا زه رہے برز ماند و برد ورمین اوگول کی زبان برجن کا تذکره ربا اسی طرح با نکل وا متسته غدر م بعدس میں بال اسلام سے انتہال استمام فرایا جس کی امہبست جثلاثے کے بیے غیرمول مازوسا مان کیا۔ مختلعت ملکوں دورود را زمقاماً کے اکھوں آ دمیوں کے مجع میں دوہیرکا دفتت ،گرمی کی شدست' ویب کا بیا بان تینی زمین جہاں بول کے درختوں کے علا وہ کسی ورمنسند می سابہم پہنیں ایسے مقام ہر آب منزل فرمانتے ہیں ۔ پیمیج آنے والوں کا انتظار درا نے میں ، اکے چلے مانے والوں کواسطے بروں والیں الاتے میں حبب سب اکتفا مولیت بی توکعا دول کا منبرتنا کیا ما تاہے. آ ہب الاے منبرت معین مے میں می میں بے مینی ہے۔ ایک اصطراب ہے

سبب کملاً بہیں کو آخریہ ہے سزل ک مزلکیس ؟ یاتی تیاری کسس

مقصد کے لیے؟ مگر دار کھلتا نہیں ،سب کی آنکھیں رسول کے جیرے پر جی ہو ن میں اسب کے کان آپ کی آواز پر نگے ہوئے ، رسول منبر پر بہنے کرفصیح وبلیغ خطبہ ارست و فرماتے میں ۔ اس کے بعد سارے مجمع سے البینے الکے ومخارجو نے کا اقرار کیلئے ہیں ۔ تمام مجع سے آواز لمبندہوتی ہے۔ کہ بے شکس آب ہماری حانوں پرہم سے زیادہ فدرسند واضتیار رکھتے ہیں اسسس ا فرار لیبنے کے بعد آسیہ معزمت علی اکومبرریا ہنے برا ہر كھرم اكرتے ہيں۔ تمام مجمع كو دكھا كر فرماتے ہيں كہ جس جس كاليس مولى ہوں اس کے بیمولی ہیں۔ برسارا استام اورائے عظیمالتان مجمع بی رسول کے اس اعلان سے معتصو د صرف بر تھا تھ زیا دہ سے زیا دہ توگ علی سے جاتین ہونے سے واقف ہوما میں اور ابنے اپنے مقام بر پہنے کر مہرشخص دوسروں کو مجی اس ک فبرکر دے تاکہ وہ مبیدہ محرکی طرح محرد بر میں بھیل جائے۔ للذاجو وأنغدائ المهيت كاعال مورئس بس اتناا بهام كيا عاسفانو كياات اخبادا حادين شاركباما سي كا ايس وافته كم منعلن برامجي كوئى كب سكتا ہے كه ايك دو اوى اس كراوى ميں اس وافغه كى خبر تو يوں ونيا میں بھیل ہوگ جیتے طلوع آنتا ہے وفنت آفا ہ کی کرنیں چپہ جیبہ کو منوّرکر دیتی ہیں پخشکی ونڑی وولؤں ہیں اُمبالابھیل ماٹاسیے جعثیفنت پر ہے کہ صدیث غدیر مرش کے معالمیاست الی ہے ۔ منونہ ہے اس کے لطعت وکرم کا ۔ كيونكهاس مدسيف كى خدا وندعالم ف سف سغية مربه وحى فرما لى -اس مين قرآن مجيد سموكرنا زل فرمايا - وه كلام مجيد جس كى تلاوست صبح وست ام ابل إسلام كرتے بي جيے فلوست و حلوست من اپنے اوراد و وفلائعت بن، نما زوں بن، منبروں بر منارو*ں پر مرفیصتے ہیں*۔

" بيا أبيها الرسول سِلِّغ ما أُسْزِل البِيكَ مِين ربلِكُ وَ إِن سِيم نَعْعِل صَما سِلْعَت رسالته والله يعصعك مسن الشاس ٤

ا اسے دسول مینجا و و اس چیز کو جو تم پر نازل کی گئ اوراگر تم نے نربہنچایا قر گویا تم نے کار رسالت ہی انجام نہیں دیا ور وہنیں۔ خدا تم کو لوگوں سے معنوظ رکھے گا۔

ا است است كا بروز غدير م والاست الرالومين اك منتن نا زل بواشيول كا بيري مانتاب. اس باب می جورواتین المدله الرئ سعمودی بن وه منوانز کی مشبت رکمی میں جعزات اہل سنت کی روا میوں سے اس کا ٹرت چاہتے ہیں تو ملا صغر فرا نے وہ مکرٹ جوالم واحدی خصوره مائده کی *کسس* تغییرین کتاب اسباب استرول صغی ۵۰ پر د د[.] معتبرط ليغرب سے دوايت كى ہے يعليجنا ب ايوسيدخارى صحابل پينيم سے ناقل ہيں كہ ياكيت بيا ايبها الدسول سبلغ بروزغديهم طمابن ابي فالب كمعتعلق نازل بوئ اسیمعنون کی مدسید مانغا ابونعیم سے اپن کتاب نزول الغرآن میں ووسندوں سے روابت کی سے ایک اوسعبدسے دورے ابورا نے سے نیز ملام جونی شامنی نے ا پی کتاب فرائدالسملین می ستدد حراتی سے دوایت کیاہے ۔ ابوہ سماق قعلی نے مجی ائی تغیر کیریں اس ایت کے منتلق امی معلون کی مدیث در نے ک ہے ۔ مزید باک قال مؤدے یہ امرکہ اسس ایت کے نازل ہوشے سے بہلے ی تمانہ را کی ہوگی متی ، زواۃ فرن ته بکی متی ، دوزست دیکے جارسیے تھے ، ہوسال جے میں کیا جا انتخا ۔ روبیدن کے ایمام حوّن ہوچکے تھے۔اسپسوائے پیٹے ہوکی مبالنشینے کے املان کے کون می باستدایی باق بي ري تى رس ك ييدنداوندمالى تاكيدات شديد بياز بريدى والالع مغري

اور دبب رسول تے وہ بینجام بہنچا دیا بھرے مجمع میں علی کے امام اورا پنے بعد جائشین ہونے کا اعلان کر دیا ۔ توحداً و ندعالم نے آیت نازل مسندمانی :

"اليوم اكسمات لكم دسيكم والتممت عليكم واستممت عليكم منعصى ورضبت لكم الاسلام دينا ي المال كرا المال كرا المال كرا المال كرا المال كرا المال المال المال المال المال المال كرا المال المال كرا المال كرا المال كرا المال المال كرا المال المال كرا المال المال كرا المال المال

بچسٹ مفس نمی ان آباست کا مطالع کرے ، مؤر وفکرے کام ہے قوضدا وند عالم کی ان عنایا ست ومشت {سے بے پایاں پرمرحم کا کرہے گا۔ جبکہ توجہ الہٰی اسس مسئلہ پر اس حد تکسیمتی او تقجیب نہیں ہے زیول م کے ساستے یہ مسسئلہ انتہائی ایم بیسنٹ کے ساتھ آیا ہواس بلے کہ جبابی تخطرت

(بقیرماسئیرمنوگزشت) اورا شخصمنت و شدید الفاظ استفال کیے گئے جو دحمکی سے مشایہ تھے

ان اسع خفعیل صف بہلعنت دسالستہ اگرتم سے اسے دمول یہ بات ہوگوں

اسے شہر کا رسالست انجام ہی تدویا یہ اور خلاصنت کے سوائے گون سی

الیی باست ہو سکتی ہے جس کے اظہا رسے پیغیر اشتہ ہواساں تھے ۔ فنڈ و فشا دکا ایش الی باست ہو سکتی ہوئی ہو اور مالم کی جمایت و مقائلت کے مخاج تھے۔

وحق مخاف ہر پیزیر کو اوراس کے اعلان کے بعد پیغیر قداد ندما کم کی مایت و مقائلت کے مخاج تھے۔

اسے ہا دے بیال کی میرم صرفی و و زخدیاس اسے کے نا ذل ہونے کے سندی انکر طاہری کا کے استفاق انکر طاہری کا کے استفاق انکر طاہری کا کے استفاق انکر طاہری کا کہ استفاد سے سوار ہیں اگری بین کی نا ذر ول ہونے کے سندی انکر طاہری کا کہ بات سے ذیارہ و ا تعذبہ و تے ہیں ۔

کی بات سے ذیارہ و ا تعذبہ و تے ہیں ۔

کی وفات کا وقت قرمیب بینجا اورآب کوا ندازه ہوگیا کداب زندگی کے دن تفور سے رہ گئے تو اسخفر سن سے بھی خدا ہے کیا کہ جے اکبر کے موقع پر مجرے مجع میں علی کی و فامیت و مبانشینی کا علان کر دیا جا سے گواس سے میلیے آپ ہرموننے و ممل پراعلان فراچکے سے ۔ اقول اقول میب اعلان رسالت فرمایا تھا آس کے بعد جب فرمایا تھا آس کے بعد جب مجمی موننے ملا اعلان فرائے رہے میں اک ہم گزسشند اوران ہیں بیان کر میکی موننے ملا اعلان فرائے رہے میں اک ہم گزسشند اوران ہیں بیان کر میکے ہیں لیکن ان اعلان اس کو آپ نے کا فی نہیں سمجھا۔ آپ نے مناوی کرادی کے ہم کاسس سال مج آخری کرنے والے ہیں۔

رمول م کے ہی اعلان سے طاہر ہے جو قدرتا نیجہ مرتب ہوا ہوگا۔ ہر ہرگوسے ہے مسلان سمٹ کر آگئے کدرمول کے ساتھ اس عباد سے میں شرکت کا قراب عاصل کریں ۔ رمول ایک لاکھ سے زیادہ مسلانوں کے ہمراہ مدینہ سے نسکا۔ حب و فاست کادن کیا تو آپ نے تمام سلمانوں سے مطاب کر کے اور ایا :

" على مجه سے بين اور بين على سے بول ميرے امور يا تو

اے ذینی و ملان نے (اِب مجة الوداع) ہیں لکھا ہے کہ تھونت کے ساتھ پیخے سے ایک الکھ بچر ہیں ہرارا وی نیکل اسس سے زیادہ نداد میں ہست اُن مان ہو ہو اُن ہو تھار ان لوگوں کا ہے جو بدینے سے معزست کے ساتھ ہو سکے تقے اور ان کا شار منہوں نے معزست کے ساتھ جج کیا اسس سے مجی زیادہ ہے اسس بیان سے معدم ہوتا ہے کہ جے سے بلتے والوں کی تعداد اکیس لیکھ والوں کی تعداد اکیس لیکھ دیا ہ متی اور ان سب نے معرب غدرسنی ۔

بیں خود ا وا کرسکتا ہوں یا علی^{ہمی}

اورحبب آب ہزادوں لاکھوں سلمان کے ہماہ جج کرکے پلے اور وادئ تم میں بہنچے اور روح الابین آئے بہتے ہے کرآپ کی خدست میں نازل ہوئے ، آپ وہا اگر بڑھ ہے ، منزل فرائ ، جونوگ بیچے رہ گئے تھے وہ نوسٹ آئے۔ حب سب استما ہوئے آپ نے اور جواکے بڑھ وہ کئے تھے وہ نوسٹ آئے۔ حب سب استما ہوئے آپ نے نماز جماعت بڑھائی بچر بالا کے منبر ماکر منطبہ ایسٹ و فرایا اور صن مان کھلے لفظوں میں معزمت مل کی جا سنتینی و خلا دست کا اعلان فرایا۔ جس کی قدیرے تعقیل آپ سن جوایک لاکھ سے مہمی زیادہ سنتھ اور مختلف مقالمات میں اور آپ کے اس اعلان کو مجمع کے متمام مسلمانوں نے بھی سے نا جوایک لاکھ سے مہمی زیادہ سنتھ اور مختلف مقالمات کے دہنے ولیے تھے۔

دہذا خداوں دِعالم کا وہ اربقہ جواسس کی مخلوقاست ہیں جاری وساری ہے جس ہیں کہی تنیرّ و نبدّل منہیں ہونا اس کا تعامنہ ہی ہے کہ حدیث عدیر متوا نر ہی ہو مؤاہ نعق میں کیسے ہی موانع ہوں - مزید براک اند طاہری ہے بڑے مکیا نہ انداز سے اس کی نشروا شاعست فرائی۔

صدیبیٹ خدر کے متوائز ہو نے کا اندازہ آپ ایک اس وا توسے کیجیے کہ عب امیرا لمومنین اسے اپنے زمانہ خلا صنت میں کو ضریحے میدان رحبہ میں وگوں کوجیع کمیا ا ورازسٹ و فرایا کہ :

ا یں متم دنیا ہوں کہ ہر وہ مسلمان جس سے یوم عدر مم رمول ا

کے ملاحظ موم ۲۲ جہاں ہم نے یہ مدسیٹ حوالہ کے سب تھ درن کی ۔اس مدمیث برجو تنجرہ ہے کیا ہے وہ فاص طور برقابل حزرہے ۔

کو بالائے منبراعلان سندمانے سنا ہو کھرا ہوجائے اور ہو کچھ دسول کو کہنے سنا ہواس کی گواہی دے ،لیکن وہی کھڑا ہوجس نے اپنی آنکھوں سے غدیر تم میں دسول کو دیکھیا اور اینے کا نوں سے دسول م کو کہتے سسنا ہو یا

معزست کے اس قیم و بیٹے پر ۲۰ صحابی اٹھ کھوٹے ہوئے جن میں عرفت
۱۷ نؤ وہ سختے جومز وہ بدر میں بھی شرکیب رہ چکے سختے ۔ ان مسب سے گواہی وی کہ اسس دوز رسول ہی نے علی کا یا تھ پھرا کرارشاد فرایا ؛

« کہ کیا تم ما شنتے ہو کہ میں مومنین پران سے زیادہ فذرت و اختیار رکھتا ہوں ؟ لوگوں نے کہا : بے شکس یا دو اختیار رکھتا ہوں ؟ لوگوں نے کہا : بے شکس یا درسول ادبتر ، آپ نے فرایا : میں میں میں کا مولی ہوں ، درس کے مولی ہیں میں میں کا مولی ہوں ، درست درکھ اور دمش درکھ اکس کو جو ایک و دوست درکھ اور دمش درکھ اکس کو جو ایک و دوست درکھ اور دمش درکھ اکس کو جو

ان کو دمش رکھے ؛'

آب مجھ سکتے ہیں کہ ۳۰ محابیوں کا حجوث پر انفاق کر لنیا عقلاً کس قدر ناممکن سے للذا صرف امنیں ۳۰ محابیوں کی گواہی کو اگر دبا جائے تواس مدیب کا منواز ہونا فنطی ویقینی طور پر تا بت وسیم ہے۔

مچراس مدیت کوان ۳۰ صمابیوں سے مجمع کان تمام نوگوں نے مشنا جرمیدان رحبہ میں اکٹھا ہوئے تھے۔ اکنوں نے اپنے اپنے تفام پر جاکر مرشہر وہر قریبہ بن اسے بیان کیا ۔ ہر شخص سے نقل کیا اور مدیث کی لوری پوری افتا عسن ہوئی بریمی نابی خورسے کہ رمید کا وا مغہ زمائ خلا فست ایرالمومنین بن بین کیا ۔

امرالمومنين كى بعيت بمصرة مين جونى اور وافغه غديرست عدم بين سیس آیا۔ان دواون کی درمیان مرت کم سے کم بیش برسس بول ہے۔ اوراس نجیس مرسس میں عمواس کا طاعون تھی آیا اور سبت میں رط ال**یاں** اور فنزمات بھی خلفار ٹلاشہ کے زمانہ ہیں ہیں بیٹ آب اندازہ کرسکتے ہیں کہ اس اننی طولانی مدسن میں جواکیہ چو کھائی مدی کے برابر بھتی جس میں نہانے کتی را ائبان هوئی، کتنے فننه و صاداور تباه کاربون کا سامنا ہوا آ و ر طاعونِ عمواسِ کی وبانھیل۔خدا ہی بہتر مانتا ہے کہ وافغہ فدر بہی مشر کیب ہونے والول کی کتی بڑی اقدار ختم ہو چکی ہو گی کتنے بوار سے اورسس رسیدہ اشخام ابی موسند مرکیے ہوں گے ۔ کنتے نوجوان سوق جہاد بیں میدان کارزار میں کام ہے ہوں گئے ۔ مرنے والول کی بسبست زندہ رہنے والوں کی کتی مختفر نفدا وہوگی اور جو زنرہ مجی رہے ہوں سے وہ ایک مگر نو ہوں سکے نہیں۔ منفرق مقامات برمنتشر ہوں مے ۔ کوئی کہیں ہوگا کوئی کہیں وکیؤ کھ رمبہ میں تو وہی لوگسے ہے ہوں گے جوامبرالمومنین ہے ہمارہ عواق میں موجود ستنے) باوجودان سب بانوں کے ایرالمومین اے کہنے پر کس صحابی اسٹے کھر اے ہوئے جن میں مرف ۱۲ نو بدری تھے اور ان سب نے گوائی ک کہ ہم سے اپنی آ تھوں سے دِسول کومبر پر دیکھاا ورابینے کا اوٰں سے رمول ا كوبر صربیث اربشاد فرما تے سنا .

بریجی ہوسکنا ہے کہ وانغ عدریکے شا بدمرصن بہی نبین صحابی شہ رہے ہوں بلکہ ان کے علاوہ اور بھی کھیے افراد اس جمع بیں موجود ہول مگر وہ ایسے بنون کریند کی وجہ سے ندا سطے ندگو اہی وی جیسے المن بن مالک اے معزت اربار میں ان ایسے ندا سطے ترکو اہی وی جیسے المن بن مالک اے معزت اربار میں ان اندان سے ذوا کیوں ؟ تم جی دیکوامعاب بنوم (باق الکی معزب)

وعنیسده جس کے نتیجہ بیں وہ بدد عائے ایرالمومنین کا شکار ہوئے۔
عزصیکہ باوجودان سب باتوں کے ۲۰ صحابی اکھ کھر شدم و کے اور گوا ہی
دی اگر امیرالموئین کو مو قع ملیا کہ آب اس محل پر رحبہ کے دن ہر بھتیہ
حیات مرد وزن ، ہر صنعت کے اصحاب کو اکتھا کر سکے اوران کو
ویسی ہی فتم دیجر گوا ہی طلب کرنے میسی آپ نے رحبہ میں قتم دے کر
گوا ہی مانگی متی تو نامعلوم ایسے کینے تیس گوا ہی دینے کے بیے اٹھ کھر کے
ہوتے ۔ یہ خیال تو رحبہ کے دن کے متعلق ہے جو واقد عدیر کے کیسیں
ہوتے ۔ یہ خیال تو رحبہ کے دن کے متعلق ہے جو واقد عدیر کے کیسیں
برسس گزرنے کے بعد بھوا اب دراموجیے کہ اگر امیرالمومنین کو ایسا موقع
سرزمین حجاز برملتا اور وانڈ غدیر کو اتنی مدست نہ گردی ہوتی میتی رحبہ

(بقیر ماسشید من ترمش) کی طرح بروز غدیر بغیریم سے ایسٹ دات بوتے نے سے بیں کھرفے ہوکرکیوں منہیں اسس کی گوائل دیتے ؟ انفوں نے کھا مصوریں بڑھا ہوگیا ہوں بوری طرح یا دبھی منہیں رائا۔ امیرالمومنین انے خرابا ، اگر تم نے برجبوث بولا ہے تو مذا محتیں ایسا سپید وائع لگا دے میں کو عمامہ بھی دجیبیا سے ۔ اس ابھی اسٹے نے متے کران کا چہرہ برص کی وجہسے مہید ہوگیا۔ اس وامتر کے بعد الن کہا کرتے تھے اصداب تنی و عدوۃ المعب و المعصالی میں نیک بندے (ایرائوینین) کی بد دھا جھے گھ۔ گئی ۔ یہ پورلوانڈ ابن تیتب نے معارف صوب ابردری کیا ہے الم ابورے ممند حلد المحدول وائن بر مرد وابیت نی بعد معارف صوب الم بردری کیا ہے الم ابورے ممند حلد المعرف الموب کی اس وافذ بر دریشی برقی ہے ۔ اس روایت کے الفاظ بی : دخت احدول الاشلاشة نے میتو حوا، فائم ابرائی شمنی د اسٹے معارف المحدول الاشلاشة نے میتو حوا، فائمہ ابتا بھے مدے دعو مندہ ۔ ایرائومین کے فرانے پرتام محارف المائی دی ۔ بین شمنی د اسٹے وہ کہ بردیا کا شکار ہوستے ۔

کے دن کک گر رہی تھی اور آپ ای طرع قلم دے کر لوگوں سے گوای طلب
کرتے تواس صورت میں کنتے لوگ اکھ کھڑے ہو سے اور گوای دیتے۔
آپ ای پر اچھی طرع تؤرکریں تواسی ایک واقعہ کو حدمیث غدیر کے
توانز کی قوی ترین ولیل پا بیش گے . وافغہ رصبہ کے متعلق جور وایات کتب
اما دبیث وسنن میں موجود ہیں انتھیں جمی فرا دیکھیے ۔

ین ارتم کی میں است کے میں است کے میں ہے ابوطنیل فرائے ہیں کہ امیرالمومنین اور میں کہ اور طنیل فرائے ہیں کہ امیرالمومنین

نے رحبہ ہیں نوگوں کو جمع کرکے ارمشا د فر ایا : * کہ ہرمردمسلم کو حس نے رسول کو غدیر حمٰ میں ارشا و

فرمات سنا سوخدا کی متم دتیا ہوں کر اکھ کھوٹا ہوت

آب کے اُسس متم و بینے پر ۳۰ افزاد اٹھ کھرائے ہوئے ۔امام احمد کیتے ہیں کہ ابوننیم کا بیان ہے کہ بہت سے لوگ اٹھ کھرائے ہوئے اور انھوں نے اس موفع پرجیٹم دیدگواہی وی ۔جب دیول مے مفرست علی کا انھ کرائر ضطاب کیا تھا کہ :

"كياتم جائة ہوكہ بين مومنين سے زياده ان كے نفرس پر قدرسند واختيار ركھتا ہوں؟ سب نے كہا: بيتك بارسول الله ، أنخفرسناك فرايا : توجس جس كا بين موال ہوں على اس كے مولى بين - خدا وندا ؛ تو دوست ركھ اس كو جوعل كو دوست ركھے - اور دئتن ركھ اس كو جو على كو دئتن ركھے "

ابوطفیل کیتے ہیں کہ میں رحبہ سے نکلا اورمیرے ول میں برا ا خلمان

معادكاً وجهور الين في اس معربت بركون على بين كيا) مين زيدين ارتم كي فدمت میں بہنیا اوران سے رحبہ کا وافغہ بیان کیا کر حفرست علی کو میں نے ایسا ایسا کیے سنا - زیرین ارقم نے جواب میں کہا کہ : " تم اسے على نىمىنا بى ئے خودىمى ديول كواليا كيتے منا یں کہنا ہوں کہ زبدبن ارقم کی گواہی کو رحبہ میں امیرالمومنین کے بیان کے ساتھ ملا نیا ما سے تواس مدمیف کے ۳۲ گواہ ہو مائے ہیں۔ ایک بالمونی دوررسے زبربن ارخم اور وہ ۲۰ معابی حنیوں سے رحبہ میں گواہی دی تنی ۔ أمام احدث مند ملوا صف ١١٩ برحفرست مل كى مدميث عدارَهن بن الى ييلى الله دواميت كرك مكمى ب رعبدا رحل بن الى بيل كمية بي كر : " میں رمبر میں اس مونع برموج و مقا اور میں سے خود حصر ت على كولوگول كوفتم دسيت مسفسنار آب فرمارسب نف كه مير) فتم دنيا مول مراس شف كوجس شد مدرعم من رسول مكو : "مسن كنت مولاه فهذاعسل مولاه "كمة منا ہو اٹھے کھرا ہواور گواہی دے اور دہی شخص اسکتے جس

نے اپنی اُ بھوں سے رسول کو دیجھا ہو اور اپنے کا فال سے کہتے سب نا ہو "

عسب دارمن کیتے ہیں کہ:

" بارہ بدری صحابی اکٹے کھرٹے ہوئے۔ بیں آج تک وہ نظر معبولا بنیں ان وگوں نے کہا کہ ہم گواہی دینے بیں کہ ہم شعد مول کو غدرے نیں کہتے سفنا کہ کیا میں مومنین سے زیاده ان کے نغرس کا مانک و مختار نہیں اور میری از واج کیا ان کی ما بیش نہیں ؟ ہم سب نے کہا : بے شک یارول انٹد ، تب آ کفرست م نے فرایا : کد حس حس کا بین مول ہوں علی اس محمول ہیں ۔ خداوندا تو دوست دکھ اس کو جو علی کو دوست رکھے اور دسٹن رکھ اسس کو جوعلی کو دشن رکھے ۔ "

ای صغرکے آصنہ میں اہام مذکورتے دومرے طریقے سے ای روات کولکھا ہے جس میں ہے کہ :

ا آنخفزست نے فرمایا بکر خدا وندا نو دوست رکھاس کوجوان کو دوست رکھاس کوجوان کو دوست درکھے۔ کودوسست درکھے اور دیش رکھاس کوجوان کو دیش درکھے۔ اور مدد کراس کی جوان کی مدد کرسے اور ذہیں وخوار کراسے جوان کی مدد نرکرسے "

عبدالهمل کیتے ہیں کہ :

"سب آئھ گھرطے ہوئے ، بین آدمی باوجود کیہ وہ وافغہ فدیر میں موجود سے دین گواہی وینے کے بیے ند کھڑے ہوئے ۔ امیرالمومنین کے ان کے بیے بددعا فرمائی اور وہ سب آپ کی بددعا کا شکار ہوئے ؛

اگراکب مصرست علی اورزید بن ارخم کو مجی ان پارّه بدری محاب کے ساتھ ملا ہیں تو جوّدہ بدری اصحاب ہوجائتے ہیں۔ وافغہ رحبہ کے متعلق جوحد شیں اور روایا سنت کتنب احاد میث کوسٹن ہیں موجود ہیں ان پرعنو ر فرائیے نو آسپ کواندازہ ہوگا کہ اس وافغہ میں امیرالمومنین کی کہیا حکمت

كارفرمامتى بؤمن دراصل ييمتى كهاسس صدمييثي غديركي نشرواشاعست

ہم گیر ہومائے جو ناوانف بنی ان کو تھی معلوم ہومائے۔ ایک ایس ایسا ہی موقع مصرت مظلوم کر الا امام حین م کو بھی عہد معاویہ ين سيش آيا .آب ن مجى اميرالونين اكراء اس مل برحت كا اعلان كيا . ج *محمونغ برمیب عرفامن میں لاکھون مسلمان موج* دشھے آپ سے ایسا فقیم و لین خطیدارست دفراً با کدکسی سے ایسا مضا صنت و بلاعست میں ڈوبا ہوا کلام مصنای نہوگا ۔ امس خطبین آب نے وانعہ غدیر کا حن اوا کر ویا .

ا مام مغلوم کی اس نغریرسے مجی مدمیت، غدیر کی شهرسند اورنشروات میں پڑا از ہوا۔

باتی تو انمهٔ معصوبن کامجی اس مدمیث کی نشرواشاً عست میں برایا مكيان طرزعمل ربار مخلعت طريقوں سے ایھوں نے اس مدمیت کی نشروات خرمانی چنانجه وه برسال ۱۸ وین ذی الجه کوعید کا دن فرار وسیتے رہے'اس ون مسرسند وشادِ اتن کا اظها رفراتے ، خداک نوسشنودی کے بیے نمازیں برمصة روز مركمة وعائن كرق أور زياده سه زياده نيكي واحمان فرات سشكرگردارى يى اس مست كى جس سے خدا وند عالم سے اس تاريخ بيس ا بينے بندوں کو نوازا تھا ہین امپرا لمومنین کی خلا صنت کا اعلان فرایا تھا ۔ آپ کو عهده اماست تغویش کیا تھا۔ برحفزاسنداس تاریخ میں برنسیت اوردنوں کے حنصومیں سے ساتھ ملذرم فرائے۔ اپنے میال کے بیے سامان را من پیدا كرت البية وسين وبرادرك ملاقات كومات البيني مسايول كرسانة حن سکوک فرمانتے، اورا نخیں سب با نؤں کا اپنے دوسنوں کو بھی حکم نینے۔ اسسی وجہ سے ہرسال ک ۱۸ زی الجرسشيبوں کے نزويک عسيبدكا

دن ر ۱ - *برزمان بی او دبر تنهیمی سنت*بعهاس دن مسیدول بی*ن عب*ا دست کرتے ہیں ۔ کلام محبب دکی زیا وہ تلاوست کرنے ہیں اور ما تور دعا بی*ں بڑھتے ہیں خلاف* عالم کاسٹ کرا واکرتے ہیں کہ اس نے آج کے دن امیرالمومین کوامام ہاکر دمین کو كامل اورائى منىت كوتمام كيا يجراكب دوسرے سے ملظ ملاتے لي اظهار خوشی و مترت کرتے ہیں ۔ خوالی خوشنو دی کے بیے لوگوں کے ساتھ نیکی واحمان کرنے ہیں .ا بینے کسنشنز داروں ، محسابیاں کی خومسٹسی کے اسباب فراہم کرتے ہیں . نبزاى تاديخ بس برسال شيد مزارا فذس اميرالمومين كى زيادست كا شرون ماصل کرتے ہیں ۔ ہرخطہ زمین سے لا کھوں ک بقداد ہیں رومنہ اقدس پر شیعان امیرالمومین المجتمع موست بین اکداسس دن وه می خدای ای طرح عبادت كرى جس طرح ان ك ائم معصومين أج ك ون كياكرست محصر روزه ركه كرتماني بطرہ سے مذاوندعالمسے تو بہستنغار کرے اور تغرب و موسشودی الہی کے لیے نیکیاں کرنے معرفہ وخیرات دسکواوراس وفنت تک رومنہ سے ماتے تنہیں حبب تکب که رومن_ه مبادک سے حجیط کر وہ زیاریتی زبطِ مواہین جوامین ا عشستہ **ما** ہرن سے منقول ہیں ، جوامیرالمومنین کے مدارج عالبہ اور مخصوص گرافقد ر مفنائل ومحامدُ دین اسلام ک منیاد کومفنیوط واسنوار گرنے کے بیے آپ ک محنت ومشغنت ، حصرت مرور کائنات کی مدرست نیزا ب کے اورخصومیات و

کے علامہ ابن اشریے تاریخ کا فی مبلہ معنی اما میں نسبلد وانقات ہو ہم مکھا ہے کہ اس سال مارڈ کالمجرکو معزالدولرنے مکم دیا کہ نبداد میں ارائشس کی جائے ہیں پُرحِیْن خوشیٰ منایا گیا باجے بجائے تھے رشب کو بازار کھلے دہے جیسا کہ عیدکی واتوں ہیں جمواً وستور سے ریسب عید غدیر کی پی سعی میں بہوا۔

فضائل مبسس بین به مجی ہے کہ اکففرسٹ نے آپ کو اپنا مانشین بنایا اور
ایم عدر آپ کی خلافت کا اعلان فرمایا ان سب باتوں کی گوائی پرسٹس ہے
شیعہ ہرسال ایسا کرتے ہیں ، ان کا وتیرہ بن جکا ہے بہتیوں کے خطبار و
مقردین کا کوستورہ کہ وہ ہر تنہر میں ہرمقام برہراپنی تقریبیں مدیث فدیر
کو بہترین کا سور اوربہت ، ی عمدہ بیرا بہیں بیان کرتے ہیں ان کی کوئی تقریر
مدیث فدیر کے تذکرہ سے فالی نہیں ہوتی ۔ اسی طرع قدیم شفرار اور نے دور
کے شفراد کی بھی یہ عادت ہمبشر ہی کہ وہ اپنے فقا مؤس وا قد فدیر کونظم کرتے
سیمشواد کی بھی یہ عادت ہمبشر ہی کہ وہ اپنے فقا مؤس وا قد فدیر کونظم کرتے
آئے ہیں ہوئے۔

آبذا سنبوں کے بہاں جس مدیث کو اتن ایمیت ماصل ہواس کے بطریق ابن سنب کو اتن ایمیت ماصل ہواس کے بطریق ابن میت وسٹ بال میں بطریق ابن میت وسٹ بھال المبیت وسٹ بھال المان اللہ بالمن میں بند کے الفاظ بیں محفوظ رکھنے ہیں مبنی امتیاط کی اور اسس کے تعظ وانصن با طریق استام بیا وہ انتہا درجہ کو ہی ہوئی تھی .

آب شيع كنب اماديث ملاحظ مرايس ان مين به مديث يے شارط ق و

اے جنب کیت این زید کے کچے اسٹمانیم پہلے ذکر کر آئے ہیں جن میں کا ایک شعر یہ تھا ؛ یوم الدوس دوس عندیو عنم (مَدَرِحَ کے میدان میں معزست مرور کا نماست نے آپ کی مثلاث کا املان کیا کاش پیڈیراکی بات مان مباتی)

مشبورشا وابرتمام شدا بضنفیده بین کها (بیشناداس کے دیوان بی موجودی) ویوم العندبواسننو متم الحق احساس بدیدها دما فیها حسماب و لاسستر (الی تعوال کلام) اسسنادسے مروی ہے جس کا اندازہ نہیں کیا جاسکتا ۔ اگراس کی زحمت گوارافوایش قرسنیوں کے نزد کیب اس معریث کا متواتر ہونا دوڑِ دکشن کی طرح واضح ہوجائے بلکہ میں تو یہ کہتا ہوں کہ بلحاظ اصولِ فطرت معزات اہل سنست کے پیماں مجی اس معرمیث کے متواتر ہونے میں کوئی شکس نہیں ۔ صاحب فتا واسے حامد ہیا لیا سقصب شخص مگرا کھوں ہے میں اپنی کتاب الصلاۃ الغائزہ نی الاحادیث المتواترہ میں اس مدمیھ کے منوائز ہونے کا صاف صاف افر ادکیا ہے ۔

علامرسیوملی اورائیس جیسے دیگر مانظان مدسیف مے بھی اس مے توانز کی تقریم کی ہے۔

عُلَا مہ بریرطبری جن کی تغییرسشہ درہا در تاریخ بھی اورا ممدین محادث سعبد بن عفدہ اور محدین احدین عثان ذہبی نے تواس حدمیث کواتٹا اہم سمجہا کہ مستقل کتا ہیں محضوص حدمیث عدیر برلکھیں اوران تمام طریع دں کو اکٹھا کرنے کی کوششش کی جن طریق وں سے یہ مدیریث حروی ہے۔

علامہ طبری ہے اپنی کتاب میں پچھینز طریقوں سے اور ابن معذہ نے اپنی کتاب میں ایک فتو یا کے طریقوں سے اس مدریث کو لکھا ہے ۔

کے صاحب فایۃ المرام شے اپی کتاب کے سولہوں باب من ا ۸ پرتفریج کی ہے کہ ابن ہور فیصوسیٹ غدیر کی ۵ ہ طریقوں سے روایت کی سہے اور اس کے بیے انفوں نے ایک منتقل محالب الوالیۃ تصنیعت کی اسی طرح ابن عقدہ نے مجی صوبیٹ غدیر سے مومنوع پر ایک سنقل کتاب کھی اوراس میں ایک موبا نے طریقوں سے اس صوبیٹ کی روایی درے کیں اور عاصرا بھربن محربن صوبین مغربی ہے مواصت کی ہے کہ ذہبی اور ابن معقدہ دو نؤں نے اس صوبیٹ بغدیر بہتنا کہ کا بیں اکھیں کا اعظر تروعوں کی کتاب (اِتَّی الْکے صفریہ) علامہ ذہبی ایسے مند برمتعصب شخف مے مجمی اکثر و مبینز طرق کو بیج قرار دیا ہے۔

فایتدالمرام کے سولہویں باب میں ۸۹ مدیثیں بطریق ابل سنت مذکور ہیں جس میں واننہ غدر کی ابل سنت مذکور ہیں جس میں واننہ غدر کی اذکر ہے اور لطعت یہ ہے کہ یہ ۸۹ مدیثیں ان روائتوں کے علاوہ ہیں جو ترمذی ، نسائی ، طبرانی ، بزار ، ایوبیلی نیز اور بہبت سے علمارا ماہ نے ذکر کی ہیں .

اورعلامیسیولی نے اپنی کتاب تاریخ الخلغار میں ہنمن مالاسندا میالمومنین ^ع اس مدیبیٹ کو ترمذی سے نقل کیا ہے۔ اس کے بعد لکھتے ہیں کہ :

« اسس مدیث کوابام احدید مصرت علی ، ابوایوب انصاری » " اسس مدیث کوابام احدید مصرت علی در ابوایوب انصاری »

زیربن ارتم ، اور عرا وذی تم سے روابیت کیاہے ؟

اس کے بعد لکھتے ہیں کہ:

" ابویبل نے ابوہ رہے سے اورطبران نے ابن عمر ، مالک بن سوپرسٹ ، صبتی بن جناوۃ ، جرہر ، سعد بن ابل وفاص ، ابوسسید خدری ا ور اکنس سے رواہت کیا ۔''

اسس کے بعد لکھتے ہیں کہ:

« بزارنے ابن عباس وعمارہ وبریدہ سے روابیت کیا ۔ . . . المخ »

(مبنيه ماسشير فردشند) نتخ الملك العلى معجدت مديث باب ربية العلم على كا خيطب

ا علاسا بن جو کی معصواعت محقد إب اق ل على بيم س اس کی و مناحت کى ہے -

ملے مسندملدا دل محے مغی ۱۳۱ پر ابن عباس کی مدمیے سے بھی کسس کی روامین کی ہے ۔ نیزمن دجلوکا معنی ۲۰۱ پر برادین عازب کی مدبھ سے بھی روایت کی ہے ۔ اسس مدسیت کے بیش ازمین مروت وستبور ہونے بر بخل اور اولہ کے ایک اور اولہ کے ایک میں میں میں میں میں میں میں کے ایک وہ روایت بھی ہے جوا مام احمد شعالی مسندیں ریات بی ماریٹے سے دو طریقوں سے دوایت کی ہے ۔ ریات کہتے ہیں کہ:

ا ایک جماعت سلان کی امیرالموئین کی خدمت میں آئی اور یہ کہ کرسلام کیا کرسلام ہو آپ پراے ہمارے آقا و کو لا امیرالموئین نے ہوجھا : کون ہیں آپ دگٹ؟ اکفوں نے جواب دیا : کہ ہم آپ کے موالی ہیں ، یا امیرالمومئین ، آپ نے فرایا : میں کتھا را مول کیے ہوا ؟ مالا تکہ تم قوم عرب ہو ، اکفوں نے کہا : ہم نے دمول کو غدیر خم میں کتے سناکہ "مسن کے مولی ہیں کتے سناکہ "مسن کا مولی ہوں علی اسس کے مولی ہیں یہ ا

رياح كت بين كه:

" حبب وه میلنے نگے تو ہیں بھی پیچے پیچے چا۔ ہیں نے ان کے متعلق دریا منت کیا تومعلوم ہوا کہ یہ جبندانصار سکتے جن ہیں ابوابو ب انصاری بھی سنتے۔"

مغلران ا دلّہ سے جواسس مدیریٹ غدبرے توانز پر وال ہیں ایک وہ مدیریٹ ہمی ہے جواسیما ت لغلی سے اپنی تعنبیریں لہسللہ تعنبیر سورۂ معاریح وہ معتبر مندوں سے ذکر کی ہے کہ 1

" رسول الله نے غدر جم کے دن لوگوں میں منادی کوادی بب

أكمظ موكئة نذآب نے معنرے عل كا انته برط كرارشاد فرایا كر حس كا بين مولى بهول اس كے عل مولى بين " بربات برطر من مشهور ہوگئ اور سرشہر میں اس واقعہ کی خبر بہنی ۔ مارش بن نغان فبری کو تبی معلوم بولی وه پیمسسن کر ایکب ناقه پرسوار ہوکر دمول ک خدمت بیں پہیا ۔ نا فہ کوسٹھا کر ا ترا اورکہا: یا محد آب نے ہم کو مکم دیا کہ خداکی وحداسیت اور آب کی رسالت کی گوائ دیں۔ ہم نے آب کے اس مکم کو ما ٹا آپ نے حکم دیا کہ پانچے وقنت نماز پڑھیں۔ بم نے اسے بھی قبول کیا ۔ آپ نے علم دیا کہ ہم زکرۃ دیں۔ ہم نے اس علم ك بى نتيل ك -آب نے ملم وياكم بم الكري بم نے جي كيكيا بم شعاتی بانیں آب ک مانیں اور آب اس برمبی رامنی نہویج اور کہ نے یکیا کہ است بیا زاد مجال علی کی استین پکرا کران کو کھرا کیا ان کو ہم اوگول پر نصبیلت دی اوران کے متنلق فرایا کرجس کا میں مولی ہوں اس کے یہ علیمول ہیں ۔ یہ بات ایب ک مانب سے می با خدا ک مانب سے ؟ اکفرت نے فرایا: نتم ہے اس املہ ک جس کے سواکوئی معبود نہیں ۔ یہ خدا کی مانب سے مفاا دراس کے مکم سے ابسا ہیں نے کیا۔ بیسشن کر مادسٹ پلٹا اور اپنی سواری کی طرفت بڑھا یہ کہتے ہوئے کہ برورد گار! محراج موکمہ رہے ہیں اگر سے بے تو ہم بے أسمان مصبِّفر برسا'یا وروناک عذاب سم برسمیج یا وہ ابھی اپنے مرکب بک مہنچ بھی نہ پایا تھا کہ خداوند عالم نے اسے ا بینے عذاب میں منبلا کیا ۔ ایک بچھ آسان سے اس کی کھوپڑی برگرا جوسر کو توٹر آ جوا اسغل سے نکل گیا اور اسس نے وہیں جان دے دی اور اس واقعہ کے متعلق بر آبیت نازل ہوئی: (بیان نک اصل عبارت کا ترجہ تھا ہے اور بہت سے علیا سے المسنت نے اسس مدسین کو بطور مسلات ذکر کیا ہے ہے۔

ئے تعلی سے ایک جاعت نے علمار اہل سنّست کی جیسے ملاس سُلتی نے نورالا بھا رمسلکا پراحوال امراز دنین کا میں لکھاہے -

عد ملبي في مسيرة ملبيرم عن عوم بن احوال مجة الوداع مين كمعاب-

مكتۇپىنىلىردە

چومی محبب ورمی کصحاب کوصیح مجیس المذااس مدیث کی تاویل کرنامزوری ہے ۔ تاویل کے علاوہ ہمارے نے کوئی چارہ کاری بہیں خواہ یہ مدیث متوانز ہویا عیر متوانز ۔ اس وجہ سے معزات اہل سنت کہتے ہیں کہ لفظ مولی متعدد معان میں استقال ہو تاہے چنانچ فرد قرآن میں میں میں کہتے ہیں کہ لفظ مولی معنوں میں میں میں اولی کے معنوں میں میں می یہ نفط کی معنوں میں میں میں مداوند عالم کا یہ تول جواس نے کفا رست حظاب کرے فرمایا ہے جیسے خداوند عالم کا یہ تول جواس نے کفا رست حظاب کرے فرمایا ہے مسا واکے السنار ھی مسولاکم "

متفاراتھکا تا جہنم ہے اور وہی تمقّا را مولی ہے ؟ بین متفارے لائق ہے ۔ اور کبی نامر کے معنوں ہیں جیبے ارشا وخداوند عالم ہے : وذلك أنَّ الله مولى السندين آمسنوا وأن الكافزين لامولى لهم "

• خدا ایمان لانے والوں کامددگارے مگرکا فروں کا کو ئی مددگارینیں ۔''

اوركمجى وارث كےمعنول مي ميے خداوند عالم كا قول:

« ولكل حمد لمنا صوالي مسما ترك الوالدات والاعتربون "

" ہم فے ہراکی کے بیے مولی قرار دیے ہیں بین وارث قرار

ويهين المساور المساور المساور المساور

کمبی بمدی جماعست استعمال ہوا ہے۔ جیبے ارشاد خدا وندعالم ہے:
" وانی خفت الموالي "

یں اپنے گروہ والوں سے ڈرا ہ

محیی دوست کے معنوں میں جیسے قول باری معسال :

" بيوم لايغني مِولاً عين مولاً شبيتاً "

« یا **دکرواکسس دن ک**وجس د**ن کوئ** دوسست کمسی دوست

كے كام ذ آئے گا "

اس طرح تعظ ولی اولی با تسفوت کے مسنوں بیں اگاہے جیسے ہم توگ^{وں} کا نول کہ فلاں ، فلاں کا ولی ہے ۔

کہی نا صرومیوب کے معنوں میں نوحفزات المسنن کہتے ہیں کہ خالیًا مدریث کے اور اللہ میں اور میں اور میں اللہ میں کہ میں میں کہ خالیًا میں کہ میں میں میں میں میں میں بیاں میں ہیں یا مہیب ہیں اس کے علی مددگار ہیں یا دوست ہیں یا مہیب

برمعنی اگرمان بیے ما بین توسلفت ما نبین کے عورت واحترام میں بھی کوئی فرق مہیں بیٹر اور خلفار ثلاث کی خلائنت میں بیج ماتی ہے۔

حديث غدر کی ناویل بر قرینه

حفِزات اہل سنن کہتے ہیں کریس معنی مراد سنجم موے بریہ قریہ ہے کر حبب معزمت علی مین تنزینیٹ سے سکنے شفے اورسسانوں کی ایک جمعیت آپ کے ساتھ متی اور کچھ لوگوں کو آپ کی سحنت گیری سے تسکلیعت پہنی ایمنوں نے رسول کی خدست میں بہنے کرا سب ک مشکا بہت کی اور انہا کی برائیاں کیں ،اسی سبب سے انفی فرن اے غدیر خ میں آپ ک مدح وثنار بیان کرنے میں اننا ابتمام کیدا کیے نصائل و محامد بیان فرما ہے ۔اس سے پومن برمنی کہ وگوں کو کھورشت علی کی ملاہ قدرمعلوم ہوجائے اور حوان کے ویش ہیں ان کی انکھیں کھل مبایل ۔اس کا بتہ اس سے ملیا ہے کہ انحفرت سے اپنی تقریر میں حفرت علی کا ذکر حصوصیبت سے کیا اورسدرمایا کمجس کابس ولی ہوں علی اس کے ولی بن - ا بلبيت اكا ذكرهام طور ركيا كه مين تم مين دوگرانفتر رجيزي جيوال مانا ہوں ایک کتاب خدا اور دومرے میرے مترت و الببیت ، گویا یہ مسلمانوں سے رسول الله م كى جيلئے ميلائے وصيعت مَقى كه على اسكے مسائنہ سلوك كرنے ميں خصوصيت كے سائنہ ميريے مقون كى حفاظست كا خيال تسبے اورابل مبيت كم متلق حن سلوك كى عام وصبيت متى ر

حفزات المسنست كيمة بي كرمسل بنادير مدميث سے دقوير ات يے كرحفزت كي بكواپنا مانتين بنايا اور زم ببسكے امام بهونے پر بر مديث

دلانسن کرتی ہے۔

س

جواب مكتوب

مدسيث غديركى ناوىل ممكن نهين

مجے بقین ہے کہ اس نے جو کہ فرمایا اس سے خود مجی مطائن مہیں اور زائب کا میلان ہے اس طوت آئب کو اکفرت کی حکمت بالذائل اللہ معمدت اور حیث بنائل کے ایر اندازہ ہے ، آپ بخولی آگا ہیں کہ معندت اور حیث بنائل مکرت کے دید وسر دار اور تمام نبیوں کے خاتم شخصہ آئب بنی خوامش نفشائی سے مبی تسکلم فرائے ہی نہ تھے ۔ جو کچھ فرائے وہ ترجیانی ہوتی می دیا کی ۔ خداوند عالم سے آئب وتعلیم دے کر دنیا میں مجیعا تھا۔

سوچید آواگر طیرسام فاسنی آب سے وافغہ غدیر کے متعلق ہو چھاور
کے کہ آخر یہ رسول نے ان لاکھوں سلانوں کو غدیر خم ہیں پہنچ کر
سفرجاری رکھنے سے کیوں روک دیا ۔ کس بھے ان کو چلی لا تی دو بہر میں
تینی زمین پر مخہد ایا وریدا نتا اہتمام کس مففد کے لیے تفاکہ جو آئے برطمہ
گئے سخے ان کو واپس بلایا اور جو پیچھے رہ گئے سخے ان کا انتظار کیا اور است ر
یکس بیے میٹیل میدان میں انفیل منزل کرنے پرمحب مورکیا جہاں یا نی تفانہ
یکس بیے میٹیل میدان میں انفیل منزل کرنے پرمحب مورکیا جہاں یا نی تفانہ
مسبزہ ، بیتھ بلی زمین تفی مضیک ایسی مگریہ نے کرجہاں را ہیں بدلتی تفین اوگر موا ہونے والے تفی سیسب نے خطبہ ارسٹ د فرمایا تاکہ ماضری غیمامنر

آسٹ خاص کوپہنچا دیں اور آحسنسر بیھ خردرست کون می آپڑی تھی کہ آپ نے مسلسلہ تقریب بی کہ آپ نے مسلسلہ تقریب بیونے کی خبر دی ۔ چنا بخبہ آپ نے فرمایا : تقریب سے کہ میرے پروردگار کا مجھے بلا وا آپہنچے اور مجھے وہاں مبا نا بڑے ۔ وہال مجھ سے بھی سوال کیا جائے گا اور تم سے بھی بازیہس ہوگی یہ

وہ است کون ک محق حب کے ستلق رسول سے پر بھامانے والا مقاکر آپ نے اسے بہنچایا یا نہیں اور است سے ماز پرسس کی میا نے والی مخی کہ رسول کی س است جی اطاعیت کی گئی یا نہیں ؟

رسول کے بیسوال کرنے کی وجرکیا سی کدکیا تم لوگ گواہی نہیں دینے کہ بس میں وحتے کہ اور سول ہیں کہ بیت کہ بس میں وحتے کہ بس میں وحتے ہیں میں میں میں میں میں میں میں میں میں ہے ہور دوبارہ اور میں ہے ہوت ہے اور موسند کے بعد دوبارہ زندہ ہونا میں ہے۔ تیاست آنے والی سے اسس کے منتل کوئی مشبر بہیں اور خداوندعالم تروں کے رندہ کرسے گا۔

وگوں کے کہا: ہے گئے کہا: ہے گئے کہ ایس کے گواہی دیتے ہیں ادریہ اَ خرکس بیے رسول منے فوراً علی کا اِتھ بکرا اا دراتنا او نجاکیا کہ سبیدی نبل نمایاں ہوئی اورارسٹ د فرایا ؛

"اے نوگو؛ خدا وند عالم میرامولی ہے اور میں مومنین کا مولی موں "

ادراکپ نے اپنے اس مجلہ کی کہ ہیں مومین کا مولیٰ ہوں ' پرنٹ شریے کیوں ذرائی " کم بیں ان بردان کے نفوسس سے زیادہ تقرمت واقتدار دکھتا ہو " اور بہ تغنیر فرمانے کے بعد آپ نے بیکیوں فرمایا کہ : جس کا ہیں مول ہوں یہ علی اسس کے مولی ہیں یہ یا نجس کا ہیں اول ہوں علی اسس کے ولی ہیں یہ خداو ندا تو دوست رکھ اسس کو جوعلی کو دوست رکھے اور وشن رکھ اس کو جوعلی کو دیشن رکھے ۔ مدد کراسس کی جوعلی کی مدد کرے اور ترکب نفرت کراسس کی جوعلی کی مدد کرے یا کہ حرص کی جوعلی کی مدد کرے یا

بہ آسندرسول مے حصرت علی کے لیے خصوصیت سے ایسی وعاکیوں سندمائی جوموت ائد برحن اورسیے خلفاء کے لائن وسزاوارہے اور سیکیوں آب نے مجمع سے پہلے گوای مے لی تنی ہے کہ کرکہ:

" نمیا بیں تمقارے نفوس پرتم سے زیادہ اختیار نہیں رکھنا؟" وگوں نے کہا: بے شکب، نوبرگواہی نے کینے کے بعد آپ نے فرال: " کہ میں میں کا مولیٰ ہوں یہ علیٰ آسس کے مولیٰ ہیں یا " جس کا بیں مولیٰ ہوں یہ علی اس کے مولیٰ ہیں یٰ

اوراس کرس وج سے اہل بیت اور کتاب الہی کو ہم پہوستدار دیا آپ نے؟
اورصا حب عقل دفہم کے بیے روز قیا مدن کاسا تھیں مبتدا اور مبتی اکیوں
من رمایا ؟ کس جیز کے بیے حکیم اسلام اثنا زیر دست ابتام فرمارہے تھے
وہ کون سی مہم تقی جس کے بیدائی سیش بندی کی طروریت لاحق ہوئی وہ کون ک
خوص تقی حب کی تحیل آپ کو لوگوں کے مجرے مجت میں مدنظ تقی ۔ وہ بات کیا
تقی جس کے بہنیا نے کا خدا و ندعالم کی جانب سے اثنا تاکیدی حکم ہوا اور
آیت اتری کہ:

" ا سے رسول مینی و واسس بنیام کو جو متھارے پر دروگار کی مباب سے نازل ہوا ہے آگر تم نے ایسا زیمیا تو گویا کاررسائٹ ہی بخیام دیا "

يراتى مشديد تاكيداور وهمكى سعمننا جلنا حكم دبين كى خداك ومزوريت كيول محوس بوئى ؟ وه إسندكميا تقى مب كيهنميا ندين ديول فررب عفك كبين نتشه نه كفرط مهوما ئے اوراس كے بيان كرفے بين منافقين كى ايدارسانيوں سے بھینے کے لیے خداکی حفاظسند وجمالین کے صرورت مندجو رہے تھے ۔ اگر یہ سوالاست آب سے بچے مایس توکیا آب اتی عقل اور سمجہ رکھتے ہوئے ہی جواب دیں مے کہ ان تمام ہا توں سے خدا ورسول کی غرمن حرف یہ ظاہر کرنا کھا کہ عنسلی مسلان کے مددگار اور دوست ہیں میراتوسی خیال ہے کہ آپ برجواب دینا کیوی کھی سیسند زکرم کے ۔ مجھے وہم وگمان بھی نہیں ہوسکتا کہ آب اس فتم کی ایتی اس مكيم مطلق ، ريب الارباب ك ليه جائز مجيس ك. و مكيم مسلام خانم النبيين كىليے أب سے ببت بعيد ہے كائب ربول كے بيے ير مائز ومنامب فراري كرووائي تمام زملاحتين اورلوري فورى كوسشش ايسى جبيز واصنح كرف بين مرمت کردیں جو خور روستن اور واضح ہوجس کی وضاحت کی کو ل حزورت ہی نہ ہویا ایسے عمل کی دھنا دست فرمایش ہے وحدان ومعل سسیم واضح سمجیس بھے نوكون شك بنيي كاب يقينا بيغيم كافوال وانعال كواس سے لند وبزر تبحصته دس سنے کہ ار با سب عقل اس کو معبوسی جھیں یا فلا سفہ وصاحبان مکمت نځهٔ چينې کړي .

کول شیرینیں کہ آپ رہول سے قول و مسل کی فدر و منز است سے وائٹ ہیں ۔ آپ معرفنت و مکھتے ہیں کہ رسول کے انعال وافوال کس قدر مکمست سے بسرمین اورمث ن عصمت کے مامل ہوتے ہیں ۔ خداوند عالم جس کے متنبق فرائے :

* امنسه نفول رسول كومييع ذى نؤة عسند ذى العوش

سکین مطاع شقم آمسین و مساحساحسیم بمجنون " "بے شکس یہ قرآن ایک معزز فرشتہ (جبرئیں) کی زبان کا پیغام جو بڑا توئ عرش کے مالک کی بارگاہ میں بلند رتبہ ہے ۔ سب فرشتوں کا سروار اما ندار ہے اور (کہ والی) بخف ہے سابھی دمحر، دبوا نے تنہیں ہیں "

وہ واضح باتراں کی دمنا صت اور بدیم چیزوں کے بیان کرنے کے لیے اشنا اہتام کرے گا اوران اظہر من النشس چیزوں کو واضح کرنے کے لیے اشنا سازو سال فراہم کرے گا ۔ ایس بے دیلی وجے دلیط پیشس نیدیاں کرے گا ۔ خدا و رسول کی فاست ان مہلاست سے کہیں پاکس وصاف اور بزرگ وبر ترہے ۔ اس موقع و آب یقینا یہ جانتے ہوں گے کہ اس جلجانی دوہیر بیس ،اس موقع و محل کے مناسب اور غدیر کے دن کے اضال وانوال کے لائن ومراوار مہی معلی کے مناسب اور غدیر کے دن کے اضال وانوال کے لائن ومراوار مہی باست می کہ آب ایک ذرّ داری بوری کر دیں اور اپنے بعد کے لیے جا نسشین معین فرایش.

ا تخفزنت می کا ازازگفتگو جیے تلے الغاظ ٔ واصّی عبارست بھی پہی کہتی ہے اورعتل دلبلوںسے بھی اسی باسٹ کا نظع ولیتین ہونا ہے کہ آنخفزنٹ کا مغفد اس دن میں بھا کہ معترست علی کواپٹا ولیعہدا ورا ہے ببدمانشین و قائم معشام کر ما ہیں۔

لہُذا یہ حدیث ال تمام قرائن کے ساتھ ہے الفاظ مدیری اپنے وامن میں لیے ہوسے بین امیرالمومین کی خلاضت وامامت کے متعلق صریحی تفقیہ کسی نا ویل کی گنجاکش نہیں اور نہ اس معنی کو چھوٹ کروومرے مسنی مراولینے کی گنجائے شکلتی ہے ۔ یہ توالیس واضح چیز ہے کہ کسی دلیل کی صرورت ہی تهبي مبشرطيكه النان جنم بنيا اور كوست شوار كم.

ادراب حفزات اہل سنت جس قریند کا ذکر فراتے ہیں وہ بہت ہی رکیکہ
اور بالکل ہی غلط بیانی ہے ۔ اس میے کہ انخفزت نے علی کو دو مرتب بین کی عبائب
بھیجا بیپلی مزئید سنت ہے میں اس مزتبہ لوگوں نے امراللومین کے متعلق تہمت تراستی
کی اور دیسنے والیں اگر دسول کی خدمت میں شکا تیس کیں جو دسول کو کہبت
ناگوا مرکز رئیں ۔ بیہا تنک کو غیر علی وعن منسب کے آثار آپ کے جیرے سے نمایاں
موے جس کا ایت ہے یہ ہوا کہ مجھر کسی کو جسارت ایسا کرنے کی زہوئی۔

اور دو دری مرتب سندہ ہیں گئے ۔اس مرتباپ نے صفرت علی کو علم کسٹ کر دیا اور مربر عامہ باندھا تھا اور بہ فرایا تھا کہ روانہ ہواور اور ھر ادھر توجہ نرکزا بھر مند ہوئے ہیں ہے کہ دوانہ ہواور اور ھر ادھر توجہ نرکزا بھر مند ہوئے و بال ہے مکہ بہنے کر محبہ الوواح ہیں دبول کے ساتھ ہو گئے اس مرتبہ دلا کہ کہند و دبال سے مکہ بہنے کر محبہ الوواح ہیں دبول کے ساتھ ہو گئے اس مرتبہ دلا کہ کہند دلا مرکب کی فوہست آئی دیمی دبھن کو دیمی کرنے کا موقع ملا ۔ لہندا یہ کہنا کہون کر درست ہو مسکتا ہے کہ دبول سنے غدیر حم میں ہو کچھ کہا اس کا سبب وی علی پراعتراض کرنے والے ہیں یا کھڑست سنے دیمنان و مخالفین امیرالوشین کی رق میں ایسا کیا ۔

علاوہ اسس کے محض ملی کی مخالفت و دُشی توالیں جیز نہیں ہوسکتی کہ اس کے معض ملی کی مدح وثنا کرنے سکے لیے اتنا اہتمام فرما بیں۔ اس کے مبہ سے دمول علی کی عدح وثنا کرنے سکے لیے اتنا اہتمام فرما بیں۔ تبتی زمین پرملتی وحوب میں سلمانوں کو میٹھا کے بالانوں کا مبتر تنبار کرا ہے اسس شدوعہ سے علی کے متعنا کل بیان کریں ۔ ہاں معا ذاللہ دسول کو اگرا پشے افعال و ا فذال البطان مدوارا وه بين اسس فدر مرزه كادم مه ليا جائة تويد وومرى

است هر آب ك شان حكيان اور انداز عصمت ان مرز ذات وبهلات
ست كهين باكب وما من سهد فدا و ندعالم توابيته رسواح كمنتلق فراكب :

« است لغنول دسول كوب ومساه و دبنول شاعر قليلا مسا تذهب و دنون ولا بقول كاهن قليلا مسا تذكرون ولا بقول كاهن قليلا مساند ذكرون من دب العالم بن »

اگرم ون معزمت علی کے فعائل کا بیان کرنا یا مخالفین کی رقر ہی آنخفزت کو مقصود ہوتی تو آپ کہ سکتے شقے کہ یہ میرے چپا زاد مجال ہیں ،میرے واماد ہیں ،میرے الجبیت کے سبدوم وار بھی ۔ تم بولسان کے باپ ہیں ،میرے الجبیت کے سبدوم وار بھی ۔ تم بولسان کے ساتھ بیسلوکی کرکے مجھے اذبیت ندیج بنیا نا یا اسمی یا اور باتیں فرما سکتے ستے جن سے موت آپ کا ففنل ورشرمت اور طالت قدر الله ہم ہوتم نے طاہر ہوتی مالانکہ الفاظ معربیت سے وہی باتیں ذہن میں آتی ہیں جوہم نے بیان کیس ۔

البذا حدمیث کے بیان کا کوئی سبب بھی ہوالفا ظاسے بوسی فوراً فرہن میں آئے ہیں وہی مراد ہول گے اور اسسباب پراعتنا نری مبائے گی۔
اس مدمیث غدر میں اہل بہت کا جو ذکر ہوا تو یہ ہمارے ہی بیان کے ہوے معنی کا مؤید ہے ۔ بہنے جو کچے بھی ہے اس کی تا بیدہوتی ہے کے ہوئ معنی کا مؤید ہے ۔ بہنے جو کچے بھی ہے اس کی تا بیدہوتی ہے کیونکہ دسول کے اس حدبیث میں اہل بہت کو قرآن مجید کا ہم بلد قرار دیا ہے اور ارباب عقل کے لیے تنوز ہوا بہت فرا با ہے ۔ چنا نجہ ادر شاد فرا با کہیں تم میں ایس چیزیں حجود ہما ہوں کہ اگر تم مصنبوطی سے تقامے رکھوتو کم بھی ایس ایس چیزیں حجود ہما ہوں کہ اگر تم مصنبوطی سے تقامے رکھوتو کم بھی گراہ نہ ہوگے ۔ ایک کتاب خوا ، دو سرے عمر سن واہل بہیت یہ ۔ آپ نے الیا

اس بیے کہا اوراس دجہ سے سندما پاکرامسند واسے جا ن دیس ،سمچر لیس کرہول گ کی ایچی مبسنند ہونے کے بعدلس ان ہی و وجیبیسنروں کی طرمث رجوع کسیپ مباسکتا ہے ، بہی دولوں بھروسہ کے لائق ہیں ۔ انٹر اہل مبیت کی اطاعست و اتهاع واجب ولازم ہونے کا آپ ای سے اندازہ کرسکتے ہیں کہ آنحفزت نے النیں کتاب خدا کے برا بوت راردیا ہے۔ کتاب خدا جس کے پاس باطل کاگزدت کسے بنیں اس کاہم لّہ انہبر مسنسرایا ہے لہٰذا جس طرح کتاباہی کو حبور کرکسی دوسری کتاب کی طرمت رجوع کرنا جائز بنهیں موسکتا۔ ببینه اسی طرح ائمة المبسين كوج وُرُكان كے مُنْكُعن كى الم كى طرحت دِج ع كرنا ما تزبہ ہيں اور آنخفزست کا یہ فرمانا کہ بیہ دولؤں کمبھی ختم نہ مہول کے پاکسی حبوا نہ ہول کے بہا كىسكىمىرے باس تومن كوٹر برہنے بياں - دليل سے اور واضح وليل سے كم سخعترست مے بعد زمین ان ائتہ اہل سبیت سے خالی نہیں ہوسحتی ۔ ان میں کا کوئی ندکوئی فردمبرزماندا وربهروقست میں حزورموج و رہے گا جو ہم بلّه محتاب الني كاموكاً .

اگراک اس مدین براجی طرح مورد تدتر فرمایش توید حقیقت ایپ پر منکشف موگی که انخفارست شی به ارشاد فرما کرخلاف مند کو انمشه طام بری بی بین مخترکر دیا ہے ۔ ان مح عسلا وہ کی گخیا کئن بی منہیں نکلی ۔ اسس کی تائید اس مدین سے بھی ہوتی ہے جے امام احمد نے اپنی مسند جلد کا صغر ۱۳۲ پر زید بن ثابت سے روایت کی ہے ۔ زید بن ثابت کہنے ہیں : مدکم تخفارت کے فیارشاد فرایا : بین تم بین اپنے دوجانشین مجود سے میا ہوں کتاب خلاجو ایک رسی ہے جس کا سلسلہ جھود سے دیں تک سے دومرے میری عترست والمبدیت : اسمان سے زمین تک ہے دومرے میری عترست والمبدیت :

آپ بے فیر میں کے کہ عترست کی اتباع کو واجب ولازم کرنا بعیبنا میلونین کی اطاعت واتباع کو واجب کرنا ہے۔ اس لیے کہ آپ راس ورکیس المبدیت مقص لہٰذا صربیت فیدیم و یا اس جیسی دیگر عربیس بیسب کی سب حفرت ملی ہی کی امست ثابت کی امست ثابت کی امست ڈابت میں جن میں المبدیت کی اماست ثابت موتی ہے جو عدیثیں المبدیت کے منتلق ہیں جن میں المبدیت کی اطاعت و اتباع کو واجب فرایا ہے رسول کی ان عدیثوں سے آپ کی الماست یوں ثابت ہوتی ہے کہ آپ راس ورقیس سے عزرت والمبدیت کے دوہ المبدیت موتی میں درجور واتیس خو د میں کی مزدست خدا ورسول اس ورقیس سے عزرت والمبدیت کے دوہ المبدیت اور جور واتیس خو د المبدیت کے متعلق وار دہوئی ہیں ان سے المحافظ آپ کی گواں قدر شخصیت امیر المومین کی کورس سے المبدیت ہوتی ہے اور یہ بیت جاتے ہوتی ہے اور یہ بیت المب ہواں شخص کے ولی منتے جس کے رسول اللہ ولی سے د

فقط والسسلام ، • •

مكتوب مبرر

حق كا بول بالا

آپ ایسے زم سب وابع میں اپنا مطلب بیان کرنے والا بیں ہے منہیں پا اور نہ آپ کے جن قرائ کا در آپ کے جن قرائ کا ذرک استندلال کی میں دیجھا ۔ آپ ہے جن قرائ کا ذرک کیا ان بر کورکرتے سے ہیں اس نتج بر بر بہن کا کھیٹ سے اور نقیین کے ہیرے مغیاب ہے ۔ شک و رستی مغیاب ہے ۔ شک و رستی اس کے اور لی جوٹ سے اور نقین کے جیرے سے شک کور کے برائ ندر پاک نقین اور شیا مارٹ کے در باتی ندر پاک نقین اور شیا مارٹ فاری مول سے مراد اول بالتقریب سے نزک کم کھی اور ۔ کیونک اگراس لفظ سے ناصر یا محب وظیرہ مفقود ہونے تو مجر مارث کو عذاب کا سوال کرنے کی مزود رہ بی نریخی لبنا لفظ مول کے متعلق آ ہے کی حبو

رائے ہے دی بایر تحقیق کو پہنچتی ہے اور وی درست ہے۔

احصاليسا كيول نهبي كرآسي بمبى اس مدريث كى تعنيرس وى مسلك اختباركن جوجارك بعن علار مثلا علامدابن حجرمنى ف ابى كاسب صواعق مخ زیب اور علامه صلی نے میرسند حلبیہ میں اس حدیث کی نفنیہ میں امنتیارکبائے وہ کہتے ہیں کر ہم سسلیم کرتے ہیں کرحفرت عسل او آلی بالامامست سقے۔ آب ہی کے لیے امامنت زیباستی لیکن مقصود نتیم کا ردّ مآلِ كارہے بيني دِيولُ كامقصد بريخاكه حبب خلفار ثلاث كا دورگزد ملے كا ورمعزت على كولوك ابناام منتنب كرس كة تواس ونست صرف حفز علی ہی او کی بالاماست ہوں گے ۔ اگر بیسنی نہ لیے جا میں توخرا بی میانازم اتی ہے کہ آنحفزرن کی موجود گی ہی ہیں حصرمن علی کا امام ہونا لازم آگا ہے اور یہ طاہرے کہ انففرت کے مین حیاست آب کے اسام ہونے کے كوئى مىن نهيں البذامقصود ميغير بير بقاكر حبب لوك آب كى مبعيت كري، آپ کوخلیغه نتخب کرسی آپ کی اماست براجاع کرس اس وفنت آپ بى اول بالامامىت ہى ـ

آگریدمعیٰ ہیے جائیں توفلغار ُلانڈ کی خلانست معرص خطر سی پنہیں پرلو تی۔ اگر یدمعیٰ ہیے جائیں توسلعت صالحین جوحفرست علیٰ کو چوتھا خلینہ انتے ہیں ان کے دامن پرکوئی دصر پنہیں آٹا اور آ ہے جوثا مبت کرنا جا ہتے ہیں وہ بھی ثانبت ہوجائے گا۔

جواسب ِمکتوسب ^{مس}

آب نے فرمایا کرم آب کے کہنے سے یہ مان میں کہ عدریث غدیر

یں مفزست علی کو جواول کہا گیاہے اس سے معللب ہے کہ حفرت علی اس وقسنت او بی بالاما مست مختے حبب مسلمان آسپ کوا ما مست کے سیے منتقب كرلس اورآب كى مبيت كرس للذا أسيسك قول كى بنا پرحفزت على كا اول بونا جس كا اعلان دمول سے بروزغدر كيا بخا باعتبار مآل و نیتجه کے تھا ۔حفرت علی زمانہ استدہ میں اول بالاماست تھے نی ای ل نبین عب وتست دَمول نے فرمایا تعااس وقست بنیں ۔ دومرسے الغاظیں آب كامطلب برب كرحفزت على بالغوة اولى بالاما مت يتقع بالفغل مہیں تاکہ یہ مدمیث آب کے نہیے بین خلفار کی خلافت کے منانی زہریبہ احما اسبرب مگريم آب كوعدل والفاف كا واسط دين إي آب سے نقشم ہے مجھتے ہیں کرا ب اپنے قول پر مے رہیں گے اس سے میں گے تو نہیں ؟ تأکہ ہم بھی آپ کے قدم بے قدم جلیں ، آپ ہی کی دوسشا ختبار کریا۔ اور کیا آب رامی ہیں اس پر کدیہ سہرا آب ہی کے سرباندھا جائے یااس فؤل کی آسپ کی طرحت نسبست دی مباسئے کرہم بھی آسپ کے ہم خیال م تمہنوا ہوجا بیں ۔

مجھے توبین ہے اور کامل بھین ہے کہ نہ آپ اس معیٰ ہر سے رہیں گے اور نہ اس پر رامنی ہوں گے۔ ہمیں توبھینی طور برعلم ہے اس کا کہ آپ خودان ہوگوں پر تعجب کرتے ہوں گے جواس معیٰ کے مراد ہونے کا اسمال بیدا کرنے ہیں حالانکہ نہ توالفاظ معدمیت اس معنٰ کو بتاتے ہیں نہ مدیث سن کر کسی شننے والے کے ذہن ہیں ہدمین آتے ہیں اور نہ یہ معیٰ مکیم اسلام کی حکمت و بلا عست سے لگاؤ رکھتا ہے نہ غدیر کے دن حصرت کے کے دران سے اس معنی کو کوئی مناسب ہے اور زان عیر معولی احت ال واقوال سے اس معنی کو کوئی مناسب ہے اور زان

قطع مستدائن سيجن كابم في سابن من ذكركيا كونى رلبط ب اور ندما رمث بن تعان فبری کے سمجے ہوئے معنی سے کو ای تعلق ہے۔ علاوہ اس مے آب کا به كهنا كه حصرمت على او لي إلا ما مست جو تخصروه باعتبار نيتجد وماً ل كاركم يقط يىعموم حدميث سے مرتبط بي تہيں ، الفاظ حدميث بناتے ميں كەمھارىت على سر اس تخط کے مولی تحقیص کے رسول کمولی تقے اوراک کے نول کی بنا پر ص ا بینے ہی زمان خلامنت سے ہوگوں سے مولی ثابت ہوئے ہیں للبزاآپ سے قول کی بنا پرنہ توحفزست علی خلفار ثلاث کے مول ہوئے اور نہ ان لوگوں ہیں سے کسی ایکس کے مولیٰ ہوئے جو زمانۂ خلا منت خلفار ثلاثہ میں انتفال كركة اوريه مربى طور ميارستاد رسول كيم مغائر سے رسول ان تو ان *دگوں سے یومچھا خفا کمی*ا میں مومنین سے اولی نہیں ؟ *دوگوں نے کہ*ما تنفاء بے نٹکٹ ۔ آپ ہم سب کے مولیٰ ہیں ۔ امسس پر آ مخفرت نے فرا با تحقا نوبین حین میں کا (فروا اُ فروا اُ) مولی محقا علی اس کے مولی ہیں۔ لبغیر نمی سستشنار سکے آپ نے حضرت علی کو ہر سرخض کا مولیٰ قرار دیا ۔ بطعت یہ ہے کہ حصرت ابو بکر وحیصرت عمر شنے روز غدر پرجیب رمول کا یہ ارمیشا د شنا توامبرالمونين اسے *کہ*ا کھا :

» اسے فرزند ابوطالب! آب ہرمومن اور مومنہ کے مولیٰ ہوگئے !! ان دولاں بزرگواروں شے نفررکے کردی ہے کہ معترنت علیٰ ہرمومن ومومنہ

ے مبیاکہ وارفطنی کی روامیت ہے۔ ملاحظ پومواعق محرقہ صلاع باب ادّل مفعل خاس ان کے ملاوہ کبڑست محدثین سفرا پنفا پنفوق واسناد سے اس کی روابیت کی ہے الم محدظاں قل کو مبلد اماد میٹ برادین مارت مندی ہم صفیع بردرے کیا ہے مسئل پرسبقاً ہم ذکر کم میکی میں۔ ك ولى تق على سبل الاستغراق كوئى فردمستشي وتقا.

ایک مرتبر حفزمت عرکے کہا گیا کہ آپ معزمت علی کے ساتھ ایسا مفسوص برتا وکرتے ہیں جیساکس معابی بین برکے ساتھ منہیں کرتے بعضرت عمر نے جواب دیا۔ یہ میرے مولی ہیں۔

حعزست عمر کا صریحی افزار ہے کہ آ بان کے مولی تھے جالانکہ اس وقت نہ تولوں نے آپ کو ملائکہ اس وقت نہ تولوں نے آپ کو ملائٹ کے لیے منتخب کیا کھا اور د آپ کی میدست ہی کی سختی۔ لہٰذا فظمی طور بڑا بہت ہوا کہ حصر مت علی حالاً مولی سے جس وقت ہی بی نہ سے مولی ہوگئے ۔ فعدا کے مکم سے برسرمنبراس کا اعلان کیا اسی وفت سے مولی ہوگئے ۔

دواعراً بہی نزاعی سئلیں حفزت عرکے پاس منبعد کے لیے آئے۔ حفزمنت عرفے حفزمن علی سے کہا کہ آپ نبید کریں۔ ان میں سے ایک ہے کہا: یہ بھارا نفتہ میکا بیل گے؟ حفزت عرفے میکٹے کراس اعرابی کی گردن پکڑ لی اور کھنے مگے:

> " کم بخت مانتا مجی ہے ہے کون ہے ؟ یا مقارے مول ہیں۔ اور مرمومن کے مولی ہیں اور جس کے یہ مولی تنہیں وہ مومن ہی تنہیں ۔"

امسس بارسے ہیں مبہت ہی دوایا ست وا حادمیث موج و ہیں ۔ آپ اس سے بھی ہے خبر نہ ہوں گے کہ علامہ ابن مجر کی اوران کے ہم خیالول کی اُرکع جوانخول نے حدیثِ غدرِ ہیں نسکائی ہے مبجے سمجے لیجا سے

که جیبا که دارتنای ک روابیت ہے - الما حنایہ صواحق محرقہ صلاکہ ۔ کے وادتعلیٰ نے اس واقعر کی روابت ک ہے کا حفاہومواحق محرقہ اِ بِ مفل اوّل ۔

تواسس كانيتى يه نسككے كا كومعا ذالله بيغيرم كا غدير كے ون سرفول ومغل بهجوده ا مهل مجاجات، دسول مرزه کارسمجے جائیں کیونکہ علامرابن حجری اس نزال مناق کی بنا پرغدبرکے دن اس سارے ساز وسامان ، غیرمولی ابتام کا مقصد ہی کھے منہیں نکلتا موااس کے کدرمول بربان کوناچاہتے تھے کہ علی کی حبب لوگ مبعیت كرلين تنب بياول بالامامسة مهول كئے اور بدمعنی تواليسے بہن كرمجھ واسے تونمجھ والے الجے محص بس دیں گے ۔اس معن کے بنا برام المومنین کو انتیازی کی ماصل ہوا۔ دومروں کے مقابلہ میں ہے کی خصوصینت ہی کیا ٹا بہت ہوئی اس یے کے جس کی مبیت ہوما تی امامت کے بلے جس کو مجھی سلمان نتخب کر لیہتے ۔ اولیٰ بالمامست ہوتا ۔ہسس معنی سے توصفرت علیٰ اور آپ کے ماسوا تمام صحارسیب بی برابر ہوئے ۔ اگر آب کی نرالی منطق ورست سمجھ لی جائے تو یوم فدیر دمول نے مامیلاتی وصوب میں بہتی زمین براہ کھو*ن س*سلانوں کو دوك كزاتنا زبردست ابتمام فراكركون ى ايم باست فران بمقابله وبجرامحا كون ى مخصوص نفيلت حفز سن علي كى ببال كى -

علام ابن جروی و کاید کہنا کر حفرت علی کا اولی بالامامنت ہونا مالاً اگر زمانا جائے تواس مورت بیں حفرت علی کا دسول کے جینے جی امام ہونا لازم آسے گا۔ تو برزالی فرمیب دہی ہے ، اورا نبیا روفلفار و لموک وامرار کا جو کستورہمیشہ سے جبلا اربا ہے کہ وہ بہیشہ اپن زندگ ہی بیں اپنا جانسے بین مقرر کرنے ایک اس سے عقلت سٹھا ری اورتفافل ٹی ہے حدمیث آئنت حسبی سمسنادلے ھارون حسن حوسی ، حسس مطلب پر ولالت کرتی ہے اس سے عمداً نا واقعیت کا اظہا را ورد مورت عشرہ کے موقع برا مخصرت اسے جوفرایا کھا : "فا سمعوالیہ واطبعوہ" ان کی باست سننا اوران کی اطاعست کرنا یااس جیبے دیگرارشادات پی پیر کو معیلا دینا ہے .

علاوه اسس کے اگر ہم سیم کولیں کوئی کا اول بالاما مست ہونا غیر مکن است ہونا غیر مکن اسے کے دسول کی زندگی ہی ہیں ان کا الم ہونا لازم آئے گا تو کم سے کم دسول کی آنکو سبت ہونا چا ہیے۔ آنکو سبت ہونے کے بعد سے نوصورت علی ہی کو اوئی بالاما مست ہونا چا ہیے۔ یکی ہیں فاصلہ تو زہ ہونا ہا ہیے جیسا کہ طریست و مسلہ ہیں ۔ علاے معانی وہیان کا بنایا ہوا قاعدہ ہے کہ جب کسی حقیقی معنی ہو گا وشوار ہو تو مجازی معنوں میں جو معنی قریب ترین ہواس پرعمل کرنا چا ہیں۔ ابندا مسسن کا مست مولا یہ میں جو معنی اولی بالاما مسلم معنی اولی بالاما مسلم کے حقیقی معنی اولی بالاما میں برعمل کرنا ومثوار سم میں کیونکہ بنی کی زندگی ہیں امام لازم آئے گا تو اس کے برعمل کرنا ومثوار سم میں کیونکہ بنی کی زندگی ہیں امام لازم آئے گا تو اس کے برعمل کرنا ومثوار سم میں کیونکہ بنی کی زندگی ہیں امام لازم آئے گا تو اس کے برعمل کرنا ومثوار سم کے براولی بالامامت اگر مما لا مراد لیا جائے تو سامی ایک ہی دوئے گا اور مالا اول بالامامت اگر مما لا مراد لیا جائے تو سامی بائے تو سامی بائے تو سامی بائے تو سامی بائی دہے گا اور مالا اول بالامامت اگر مما لا عمل بائے تو مہیں۔ تو یہ بائکل بی

کااحترام باتی دہے گا اور مالا اول بالا مامست مجھا جائے تو نہیں ۔ توب بالکل ہی فلط ہے ۔ مولیٰ سے اولی بالا مامت مالاً مراد لیسے پر بھی مدعت صالحین کے وامن پرکوئی وصر نہیں کاسکتا ان کا احترام تاویل کے بغیر بھی باتی رہتا ہے جیسا ہم اگذہ اگر مزوریت بیش کائی تواس کی ومنا صت کریں تگے۔

ښ

مكتوب مبراس

مىشىيول كىملىلە<u>سەلفوم كى ۋاېش</u>

حب سلعت صالحین کا احترام معفوظ ہے تواکپ نے معفرت علی کی امامت کے منتلق منبئی مدیشیں ذکر است را ایکن خواہ مدیسیٹ غدیر مہویا و بیگر امادیث توکوئ مری منہیں اور مہیں ان بیں خواہ مغواہ تاویل کی بھی منرورت منہیں برٹ بیس سند سے منتلق اور مجی حدیثیں ہیں بہت سے ماہد شدت ہے خبر ہیں برٹ مہر یاتی ہوگی آپ ایٹ بیال کی ان احادیث کو مجی ذکر فرما ہے تاکہ بمبیں مجی وا تعنیت ما صل ہو۔

جواسبب مكنؤسيب

ال بهار سے پہال اور سی بہت سی حریحی نصوص امامیت وخلانت امیرالمومین کے متعلق کسب ا مادیریث میں موجو د ہیں جن کی المسدندت کو خبر نہیں - وہ تمام کی تمام صرفی سے جی بی ، بطراتی المبسیت طاہری مروی جی - ہم چالین صرفیمیں کہ کومشائے ہیں :

ا جناب صدوق محرب على بن صين بن موئى بن با بويه قى كے اپنى كتاب اكمال الدين واتمام المنعمة بيں عبدالرجمن بن مو المام الدين واتمام المنعمة بيں عبدالرجمن بن مو واقم الم الدين واتمام المنعمة ورج ذما لئ ہے " المخفزت نے فرمایا : اسے ابن محرو، وب خوام ثیر المحفزت نے فرمایا : اسے ابن محرو، وب خوام ثیر کو لئ کی باہم مخالعت ہوں اور خیالات مختلفت موں تو تم علی ابن ابی طالب کا دامن بکر مسے موں تو تم علی ابن ابی طالب کا دامن بکر مسے دہنا۔ وہ میری امست کے الم اور میرے بعد میرے فلیفر و جائشین ہیں !!

س جناب صدوق شے اپنی اس کتاب اکماً ل میں ، دبن عبس سے روا بیت کی ہے ، ابن عباس کہتے ہیں کہ :

" رسول شے فرما یا : کہ خداوند حالم نے زمین پر نگا ،

دلالی ۔ تمام روئے زمین کے باشندوں میں مجھے

فنتن مذکر نس مذا ایم در در تر نشا نگا کی ا

منتخب فراکرنبی بنایا مجردوسری مزنبه نشگاه کی اور علی کومنتخب فراکرامام بنایا، مچرمجه حکم دیا کرمیں

انھیں ایٹا بھائی ، ولیعہد ، وصی ، جانشین اور وزيربناؤل يه اس کتاب اکمآل میں بسلسلہ اسا دا مام حبفرصا دق سے اورا مفول نے اچنے آبار طاہری علیم اسلام سے روا کی ہے کہ آنحفزت نے فرایا: « جبرئيل ابين نے مجھ سے منجانب برورد گار عالم بيان کیا کہ چوشخص علم رکھتا ہوکہ کوئی معبود نہیں سوالے میری ذات یکتا کے اور محرکا میرے بندے اورمیرے دسول اورعل ابن ابی طالب میرسے خلیفرا وران ک اولادمين ككياره امام ميرى محتين بير . تويي اس شخص كوابى دىمىست سے جنست ميں داخل كروں كا " اى اكمآل ميں جناب مىدون خەسبلىلداسنا دامام يغرصادن سے اور انھوں نے اپنے آبا وا مبدا د طاہری اسے روا بہت کی ہے کہ آنخفرسنہ نے فرایا کہ: ۷ میرے بعد بارہ امام ہو*ں گے رسب سے پہلے علی* اورسب کے ہخر میں قائم ہیں . بہمیرے ہارہ طفأ اورمبرے اوصیار ہیں 4 اسى اكمآل مين جناب صدوق مبلسلة اسنا واصبغ بن نباتيس روايت كرنے ميں - اصبغ كہتے ميں كر: * ایک ون امیرالمومنین مارست باس تست رویت لائے

اس طرے کہ آپ کا با تھ آپ کے فرزنداسا جس کا کے

انعین تقا امیرالمومنین فرمار ہے تنے کدرمول ندا مجمیم ہوگوں کے درمیان ایب دن اس طرح تشریق مجمیم ہوگوں کے درمیان ایب دن اس طرح تشریق لا کے ادران کے اتھ میں میرا استحاد را سے فقے کومیر ہے بعد مہر بنائن اوران سما مرمومن کا امیر ہے ؟

ہرمومن کا امیر ہے ؟

اسی اکمال میں جناب صدد تی مبلسلہ اساد امام رضا ہے اور

وهاین آبار طامرن سے روایت کرنے ہیں کہ : ٧ أنففرت من فرايا: جرشف به ما سها المه كرمير دین برقائم رہے آدر میرے بعد منجات کی کشتی ہے سوار ہوا وہ علی کی بیروی کرے وہ میرے ومی اورمیری است میں میرے مانشین و خلیفہ ہیں۔ میری زندگی س مجی اورمیرے مرفے کے بعد مجی یا اسى اكمال بيں جناب مدوق لبسلىدًا سناوا مام دھنا ہے اوروه اینے آبار طاہری سے روابت کرتے ہیں: « اُنحفزت من فرمایا: میں اور علی اس امست کے اب بن جس مع بميں بياناس سے خداكو بيانا اورص نے ہمیں زہمانا اس نے خداکو د بہمانا اورعلی ای کے فرزند است کے سیطین ہیں اور سرواران جوانا ن مِتَنت بين بين حن وحبين اور

حین کے لو فرزند ہوں گے ان کی اطاعت میری

ا طاعت اوران ک نا فرمانی میری نا فرمانی ہے۔ نواں فرزند قائم اوردېدى بوگا " ای اکمآل میں امام صن مسکری سے مروی ایک مدست جناب صدون نے لکی ہے۔امام س عسکری نے اپنے آباد طاہری ّ سے دواہیت کی ہے کہ : و المخضرت تعفرمايا: اسابن مسعود! على ابن ابي طالب ميرے بعد مخفارے الم بي اور نم ميں ميرے مانتين ب*ي* ۽ امى اكال مين سب اسلااسناد جناب سلان قرما في بن كدو « بیں دسول کی خدمت یں پہنچا دیجھا کر حسین گی کے زانو پر بیٹے ہیں اور رسول ان کے ہوٹروں کو چوم رہے ہیں اور فرماتے جاتے ہیں، توسید وسرار ب سیدوسردار کا بینا ہے تواسام ہے اسام کا بھائی ب امام کا بنیا سے اور اماموں کا باب سے تو خدا کی حجت ہے معدا کی حجت کا فرز مدے اور مندا کی نو حجتوں کا باب ہے جوسب کے سب تیرے سلیب ہے ہوں گے . نواں قائم ہو گا !'

ای اکمال میں جناب معدوق بسلسادا مناد جنابسلمان سے روا میت کرنے ہیں .اکیب طولانی حدمیث ہے جس کا کمرا ا بہ ہے ;کہ ر

" ٱلخفرسة ٩ شي ايني بإرهُ حَبَّر جناب سيّده سے فرما يا؛

کیاتم مانتی نہیں کہ ہم وہ اہی بہت ہیں کہ خدا وندعالم فدادندی ہارے لیے بمقابلہ د نہا آخرت کونہ ندکیا اور فدادندی مالم فالئی میں مجھے ختیب کیا یچر دوبارہ نکاہ کی اور تمام فلائی میں مجھے ختیب کیا یچر دوبارہ نکاہ کی اور تمام فلائی میں مجھے ختیب کیا اور خداوند عالم نے مجھے اور تمان کہ تعاری شادی ان سے کردوں اورا نمیں وجی فرائی کہ تحقاری شادی ان سے کردوں اورا نمیں ابنا ولی نباؤں اور وزیر نباؤں اور ابنی است ہیں ابنا وان ناز مرکز کروں ہیں تمقارا باب تمام انبیارے مبتر اور تم بہی مبتر اور تم بہی وہ فرد ہوجو مجھ سے کمن ہوگی یہ

ا سب مدوق نے اس اکما آل میں ایک طولانی مدمیہ ہے ۔ درن کی ہے جس ہیں ذکر سیے کہ :

مرمومن کے ولی ہیں توسارے مجع نے اقرار کیا کہ بيشك رسول كأب كمتعلق بدخرالاتفايه ای اکمآل میں مناب صدوق نے عبداللہ بن حبطر ،امام تن اماحسین معیانشربن عباس، عمرین ابی سلمه،اسا مدبن زید سلمان ، ابوذر ، اورمقداد مندرجه بالاحصرات میں سے ہر بزرگ سے روامیت کی ہے ۔ان ہیں سے ہر شفس کا بیان ہے ، - ہم نے رسول کو کہتے اُسنا : کویں تمام مومنین بی ان سے بار مدر صاحب اختیاد موں ، بھر مبرے مجال ال مومنین کے مالک ومختار ہیں 4 اسی اکما آپیں جناب صدوق نے اصبے بن نبانہ سے روایت کی ہے انھوں نے ابن عباس سے ۱ ابن عباس کینے ہیں کہ: « یں نے دمول^م کوکہنے مصناکہ: یں اورعلی اور من ومین اورسین کے نو فرزند باک و باکیزوہی " اسی اکمال میں حباب صدوق شے غبا بیرمن دیمی سے انفول نے ابن عباس سے دوابیت کی ہے کہ: * آنخفزت منے فرایا : میں نبیوں کا سردار ہوں اور شلی تمام اوميار كے سروار بي " اسی اکمآل میں حناب مدوق نے امام حبفر مبادق سے انھو نےاپنے آبا رطاہرین سے روابیت کی ہے کہ : الخصرت عفرالياً: فداوند عالم نديمام انبيار كم درمیان مجھے منتنب کیا اور مجھ کے علی کومنتن کیا۔

> "حفرست سرور کائناست نے فرمایا بمیرے بعد بار قامام موں مے ان سب کے اوّل تم سواسے علی اور سب سے اکر قائم ہیں جن کے الخوں بر فداد ندعالم مشرق و مغرب کو نتح کرے گا- (اکمال الدین وائنام النعمة باب ۲۲ مسخد ۲۹ آنا ۱۹ ایہ حدثین اور اس کے او پر کی حدثین مذکور ہیں)

جناب صدون شدا الى ميں امام جمع صادق سے دوا بين كى الم اللہ ميں امام جمع صادق سے دوا بين كيا كه:

" كفتر سن شد ارشا و فر مايا : على مجھ سے بيں اور بيں على سے بول على ميرى طيبنت سے پيدا ہو ہے اور ميرى سندن كے درمسيان اور ميرى سندن كے درمسيان اختلاف بيدا ہوگا يا على بى اس كى دمنا صن كري كے اختلاف بيدا ہوگا يا على بى اس كى دمنا صن كري كے اختلاف بيدا ہوگا يا على بى اس كى دمنا صن كري كے يہم مين ادر روسن بيشانی واسيم ومنين سے مہتر ہيں اور تمام او صبار ہيں سب سے مہتر ہيں "

كرتيس كر:

و آنفطرت من فرایا علی مومنین کے امیر ہیں خداوندمالم نے خود عرش بران کو ولی مفرر کیا اور ملائکہ کو گواہ بنا با اور علی خدا کے ضلیفہ اور حبت ہیں اور میں علی مسلمانوں

کے امام بیں ؟

اسی امال میں جناب صدوق ابن مہاس سے روایت کرتے ہوں کہ:

٭) تحفزست کے فرایا: اسے علیؓ تم امام المسلمین 'اور امیلومنین اور دوسٹن پٹیانی والوں کے قائد ہوا مبرے بعد خداک حجست ہوا ورتمام اولیاد کے مید ومردار ہوں

۔۔۔۔ امی الم لیمیں جناب صدوق ابن عباس سے دوا بہت کرتے میں کہ:

آ نخفرن کے فرایا : اے علی تم میری است پرمیر نعلیفہ ہوا ورتم میرے لیے ایسے ،ی ہوجیسے آدم کے لیے شیٹ تتھے ؛

آس اس امال میں جناب صدوق نے سبنداز امناد جناب ابی ذر سے روایت کی ہے ، جناب ابو ذر فرائے ہیں : "ایک ون ہم لوگ رسول کی فدست ہی مسجد ہیں بیٹے

> تنفے ، اکھزت نے فرایا بمغارے پاس کسس در ازے ہے ایک شخص کے گا وی امیرالموسین اوراما السلین ہوگا۔ ناگاہ امیرالموسین علی ابن ابل طالب آنے

دکھانی دیے درسول نے آگے بڑھ کراستقبال کیا بہر آب ہم نوگوں کی ماحت مڑے اورارشا د فرایا: یہی میرسے بعدتم نوگوں کے امام ہیں !! (یہ حدیث اور اس کے اوپر کی چاروں حدیثیں علار سید بجری نے اپنی امانی میں جناب صددی سے نقل کی ہیں اور اس کے بعد کی تمام حدیثیں غایت المرام باب ۱۳ ہیں ندکور ہیں ۔)

۳۳ — امی امال ہیں جنا ب صرون جا بربن عبدانڈانعیاری سے دوامیت کرتے ہیں کر :

ا آنخفرت نے فرایا: علی ابن ابی طالب مب سے بہتے اسکام کھنے والے بہتے اسکام رکھنے والے میں ایمام ہیں اور میں میں اور میں میں اور میں میں اور میرے بدخلیفہ یہ

(۱۳) امی امال میں بسیل اماد ابن عباس سے روابیت ہے کہ:

"آنخفرت شے فرایا: اے گروہ مردم خداسے زیا دہ
گفتار میں بہتر کون ہوسکتا ہے - مخفار سے پروردگار
نے مجھے مکم دیا ہے کرمیں متفا دیے ہے علی کو امام ،
خلیفہ اور وصی مقرد کرد وں ، اپنا مجانی اور ابیت

اکی امالی میں جناب صدون نے مبلیا، اساداین عباس سے دوالیت کی ہے وہ کہتے ہیں :

دوالیت کی ہے وہ کہتے ہیں :

درسا میں الدی دواقہ میں دیا ہے ہیں الدی دوالی کے دوالی کے دوالی کے دوالی کے دوالی کا دوالی کے دوالی کی دوالی کے دوالی کے دوالی کے دوالی کی دوالی کے دوالی کی دوالی کے دوالی کے دوالی کے دوالی کے دوالی کے دوالی کی دوالی کے دوالی کی دوالی کے دوالی کے

و رسول الله عنم منر تشریب ب گئ خطب ارشا و فرایا

بھروہ خطبہ ذکر کیا اس خطبہ میں ہے کہ میرے جمپا کے بیٹے علی میرے مجھائی بمیرے وزیر میں اور میں میرے خلیفہ اور میری جانب سے تبلیغ کرنے والے میں " اسی امالی میں جناب صدوق نے سبلسلۂ اسنادا میرالمومنین

روایت کی ہے:

«امیرالموشین فرماتے ہیں کہ ایک ون دسول کے خطبہ ادست د فرایا جس ہیں آپ نے فرمایا: اے توگو خدا کا جبینہ (دمعنان) آر ہے ہے

... رود پوری مدیث مذکور ہے جواب سے ماہِ مبارک کی فضیلت میں فرمائی ہے:

"امرالمومین افرائے ہیں کہ بی نے دریا فت کیا : یا
درول اللہ اس جہید ہیں مہری اعمال کیا ہیں ؟ آپ
نے فرمایا : خلاک رام کی ہوئی چیروں سے برمیز ہجر
آنخفرت گری فرانے گئے ۔ ہیں نے عرمن کی یارسول
اللہ آپ گریکیوں فرائے گئے ۔ آپ نے فرایا : یں
اس ظلم پر دور إ ہوں جوتم پراس جہید ہیں روار کھا
مبائے گا ۔ یہاں کا کہ فرایا اے علی تم میرے دھی
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے
میرے مرت کے
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے
میرے مرت کے
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے
میرے مرت کے
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے مرت کے
میرے فرزندوں کے باب ، میری است میں میرے مرت کے
میرے کرنا میرا منع کرنا ہے ۔ ا

جناب صدون نے ای امالی میں امیرالمومین سے روایت

کرکے ایک عدیث ملی ہے:

"امیرالمومنین فراتے ہیں کہ تخصرت نے فرایا کہ: اے

علی ! تم میرے معائی ہواور میں تمقادا مجائی ہوں ۔

میں نبوت کے بیے ب ندکیا گیا ۔ تم اما مت کے لیے

منتخب ہوئے ۔ ہیں صاحب بنزیل ہوں تم صاحب

تاویل ہواور تم اس امت کے باپ ہو۔ اے علی تم

میرے ومی ہو، میرے خلیفہ ہو، میرے وزیر ہو ،

میرے وارث ہو، میرے بول کے باپ ہو یا

اسی امالی ہیں جناب صدوق مب للداناوابی عباسس

سے روایت کرتے ہیں کہ :

" آنخفرت انے ایک دن فرایا ،جب کد اکب سجد قبا میں انشرس فراسے اورا معاب آپ کے گردا میں ہے ۔ اے علی ان مور میں عقادا مجانی ہوں ۔ علی ! تم میرے ومی ہو،میرے فلیقہ ہو میرے بہد میری امت کے امام ہو۔ خدا دوست دیکھ اسے جو تھیں دوست دیکھ ، دمثن دیکھ اسے جو تھیں دیکھ !"

- اس امالی میں جناب مددق نے ایک طولانی مدمیث جنا بالم م سے روایت کی ہے جس میں آنخفزت نے ام مرسے فرمایا اکر "اے ام سلم سنوا ور گواہ رہوکہ میر علی این الی طالب میرے وقی میں میرے خلیفہ ہیں اور میرے کیے ہو کے وعدول کو ہوا کرنے والے ہیں اورمیرے حوق کو ٹر بر سے منا فقین کو مجھ گانے والے ہیں !

ای امال میں بسیاسلہ اسناد سلمان فارس سے روایت ہے

جناب سلمان فاری فرماتے ہیں کہ:

" میں نے خودرسول کو کہتے سنا : اے گروہ ہما ہرین وانصار ! کیا ہیں ہمقاری رہبری اس ذات کی طرن نہ کر دول کہ اگر تم اس کا وامن مضبوطی سے پکرٹے رہو توکبی میرے بعد گراہ نہو - لوگوں نے کہا ہزور یارسول اللہ ، فرمایا : یہ عل میرے ہمائی ہیں ۔ میرے وصی ہیں ، میرے وزیر ہیں میرے خلیت میرے وصی ہیں ، میرے وزیر ہیں میرے خلیت میں اور ممتا رہے امام ہیں ، المغا جس طرع مجھ دوت رکھتے ہوا تخیں بھی دوست رکھو اور میں طرع میری مورت و تکریم کرتے ہوال کی بھی کرو۔ مجھ سے جبریل الین نے کہا ہے کہ میں یہ بات تم سے کہوں یہ

س اى امال بين مناب مدوق في سلداسنا و زيربن ارتم سر دوايت كى ب وه كميّة بي كه:

"رسول مے فرمایا : کہ بین محقا ری رمبری استحف کی طرف ندکروں کہ اگرتم اس کا معنیوطی سے دائن کی طرف ندکروں کہ آئی اس کا معنیوطی سے دائن کی کراے دمیو نوکیوں گراہ دمیو نہ ہلاک موہ فرمایا آنخفر نے کہ محقارے اسام اور دلی علی ابن ابی طالب

ہیں۔ان کا بوجھ بٹا وُٹان کی خبر خواہی کرو،ان کی تقدیق کرد۔ جبرئیل نے مجھے اس بات کے کہنے کا حکم دیا ہے ہے سے اس الی ہیں جنا ہیں صدوق نے ابن عباس سے دوایت کی ہے جس ہیں ہے کہ:

" آنخفزمت نے فرمایا: اے علی اتم میری است کے امام ہو اور میرے بعد است برمیرے فلیند ہو!

۳۲ --- اس امال بین جناب معدون نے ابن عباس سے روابیت کی جاکہ:

"اسمفرست نے دوایا: که خدا وند عالم نے مجھ پر دحی فرائی
کہ وہ میری است سے ایک شفس کو میرا مجائی، میرا
وارست خلیفہ اور وصی نبائے والا ہے ۔ میں نے درگا و
البی میں موال کیا، پروردگار وہ کون ہے ؟ توخدا نے
مجھ پرومی فرائی کہ وہ متھاری است کا امام اور میری
حبست ہے ۔ اس بر میں نے عرض کیا : البی وہ کون
ہے ؟ اور شاد ہوا: وہ ، وہ ہے جے میں بھی دون
رکھتا ہوں اور وہ بھی مجھے دوست رکھتا ہے میران کی
کہ آب ہے سلک بیان میں فرایا : کہ وہ علی ابن ابی
طالب میں یہ

س ای امالی میں جناب معدون نے امام حبور میا و انھو^ں نے ابینے آبار طاہرین سے روایت کی ہے کہ : ان خطرت میں نے فرمایا : حب مجھے مشب معران اسمان

پر لے مایا گیا تو خداوند عالم نے مجھ سے علی کے سملق عهب دوسمیان فرمائے کہ وہ امام المتعیّن ، قائمہِ غ المجلين ، بعسوس المومنين من -اسى اما لى بيں جنا سب صدوق نے لسب لسلہ إسنا وامام دحناً سے اضوں نے اپنے آبار طاہرین سے روایت کی ہے کہ : ۷ تخصرت نے فرمایا : علی مجدسے میں ا در میں علی سے ہوں خدا الک کرے گا اسے جوعلی سے جنگ کرے علىمير، بعد خلائق كے امام ہيں۔ جناب شنخ الطائفه ابوحعفر محدين صن طوسى نے ابنی الل میں بسلسلة اسنادجناب بماريا سرسته دوابينت كم بيعجناب عارفراتے ہیں کہ: « يمول صف امرالمومين سے ارشاد فرا يا كه خلامے عمیں ایی زنیت سے سنوارا ہے کہ جس زنیت سے زياده معبوب زمزيت مندول كونهين تخشى الا جناب بیخ نے اپنی اس امالی بین لبسلسارُ اسادامیرالمونین سے روامین کی ہے: « امرالمومنين الع ابك ون منبر كوف برخطيب ارشاد فراكي: ا بے توگو المجھے دیول اسے دس خصوصیات ابسی حامل ہوینی جورو کے زمین کی تمام چیزوں سے زیا وہ مجے محبوب ہیں مجھ سے آنففرستانے فرایا: اے

على إنم دنيا وأخرت مِن ميرئے مھائی ہو۔ اور

بروز قیاست تمام خلائ سے زیادہ مجھے تربیب ہوگے اور جنسند میں مقاری قیام گاہ میری قیام گاہ کے سائے ہوگا۔ تم میرے وارمشہو ، تم ہی میرے بعد میرے يجي بوئ وعدول كولو راكرف واليموا ورميرب گروالوں کے دعی ہو اورمیری عدم موجود گ میں ميرے المبيت كے تم بى مما فظ مواور تم بى ميرے ولی مو اور میراولی خدا کا و بی سے اور بخفارادیش میرادشن ہے اور میار دہنن خدا کا دستن ہے یا جناب صدون خے کتاب نصوص علی الائمۃ می*ں لب*سلسلہ اسنادامام حن بن علی سے روابت کی ہے : "امام من فرمات بن : كريس نے رسول كوام المومين على ابن ال طالب سے كبتے سنا : تم ميرے علوم كے دارسے ہو، میری مکمتول کے معدل ہو، میرے بعد امام ہو!' جناب صدون سے كتاب نفوص ميں بسيسلدا سادعمون بن معين سے روايت كى ہے - وہ كينے بين كه: " ين ف رمول كواميرالموسنين السيكت سنا: تم يى امام ہو اور میرے بعد ملیقہ ہوا اى كتاب نفوص ين نبسلله اساد امير المومين سايك مدييث بذكورسے كر:

" المخفزت نے فرمایا : اے علیٰ تم میرے اہلبیت کے

مرتنے والوں کے دصی اورمیری است کے زندہ افراد بر ای کتاب نفوص مین بسللهٔ اساد امام حین سے ایک مديث مروى ہے۔ امام مظلوم فرائے بي كر: " خدادندِ عالم نے جب بہ آہیت نازل فرمائی کے بعض اولیالارحام معن سے زیادہ حقدار ہیں کئے میں نے رمول مسے اس کی تاویل کے متعلق او جیما اس کی تاویل کے متعات نے فرمایا تم لوگ اول الارمام مور سپ جب میں مرماد آن تونمنارے بدربردرگار مجے سے زیادہ خصوصیت و قرابت رکھتے ہیں۔ اورمیری مبکہ کے زیادہ حغلار وسزاوار میں جب وہ دنیاہے انظیں تو بخعارے مجمانی حن اس عہدہ کے مراوار ہیں اور حیب حسن مجی ونیا سے اٹھ مایش توتم اس منصب کے سزاوار ہو۔" به اتنی مدیثین بین اس محنقررسالهٔ بین درج کرر با ل مون به استخ نصوص إنى نصوص سے ابسى نسبست ركھتے ہيں جيسے ايك بجول كو باغ سے يا ابك قطرك كوكجرب بإيال سے نسبت موتى ہے۔ بمچر بھى اگرالضاف سے کام دیا جائے توجعن مدیثیں ہی کفائت کرس اے

ے ہم نے جائین کی تعداد ہیں ہسس ہے صرفین بیان کی ہیں کہ ہماری کمنتیدا حادیث جرائی گئی۔ علی بنا بی طالب سمبذائڈ بن عباس، عبدائٹر بناسعہ و اعبدائٹر بن عرا ابوسعید مقدری ابو وردا ابوہرمی^{وں ا}نس بن مالک، معاذبن میل وغیرہ بزرگوں ہیں سے ہرمیر شحیف سے (بانی انگی صفیر)

مكتؤب فبراا

شیعول کی مازیس محیت بنہیں اگر پر مثیر صحیبی تو اہلسڈنے کیول بنہیں ان کی وایت کی، مزید بھوس ذکر فراتیں یر نصوص جو آپ نے ذکروسند مائے برحصزات المسنت کے بہاں ٹاہت بنہیں ۔ لباذا ان پر محبت بھی بہیں ہوسکتے ۔ اگر صفرات المہندت کے بہاں بر تفوص ٹاہت ہیں توامخوں سے کیوں بنہیں ذکر کمیا ۔

ابندا وی انگلامسلله اسبهاری ریکیے لینی اس مومنوع پرحفزات المسنن کے بہاں جواحادمیث موجود ہیں ائفیں بیان فرمانیے -مس

جواسبب مكتوسب

ہم نے ان نفوص کواسس لیے بیان کیا کہ آہے بھی واقعت ہوا پئ اور آسیہ نے نوخود ہی خواہش ظاہر کی تھی۔

آپ پر حَبَنت قائم کرنے کے لیے دہی مدتیں کانی ہیں جغیں ہم نے گزشتہ ادران میں خود آپ کی محات سے بیان کیا ہے .

رہ گیا ہے کہ ان تصوص کو اہل سعنت نے کیوں نہیں ذکر کیا تواہے آپ
کیا پوچھتے ہیں بہ توآل محرسے پر فائن اوران کی طوعت سے ول میں کینے رکھنے
والے دورِ اوّل کے ارباب نسلط وا تنظر کی برائی عا دست ہے جنعوں نے
نفسائل اہبسیت پر پر دہ فح النے اوران کے نور کو بجھانے کے بیے کوئی کوشش
امٹھا نہ رکھی اسلطنت کے فراٹ اللہ دیا ور کو بجھانے کے بیے کوئی کوشش
امٹھا نہ رکھی اسلطنت کے فراٹ اللہ اللہ دیا کہ ابنی توانا بیاں مرم دیں اور
ہربر شفس کو لا ہے دسے کو اور الم کا کر آبادہ کیا کہ اہل بہیت کے مناقب و
نفسائل مخصوص کو جھبائے ، محسللائے ۔ اس مفقد کے لیے درہم و وینار سے
نفسائل مخصوص کو جھبائے ، محسللائے ۔ اس مفقد کے لیے درہم و وینار سے
کام لیا گیا۔ براے براے وظیفے مفرر کیے گئے ۔ اعلی حبد وں پر فائرد کیا گیا۔
ادر جوان ترکیبوں سے قابو ہیں بنہیں آبا اسے کو طووں الواروں سے زیر
کیا گیا۔

یہ فرمون خصلت ، غرود مرتشت افرا و نفتا کل المبسبین کی تکذیب کرنے والوں کو نو فرمیت بخشتے ، مقرب إرگاہ بناتے اور لقدیق کرنے والوں کو گھرستے بلے گھر کرستے ، حبلا وطن کرستے ،ان کے مال واسباب کو لوسط پیلننے یا قبتل کر دہنئے۔ آب سے بیحفیقاست محفیٰ زہو گی کدامامسٹ و ملائنت کے منعلن تفو**م** ارشادات بيغيم ابيى جيزتمى حس ساعاصب وظالم سلاطين باعدخط ومحسوس كرتے تقے . ہروقت الحقين مديشرر تهائفاكه مير حدثيان كہيں ہما راتخنه نه ألث وی . بنیا دسلطنت نه در ها دی ابندا ان صریجی نصوص دا ما دسیش کا ان سلاطین جور اوران کے ہوا خواہوں سے بے رہنا اور متعدداستناد وطرق مخلف سے ہم مکسے بینے مانا رامسنی و کیائی کا ایک کرشما در حن دصدا تنت کا بہت بڑا معجزه ب كيونكراس دنت كى مالت يرتمني كه جولوگ حقوق المبديث كوخف كيے بنيظ تف اوران كے ملارج ومرانب كو تھينے ہوئے تفے حس پر خدا دندِ عالم شان المبسبت عليهم السسلام كو فاتزكيا تفاءان كا وتنبره بريخا كرمجيست المبيت كاجس برالزام فائم برمانا اس دروناك دبرتري عداب بس مبلا کرتے ، اس کی ڈاڑھی مونڈ دینے اور با زاروں میں تشہیر کرتے تھے · اسے فرار وخوار کرتے اور مجله حفوق سے محردم کر دیتے۔ بیبال تک کماس کے بیے حکام کی عدالت کا دروازه تهی مبد ہو جا کا اور ساج میں رسا نی تھی ما ممکن ہوا آ اگر کوئی شخص اچھال کے ساتھ علی کا ذکر کرتا توحکوسند اس سے بری الذمّہ ہوماتی۔ آ متیں مسس پر نوٹ پر بی ۔ اس کا مال آبیں میں بانٹ لیا جا آ اوراس کی گر دن مار وی جانی ۔ زمیلوم کتنی زبابیں انھوں نے گذلوں سے کھینیے لیں معصٰ اس جرم میں کہ الحول نے نطعنا کل علی بیان میئے کمتنی انتھا بیا تع

اے ملاحظ سندمائیے شرح نہج البلاغہ حلد ساصفی 10 علامہ ابن ابل الحدید معزز ل نے ایک مخترست تذکرہ ان مظالم کا کیا ہے جو دورِآموی ومباسسی ہیں اہلِ بہت وہیان اہمبیت پر دوا رکھے مباتے شخصہ

کردی اسس تفوری کوئی کواحترام کی نظروں سے دیجا ، گفت اِ تھ کاٹ والے اس پاداش میں کوئی اُ تھ کاٹ والے اس پاداش میں کوئی کی مفیلست ومنقبت کی طوست اشارہ کیا ، گفت بی بھیلیٹ گئے ۔ اس خطا پر کہ وہ علی کی طوست بیلے تنقے ۔ علی سے دوستوں کے زجانے تنقنے گئے ماس خطا پر کہ وہ علی کی طوست بیلے تنقے ۔ علی سے دوستوں کے زجانے تنقیم گئے مطابع ان کے بائع اور کھیتیا ل بوسٹ لی گئیں اور درخنوں پر انھیں سولی بی دسے دی گئی باان کو گھرسے بے گھر کوسے نسال بامرکیا گیا۔ اسعلوم طابقوں سے ایڈا پہنچائی گئی ۔

اس وقتت ما لمین مدسینت و ما نظین آثارکی ایکسیمینت بری جماعیت ابسي تقى جوخداً كوچيور كران حبابر باوشامون اوران كاهندول كى ييتش كرتے تھے۔ ان کی خوشا مدا ورمیا بیوسی میں کسی باسٹ سے در لغ زکرنے تھے ۔ حدیثوں بی ا*لسٹ بچرکر*دینیا بعہادس*ت کچھ سے کچھ کر دین*یا ۔ضعیع*ت کو توی* اور *توی کومن*یت کر *کے میشیں کرنے ہیں انعین کوئی باکب ہی زمق*ا جیسے ہم آجکل اینے زما نے میں مکومست کے بیٹھوا ور تنخواہ دار علمار اور قامنیوں کو دیکھنے ہیں کر حکام کو رامی کرنے کے بلیے کتنی انتھک کوسشسٹیں کرنے ہیں ان ک حکومت ملیے عادل ہویا مابر' احکام ان کے ضیح ہوں یا غلط ، مگر سرما کمایں ان کی تامید ہی کریں گے ۔ حاکم کو جب بھی اپنے مکم کی موافقنت ہیں یا مکومست کے مخالفن افراد کا قلع فنع کرنے کے لیے فتویٰ کی حزورست ہوتی ہے ، بیعلمار فوراً ایسے نتو کے معادر کر وسیتے ہیں جوان حکام کی نواسبٹس کے عین مطابق اوران کیسیای اغراض کے لیے مفید و مزوری ہوتے ہیں۔ چا ہے ا ن کے فت سے مشدران ومدریٹ کے مخالعیت ہی کپول نہوں ۔ان کے فنؤسے کی وجہ سے اجاح اتسند، شکسند ورکفین بی کیوں نم وجائے ۔ اجاح کی حریجی مخالعنسند بی کیول نهرتی مو . لمیکن انفیس کوئی مروا ه نهیں موتی انھسسبیں تو غومن ہونی ہے منصب وہدہ کی۔ ڈرتے ہیں کہیں حکام ناراض ہو کر معرول ندکر دیں یا یہ لا بچ ہوتا ہے کہ خوسٹ ہوکر مہیں منصب عطا کر معرول نے کر

آج کل کے علمارا ور اسس زمانے کے علما رمیں زمین واسمان کافرق بعد آج کل کے علمار حکومت کی نگاہ میں کوئی وزن نہیں رکھتے لیکن اس زمانہ کے علمار کی حالمت جدا گاء متی بسلاطین خودان کے محتاج ہوا کرتے متے کہونکہ اس وفنت کے سلاطین علمار کو آلا کار نیاکر گویا خدا و

کریتے تتھے کیونکہ اس وفنت کے سلاطین علمارتو آلۂ کارشا اراد یا خدا دسول سے جنگب کرنے تتھے ۔

اسی وجہ سے بیملمارسسلاطین اوران کے اعلیٰ عہد بداروں کے نزدیک

بڑی قدر ومزدلت رکھتے تھے اور ہر فرمائٹ ان کی پوری کی جاتی تھی حب کے نینجہ میں یہ خووشا ہا نہ جا ہ و مبلال اور دولست والمارست کے مالک ہوتے ان کی یہ مالست بھٹی کر وہ صبیح مدشیں جس میں علی یا اہل مبیت کی کو اُفینات مذکور مہونی ان میں تنصیب سے کام لینے ۔ بڑی عتی سے ان کی ترد بدکرتے بائیا عقبار سے گرانے بیں بوری طافت سے کام لینے ۔ اس مدمیش کے راویوں کو رافنی ہونا ان کے فردیک برترین جرم تھا) کو رافنی ترا اور رافنی ہونا ان کے فردیک برترین جرم تھا) بان کا طرز عمل ان تمام اما دمیث کے مستلن مخا جو حصر سن علی ا

ان علمار کے کچے متاز و بااثر اسٹ ادم رقریہ و مرستہر میں ہوتے ہوان کا پرائیگٹ ٹراک کا پرائیگٹ ٹراک کے دشیا وار طلبا ہوتے جوان کے ان کی ترویکا کرتے۔

کچے ریا کارعا بروزا ہرہو نے کچے رؤسائے قوم سٹیونِ قبال ہوتے بیب یہ اسٹیناص ان میچے احادیث کی ردمیں ان علمار کے اقوال سٹینے تو انخیب کو حجت بنا لینتے اورعوام جابل ببلکس بیں خوسب ان اقوال کی تردیج کرتے اور سرشہر میں اس کی اشاع سند کرتے اوراصول دین میں سے ایک اصل بنا دسیتے۔

ای زمانداوراس منام برگیجه ایسے علیائے اما دیدے بھی تنقی حبفوں نے خوصت و ہراس سے مجبور ہوکر وہ حدثیمیں ہی بیان کرنا چھوٹ دیں جوام المؤمنین اور اللہ بیت کے فقا کل میں پائی مہاتی تقیب ۔ ان غربیوں کی حالت بریمتی کہ حبب ان سے بوجھا جاتا تھا کہ یہ لوگس جوعلی واہل بریست کی شان میں وار وسیح عدث ان سے بوجھا جاتا تھا کہ یہ لوگس جوعلی واہل بریست کی شان میں وار وسیح عدث کی دو کر رہے ہیں آب کی کر دکر رہے ہیں آب کا کیا خیال ہے ان کے متعلق ۔ ان احادیث کیم دیتے ہیں تو آب کی کیا دائے ہے ؟ تو وہ ڈر سے تھے کہ اگر صبح باست کہد دیتے ہیں تو آب کی کیا دائے اور سنجات اسی است دائو سے بھران اور ان ہوا ہیں ۔ اس دیکھنے کہ معارض اقوال بریان کر دیے جا میں ۔ اس ڈرسے کہ کہیں برمرکاری میں درسے ایزا رسانی زموم ایش ۔

سلاطین اوران کے جہدیدارول نے حکم دے رکھا تھا کہ امرالمونین کی ہد کھنست کریں داس بارے ہیں برطی تھے ۔ علی کی برائی اور مذہبت کرنے داس و دواست دے کام لیستے ۔ علی کی برائی اور مذہبت کرنے کے لیے ہرمکن ذرایع سے لوگوں کو آبادہ کرنے ۔ مال و دواست دے کرا طرح کے وعدے کرکے ، ڈرا دھرکا کر اور ان سب سے بھی فا ہو نہا نے تو فوج کمشی کر کے اپنے کم توباست بیں امیرالمومین کی ایسی تصویر کھی کرنے جے بڑھ کر ہرشمنی نفور کرنے کے ۔ میرودی کرنے گئے ۔ میرشمنی نفور کرنے کی کے ۔

معلبوں میں امبرالمونین اسے متعلق الی باتیں بیان کرنے کہ کانوں کوان کے تذکرے سے اذریت ہونے نگے۔منبروں پرلعنست بھیمینا ،عبدین اورجعہ سے

سسنن وستمباب میں سے قرار دے نیا تھا . اگر بیحقیقت زہوتی کہ ہے

ذر خدا ہے کھڑکی حرکت بہ خندہ زن بھونحوں سے بہ جراغ مجھایا زمائے گا

خداکا نورز کجبتا ہے اور ز اولیار خدا کے نفناکل محنی رہنے ہیں۔ تو امیرالمومنین کی خلافت وا مامنت اور نفنائل کے نفناکل محنی رہنے ہیں۔ تو ہم المومنین کی خلافت وا مامنت اور ففنائل کے منعلن کوئی میچ وحرکے حدث ہم کس سیخینی ہی نہیں ز بطریق اہل سنت عبال کا ہے کوا بھی مدیب بیان کرنے گئے جوان کی ساخت عماریت ہی کو مستزلزل کر دے اور مثیر میں کوریت بیان کرنے ہی ہے اور مثیر کی کوریت بیان کرنے ہی ہے موریتے ہے۔

مگر برخدان کرشر ہے ،حقایشت وصدافت کا معی ، ہے ۔ با وجود کیا وشمنوں نے مفنائل کو جبہانے اور مٹا نے میں کوئی دقیقہ اسٹا نہ رکھا کم کئی کا بول بالا ہو کے رہا ۔ مجھے توضم مخدا حیرست ہے کہ خلاق عالم نے مبدہ خاص ا بیتے دسول کے ہمائی علی بن ابی طالب کو کیا فعنیدت بخشی تھی کہ لاکھوں پر دوں میں سے مبی جس کی روشنی بھوٹ کر دہی گہری تاریجیوں میں بھی جس کا اجالا ہو کہ آب امیرالمونین کی خلافت واما مست کے متعاق جو قطعی ولیلیں آپ نے معاعت فرایش ۔ مزید براک آپ مدینیٹ وراشت ہی کو لے بیجیے جو بجائے طود بہبت بھی ولیل ہے ۔

ش

مكتوب مبرس

مدسیٹ ورانٹ کو بولسے رہیں اہلِ سنّست تخریر مست رہا ہے؟ میں

جوابب مكتوب

على وارت بغيرل الأعلية الرقيم

کون شبهبیرکه تخفرت نے حفرت علی کواپنے علم وحکمت کا ای طرح وارث بنایا جس طرح دیگر انبیار کرام نے اسپنے اوصیا کو نبایا جنا کچینور آنخفرت کے ارشا دات ہیں : « أننامسدينسة العلم وعسلي مبابها ، نسعن أراد العلم فليدأت الباب ؟

" ين شهر علم بول اور على اس كا دروازه .جوعلم كاطلبكار مو وه دروازے سے آئے "

« أنا دارالحكمة وعلى بابها "

، ہیں مکسنت کا گھر ہوں اور علیؓ اسسس کا وروازہ ﷺ

«عسلي ساب عسلعي و مسيين مسن سعدي ﴿ كُمِّني

ما اوسسلت به عسبه إسمان دبعمته نفاق "

« على ميري علم كا در وازه بب ادر بي جن جيزون كو مع كر

مبعوث ہوا، ٹمیرے بعد میری است سے ان چیزوں کو علیٰ ہی بیان کرنے واسے ہیں ، ان کی محبت ایمان اوران رسیف میں میں ا

کی دشمنی نعاق ہے 4

زیدبن ابی او نی کی مدسیٹ بیں ہے :

« و أنت أني و وار في ، قال؛ ومـــا أرث.منك ؟

تال: ما ورث الاسبياء من تبلي "

" يغير المرالمومين اس فرمايا: تم مير معما في مو ، مخير

سله اس مدمین کونیزاس سے بعد کی دو مدیثوں کی م ۲۲ میں درج کرمیکے ہیں ۔ نیز منو ۲۸۲ کی مدسیت نمبر ہ ، ، ، ، ، ، ، کمی کمونار ہے اور وال جو ہم شے حاشیہ ککھا ہے اس کا بھی خیال دہے .

لله بم اس مدریت کا ۱۲ پر ذکر کرچکه میں.

میرے وارث مو - امبرالمونین کے پوتھا: بیں آپ کی کس جیز کا وارث موں؟ فرمایا: مجھ سے میشز کے انبیار نے اپنے ادمیار کوجن جیز دن کا وارث نبایا انھیں چیز دن کے تم بھی وارث موگے یہ

بریدہ کی مدسیت میں صاحت صاحت تھرمے ہے کہ وارمیٹ مینی مرحل ہی کچھ

دعوںتِ عثیرہ کے موقع پرجو کچھ دمول ؓ نے فرما یا تفا اسی پرعور کیھیے وہی اسپ کی شسکی کے لیے کائی ہو گا۔اسی وجہ سے معزمنت علی دمول کی زندگی میں فرمایا کرتے تھے کہ :

> " فتم تخدا میں رسول کا بھائی ہوں ،ان کا ولیعبد ہوں ،ان کے چچاکا میٹا ہوں ،ان کے علم کا دارث ہوں فہذا مجھ سے زیاد ا حقدار کون ہوسکتا ہے ہے ،

ایک مرتب امیرالمومنین سے پوچھاگیا کہ چیا سے رہنے ہوئے اسب رسول کے وارث کیونکر ہو گئے ؟ آپ سے فرایا کہ :

" آنخفزت نے کی اولادعبدالمطلب کوجع کیا جوگردہ کی حیثیت رکھنے شخفے ۔ وہ سب کے سب پر خور در فرانسٹس شخص انحفر نے ۱۳ جیٹا تکس وزن کے کھانے سے ان کی دعوت کی سب

عداس كو م ٢٦ يين الاعظارما في

تے یہ کاربعید انھیں الفاظ میں امرائونین سے ابت ہے جے امام حاکم نے منذرک 10 مڈامیج امادے فکرکیا ہے اور بھاری کوٹم دونؤں کے معیار ہے ہمسیرج قرار دیا ہے - علا مدذہبی ہے بھی کھنیص متدرک میں اس کی محست کا اعراب کیا ہے .

ف کھایا اورمیٹ بحرکر کھایا اور کھانا اس طرح بے د إحسطت مقا معلوم ہز تا تفا كە مبيكى ئے كچھ كھيوا بى نبين أ تحفزت نے کھا ہے سے فراعنت کے بعدارتنا د فرمایا: "اے مستوزندان عبدالمطلب! بيں مَاص كرىمتعارى طرىن اورعام طوربرلوگوں پرمبوش موا مول لبناتم میں کون اسس سنرط کیمیری ببیت كرّاب كره ميرا معا لُ هو ، ميراسا تني هو ، ميرا وارث بنه !" رسول کے اس ارسٹ و کے بعد کو تی بھی تہ کھر ا ہوا ۔ بیں البند کھڑا ہوگیا اگر جیسب میں جھوا عقا رسول نے تجھ سے کہا: تم بیٹھ ماؤ ، مچیرین مرتبہ آپ نے اس مطلب کا اعادہ فرایا اور مر مرتب میں کھڑا ہوتا را اوراب بٹھایا کیے۔ تبیری مزیب جب کوئی نکورا موا تورسول شدانیا با تقدمیرے اتد برمارای وج مصيب اينے جيا كے بينے (حصرت رسول فعرا) كا وارث بوا اورحيا واربث نه ہوسکے "

امام ماکم نے مستدرک ی ۳ صفر ۱۲۵ بر ایک دوایت درج کی ہے اور علام ذہبی نے بھی مستدرک میں اسے نقل کیا ہے اور دواؤل تفحول کو میں اسے نقل کیا ہے اور دواؤل تفحول کو صورت کا قبلے دلیاں ہے کہ وسم من عباس سے کسی

اے یہ مدیرے گابت ڈسٹبورسے۔ منیا مقدی نے مختارہ میں این جزیر نے تہذیب اکا تاریب دہری کیا ہے کنزالعال جلہ ۴ مشیخ پر کبی موجود ہے۔ اللم لنا کہ نے خصال کس ص^{یل} میر ودری کیا ہے۔ ابن ابی الحدید شعائی مٹرے جلدا معین پر طبری شدیمی اسس کی نقل کیا ہے۔ مسندامد ن ۱ میں ابر طبخ عیلنے لفائوں میں یہ مدمیث موجود ہے۔

نے پوچھا:

" المب لوگوں کے دہتے ہوئے علی دسول کے وارسٹ کیسے بن گئے ائ

قتم نےجواب دیا :

، اس ليكروه بم بي سب سع بيك اسسلام لاسة اورسب سع بيك اسسلام لاسة اورسب سع تياده رايع الاستاد وبيوسندر المين ال

میں کہتا ہوں کہ تمام لوگ میں جائے بیں کر دمول کے وارث علی ہی ہیں بھباس یا دیگر بن بائٹ رمول مسکے وارسٹ منہیں ، یہ باست اتنی اشکارا مقى كرات بطورمسلات ذكركيا كرق لين ان وكون كواس كاسبب علوم تنبين مقاكه جماك موت موسة على جرم ازاد بها في تق و كيونكر وارب رمول ا ہوگئے ۔ای وجہ سے ان لوگوں نے کمبی خود حفز سندعلی سے کسس کی وصناحت میا بی کہی متم سے بوحیا اور ان دو نوں بزرگواروں سے جو جواب دیاوه آب سن میک دیرجواب ال نوگول کی عقل وانم کو دیکھتے ہوئے بہت. مناسب جواب سے اور ان کو سمجمانے کے لیے زیادہ سے زیادہ بہی جواسب دیا ماسكتاب ورزواتن وحقبتى جواب تريه بها كد خداو ندعا لم ن ريت زمین کے بافتادوں پراکیب نظر ڈال کر فحرمصطف کو منتخب کیا اُ ورا بھٹ یں خاتم النبتيني ښايا - بهردومري مرنبه زمين برلسگاه کې اور مصرست على سمو منخنب کیا اورایٹ رسول گر وی فرائی که علی کوابنا وارث اور وحی خرد کر دیں۔

اله این افی سٹیب نے بھی کمسس کی روا بیت کی ہے ۔کستر العال ج ۲ منٹ پرمی موج د ہے۔

اسام ما کم ستدرک ج ۳ صفی ۱۲۵ پرفتم والی اس مدیث کو جے انجی انجی انجی کرے انجی کا بھی انجی کرنے کے بعد لکھتے ہیں کہ :

" نمجے سے قامنی القعناة الوالحن محدین صاع باشی نے بیان
کیا ، وہ کمیتے تفے کہ میں نے الوعر و دقاص سے سنا ،الخول
فرائیل بن مسحاق قامنی سے مصنا ،الملیل بن اسحاق سے
قرم بن عباس کے اس نول کا ذکر آیا توالا موں نے فرایا ؛ وآر
باتوں سب کی وصبے وارث ہوتا ہے با و لا کی وج سے
اس میں کوئی احتلاف نہیں کہ چچا کی موجود گی میں حیاز ارجائی
وارث نہیں ہوسکتا ہے

اسلیل بن اسسحاق فرانتے ہیں کہ:

" اس اتفاق وا جماع کی دم سے ظاہر ہوا کہ علی دسول کے علم کے در سے دان کے سوا اور کوئی وارث بہیں ہوا !"

بیں کہتا ہوں کہ واشت امیالموسین اسے سندل متوانز مدشیں موجو د بیں پخصوصًا بطران المبسیت توکمہت ہی زیا دہ۔ اگرانصاف سے کام بیا جائے توصطرت علی کاوصی رسول ہونا ہی اس مسئلہ میں قطعی فیصلہ کن سہتے -••

۳

مكتؤت مبر٣٧

بحيث وميتت

ہم المسنست کومعلوم نہیں کہ رسول نے امیالمومنین کوکب دھی بنایا 'نہ اس کے مشاق ارشادات و نفر کوایت مہنے کا علم ہے عہر الی ہوگی اس کی ومناحت فرائیے۔ محمشلق ارشادات و نفر کوایت مہنے بڑکا علم ہے عہر الی ہوگی اس کی ومناحت فرائیے۔ معس

جواسبب مكتوسب

امیلرونین کے وئی پنی<u>ر ہونے کے</u> متعلق بی<u>نیر</u>لی سُرعلیہ الدولم کے ارشادات

امیرالموسین اسمے ومی بینیر ہونے کے سنان اہل بیت طام برج اے صریحی

اورمنواز تفوم موجود میں - اگرا بل بست سے قطع نظر کر کے بطریت اغیار آپ مفی میر کے متلاث بی اگرا بل بست سے قطع نظر کر کے بطریت ایس نظر مجر کرلیں جس میں دسول کی مدین بیں نے ذکر کی ہے کہ انخصرت نے امیر المومین کی گردان پر احتفار کے درکا کا کردان پر احتفار کے درکا کرا کہ استاد فرما باکہ:

" یہ میرے مبحال ہیں ، میرے وصی ہیں اور تم میں میرے خلیفہ ہیں ، ان کا حکم سنوا وران کی اطاعت کر و ہے اور محد بن حید رازی سے ہسسلمہ ابرش سے ، انھوں نے ابن ابی اسحاق سے انھوں نے مٹر کمیب سے انھوں نے ابور بیجہ ایا دی سے انھوں نے بریدہ سے اور بریدہ نے رسول لنڈ سسے یہ صدیبیش روایت کی ہے کہ آنخفزت نے فرابا :

«لسكل منبي وصي ووارث ، وإن ومسيمي ووارث عملي سن ابي طبالب؛

، سربی کادمی اور وارث ہوتا ہے اور میرے وصی و وارث میں ملین ابی طالب بین ؟

ے اس صیب کوامام ذہبی نے میران الاعتذال ہیں ہسلسائہ ماگات طرکیب ذکر کیا ہے اور طرکیب کو حیٹلایا ہے۔ چنا بی فرمائے ہیں کہ طرکیب نے اس کو کسی سے نہیں گنا ، محدین تمید رازی کے عنعلق کہا ہے کہ وہ معتبر نہیں ، علامہ ذہبی کا جواس یہ ہے کہ امام احدین حقیق اللہ مبنوی ، الام طبری اور خن جرح و لاتا دیل کے امام ابن سین و طیع نے (بافی انگلے صفریہ) ادرطران نے مج کبیر ہیں سبسلسلۂ اسناوجناب سلمان فاری سے رہایت کی ہے سلمان کہتے ہیں کہ : «ارشاد فرملیا پیغیر سنے کہ :

> الن وصيي وموضع سدي، وحنيومن اتولث بعدي، ينجوز عدتي، ويقضي ديبني عيلي ابن ابي طمالبٌ ؛

"مبرے دصی اورمبرے رازوں کی جگہ اور بہترین وہ بہتی جے میں اپنے بعد چوڑ مانے والا ہوں جو میرے کیے ہوئے دعد و کو پورا محرے کا میرے و بون کوادا کرے گا علی بن اہل طالب بین "

یہ مدیث نفی مری سبے کر معزست من اومی رسول متھے اور نفر بے ہے کہ آپ بعدرسول افضل خلائت تھے بخورسے دیکھا جائے تواس مدریث سے آسپ کی خلامنت وامامسند ہی ثابت ہوتی ہے۔

(دنتیر مامنی بی فرائش) نحوین جمید کو تشریحها ہے اوران سے مرشین مجی لی بین اسس لحافی سے حوین جمید

فرکور الاعلیٰ سے احادیث کے شیخ اور معتقد جس جنا بی علامہ ذہبی شے بھی جموین حمید علامہ ذہبی

اس چیوکو ککھا ہے جموین جمید پرشنیں یا دوخش کا الزام کبی لگایا نہیں گیا ، یہ محوین حمید علامہ ذبی

می بودرگوں میں سے جس لہٰذا محف اس موریث جس ان کوچھا بتا نا کیونکر دوا جو سکتا ہے۔

مے بودریث بھینہ انحیس اسساد کے ساتھ کرز العمال حلہ بہ صفح ہم ہے ، برموج د

ہے اور ختم نے کمن العمال میں مجی جو حاسشیہ مسند پرچھپا سہنے موجود ہے یلا وظ

ابوننیم تے ملیۃ الاولیاریں اس سے رواست کی ہے کہ: " انخفزست نے ارشاد فرما یا:

"با أنس ادل من بدحن عليك هداالباب إسام المتنين، وسيدالمسلمين، ويعسوب السدين، وحناتم الوهبيين، وقائد الغوالمطين تال أنن: نجاء علي فقام الميه رسول الله مستبشراً واعتنقه وقال له: أنت نودي عدي، وتبين لهم ما هناه وافيه من بعدى "

اے اس بہلا وہ شخص جراس دروازے سے مخفا رہے ہاں آئے گا وہ امام المتقبن ہسپدالمسلبین، بیسوس الدین، باس آئے گا وہ امام المتقبن ہسپدالمسلبین، بیسوس الدین، فاتم الومیتین، قائدالغرالع الجائن ہوگا۔ اس کہتے ہیں کہ ناگاہ معزت علی تشریعیت ہوئے مشاش بشاش میری موکران کی طون براسے اور گلے سے نگایا اور فرایا: تم میری مان سری مانس سے مفوق ا دا کردگے ، تم میری اواز لوگوں کو سنا وکے مانس سے مبدون ا دا کردگے ، تم میری اواز لوگوں کو سنا وکے اور میں اختلامت بہدا ہوگا توحق والم کردگے ہے۔

طبرانی مع مجمبرین سبسلهٔ اسسنا دا بوایوسب انفدا دی سے دواست کی ہے کہ انخفز من سے اپنی بارہ مجرع نا ب سیّدہ سے فر ملیا:

الع شرح بنيج اليافظة عبد دوم مسكاك - بم صنى ١٤٥٩ برمين ذكر كريك جي جي -

۱۰ ناطهٔ کیا مخبن معلوم نبین که خداوند عالم نے روئے زمین کے باشدوں پر اکیب دگاہ و الی اور مخالم نے روئے زمین کے باشدوں پر اکیب دگاہ و الی اور مخبر دوبارہ نگاہ و الی تو منفالات شوم کرمنختب کیا اور مجب وی فرائی توس نے مخال اللہ تکا تا ان سے کردیا اور ان کو اینا ومی بھایا ؟

عور مسنسترائی کس طرح خلاوند عالم می حقرست خاتم اسبیتین کو مختب کرنے کے بعد تمام دوئے زمین کے ہاشندوں میں حصرت علی کو منتخف فرمایا۔ اور برنجی ملاحظ کیے کے مغدا وندعالم نے جس طرح بنی کا انتخاب فرمایا، تمطیبک ی طرح ومئی نبی کو بھی منتخب فرمایا۔

یہ تھی دہیجیے کرکیو نکر خداوند عالم نے اسپنے پیم پر ہر و می فرمال کہ ان سے اپنی بیٹی ہیا ، دواور انھیں اپنا وصی بناؤ.

یہ بھی سوچے کہ آنخفرسٹ کے قبل دیگرانبیاد کے خلفار وجانتین کیاان کے
اومیا کے ملاوہ اور بھی کوئی ہوئے اور کیا فلا کے نتخب کیے ہوسے فاتم انتیتین کے وصی کو مؤخر کر دینا اور غیروں کو اس پر مقدم کرتا جائز ہے ؟ اور کیا کسی
شخص کے بیے سراوار ہے کہ ان پر مکمران بن جیٹے ، خود خلینہ بن جائے اور ومی رسول کو عوام اور دعلیا جیسا بناوے اور کیا عقلا ممکن ہے کہ زبر کستی مند ملائے پہنے جائے وا حب ہوجے خدائے بن جہنے جائے وا حب ہوجے خدائے بن جہنے جائے وا حب ہوجے خدائے بن جائے ہے۔

سله به مدیث ابید بخین الفاظ و انفین بهست د سک ما تفکنز العال کی مدین ۱۹ م ۲۵ سبت الماصلا بو علید به صفیه ۱۵ ینتخسب کمنز العال بین بھی ذکورسب الماحظ بوشخب کمز العال برمامت بدمندا حد جلد ۵ معز ۳۱

کی طرح نتخنب کیا ہو یجالا ہرکیونکر مہرسکتا ہے کہ خدا آور دسول ہوا ورکسی کونتخب کرمیں اور مم ان کے انتخاسب کوٹھ کم آکر کسی دومرے کونتخب کرلیں ۔ " وصاکات اسعوصت والا مدتو سستذ ا فرا تنضی اللہ و دسولسہ آ مسوا اُن میکوت بسہم العنسب ہوتا من آ موہم ہے " کسی مومن ومومنہ کو بیر عن نہیں کہ خدا ورسول مجدب کسی امریس اینا حکم صاور کر دہی تو وہ اپنے پسند واختیار کو وظل دے ہے

بے شار مدتیں اس مفنون کی کنب احادیث میں پائی جائی ہیں کابل نفاق وحد کو حبب برمعلوم ہواکہ رسول ابنی مبٹی علی سے بیا ہے والے میں (جو درحقیقت فخرمر بم اورسیدہ نسار حبنت ہیں) توانھیں حصرت علی سے مہبت بڑا صد بیدا ہوا اور اس معاملہ کوانھوں نے مبہت عظیم عجها منصوص آ ان توگوں کے ملنے کو توکیجہ نہ چھیے جو رسول کی خدمت ہیں خواستگاری کرکے کو داجواب یا جیکے متھے ہے

ئ ابن ا بل جاتم نے اس سے دوایت کی ہے اس کہتے ہیں کہ حفرست ابو کر وعروس فی مالیا کو ک طومت ہیں آئے ادرجا ہے میدہ کے بلیے نواسٹنگاری کی ۔ دیا است ما بٹ نے سکوت فرما لیا کو ک جواب دوای ہے وہ دوان صفرت مائی کے پاس بہنچے ہر کہنے کے بلیے کر ہم توگوں نے خواسٹنگاری کی گردسول منے کو کی جواسب نہ دیا ۔ اب کہ درخواست کیھیے ، ابن ابی ماتم کو است گارہ کی گردسول منے کو کی جواسب نہ دیا ۔ اب کہ درخواست کیھیے ، ابن ابی ماتم کی اس دوا میت کو رہبت سے تا مورع کیا گے اہل سنست سے ابنی کتا بول میں نقل کیا ہے ۔ کی اس دوا میت کو رہبت مواحق باب اا سے سڑو جے میں نقل کیا ہے ۔ اس مو نع برا سام ام می نے میں مدیریٹ نقل کی ہے ۔ جیسے انفوں شے النس سے دوا بیت (بانی انگل صفونی)

ففائل ظامر کرنے کا موقع ہے ناکہ آپ کے دُمْن و بدخواہ ذایل وخوار ہوں آپ فے انحفرت سے عرض کی:

" با باَ جان آپ نے مجھے نغیرو نادار شخص سے بیاہ دیا ۔" اس موقع پر اکففرت سے سے کا سند ارشاد فرائے جوامبی آب نے مسے۔ د إذا ادا دائلہ دستھ حفلیدلیة

طویت امتاح کهالسان حسود موب خداوند عالم کسی و حکی چین ففیلت کو ظامر کرنا جائما ا

ب نواس مے لیے مامدی زبان مقرد کر تاہے یہ

بن مناین کتاب منفق میں معتبر اسادے ابن عباس سے روائی کا ہے منفق میں معتبر اسادے ابن عباس سے روائی کی ہے کہ:

المام عاكم كمستدرك ع معفر ١٢٩ بر باب منانت اليرالمومنين مين

ے یہ مدمیث لینیہ ایخیں انفاظ اور اسسی سند کے ساتھ کنزالعال مبلدہ صنی ۳۹۱ پرپوجود ہے۔ کا منظر ہو صومیٹ ۹۵۹۲ ۔ صاحب کمیزالعال نے اس مدمیث کے اسٹا د کے حسن ہونے کی تقریح نجی کی ہے۔ سریج بن بوسنس سے ،امفول نے حفص ابارسے ، امفول نے اعمش سے ا مخوں نے ابوما مے سے اکفول نے ابوہ ربرہ سے روایت کی ہے کہ: « فاطرٌ نے دسول کی خدمست ہیں عرصٰ کی : پارسول اللہ ! آسپ نے میری شادی علیٰ سے کی ہے اور وہ فغیر ہیں ، کوئی مال وزر منیں رکھتے .آپ نے فرمایا کراے فاطر اکیا تماس یر راضی وخومنشنو دہنیں ہوکہ خداد ن*دکریم نے روسے* زمین کے باشدول براكب لكاه دالى وردوستفول كومتخب كبا ايك مخفارا باب دومرائخفارا شوسرا اورابن عباس سے روامیت ہے کہ اکفرت نے فر مایا: « كبائم اس سے لاصني وخوست و دنهيں كه بين في تنهين اس شخص سے بیا ہے جوئت مسلمانوں میں سب سے پیسلا اسلام لانے والا سراكيب سے زادہ علم ركھنے والا سے۔ اورتم میری امست کی تمام عور تول کی سردار ہو۔ اسی طرح حب طرح مریم اپنی قوم کی کل عور آوں کی میروار تقییں مکیا منعیں اس سے خوش مہیں کہ خدا نے روستے زمین کے ماشقرل برنگاه ژال ادر دُاو افراد کوننتنب کمیا -ایک کوتمعاراب بنايا د وسرك كوتمها را متوسر"

ے یہ حدیث تیریک ایخیں الفاظ اور آئی مسلم مندے کنزالعال حلدہ مسلم اپر موجو ہے نیخب کر آلعال بس می مرح و سبے لاحظ ہوماٹ پرند مقل جلہ اس طراول معلام آب ابی عدید سعزی کی شے معی شرع ہے اسلام جلدہ صلے میں مندا کام احد سے نعل کیا ہے ۔ اسس کے بعد آ تحفزست کا طرز عمل یہ را کہ حبب جناب بیدة کو وزیری پرشانیاں لائ ہو آل تحقیں تو آب فعدا ورسول کی اس نعمت ورحمت کویا دولاتے کہ محقارا سحفدا یہ شخص سے کیا گیا جواست میں سب سے نیادہ اسٹریٹ وافضل ہے۔ یہ اس لیے تاکہ جناب سیدہ کا دل چھوٹا نہ ہو، زمانہ کی نیرنگیوں اور نکلیفوں سے دل تنگ نہوں۔ اس کے شہوت میں وہی روایت آپ کے لیے کافی ہے جے امام احمد نے مسند جلد مصفحہ ۲۷ پر ورج کیا ہے۔ معقل بن بساد کی حدسیث ہے کہ:

"ایک مرتبرمیدهٔ عالم بیمار بوش، دسول عبادت کے لیے انشریعیت الائے ابوجیاکہ: بارهٔ مگر! اپنے کو کیدا باری ہو آب نے فرابا: خداکی متم میری تنکلیفیں صدیعے زیاده موگئیں، فاقد کی مصیبت ناقابل برداشت ہوگئ اور علالت کاملسلہ بڑھتا ہی جاتا ہے۔ آکھزت نے فرمایا: بارهٔ مگرکیا تم اس سے دامی و توسف ودنہیں ہو کہ بیں نے بارهٔ مگرکیا تم اس سے دامی و توسف ودنہیں ہو کہ بیں سے متفاری شادی ایسے شخص سے کی جومیری است میں سب سے تبیا دہ علم والاسے اور سب سے تبیا دہ علم والاسے اور سب سے نیادہ حلم رکھتا ہے۔

اس باب میں بے شار صرشیں موجو دہیں مکتوب میں اتی گنجاکش منہ*ں ک*رسب ذکر کی مامیک ۔

ۺ

مكتوب مكبوس

المسننت وجها عسن حصرست على كے وصى رسول موسف كونهيں ماشتے وہ اس صديث سے استدلال كرتے ہيں جسے بخارى شے ميے بخارى ميں اسود كينے ہيں كہ:

ماشتے وہ اس صديث كيا ہے - اسود كينے ہيں كہ:

« جناب عائشہ كي فدست ميں ذكر آيا كرسول نے اپنا وصى حصرت على كونيا إ - جناب عائشہ كي فدست على الشروييں : يہ كون كمتا ہے ؟

یں نے رسول کو دیکھا۔ یں اہٹے سینہ پر دسول کو کمکئے

موئے تھی۔ آنخفزست نے طشت طلب کیا۔ اس پر تھیکے اور انتقال کرگئے اور تجھے بہتہ بھی زملا لہٰذاحفزست علی کو وصی تنانے اور علی سے وصیت کرنے کا موقع کہاں ملا ؟ یہ نیزا ام مخاری نے میم مبخاری ہیں متعد دط بیٹوں سے اس رواست کو لکھا جے کہ :

* جناب عائش فرما با كرنتى كه الخفرت ميري أغوش مير

الع آب بے خبرہ بوں گے کرسٹیخین ہے اس مدبہت میں دمول کے علیسے وصیبت ندفرانے ى جور داست كى بى ودى نعد واراد واليه كر محية أكرمتوم بون قوشا بداس مديب كو يكعته بي نبير راس بيركر جن وگول نے جناب عائشندسے بر ذكر جيبڑا تفاكد دمول م تے على وصى بنايا وه است سے خارج منبي تف كد وهممابيس سے تقيم عنبي ام المومنين کے ساستے ایس باست کے انکشاف کی جراً سے بیعا ہوئی جوام المومنین کی ناگواری کا باعث متی اوراس بیرد کیسسیا ست کے خلاف سختی اسی وجہ سے جناب ماکشہان نوگوں کی یہ مکر^{شی} (جن بن معزمت علی کے دھی بنائے جانے کا ذکر کھا) من کر مڑھے مشت ویٹے ہیں پڑھئی ۔ اوران ک رد میں جمل و دکنیک بابین کہتے لگیں۔امام شائی شاہستن شائی ملیہ ۳ مشیع میں اس مدسیند پرج ماسشید تخرمی وزایا ہے اس میں لکھنٹے ہیں کہ یہ با سند بمنی دہوگ کہ جناب عائث مكاديث واس سے مانع منبي كرا مخصرت ومي نبا يكے بول تيزان كاارت و د*س کامبی مقتعنی منبین که دمول* و خنتاً انتقال فرما گئے جوں اورآ پ کو وصیست کرنے کامرتھ بی ز ملا ہر کمسس کا تونقور بھی متبیں کیا جاسسکتا۔ کیونکہ میڈیر بیمار موٹے سے پہلے ہی یا خیر تتے کہ اسب زغرگی کے ون تقوڑے رہ گئے ہیں ۔ بمسس عبادست پریؤر فرما ہے کس مند ر سنبيده ومتين موارست بصحققت بالك منكشعت برماني ہے۔

<u> دم توڑا اود بریمی سنسرمایا کرنبی کہ میری گرون وسینرپر کیسٹے</u> لیفے رسول کا استفال ہوا تھی فرمایا کہ رسول کا سرمبرے زا بز يرمغاك المكس الموست فنفن دوح كواكشيط للذااليي مالسنديس الرورون وصيت فرات تو وه جناب عانشه كومعلوم مزور موتا " صیح سلمیں جناب عائشہ مروی ہے، وہ فراتی ہی کہ: « آنخفرست نے نہ درہم جھوڑا نہ اونٹ نہ بکری نہ کسی چیزے متعلن آب مے وصبیت فرمائی عیمی ا ورصحیت بین طاحرین مفرمن سے روامیت ہے کہ: * میں نے عیدانشرین اُو نیٰ سے پوجھا کر کمیا پیغم سے ایسنا دمى مقرر فرايا .؟ الخول نے كما : تنبي - توس ف كما کہ بیمیونکر ۔ خود دومروں کے بیے تؤرمول مسے وصیبت کرنا واحب قرار دیا۔ اور خود وصیبت نہ کی توا تھوں نے كهاكر بينيم كأكتاب فداكے متعنق وصيت ك "

کے جناب ماکٹرکا تول مسانت بہبن ساقشنی و ذاخشنی نیز مسانت بہبن سعوی وغوی یہ دولاں میم مجادی کے باب مرمن البنگ و وفات میں موجود ہیں نیز جناب ماکٹر کا یہ قول شؤل مبد و راسست عسلی فغضہذی رمول کم امریرست ڈانؤ پر محقا کہ مکالمین فنیمن دوج کو کا شئے باب آخو مسا تشکلسم میستہ رمول کے آخری الفاظ کے باب میں موج دہیے سیوباب مرمن البنی و وفات کے قوراً ہی بعد مذکور ہے ۔

> سے ما معادل کیمیچےسلم کتاب الیصیتہ مبلوہ صغریم ا۔ سے الاصطرا ہے صبح سسلم دمیجے بخاری دولاں کی کتا ہدالوصایا ۔

چونکه آپ نے جوصرتیں ذکر کی ہیں ان سے برصرتیں زیادہ میج ہیں کیونکہ بخاری وسلم دونوں ہیں موجو د جیں البذا استعبس مدیثوں کو مقدم سمجها مباسع گا اور انھیں باعثا دکیا جلسے گا۔

> مىر جواسىب مكتوسب

بغربر کا حفرت علی سے وصیت فرمانا ایسی باست ہے میں سے انسکار ہی نہیں کیا جاسکتا کیونکہ اسس میں کوئی شربہ بیں کہ اکفوست کا مصفوت علی ہے وصیبت فرمائی متی ۔ قول وست وار فرمایا متھا (بعداس کے کہ آب انفیس اینے علم وحکمت کا وارمیش بنا چکے حتمے) کر حصرت علی ہی آب کوعنل دیش بنجمیز و سکفین کریں ۔ انخفزت کے دیون اوا کریں ۔ رسول ا کے کیے ہوئے وعدوں

کے طافظ فرما بیم صنو ۲۰۰۰ تا چیم - وہاں کہ پ کو اچپی طرح دھنا صنت نظراً سے گی کے حقق مرور کا کناست کے امیالمومنین کو اپنے علم و حکمت کا وارث تبایا ۔

الدائونين فرائے ميں کہ دمول نے وصیت فرائی کر المرائونین اسے دوابیت کی ہے امرائونین اسے دوابیت کی ہے امرائونین فرائے میں کہ دمول نے وصیت فرائی کر سوائے میرے انتھیں کہ کی عنسل درے اورا ہوائشین اورا ہن تجار سے امرائم ومنین اسے دوابیت کی ہے (الما حظر ہو کرز العال جار ہو ہو کا کہ دمول کے مجھے سے دھیت فرائی اوراز مشاہ فرا کی حب میں مواؤں تو بھے سات مشکوں سے عنسق دینا ۔ ابن سعد نے طبقات مباری متم م صفر ۱۳ پر جاروا مد کے سے دوابیت کی ہے کہ دسالست ماب نے بمالست مرمن موست فرائی کہ لے من ابن عواز سے دوابیت کی ہے کہ دسالست ماب نے بمالست مرمن موست فرائی کہ لے علی اوراد کہتے ہیں کہ (اِنْ اسے معمن مرباؤں تو تم مجھے عنس و بنا عبوالواحد کہتے ہیں کہ (اِنْ اسے معمن مرب)

(بنتیرماسٹبیشعفرگزشته) محفزمند مل شے ادرش د فرا باکہ : میں سے درول کو عنس ویا ، میرجی معتد جم كوعنل كادادك سے الحماما مقدا وہ ميري منابعت كرتا تھا . الم حاكم في مستدرك ع معنى د ديراورعلامروبي مت المنبع سندرك بي بسبداسا واميرالمونين معدداين کی ہے اور دونوں سے اس مدمیث کومیح فرار دیا ہے امبرالمومین فراتے میں کہیں ہے دمول اكوسن ويا اور مرد ول سعروات ويجينين أن بيم بنظر تفاكد زمول اسيمي المبور فيرجونى ب كرميس ي شاكي إست مى دونون مالتول مي مجم توسيد بورب - اس مدري كوسيد بن مقور ف اين سنن مي موزى خے اپی کتا سب جنائزہ میں ، ابوداؤ و ہے مرامسسبلہ میں ابن حیثیع اورابن ابل سٹیب مے منئن یں درج کیا ہے اور کمنز المال جادم صفے پرمجی موجود ہے ۔ جناب ابن عباس سے دوایت ہے وہ فرانے ہیں کہ علیٰ کو چار بایش الیں مامل ہیں جوکمی ادرکو ما مل ہیں ہویں . علی پہلے وکوشمنع ہی حنیوں سے دمول کے ساتھ تماز براسی علی برموک ہی علمدار پیم پر دسیتے ، علی ہی دمول کے باس اس ون ثابیت قدم دسیے عب کہ ہڑنوی کولا كوجوث كرسمة كسي مقااور على أى وه بي حنيون مند ديول كوهن وإاور الزبين لنايا ، اس روایت کوابن عیدالبرے امنیعاب بین سسلده الات امیرالمومین اورها کم سے مستندرک مبلد مستدید درج کیا ہے . ابرسعد خدری سے روامیت ہے وہ فراتے یں کررمالت ماک سے ارمث اد فرایا: "اے علی تم بی مجعے عسل دو کے اور میرے وبون ادا كرد م ادر قريس مح وفن كرو كي الاحظيم كنز العال ي ١ مد يعر عرسے اکیب مدیث مردی ہے جسس میں دمول اسے علی سے فرایا : تم ہی مجھے عشق دبینے داسے ہو، مجھے دفن کرسنے واسے ہو ، کمنز العمال مبلہ ہ ص<mark>ر ۲۹</mark> پنتخب کمنز العال برمامشیدمندا مام احرمبلده صفح معزن علیمی مردی ہے : کپ فرائے ہیں کہ یں سے درول کو یہ کھنے سے العائدے مجع دائی میں) یا ٹے چیزی ایسی (باتی انگلے مغرب)

كوبوراكري - ربول كى ذمر داريال ابت مرايق اور دسول كمرن كي بعد

وبقيرها مشبيه فوزشت علاكين جومجه سيميشينزا نبيار كوكسي معطانهين جويش ببيل باست تويرب ك وه ميرے ديون اواكري مح اور مجھ دفن كري مح . كسز العال عبد ٢ منت مجب دمول کا جنازہ تیار مواا در لوگوں نے نمازجنا زہ پڑھنا مائی توصفرت مل سے کہا كروول كى تمازيس كوئى شخفى الم زبوكا . ووتو تمقارى الم بي زندگي مي مجاور مرع بريجي المنزاد كسي كغوش كالتوثري ويربع تق اورصعت بصف بنيا زبرط حصته ليكن المامت كى ئەركى دە بۇك تكبيرىكىتە اور حفات على جنازة رسول مىم مغابل كھرشە يېركم فرائے بسلام ہوآپ پراسے پنوٹر خلا اور دحست ہو انٹرک ، خداوندا ہم گواہی ویتے میں کرجو کچے تو نے نازل کیا وہ درسول نے ہم پکے سینیا یا ۔امست کی بوری نیرخوا ہی ک . تیری راه میں جہاد کھیا بیاں کے کہ تو نے ان کے دین کو فوست مخبثی اوران کے كلركوبيراكيا وفداونداليس مبين قزار دسعان لوكون سيجوم فيمتر برتبراء نازل كي بوسة احكام كى بيروى كرف بي اوررسول كالله ما ف ك بعدسي نابت قدم ركه ا درمين بارے ومول سے ملا معزمت على ينزلغا در وكار بين آبين كيت إسى طرے مُرووں سے نما زیڑھی پھرعور نوّل نے پھرمیجوں نے ۔ یہ کل معنون بعینہ انہیالغا ظ میں جوم سے ذکر کیا ابن سعد سے اپی طبقات میں پنجیرے عسل کے بیان میں فکر کیا ہے۔ ربول کے جنازے پرمب سے پیلے بی اٹٹم آئے بھر مہا ہویں بھرانعا و مجھر دورے نوگ اورسے سے میلے معزت علی اورجناب مباس نے نما ز برطی یا دونوں حفزات ایک معدیں کوئے ہوئے اور بائے کمبری کہیں -

ہے ان سب خکورہ بالا امور کے متعلق ا تُرَّ طامبرین سے منوَاز صربی موجود ہیں ۔اہلیبیت سے فنطح نظر فیروں میں طبرانی تے معج کبیریں ابن عمرسے ابوبیلی نے اپنی (باتی انگلے صفریہ)

ابقيهمامىشىدمغى گزمىشىتە) مىندىس مىعزىت ياقىسىسى جوروابىت كى بىيە تۇ لمامغا فرائىي طبران كى عالم كامطلب يب كالخضرنت ني فزماليا كدا من من تم مير سيمعاني الميرس وزيرا مير دبرن ادا کروگے، مبرے وعدوں کو اور اکروکے اور مبری ذمردار اوں سے مجے مبارکوش بناؤيمتح الماضطة بوكسنزالعمال جلدب صفصا برابن عرست بسنا وكركير مدبهث مذكورب ا در ملده صفه م برحد زن علی کی طرف اساد کرے ذکورے ۔ اس مگرعلام برمبری سے منفؤل ہے کہ اس مدمیث کے کل داوی ثقة ہیں ۔ ابن مردویہ ودلمی سے مبنام ال فارى سے روايت كى ب ملا دظر موكرز العال عليه صفى ١٥ كر المحقرت نے فرما يا : عن میرے وعدوں کو پورا کریے اور میرے وبون ادا کری کے ای معمون کی حدیث ائش سے بزارنے دوامیت کی ہے۔ ملا خغ ہوکہ زالعال مبلدہ صنایہ المام احمان حبّل في سند ملدم صغر ١٩٢٧ برصيثي بن جنادة سعدواسيت كى سب وه كيت بي كريس فى رسول م كوكيف مشنا : ميرب ديون سوات ميرب ياعل اكول أوراد الهين كرسكا اورابن مرد دید سے امیالمونین سے روابیت کی ہے الاحظ ہو کمنز العال علد و مست كروب آي واندر ازل بوا توا كفرسة فرايا عل ميرے دون اواكري ك ميرے ومددن كو يوراكري مگ " سعد سے روايت ہے كديں نے يوم محضور كول كو كمنے سفنا: آپ نے حصرت علی کا انھ کیڑا اور خطبارے و فرایا ۔ بعد حمد و ثنائے البی کے ایرشاه فرایا : اسے وگر ! میں ممتثارا ولی ہوں ۔ لوگوں نے کہا ہے شکب یا دمول اللہ؛ کچھ آب معصرت على كا إنها تفاكومست ما إيم ميرسه دل بين اوريبي ميرى مانب سے مرسے دیون اوا کریں گے ۔اس مدیدے کو آپ صغر ۳۳۲ پر ملاحظ فرا میکے ہیں۔ عبدالرزاق العابى مامع بس معرسا الطول العاتباده سدردابيت كى بعد كرعاماني رمول کے بعدمنیدامورا مجام دیے جن میں زیادہ نزرمول م کے کیے ہوے وحدے شصحنعیں آپ نے پواکیا برا خیال ہے کہ انھوں نے بائے الکہ رباتی انگے صنی برب

<u>حبب توگوس بی اختلات پیدا موتوا حکام ابلی اورآمورِ پنریمی</u>ت واصح کردی اور آب است سے فرما چکے تھے گہ: ایر علی بی مقدارے والی ہیں میرے بیٹر اور سرمیر سے

معالُ بَیْن ، میرے نواسوں کے باہ بین ۔ میرے وزیر میں۔

(ببتیرماسٹیم خرگزشت) درہم کے تنے بعدالرزاق سے دِعِیا گیا کہ کیا دسول کے علی کو کسس کے متلق وصيست بھی کی تقی انفوں شے جواب و باکہ ہاں مجھے کو اُنٹکس نہیں اس میں کہ دمول م سے حرور على على من وميت كي في اوراكر دمول وميت نفر الحكة موت تو فوك على کو دمول آ کے وہون نہ اواکر نے و بنے۔ اس مدمیث کوصاحب کسنزالعال شے حلہ مہامنٹ میر ورع كياب ملاحظ موحدميث مروداد.

اے کمٹرست مریکی مفدوص موجو و بہری کرآ مخصر سنگا نے امیرالمومنین اسے وصیعت فرائی تفی کہ آپ کے انتقال کے بعدارسند <u>میں کی س</u>سکرمیں اخراوت پیدا ہو تو اس کی وصاحب کریں - ملاحظ ہو مفی ۲۸۳ پر مدمیث علا و علاماس سکے علاوہ اور کئی مبست می مدنین میں جن میں سے دیم نے ذکر کی بی اور میمن کوئٹرست کی میٹیت سے ذکر کرنا عزوری ندمجما -یے گزرشنة صفات بیں بیشترمقامات پر اس پر دوشنی ڈانی مبا بھی ہے ۔

سعد درول اورجع سندع من موامات كا قائم بونامتوانرا ما دبيث سعد ابت بهجم سنه اس پر کانی تومت فرایم کردیهمی اس مئذ میں ۔

سمت اربالموشين كا فرزلمان دسول كا باب مونا وجدان طورير واض ب يحفزن مرور كاكناست نے امرالمونین اسے وایا کرتم میرے مجان ہو، میرے اور میوں کے باب ہو - تم میری منت کی حمایت میں جہا وکرونگ ، اس عومیٹ کو ابو بیلی نے اپٹی مسندمیں ورن کیا ہے خامند ہو كنزالعال ملد، مغرمى اوراس كے دواة سبك سب معتبري (باتى الكے صفري)

(بقیعامشیمغرگزشت) جیباک علام ہمیری نے تفریک ک سہے۔ الم احدے مبی اسس مدمیث کومثانب يں درے كيا ہے جيداكم مواص محرِّز مشك إسد مغل ثا لست بنة طياسيما ورا كلعزت شعيمي ارمشاه فراليسيم كم خداه ندعالم نع برنى كى ذرسبت كوامسس كے سلب ميں ووسيت فرالي اور میری ذرمت کوسس علی بس فارد با -اس مدسیث کوطران سے معم کبیریں جناب جابرے اورضلیب عدائی تاریخ میں ابن عباس سے روابیت کیا ہے اور کرزانعال ملد، مفا برموع وسب المخصرمن سعيمى فراباكم مروفترى اولاداس فبيله وماندان كاطرن فسيب او ت بے سواے فرزندان فاطر سے کمیں ان کا ولی ہوں . یں می ان کا بررگ فاندان موں، یں ہی ان کا إب موں -اس حدیث کوطران سے جناب میدہ سے روا بت کیا ہے اوری مدسیث ان امادمیث بین سے ایک ہے جسماین عورے مواعق باب ۱۱ مثلا پرنق کیا ہے -اس مدیث کوطران نے این عرے مجی دوابیت کیا ہے جیا کراس صغرر ندور ہے ۔اس مبیں میریٹ مستورک جلام صفح ۱۹۲ پرمناب ماہرسے دوایت کہ سے اور کھا ب كرب مرميث فيح الاسسناوب كرشين نه اين صحيبن بس درع نبي كيا . ايك اور مديث امام ماكم نے متدرك بي اور ذہبى نے مخبص مستدرك بي اكمى بع الشين كيمسياد بإمسس مدميث كوميح قزار وياسيخاس مدميث بين ب كرا مخفوست مع فرايا كد مگراس على تم ميرك فور شيول كي إب مور مجه سے مرامجه تك بوادر مجى مبتيرى ميے مدشين بي (مبتیع مشید ہے۔مفرق شت) معزمت مل مے وزیر رمول ہونے کے متعلق منجع اورارشا داست کے اكيد مديث أمنت حسيني مبعد فزلة ها رون من موسى " بن كان موكى. مبياكهم م ۱۰ ادر۱۳ پرنومني كريكي بي رنيزويون ويژو كه وقع پر جو أتخفزت محارثنا وفرايا تغاأى كولے بيجة "خاب كم يوازدن على احدي هذا؟ نعال على: أثنا يارسول الله ، اكون وزيدك عليد يدرل ك مجع سے اوجھا مقائدتم میں کون شخص ایساہے جو کاررسالت میں مرا (باقی الکے مسنور)

میرے میر از بین ، میرے تولی بین ، وقتی بین ، میرے برطم کا

دننیه ماست یم و گرمشند) بوجه برائے جب سب فامون رہے تو مفرست علی اُن کھڑے ہوئے اور کہا، میں اُپ کا بوجھ بڑانے والا ہوں گا۔اور سس مدریث کو بھی اُپ الاضلام نسر ما چکے بیں فدا محلا کرے امام بومیری کا کیا اچھے امتدار کے بیں ، بینے تصیدہ میں فرانے بیں : لے میں وہ کا کشف العنظاء میتنہ یہ تا ہے۔ میل ھو المنتھیں میا عملیہ العنطاء میتنہ با

*پر دے اٹھنے کے بعد بھی آپ کے بیتین میں احنا فرک گمنبا کشش نرمتی بلکہ آپ تو آفٹا ب بہر مبسس برکوئی بر دہ نہیں "

له تنام است اسلا بیگا اتفاق ب که کلام جدی بین ایک ایسی آست ب عب برموائے المرافینگا اور ده موده کی منع عمل بنہیں کیا ۔ ندآ پ کے بعد فیاست انک کو آباس پرعمل کرسنے کا اور ده موده محاول کی آبت بخوی ہے ۔ اس پر دوست و دخمن ہر ایک بلفظ و زبان سفق ہے اوراس کے سندی شخص نے بین کے معیا ربر صبح عربی اعاد میش اوراس صغر پر علام ذہبی کی تلخیص بر فرد ما نذہبے ملا حظ ہوست درک عبد ۲ حدث اوراس صغر پر علام ذہبی کی تلخیص متدرک اور دیکھیے نفیہ رفعلی ، طبری برسیوطی ، زبحش کا ، وازی و بیز و کی تفا سیر سندرک اور دیکھیے نفیہ رفعلی ، طبری برسیوطی ، زبحش کا ، وازی و بیز و کی تفا سیر سندرک اور دیکھیے نفیہ رفعلی ، طبری برسیوطی ، زبحش کا ، وازی و بیز و کی تفا سیر سندرک اور دیکھیے نفیہ رفعلی نام میر کوئی کا ذکر ہے۔ وہیں آپ کو برسی معلوم ہو گا۔ جذبی بیش آباد و نیم ایسا کی موقع میرش سندانی موقع میرش سندان کوئی معلوم ہو گا۔ کہ طافعت بی سیاس کی عرص میں نان مورس سنگے کہ آبی خور ایسا کیا ہے اس کی مارس کی طرف نور ایسا کی مارس کی کرا کھزیت اور ایم اگونی تنا دور کی اندازہ کریں سنگے کہ آبی خور ایسا کیا ہے اس کی مارس کی طرف نور ایسا کیا ہو اور ایم اگونی تنا دور کیس سند کوئی کوئی تعادی سے میں نے ان اور میں بھاکت کی میں مارکوش کی و دہری بھاس کی طرف نور ایسا کیا ہے اس کے مارس میں خور ایسا کیا ہے اس کے مارس کی وہری بھاست کی طرف نور ایسا کیا ہو سے ایسا کوئی کوئی اور سے ایک کے مارس کی طرف نورس بھاکھ کوئی وہری بھاست کی طرف نورس کی اندار دورس کے کہ کھوڑ سنا اور کیسا کوئی کوئیں کا کھوڑ سنا اور کھی اندار وہری ہا کھوڑ کوئی کھوڑ کے اند سے ایک کے مارس کی کر بھوڑ کی کا دورس کا کھوڑ کی کھوڑ کیا کہ کھوڑ کی کھوڑ کے دورس کا کھوڑ کی کھوڑ کیا کھوڑ کی کھوڑ کی کوئی کھوڑ کیا کھوڑ کی کھوڑ کیا کھوڑ کیا کھوڑ کی کھوڑ کیا گھوڑ کیا کھوڑ کی

وروازہ ہیں ، میری مکست کے گھر کا دروازہ ہیں ، اس امت کے لیے امان اور سنین نجات ہیں کے لیے امان اور سنین نجات ہیں است کے لیے امان اور سنین نجات ہیں ان کی اطاعت بھی اسی طرح فرمن ہے جس طرح میری اطاعت ہے جس طرح فرمن ہے ، ان کی نا فرمانی اسی طرح باعث بلاکت ہے جس طرح میری نا فرمانی ، علی کی ہیردی میری ہیروی ہے اور ان سے میرائی مجھ سے میدائی ہے ہیں۔

(جیب کرص فر ۲۸ کی سنز ہوی مدیث سے نابت ہوناہے:) علی سے یوصلے دکھے
اس سے درول کی بھی صلح ہے اور حس نے علی سے جنگ کی اس سے درول مجی
بررم جنگ ہے ہیں جس نے علی سے موالاسن کی درسول مجی اس سے و لی ہیں ،
(جیر ماسٹ یے سے مؤرشت اجرالوشن کے دل ہوئے کے ستان آئفزت کا یہ تو ل کا فی ہے ہوان مبان
کی مدین ہیں ذکور ہے جے ہم گؤسشن صفاست ہیں ذکر کہ چکے ہیں: اے علی تم دیا و اُخوت
میں میرے دل ہو یہ سس کے علادہ یہ توالی واخ چیز ہے جس پر کسی دلیل کی مزورت بی ہیں۔

(بیرماسشید که صفر گزشته) ۱۳۱ سین اس کے شان تعوم فکرسکے جاچکے ہیں .

لمه لما منظ ہوصفی ۲۸۲ بیں صدیث عداد اور اس پرجو ماستیب ہم سے میرو قام کیا ہے۔ وہ مبی دیکھے ۔

الله علامظ فرائي مغرمه بين مديث منا

سے لاحظہوصفی ۱۳۸۵ میں مدیث عال

کے میںاک ان اما دبیٹ کا فیصل ہے جوم ہے صغری ہ 'ناصغہ م ہ پرمیان کیں ۔

ف میباک صفر ۲۸۸ کی حدیث علاست معلوم وا ب

ملت المام احمد نے سسندی ۲ صفر ۲۲ ہر براہ ہر بریا ہے ایک مدیث روایت کی سیے کورسول کئے مل وفائل من وصین کی طرمت نظر کو کے ارشاد فرایا ۔ میں برمزعگے ہوں (باتی اسکام مخرب) اورسب نے علی کو دسمن رکھا دسول ہی اسس کے دسمن بیٹے جس نے علی کو دوست رکھا۔ مس نے علی کو دوست رکھا۔ مس نے علی ا دوست رکھا۔ اس نے خدا اور خدا کے دسول کو دوست رکھا۔ مس نے علی سے سے ملی سے میں سے علی سے سے میں سے می

الد المدخ والى است والاه دعاه است عاداه (فلونلا تودوست ركه اسس كورول) الدها الله الله الله والى است والاه دعاه است عاداه (فلونلا تودوست ركه اسس كوجوعلى كورش د كمه) جومه تواتر تكسيهنها بوا المعنى كوموني كودوست ركه اور دشن ركه اسس كوجوعلى كورش د كمه) جومه تواتر تكسيهنها بوا المعنى بن كاف بن نيز مكتوب نسب بربيه كي مدوست الاخلاف المجه المعنى مدتوان المعنى المنافق المعنى الم

موالات رکھی اس نے خدا اور اردولا سے موالاست رکھی اور سسنے علی سے عداوت رکھی اسس نے خدا ورسول سے مداوست رکھی کے جس نے علی کو از بہت دی اس نے خدا ورسول کو از بہت دی اس نے علی کو سب وشتم کیا اس نے خدا ورسول کو سب مشتم کیا ۔ من نے علی کو سب وشتم کیا اس نے خدا ورسول کو سب مشتم کیا ۔ من نیکو کاروں کے قتل کرنے والے بیں جس نے علی کی مدوسے گریز کیا ذلیل وخوار ہوا ، علی مما اوں مدد کی وہ منعین کے امام ، رکھن بیشانی والوں کو جنست ، کس نے جانے والے بی نیک مرواد متنین کے امام ، رکھن بیشانی والوں کو جنست ، کس نے جانے والے بی علی علی ہیں ، اولیائے مذاکے امام بیں ، فر میں ، فرا برداران الی کے لیے ، اور وہ کار میں جندا نے متنین پر فازم کیا ہیں ۔

یے صغر ۱۹۲۷ کی مدیث مسلاے کسس کی و مناصن بول ہے نیز دسول کا یہ ایرسٹاد کر اللّہم واللہ مست والا و دعاد من عداماه بی کا نی ہے کسس کے فرست کے ہے۔

یہ ہسس کے بھوت کے بیے عمروبن شاس والی معربین سن چکے بی جس بی رول نے فرایا ہے کہ جسس کے بھوت کے بیے عمروبن شاس نے مجھے اذبت دی عمروبن شاس کی معرب کوا ام احر سے مسئلہ بی مسئلہ بی مسئلہ بی امام ما کم نے سسند ہ م مشکل پر ذہبی نے کھنیوں سندرک ہیں اس صفر پر اس معربیث کی محسن کا احتراف کرنے ہوئے ذکر کیا ہے نیز بخاری نے الریخ بی ابن صد نے طبقا سند ہیں ابن ال سندید تھا ہے مسئلہ طراق سند ہم کمیریں مجھی کسسس کی دوایت کی ہے ۔ کھڑا لعال ج یہ صغر دیم پر بھی موجود ہے۔

سے مبیاک معنہ ۲۸۹ میں اکٹھادہوں مدمیٹ سے ابت ہوتا ہے۔ 'سے مبیاک صفی ۲۷۱ کی مبیل مدمیث سے گابت ہوتا ہے ۔ ہے ملاحظ فرائیے صفر ۲۷۲ پر مدمیث سنڈ و سنڈ و سنڈ و عدہ۔ بیے صفح ۲۷۹ پر میرٹی مادمیک ہے ۔ یہی علی صدیق اکبرہیں ،اس امّست کے فاروق ہیں ، مومنین کے مروار ہیں جو یہ بمنزلہ فرقا ان مقیم اور ذکر مکیم کے بیٹ معلی رسول کے بیا بیے ہیں جیسے موسی سے لیے ارون تھے ہیں

علی کورسول سے وی مزلت ماصل ہے جو مزلت رسول کو خدا سے
ہیں ۔ علی رسول کے بے ایسے ہیں جیے بدن کے بید رہے ، علی شر نفس رسول کے
ہیں ۔ مذاوند عالم نے تمام روئے زمین کے باشدوں پر نظر ڈال اور رسول وائی کو نتخب کیا ۔ دسول کا ایک میں ارشاد نے لیمیے جو آپ نے جہ الوداع کے موتع پر
برم عوفات فرمایا مقاکہ میرے وائمن کی ادائیگی علی می کر سکتے ہیں ۔

اے میں کو صفح الما کی مدیث عشد سے واضح ہوتا ہے۔

ے مکترب منہ رہ میں آپ میچ درئیں اس کے بڑوت میں سے بی ان احادیث کے دیکھنے کے بدامات جائے ہیں ان احادیث کے دیکھنے کے بعدما مب بعیرت کے لیے کو بچاکی شک ومیٹ کی گجاکش ان انہیں دی ۔ مؤداہ پریہ مدیث بی ذکر کی گئ علیا میع الفتن ان والفتوآن مسیع عبلی، الا بیف توقات علی سکان کے ماتھیں اور قرآن علی کسا تھ ہے یہ دونوں کمیں میل نہوں گئے میں کو میں میل نہوں گئے میں کمی میل نہوں گئے میں کمیں کے میں کہ ہماری تخریرے ومن صدے ہمول ہے۔

شکت جیمیاک صنح ۲۸۵ کی تئیر توی مدیبی سست بات برنا ہے

ہے صفہ ۳۱۳ پر مدیث عسبی حسین مبعسفزلسة داسي من سیدین ذکری جاچک ہے سے جیساکہ آیرت مباہلہ بتاتی ہے نیزعبراوحن بن مومٹ کی معرصیٹ جے ہم نے مخو۲۱۹ سے ہم تریس درج کیاہے ۔

عه مبیاک ہم صنی ۲۰۹ تاصی ۱۰۰ پر کسس کے ستین حریجی امادیث ذکر کیے ہیں، شہ ملاحظ ہو معنی ۲۸۵ پر مدیث مطل اور اکسس مدیث پر جوم نے ماسٹ پر تخریر کیا ہے وہ کیجی دیکھیے ۔ اسس کے ملاوہ کبڑت ایس صوصیات سے پنیبر نے امیر الموئین کور فراز کیا جوھرف دمی ہی کے لیے مناسب اور قائم مقام بنیبر ہی کے لیے مناسب اور قائم مقام بنیبر ہی کے لیے مناسب کا بندا ان حضوصیات اور محضوص فقائل و کما لات کے بعدا میرالموئین کے وہی بنیبر ہونے سے انکار کرنا کیسے درست ہوسک ہے کتی مدینوں کو حیشلایا جائے گا اور کہاں تک میٹلایا جائے گا اور کہاں تک میٹلایا جا سکتا ہے۔

حصرات اہل سنت جوامیرالمومین اسے وصی سخیرم ہونے سے انکار کرتے ہیں نواس کی دجرہی ہے کہ وہ مجھتے ہیں کہ اگرامیرالمومنین کو دصی رسول سنیم کرسبا جاسے تومیھر منع اسے ٹلاش کی خلاصت باطل ہوجاتی ہے۔

اور بخاری دخیرہ سے طاح بن مقرف والی مدمیث جو ذکر کی ہے جس یں ہے کہ بیں سے کہ بیں سے عبدالمند بن الما وفاسے بچھا کہ کیا رمول سے دمیت فرائی؟ انفول نے جواب دیا : نہیں ۔ میں سے کہا : رمول کو گوں پر قو وصیت کرنا واجب کریں اور خود دمیت نزا واجب کریں اور دمیت نزکریں ۔ نوا کھوں نے جواب دیا کہ انخفرت میں نے کا اب مدایک متنان مائی ۔ یہ مدمیث ہا دے جیجست نہیں اور نہ ہارے جا اب میں بیش کی حاست نہیں ۔ مزید براس یہ توسیاست کی حاست نہیں ۔ مزید براس یہ توسیاست کی حاست نہیں ۔ مزید براس یہ توسیاست کی مارسان یاں مقیس موجود ہیں المذا ان عدم واقع دکا اینجہ ہے ۔ ان سب با تول سے قطع نظر بی بات تو یہ ہے کہ امرائلومنین می حجرد تشدد کا اینجہ ہے ۔ ان سب با تول سے قطع نظر بھی وستوان مدیثیں رو کر دی جائیگ میں وہ کو دی جائی ان مدیثوں کی معارض مدیثیں رو کر دی جائیگ میں وہ کو دی جائیگ اس کے علاوہ امیرا لمومنین کا ومی بینجہ ہم ہونا توالیا اظہرین الشمیں ہے جب دحیان ایس کے علاوہ امیرا لمومنین کا ومی بینجہ ہم ہونا توالیا اظہرین الشمیں ہے جب دوبان ایس کے علاوہ امیرا لمومنین کی مورست ہی تہیں ۔ تو دعق انتان ہے ۔ وجدان بید دیں ور مان کی مورست ہی تہیں ۔ تو دعق ان تاتی ہے ۔ وجدان

اے مرف مقل ہی سے بوجھیے و کھے کیا کہت ہے عقل کے زدید نامکن ہے ممال ہو اِلْق الكاصفير)

ولقبيعامت يصن گرمشنز) كردمول انجا امست كونو دصيعت كاحكم دين اتخاسخق وبسندما بيل ادرخود وصيست نركي ورا نفاكيلاوون كانسيست بغيري ومينت فراع زياده مزورى مقايكوككس اورمريت واعات وتوابيا تزكره بواجيا دمول في عجبوط اورندا يسدا بتام هجوط سع جيب دمول كي عجبوا ساح ي کے متروکات ندورڈ نگران کار ومردیست کے ایسے مخاج ہوئے میںا دمول کی کھیوٹری ہوئی جیزی کی شخع دنگان کاممتاع مخبیں ۔ یا ہول آ کے حجو ٹیسے ہوئے ابنام مربہسٹ کے عزد رہ مند تتحتبناه بخاريون محالمابيغ فيتئ تزكدنبئ مشسوعيت البيدا منكام المبى كوبينهى عجوالعابش اورلين انتام منی تمام روسے زمین مے باشندوں کو بوئنی ہے مهارا جھوڑ دیں کہ و، معرکی کھاتے مجرب ادر ا بن خوام شوں کے مطابق چیلتے میرے رہی اورائی گران وشنام نامچوڑ میں جس کے ذریعے مزدوں پر خدا کی جمست تمام ہو . علاوہ کسس کے وجدان بھی ہی کہنا ہے کدر روائنے علی کو انیا وہی حزور خرکیا كيونكريم ويحيت بيركردمول الشعاق كواسينه حنسل وحؤط وكعن و د فن كا مكم ديا - ويون كى ادايكي ذمرّ داریوں سے بری الذم بتا شے اورا ختا صن سے وقشت من کی وحاصت کرنے کی تاکید ک^ہ نیز لوگون کوچی با فبرکرد یا که بارسع بعد عل محقارسد و ل بن -اس سک علاده اور خصوصیات ابرالمونین کے بھی ان مے کوش گرار کرد ہے جنیں ہم اسس مکتوب کے سروع میں اشار تا وَكُوكِ عِيكِ مِن المِذَا مِارَا ومِدَان تبانا مع كريقية ومول في معزت على كوابنا وصى فريام كا ادر بغیر دمی نبائے دنیا<u>ہے نہیں است</u>ے ۔

تاکسیدی اورا ست سے فرما ویا سقاکہ مندا و ندعالم کی دونوں رستوں کومضوطی سے مضامے رہنا اور ڈرا ریا سفاکہ اگر دونوں سے مشک ندکر و گے لڑگراہ ہوجا و سے اور یہ بھی است کو جتا ویا مقاکہ ست ران والمبسبت کمیں مدانہ ہوں سے یہاں تک کرمومن کوٹر برمیرے یاس بہنی ۔

اس باب بین بکرت متوانز مدیثین آند لما مری سے مروی بین البیت طاہرین سے مروی بین البیت طاہرین کے ملادہ اغیار کی روایت کی مول منغدد مدیثین ہم گرسٹ تا ورا ق بین ذکر کریے ہیں۔

ش

مكتوب غبريه

انضن ل ازواج

س

جواسب مكتوسب

جناب عاكثة افضل أزواج بي زيخب<u>ي</u>

جناب عامَشْدُکا افغنل از دائِ بنی ہونانسسیم کے قابل منہیں۔ جناب عائشہ انفنل از داج بنی ہو بھی کیونکرسکتی ہیں مجبود کان سے مسیح مدمیث مردی ہے۔ جناب عائشہ فرماتی ہیں کہ:

البیب دن بیغیرسنے جناب خدیمی کا تذکرہ فرما با تو مجھے برامعلوم ہوا۔ بین نے کہا: وہ تو ٹوٹوھیا تغیب ایسی تغیب ولیے تغیب اور مغدانی مغداوند عالم نے آپ کوان سے اچھے بیری دی . (انثارہ تقاائی طوت) انخفزت شے ایراث و فرابا: فداو ندعالم نے اس سے اچھی بیوی بھی بیوی مجھے بہت و قست ایمان الم بیری جھے بیراسس و قست ایمان الم بیری جس سب بیرانکار کرنے تنف اوراس و قست انخوں نے اپنے مال بیں سب بھیٹلاتے شے اوراس و قست انخوں نے اپنے مال بیں سب بھیٹلاتے شے اوراس و قست انخوں نے اپنے مال بیں مشرکب بنایا جیب سب نے جھے جم وہ کر دکھا مغنا اور فدائے میری تو یوں سے اولاد مرحمت کی اور دور بری بیریوں سے اولاد مرحمت کی اور دور بری بیریوں سے اولاد دولئے وہ

ا مدیث اوراس کے بعدوالی صربیت مہدد میرومیم امادیث میں سے میا مظر فرائی اسٹیماب ابن عبدالبریم مالات جنا ب خدیج بعینز ابنی الفاظ (باقی الحق مغیر)

جناخ يجبتمام أزواج يرابفنل بي

جناب عائشہ سے ب*ہ حدیث بھی مردی ہے وہ فرم*اتی ہ*یں کہ* : « رپول ً النّٰدوب، يكب خبريمه كا ذكرندگر لينت اوران كى خوسب مدح وثنا، زفرمالینے گھرسے جاتے نہیں ،ایب دن آپ ہے حسب دسنورف كيبكا ذكرفرما إتوجه يطرى غيرست معلوم بوئ ببن ف كها: وه نو برصيا تقيل اوراب خداف ان سع بهنر بوي آب کو دی بیٹن کررسول عفتہ سے بھرگئے بغیظ وعفنب کا بہ عالم مقاكر مرك الشيرك إل عصرك أرسه بلنے لكے . آب سے ارشاد فرایا ؛ خداکی فتم ان سے مبتر مبری مجھے نہیں ملی ۔ وہ مجھ یراس وقنت ایمان لأبئن مبدسب لوگ کغزا منتیار سکیے موے تھے۔ اس وقت بری تقدین کی حب سب مجے معطاتے يخفے اورا بناکلُ مال وزرميرسے تولسے کر ديا حبب سب مجھے محروم كيے ہوئے تنفے اورا بخين كے بين سے خدا نے مجھے اولا دمرحمت فرما ئی ۔اوردورری بوبوں سے کوئی اولا دیمھے نددی ۔" المبذا ازواج دسول مين سسب سعدا ضفل وامثرون جناب خديجة الكبرئ بیں جواس اتمت کی صدیعیہ بین جوسب سے بہلے ایمان لایس جنھوں سے سب سے پیلے کتاب مٰداک تقدین کی ۱ دمول مسے ہمدردی کی دمول میر وجی

(لنبیعاسشیرصغ گزسشنز) بیں چوہی سے انھی حومل کیے یہ دد نوں مدنیس موجود ہیں قریب قریب انھیں الفاظ کے سانٹ بخاری کی لم سے مجھ اپنی مسجھین میں ان دو نوں مدیثوں کو ڈکر کیا ہے۔ نازل ہوئی تنی کرجناب فدیجہ کونٹارسٹ دے دیں کدان کے لیے جنت میں جوام ان کی گئے جنت میں جوام است کا گھرہے۔ رسول کے معاف لفظوں میں حرامت فرما دی تنی کرجناب فدیج بسب سے انتقال وانٹروٹ ہیں چنائی آپ نے فرایا :
" جنت کی مورتوں میں میار عور میں سب سے مہیز ہیں ۔ فدیجہ

ا جننت کی فورتوں میں مپار عور میں سب سے مہتر ہیں۔ مذیعیہ منت خوبلد ، قا طرمنیت محمد ، اسب پرمنت مراحم ، مریم بنت عمران ؟

أتخفرت نائے بيھي ارشاد فرايا :

« تمام عالم كى عورتون مي سبب سع بهتر مريم بنست عران ، مذيم بنت عوليد ، فاطرنبت محد اوراس زن فرعون بين "

ای طرح اورسهندی مریمی حدثییں میٹیبرکی ہیں جو جملہ ا مادسیٹ نبوی ا و ر ارسٹ دانند میٹیم میں میم تر اور ٹا بہت تر ہیں ہے۔

اس کے علاوہ ہم تو بہ بھی کہتے ہیں کرجناب خدیجہ کے علاوہ دیگرازی بی بین کرجناب خدیجہ کے علاوہ دیگرازی بین بین میں معتبر وابا و اخبار بتائے ہیں کر حناب عائشہ کو دیگرازوان پر کوئی نصیلت زیمتی جیب کہ صاحبان نظر وارباب عقل سے پوشیدہ نہیں کئی مرتنی ابسا ہوا کرجناب عائشہ نے کہ مین ابسا ہوا کرجناب عائشہ نے اینے کو بمقابلہ دیگرازواج سی پر اضعی وا میرفت وی کے داختہ سینہ میں کہ میں کہ میں کہ جناب صنید بنت جی کے داختہ سے بہتہ میں کہ جناب صنید بنت میں کہ دیکردی جیبا کہ جناب صنید بنت جی کے داختہ سے بہتہ میں کہ جناب صنید بنت جی کے داختہ سے بہتہ میں کہ جناب صنید بنت میں کہ جناب صنید بنت جی کے داختہ سے بہتہ میں کہ جناب صنید بنت میں کہ جناب صنید بنتہ میں کہ جناب صنید بنتہ میں کہ جناب صنید بنتہ میں کہ کے داختہ سے بنتہ میں کہ جناب صنید بنتہ میں کہ کے داختہ کہ کہ کہ کے داختہ کی داختہ کے داخ

ے جیاک اہم کا ری نے میم مخاری جلد س صخہ ۱۷۵ با بب غیرۃ الشاء اوا فرکتا النکاح میں دوامیت کی ہے ۔

اله م شابئ كاب كارغوارس اس تغييل سد ذركياس،

· رسول جناب صفيه كے ياس آئے تودى بياكه وه رورہي بي -آسی*۔ نے رونے* کی وجہ ہوجھی ۔ صغیہ نے جواب دیا : مجھے معلوم ہوا ہے کہ عائشہ اور حصصہ میری برائیاں کرتی رستی ہیں اور کہتی ہیں کہ مم صفیہ سے مبتر ہیں ۔ اسخفرت سے فرایا : تم نے بیکیوں ت كه دياكتم دولان محد سي ببتركيونكر ببوسكني بو ميرا مقابله یں عقاری کیا مقیقت ہے ؟ میرے اب جناب اروان، اور جيا حناب موسي ، سنو هر محد مصطفي بين جو خانم النبيتي ين ٠ جاب مائٹ کے مالات ملاحظ فرائیے ،ان کے افعال دا نوال میں ان كى حركتون كا مائزه ليمية توبهادس تول ك صدانت آبيد وا منع بوجلك كى -روگیا یہ کہ وصیت میغیم کے متلق جوصریف وہ بیان کرن ہی اسے ہم كيول نهين مانتة تومخنقراً برسجه كيهي كمان كي مدمث حبت نهين البكيول نهين حجست ہے بمکن اسباسے میٹی نظر ہم ان کی صریث کو قابل اعتنا نہیں سیمقے اسە زىوتىچە تۈسىترىپە .

الے ترزی نے بطری کنا زمول ام المومین صفیہ سے دواست کے سبے اس مدمین کی اورامن عبالسر نے مالات صنیہ کے ذیل میں استنبعا ب بی اس مدیث کو بیان کیا ہے۔ اور ابن جومسطانی ے مجھابی اصار ہیں لعمن مالات جناب صغیر؛ س مدمیث کو ذکر کیا ہے ۔ نیزسشیرے دئیروشا اع این جریده شاره نبر ۱۶ معنم ۹ ۸ و بردکرکیا ب اس کے علاده اورسبت حعزات نے اس مدیث کوذکر کمیا ہے۔

مكتوب مكبوس

آپ ان لوگوں ہیں ہیں جوند کمی کو دھوکا دیتے ہیں نہ مکر و فریب سے کام بیتے ہیں اور نہ ان توگوں ہیں سے ہیں جو دل ہیں کچھر کھتے ہیں اور زبان سے کچھ کہتے ہیں آب براہ کرم نفصبل فرمائیے ۔ یہ بہت عزوری ہے ہیں حق کا طلبگار ہوں لہٰذا بجرزتشر کے وتفصیل آپ کے بیے کوئی چارہ نہیں ۔

س

جواسب مكنوسب

ست حفنر عائشہ اعراض کے وجوہ

آب تفصیل پر مجھ مسبور کراہے ہی مالانکر تشریح وتفصیل آپ کے سیا

چنداں مزوری نامقی کیونکہ آپ بے خبرنہیں کرسب عائشہ ک کا کیا دھراہے ط اے با دصبا ایس مہدا وردہ نشست

کے اسے ہا دصبا ایں مہدا وردہ تسنت انھیں کی وجہ ہے ہا وصبا ایں مہدا وردہ تسنت انھیں کے اسے انھیں نے الرشن انھیں کی وجہ ہے ہم توگوں کو بہ وان دیکھنے ہیں اُسے انھیں نے الرشن کے وحمی پیڈ ہونے کو نسیا منیا کیا ۔ دنیا سے جھپایا کئی کو فہر نہ ہونے وی اور اگر کئی دو مرے ذرائع ہے بنہ چل بھی گیا تو غلط ثابت کرنے کے لیے ایڈی چوری کو ایڈی کا زور لگایا ۔ صاحت وحم بح ارشا دات ہی تیم ہر او منی نفسوس کو موکو نے مثابے نے لیے اپنی بوری توانائیاں مرت کردیں ۔ حبتی آفتیں تو ہی امنیں کی دولت ، الی میت کی جو میں تا زل ہوئیں آپ ہی کی ہدولت ، سارے نقت وضا وہ ہر بلا ومھیبت کی جرام ہی ہیں جھول نے امرائی کی ہدولت ، سارے نقت دونیا وہ ہر بلا ومھیبت کی جرام ہی ہیں جھول نے امرائیوں تا در تحت بھینے اور تحت میں میں ایک کے دی تھینے اور تحت میں میں ایک کے دی تھینے اور تحت میں میں ایک کے دی تا ہوا اس کا کیا ذاکر کے دی آپ ایس کا سوال نہ کیا ۔

لہٰذا امیراَلمومنین عمرے ومی مبنی مرتبہ نہونے پر مبناب عائشہ کے تول سے استدلال کرنا (وہ عائشہ جو سخت تزین دمنن امیرالمومنین استفیں) مہنٹ دھرمی ہے جس کر کی منصف مزاج سے تو تع نہیں -

علی پر عائشہ کی طرف سے ابکہ مصیبین نا زل نہیں ہوئی نہ معلوم انضوں نے کتنی آفتیں ڈھائی ہیں ۔ امیرالمومنین مکی وصابیت سے انسکار کہیں کم ہے ۔ جنگ جمل آضغر اور جنگ جمل اکبرسے عیں ہیں دل کی حالت کا ثینے موجی

الى ميداك ميم مدينو ل كا فيصل ب ملاحظ فرائي ميم بخارى كتاب الجهادة السيرص كالم ميد المراب ما من ميا و النابي م

عبد ۱۴ بر مستعب عربی بیچو سیار دود بر ۱۰ بی -کے جل اصغر کا واخر بھرو میں ۲۵ دربیے امثال سنت ہے کو اسید ما لمومین کے زباتی انگام خوبر، پرسشیده عدادست اشکار موگی امیرالمومنین سے برمرپیکار ہونے سے قبل ہو دل عنا دیتھا آب کو یا ارائیوں کے بعد جو سے و تاب غم وعضرا میرالمومنین کی طرن سے مرتے دم کک راحتی کہ آپ نے امیرالمومنین کی خیرانتقال سن کوسیدہ شکر کیا۔ اور خوش کے استفار ہوسے ان مسب با توں کا بنونہ آب سے اس جنگ میں میش کردیا تھا۔ اگر آب فرمایش تو میں انھیں کی رواست کر دہ حدیثوں سے

(بقيرهامشيم فوُرِّرَسشند) وادوبعره مونے كے قبل مبيني آيا مقارام المونين ابھ پہنچے شہائے تھے كہناب عائشه بعره برجما كرنيتيس ١١٠ كسا تحه طلى و زبريمي ستتے ١١س وتست بعره كے ماكم عثان بن منیعت انفیادی متع . اس منگ بس چارشیعان امبرالمونین سید کے اندرشہید ہوئے ادمیتر طرفالان عائف مق ہوئے بنمان بن منبعت گرنگار کرلیے گے ربر بڑے مبین القدر محالی ربیٹرم متع بوگوں نے چاہا کہ انفیس بھی تمثل کر والیس مگر ڈرسے کہ کہیں ان کے مجا کی اوران میں ان کا اُتعااً مينة برتر ماين المسس مين قل توزكيا مرت وارامي بونية بحبود ساور مرك بال مونارة الديد دودكوس كيا كيدون فيدي ركدكون سانكال ديا . مكيم بن جند جوما حب بعيرة ذيرك وانا بڑرکے تھے، حفزت عائد کے مقالم کے لیے اپنے قبید ہوعدالفیں کی معیت میں كرسبند بوسد ان كماته فيبدر بعدى مى ايد جاعت بوكى . مِنك بوئى مكر مس ایک ایک کر می تنبید موسے عکیم کے ساتھ ان کے فرزندا شرف اوران کے تعب ان معل بھی تئید ہوئے ،اوربسرہ نتم ہوگیا ، بھرامرالومنین تشریب لاتے واپنے لسکر کو ے کرمعند اگرا ہو پئیں اور اسس مرتب حنگ جمل اکبرمیشیں آئی۔ان وونزں جنگوں کی لجوری تفعیل تاریخ کال وطبری اور دیگرکشب مبروا خبار میں موج د ہے ك مبيدا نُعَدَ رأديان مدريث وارباسب ادريخ سنه ذكر كبا جبيد علا مدادالعزج مغال كالمن نے میں اپنی کتاب مقاتل العلى لبين ميں لبسلاد حوال امپرالمومنين بيان كياہے۔

چندنونے بیٹیں کو ورجن سے آپ کو اندازہ ہوکہ وہ امیرالمومنین کی عداوت
میں کس انہا کو بہنی ہوئی تھیں۔ نینیے : جناب عائشہ فرماتی ہیں کہ :

"رسول پر مرص کی زیادتی ہوئی اور اذبیت بہت براہ کئی تو

آپ برآ مرہوئے اس حالت میں کہ دو آ دمیوں کا سہارا

یہ ہوئے سنے اور آپ کے بیر زمین پر کھسٹتے جاتے سنے

جن ووا دمیوں کا آپ سہارا ہے کر نبطے سنے ان میں ایک

توعباس بن عبدالمطلب سنے اور دومرا ایک اور شخص سے اللہ میں محت اللہ حین عبدالمشن معت اللہ عبدالمشن عباس عبدالمشن عباس عبدالمشن عباس عبدالمشن عباس عبدالمشن عباس عبدالمشن عباس کے درمرا تعن میں ایک عبدالمشن عباس عبدالمشن عباس میں عبدالمشن عباس اور خوں دومرا تعن کیا ہے بو وہ دومرا تعن کو میں سے دور اس کا ذکر کمیا تو اس مائٹ نے مہد سے پوچھا کہ تم جاستے ہو وہ دومرا تعن کون منا بین ہیں ۔ کہا: وہ علی ہیں ۔

مچرعبدالله بن عباس نے کہا: و علی کی کوئی الحجائی عائشہ کو سجلی معلوم نہیں ہوئی ہے،

اے جیساکرامی حدیث میں ہے جو نجاری نے میچ نجاری حارم صفحہ 41 باب مرص البنی ووفات میں روابیت کی سبے -

ته برکد خاص کرمین این عباسس کا فتره ان عداد ششد لا تعلیب اسه نهنس جنید بن دی نے مبیں کھا بک فرضاوپر والی عبارت مکی کر جبوٹر دیا ہے جب کرانفا کا مکرش میں کتر ہونت کی ہولی مادت ہے لیکن ہے شارا معاہد سنن نے جہاں ہسس مدیث کو مکھا ہے وہاں این عباس کا یہ فقرہ مجی مزود مکھا ہے جیسے علار این سود کہ انفول نے طبقات این سود مبلد ۲ نئم ثانی صلا پراسس مدین کو کسب لمداسا و درہ کیا ہے اورسے مدارات کے کل کے کل رجال حجت ڈیں۔ میں کہنا ہول کرجیب جناب مائٹ کو امیرالمومنین کی کوئی خوبی گوارا دہمی ادر دہ ان لوگوں ککسے کے ساتھ علی کا نام بینا بیستہ زکر تی تخیس جورسول کے ساتھ ایک قدم چلے تو وہ علی سے دھی رسول موسنے کو بیان کرنا کیسے بیسند کرسکتی تخیس جو بمام خوبیوں کو اپنے دامن میں میں میں جو سے بے امام احمد بن مین سے بھوسے بے امام احمد بن مین سے اپنی موسیت عطار بن بیار سے نقل کی ہے۔ عطار بن بیار سے نقل کی ہے۔ عطار بن بیار سے نقل کی ہے۔ عطا بن بیار کہتے ہیں کہ ا

الکے سنتھ جناب عائشہ کی خدمت میں آیا اور حفزت علی اور جناب عائشہ ہوئیں جناب عائشہ کی خدمت میں آیا اور حفزت علی اور جناب عائشہ ہوئیں اس پرجناب عائشہ ہوئیں اس پرجناب عائشہ ہوئیں نہ علی کو گابال دیے سے میں منع نہیں کرن لیکن عارکو کا میال نہ دوئیں نے دوئیں کے درمیان اختیار دیا جائے متحف ہیں کہ اگرا تخییں دو چیزوں کے درمیان اختیار دیا جائے تو وہ وہ کا اختیار کریں گے جو زیادہ بہترا در زیا دہ موجب رستگاری ہو ۔

الشرائبر! عار کوگالیاں دینے سے جناب عائشہ نو منع کریں رسول کے مرضاس قول کی بناپر کہ عار کو اگر دوچیزوں میں اختیار دیا ماسے نو وہ وہی اختیاد کریں گئے جو بہتروا فعنل ہو۔ اور عل کے سندلی نا سروا کا ماست کہنے سے جہیں منع کریں۔ وہ عل جو دسول کے بھائی ہیں ، دسول کے ولی ہیں ، دسول کے میل ہیں ، دسول کے میل ہیں ، دسول کے میل میں مول کے میل دی است دسول میں سب سے جہا تلا منیصلا کرنے دسول میں میں میں جہا تلا منیصلا کرنے والے ہیں ۔ است دمول ہیں اور وہ ہیں جن کو خدا ورسول دوست دی جہا تا مسلاوں ہیں در کھتے ہیں جو تما مسلاوں ہیں در کھتے ہیں جو تما مسلاوں ہیں در کھتے ہیں اور وہ می خدا ورسول کو دوست رکھتے ہیں جو تما مسلاوں ہیں در کھتے ہیں اور دہ می خدا ورسول کو دوست رکھتے ہیں جو تما مسلاوں ہیں در کھتے ہیں اور دہ می خدا ورسول کو دوست رکھتے ہیں جو تما مسلاوں ہیں

سب سے پہلے اسلام لائے ، جنوں نے سب سے پہلے ایمان بول کیا ، جوسب سے پہلے ایمان بول کیا ، جوسب سے پہلے ایمان بول کیا ، جوسب ہے زیادہ علم کے مالک محتے ، جن کے فضائل ہے حساب ہیں ۔ افسوس محملی ہوتا ہے کہ جیسے جناب عائشہ جائتی ہی زیخیں کہ علی کو خدا کے بیمال کیا مزلت حاصل ہے ، رسول کے دل ہیں علی کی کیا حکر ہے ؟ اسلام میں کیا درجہ ہے ان کا ، اسلام کی داہ میں کتنی تختیاں جھیلی ہیں اکھوں نے ، کتنی ا زمائشوں یں تابت قدم رہے ادر خالب جناب حائشہ نے زتوام پر المومنین کی شان میں نازل وارد کلام مجید کی آئیں سنیں ندا حادیث بینیم سے کہ کم سے کم عاد کے برا بر وارد کلام مجید کی آئیں سنیں ندا حادیث بینیم سے کہ کم سے کم عاد کے برا بر ورکھتیں جس طرح عارکوگا دیاں وسیت سے متع کیا علی کے منعلیٰ بھی منع فرا ہیں ، جنا سب عائشہ کے اس جار برکہ

" ہیں نے دسول کو دیجھا ، درا نمائیہ امضیں اپنے سینرپر اٹائے ہوئے منی آپ نے ملشت مشکایا اس کی طرف مجکے ۔ ای مالت میں آپ کا دم نکل گیا ا ورجھے خبرمھی ترہوئی ۔ لہٰذا علی سے اکٹوں نے وصیت کہاں فرائی ؟ "

حبب عور کرنا ہوں تومبری حبرست کا تھمکا نا نہیں رستا، سمجھ میں نہیں آگا۔ کہ ہیں ان سکاس جلہ سکے کس کس گوسٹے پر تمقیرہ کروں ، ان کا یہ فقرہ مختلفت حبہتوں سے قابل مجسٹ ہے۔

خداے میے مجھے کوئی مجھادے کہ انخفرست کا اس طرح اشقال فرمانا ہیں ا کہ جناب عائشہ بیان فراتی ہیں ہے کونکر دہیں ہے کہ آپ نے وصیعت وسنسرما لی ا اس طرح اشقال کرنے سے بیکب لازم آ ناہے کہ آ ہیں وصیعت کیے کہ انتقال کرسگتے ۔ کمیا جناب عائشہ کی داستے ہیں وصیعت اسی وننٹ صبیح ہوسکتی ہے جب دم نسکل رہا ہو درز منہیں ۔ میرے خیال ہیں اس کا تو دنیا کے بردے ہر کو لی مجی تائن نظرندا کے گا۔ حقیقت کو مجللانے والا ہو دنیل بھی پیشیس کرے وہ گاک منہیں سکتا۔ خداوند عالم نے اپنی محکم کتا ب بس رسول کو مخاطب کر کے ارستا د فرمایا ہے۔

> «كستب عسليكم إذا حصس أحدكه المومن إن مشرك حنير إلومسية "

"تم لوگوں پر واحب کیا گیاہے ، فرمن قرار دیا گیا ہے کہ حب موست آئے تو مرنے سے بیٹیز اچھی وصیت کرجائے !

توکیا بناب مائشکے نبال ہیں رمول کتاب خدا کے منافت عمل کرتے تھے
اس کے احکام سے یے رحی بر نتے تھے ۔ بنا ، مخدا بناب مائشا جی طرح
مائتی تقیں کہ رمول قدم بر ندم مسئر آن کی پیروی کرتے ہیں۔ ہر ضل و ہر
عمل مطابق کلام المئی ہے ۔ کلام مجید کے اوامر و نواہی کی یا بندی ہیں سب
سے بیٹیں بیٹ رہے ۔ کلام مجید کی جملہ باتوں برعمل کرنے میں ورم انتہا
کو بہنچ ہوئے تھے ۔ یقینا جناب عائش نے رمول مو یہ آرشاد فرماتے بھی سُتا
میں ہوگا :

" مردسلمان اگرایس جیزمجی قابل دسیست دکھتا ہو۔ اس کے لیے مائز نہیں کہ اس چیز کے منعلق بغیرومیت نامر لکھے ہوئے ۔ دولا تیں گزار وسے "

اسس قنم مے دیگرارست واستو مینم مرجی جناب عائش نے صرورستے موں گے

بے میںاکہ سس مدیث یں ہے جوبخاری نے میم مخاری مبلد ۲ صفر ۱۰ دکتاب انوصا یا کے شرق میں اور کم نے میج سلم مبلد ۲ صنا کتاب الوصیة میں مصاحبت کہ ہے ۔

کیونکہ دنیا جائی ہے کہ دسیت کے منعلق المخضرت نے بڑے ہوئے احکام
دیے میں اور یہ لذ تو المخضرت کے لیے جائز ہے اور زجدا بنیار میں سے کی

بی کے لیے جائز رہا ہے کہ لوگوں کو تو کسی چیز کا حکم دیں اور خوداس حکم
پابندی فرکریں یا دومروں کو تو کسی بات ہے منع کریں مگر خودا تغییں اس سے
پر بہیر نہ دہے۔ بغیر ممکن ہے محال ہے کہ کسی بی بسی درول ہے ایسی بات کی
مجھی مرزد ہو تی ہوا درامام سلم دعیرہ نے جناب عائشہ سے یہ حدیث جو
روایت کی ہے کہ رسول اسے ذکو تی دنیار چیو را اند درہی، نہ بکری نداون نہ
ملی چیز کے منعلق وصیعت فرمائل بیمی ہیں می مدیث کی طرح فابل فیول نیں
علاوہ اس کے اگر جناب عائشہ کا یہ مقصد ہے کہ آپ نے فقعی طور پر ایک چیز
میں نہیوڑی اور آپ ہرومییت کیے جانے کے لائن چیز سے باکل فالی ہا تھ
مرے جیں کہ دنیا والے چیوڑ کر مرتے ہیں۔
مرے جیں کہ دنیا والے چیوڑ کر مرتے ہیں۔

عقل تاتى ب كرمينير في القينا وميت فرمائ

اسس بے کہ کفرت تورنیا بھرکے لوگوں سے زیادہ زاہر و پرمبزگار تھے انخفرت نے جس وقعت دنیاسے انتقال کیا اس وننت آب کے ذمر کھے فرضے

کے معزقنادہ سے روایت کرکے بیان کرتے ہیں کر معزبت علی شنے بعد و فاست رسول میں ا بایش انجام دیں جن میں زیادہ تروعدے تقے جے امیرالموسین کا ہے بعد بیر بورا کیا۔ میراخیال ہے کہ قنا دہ نے بانچ لا کھ درہم کہے تھے جو علی شے رسول م کی مبانب سسے ادا کیے طاحلہ زائے بھزانعال ج م صلا تقے ، کچھ کیے ہوئے وعدے تھے ، کچھ لوگوں کی اما نتیں تھیں۔ جن کے سفلت آپ کا وصیدت کرمانا عزودی تھا ۔ آپ سے اپنے بعدلسس اتنا مال مجھوٹرا جس سے آپ کے دیون ادا ہو ما بئ ۔ آپ نے من لوگوں سے وعدہ کرد کھا تھا ۔ وہ وحد سے بورسے ہوجا بئی اور ان دو نوں با توں سے جو کچھ فاصل کچ رہے وہ آپ کی وارسٹ جناب سیّرہ کو سلے جبیا کہ جناب سیرہ کے مطالعہ میراٹ بیٹیم ہو اسٹ ہوتا ہے۔

علادہ اس کے رسول اسٹرے ایسی قابل وصیبت جبزیں اپنے بعد حجود ایس میسی د نیاسے کسی اسٹے فالے نے بہیں حجود ایس آپ اس کو سے بیجے کہ آپ نے دین خدا کو مجود الح جس کی امیرا ابتدا ابتدا متنی ، بالکل تازہ تازہ تھا۔ اور بربانبت طلار ، نغرہ ، مکان و جائیا ہ ، کھیتی و موبیشی کے زیادہ وصی کا متاع و مزور تمنی متنا اور آپ کی پوری است ، است کے ایتام ہی ، بیوا بیس مجی بہیت زیا دہ مجبور و مصنطر ستے . بے صدح و درت مند و متاع ستے کہ دسول کا کوئی نہوئی وی مالات مجبور و مصنطر ستے . بے صدح و درت مند و متاع ستے کہ دسول کا کوئی نہوئی والات مخرور میں منا کے دین و دنیوی مالات کا مدید و منتظم ہو۔ خدا کے دسول کا کے لیے بیا بن نا ممکن تھی ، ممال تھی کہ وہ دین خدا کو (جوابھی ہوارہ میں منا) خوامیتوں کے جوابے کی جائے ایمی مقرر نہ کر جائے حفاظ ست کے لیے خیالات و آراب ہو ، ان وہی مقرر نہ کہ جائے منا مست کے لیے خیالات و آراب ہو ، اس کے دین اور اپنا وصی مقرر نہ کر جائے حفاظ ست کے لیے خیالات و آراب ہو ، سے وصیت کی جائے اور جر آپ کا ایسا

ے جیسا کہ بخاری سے صیح بخاری مبلہ ۳ صنت پر باب نزدہ خیبر کے آخویں بیان کیا اور اامسلم نے تول بنجیم کا لاخورٹ ما شوکت ا « حسد نشند کے حمٰن یں اکھا ہے کا منظم ہے صیح سلم مبلہ ۲ ص^{یک ک}تاب انجاء

قائم مقام ہوتا جس پر پر اپر ایجر دسکیا جاسکتا۔ دسول سے بعبد ہے آب اپنے اپنام (بعن تمام روئے زبین کے باشدوں کو) مش اس بری کے چھوڑ جائی جو جارے کی رات بیں اور اور ماری ماری بھرے اور اس کا کوئی حفاظت کرتے والا چروا با نہ ہوا ور بینا ہ مجدا کہ دسول وصیت نہ کرجا بین حالانکہ اس دصیت کے متعلق تان بروی نازل ہو بی سفی اورا ب ابنی است کو دصیت کرے کا حکم دے چکے تھے ۔ لہٰذا دصیت سے انکار کرنے والوں پرعقل کان تھے بختی سے تاکید کر چکے نقے ۔ لہٰذا دصیت سے انکار کرنے والوں پرعقل کان ہی نہیں دھرتی ۔ چاہے انکار کرنے والے برقی شخصیت کے مالک ہی کیوں نہ ہوں ۔ بینینا وسول اللہ نے انکار کرنے والے برقی شخصیت کے مالک ہی کیوں نہ اجھی اللم میں جب کہ مکہ میں ابھی اللم میں جب کہ مکہ میں ابھی اللم اللہ علی مرتب کہ مکہ میں ابھی اللم وصی مقرر فرایا ۔ میسیا کہ ہم مکتوب نہ سے مقالہ بیان کر چکے ہیں ۔

اس کی بی بی کارا آپ کو ومی فرات رہے اور حب موقع ملا یکے بعد دیگرے
اہنان ارشادات کے ذریعے حس کا ذکر ہم سابق بیں کر چکے ہیں وصیات پر
اکجد کرنے رہے بہاں تک کہ جب ربول کے انتقال کا وقت آیا نو آپ نے
اداوہ کیا کہ ہم اب تک علی کے مسلق نفظی طور پرجن باتوں کی تاکید کرتے ہے
ہیں تولا جو کچھان کے مسلق کہا کیے اب بھورت کے بروصیت نام بھی علی کو
ملک ویں تاکہ اب بک جو کچھ کہا یا بیان کہا اس کی تاکید و توشیق ہو جائے قلم کے
مکھ کو قطمی طور میر سطے کردوں ہسس مرحل کو۔ اسی دج سے آپ نے لوگوں سے
خرمایا کہ:

" میرے پاس قلم دوات لاؤ۔ یں ایسا وصیت نامر کھھا دے لیے لکھ ماؤں کہ بچرتم کمبھی گراہ نہ ہو۔ " دسول کا یہ مجلم سمن کر لوگ، آپس میں محبگر شے سگے۔ مالا تکہ دسول کی فات میں حجگُوناکہاں تک مناسب ہے بعض کہنے نگے کہ رسول اللہ معاذاللہ ہٰدیان کب رہے ہیں ، جب رسول کے برمشنا نواکب نے بیتین کر بیاک ان کے اس نفرے کے بعد وصیبت نامہ مکھنا بریکا رہے ریخ میرکا کوئی اٹر زیجو گا سوائے اس کے کہ اور فتنہ بڑھ مباسے آپ سے ان سے فرمایا کہ :

" ميرے ياس سے الله ماؤ "

ا درا سپ زبانی مورپراب کس جو کچه که سکے شخصاص پراکشغا کیا مجربی آپ نے چلتے میلاتے لوگوں کو تین بانزں کی وہسیت فرمائی ۔

ایک نوب کرعلی کو اپنا ولی مقرر کردی ، و و مسرے یہ کہ مشرکین کو جزیرہ ا عرب سے نسکال باہر کریں اور مس طرع آب و فد مجیجا کیے وہ بھی و فد مجیجة جی ۔ نسکن اکسس زمانے کی سیاست اور حکومت محدیثین کوکب اجازست وے مکتی بھی کمہ وہ ومسیست کے پہلے جز کو بیان کرتے۔ لہٰذا محدیثین نے بات یہ بنائی کرمیٹی باست بم بھول گئے۔

آمام بخاری نے اس مدین کے آٹر ہیں جس ہیں دسول کا قام دوات مانگذا اور لوگوں کا کہنا کہ دسول آپریان بک دہے ہیں ۔ "ان کی اصل عبارست کا بغنلی ترحمہ یہ جسے کہ ۔ دسول کے فرقیت انتقال بین یانؤں کی وصبیت فرمائی۔ ابک تؤبرکہ مشرکیین کوبریرہ عرب سے تمکال دو ، دومرسے یہ کہ جس طرح میں وفد مجیجا گڑنا متقاتم مجی مجیجا۔"

يه مكم كين بي كه :

" اور تنيري إست مي مجول گيا "

ای طرح امام سسلم نے بھی اسے میح میں اور حبلہ ارباب سن وسانید

نے ایسا ہی مکھا ہے۔ ہرا کیب اس تیسری یاست کو بھول کیا میسی کو بھی یاد ندر إ

عائشه کا دیوی معارض ہے دیگرا مادیشے

روگیا ام المومنین کا به دعوی کرنا کدرمول کا جب وصال ہوا تو آپ ان کے سیند پر سنتے . بیرمارمن ہے ان امادیث کے جن سے ٹا بن ہوتا ہے کد آپ ہے ایسی حالت میں اشغال فرما با حب آپ اپنے ہمائی اپنے وحی علی ابن ال طالب کے آخوش میں تفقے جیبا کہ انکہ طاہری سے مردی متواثر امادیث کا فیصل ہے ۔ نیز حصرات اہل سنت کی کتب امادیث میں جسی صبح مرشیں موجود ہیں جو ہی نبلاتی ہیں ۔ اگر آپ الماسٹس وجبیجو کی زحمست گوارا فرائے ترآپ کوئنہ چلے ۔

مكتؤب منبرا

من عائشا بی مدیوں سن مغربائے مرابعی تعین

جناب عائشہ اوران کی صربی صدیث (کدرسول بغیروصیب کیے ونیا سے اٹھ گئے) کے متعن آپ نے جو کچے فرما بااس کا محرر دو بابتی ہیں اور انھیں دوبا توں کے گر واکب کا کلام وائر ہے ۔ ایک تو یہ ہے کہ جناب عائشہ پونکا میائونین سے برکست تنفیں اس بیے وہ امیر الموئین کے وصی پیغرم ہونے سے سوائے انسکار کے کرمی کیا سکتی تفییں ۔ اس کے خلاف کی ان سے توقع ہی نہیں رکھی جا ہیے اس کا جواب یہ ہے کہ ان کی میرہ پر نظر کرنے سے یہ بات بھتنی طور پر معلی ہوت سے یہ بات بھتنی طور پر معلی ہوت سے یہ بات بھتنی طور پر معلی ہوت سے کہ وہ رسول اللہ مسے صدیث روایت کرنے ہیں طبعی میلان کی پردا ہیں ہوت ہے کہ دہ رسول اللہ میں اور ذاتی عوص ملحوظ رکھنیں المبذا انحوں سے دسول کا

ے متنی بائیں نقل کیں ان میں ان برا تہام نہیں سگایا جاسکتا۔ وہ حدثین خواہ ان است عاص سے منعلق ہوں جنہیں آپ معبوب رکھنی ہیں یا ان است وا دست ملت ہوں جن سے آپ کو علادت بھی دونوں آپ کے نز دیک یکسال تھے۔ بناہ سنجدا کہ جناب عائشہ ایسی ہتی پر غوض فالب مرواور وہ حق کے مقابلہ میں ابنی غوض کو زجیج دینے کے بیے رسول می طریب تشدیت دے کر خلاف واقع بایت کے نئی ۔

دومری بات بہ ہے کہ عقل جناب عائشہ کی روایت کردہ حدیث کی بجائی ناممکن محبی ہے کیونکہ اس حدیث کا مفہوم ناممکن وحال ہے۔ مدیت سے بہ ثابت موتا ہے کہ رسول مجاب کے انتقال فرما گئے اور رسول مکا بغیر وصیت کے انتقال فرما گئے اور رسول مکا بغیر وصیت کے انتقال ذبانا محال ہے کیونکہ رسول مے کیے کئی طرح جا نزمنہ یں ہوسکتا کہ وہ دین خدا کو جوابھی ابتدائی منزل میں مختا اور بندگان خداجو برائی فعارت (ببنی کفرومنزک) سے نکل کرنئ فعارتِ اسلام میں تازہ تازہ آ سے مغل کرنئ فعارتِ اسلام میں تازہ تازہ آ سے تھے کہ لیمنی حجوظ دیں اور بنیا نیا دصی مغرب کے اور ان کے اس دیکے دنیا سے رضعت ہوجا بین م

مسن و قع المسنّن كربيال عمن لى نبين سشرعي بين

اسس ان کا جواب یہ ہے کہ دسول کے لیے الیبی باسٹ کا جائز ناجائز ہونا بہمونوٹ ہے حسن ونیج کے عقل ہونے پرا درا لی سنت اس کے قاکل منہیں -کیونکہ حصرات اہل سنت کا عقیدہ یہ ہے کہ عقل ندنوکسی چیز کے حسن ہونے کا فیصد کرسسکتی ہے اور زکسی چیز کے قبیع ہونے کا - بلکرتمام ا منال می حسن و قع کانیمل کرنے والی نفظ مشرع ہے ، مشرع جس جیز کوسن بنائے وہی کن ہے جاہے وہ عقل کے نز دیک قلیے ہی کیوں نہ ہو ۔ اس طرح مشرع حس چیز کو تیج کے وہ تیسے ہی ہے جاہے عقل کے نز دیکیہ وہ سن ہی کیوں نہ ہو ۔ ہبر حال عقل کو کسی فنم کا دخل منہیں ۔

دعویٰ عائشہ کے معارض کوئی مدسی بنیں

اوراک نے اپنے مکتوب کے اکریس جوبدادشاد فرمایا ہے کہ جنابیا کشتہ کا یہ وجوئ کہ رسول میں میرے بینے پر دم تورا اید معارمن ہے وومری الیسی مدینے و کوئ کہ رسول میں مدینے و کرا یہ معارمن ہے وومری الیسی مدینے و کرائے ایرالمومنین کی آخوش میں رصلت فرائی تواسس کے متعن کہنا ہے ہے کہ ہم ایک مدینے ہی بطراتی المہنت ایس نہیں بات جوجناب عائشہ کی مدین سے معارمن ہو۔ بال اگراپ سے علم میں کوئی ایسی مدینیہ ہوجن کے داوی و نا قل معزات المہنت ہوں اور وہ جناب مائشہ کی مدینے ہوں اور وہ جناب مائشہ کی مدینیہ کے معارمن ہوتو ہراہ کرم کوری فرائے۔

جواسب مكتوسب

عائشكار ايت مادب مرجن بالصيح بوزونا

آب نے مہلی بات کے حواب میں درایا ہے کہ جناب عاکشہ کی سیرت سے یہ بات ہے کہ وہ رسول کی عدمیث بیان فرانے میں ایس کے علیہ میں این خاتی اغزامن کا کوئی میں این طبعی میلان کی پرواہ منہیں کوئی مقیس اور اپنی ذاتی اغزامن کا کوئی

خیال مہیں سنسٹواتی تقیق میری درخواست ہے آپ سے کہ ذرا چند لموں کے
لیے تقلیدا درجنیہ داری سے الگ ہوکر بھراکید نظران کی سرت پر لحالیں ،
ذرا جہان ہیں کیجیے کہ وہ جے بحوب رکھتی تقیق اس کے بارے ہیں ان کا کیبا
خیال مقاا درجس سے انخیس عداوست مقی اس کے ساتھ ان کی کیا دوشش
مقی ؟ وہال آپ کوان کا طبعی میلان بہبت واضح اور بہت دوشن نظر ر

جناب عثمان کے ساتھ تولاً اور فعلاً ان کا جوطرز رہا اور مفرت علی ا جناب سیّدہ ، سنین کے ساتھ وربیدہ ، اور کھلم کھلا جوان کا برتا و رہا اوردیگر ازواج رسول اہمات المومنین کے ساتھ جوسسلوک رہا۔ بلکہ میں توکہنا ہوں کرسول کے ساتھ جس طرح سے وہ پیش آیا کیس اسے زمجو لیے گا۔ وہاں آپ کوان کا طبعی میلان اور عرض عویاں طور برنظر آسے گی۔

مثال کے طرر راک بناک باریہ واکے وانڈکولے لیجے جب فرین چاہازادست او نے جناب ماریہ اوران کے فرزند جناب ابراہیم کے مثلی جہدت تراسی کی توافقیں جناب عائش نے اپنے میلان طبیعت سے جبور ہوکرا تہام دیکھنے والول کی تائید کی ۔ وہ تو کیے کہ خلاف ہما کم جسے جا ہتا ہے ذلت میں والتا ہے ۔ جناب عائش کی کوسٹ تیں بارا ورنے جا ہتا ہے ذلت میں والتا ہے ۔ جناب ماریہ اور

له ملاحظ فراسی شرح نهج البلاغة ابن إلى المحد بدمعت لى حلد مد مد و مده و مده الده مد مد و مده و

ابراہیم دونوں کو بری مست وار دیا اورامبرالمونین کے ذراعیہ وَثَمَنوں کے منطالم سے معفوظ رکھا اور کلام مجید ہیں خداوند عالم نے ان کا فروں کی نزوید کردئے۔ اگر آپ مربید سننا چاہتے ہیں تروہ وافقہ یاد کیجیے یعب جناب عائشہ نے رسول اللہ سے کہا تھاکہ :

" مجھ آپ کے منہ سے مغانیر کی ہو اُ تی ہے "

جب بہت سے مقد سے حق میری ہو ای ہے۔ اس میں بھی آپ کا طبعی میلان اور ذاتی مذہ کار فرما تھا ،غوض بیمٹی کہ نحفر جناب زنیب کے پاس نہ جائیں ، نہ شہد نوش فرما میں المذاحب ایسی رکیک نومن جناب عالئے کے لیے اس قسم کی بائیں جائز قرار دے سمی ہے تو امیرالمونین کے ومی بنجیم ہونے سے ان کا انگار کیونکر تعبید مہوگا ؟ اور ان کے انگار پر آپ کیونکر کان دھرسکتے ہیں ۔

وہ واننہ بھی یا دکیجیے کہ حبب اسمار دبست بغال دلہن بنا کر دسول گی خدمست میں بیٹیس کی کمیں توجاب عاکشہ نے انھیس کی بڑھا کی کہ دسول انٹر ۴

ے اس المناکب مرگزمشنت کی تغییل دیجینا ہو نو لما حفا فرائیے مئذرک الم **ما کم حا**رب ص<u>الاً و</u> تلحنی*ی مسننددک علامہ ہی* ۔

سے ملاحظ فرا میے صبح مجاری کر وابت اسلانغیر سورہ کو بھ جلد ما سالا اسی می پر منعد و حدثیں عرب مردی جبر بن بی سب کر وہ وہ وہ وہ در نبی حجوں نے میڈی سے مردی جبر بن بی سب کر وہ وہ وہ در نبی حجوں نے میڈی سے مردی جبر بی معنمون ہے ۔
عف منتب نبرای حکر ایک اور طولانی حدیث ہے ان تمام احادیث بیں بہد مالات اسمار کھے ہیں سے حبیباک اس حدیث بیں ہے جوانام حاکم نے متد دک جسم صفح بیں بدار مالات اسمار کھے ہیں نیز ابن سعد نے طبخات ملد مستنظ میں اسمار مے حالات بیں ورج کیا ہے یہ وانغ درہت مشہور ہے میلان بی اسمار می حالات بین درج کیا ہے یہ وانغ درہت کی ہے۔
علام ابن عبدابرے استبعاب بین ابن جم عبدانی نے اصاب میں نیز ابن جربر سے اس کی روایت کی ہے۔

اس ورست سے بہت بوسٹ ہوتے ہیں جو دسول کے پاس آنے پر اعود میادلا ہوں است ورست سے بہت ہوں ہوئے ہیں جو دسول کے باس آنے پر اعود میان کا نتیجہ مقا اوراس سے جناب عائشہ کی فرص یا مقا اوراس سے جناب عائشہ کو اب کی نظروں سے گرا دیں۔ جناب عائشہ اپن عومن کی دھن میں اس فتم کی حدیثیں بجو بی جا کر میں جا ہے وہ خوش دیل ورکیک بلکہ حرام ہی کیوں نہو۔

رسول الله م نے ایک مرتبہ جناب عائشہ سے ایک عورت کے متعلق کچھ ہائیں دریا منت کرنے کو کہا ۔ جناب عائشہ سے ایک عرض کے خیال سے رسول می خیا ساملط بایت ہوئے دیا ۔ میچ مالات کا علم ہی نہیں ہونے دیا ۔ ایک مرتبہ اینے بایس کے سامنے رسول مے کیگر ایولیں ۔ اس کا سبب ایک مرتبہ اینے بایس کے سامنے رسول مے کیگر ایولیں ۔ اس کا سبب

ایک مرتبہ ایٹ باپ کے سائے رسول سے تھیکر طریز ہیں۔ اس کا سبب معبی وہی میلانِ طبیعت ، ذاتی جذبات واغرامن سننے اور رسول سے بولیں کہ انفیا منسے کام لیھے تھے جس پر مناب ابو بکرتے ایک طمانچران سکے اتنے زورسے مالا کمہ ان مے کیٹروں کک خون میہ کر آیا ۔

ا بک مرتب رسول سے گرط کیس اور عصر سے بولیں:

" آسينه بي بي وه جو رعوے كرتے بين كديل خدا كا بني ہوں!" " آسينه بي بين وه جو رعوے كرتے بين كديل خدا كا بني ہوں!"

اس مبین سبت سی شالیں آپ کو لیں گئ ۔اس مخترے مکتوب یں کہاں ک

نے لاحظ فرما نیے کنزانعالی جلد ہ ص<u>روع</u> طبقات ابن سعد جلد ۸ م<u>طالع کے کنزانعالی جلد ۲ مصلا کتاب آواب استکاح</u> خزائی حلد ۲ م<u>صلا کتاب آواب استکاح</u> خزائم غزائی کی کتاب کا شغرانقلوب إب ۱۹ و مشطع خزائم غزائی کی کتاب کا شغرانقلوب إب ۱۹ و مشطع سے جیبا کی علارغزائی نے خکورہ بالا با توں میں ذکر کیا ہے۔ بیان کی جائیں۔ ہم نے متنا ذکر کردیا یہی ہمارے مطلب کو واضح کرنے کے لیے کا فی ہے۔

حسُسن و تبح کے عقلی ہونے کا ٹبوت

آب شے دومری بات کے جواب میں فرایا ہے کہ اہل سنّسنے من و تعے کے عقلی ہونے کے قائل بہیں نومجھ بقین بہیں آنا کہ آپ بھی ایسا جمل عقیدہ رکھتے ہوں گے اپسی رکیک باس کے قائل ہوں گے۔ یہ تو با لکل سوفسطا ئیوں مبياعتبده ہے جومحوس ہوئے والے مقائن تک کے منکریں ۔ دیکھے بعبن امغال تؤوه بین جن ک احجها ئی اورخوبی کویم تقینی ملور پر جائتے ہیں یہیں ہوم ب كداس كام ك كرسے پريميں اچھى سىزامے كى لوگ بهارى توبعيت كريں گے جیسے احسان ، مدل ، انشاعت اوربعض افغال وہ بیں جن کی برائی کا مہیں یفین سیے اور ہم جاستے ہیں کہ اس کام کے کرنے پر ہم مزا کے ستی ہوں گے اور اوگ مدمت کریں گے جیسے برسلوک ظلم محمد وعیرہ سربا عقل شخص مانتا ہے كراصان وعدل كالعجما بوناا ورظلم وجوركا برابوناً خودعقل نباتي بيعجذ عقل منصلكن ب اور صرار ما حان عقل اس كا يفين ركهة بي كه ابك نفعث ہے دوکا۔ اس طرح ان کے اس بیٹین سے من وقع کے عقلی ہونے كالينين مجي كم تنبي .

عقل ہمیشا سان کرنے والے ا ورمہیشہ دائی کرنے والے کے فرق کو محوسس کرتی ہے ۔ میہلے کوا چھاکہتی ہے اور د ومرے کو بڑا بحن کومستی مدح و جزا اور بدمعاللہ کومنی مذمست وقصاص قرار دبتی ہے جوعقل کے اس فیصلہ کونہ مانے وہ مہی ہے ۔

ا در اگرحسسن و قبیعقلی نه جول «مشرعی مان بیے مبایئر، مشربیست ہی کو مىيا رست ار دے ديا جائے كر شرىعيت جس كوھن بتائے ومي من ہے، اور سترامیت جس کو تنبع بتائے دہی قبیع ہے عقل کواس میں کوئی وخل نہیں ندعقل كا ونيصله قابل ا متناب توج بي نفاك وه لوك جوم لييت كوما شظ ہی نہیں سربیست کے فائل ہی نہیں وہ زممی چیز کوحت مجیں زکسی چیز کو قبیح۔ جیے لامزمہب دہریے حصرات جومزمہب کے دسمن ہیں اسٹرلیبٹ کے منکراب چا<u>ئے ت</u>فاکدان کے نزد بکب نہ کوئی چیزا تھی ہو نہ بڑی ۔ نگر با وجو د منکر دین و مشرىيىت ہونے كے وہ سمى احسان و عدل كو الحجابى سجعتے ہيں اوراس ك كرنے واسے كوستى درح وثنا ولائت انعام واكرام جانتے ہيں اوراسي طرح ظلم وركشى كرتيح بون مي تجي الخين كوئي فك شبرنبي - اورظلم ومكرشي كرف واسے کو با داش میں متصاص کا سزا وار قرار ویتے ہیں ۔ ظاہر ہے کہ ان کا پر فیصله حسن کوحن تجینا ، قبیح کوفیع جاننا عقل ہی کی بنا پرہے اورکسی چیز کی وجہ سے نہیں ۔ لبٰذا آپ ان نوگول کی باقزل پر توتیع ہی نرکیھیے جوعقل سے مقابله ميس مبث وحرى سي كام ليس وجدان كو حصطلا بن اور يجت برصح الداغ مانتااور مانتاب اس سے انکادکری اورجس نطرت برخداے انفیس بیدا کیاہے اس نطرت کے فیصلے خلات فیصل صادر کرس ۔

فداوندعالم نے مس طرح مسس وسعی دراید استیار کے ذریعہ استیار کے ذریعہ استیار کے ذریعہ استیار کے ذریعہ استیار کا معلوم کرنا بندول کی فطرت میں واخل کیا ہے اس طرح اکثر حقائق کو عقل کے ذریعہ ما نامجی فطری قرار دیا ہے لہٰذا خود ہماری فطرت معتقل سے جانبی میں طرح ہے کہ ہم عدل کی اچھائی کو قلع وجور کی بڑائی کو عقل سے جانبی میں طرح ذائعہ سے منہد کی معماس اور ایلوے کا کرا وابن جانتے ہیں۔ جیبے تونیت شام ذائعہ سے منہد کی معماس اور ایلوے کا کرا وابن جانتے ہیں۔ جیبے تونیت شام

کے ذریعہ مشک کی نوسٹ ہوا ور مردار کی بدبوسونگھتے ہیں ۔ ہاتھ سے مچوکر مکہ بابن اور کھر درا بن معلوم کرتے ہیں ۔ آنکھ سے دیجے کرخو بھیورت و بدھ ورت میں فرق کرتے ہیں ۔ کانوں سے سُسن کر گذھوں کی آواز اور بانسری کی آواز میں ہیز کرتے ہیں ۔ اسی طرح عقل کے ذریعین کی انفسا سے کی اچھائی ، ظلم وایڈا رسانی کی برائی معلوم کرتے ہیں ۔ یہ ہماری وہ فعارت وخلفت ہے حس پر خدانے انسان کو ب ایکا ہے خدا کی خلق ہیں کمی فتم کی تبدیل ممکن نہیں ۔

اشاع و جاست تھے کہ سرع پرایمان رکھنے اور اس کے کم کوتسلیم کرنے ہیں ہم انتہا کو بین جائیں لہٰڈا اسفوں نے عقل کے فیصسلہ ہی سے الکار کر دیا۔
اور کینے نگے کہ سرج میں بات کو سرعیت کہے و ہی قابل تسلیم اور اگر سٹر بیست نہ کہے تو نا قابل تسلیم اور دنیا ہم جس جائے ہیں جوعتی قاعدہ مباری وساری ہے بلکہ سبس بات کو مشرع مجی کہے گی اسے فرائوش کر میٹھے اور اس کا خیال ہی تدر ہا کہ اس رائے کو اختیار کرکے نو دایتے کو الجس مبتلا کر لیا کم و نکہ گیا ہے مان دیا جا ہے اور جب مذہب بیرا کہ و بی اجھا ہے اور جب مذہب بیرا کہ و بی اجھا ہے اور جب مذہب برا کہے و بی اجھا ہے اور جب مذہب دور برا کہ و بی اجھا ہے اور جب مذہب کو بائیدی اور مشروعیت کے احکام برجمل کرنے کا دور ب کیون اجھا ہے اور نہ برا کہ و کی برا ہے تو بھر خرب کی بائیدی اور مشروعیت کے احکام برجمل کرنا کے دور اجھا ہے اور نہ مان اور نہ عمل کرنا کیوں اجھا ہے ؟ اور نہ مان اور ذعمل کرنا کیوں اور اور ور اسلس ہے۔
کیوں اجھا ہے ؟ اور نہ ان ااور ذعمل کرنا کیوں اگرا ہے؟ اس کے واب یہ آگرا ہے کہ یہ کہ مانہ اور ور ور سلس ہے۔

حقیفتت بہ ہے کہ اگرعقل مجیور نبائے والی اوردسیم خم کرا وینے والی ز ہوتی تومنتولاست کے ذریعہ اسسسندلال دعویٰ بلا دہیل ہی ہوتا بلکہ اگرعقق نہ ہوتی تو نہ کوئی خداکی عبا دست کرتے والا ہوتا نہ اسس کی تمام مخلوقاست ہیں کوئی اسس کی معرضت حاصل کر ہاتا ۔ تفعیبلی مجسٹ ہماریے علمار کی نفنیغات میں آب کونظرا کے گی جواتھوں نے اس موضوع بریخر برفرمائے ہیں۔

صبح مرتبين مخالف بب دعوى عاكشه

ا ورجناب عائشہ کا بہ دیموئ کہ رسول سے اس حالت ہیں انتقال کیا حبب وہ میرے سینے پر بتنے ۔ بہمارض ہے ان صبح ومتوانز احادیث کے جوائمہ طاہر من بیسے مروی ہیں ۔

انمهٔ طآمری کے علاوہ غیروں کی مدیث اگرآپ دیجینا چاہتے ہیں تو ملاحظ فرمائیہ طبقاست ابن سنگ حلام حتم ٹانی صفحه ۵ اور کمنز العال حلد م صفحه ۵۵ جن ہیں سبلسلہ اسنا وامیرالمومنین سے روابیت کا گئے ہے :

«حصزت علی فر باتے ہیں کہ رسالت مآب کا حب وم والییں آیا تو آپ نے فرمایا : میرے معائی کو بلادو ، بیمن کر میں آئیا : آنے خرمایا : میرے معائی کو بلادو ، بیمن کر میں آئیا ، آنحفرت نے فرایا : کہ اور نزد کیب آئیا - رسول نے میراسہ اوا بیا اور آخر وقت نکہ مجہ پر میں اور نزد کیب مجھ سے با بین کرتے رہے دیہاں وقت نکہ مجہ پر میں اور اس مالت ہیں مجھ پر گڑا اور اس مالت ہیں تک کہ آپ کا تعاب دہن بھی مجھ پر گڑا اور اسی مالت ہیں ایس نے انتقال فرمایا ۔"

ں ابولنیم نے اپنے حلیہ میں احمد فرصی نے اپنے نسنے میں نیز بہت سے انسا سسنن نے امپرالمومنین سے دوابیت کی ہے 'آپ فرماتے ہیں : « اس وقت رسول منے مجھے ہزار باب ملم کے تعلیم کیے ۔ ہرباب سے جھر ہزار باب کمل گئے "

معزست عمر کی بر فالت منی کر حب آپ سے دسول کے آخری مالاستِ دندگی وغیرہ کے متعلق پوچھا ماآ تو بس بھی کہتے کہ علی سے ماکر بچھوکیونکا نفیں کے آبتھوں تمام امورا نجام پائے چنا ننچے جنا سب ماہر بن عبداد تدائف ادی سسے روابیت ہے کہ کعب الاحبار نے حضرت عمرسے پوچھاکہ دسول کا آخری کلام کیا تھا ؟ حضرت عمرنے (حسب دستور) جواب دیا ؛

« على سے بوجيو "

کعب نے علی سے آگر ہوجہا ، حصرت علی نے فرمایاکہ: • یں نے رسول کواپنے سینہ پر نٹایا - آنخصرت کے تیر کا خص

برا پناسروال ديا ور فرمايا : العللة ،الصلاة - مَا زيماز؛

کعب نے بیمن کرکھا کرنمام ا بنیادی آخری وصیعت میں ہواکی۔ اس کی تاکید پر وہ مامور ہوسے اوراس پر وہ دمول بناکر بھیجے گئے ۔

کعب نے مجرح عزت مرسے پومھاک عسل کس نے دیا ؟ آب ہے جواب دیا کہ:

" على سے جاكر يو مجبو "

کعب شے پھر آکرام بالمومین اسے دریانت کیا۔ تو آب نے جواب دیا کہ: " میں نے عنس ڈیا "

جناب عبدالشرابن عباسس سے بوعیا گیاکہ اُب کیا کہتے ہیں ۔ کسیا

اله كنزانعال ير بامتوم وم حدميث علانيا

عه طبقات ابن سعد حلد ۲ نتم نان صفره - كنزانوال مبدم مفره ه

رسول الشرائے اس طرح انتقال فرمایا کہ آپ کا سرکسی کی آغوسٹ میں تھا؟ جناب عبدالتدين عباس سے كما: إل إ رسول في حب انتقال کیا تواکب معزمت علی کے سینے پر بکیہ کیے ہوئے تھے۔ اس بران سے کہا گیا کہ: «عوده توجناب مائشہ سے یہ مدمیث بیان کرتے ہیں کہ زول الشرط معان كرسينه برانتفال كياب جناب ابن عباس نے اس کا انکارکیا اور کہا کہ: « تقادی عقل میں یہ باست آتی ہے ؟ حتم مجدا رمول سے تواس مالست میں انتقال کیا کہ آپ لعل کے سینہ پر تكيكي موس تقع اورعلى بى ندات كوعس معى ديا " اورابن سعد حربسلد اساد امام زین العابرین سے روابیت ک ہے : «امام زین انعابدی فراتے ہیں : که حبب رسول کا انتقال ہوا تو آپ کا سرحفزت علی ^می گود میں تھا ی^ہ یں کہا موں کرائس محمنعلق تو ائمہ طاہرین سے بکرون منواز مدیثیں مروی ہیں ۔ انگرطاہری عسے انخواف کرنے واسے مجی اس حفیّقت کے معترف بى ببال كك كرابن مقعن بسلامسنادشى سے روابت كى سے: «شعبی کہتے ہیں کر رسول مے حب انتقال کیا تو آب کا سر

یے طبقات ابن سعد مبلد م قتم تانی صفه عصد علی طبقات ابن سعد مبلدم حتم تانی مسفه سع طبقات ابن سعد مبلد م قتم تانی صفه

امیرالوئین کی آخوش بین مقاا در مفرست علی بی نے آب کو عنس دیا۔ امیرالوئین مجرے مجع میں اینے سلسلہ تقریمہ میں اس اس کا ذکر کیا کرتے۔ ملاحظ فرمائیے (نہج البلاغ علم مقال) امیرالموئین من فرمائے ہیں :

«اِصاب رسول عبائتے ہیں کہ میں نے کسی طرفی خدا ورسول کا کمنا نہیں طالا۔ ہیں نے ایسے ایسے مہلکوں میں اپنی مان پر کھیل کررسول کی میان بجائی جہاں بڑے بڑے سخاعا ن عرب کے بیراکھڑ گئے ، قدم پیچے بہٹ گئے یہ میری شماعت ہ طانت على عبى سے خدائے مجھ سرفراز فرمایا اور آ مختفرت نے جب انتقال فرمایا توآب کامرمیرے سینے پر تھا اور آپ کالعاب وہن میرے انحررگرا جے ہیں سے اسینے مندیرمل لیا میں ہی رسول مے عشل کا نتظم ہوا جس میں ملا تک میبرے م^{ود} گار تتے۔ ملائکہ کی وجہ سے مکان اورصمن اوازوں سے گو سنجنے لگا-ایکسه گروه آیا تنا دوسرا گروه ما نا تنفا مان کی آوازو^ن كوميرك كالؤل نے مُناروہ آب ير نماز يرْسطن تقييال تک کم بیں نے آب کوسیر دِ فاک کیا - للذا مجھ سے زبادہ رمول کا کی زندگی میں بھی اور آپ کے مرنے کے بدمجی کون حقدار ہوسیے گا ہے

ای جیسے آب کے دہ فقرات ہیں جوآب نے جناب سیدہ کو دفن رکے کہے:

نه بنيج البلاغه ملوم صلاف ومثرح بنيج عبلائمة ابن إلى الحديد مبدلات مسالات عند تنيج البلاغة ابن إلى الحديد حبد من مناه

سلام ہوآب پراے رمول خدا! میری جانب سے بھی اور آب کی دختر کی طومت سے مجی جوآب کے جوار میں پہنچ گئیں۔ اور آب كى خدمت بي علد بيني والى بي - يا دمول الله ا آب کی اس پاکیزہ وختر کی حیدا آئی پر دامن صبر اعقوں سے حجوالا جاراسها ورميرا صبروصنط حواب دب جار إسه إل:آب كى گرال تزجدانى اورآكپ كى موت سے ہم پر محنست: ترین مصببسین پڑی ہے -اس کوسوسینٹے ہوسٹےاس انازه معیست یرصراتا ہے (جب) میں سے ایکوا بنے ا منفوں سے اعوس محدس نمایا اورمیرے سروسید برآپ نے دم تولوا (توا تن برری معبیبن <u>جھیلنے کے بعدائب چ</u>کھیمھیبین مجه ٰرِیرِیْسے و مسبک ہے اناظفہ دانا البیہ راحبوں۔" اورجناب ام سلمہ سے بہ حدمیث مروی ہے ۔آپ فسنسرماتی ہیں : « قسم نجلاً على رسول كى خدمت مين سب سے زيا و واكست. ونسنت كب بارياب رسيد يجس دن آسيك رصلت مونياس دن ہم لوگ آپ ک عیادت بیں معروفت تھے اور آسیب فرمارہے تھے۔ علیٰ آئے ؟ علیٰ آئے؟جناب سبّدہ بولیں: بابا مان معلوم سونا ہے کہ آب نے انھیں کمی عزوری کام سے بھیجا ہے۔ جناب ایمسلم کہتی ہب کہ تفوٹری ویر کے بعد حصرت علی آئے۔ ہم لوگوں کو خبال ہوا کہ شاید رسول ا تنهال مين مجه بأين كرا ياسة بي بهمس وبال عدام كر در وازے برا بیٹے۔ میں در وازے سے بہت قرب بیٹی

مقی میں نے دیکھا کہ رسول حصرت علی پر حجک پڑے اور باتیں کنا مشروع کیں اور باتیں کرنے ی کرنے آپ نے انتقال فرمایا - لہذا علی سب سے آخر تک بیٹی مرک خدمت میں باریاب رہنے والے منظے ہے "

اورجناب عدائدين عرص عروى به كررسالت مآب مع حب آب

خصاس مدیث کوامام مائم سندرک مجدی مثلا پر دوایین کر کے کصفے ہیں کریر مدیث صبح الاساد ہے گر بخاری وسلم نے درج نہیں کیا ۔ بین کہنا ہوں کہ اس صوریث کی صحصت کاعلامہ ذبی نے مجھی اعزاف کیا ہے جنا کچا کفول شع تلخیص سستدرک ہیں مجی اسس صوریث کو اکھا ہے ۔ ابن ابی شہیر سے مجی سنن ہیں اس کی رواییت کی ہے ۔ کسز العال مجد و صابح پر مج موج دہ ہے ، ملاحظ موصور میں ہو و و و و

مبترمرگ پر سخ فرمایا کہ میرے بھائ کو بلاؤ ۔ ابو بکرسائے آئے ۔ آواب غےمذ مجیر دیا۔ بھراپ نے کہا کہ میرے بھائی کو بلاؤ ۔ حفزت عمسائے آئے آئے تو آنخفزت کے نے مذبھیر لیا۔ کوئی بڑھ کرحفزت علی کو بلالیا ۔ جب علی آئے تو اکسے نے انھیں اپنی جا در میں سے دیا اور اکپ پر حفک کر باتیں کرنے مگے ۔ جب حفزت علی باہر آئے توان سے پو جھاگیا کہ رسول مکیا کہ د ہے تھے آپ سے ؟

، اب نے کہا: رسول نے مجھ مزار باب علم کے تعلیم کیے اور ہر باب سے میزار باب مجھ بر کھل گئے۔

بہت اور جناب اور جناب اور جناب المست مال البنیاد ہیں اور جناب عائشہ جو کچھ فرماتی ہیں وہ تو ہوس پرستوں کے سلے زیادہ موزوں ہیں۔
اگر کوئی حب روا اس طرح مرے کہ اس کا سراس کی بیری کے سینہ پر ہو یا تھیڈی اور نات کے درمیان یا ہوی کی ران پر ہو اور وہ اپنے مولینی کی حفاظمت و تاکہدا سنت کی وصیت بوی کونہ کرسے قویقینا وہ زیال کا رادر تا ہ و بر باد کرنے والا ہوگا۔

ر بربر رسے دناب عائشہ کو کاش (حب انفون نے بہی ہتیہ کولیا

⁽بھیرہ کشیرہ فوگوسٹند) کرہ ہے تھے کہ عائشہ آکیہ نہیں اور حدث علی سے کہنے لگیں کہ اسے مان فودن مان نہیں ہوں مان اسے و بیٹی کی فویو یاں تھیں اس محافظ سے فودن میں ایک و دونوں میں ایک ون مین اسے عائشہ کے بہاں آوام فواتے) کیا تم مجھے میرسے دن میں بھی میں سے دوگے ۔ بیسسن کر مرور کا مناسنہ کا چہرہ عصرے مرخ موگسیا طاحظ مومٹری نہج البلاغر حمیدی حلوم حشک

منفاکہ یونفید است علی ایے نہونے پائے تو) اپنے باپ کی طرف اس کو الموب کرنے ہوئے یہ بیان کرنیں کرمیرے باپ کے سینے پر دسول کا دم نکا لیکن اپنے باپ کی طرف وہ اس کی نسبت دے ہی کیسے سکتی تنقیں کیونکہ انھیں تو دسول کا نے خود اسامہ کا ماسخت بناکر سٹ کر کے ساتھ رواز کیا تنقا جو مدینے کے باہر مباکر پڑاؤ کیے ہوئے تنقا۔

بہرمال جناب عائشہ کابہ کہنا کہ رسول سے ان کی گودیں دم تورا احرف جناب عائشہ ہی کی طونت منسوب ہے فقط وہی اس کی بیان کرنے والی بی اور بیر قول کہ رسول سے علی کی گود میں دم تورا بکٹرنت لوگوں کی طوف منسوب ہے بہت سے بیان کرنے واسے ہیں جیسے حصرت علی ، عبدائٹرین عباس کے عبدائٹرین عمر ، سنبی ، امام زین انعابدین اور جود انتراط المرین دائدا یہ قول اپنی سسند کے نماظ سے بھی قابل نرجیج ہے اور دسول اسٹدکی شان کے بھی زیادہ مناسب سے۔

المسلم كى صيث مقدم بيحصرت عاكن ري

جناب عائش کی مدین استے حصرات کی امادیت سے معارض ہے اگر ان حصرات سے قطع نظر حروث جناب اس سلم ہی کی مدیث سے معارض ہوتی تو اس صورت بیں بھی متعدد وجوہ سے جناب ام سسلم ہی کا تول قابل قبول ہونا انھیس کی صدیث کو ترمیح دی ماتی ۔ ہونا انھیس کی صدیث کو ترمیح دی ماتی ۔

مكتوب مابروه

جنابام سلمه کی مدیث کو ترحب یع کیوں کر<u>؟</u>

آپ نے جناب ام سلمہ کی مدیث کو ترجیح دینے ہیں جو کچہ کہا اسی پراکٹفا نہیں کمیا ملکہ آپ ہسس کے دعوبدار ہیں کہ بہت سی وجہوں سے جناب ام سسلمہ کی مدیث قابل ترجیح ہے۔ توبراہ کرم وہ بہبت سی وجہیں مجی ذکر کرد پہنچے کوئی وجہ چھوڑ ہے گا نہیں ۔ کیونکہ یہ مجت ومیا حشہ اورا فادہ و استفادہ کا محل ہے۔

س

جواسب مکتوسی

جنا<u>ب الم سیسلمہ کی مدرمیٹ کے</u> مقدّم وارخ ہونے کے امباب

جناب المسلم کے کیج ہوجائے پر قرآن نے نف ہمیں کی۔ انفیں کا مجدیں کا مجدیں کا محمدیں دیا گیا۔ بی سے مرشی کرنے پر کلام مجدیں ان کے متناق کو لگا آبست ہمیں اُتری ندا مغوں نے بعد دسول 'دسول ماکے ومی ان کے متناق کو لگا آبست ہمیں اُسول کی مدد کرنے کے لیے خدا کو جبرئی

المامشاره بير خلاوندعالم كرقول ان تستوبا الى الله فقيد حسطت تلوبكما كرامت .

کے دمی رسول سے رکھنے ہیں کہ ان کے ومی رسول جونے سے انکارکیا اور صفرست مرود کاننات کے بعد مینے دن مبنی رہیں حضرت مل کی طرف سے انتہائی عداورت لایں بید ویں ، دمول کی عرف کے بید مینے دن مبنی رہیں حضرت مل کی طرف سے انتہائی عداورت کی مدو کے لیے آمادہ ہونا تو اسس میرخود ہے آبت داللت کرتی ہے و ان تنظ اہوا علیہ ہے فیان الله ہو مسولاہ وجب بوبیل وحد اللہ الموسندین والمسلانک خیات الله علی ماکند کے مرشی کردگ مدعد واللت خلف بر و اگر تم دونوں ہیں عائشہ اور صفحہ رسول کی سے مرشی کردگ تو میں اور صائح المومین اور اس کے بعد فیلٹ بناہ بی

امین کواورصائح المومنین کواور ملائکہ کو آما دہ ہو تا پڑا۔ ندا تھیں خلانے طلاق کی دھکی دی تدان کواس سے فرایا گیا کہ متھارے برلہ میں تم سے بہتر ترفیجہ رسول کو بلے گی ندا تھیں زوج کوئ وزن توط سے مثال دی گئ اتفوں فیکھی ایسان کیا کہ رسول میں جیز حرام کر دی ہوجو خدائے رسول سے لیے جائز کی تھی۔ رسول اسٹر نے منبر مربی کھر سے ہو کر خطبہ فرائے ہوئے ان کے گھر کی طوے اشارہ منہیں کیا کہ ھا ھنا المعنتان تا ہیہیں فتنہ ہے جہاں مشیط کا سینگ ایھر تا نظر آر ہا ہے۔

جناب امسلم كا واب ايس بني تف كرسول ممازيره ويهمون

اے یہ نقرواور اسس کے قبل کا جمدا شارہ ہے قول مذاوندعالم ک طوت عسسیٰ دسید آک طیلقکن آن بیب دلید از واحداً شیبراً مشکق مسسیماست مومنات ۔

تعاسشارہ ہے طرف ہے حشرب الله مشلا للندین کی وا اصواق نوح واسواۃ نوح واسواۃ لوط ۔ کے

سى استاده ب عرف آبريا ابيها السبن اسم نخدم مسا احسل الله لك تبتى موحذات ازوا جلك .

اور وہ آب کی جائے ہو، پر بیر بھیلائے ہوئے ہوں اور درول کے سجد کرتے وقت بھی بیر نسمیٹ لیں ، کرتے وقت بھی بیر نسمیٹ بیں ہے حب رسول بیر کو دہا بین تو وہ میٹ لیں ، مجرحیب دسول سجدے کرکے کھرائے ہوجا بین تو دوبا رہ بھیراس طرح بیر مجمعیا دیں اوراس طرح بوری نماز ہیں بھی جرکت کرتی رہیں ۔

جناب ام سنمه جناب عثمان کی وتشن مہیں ہوئی نہ آب کی جان لینے پر نلیں نہ نعشل کر کہارا نہ یہ کہا کہ اس نعشل کو قتل کر ڈ الو۔ یہ کا فر ہوگیا ہے۔ جناب اسلم اپنے گھرسے نہیں نکلیں جس میں رہنے کی خدائے تاکید کی ستی ہے۔

عصيح بخارى طد اصخه ١٣٣ باب مسايجوز من العل في الصلاة -

کے جناب عائشہ کا قرنا و مغلا معزست عثمان کے خلات جذبہ تنعزانہار عداوت ولبغن وشاہ اوران کا کہنا کہ ہسس منش کو تنل را الو یہ کا فربوگیا ہے ایمی سنہور است ہے جس کے ذکر سے تاہیج کی کو ان کتاب جس میں جہر معزست عثمان کے مالاست وحواد شد کا ذکر سبت خالی نہ کے گرفت تاہیج ابن جربرطبری و تاہری کا مل ابن ایٹر جزری کوسے لیجیے ہے کم وکا سست مالاً فی وی تفعیل سے آپ کو معلوم ہوں تھے ، حصرت عالشہ کے زمانہ کے لوگوں سے حضرت عالشہ کے فرمانہ کے لوگوں سے حضرت عالشہ کے فرمانہ کے لوگوں سے حضرت عالشہ کی عثمان دہشی برا مخدید میں کہ شربر بڑا معبل کہنا ۔ چنا نجہ تاریخ کا ل ابن ابٹر جزری صفحہ ۸۰ جلہ ۳ وانغر جمل کے مالاست میں یہ انتحاد کوجود ہیں ۔

فهنك البداء ومنك الغبير . ومنك الوياح رمنك المطو وأنت امرت معتشل الإمام - دقلت لناامنه متد كعند

کیب ہی سے الن نسا داست کی ابتدا ہوئی آب ہی دیگ بدنتی رہیں آب ہی سے جوا میں جلیں آپ ہی سے بارسٹن ہوئی آب ہی نے خلیفر کے قتل کا حکم دیا - آب ہی سے مہر سے کہا کددہ کا فر ہوگئے ہیں ۔

تا مياكرارشاد بارى تمالى ب وقون فى بيونتكن ولامتبوجن (بال الكل صغر بر)

جناب المسلم نے اونٹ برسوار ہو کوفوج کی کمان میں بنیں کی آوروہ جو مجمعی وادی میں نے مبار ا ہو کہی بہب ار اپر چرطھ رہا ہو بیہاں تک کہ چیٹر د حواب کے کئے تھو نکنے لگے ہوں جسسے دسول مے بہلے ہی ڈرا دیا تھا سگر ڈری نہیں اور نہ اسس سٹکر گراں کی قیاد سے کرنے سے باز دہی۔

که اس بارے میں بہبن مشہور صدیث سے اور وہ صدیث نبوت کے علایات اور اسلام کی روسٹن نشانیوں ہیں سے ہے ،اس صدیث کو مختفر کر کے انام احد ہے اپئی سسند ہے ہ معنو مرح و یہ بیں وکرکسب ، نیز اسی طرح محتفر کر کے امام حاکم سے مشعدر کے حلاس معلی ہے اور صفحہ ، ۲۰ پر ورز کمیا ہے نیز علامہ ذہبی ہے مجمی اس کی صحبت کا اعترات کمیا ہے اور فرد کمی سے ندر علامہ ذہبی ہے کہ میں متاک کیا ہے اور فرد کمی ہے اور فرد کمی سندرک میں فقل کمیا ہے

جے امام کے مقابدیں جن کیا تھا۔

المنزاجناب عَانَتُ كاقول كرسول الله نے مرسے سینے پر دم توطه ان كاس قول ماں تول اللہ نے مرسینے پر دم توطه ان كاس قول سے مرتبط سمجیے كرسول اللہ ان مسیوس متعباروں سے کھیل رہے ہیں آپ نے عائشہ سے کہا كركيا تم ان كاتما شہ دىج نا ماہتى ہو؟

وه بوليس: بال -

عائشہ بنہ ہیں کہ اس پر رسول آئے مجھ اپنے پیچے کھڑا کہ لیا کہ میرارخارہ رسول کے رخسارہ پر کھا اور رسول آفر مائے ستھے ہاں اہل اسے بنی اروندہ ، مطلب یہ مختا کہ وہ اور مرگری سے اپنا کھیل دکھا بیس "ناکہ عائش فوش مول ۔ جناب عائشہ کہتی ہیں کرمیب ہیں تھک گئی تو آپ نے بوچھا کہ بس ۔ جو میں نے کہا : " ہی او ایس نے فرطیا ، احجا ماؤیے میں مقبط کیھیے :

" دسول الله مرسے باس ایک دن آئے اور میرسے باس داو کنیز ب گاری مقبیں - دسول آگر سستر برلیٹ گئے اس کے بعد الوبکر آسے انتخد ل نے جب دیجھا توسیم محص حفظ کا اور کمیا کہ دسول کے پاس اور شیطان کی بالسری ؟ " جناب عائشہ کہتی ہیں کہ :

سول ابو بکری طرفت متوحسید جوکر بوسلے: ان دونوں

سك صحبيح بمارى ملِد اوّل معز ۱۱۱ كتاسب العبدين وصيح سسلم ملِد اوّل المؤهام ٣٢٠ منداحد ج ٦ معز ۵ ۵

كوكات ودور

اور جاہے توان کے اس تول سے مرتبط سیجے کہ:

" ایکٹے مرتب ہم ہیں اور رسول میں دوٹر ہوئی ہیں رسول سے آگے نکل گئی ۔ اسے کچھ دن گزرگئے اور میرسے بدن پر گوشت براہ آیا۔ تھے دوڑ ہوئی نواب کی مسول آگے نکل گئے آپ نے فرایا : کہ لویں سنے بدلہ آتا ر دیا ۔ "

یا ان کے اس نول سے مرشیط سمجھے کہ:

" یں لڑکیوں کے ساتھ کھیلاکرتی اور میری سہیلیاں آتیں اور میرے ساتھ کھیلیتی اور رسول اسٹاخود ان لڑکیوں کو بلاکر میرے پاس لاتے اور وہ میرے ساتھ کھیلیتیں " باان کے اس تول سے مرتبط سجھے کہ:

" مجدیں سائے خوبیا ل ایسی ہیں کرکسی میں پائی ندگئیں سوا ایک کے - جو جناب مربم میں بھی - ایک تویہ کہ فرشتہ میری صورت میں نازل ہوا - وومرے یہ کہ رسول کی کل از واج میں بس میں ہی باکر ہ تھی اور رسول میروجی اتری اس حالت

الے بخاری دُسلم والمام احمد شعاص مدیریشہ کی امغیں منحاست وابواب بیں دواہیست کی ہے جوہم اس کے ادبر کے ماشیے میں بیان کرچکے ۔

نه مسندا حد حلد و صغره ۵

سخت ابن اہل سشبیہ ہے اس کی وابیت کی ہے اور یہ مدیدیث کمنزانعال ہیں کہی موج وہے الماصظ ہو مدینٹ نمبر ۱۰۱۵ جلہ ۲ یں کہ بیں اور وہ ایک نمانت میں منتے۔ بیں دسول کی سب
سے زیا دہ چیدتی متن ۔ میری شان میں کلام مجید کی ایسی آتیں
ائریں کہ قرمیب منا کہ اسمنت ان آبات میں ہلاک ہو جائے
میں نے جناب جبرئیل کو دیکھا اور دوسری بیویوں ہیں سیکی
نے نہ دیکھا۔ دمول کا انتقال میرے گھریں ہوا۔ میرے موا
دسول کے بیس کوئی نہ منتا ہے۔ میں اور ملک ... الح

اس طسسرت اوربیت می حدیثیں جناب مائشت بیان فرائی ہیں جن بی اپنی مدح مرائی کی ہے اورا پنے خصوصیات کی لمبی چوٹری فہرست گنائی ہے وہ سب اسی جیسی ہیں لیکن جناب ام سلمزتو وہ ببی کانی تحبی تخیس کہ وہ اپنے ولی اور سپنی ہوکے وصی سے موالات رکھیں آپ مائب الرائے اور کا مل عقل وہنم غیر متزلزل دین دیکھنے والی منظر مغیس ،آپ سے جنگ مدیب کے موقع ہے دمول کوجومشورہ ویا بھنا وہ بین تبوت ہے کہ آپ کمتی عقالمند کمتی مائب نظر وصائب دائے اور بلندم تبد فاتون تھیں ۔

نے ہسس پرانغان واجاع ہے کہ رمول کے اُتقال کے وقت عضرت علی موج د تنے وہی تیار داری کرتے تھے لہٰذا حضرت عافشہ کا بہ کہنا کیونکو میجے ہے کہ من وقت رمول کا اُستال ہوا کوئی رمول کے باس موج د نہ مغنا سوا جناب مائٹ ہے کا رملک کے علی کہاں تنے ، حباس کہاں تنے ، حباس خاطرہ اور صغیہ رمول خدا کی کیوکی کہاں تھیں ؟ بی باشم سب کے سب کہاں تھے ؟ اور کیونکا نحس میں وسول کی دوری ہیویاں کہاں تغیبی ؟ بی باشم سب کے سب کہاں سنے ؟ اور کیونکا نحس نے دیول کوئن تنہا عائش کے باس جیوٹو ویا مقاریج ہے یہ است منے کا در کی کھریم میں ان ساخ دیوجتاب عائش نے وکھیں فہذا ان کا یہ سانوں بانوں ہیں ہے کھرمیت جاب مربیم میں ان ساخ بانوں ہیں سے ایک بات بائی مائٹ ہے وہتاب عائش نے وکھیں فہذا ان کا یہ کہنا کیونکو میں ہے کہ موجت ہا ہو رہے کی کھرمیم ہے ۔

مكتؤب منبرج

اجسكاع وخلافت

آپ نے متبی بائیں کہیں مان بھی لی جائیں کہ امیرا لمومنین وصی سینیر تھے اور آپ کے بارے بیں حریجی نعوص موجود ہیں تو آب اس کو کیا کریں گئے کہ اس سے معزمت ابو بکر کی مبیعت پرانغان کر لیا - انھیں اجماعی طور مربغ لمبیعت مندی کر لیا اور امست کا اجماع تنظمی حجمت ہے کیونکہ دسول مخود ارست اوفر ما حکے ہیں :

- والتجبينمع المستي عملى الخطاء يه
- · میری امّسنند منطا پرتسبی ا جماع نه کرسے گی ۴

نيزيمي فسندمايا: لا تجسنه امستى على صنلال-

میری اتست گرای پرکسی اجاع ذکرے گی ؟ اس کا آپ کے پاسس کیا جواب ہے ____؟ معس جواسی مکتوسی

اجرت ع موا ہی نہیں

ہم بر کہیں گے کہ رسالت مآب نے یہ جو فرمایا ہے کہ میری است کم بہی خطا پرا جاع نکرے گی اور گراہی پر کہی اجماع نہ کرے گی اسس کا مطلب بہ ہے کہ جس امر کوامنت وائے باہم دائے مشورہ کرکے اپنی بہد داختیا دست اتفاق آرار سے طے کرلیں اس میں خطا و گراہی نہ ہوگ مدیثوں کے دیکھنے سے بہی مطلب مجھ میں آنا ہے اور کوئی دومرا مطلب مجھ میں نہیں آنا ہے اور کوئی دومرا مطلب مجھ میں آنا ہے اور کوئی دومرا مطلب مجھ میں نہیں ہمانا لیکن وہ امر جس کوامست کے صرفت چند نفر طے کوئیں اوراس پر تل جائیں اوراس پر اہل مل وعقد کو وہ مجبور نہا لیس تو اسس کی صحبت پر تل جائیں اوراس پر اہل مل وعقد کو وہ مجبور نہا لیس تو اسس کی صحبت پر کوئی دہیں نہیں .

سقیعند کی بعیت با ہی منورہ سے نہیں ہوئی ۔اس کے کرنا دھرتا تو حضرت عمراور الوعبیدہ اور وہندگنتی کے لوگس شخے ۔ا تھیں دو جارا دمیو نے یہ بیٹ کی اور الوعبید بیش کی ۔ ہسس نے یہ کی اور جو وہ جا ہتے گئے ہو ونست کی نواکست مالاست نے مساعدست کی اور جو وہ جا ہتے تھے ہو گیا۔ خود حضر سند ابو کم نے صاف صاف کا خاد و تحد الرکیا ہے کہ بری سیدت باہی مشورہ سے ہیں ہوئی۔ نرعورہ فکر کرے سوچ مجھے کہ بری سیدت باہی مشورہ سے ہیں ہوئی۔ نرعورہ فکر کرے سوچ مجھے کہ برقی۔

چنانچانی مظامنت کے مشروع مشروع میں بطور معذریت خطبہ کے لیے کھرطے موسے توکھاکہ:

" میری بعیت ناگها نی مخی- خدا نے اس کے مٹرسے مجفوظ رکھیا ورند مجھے تو ننتنہ و دنسا د ہر پا ہونے کا بڑا خوصت کھا ۔" حضرت عمرنے بھی تجرسے مجمع میں اس کی گواہی دی چنا پخچہا ہنے آصن ری زمانہ خلافشت میں جمعہ کے دن منہ درسول میرا بحفوں سنے کہا ۔ان کا یہ خطب

مبہت مشہورہے امام سخاری نے بھی اپنی میٹھ بخاری ہیں نقل کیا ہے لبلو ر شومت ہیں خود حصرست عمر کے اصل الغاظ بیش کرتا ہوں ۔

اشمانه بلعنه في آن قائلاً مسنكم يقول: والله لو مات عمربايعت منلانًا نلايغة تامروً ان يقول امنها كانت بيعة أبى بكر فلتة وتعمت ، ألا وانها تدكانت كذلك ولكن الله وقى شرها (الى أن قال) : مسن بابع رحبلاً مسن عنيومشورة مناديب يع هو ولا السذي با يعد تغرة أن الإلفار خالفونا ، واجتمعوا بأسرهم فى سقيفة بن ساعدة، وخالف عنا علي والزبير ومن معهدا "

کے حفزت ابو کمرسے اس خلیہ کوا ہو کمراح رہن عبدالعزیزجو ہری نے اپنی کتاب سفیفہ میں ورج کھا ہے۔ ورج کہا ہے ۔ ورج کہا ہے ۔ ورج کہا ہے ۔ ورج کہا ہے ۔ مال خلاف کہا ہے ۔ عصف خلاف کا دیا ہے اس خلیہ کو دیگر محد شمین نے ملاحظ فرائے باب دج ابن جربر طبری شب تاریخ طبری میں سبلسلہ حوادث مسللہ ہما ابن ابی الحدید میں میں سبلسلہ حوادث مسللہ ہما ابن ابی الحدید کے مشرع نبی اعبلاخ مبلہ اول معنی ۱۲۲ ہر ذکر کیا ہے ۔

" مجھے ہے فہرہینی ہے کہ تم یں سے کسی کہنے والے نے کہا ہے کہ اگر عمر مرکفے تو ہم فلال کی سیست کولیں گے تو کوئی شخص اس فلط حہی میں ندر ہے کہ الزبکر کی سعیت ناگہانی طور برہوئ اور پایڈ تکیل کوہنے گئی۔ بیصرور ہے کہ الن کی سعیت ہوں ،ی انجام پذیر ہوئی لیکن خدا نے ہم لوگوں کو اس کے نشر سے معفوظ رکھا ؟

اسى سىلىلەتقرىمىيى كما:

مب کوئی شخص جماعت سے الگ ہوکر بغیررائے ومشورہ
 کے اپنی استبدادی رائے سے ایک شخص کی سعیت کرے تو مجمران دو ہوں میں کوئی امام نہ نبا یا حائے - نہ وہ سعیت کرنے والا اور نہ وہ سعیت کیا جائے دالا اور نہ وہ سعیت کیا جائے دالا کیونکہ اس میں دھوکہ ہے ایس نہ و دونوں مارے جائیں ہے۔

اے اس کے کہتے واسے زہر تنے انھوں نے یہ کہا تھا کہ اگر عمر مرکے تو پیس علق ک ہمیںشند کووں گاکیو کہ ابو بکر کی مبعیت بھی اس طرح ناگہا نی طور پر ہو ل کھی مگر پایئے تکہیں کو پہنچ گئ معدز سے عمر نے جومنا نؤمہیت بریم جوستے اور یہ خطیہ انھوں نے درایا یہ بخاری کے اکثر شاریعین سنے اس وافغہ کی تقریح کی سبے مطاحظ فرائے ہوئے وشعلان صفی ۲ ۲ مبلہ ۱۹ جس ہیں بلاذر می سے ایمنوں نے اس کی روامیت کی ہے اور تقریح کی ہے کہ یہ روامیت شیخین کے معیار بہ چسیجے الاسنا و ہے ۔

عد میں کہنا ہوں کو حصر مندع کے عدلی کا بہند ڈھنڈو را پٹیا حالاً جنے عدل کا نقاضا یہ ہے کوم بات کی تکلیعت دومروں کو دی ماستے اپنے لیے مجھ گوا داسمجی مبان میا ہیے (بال انگے صفح میر)

آگے بل کرآب نے فرمایا:

" ہم توگوں کا وانقہ یہ تنفاکہ حب مطرمت کا انتقال ہو انوانسار سے ہاری مخالف میں ساعدہ سے ہاری مخالف سندی ماعدہ میں جمع ہوئے اور علی اور علی میں جمع ہوئے اور علی اور علی اور علی اور علی میں جمع ہوا خوا ہ بھی برگست نزیہ ہے ۔

اسس کے بعد آپ نے سنبغہ کے اندرجوا ختلافاسند رونما ہوسے جوا واڈیں بلندموئی جس کی وجہ سے اسسلام ہیں نفرقہ پڑھانے کا خودت تقاان کی طرصت اشارہ کیا اور میر کہ ہم نے اس موننے پر ابو بکر کی مبدیت کر لی۔

روایات کی نبا پر بر بات باکل بدیمی طور پرمعلوم ہوتی ہے کہ اہل بیت دسالت کا ایک فرد بھی سقیفہ کے اندر موجود ند بھا بکر سب کے سب حصرات علی کے گھرمی اکٹھا سمنے اوران کے ساتھ ساتھ جناب سلمان ابوذر ا مغداد ، عمار ، زمیر ، فزیمہ بن نابن ، ابی ابن کعب ، برار بن عا ذب ، خالد بن سعید بن عاص اموی اور بھی ان کے جیبے میہت سے لوگ تھے۔

توجب برسب کے سب بعیت کے موفع پر موجود ہی نہ نفے جب رسول می کی اہل بمینت کنارہ کش دہے جن کی حیثیبت امست کے درمیا ان ایسی

(بنبیرہ اسشیر مؤگزشند) جس طرح بیسند کے شنان حفزمند عربے دو در وں کو برمکم دیا ہے کہ جاحت سے انگ ہوکراگر کوئی شخص کسی کی معیت کرسے توان دو نون کو جہانے و یا جائے اوران ہیں سے کمی کو اسمام نہ جایا جائے نہ وہ بعیت کرنے والا اور نہ وہ بعیت کیا جائے والا ۔ تق کامش کی مکم مفزمند عمراحیتے ہیے اور اسپنے سسا بختی مفزمننہ ابو بکر سکے سیے بھی ۔ کہت

ہے جیسے بدن میں مراور چیرے پراتھیں جو ثقل پینیرا تھے۔خراند پینمرا متعے ، کتاب خدا کے ہم بلہ مختے ، امست کی نجانت کا سفینہ مختے ، امست کے ہے باب مطریخے ، گراہی وضالات سے جائے امان تنے ، علم ہوایت تنے د مبياكم م كرست داوران مي ذكر كرهيم مي) تو مجرا جماع كهال سے موكيا؟ بخارى وسلم في اليف اليف مي كله مين اور مكترست معقفين، علما ومحدثين نے اس کے ٹردن اکٹھا کیے کرحفرن علی میدن سے کنا روکش ہی رہے آب فع بعیت بی نه کی اور زمعالحت می فرمانی و بال حبب سیره کا انتقال بوگیا حجه حہینیہ کے بعد و قدن کی نزاکست اور ملسن کسلا میہ کی خیرخواہی سے آسپ کو مجبودكيا توآب خدمصالحت كرلى اس كتبوست بي خود جناب عائشت اکید مدمیث مروی سے جس میں جناب عائشہ نے صاحت تفریج کی ہے كجناب سيرة الوكرس نادامن بوكيس اوررسول كع بعدمرت دم كسان سے گفتگوند کی اور حبب معزمت علی اے ان لوگوں سے معانیت فزمائی تو يه مجى كه دياكه ان لوگوں نے ميرسعت خلا دنن كوغفىپ كرمكے زمر دينى كى ہے مدية بن مرف مصالحت كا ذكر بعداس كى كو كى تشريح ننبي كى كه آب شے صلح کرتے وگفت ان کی بیست بھی کرلی تھی۔ آپ سے ابو بکرسے خطا ب

مع العظر فرا مي مجرس مسالات مدال مكر أنوازه موكاكر المربيت عليهم السلام كى كياستان كتى ؟

عه طاحنط فرای میم بخاری ملدس معنی ۲۹ اداخر باب غزوه خیراورهیم کم طاد کتاب ایم ادوالیر صفحه ۲۵ باب قول البنی و لانسورمث مساختو کمت کا حسد فنت -

کے جوادست و فرمایا تھا اس میں کس قدر سمک اور بے پناہ استبان فرایا تھا آپ نے: اگرتم نے دیول سے رشتہ ظاہر کر کے مخالفین کوقائل کیا تو تھا را غیر لین میں دیول گا سے زیا وہ قزابت رکھتا ہوں - دسول سے مجھ کو زیادہ حق بہنچتا ہے اورا گردائے مشورہ کر کے تم امت کے معاملات کے مالک بن میٹھے تو ہر داستے مشورہ کیسا جبکہ دائے مشورہ دینے والے ہی فائب ستے ایک

ئے یہ ووٹوں امثیارنہج البلاغہ میں موجود جیں۔علامدابن ا بی انحد پرال ووٹوں شعروں کی تفسیبرمیں *نٹرے ہیے ا*لبا غہ مبلہ ہ صعنہ ۳۱۹ میں اکھنے ہیں کہ ان دو **ن**ول *شعوو*ل میں امرالمومنین کا منطاب اصل میں ابو یکر سے ہے اس بیے کہ ابو بکرنے امضار کے مقالم مير دنيل قائم ك متى كر محندن عستوة وسول الله وبيصنته التي تعقات عند م الخفرت ك قرم ك وكل مي اور وه اندا ب جوائفين مي سعجوا ے (بین قریشی میں) اور مبب مفرست ابو بکر کی سببت سفیقرمی ہوگئ اواب اوگوں کے ساحفيه دليل ببيش كرنے لكر كر مارى تومبيت بويكى اورابل حل دحفدنے ہارى معست کی ای برابرالمومنین نے ابو کرسے کہاکہ آپ نے انفار سے مقالم میں ہو دلیل میشیس کی کہ ہم رسول کے قوم وقبیلہ واسے میں اوروہ اندا ہے جو انھیں میں سے مجدد عبصة أب كاليزين مي بماظارشت وقراب أب سكين زياده قريب ترون رسول سے ،اگر اس بی تو توم وفنید سے بی اور میں تو رسول کا مفتل مجا زاد معانی موں ا درآ ہیں بر دلیل جومیٹیں کرشنے ہیں کہ لوگوں نے ہیں متحسب کیا ا درج اعت ہسکام ممیں خلیز نبا نے پر رامنی ہوگئ توانیب بڑی جماعت مقبقہ سے خاتب تقی بہت سے اوک مشرکیب ہی زہوئے البذاکس طرح آپ کی خلافت درست ہے سنتے ممرعب دہ منق د ياده عرب عبغول شدا بين موائل بنج البلاعة ميتخربر بميد بي اكفول شديمي أيرللومين كه ان دونول شعود مرابن الدائديد ك عبارت سے خاصل ماستبيتر بركيا ہے -

ایی ی دلیل ایک مرتب جناب عباس نے بمقابل ابو بکرسین کی می ۔ جبکہ ایک مرتب خلانت کی بات جیست ان دونوں کے درمیان مجملی قرباب عباسس نے فرایا :

"اگرتم نے رمول کے ذریعہ سے قرابت جناکر یہ خلانت مامل کی ہے تو تم نے ہم لوگول کا من چھینا ہے کیونکہ تم سے زیادہ ہم رمول کے خرابت رکھتے ہیں اور اگر مومنین کے ذریج تم نے بیخانت ما مل کی ہے تو مومنین ہیں تو ہم مقدم ہیں اگر مومنین کے توسط سے یہ خلانت محقیں ہم چی تا ہے تو جب ہم ہی نابسند کے توسط سے یہ خلانت محقیں ہم چی تا ہے کہ درامنی تہیں تو ہے کہی تھاری کرتے ہیں ہم ہی تحقیل خلافت ؟ "

توجب بینمبر کے چیائی بینم و کے باپ کے مھائی یہ مراحت فرمائی رمول کے چیازاد مھائی رسول میں درول کے جیازاد مھائی دسول میں اور جمائی اور حمل قرات درات در این در میں ہوگیا ؟ طاہر کریں تو اجماع کہاں ہے ہوگیا ؟

ش

مكتوب منبرا

اختلافات ختم ہونے کے بعد امک ع منعقد ہو گئے

الم سندن اس سے الکارنہیں کرنے کر سبیت منٹورہ سے نہیں ہوئی وہ سے نہیں ہوئی وہ سے نہیں ہوئی وہ سے نہیں ہوئی ماس میں ہی کوئی شک منہیں کہ اس میں ہی کوئی شک منہیں کہ اس میں ہی کوئی شک منہیں کہ اس موقع بران الحیا اور میری کا اور سعد کو خلیفہ بنا نا چا المحتا اور میری مخالف منے اور جہا بری والفیار میں جو بنی اسم کے طوندار منے انخوں نے بھی مخالفت کی اور سب صفارت علی ہی کو خلیفہ بنا نا چا ہتے تھے لیکن وہ یہ کہتے ہیں کہ امر خلافت اکثر میں حصرت ابو کم رہے ہیں کہ امر خلافت اکثر میں حصرت ابو کم رہے ہیے پایر تھیل کو پہنچ کیا اور آخر کارسب نے انخیں میں حصرت ابو کم رہے ہیے پایر تھیل کو پہنچ کیا اور آخر کارسب نے انخیں میں حصرت ابو کم رہے ہیے پایر تھیل کو پہنچ کیا اور آخر کارسب نے انخیں

امام بنانابسند کرلیا المندا جب سب نے امام بنانابیند کرلیا تو وہ زاع کیستا میں بنانابیند کرلیا تو وہ زاع کیستان کرلیا دائد اور سب سے جناب الدیکر کا بوجہ بٹانے ، فیر خوابی کرنے پرا تغاق کرلیا ۔ دائد اجس سے حفر ابو کیکرنے جنگ کی اور جس سے ابو کرنے جنگ کی اور ان کے اوام و نوابی اور ان کا مات کوجاری سب نے اس سے صلح کی اور ان کے اوام و نوابی اور ان کا مات کوجاری کیا اور کسی نے می ان کی اطاعت سے گریز بہیں کیا لہٰذا اس بنا پرا جہاج میں اور کسی نے کھی ان کی اطاعت میچے کھی ۔ مذاکا سن کرے کہ اس شے مسلمان کوجب کہ ان بیں براگسندگی ہے بین ہی کھی ایک نقط بر مسلمانوں کو جب کہ ان بیں براگسندگی ہے بین ہی کھی ایک نقط بر ان کے داوں کو جب باہی نفرت و برزادی بیدا ہو میکی می مالویا۔

جواسب ميحوسب

مسلمانوں کا حصرت الدیکر کا بوجھ بٹا نے اور ظاہر دباطن میں ان کی خیرخواہی پراتفاق کر لینا اور چیز ہے اور اجماع کے ذریعہ عفار خلا دنت کا جسی ہونا دو سری چیز ہے ۔ ان دولؤں میں نہ توعملی تلازم ہے نہ بنٹری اکیونکہ امبر الموسنین اور آپ کی اولا دمیں جوائکہ طاہر میں ہوئے ان کا جو کے ان کی دنیا کوملوم ہے۔ جو کے ان کا جو طرز عمل شامان ہمسلام کے ساتھ رہا و ، دنیا کوملوم ہے۔ انتھوں نے مہیشہ کسمٹن وقتوں میں ان کی عدد کی اور ہی ہم لوگوں کا مجی مسک ہے۔

آپ نے جرکچے کہا ہے اس کے جواب میں میں اس کی تفییل عرض کرتا ہوں۔

ائمه طابرین علیهمانسلام کانظریہ بر راکی امستنیاسلام کوسربلبندی کسس وقت تك ماصل بنين بأرسح وبب كك ايك ايس ملطنت في موجومسلما نول کی شیراز و مبندی کرے، ان کے اختلافات ویرانگسندگی کو دورکرے مرحدو کی حفاظکت کرے ،مسلانوں کے مالات پر کوئی نظرد کھے اور برسلطنت اسی وقت کستوار ہوسکتی ہے حبب خودرعا بالینی مبان وسال سے اس کا ہو جھ بٹائے حکومین سے تعاون کرے اگر زمام سلطنت کا ماکم شرعی (مین دیوال ش کے میج مانتین ونائب) کے است میں رہنا مکن ہوتونس وہی فرمال روا ہوگا کوئی دور انہیں اور بہ منتذر ہواؤر سلانوں بیماکم سڑی کے علاّوہ کوئی دورا مسلط موجاً ے تواسس صورت بن امست اسلام رواحی ہے کہ ہرا یے معالمه میرسیس بس اسلام ک عوصت وستوکست مسرحدوں کی حفاظمست المک كاامن وابان مخصرمون إدشاه سے تعاون كرے مسلمانوں بس افتراق نسب كرے اس سے تكرا كرمسلانوں كے مثيرازه كومنتشر نه كرد سے . بلك امست ير بہال تک واصب ہے کہ اس با دمشاہ سے اس طرح بیش آسے حس طرح خلفاً برحق سے اسے بیش آ ناجا سئے ۔ زمین کاخراج ولگان ا دا کرے چوا یول کی زكؤة دے نیزاسس متم كى چيزى جو بارسشاه شے خراج وسكان كے طور پر لوگوں ے ماس کی ہوں مسلما نوں کے بیراس کا بینا مجی ما زرہے ۔ خرید وفرو كے ذريعيد انعام وكبشش كے طورير يا اور حوصوريت يا ف كى مول -میں طرز عمل میرالمومین کار ما اور آب کی نسل سے جوائم طاہر تی ہوئے ان کامسلک بھی ہیں را حصرت سرور کائنات نے فرمایا کہ: « مبرے بعد بڑے ہے بڑ سے انفلا باسٹ میش آئیں گے اور بہت

مى ناگوار با توپ كالتموين سامنا موگا"

وگوں نے پوچھا: یارسول انٹرم اگر ہم میں سے کوئی مخف اس زمانے میں لہے توکیا مکم ہے آپ کا ؟ آخفزت مین نے فرمایا کہ :

" تمنّقارے ذَمّجو حفوق آئے ہوں انجیس اداکر دو اور خود اپنے میں اداکر دو اور خود اپنے میں اداکر دو اور خود اپنے

حقوق کے لیےدر کا والی سےسوال کروے"

جناب الوذر فغارى فراتے بي كه:

" میرے ملیل مینی برخرام نے مجھ دمسیت فرائی ہے کہ بیسنوں اور اطاعت کروں اگرے وہ دست و بابریدہ غلام کی کمیوں مرجع

مسلم معنی شے رسول اللہ می فدمت میں سوال کیا کہ باحدرت کیا مکر ہے

آب کا اگریم برالیداننی ماکم بن بلیٹے جوابے حفوق نو ہم سے ومول کرے لیکن امارے معنوق ہیں و دسے مرور کا کنایت نے وزایا ،

" تم ان کی باست سنو ، ان کی اطاعت کروکیونکه وه این فرائعن کے جواب ده بین تم اینے فرائعن کے تیم

حذیفے بن بہان سے ایک مدمیت مروی ہے جس میں آنخصر سند ایک مدمیت مروی ہے جس میں آنخصر سند ایک مدمیت مرایا کہ:

" میرے بعد کچے ایسے بھی ائمہ ہوں گے جونہ میری راہ پرملیں گے ندمیری سنست پرعمل کرمی گئے ۔عنقریب ان میں کچے ایسے افراد

ے شیخ سسٹم حلد ۲۔ منی ۱۱۸ میں یہ صربیٹ موجو د سبے اور دیگرا محاب محلحاء سسٹن ہے بھی اکس کی روابیت کی ہے ۔

عدم محسلم ملدم بن به صريث موجود ب اورشبور احاديث من سهد

سے میجسلم دریومماح یں ہے۔

ماکم بن مبغیر گے کہ ہول گے تو وہ انسانی سپیکر ہیں مگر ان کے دل شیطانوں کے دل ہول گے " حذیقیہ نے بوجھا یا حضرت اگر میں نے ایسا دور پایا تو میں کیا کروں گا؟ اسمفرت میں نے فرایاکہ: ورسمامہ کی بارید سننا اس کی اطاعیت کرنا اگر جیہ و و بمقاری

"کم امیرکی باست سننااس کی اطاعست کرنا اگرجی و دیمقاری پشست زخمی کر دے بمتھارے مال کوچین نے مگر کھر مہی تم اس کی باست مالز اوراطاعست کروٹے" ایسا ہی انخصرست نے انمسلمدگی ایک مدریث ہیں فرا یاہیے کہ: "عقرمیب تم پرچیٰدفر ما زوا مسلمط ہوں گے: نستعددنون و تشنکرون هشدن عدون بوی ، وحسن

نستعرطون وتشکرون فشمن عسوت بیری ٬ ومست آینکرسسسلم کی "

وگوں نے پوجھا کہ ہم ان سے برسر پیار ہوں ؟ رسول منے کہا: روجب کے وہ نماز بڑ سے رہی تب تک نہیں "

اسس بارے بیں بہت سی متواتر اور صبح حدثیاں ہیں جنصوصاً بطرات المر طام رسی توسیب زیادہ بہی وجہ منی که با وجو دیجہ المکه طام رمن کی ما

اے مسلم نے ج م صفر ۱۲۰ میں اسے لکھا ہے اور کنٹر اصحاب سنن نے اسے دورہ کیا ہے۔
کا صبح مسلم ج م معنی ۱۲۲ میں ہے حدیث ہے۔ مدیث کی دالا ہے ہے کہ جس نے
منکہ کو جانا اور منکر اسس پرششتہ کہنیں ہوا تواس کے گنا ہ سے براہ ن کی موت

ہے ہے کہ سس کے منکر (بری) کو وہ اپنے النہ یا زبان سے وفع کر سے۔
ادر کھے ذکر مسکتا ہو تؤ دل ہی دل ہیں اسے قرائے۔

اس میں ہوری منی جس کے گلے میں ہڑی مجنی ہو اُن ہوا ور اُنکھوں میں حس و خاشاک بڑے ہول، دم گلسٹ رہا ہو، اُنکھیں جل دہی ہول گروہ صبر کیے برداشت کرنے رہے ۔ ان کا صبر کرنا محص اسی وج سے مقا کہ بینیٹر انخییں مخصوص طریقے پر مکم دے گئے تھے ، تاکید کر گئے تھے کہ دیکھو میں اوبت پر مجی بہنچ کرائی نہ دکرنا - رسول مانخیں مکم دے گئے تھے کہ دیکھو متنی اذبتیں بھی مخصیں بینچ الی جائیں مگر تم مبرکرنا تاکہ است والول کا مجالا ہو، ان کی شوکست محفوظ رہے ، اس وج سے یہ لوگ انتہائی تائی کے با وجود مکام و شوکست محفوظ رہے ، اس وج سے یہ لوگ انتہائی تائی کے با وجود مکام و کو مدایت کے راست دکھا تے رہے تاکہ اپنی ذمہ داری کو بورا کریں اور رسول میں

اسی وجہ سے امیرالموشین انے فلفار ٹلانہ میں سے سرایک کے ساتھ

ہے دل سے خیرخواہی کی ۔ مہینہ ان کومشورہ دیتے رہے ۔ زمانہ فلافٹ ٹلانہ
میں امیالمومین انے مالاست و طاز عمل کا جائزہ لیجے تو آپ کو معلوم ہوگا

کہ امیرالمومین انے اپنے حق سے نا امید ہوکر، جائینی کرمول اسے مایوس
ہوکرا پ نے مصالحا نروشس رکھی اورشاہان وفنت سے صلح واسٹنی
کو اپنا و تیرہ بنایا ، آپ و بھتے تھے کہ مسند رسول مغیروں کے قبیم میں
ہے حالانکہ رسول آپ کے حوالہ کرگئے تھے ۔ گرمچر مجی آپ ان سے آبادہ
بیکارنہ ہوئے ۔ اپنا حق لینے پر کمرسستہ نہ ہوئے ۔ مرمن اسی بے تاکہ
امست کا مجلا ہو۔ دین پرآئی نا کے ۔ اُغازے نظے نظر کر کے آپ کے
امیمان کو تربی وی ۔ اس کے لیے آپ کو جوشفین جھیلی پرایں جن ہولئاک
مرملوں سے گزرنا پرطاکسی اور کو یہ با بین پیش منہ کیں ۔ آپ کے دوسش

فلادنت رسول تمام نفوص و تاکیدات بینی برکے ساتھ ول کوخون کردیے والی اور مگر کوچاک بردیے والی کواہ کے ساتھ اب سے فریا دکردی تقی اور رمگر کوچاک بردیے والی کواہ کے ساتھ اب سے فریا دکردی تقی اس کو بے میں بنائے دے رہے تقے جزیروں کے انحق سے نکل جانے ہوئے انعلاب بعظیم بریا ہونے اور اسلام کے بیخ وہن سے اکھر جانے کا اندیش تھا انعلاب بعظیم بریا ہونے اور اسلام کے بیخ وہن سے اکھر جانے کا اندیش تھا بہنے واطراف مدمینہ کے عوب منافقین جو بڑے مرکزم سازی مقے ان کی طرف میں نہر واطراف مدمینہ کے عوب منافقین جو بڑے مرکزم سازی مقے ان کی طرف میں نہر واطراف مدمینہ و نے کے بعد ان کا انزیم بیت بڑھ تا جاتا تھا ۔ اور سلانوں کی مالست بالکل اس بھیڑ کری میں مقی جوجا وہ کے درمسیان میں جھیڑ لویل اور ورندوں کے درمسیان میں بھیڑ لویل اور ورندوں کے درمسیان

مسیر کذاب ، طلیر بن خو بلدا و رسجای بنست حرث ایسے جمو سفے معین نبوست بیدا ہو جکے سخے اور ان کے ماشنے والے اسلام کو طائے اور سلیان نبوست بیدا ہو جکے سخے اور ان کے ماشنے والے اسلام کو طائے اور سلیان کی تربی و بر بادی پر کئے ہوئے سخے ، فنیھر دکسری و بنیو تاکسیں شخے عون اور بیروان محدِکے فون کے بیاست شخے اور کار کر کر اس مام سے فار کھانے سخے برطا عم وعفسہ اور شد بید بین و منہدم بیوجائے ۔ اور اس کے بیے بڑی نیزی و مرکزی ان میں بوجائے ۔ اور اس کے بیے بڑی نیزی و مرکزی ان میں بیدا ہوجائے ۔ اور اس کے بیے بڑی نیزی و مرکزی ان میں بیدا ہوجائی محق ۔ وہ سمجھنے سخے کہ ہاری اگر دوئیں برا بہی ۔ ربول کے اٹھ جانے اور اس می بیدا ہو بھانا جا ہے اور سسخوار بات کے مامور میں نظم بیدا ہو ، مالات استخار میں سے کہ کہ ماری اور میں نظم بیدا ہو ، مالات استخار مور میں نظم بیدا ہو ، مالات استخار موں اس میاب سے موں اس میاب سے اسلام ہا ہے ۔

اب آپ انداز استوایی کی امیرالومنین اکے قدم ان خطروں کے دریات متعدد ایک طون میں انداز استواجی کا معدالات استاد میں میں میں میں دوری فر استاد میں میں میں جائے ، خلافت استادم کے تباہ وبرباد ہوجائے ، رسول کی ساری محسن میں راہ نکلتی می کا سلام محقا ابنا نظری دطبی طور پر امیرالمومنین اسکے لیے لیسس ہی راہ نکلتی می کا سلام کی زندگ کے بیے ابنے می کو قربان کر دیں ۔ عام سلمانوں کی معبلائی کی خاط ابن محرومی گوارا کر لیس ابندا اس نزاع کا فتم ہونا اور ابو بکر اور اکسی بیش کر ابن محرومی گوارا کر لیس ابندا اس نزاع کا فتم ہونا اور ابو بکر اور اکسی بیش کر جواف کا فاست سنے ان کا برطوحت ہوجانا (جے آب اجماع کے بیون بیش کر سب بیش کر میں دیے ہیں) وہ صرف دین اسلام کی تباہی اور سیانوں کی بر بادی کے خون کی وجہ سے آب نے میں اسلام کی تباہی اور ابنی بربا دی دیجھا کیے مگراف سب سے جبرکیا اور ابنی بربا دی دیجھا کیے مگراف سب نے میرکیا اور ابنی بربا دی دیجھا کیے مگراف

دسول کے بعدامیرالمومنین کے مرتے دم کسک تقریریں، خطے، گفتگوئیں، بین نبوسن ہیں اسس کا اور اس کے متعلق انکہ طام رین علیم اسسلام سے متواتر حدثیں موجود ہیں.

كين الفارك سردار سعدين عباده نے نوحفرت او بروعرس كخ

کے سدبن عبادہ کی کمنیست الخابت متی۔ یا معاب ببیت عقبے سے تھے۔ حبک بدر

نیز دور ری بہت کی لوائیوں میں شرکی دہے۔ بہ تبیار مسنسندری کے مرواد اور فتیب

تعمام انھار کے سرکردہ اور ان میں شہور صاحب بجود دکرم تھے مان کے جس کالم کی

طوف ہم نے اشارہ کیا ہے وہ تمام کمنی میرو تواریخ میں موجود ہے۔ این فینبہ نے

ملابال مامن والیاست میں ، ابن جربی طری نے تاریخ طب می میں (باتی انگام مقرب)

تک مصالحت ہی نہ کی ال میں اور شیخین میں ہمی میل ہی نہوا عید کے وقع پر نجو کی معلی ہی نہوا عید کے وقع پر نجعہ کی نماز میں کسی جماع سند میں ہمی ال دونوں معزات کے مر کب نہوئے ایخوں نے کی ان دونوں معزات کی باتوں پر کان نہ دھ اور نہ ال کے اوام و اوام کا اثران کے دل پر ہوا ۔ بالآخر مقام حوران میں بعہد خلافت عمرا عیا نک طور برقتل کر والے کے اور شہور کیا گیا کہ مین نے مار والا ۔

موریس رواسے اور بوری بی در بات می رواید به اور است کا دوری می اور است کا دار است کے بعد بھی جو بایت کہیں ان کا ذکر صروری معلوم نہیں ہونا ۔ سعد بن عباده سے اصحاب حبائی بن منذر وغیرہ دی انتقار انجوں نے بھی خوش خوش بعیت نہیں کی۔ بلکران سے زبر کستی مجت دی گئی اور وہ جبر ونشد دے آ کے سر جبکا نے پر مجبور ہو گئے لہذا تلوار کی بارا جس کے سر جبکا نے پر مجبور ہو گئے لہذا تلوار کی بارا جس کے سر جبکا نے پر مجبور ہو گئے لہذا تلوار کی بارا جس کے سر جبکا نے پر مجبور ہو گئے لہذا تلوار کی بارا جس کے سر جبکا کے در بائیں فانوسٹس کردی جا بیاں۔ بجت کو بهنوا بنا ابرا جا

دبقیعامشیم فرگرسنت بان اظروندری نے ادیک کال بیں جوبری نے کتاب الستبغیس نیوا و کرمہت سے معتقین علما اہل سنست نے اپنے مصنفات کے امر درج کیا ہے ۔

کے حباب بھی منجا مرداران وشجامان اتھار سے تقے ۔ جنگ بھر واصر بیں مٹرکیب رہ چکے تھے بڑے وحائی و کما داست کے بزرگ شخے ۔

یے عرکا حضرت علی کو دھمی دیناکہ ہم آپ کا گھر ملا دیں گے بہ توانز فعلی ٹابست ہے ابن فینیب نے برقانز فعلی ٹابست ہے ابن فینیب نے کتاب الامامت والسب است کے مترص میں ، طبری سے ابنی آلریخ میں دو مگراب لما حوادث سالے اورا بن عبد درئ نے کتا تحفدالغربر جلد ۲ تذکرہ معتبلہ میں جو ہری نے کتاب سفتینہ میں بیان کیا ہے جب بیا کہ متر تا ہم الدا ابن الحالم ابن الحالم بی میراوی الذم سے میں حودہ بن زمیر سے کی میراول صوب میں نرور ہے مسعودی نے عروی الذم سے میں عودہ بن زمیر سے ایے بیمائی عبداللہ بن زمیر کے محدوں (افیا کھے صوب بن زمیر کے الدم میں کا میراند بن زمیر کے الدم میں کا میراند بن زمیر کی طواحث حضوں نے بنی استم کے محدوں (افیا کھے صوب بن زمیر کے ا

توکیاایسی بعیت دافنی بوگی ؟ اورایساا جاع اسس اجاع کامصدان بوگا ... حس کے متعلق رسول نے فرایا تھاکہ :

"الانتجاتمع امتي عيلى الخطاء"

"ميري امّىت تمبى خطّا پرمجتّع نهوگ "

. خدا کے بیے ہیں تباسیے۔ آب ہی انفیات کیھیے۔

ښ

(لتبيرماسشبېسنخ گرمشت، كوملانا چا إسخا معذرسند ميں بيان كبا بنغا كه اگرميرے معانی عبارش ف مبین نرک نے کی وجہ سے جی ایم کا گھرانا جلانا چا ہا۔ تواسس سے متاحلتا واحقہ بہے مہی بیں اچکا ہے حب خود عرابین حظاب نے علی کے بیعت در کرنے کی وجہ سے سبدہ کا تھر کھے دیک دیناجا إسترستان اے طل وئن میں ذکر کیا ۔ ابو منف اے مقبل كے حالاسند میں مخصوص ابك كتاب لكمی ہے امس میں بہت نغیب سے اکنش زن كا ذکرکیاہے اسس کے آواز اورم کیرمٹہرست کے ٹوست میں محتقراً بیمجھے لی<u>سے</u> کرش وٹیل مافظ ابرائیم سے استے مشہور و مودون فقیدہ عربیب اسس کا ذکر کیا ہے ہے وقوللة لدلي فالهاعسمو اكرم سامعها اعظم بعلقيها حرنت دارك لا أنبتن عليك بها ان لم تبايع وينت المصطن فيها ماكان غيرابي حفى بقالكها امام فارس عدنان وحاميها · اوراکیب باست جو مل اسے عمر سے کی اسس بات کا سننے والاکس فذ رامع ز ڈ و محترم كفا اور بكنے والاكس فلر عنليم القدر كھا۔ اگر تمسے بعیت مذكى قويم كھارا گوملاکے رہوں گا۔ جانتے ہوئے کہ رمول کی دخر بھی اس گھریں ہے۔ مگر یں اسس کی وجہ سے ذراع برابر تم بر دحم شکر وں گا .ابوصف عربی اس باست کے كيت دا هے بي كوئى اورىنيى المفول نے يہ بات پورے خطرس (بانى المحصور ير)

(بقیره مسئیر صنوگر مشتر) کے مشہواد اور صلی حابی معفر منت علی کے دوبر دکھی ؟ تواجماع کے لیے الوبکر وعرکا پر سلوک وہا ہماں سے امام کے ساتھ ۔ ہما دے نزدیک وہ اجماع قابل حجت ہوتا ہے جو دائے امام کا کاشف ہو ۔ بیبال دائے امام کا کا نف ہو تا تو در کمنار جیب اجماع ہوا اور امام کو جس طرح مجبور کیا گیا وہ کہے سن چکے ۔ لہٰذا بیے اجماع کو آب بطور دلیل کیونکر پیش کر سکتے ہیں ؟

مكتوب مبرا

ا کفترست کے عکم کی خلاف ورزی کرکے جادہ صحبت پر بھست رار دہیں المندا آب سے ممکن ہوتو دونوں انہیں جی فرائیجان کا نفوم سینیم کاسٹنامجی اور شنے کے باوجود حصرست علی سے منح مت ہوکرجادہ صحبت پر برفزار رہنا ہی۔

جواب مكتوب

اكثرصحاب كى مبرست كے مطالع سے ہم اس بتي بريسنے بي كه و العوص برتب بى عمل بيرا بوت تف اورائفين احكام مبغير ربع مل كرت متع حبب رہ مربت دین کے متعلق ہونے تھے اور اخروی اموریسے بختص ہونے ۔ جیسے مكم بغيركا كدما و دمعنان ميں روزے رکھنے واحبب ميں ندکسی اورميبينے ميں آ منبل رخ مونا نمازی مالست میں صروری ہے زکہ ویجرمالاست میں بھی۔ یا بیغیر کا مکم که دن میں اتن نمازی واحب بی اور داست بی اتن بهرنماز کی اتی رکتیں ہیں اور نماز کا طرافیہ یہ ہے یا پینیبر کا حکم کہ ما ذکعبہ کا ساست مرسبه طوات كرنا مإشير بنوص أسى جيبي اور ديگرارستا دات واحكام پيغيرا جومًا لص أنزوى نفع سے مختص ہوا كرسنے ، ان كى تو وہ اطاعست كرستے ليكن بغيرك وهارشادات من كالتلق سياست سه مواكرًا جيب حكام واضران کاتغرر اسلطنت کے تواین وقواعد کی ترتیب و تدوین امورمملکست مما نظم وانتظام، فوجى كرتى ، كشكركى روانگى وينيره بيسي امور، ابسے اموري وه بينيم كاقوال وارسُدان كالعبين مزورى تأيين سمحة تحديد جلم مالاست میں معابق مکم بنج برکام کرنے کے پائندرسنام استے تھے ۔ بلکہ اپنی سویا مجد کوئمی دخل دسیلتے تلفے اور اپنی نظرو فکراورا جنہا دے لیے بھی گنجائش

باتی رکھنے۔ لہذا حب بھی انھوں نے دیجیا کہ منابست رسول ہیں ہماری قار و مزہت بڑھے گی یا ہماری حکومست کو نفع ہینچے گاآ نھوں نے نورا رسول کے حکم کولیس پشت ڈالا اور وی کیا جس سے ان کی مشان دوبالا ہو یا حکومت کو فائدہ ہینچ خالبا وہ اسی طرح رسول کو نوسٹ س کرنے اوراس کی رصاحا مس کرنے کی اسب ر

اخیں بہلن فالب بیا ہو جہا تھا کہ عرب والے علی کے سائے سر نہ حجہ کا بیں گے اور رسول النے ان کی خلانت کا جوا علیان کیا ہے تو وہ رسول اللہ بین گے اور رسول النے کی خلانت کا جوا علیان کیا ہے تو وہ رسول اللہ بین تر ابن گے کیونکہ علی نے راہ خدا میں انھیں الجھی طرح تہ تینے کیا ہے اور خدا کا بول بالا کرنے کے لیے اپنی توارسے ان کے خون کی ندیاں بہ بہمائی ہیں ۔ حن کی مدد کرنے میں ان سے ہمیشہ برمربیکار رہے میہاں تک گردکت روضدی کا فروں کی تمام کوسٹین را میکال ہوئیں اور خدا کا حکم فالب ہو کے دیا ۔ لہذا ان حالات میں جب سک عرب والول پر نے دو مرب کے دیا ۔ لہذا ان حالات میں جب سک عرب والول پر نے دو مرب کا مرب تا جاتے وہ علی کی اطاقت کا مرب تا جب کے دو جب کے طاقت کا مستقال ذکیا جائے میں سینے ہوئی کے سربی زحمہ کا بین گے ۔

اہل عوب کی عادست و فقارت ہیں ہے بات دامل سخی کداگران کا کوئی سخص متل کر دیاجا القوجیب کا اس کا انتقام نہ لے بینے چین سے نہ بیٹے ۔ زما ذہ بیم میں اسلام نے دمعلوم کتے کا فروں کا خون بہایا۔ ان معب کا انتقام وہ حصرت علی سے لینے کی فکر ہیں سنے کیونکہ رسول کے دبیا ہے اسے لینے کی فکر ہیں سنے کیونکہ رسول کے دبیا ہے اسکے میا کہ اندان ہیں سواحصرت علی کے کوئی مشیص ایسا متھا ہی نہیں جس سے ان تمام مبالوں کا بدلد لیا جا سکتا ۔ کیو شکم وہ خاندان میں سے انتقام میا کرتے متے وہ خاندان کے سب سے بہتر فرد اور ممتاز مسبتی سے انتقام میا کرتے متے

اور حصارت علی کل بنی باشم میں مسب سے بہتر بھی تقفے اور بعدر سول بے نزاع و اختلات افضل و متناز مجی تف ای وجسے اہل عرب آپ کے متعلق زمانہ کی گروشوں کے متفل رہے۔ تمام امور الدث بلیٹ کر دیے۔ آپ سے اور آپ کی اولاد سے بوری بوری کاوشیں دل میں رکھیں، آفتیں فی حماییں اور جو کیے ہوا وہ ساری دنیا جانتی ہے۔

نیز قرلیشس کو بالخصوص اورا ہل عرب کو بالعوم حصاست علی کی طرف سے ایک اور باسٹ کا بھی بڑا تم وخصہ بحقا اور وہ یہ کہ آ ہب دستمنا ان خدا کو سختی سے کچل ڈا ستے اور حین تخص صدود الہی سے تجاوز کرتا سیرمنت خداد ندی بر باد کرتا اسے آ ہب ور د ناک سزائیتے تھے۔ عرب واسے بر سجی ڈرتے تھے کہ اگر علی حاکم ہو گئے تو احجے کا مول کا برطی سختی سے حکم دیں گے اور بڑی باتوں سے روکئے ہیں بچرا بچرانش تد د کام میں لا بین گے۔

بری بول سے درسے پی پرو پرو سے در با پی کا سات اور کے درسے بی کا میں اور اندر کھیں گے ہم ایک سے عاولانہ سلوک کریں گے۔ ہم معالمہ میں سب کو برابر بھیں گے۔ ان سے کسی بات کی طبع ہی نہیں رکھی حاسکتی اورزکسی کی وال گلے گی۔ توست و طاف نند والے ان کے نزویک می مینیت و ذلیل رہیں گے جہب کک وہ ان سے حن نہ ومول کولیں اور حقیر و نا توال ان کے نزویک قوی و عربی ہول گئے ۔ خن نہ ومول کولیں اور حقیر و نا توال ان کے نزویک قوی و عربی ہول گئے ۔ جب بیک ان کاحت نہ ولوا دیں ۔

لبذا یس شخص کے آگے عرب والے کیونکر سرحمیکا الب ندکرتے۔ وہ عرب والے جوکفر ولفاق میں انتہاکو پہنچ ہوئے تھے بڑے سرگرم منافق تھے۔ میررا بکب دجہ یہ بھی کھی کہ قریش اور کل عرب مصرب عالی سے انتہائی حدد رکھتے تھے۔ ول میں جلتے رہنے تھے۔ خدا وند عالم نے اسب المونین کو حدد رکھتے تھے۔ ول میں جلتے رہنے تھے۔ خدا وند عالم نے اسب المونین کو

جوعنيرمولي شرمت بخشائفا بايس طور كه اميرالمونين علم وعمل مين (خدا و رمول کے نزد کیک) اس درجریر فائز شخص تک بڑے بڑے رہنے سکے برطب نام و مود والے محسدوم رہے، اپنے محصوص کما لاست و خصوصیات کی وجے خدا ورسول کے نزدیک آپ کو وہ منز ات مال مولی جس کے بیے ہردل س تمناین کرویش نے ری تھیں ، اس وج سے حسد کے بھیومنا نقین کے دلوں میں رنیکنے مگے اور کل فاسفین وناکتین و قاسطین وفارننین ک گئے کہ ہم مجد وہمان قرطے رہی گے۔ البذا جو مجھ نصوص بيغيم نارشاد فراح تعسب كوامغول في بيتت وال ديا اور اول تُعَلَّا بَيْتِ مِيت رسولُ أن كمبى كما أي نهوب

نكان ماكان مجالست أذكره

فظن خنيرأ ولانتسأل عن الخير

" جوبونا مقا وه بوا اب اس كاكيا ذكر آب اجيابى كمان

م کھیے اور کیا ہوا اس کو زیوجھیے "

نہ ہم سمھے برات اے کہیں۔ بسین پونچھے اپنی جبیں سے

نیزبهمی ایب وتبخی که قراسینس اور مبله عوب ول سے چاہتے تے کہ خلافت ہارے نبیاوں میں گھوئی مجرتی رہے ۔اس کی بڑی طبع انعیں تھی لہٰذا اکفوں نے یہ بہتن کر لی کہ دسول نے علی کی خلافسند کے لیے بیٹنے عهدوسيان كيم بسسب نوط ويعاين محكم اراده كرسيا كربانده ال كم على كى خلانسند كے بيتنے تول وقرار موستے بب سب كوشكسسند و ركيسند كرك راب كے للذا المول نے إلمانغان كراباك تمام نفوص بيغير فراموش

کر دیے جائی ، ایکا کرلیا کہ مجو لے سے مجی کھی ان نصوص کو یا د نہ کریں گے آئیں میں طے کرلیاکہ ہم خلافت کو نی سے مقرد کردہ جانتین اور معبن کردہ ولیعہد کے اتھ میں جانے ہی نہ دیں گے۔

لہٰذا انھوں نے خلانت کو اختیار وانتحاب پرموتوت کیا۔ الیکشن کے ذریعہ خلیفہ مغرر کرناھے کیا تاکہ جتنے تبائل ہیں ان میں سے سرفیبلہ کوخلافت پانے کی امید رہے سرفہ سوار اسب خلافت پرسواری کرسکے جاسے کچے ونوں

بعدہی مہی ۔

اگروہ لوگ نفوص بغیر کی بیروی کیے ہوتے ، رسول کا مکم مانتے اور رسول کے بعد حصر سن علی کومغذم سمجھتے تو الجبیب سے سمبی خلافت باہر جاتی بہت کی بدر حضر سن علی کومغذم سمجھتے تو الجبیب سے سمبی خلافت لازم وملزوم بنا چکے بختے ۔ قیام سن کے دان تک ارباب عقل وہوش کے بیر منوز عمل وزیا تھا۔ لہذا الجبیب سے خلافت نکلتی ہی نہیں اور عرب یہ بروامشت جہیں کرسکتے سنے کہ خلافت ایک ہی گھریں سخھر رہے تھوماً یہ بروامشت کی ہوس تھی اور مرفا ندان اس کا آدرومند تھا۔

نیز ہروہ بخص جس نے اُستدائے عہداسلام ہیں قریش وعوب کی تاریخ کا مطالعہ کیا ہے وہ اچی طرح جا نتا ہے کہ عوبی نے استی نیوت کے ایکے مرز حجکایا یسرور کا نتا ست (جو بنی اِسٹم کے جشم وجراغ تھے) کی نیوت اس وقت تک تنایم نہ کی جب ان کی دگ رگ تو اُن دی گئ ۔ جب تک کل قوست ان کی زائل نہ ہوگئ اور ساراکس بل نہ نکل گیا ۔ تو وہ یہ کیونکر پہند کرسکتے ہیں کہ نبوست و خلافست دو نوں کی دونوں بنی اِسٹم ہی ہیں مخصر پہند کرسکتے ہیں کہ نبوست و خلافست دو نوں کی دونوں بنی اِسٹم ہی ہیں مخصر

رہیں بنود مصرت عرف ایک مزنرع بالتُدین عباس سے بسلسل گفتاگو کہا تھا کہ عرب والول نے البند کیا کہ تھیں میں نبوت بھی رہے اور متحبی میں خلافت مجی۔ سلعند صالحین جوتنصان کابس ہی زمیل سکا کرمجبور کرسکے ا**ن اوگوں** کو نف کابابد بناین، وه فادری نه بوسے که زبر دسنی مکم رسول بران سے عل کرا كراي وه ورية تقرك الران سے مقادمت كى جاتى ہے توكبيں ير بركشت مهوماین ربهمی خومت نفاکداگران مالاست میں اختلافاست رسیے تو بڑ ۔۔۔ تنائج نه رونما بول درسول کی آنکه مبند بونے ہی دلوں کا کھوٹ آشکار ہوجیکا تقا۔ دسول کی عدم موجو دگی کے باعست منافقین کی شوکت اور زور کیم کری مقی کافروں کے نفرس سرکت ہو مجے تعے اوراد کان دین میں تزار ل بیدا ہوجیکا تخابسلان کے دل شکستند تھے اور بعد رسول ان کی مالست بالکل اس بھیر بکری کی طرع ہور ہی تقی جو جار اے کی تاریک راتوں میں بھیر لیوں اور وحشی درندوں کے درمیان سیکتی بچرے عوب کی اکثر جماعتیں مرتد ہو جی تقیں و وسرے لوگ مجى مرتد بومائے كالنبير كتيم حق - للمذان مالاست بس اميرالمومنين فريے كەنگرىيى دۇل كەموداين انىمىن يىنى ك جدوبېدكرنا بول تۇبلى تباپىمىيل کی پیسسلانوں کے دل کی وہ مالسنت شا فغین کا بطرمتنا ہوا وہ زور ، مارسے عنیا و عضب کے انگلباں ببارہے منعے، مرتد ہونے والوں کا وہ عالم ، کا فروں کی وه المحتنا بواطوفاك الفعار بهايرين كى مخالفنست پر كرسبند" حسنا المسسيلا و

ے علامہ ابن الی الحدیدمعتزل نے مشرع بہج البلاغہ جلدہ صفر ۱۰۷ پرایک واقعہ کے خن سی نقل کیا ہے نبرعلامہ ابن ا شربودی نے تاریخ کا مل مبلدہ صفر ۲۴ پریسے من عمر کے حالاست کے آخریں ذکر کیا ہے۔

منکم دذیو ... "م بی سے ایک امیر بواور تم بین سے ایک وزیر "کانعره بلندگرتے ہوئے ہٹ کے ایک طرف بلندگرتے ہوئے ہٹ کرایک طرف ہو چکے تھے وغیرہ وغیرہ لبندا دین کی مہودی کے خیال نے معبور کیا امیر المومنین کو کہ وہ مطالبہ خلا ننٹ سے دستبروا رہو جا بئ اور تمام معالمات سے کنارہ کش وہیں کیونکہ آپ کوا چی طرح نفین تھا کہ ان مالات میں اگر میں طلب خلافت کرتا ہوں توامست کے لیے برطا خطرہ بدیا ہوجائے گا۔ دین پر بڑی نباہی آئے گا۔ لہٰ فاکب نے اسلام کو ترجیح دی عامد الملین کی معلائی کومقدم رکھا اور انجام کو آغاز سے بہتر سے جے تھوے طافت کے ذراحیہ سے مطالبہ خلافت کے ذراحیہ سے مطالبہ خلافت سے باز رہے۔

آب کا طرز عمل دیجھنے کے بعدت حلیا ہے کہ کہ کس قدر النے نظر صائب الرائے منفے کیا ہے کہ اور الرائے منفی آپ کا اور علم منفی آپ کا اور عامة المسابین کی مجلال کا کس قدر دیال منفیا آپ کو اور کسی کو مجلال بابت کب نفسیس موائی۔

حصرت فازنشین ہوگئے اور مبعیت دکرنامتی ندکی اگرجہ آپ کے گلے میں ری باندہ کرآپ نے اختیار فرمایا لینے حق کی میں حق کی حق کی اندے کر آپ نے اختیار فرمایا لینے حق کی مفاظمت کے سہے اوران لوگوں پر خاموس مناج فرانے ہوئے حقول نے آپ سے دوگردانی کی اور غیرسنخنی اختوں میں زمام خلافنت رہنے دینا گوارا کیا اگرمیت کر لینے تو وہ باسند نہوتی ۔ لوگوں پر حمیت دنائم ہوتی ۔ آپ نے وہ طرز عمل اختیا رکیا جس سے دین پر آپنے مجی زانے پائی اور آپ کا حق خلافنت بھی محفوظ رہا ۔

دہ گئے خلفار تلانہ اوران کے ہوا خواہ ، تواعفوں نے بھی ان متام تصوص کی جوخلانت امرار مدین اسے متعلق شخص تا و لمیں کیں معانی بدے اورابیا کرنے ہیں وہی اسباب کارفر ما تھے جو ہم ابھی بیان کرملے ہیں اوران سے ابسا ہونا کوئی تعجب نیز بھی نہیں کیونکہ ہم ابھی آسیہ نے ذکر کرچکے ہیں کرچکے ہیں کرسے ہیں کرسے است کمان کا تقرد و نواین سلطنت کی تزتیب و تدوین ، امور مملکت کے نظر وانتظام کے متعلق بینے ہو کے جوا حکام و ذاہین سنتھ ان کی نا دیل کرنے اور ابنے اجنہا دسے کام بینے کے وہ کنتے خوگر تنجے عائب وہ خلا دنت ہیں عائب وہ خلا دنت ہیں میں جیز سمجتے ہی زہتے اسی وج سے سئل خلا دنت ہیں دسول کی مخالفت ان کے نز دیک امہیت ندکھی تھی۔

حبب تمام امور خاطر خواہ انجام پاگئے ، جو وہ چاہتے سنفے وہ ہوگیا، تو انفوں نے بڑی دوراندلیشنی کو کام میں لاکران نفوص کو محوکر تا میڑوے کیا اور جو شخص مجی مجوبے سے ان نفوص کا ذکر کرتا یا اشارہ کرتا تو اسس پرنشند دکر شنے مگئے ۔
پرنشند دکر شنے مگئے ۔

اور حبب نظام سلطنت کی حفاظت، دین اسلام کی است اعت کی و میر ہوا اور با وجود کی و بر ہوا اور با وجود ان تمام با توں کے ماصل ہونے کے وہ ہوا وہ وسس میں منبلاتہ ہوئے عین وعشرست میں نہ بڑے توانخیں بڑا طروع ہوا۔ بہت فار برا ہو گئی۔ عین وعشرست میں نہ بڑے توانخیں بڑا طروع ہوا۔ بہت فار برا ہو گئی۔ ولی اس ان کی محبت پیدا ہوتی میں ان کی محبت پیدا ہوتی گئی اور توگوں نے بھی ان کی دوستی پر ان نفوص کو محبلانا سے دع کئی اور توگوں نے بھی ان کی دوستی پر ان نفوص کو محبلانا سے دع کیا۔ وضنت پر دوستے دع کے۔

ان کے بعد بنی امیہ کے ہاتھوں ہیں زمام حکومسنت آئی۔ان کی غرمن اصلی نومنی ہی کہی کرکسی طرح المہدیسن نیسنٹ وٹا ہو رمول ران کا با مکل ہی قلع قبے کردیا جائے۔ظاہرہے کہ انتھوں نے تصوص کو نیا منسیّا کر دینے کے لیے کیا کچھ نہ کیا ہوگا۔ مگر باوجو د ان سب باتوں کے ہم تک صریحی نصوص اور حیسے سنن واحادیث بہنچ کے رہے ۔ انفین میں اگر خور کیا جائے ، انضان سے کام لیا جائے تو دہی کانی ہیں ۔

مكتؤب منبرا

وہ مقامات جہاں صحابہ نے ارمثادات مینیٹر کی مخالفت کی

آب کا فازش نامروصول ہوا ۔ یس جس امرکوستبعد عجمتا مفاآپ نے معروا ناطور پر ممکن ناست کرد کھایا اورایسا واضح نقشہ کھینے کرد کھا دیا کہ جیس درہشت میں پڑگیا ۔ یس تو یسجھتا تفاکہ آب نابت ہی ذکر پایش کے کامش آب ان ہوانع کی طوف اشارہ بھی فرما و بیتے جہاں صحابہ نے تفوص مبغیر ہوگا خلافت ورزی کی درسول کی باست نہانی "ناکہ حقیقت اجھی طرح منکشف مہوماتی اور ہایست کا رسست بخری واضح ہوماتا .

س

جواب مکتوسی

واقتدمست مطاس

وه موافع جہاں ارشادات بہنی برکی مخالفت کی کی انصوص بینی بر بھل ندکیا گیا ہے شار ہیں بہنے ان کے بیخب شنہ کے دن والا حادث مغلی کا مظر من مراتبے جومشہور ترین نفنیوں اور حت مصیب توں ہیں سے ایک ہے ۔ جسے ارباب محام اور کل اصحاب بنن نے بیان کیا ہے اور تمام اہل سیر مورمنین نے نقل کیا ہے صوب بخاری کی روابیت آب کے لیے کافی ہوگ ۔ مورمنین نے نقل کیا ہے صوب بخاری کی روابیت آب کے لیے کافی ہوگ ۔ موابیت کرتے ہیں ۔ اکفوں نے ابن عباس سے دوابیت کی ہے ابن عباس کینے ہیں کہ:

"جب رسول کے انتقال کا دفت قریب بینجا اور دسول کے گھر میں
بہت سے اشخاص تخصے جن بیں محضرت عمر بھی شخصے رسول کے
فرایا: میرے پاس آؤ ٹاکہ بیں بخصیں ایسا نوشتہ لکھ دوں کہ
میرسے بعد تم مجی گراہ نہ ہو۔ اسس بیر عمر بولے کر رسول پر
در دکا غلبہ ہے اور بخصارے پاس کلام مجید موجود ہے
ہما دے بیے کتا ب خداکا فی ہے۔ اس برگھر ہیں جو

لوگ شخصان بین اختلات ہوگیا آئیں بین حمیگونے نکے بعق کہنے تھے کہ قام و دواست رسول کے قریب کر دو کہ رسول ایسا نوست ناکھ دیں کہ مجر نم کمبی گراہ نہ ہوا دربعن حضرت عمر کی ہم نوائ کردہ بے تھے حبب تکارا در حین اسٹ زیادہ بڑھی تو رسول انے فرایا کہ تم میرے پاس سے اسٹ مباوّی "

مسادی مقیبست بہ ہوئی کہ نوگوں نے باہم اختلات کو کے شور دغل مجاکر دسول کا کو وہ نوسٹ نہ نہیں مکتف دیا ہے بہ مدین وہ ہے کہ اس کے موجود ہونے اورصحت میں کسی متنم کا شکس وشبہ کیا ہی نہیں ماسکتا را مام مخاری نے اپنے صبح بخاری میں ایک مگرمنیں منغد دمگہوں پر ذکر کیا ہے۔

امام سلم نے میجی سلم باب الوصابا کے آخریں درج کیا ہے۔ امام احد خواہنے مندیں ابن عباس سے اس حدیث کی روابت کی ہے۔ نیرح العاطاب معلی وارباب رسنس نے اس حدیث کو درج کیا ہے گران سب نے الغاطاب تھرف کردیا ہے بعہوم ومعنی تو اکیب ہی رکھا ہے مگرانفاظ بدل دیے ہیں کہوں کہ اصلی الغاظ جھزت عرکے یہ تھے :

"انالسنى بهجر..."

سکه میخمسسلمجد ۲ صفوبها سخه مسسندملد ۱ صفح ۲۲۵

العصيح كارى باره اول صغر ٢٢ مكتاب العلم نيراور ديكر مقامات

" رسول" بزيان بك رہے ہيں !

کین محدثین نے بجائے اس کے بہ بیان کیا کہ رسول پر ورد کا غلبہ ہے۔ یہ اس میے بیرائے ہیں دہ ہے اور حضرت عرکے ہسس می بدید کا جدا ہا سنت ہوتی تھی اس میں کی ہوجائے میرے اس بیان مجدا ہے وہ دوا ہا سنت ہوتی تھی اس میں کی ہوجائے میرے اس بیان پر وہ روا ہیت شا بہت جے ابو بکرا حدین عبدالعزیز جو ہری نے کتاب اسقیف میں بسلسلہ اسنا وجناب ابن عباس سے نقل کیا ہے (مشری ہنج البلا عدا بن ابی الحدید معتزی جلد ہ صف ۲۰)

ابن عبامس درات بي كه:

" رسول کی وفات کاجب و نت مہنا ۔ گریں بہت سے لوگ موجود منظے جن ہیں حصرت عمر سجی سخے تورسول سے فرما یا کہ میرے پاس دوات اور کا غذ لاو کہ بیں مخبین البیا نوشند لکھ دول کماس کے بعد تم ہرگز ہرگز گراہ نہو۔ یہ سن کرمطزت عمر نے ایک فظرہ کہا جس کا مطلب یہ تھا کہ رسول پر در دو کا غلیہ ہے اس کے بعد حضرت عمر نے کہا کہ ہم لوگوں کے پاس قرآن موجود ہے ہا ہے ہوگیا۔ باہم تکوار ہونے لگی بعض کہتے تھے کہ قام دوات رسول ہو کو دیے دو کہ آب نوشند ماکھ دیں اور نعجق حضرت عمر میں بن اختلا کو دیے دو کہ آب نوشند ماکھ دیں اور نعجق حضرت عمر میں بن کم میرے باس سے الحق عالی اور آکھز تنائے فرا یا کہ میرے باس سے الحق عاؤ ۔ "

اس مدیث سے آب کو مراحتاً یہ بات معلوم ہوگی کہ مصرت عرفے رسول

کوچوجواب دیانظاس کے اصل الغاظ محدثین نے ذکرتبیں کیے بی باکس کا مطلب دمنہوم بیال کیا۔ اس کا بوست اس سے میں سکتا ہے کہ محدثین سے دوسرے موقع برجہاں جواب دینے والے کا نام ذکر نہیں کیا وہاں جواب کے اصل الفاظ بيان كردسيم بي - جنائي امام مجاري صيح سنجاري باره اصعنه ١١٨ -متاب الجهاد والسيرك باب جوائز الوفدين روايت كرت بي كه: « ہم سے فٹیصہ نے بیان کیا کہم سے بن عینید نے سلمان احول سے انھوں سے سعیدین جبسرسے انھوں سے اس عما سے نقل کرے بیان کیا ابن عباس کہتے تھے : پیچشنبر کا دن ا ہے وہ کمیا دن تھا پیجٹننبرکا! یہ کہہ کراتنا روئے کہ ان کیے آنسووں سے زمین نرہوگئ - بھرکہا کہ اسی پنیٹنبہ کے دن *تو* کی از تین بہسند بڑھ مگئ تھی ۔ اسخصرت اسے فرایا کہ میرے پاس کاعذ لاز که می مخصی نوسشته مکه دون تاکه بهر کسی تم گراه نہ وسکو۔اس بر لوگ جھگر سنے لگے حالانکہ بنی کے یاس حفر ا مناسب بنیس ، وگوں نے کہا کہ دسول بے مرود و بک رہے میں اس يرا الخضرست فرايا: محصمبرے مال يرميور دو بين جس مال بس بول ببترب اس مصحب ك طرف تم مجھے مملا وسےمو، اور الخفرسد مے مرے سے بیٹر بین وسیس فرماین -ایس تر به که مشرکین کو جزیره عرب سے نکال باہر ممردَ اور و فدنجيجين كا ملسكَ إسى طرح باتى دكھوجس طرح یں بھیجاکرٹا بخفا۔ابن حباسس کھتے ہیں کہ تبسری وصیتے

نه تبيري بان جيه فراد مش كرد يا كيا وي إست متى جيه بليم وتست انتال اوشترى (باني أنكامغرب)

ين محول كيا "

اس مدیت کوامام سلم نے بھی جے سلم کتاب الوصیت کے آخر میں درج کیا ہے ۔ امام احرف اپنے سندمیں منجاد احاد بیت ابن عباس نقل کیا ہے نیز تمام محدثین نے اس کی روابیت کی ہے ۔

امام الم تعمیم کے کتاب الوصید ندیں بواسط سعید بن جبیر ' ابن عباس سے ایک دور رے طریق سے روایت کی ہے ۔ ابن عباس کھتے تھے: " پنج نبنہ کا دن الم اسے وہ کیا دن تھا پنج نبنہ کا! "

بهرآب کی آنکھوں سے آننو بہنا مقروع ہوئے اور رضاروں بر ایوں بہت و بیکھے گئے جیسے موتی کی لوای ہو۔اس کے بعد ابن عباس نے کہا کہ:

«رسول منے ارسف و فرمایا : میرسے پاس دوات کا غذ یا وقت کو و دوالے لاؤ ۔ میں مخیب ایسا توشقہ لکھ دوں کہ اس کے بعد بھے کہم گراہ نہو۔ تو لوگوں نے اس پر کہا کہ رسول میں نہو۔ تو لوگوں نے اس پر کہا کہ رسول میں نہوں ک

صماح ستدين اس معيب ت عدما حول برنظرد وراً اي تواب كومعلوم

⁽بنیماسشیمنرگرشند) مورسیس مکوجانا جائے تھے تاکداست واسے گرای سے معفوظ دہیں۔ بینی برالمومین کی خلافست ، لیکن سباسی شاطروں نے محدثین کو بجورکیا کہ وہ مسس چیزکو جائنے اور مجھے ہوئے بعول جائیں مبیا کہ منتی صغیر نے مراست کی ہے۔

لته صيح مسلم عبدم مفح ٢٩٢

کے اس مدیرت کو اینجیں الفاظ میں الم ما حد سے صفحہ ہ ۲۵ پر دوایت کیا ہے ان کے علاوہ ادر بچی اجتماع کے استحداث کے علاوہ ادر بچی اجتماع کے اس سنند شونقل کمیا ہے۔

هوگا کیبیب لا ده پخف جب اس دن آواز بلندگی که رسول اندیان بک رہے ہیں وہ حصرت عمرتنص الخبس فيصسب سيميلي دسول كم متعلق برجمله كمها وان مح بعد مامنزييس جوسم خبال افراد موجود تصامضول نعصرت عمرى مم نوال كي-آب ابن عباس كايه نقره بيلي مديث بي من مكي بي -

> و گھر ہی جولوگ کوجو دینھے آلیں میں ٹکار کرنے لگے بعض کہتے تھے كرسول كي إس نلم دوات لادو اكرسول به نوشته لكه مائي كه اس کے بعد پھرتم تہم گڑاہ نہ ہوا وربعق حصرست عمرکی موانفتست

يىتى دە مى يىكىدىپ ئىن كەربول نىيان كب رىيىس ـ

ایکسے دومری روابیت ہیں ہے جوطرانی نے اوسط میں مفزمشے عمرسے روایت کی ہے حصرت عرفرائے تھے کہ :

محبب رسول بمار موسئة وأكب ف فرمالي كم ميرے إس كا غذ اور دواست لاؤ، بس البها نوشته كاكه دول كه اس كے بعد تم كمجى گراہ نہ ہو۔اس پر بردے کے سیجے سے عور تول نے کہا تم سنتے نہیں کردسول کیا کہ دستے ہیں ۔

حفرت عمر کہتے ہیں کہ:

"اس برين بولا كه نم يوسعت والي عورين بوحب رسول ميا ر يرت بي ايى أنهي تورطائ بوادرجب تندرست رہنے ہيں

ہے چیریخاری نے عبیدانٹرن عبدی مسعودستے انھوں شے ابن عبامسس سے روابیٹ کمباسے اورامام

مىلم دخيروشىعى ك دابىت كى ہے ۔ سے محتزانعال مبلد ۲ صغر ۱۳۸

ا و گردن پرسوار رسی موساس بر رسول سے فرمایا: کو عور توں کو مبائے وہ یہ میں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں مبائے وہ بہتم سے نومبہ نرہی ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ملاحظ فرمانے میں کر میاں صحابہ نے ارشاد سینیں کو نہیں مانا ۔ اگر

مانے ہونے تو گرای سے بہنشہ کے لیے مفوظ ہوجائے کاش صحابی کرتے کہ دسول کی بات الل جانے ندا نے لیان دسول کو برسو کھا جواب تو ند دیتے کہ دسول کی بات الل جانے ندا نے لیکن دسول کو برسو کھا جواب تو ند دیتے کہ دیسے بنا کت اب الله ہ " ہما دے لیے کتاب خدا کا بی ہے گا سب خدا کا بی ہے کہ کا سن نقر مصور کہ ہوتا ہے کہ معاذال ترجیبے دسول ما سنتے ہی نہ تھے کرکتاب خدا کے مساما نوں کے دیے کیا حیث بیت کھی ہے ؟ یا معاذال تربی محابہ کتاب خدا کے تواص د فوائد دسول سے زیادہ ما سنتے ہیں ۔ اس کے دموز دا سرار سے زیادہ وانعن ہیں کاش اس برہی اکتفا کر لیتے ۔ اس محدمی آکر باز رہ ملتے صرف

یہی کہ "حسس بنا کست اب املاہ "کتاب خدا ہمیں کا نی ہے ۔ یہ کمہ کرکر رسول گا ہمان بکس دہسے ہیں رسول کو صدمت ناگہانی تو زہینجیا نے ۔ رسول چند گھرط ی سے جہان تنجے آپ کا دم والبیس تھا! ایسی حالت میں بیدا یوارسانی کہاں تکس

ناسب بنی ؟ کیبی بات که کررسول کورخدست کردہے گئے۔
اورگو باسعوم ہوناہے کہ (جس طرح انضوں نے کتاب خداکو کانی سمجھتے
مے دسول کے ارشار کو تھکا دیا ای طرح) انضوں نے کتاب خداکا بہانگ دہل باعلان بھی نہیں سٹنا کہ رسول جو کہے کمٹیب دے دیں اس کو لے اوار جس سے منع کریں اس سے بازر ہو۔

اوران کے یہ کہنے سے کہ رسول نہیان کی دہے ہیں بریمی بنہ جلتا ہے کہ الفوں مے خلاکا یہ ارمث د برط صابی نہیں :

الاست لقول رسول كسرسيم ذي فوق عمند ذي العوش

مسكين مطاع منع اتمين وما صاحبكم بمعجنون المسكين مطاع منع المين وما صاحبكم بمعجنون المسكين أن أيك معزز فرشند جبرتيل كى زبان كابيغام ہے جوبڑا فوى بحرش كے مالك كى بارگاه بين بلند مرتب ہے دہاں مسب فرشتوں كاسر دار واما نت وارب منارے مائنی محد دیوانے نہیں ہیں یہ اور مكے والو متفارے سائنی محد دیوانے نہیں ہیں یہ بین یہ بیتر یہ ارسٹ داہی :

" انسه لقول رسول كرميم وماهو بتول شاعر قليسلاً ما تؤمسون ولا بتول كاهن قليبلاما ت ذكرون شذيل من رب العالمان "

" بے شک یہ قرآن ایک معزز فرشتہ کا لایا ہوا پیغام ہے اور یکی شاعر کی تک بندی تہیں ۔ تم لوگ توہبت کم ایمان لا سے ہواور ندکمی کابن کی خیالی است ہے تم لوگ توہبت کم عور کرتے ہو سارے جہان کے پروردگار کا نازل کیا ہو ا کلام ہے " نیزارست اداہی ؛

« ساحن صاحبکم وسا عوی وسا بنطق عن الهوی إن هدو الآ دسي يوسی عسلمه شدبدالغوی و الهوی إن هدو الآ دسي يوسی عسلمه شدبدالغوی و متمارے رفیق محکر نر گراه بوست تربیک اور وه توا بیش نفسان خواسش سے کچے لوسنے ہی نہیں یہ نوبس وحی ہے جو بیمی جاتی ہے ان کو برلمی طافت واسے نے تعسایم وی ہے وی ہے دی ہے ۔

نیزای طرع کی اور دوسری واضع ادر رکوششن آنیس کلام مجید کی جن مبیس صاحت صاحت تقریج ہے کہ ہرمہل دہے ہودہ باست کہنے سے دسول م پاک وپاکیزم ہیں بھیسے انھوں نے کہ میں پڑھی ہی نہیں ۔

علاوہ اس کے خور تنہا اور فقط عنل مجی دسول سے بہل اور بے ہودہ اتوں کا صادر ہونا محال والم مکن محبتی ہے لیکن اصل باست توبہ ہے کہ صحابہ المجی طرح جانتے محفے کہ دسول خلانت کی بات کو اور کی کرد بنا چاہتے ہیں آب نے ابھی تک حصرت علی کے خلیقہ وجائٹ بن ہونے کے متعلق جلنے اعلانات کیے بی ان کی مزید تاکید مفصود ہے لہٰذا ایسی بات کہد کردسول کی بات ہی کاف دی جیسا کہ خود حصرت بحرے اپنی زبان سے اس کا افرار واحترات کیا ہے ۔ اس موقع برحب ان بیں اور عبدال تدبن عباس کے درسیان خلافت کے متعلم برگفتا کہ حجود می تھی ہے۔ برگفتا کہ حجود می تھی ہے۔ برگفتا کہ حجود می تھی ہے۔ برگفتا کہ حجود می تا میں اور عبدال تدبن عباس کے درسیان خلافت کے متعلم برگفتا کہ حجود می تھی ہے۔

اگراپ رسول کے اس قول بر کہ میرے پاس قلم و دات لاؤ تاکہ بیل بیا نوسشته لکے ماؤں کو اس کے بعد مرکز نم گراہ نہو" اور صریب تقلین میں رسول کا

کے اس فقرہ پر کہ: میں ہم میں ایسی چیز ہی تھوڑ ہے مباما مہوں کہ اگر نم ان سے سنسک تیکر میں ایسی چیز ہیں تھوڑ ہے۔ مباما مہوں کہ اگر نم ان سے سنسک

ربوتو کمجی گراه نه جو - ایک کتاب خدا دومرے میری عترت " ان دونوں فقروں پر آب نظر کریں تو آپ پر بیع فینفنت ملکشف جو گی که دونوں حدیثوں میں رسول کا مفصود ایک ہی ہے - ایک ہی مفهوم کو دونوں حدیثوں میں آپ نے بیان کیاہے -

عه شرح بنج الباغد إن إلى المدير معتزل مبدس صغر بهم ا

پیغمبر نے زبر دستی نوشتہ لکھ کرکیوں ہنسیں ڈالا ؟

اور سیک رسول مے حالب مرض میں کاغذ و دواست جومان گانفا وہ اس بین کے بیان کا نفا وہ اس بین کا میں ہو چیز است کے بیان واجب بتائی می اسس کی تفصیل تحریر فام دیں ۔ اب رہ گئی یہ بات کہ رسول نے ان توگوں کے اختلافات کی پرواہ نرکرتے ہوئے نوسٹ تاکھ کر کیوں نہیں دیا ، لکھنے کا ارادہ کیوں ملتوی کر دیا ؟

اس کاسبب وہی نفرہ تھا حصرت عراوران کے ہوانوا ہول کا جیے بول کران لوگوں نے رسول کو دکھ سینجا یا تھا۔ میں نفر من کررسول سے ا داده بدل دیا نه لکھا وہ نوسشتہ کیونکرائے سخست جلگہ کے بعدنوشتہ ککھنے كاكوئى فائده بى زيخا يسوا اس كے كدا ورفتنه وضا دبريا ہوتا -اوراختلافات اور برصتے رسول کے مکتھنے کا کوئ فائرہ ہی نہ ہوتا کیونکراب اگر دمول کھتے ہی نوائب کے نوشتہ کے ستلق لوگ کہتے کہ اس نوشنہ میں بھی تودمول مسنے ندیان ہی تخربر فرا باہے جس طرح ہے کہنے ہرکہ میرے پاس وواسن کا غذالادُ بیں ایسا نوشت لکھ ماوں کراس کے بعد میر مبی گراہ نہو ؛ لوگ میگر شنے لگے۔ ان بین تکرار ہونے مگی اور زمول کی آ محصوں کے سائے خوب شور وغل مجا۔ اوردمول اس وتنت کچے ذکرسے مرف انٹاکبہ کر خاموش ہو گئے کہ میرے پاس سے اٹھ ماؤ اوراگردمول بھی اڑجائے اپی باسٹ پرا نوشتہ لکھ کر رہتے تواٹھیں اور می صدم و ما آل اور زبا دہنی سے کہتے کہ زمول سے جو کھے لکھا وہ ہمان ہے ادران کے بیٹے بٹے رسول کے ملحے ہوئے کو بدیان ناست کرنے میں ابرط ی جو اُن کازدر دیگا دیتے ، اپنی کتابوں ہیں ایکھنے ، تاریخوں ہیں بیان کرنے ، غرمن رسول کا کے فوشت کی دھجیاں اُڑا دیتے ، تاکداس سے کوئی کام ہے ہی ذسکے ۔

ای وجہ سے حکیم اسسلام کی حکمت بالغہ نے چا ہا کہ اب نوشنہ کا ارادہ ہی ترک کردیا جائے۔ تاکدرسول کے سنہ آنے واسے ادران کے حوالی موالی آپ کی نبوّت میں ملعن کا دروازہ زکھول دیں ۔ خداکی بناہ ۔

اوردمول بہ جاننے تھے کہ علی اور علی کے ووستداراس نوشند کے معنون پر مہرحال عمل کریں گئے ہیں جا ہے مکھوں چا ہے نہ نکھوں اوران کے علا وہ جوہیں وہ اگر میں نکھ بھی جا وُں ننب بھی نہ ما ہیں گئے زاس برعمل کریں گے البخا ان مالاست میں حکمت کانقا منہ بھی تھا کہ آ ہاس کا خیال ترک کردہی ۔ کیونکہ سوال کا غذ و دواست بہا ہیا جا تکا ہ جواب پا شے کے بعد مھی نوشتہ لکھنے کا کوئی اثر ہی پیدا نہ ہوگا۔ سوا نستہ و ضاد کے۔

٣

مكتوك مكبر٢٢

وافغرقط ساس برعذر فمعذريت

مث بدا تحفرت نے میں وقت مستلم ودوات لانے کا حسم ویا مقا اَب کوئی چیز لکھنا جاہتے ہی نہ نقط بلکہ آپ محض اَ زمانا جاہتے تھے اور کچے مفضود نہ تفا اور صحابہ کی مجھ ہیں یہ بات نہ آئی مگر حفرت عمر مجھ کئے کہ رسول اور تعنیفت ہم لوگوں کو جانج ناچا ہتے ہیں لہذا ایھوں نے قالم و دوات لائے سے صحابہ کوروک دیا ۔ لہذا اس بنا برح صفرت عمر کی مما نعت منجلہ ایپ کی توفیقات ربا نہ کے سمجھنا چا جئے اور ایپ کی محضوص کرامات سے شار کرنا عباستے ۔

بعن علما تاعلام الربي جواب دياب كين انصات برب كرسول

کامن رمانا: لن تصنلوا بعدی " میر بدکسی گراه نه درگے" اس جوا ا کو بننے نہیں دتیا ۔ کبونکہ یہ فظرہ حکم سنجی کا دور اجواب ہے مطلب بیکہ اگر تم کا غذو دوات لاؤگے اور میں محقارے لیے وہ نوشتہ لکھ دول گا تواس کے بعد تم گراہ نہ ہوسکو گے اور یہ امریخی نہیں کواس قسم کی فہر بیان کرنا محق امتحان واختیا رکے لیے ب کھلا ہوا جھوسے ہے جس سے کلام انبیار کا پاک ہونا واحب ولازم ہے ۔ خاص کراس موقع پرجہاں تلم و دوات کا لانا بہتر خفا بہ نسید نہ لانے کے ۔

علاوهاس کے بیجواب اور مجرکی وجہوں سے معلِ نامل ہے البلا یہ جواب توصیح نہیں کھے اور عذرت سی کرنا جا ہے . زیادہ سے زیادہ جواب میں یکہاماسکتا ہے کہ رسول نے کاغذ و دوات لا سے کا جومکم دیا توبیعکم متبائی منردری واه زمی ندیخاکداس سے متعلق مزید وضاحست جاہی ہی ندماسکٹی ، د د باره پوهیا ی نه ماسکتا کفا - بلکه به مکم شوره کا مکم کفا اورابیدا برابر بوا كصحاب دسول كم يبعض احكام بي ووياره يوجه بباكرنے تھے عزيداستھواب كياكرت تصخصومًا حضرت عمرتواور زياده ،كيونك الخيس افيتم متعلق به يفين تقاكدوه مصالح وبهترى بيجا ينتصي مونق للصواب بس ميراطن تخين غلط نہیں ہونا۔ خداکی مباسب سے ان برالہام بھی ہواکرتا متھا ۔ حصرت عمر نے جا اِکہ دسول م کو زحمسند زا طھانی پڑنے کیونکہ دسول مہینے ہی مرت سے نعب میں تنے اگر فکھنے کے لیے اُکھنے منتنے تو تعب اورزمادہ بڑھ مباتا۔ اس بیے آپ نے یہ فعزہ کہا۔ آپ کی رائے بیمنی کہ دواست کا غذ نہ لانا بی بہترے حصرت عمر یہ بھی ورتے ستے که رسول کیس اسی ایش نه مكمد و البي حكر الله عاكم زين ومول ك كلف كو يوا نركسكين

ادراس سبب سے سنجی عقوب کے بین کہ رسول ہو کی لکھ جاتے وہ نو بہرمال مفوص اور نظمی ہوتا۔ اجتہاد کی گنجا کشس اس بیں نہوتی یا شاید حصرت عمرکو منافقین کی جانب سے خوت محسوس ہوا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ منافقین رسول مے نومن نئے برمحترص ہوں۔ اس کی قدم کریں کیونکہ وہ نومن نہ مرمن کی مالسند ہیں لکھا ہوا ہوتا اور اس وجہ سے بڑھے فئٹ و ونساد کا ہاعث ہوتا اس بیے حصرت عمرے کہا کہ ؛ حسب بنا کتاب ادالت "ہمارے بیے کتاب فعا کانی ہے یہ کیونکہ خود خدا و ندعا لم نے فرایا ہے :

« مسافئرطنا في الكنتاب من شيءً »

" ہم نے کتاب میں کو لی چیز نہ جیوٹری جو میان نہ کر دی ہو ؟ نیر بیمجی ارمشاد ہوا :

" السيوم اكسعلت لكسع دبيشكع "

" آن کے دن ہم نے دین کو متمارے بیے مکمل کیا !

غالباحضرت عمرکوا بنطور براطینان تقاکدامت توگراه موبی نهین سکتی کیونکه خداوندعالم دین کوکامل اورامت پر اپنی نغست کا اتمام کرجبکا ہے نهذاحیب است کی گرامی کا خوصت ہی ندیخا تواسب لوشتہ بکھنے کی صرورت ہی کیا تھی۔

یه ان نوگوں کے جوابات بیں اور بیجس قدر رکیک ہیں وہ آپ سے
پوشیدہ نہیں کیونکہ رسول کا یہ فقرہ کا متعنوا معدی "تاکہ تم گراہ شہوہتا تا
ہے کہ آپ کا حکم عمر فقلی ، حکم لازمی مقا کیونکہ ایلے امریس جو ضلالت
سے معفوظ رہنے کا ذریعہ ہو قدرت رکھتے ہوئے مرمکن عبد وجبد کرنا بیٹک و
شبر واحیب ولازم ہے۔ نبر آ مخفرت پراس فقرہ کا ناگوارگزر تا اور حضرت

عمرونیرہ کے اس جملہ کا براما ننا اوران نوگوں کے نغیبل مکم نہ کرنے پر آپ کا ارتثاد فرمانا کدمیرے پاس سے اُنٹھ جاؤیہ مجبی ولیل ہے کہ آپ نے دوات و کا غذلا نے کا جومکم دیا دہ حکم واحبب و لازم تھا۔ بغرض مشورہ آپ نے منہیں فرما پائتھا۔

اكركوئى كيرك نوشته لكصنا اكرابيابى واحبب ولازم تفا تومحفن جيندلوكون کی خانفت سے آپ سے نوسٹند مکھنے کا ارا وہ ترکے کیوں کر دیا جرط سرح كافرين آب كتبيع اسلام كم مخالعت متع مكر كجركمي آب تبليغ سے إنه ته رہے ای طرح اگر کیجہ لوگٹ کا غذو ووات لائے کے مخالف تھے تواب نے ان کی مخالغت کی برداه نکرنے ہوئے توسٹ تنداکھ کر کیوں نہیں دیا تو میں کموں گا كرأب كايدكهنا تطيك يمي مونوزياده سهزياده نيتجديه نكلتا ب كرنوسشة کا لکھنا دمول بروا جب نہیں تھا لیکن دمول مرلکھنا واجب نہونے سے کب عزدری ہے کہ ان لوگوں پر درسول کا حکم ماننا اور کا غذو دواسند کا الما بهی واحبب ندیخها بهوسکنا ہے کہ نومشنز کا لکھنا دمول پر واحبب ندر ہا ہو مگران ہوگوں پر دواست و کا غذ کا لانا واجبب والازم ہوجبکہ رسول نے کا نے کا حكم دبائقا اوراس كافائده مجى تناديا تفاكه كمرابي أس مهيندك بير بي نوت ہومائو کے ادر بہبینہ رام ہرا بین پر باتی رہو کے کیونکہ نی انوا قنع امرکا وجوب مامورسے منعن ہونا ہے دکہ آمرسے حصوماً جبکہ امرکا فائدہ مامور کو بہنیا ہو لنزائجت بيال يه ب كدان لوگول ير امركامجا لانا واحب تفايانبين رول نهان وگون کوکاغذ و دواست کا جومکم دیا کھا تو کا غذو دواست کا لانا ان الوگون برالازم تفا يا نهب معلى بحث يانبين كدومول براكصا واحب تفا يانبس ۽

علادہ بریں بیمجی ہوسکنا ہے کہ اکصنارسول پرتھی واجب متعالیکن لوگوں ک مخالعنت اور رسول کاکما زمانے اور بر کہنے سے کدرسول نبریان بک تہے میں درسول سے وجوب سافظ موگیا ہو کیونکہ رسول اب مکھتے بھی توسوا نتنه ونسا دے لکھنے کا اور کوئی فائرہ نہ ہوتا۔ للبذاجوچیز باعث فساد مجوجس سے فتند بریا ہوجانے کا ڈرہواس کاکڑا رسول پر واحب کیسے ہوگا؟ بعص معزات نے یہ عدر می بیان کیا ہے کہ معزمت عمر مدیب کا مطلب نسمجے ان کی مجے میں یہ بات نہ آئ کہ وہ نوسٹ تدامت کے مرفرد کے لیے مرای سے بجینے کا ایسا ذرامیہ کیونکر مہو گاک قطعی طور برکوئی گراہ ہی نہ ہوسے بلکہ حصرت عمرسول كاس علم سعك لانصلوا " تم كراه زموك " يطلب میمے کر فاسب کے سب کل کے کل گرای پر محق نہ ہوگے اور نوسشنہ لکھنے کے بعد کسی ایک فرد ایں می گرائی سرامیت ذکرے گی اور معزمت عمریہ سیلے ہی ما سنتے سننے کرامسنت مہمی گراہی پرمجنَع ندہوگ اسی وجہ سے آب نومسٹنڈ کوسیکار ميجه اورينبال كباكربول كالومشة ككصف مقفود مرب مزيدامتباطب اور کچینبس کیونکراب مجم رحست واقع ہوے ہیں اس سے آب کارچم وکرم چاہتا ب كرجهان تكسبوسك ان كمرابي ت معنوظ رست كيا منتباطي تدابير کردی جایش بیری مجه کرمفزست عرف آب کو و جواب دیا . برط کرے که يه دمول كا مكم وأجبى مكم نهبيرً بلك دحم وكرم كى وجه سے ايسا فرما رسيے ہيں -حصرت عمر ک اس تیزی اور ملد بازی کی معذرست بین یبی باتی میان کرگئی مگروا فعد ہے کہ اگر نظر فائرسے دیجھا جائے تو برسب کے معب رکیک۔ و فهل بي كيونكدرسول كاير فقره الانتصالواسعدي تأكرمبر بعدتم كمراه نه ىرو ، خود نبانا سېے كە امرايجا بى كھا ندكە كېھاور ـ اور دمول کا ان لوگول برعفتس ناک بردنان سے رئجب دہ ہونا میہ دلیل ے کھار نے ایک امروا حب کو ترک کیا الندا سب سے بہتر ہوا ہے کہ بیروا قعہ درحقیقت ان صحار کی سیرست کے نامناسب تھاا دران کی ثنان معد بعيد متصاريد أيك لعزش متى حوبهو كنى أور ناكبانى باست متى جوسينيس آلى-

جواب مكتوب

عذرفه معذرست فليح تنهيب

آب کے جیسے اہر علم کے میے میں زیبا ہے کون بات کبیں اور در باست زبان سے نکالیں ۔

واقترضيس كمصنعان أب كعاماراعلام كالاوللات واعذارب ك آب نے اپنے مكتوب ميں ترديد كى بے توان تاويلات واعلار كى ترديد میں اور میرہت سے گونتے باتی رہ گئے میں جی جا ہتا ہے کہ انھیں بھی عومن کر دون تاكهام كلي من خوداً به بى دنيصل فرائي -

ميلا جواب به دياكباب كرسول تعب وقت تلم ودوات لانے كاحكم ديائقا توشايد كمجه لكصفه كاآب كااراده ندمقا - بكدمحض أزما مامفصور تفاآب كو - اور كييهس -

سے نے اس جواب کی رد میں جو کچے فرمایا ہے اس کے علاوہ میں كمنا مولك بروافعهاس وفن كاب حب أنحفرت كا دم واليس كقا. مالت احتفارطارى مقى مبياكه صريب مصمراست بوك به المزاوه وقت

اختبار وامتمان کا دیمقا بلکه اعذار و انذار کا تفار برام صروری کے بیے ومیت کرمانے کا وقت تخفا اورا تربت کے ساتھ بوری مجلائی کرنے کا موقع تفار جو شخص دم توطر ام ہو مجلا دل مگی اور مذاق سے اسے کیا واسط، امسے توخو د ابنی بڑی ہوتی ہے ، اہم امور براس کی توج رہنی ہے ، اپنے تعلق والول کی مہماست ہیں اس کا دھیان ہوتا ہے جفوصاً حبب وہ دم توطر نے والا بنی ہو نبر حبب اس نے مجالست صحبت اپنے پورسے مرتب یا اختبار زیبا تو وقت احتمار کیا اختیار دامتحان دیتا۔

علادہ اس کے شوروغل کرنے چیخ وبیکار مجانے پران ہوگوں سے دیول کا کہنا کہ: "ختوم واحدنی " میرسے باس سے اُکھ جاؤ " صاف صاف بتا آ سے کہ دسول کوان نوگوں سے صدم پہنچا ۔ اکپ رنجیرہ ہوئے ۔ اگر ٹومشت نا مکھنے سے دیسکنے ولسے ہی جادہ تواب پر ہونے توان کے دو کئے کورمول میں سند فراتے ، مسترسن کا افلہا رفر المستے .

اگراتب حدیث کے گردو پیش پرنظر ڈاپے، خصوصاً ان لوگوں کے فقرے برخورد را اینے کہ هجو دسول اندہ "رسول اندہ بدیان بک دہ میں انداز اس کو معلوم ہوگا کہ حصورت عمر اور ان کے تمام ہوا خوا ہ جائے سے کے کہ دیمول الیک بات لکھنا چاہتے ہیں جو ہمیں نہیں ماسی وجہ سے الیما فقرہ کہر کرنا گہانی صدم مہنچایا گیا رسول کو اور آب کے حصور میں انتہا ایسا فقرہ کہر کرنا گہانی صدم مہنچایا گیا رسول کو اور آب کے حصور میں انتہا سے زیادہ سروغل مجایا گیا ۔ اختلافات خوب اجھالے گئے ۔ جناب ابن عباس کا اس وافعہ کو یاد کرے شدت سے گریے کرنا اور اس وافعہ کو معید عباس کا اس وافعہ کو یاد کرے شدت سے گریے کرنا ور اس وافعہ کو معید شارکنا یہ بھی اس جواب کے باطل ہونے کی بڑی توی دلیل ہے۔ معذرست عمر مصال کے پہلے نئیں معذرست عمر مصال کے پہلے نئیں معذرست عمر مصال کے پہلے نئیں

مونن للصوامب تنفي اورخداك مانب سي سب برالبام مواكرنا كفاربه معذرسن

ایی ہے کہ اس پر توجہی نہیں کی جاسکتی کیونکہ یہ گہنے سے تو معلوم ہوتا ہے کہ اس واتع میں راستی و ورستی حضرت عمر کی طرحت بھی نہ کہ رسول کی طرحت ۔ نیر یہ کہ حضرت عمر کا البام اس دن کی وجی سے جو دسول پر ابیں دجی ہے کرنا زل ہو ہے نیا وہ بچے کھنا ۔ بعض علماء نے حصرت عمر کی طرحت سے بیں مفرات کی ہے کہ معزمت عمر دسول کی تعلیمت کم کرنا چا ہے تھے ۔ بہاری کی مالعت میں رسول کھنے کی زمیمت کرنے تو آہے کا تعب اور بڑھ جاتا ۔ اس انعب کے بڑھنے میں رسول کھنے کی زمیمت کرنے تو آہے کا تعب اور بڑھ جاتا ۔ اس انعب کے بڑھنے

کے خوصہ سے حفرت عمر نے الیا نظرہ کہا۔ مگر آب اچھی طرع جانتے ہیں کہ ٹوسٹتہ فکھنے میں رسول کے دل کو زیادہ راحست ہوتی ۔ آپ کا دل زیادہ تھنڈا ؟ آنکھیں زیا وہ خنک اوراست کی گراہی سے آپ زیادہ بے خوصت ہوجلتے ۔ رسول کی فرمائش نام د دوات کے منتلق تھی کسی کو حفرست کی مجو بزے خطاعت قدم اسٹھا نا تھیجے نہ تھا۔ "دسا ھے ان لمؤمن دلا مؤمنے إذا تصنی اللّٰه و

رسوله أمراً أن يكون لهم المحتيرة مدن أمرهه »

« حبب خدا درسول کی باست کا فیصلہ کرلیں تو پھر مومن مرد یا مومن عورسند کو اس باست کے بہستد ناہسسند کی گغائش نہیں "

علاوہ اس کے حضرست عمرا درا ن کے ہوا خواہوں کا مخالفت کرنا ، اسس اہم ترین مفصد میں دکا وسٹ ڈالنا ا ور دسول کی مفاول کے ساسنے شور^و عل مچانا ، محبگرا وضا دکرنا یہ زیادہ شان تھا ، زیادہ گراں تھا دسول پرنبیت ایسا نوست نه کلمے کے جس سے است بهیشہ کے بیے گرای سے معنوظ ہو مال ۔

سوچنے کی بات یہ ہے کہ حصرت عرب رسول کی اتن زحمت تو دکھی نہ گئی کہ آپ ہمیاری کی حالت میں نوست تر بر فر ما بیش گرا ہی الم فیم المحنیں المحنیں کوئی نامل نہ ہوا کہ دیول قلم دوات ما نگیں اوروہ تکرار کرنے لگیں " بذیان بک دہے ہیں "کہ کرناگہانی صدم میں بھی ہیں اگر زشت بھی ہوتی دسول کو تو کیا اس دلی صدمہ سے بڑھ کر ہوتی ؟

تو کیا اس دلی صدمہ سے بڑھ کر ہوتی ؟

لوگوں نے حصرت عمر کی طرفت سے معذرت میں بر بھی کہا ہے کہ حضرت عمر نے محماک قلم و دوات کا نہ لانا ہی زیادہ بہتر ہے کیا کہنا اس معذرست کا ،

عرفے محماک قلم و دوات کا نہ لانا ہی زیادہ بہتر ہے کیا کہنا اس معذرست کا ،

عمرنے مجھاکہ قالم و دوات کا نہ لانا ہی زیادہ بہرہے۔ کیا کہنااس معذرت کا،
یوی نادر بات کہی گئی۔ عور تو فرائے کہ جب رسول خود حکم دیں کہ قلم و دوان
لاؤ انو قلم دوات کا نہ لا البہر ہوگا ، کیو کر ہوگا ۔ کیا حضرت عربیا اعتقاد رکھنے
متھے کہ رسول البی چیز کا حکم دیا کرتے ہیں جس چیز کا تزک کرنا ہی زیادہ مناہے۔
اس سے بڑھ کر حیرست جیزان لوگوں کا یہ قول ہے کہ حصرت عمر ڈرے
کہ دسول کہیں ایسی ہائیں نہ لکھ جائی جس کے کرنے سے لوگ عاجو رہیں اور
نہ کرنے پر سزادار عقوب بے تھم ہریں ۔

عو رسن رمائے کہ رسول سے ہے ہد " تاکہ تم گراہ نہو " مقتر عمر کا ڈرناکہاں تک بجا تھا۔ کیا حصرت عمر رسول سے زیادہ انجام سے باخبر رسول سے زیادہ ممتاط اور است پر بانسبست رسول سے زیا وہ جہران تھے؟ کوئی بھی اس کا قرار نہ کرے گا ، کون مھلا یہ مانے پر تنیار ہوسے گا ؟ یہ بھی توگوں نے معزمت عمر کی طون سے معذریت بیش کی ہے کہ

حصرت عمر کومنا نفتین کی طوف سے اندلیشہ لامی ہوا کہ کہیں حالمت مرمنیں نوسٹ ندیخر میں ہونے کی وجہ سے اس نوسٹ نہ کی صحبت میں قارح نرکومی مگر آب خورسمج سکتے ہیں کہ بہمی فلط ہے۔ رسول کے لانصناوا کہنے کے بعداس اندبشہ کی کوئی وجہی نہ تھی کہونکہ رسول احب خور وصفا حست فرا دیں کہ میرافوشت گراہی سے محفوظ رہنے کا سبب ہوگا تو بھر سنا فقین کی قدر کی وجہ سے دہ فوسٹ متہ باعد فتنہ وضا دکیونکر ہم جائے گا۔

ر سے میروں ریوں ہے۔ اگر صور سندعم منا نقین ہی سے ڈرنے متھے۔ان کو میں اندیث ہتھا کہ منا ہو نوسٹ ندی صحت ہیں قدح ندکر میں توخود منا نقین کے لیے انفول نے تدح کا سخم کیوں ویا ؟ وسول کی بات کا جواب دے کر، فکھنے سے دوک کر، انہ یان

م بیرن بی از رسون ن من افقاین کے لیے راہ کیوں بیدائر دی ؟

اللہ رہے ہیں کہ کر منا فقاین کے لیے راہ کیوں بیدائر دی ؟

حصرت عرمے ہواخواہ ان کے نفرہ "حسب بناکت باللہ " کی نفسیر میں یہ ہو کہتے ہیں کہ خود خدا وند کریم سے ارست ادفرال سے :

» ہم ہے کتاب میں کوئی جیبزنہ انتظار کھی " نیز ارمث ادالی :

نیز ارستاد اہی : " آج کے دن ہم نے دین کو تمقارے بیے کامل کیا !"

توب درست بنیں اور نہ خداوند عالم کے ارشاد سے حصرت عمر کے نفرہ کی آلیکر ہوئی ہے کیونکہ آییت سے بہیشہ کے ہوئی ہے کیونکہ آییت سے بہیشہ کے لیے معنوظ بھی ہوگئ ہے نہ بر دولوں آییس بدایست خلق کی ضامن ہیں بھیر ان دونوں آییوں برکیم وسم کر کے لوشتہ وسول سے بے بروا ہی کیونکر جائز ہوگ ؟ اگر وست ہوں کا وجود ہی گراہی سے معفوظ رہنے کا موجب ہوتا نوید گراہی کیوں ہوتی ؟ جس کے دور ہو ہے کی طون سے قریب قریب بایسی ہو گی ہے۔

معزست عُرِی طرفت سے آخری جواب میں بہ کما کیا ہے کرحفرت عمر

ارشادِ رسول کا مطلب بنیں سمجھے ، ال کی مجھیں یہ باست نہ کی کہ وہ نوسشندامت کے ہرہر فرد کے لیے گرای سے بیخے کا ذریسیہ ہوگا بلکہ حضرت عزرسول کے اس عِلْمَ عَكُم المنت الواحيعدي " تم مير عابد كمراه نهوكي " سمجھ کدرسول کا دست تر گرای پر مجتبع نہ ہوسے کا سبب ہو گا۔اس وشت کا فائدہ پہہوگا کہ است واسے گراہی پرمنفق ومتحدز ہوں کے اور معزمنیٹ عمریہ پہلے ،ی سے جاننے نتھے کہ است واسے مبھی گراہی پر محبتیع ہی زہوں گے چاہے نوشن لکھاجا سے یا نہ لکھاجا ہے۔ اسی دجے سے آب سے اس موقع پر الساجواب دیا اور نوشت لکھے سے مانع ہوئے۔ اس کی تردیدیں آپ في جو كي كماوه توكما مى بعين عرمن كرما مول كدحفرت عمراس قدر نامجي ند خفے اورز برحدمینشجس کا مطلب سسب پر واضح وروسشن مخیاان ک سمحمین ندا سکی کیونک نول رسول سے ہرشہری اور دیباتی کی مجھیں یہ باست آنی ہے کہ اگر رسول وہ نوست تا مکھ دستے توہر فرد کے لیے گراہی ہے معفظ رے کی علسن امر ہونا وہ اوشند بہی معنی معہوم اس مدیث سے ساری دنیا کی تجھیں آنے ہیں۔

حفرت عربهی نیتین طور برجامتے سنھے کہ دسول کو است کی طرف سے گراہی پرمجنتے ہونے کا خطرہ نہیں کیونکر معفرسن عمر دسول کا یہ ارشار سنتے رسیننے سکنے کہ :

" میری امت کبی گراہی پر مجتع نہ ہوگی خطا پر مجتع نہ ہوگی۔" ہمبشہ میری امت سے ایک جماعت حق کی حمایتی ہوگی۔ نیز حفز عمر نے خدا وندعالم کا یہ ایر شاد کھی سنا تھا ؛ " تم یں سے وہ لوگ جوا بمان لائے اور نیک کام کیے ۔ ان سے خداوند مالم نے وعدہ کر رکھاہے کہ اکٹیں وہ رہے کہ زمین پر خلیفہ نبائے گا جیبا کہ ان کے قبل کے لوگوں کو خلیفہ بنایا تھا "

اسى طرح كى اوربهت مى كلام بحبيدكى واحنح اتبين اوراما ديث بينير بين است مريى مديني حفر است كى كى كل سي مري ميني مختل كا در سي من ميني مختل كا در يوسكاكم اوجود بي سمبى گملى برجيت نه موكى المنداس كا دهيان مي بنيس بوسكاكم اوجود بي سبب سننے كے حب دسول ان نے تلم و دوات طلب كيے توصفرت عمر با دوسر ساوگوں كے ذہن ميں خطور ہوا ہو گا كه دسول ابنى است كے گملى موسر بين است كے گملى مير مجتن جو نے كا خوس ركھتے ہيں جبھى قلم و دوات طلب كرد ب ہيں محضرت عمر كے منام سب حال توب سيد كه وه كلى اس حدم بيت و مي سمجين ميں جود نيا مجدد بي است سمجين جس كى كيات كلام مجيد كھي في كري اور ميم حديثيں بھى ۔ اور ميم حديث بي بيت كه وه كي است كلام مجيد كھي في كري اور ميم حديث بي بيت ك

علادہ اس کے رسانست مآب کا اظہار ناگواری کرنا اور میرے ہاس سے
اکھ مباؤ فرمانا بیمی ولیل ہے کوجس باست کو ان لوگوں نے ترک کردیا ہے واجب
متی ۔ فلم و دواست جورسول کے مالئی تھتی وہ لانا صروری محتی ۔ انھیں نہ لا کر
انھوں نے نرک واحب کہا ۔

احیا مان دیا بیں سے کر حفرست عمر نے دسول کی مخالف ننہ جو کی اور آپ کے جا مان دیا بیس سے کر حفرست عمر نے دسول کی مخالف ندی کا ور آپ کے باس قلم و دوانت لانے جوز دویا وہ خلط قہمی کی دہرسے کھا رکول کی بات ان کی مجھ میں ندا سکی اس دجہ سے ایسا ہوا ۔ ایسی مالدت میں دسول کو کو جا ہے کھا کہ آپ ان کے شکوک و کیا جہا ہے کھا کہ آپ ان کے شکوک و شہمانت زائل کر دیں ۔ اچی طرح اینا مفصد واضح فرا دیں بلکہ دسول کے لیے

اسس کی بھی گئیا کشش بھی کہ ان کوجی بات کا حکم دیا بھا اس پڑھ ہے ور فرمائے

لیکن دسول کے یہ سب کچھ نہیں کیا بلک اپنے پاس سے اسٹا دیا۔ قد مواعنی
"خم سعب بیرے پاس سے اسٹھ جاؤ" معلوم ہوا کہ دسول جائے تھے کہ حفر
عرک مخالفت فلط نہی کی دم سے نہیں بلکہ کسی اور حبّر ہے ما تخت وہ ایسا
کم درہے نے اسی بیے آپ نے پاس سے دور ہومانے کا حکم ویا۔
مناب ابن عباس کا گری فوانا ، نالہ و فریا دکرنا اس دن کو یاد کر کے
یہ بھی ہمارے بیان کا پورا بو یہ ہے ۔ انھا ت نؤ یہ ہے کہ یہ (حفر نہ عمر کی لائی ہوئی) وہ زبر دست مصیب ہے میں ہیں کسی عذر کی گنجا کش ہی
عرک لائی ہوئی) وہ زبر دست مصیب ہے میں ہیں کسی عذر کی گنجا کش ہی
نہیں ۔ اگر آپ کے کہنے کی نبا براس وا فغرا نہ د بناک کو صحابہ کی ایک لفزش
نہیں ۔ اگر آپ کے کہنے کی نبا براس وا فغرا نہ د بناک کو صحابہ کی ایک لفزش
ان کی ایک فرد گزاشت کہ کر ختم کر دیا جا ہے تو بات آسان مخی اگرم محفن یہ
ایک وافعہ ہی زمانے ہم کو ہلاک کر دیانے والا اور کر کوسٹ کستہ کر دیے

والا ہے ۔

ۺ

مكتوب منبروم

عذره معذرت كے لغوہونے كا عترا<u>ت</u> بقتيہ مور د كے متعلن است فتا س

آپ نے معذرت کرنے والوں کی تمام رایش کاٹ دیں اوران پرتمام راستے بسند کر دیے اوران کے اوران کے اغراض کے درمیان دیوار کھڑی کر دی۔ جو کچھ آپ نے بیان فرمایا اس میں کسی شک وشبر کی گغالشس باتی نررہی ۔ آپ اپنا سلسلہ بیان جاری رکھتے اوران تمام مواقع کا ذکر فرا کیے جباں صحابہ نے تفوص پرعمل نہ کیا اور من مانی تا دہلیں کیں ۔

سر

جواسب مكتوسب

*جيشِ اُس*امه

آب کا مکم ہے کہ میں وہ سارے موار دبیان کروں بہاں صمار نے اطاعت تول بینی بر مرابی وائے کو مقدم مجماء

امچا توسٹ کراکر آگا دکا واقعہ ملاحظہ فرمائیے ۔ نشکر اسامہ دسول کی زندگی کا آمسٹ میں نشکر سات کے دیمی انسان کی اسٹار کا استفاد اس مشکر کی میں آپ سے اہتمام علیم مسلمانوں کے ایران کی میتوں کو براحائے کے لیے نشکر کے ساز و مسلمانوں کے اداد ول کومضبوط اوران کی مہتوں کو براحائے کے لیے نشکر کے ساز و مالمان کی فرائی آب نے فرد مغنب نغیر فرمائی ۔

مهابري والفارك مرم ورده افراد ميے مفرست الريك وعروا وعبيده ،

سدبن ابی وقام ، وغیرویس سے کوئی بھی منسر وابیا نہ کہا جسے نوع میں دسول کئے رکھتا ہور بیسلامی ما وصفر ۲۷٫ تاریخ کا وانغہ ہے۔ حبب مسے ہول ۲۷٫ تاریخ آتی توآب شے اسامہ کو طلب کیا اور فرمایا کہ:

"جهان متهارے باپ قتل کیے گئے اس طرف رداز ہواوران لوگون کواس شکرے روند ڈالو، بیس تعین اس نشکر کا اضراطی مقرد کر تا ہوں تم مبع سویرے اہل اُبنی پرسبطرها ان کردینا اوربہت تیزی سے جانا کہ دبان فرم پہنے ہے بہلے بہنچ جاؤ۔ اگر فتھیانی ہو تو بہت مقور کی ویرو بان میم ہزا ، اپنے ساتھ راہ بتانے والے لے لو، جاسوں کو آگے دواذ کردو "

جب مہرصفر ہوئی تر زمول کا مرمن موست نمایاں ہوا بتیب آگئی، سرکا درد براس گیا۔ میں سنا ہل کر گیا۔ جب مہر سنا ہل کر گیا۔ جب ہوئی ادر آپ نے ملاحظ فرایا کہ وگسہائے میں سنا ہل کر رہبے ہیں تو آپ باہر تشریب لائے اور ادوں کو بہت بنانے کے لیے آپ نے اپنے ہاتھ سے نشکر کا علم درست کر سے ارادوں کو بہت بنانے کے لیے آپ نے اپنے ہاتھ سے نشکر کا علم درست کر سے

(بقیرماسیم فرگوستنه) جواب و با حصور میراسین اس و تنت وی بهت خواصعور کوزنده سلاست دیکیجواساری زید کاای و تنت مخاجب دیول خواشت اخیری اس شکر کااخر مقرر کیا مخاجی بین معزمت عمری مخفی اور معزمت م

ابوكري جدى نكباك يرطوندا مخبر بركت دست ديد منك تم الاست كمستن بور علامطبي كليقني

ام وتند اسار كاس سروسال كالخفاء

ے معزن المسارم کی اگرے تھے کہ ' بیزا سے میسا شقال کی افرانی سرے افرائے '' اس ابڑکا پکڑن ہوڑین شکا علام ملبی و میزونے ذکر کیا ہے ۔

تع أبئ شام مي موز جهان مناب جعز لميارا در زبرين مارث شهيد بوت نف ك قريب أيك مُلَّد ب.

اسامه کو بخشا اورازست د فرمایا که خدا کا نام مے کرمیل کھڑے ہواور راہِ خدا میں جہاد کر واور تمام کا فروں سے جنگ کرنا

اسام ُ رسولٌ کا عَلَم نے کر سیلے ، عَلَم کو ہریدہ کے حوالے کیا۔ مزید کے باہر يبخ كرمشكرسيت قيام كياً و إلى يخ كرمس لما لأل بين تير مستى پيا بون، اوروبان سے آئے نہڑ گھے ۔ باوجو دیچھاب نے ارشادات بیٹیرم شنے ۔ جلد روانہونے کا آپ نے جس تدریخی کے ساتھ صاحت صاحت لفظوں کی آئیدی مكم دياسما و منا عيد رسول كايد فقره: "صحسور الل أبي برطيعاني كروو اور رول كايرجله: "ملد روانه وناكه و إن خبر بينيف سيل ميني ما وَ" مُؤْمِن اس طرح اورُبهت سے اکیدی امکام لٹکرکی روائی کے موقع پر دیے منے مگرصمابہ کے کسی حکم برعمل بہیں کیا ۔ ارمول کی ایک بات بھی نہیں مانی صحابیس سے بعض وگول کے اسامہ کوانسر مقرر کر نے برا منزامن مجی کیا جس طرح سالن بين اسامر كم إب زيد كوا فنر مقرر كرف رده اعز امن كر مكي تق. اورمبت كيدبان اسامه كمتنان لوكون تعكين مدست زياده براميلا كما. مالا مکرامخوں نے اپی آ کھوں سے دیجا کہ خودرول نے اور مفرر کیا ہے اسلم سے دمول کویہ کھتے ہی سے شاکہ:

" بین نے مختین ہمسس نشکر کا افتر مقرر کیا ہے !! اپنی انکھوں سے دکھا بھی کر دسول کا باوجود بخار میں ہونے کے اپنے یا تھست علم نشکر در مست کر کے اسامہ کے بائخہ میں دے رہے ہیں مگر باوجود یہ مب دکھنے اور سنے کے وہ اسامہ کے سردار مقرد کیے جانے پر اعتراض کرنے ہے باز نہ رہے ۔ اُخر کاران کے اعتراض وطعنہ زنی سے دسول شدید تم وعققہ میں ای بخار کی حالمت میں سرم بیٹی با ندھے ، حیاور اور ہے یا مرتشر لعب لائے ریسینچر ماررسی الاقل انتقال صصوف دویوم پیشیز کا دافقہ ہے ۔آپ منبرریکے محدور ثنائے النی کے بعد ارتبا کی طور پر رسول کے اس خطب خطب کونقل کیا ہے اور تمام ابل اسلام کا انفاق ہے کہ دسول سے اس دن میہ خطب ارتباء فرمایا تھا)

" میرے اُسامہ کوانسر فوج مقرد کرنے پر مقیں اعترام ہے تو یہ کوئی نئی بات بہیں ۔ اُسامہ کے باپ زید کو حب میں ہے افسر قرر کوئی نئی بات بہی نم لوگ معنز من تقطے ۔ خدا کی ضم زیر بھی افسر کے لائن مقاا ور اس کا بٹیا بھی افسری کا سراوار ہے "

اس کے بعد آنخصر سنگ ہے مسلمالؤں کو مبکد روانہ ہوئے کے بیے بوسٹس ولا یا، صما بہ آپ سے رخصست ہوئے گئے اور شکرگاہ کی طومت روانہ ہوئے مٹروع ہوئے آنخصر سنگ انخیں جلد روانٹی پر مرانٹی غنہ کرنے رہے ۔ اس کے بعد آ ہے کے مرض میں شدرت بیدا ہوجیلی مگراہب شدرت مرض میں میں فرانے رہے :

« لىشكرائىلىر كوملەيجىجو "

٠ مست کرانسا مه کو فوراً رواز کردو "

یمی جلے برابر و ہرانے رہے . مگرا دھ لشکر واسے سستی ہی برسے رہے جب ۱۹ رہ الآل کی صبح ہوئی تواسا مریث کرگاہ سے دسول کی خدست بس بہنچے رسول م نے فرا روانگی کا انہیں حکم دیا ۔ ارشاد طرا یا ؛

م خداک برکتوں کے ساتھ سومبے رواز ہوماؤ "

سار نے رسول کو رخصت کیا اورلسٹ کرگاہ کی طرف والیں ہوئے بھر پلٹے اور ان کے ساتھ مفرست عمرادر ابوعبیدہ شخصہ یہ لوگ رسول کے باسس ماپہنے ،اس وتست آنخفرست کا دم والبیس تھا۔اسی دن آب نے دنباسے انتقال کیا۔ رسول کے انتقال کے بعد علم سمیت لٹکر بھی پرنے واپس آگیا۔
جسب حصرت الوبر خلیفہ ہوگئے تواس وقت بھی لوگوں نے بیا اکولٹ کی اور
روانٹی ملتوی کر دی جائے اس کے متعلن حصرت الوب برسے لوگوں نے گفتاگو بھی کی اور
بڑا شدیدا صرار کیا با وجود بچہ وہ اپنی آنکھوں سے نشکر کی روانٹی ہیں رسول کا کا اہتمام
دیکے بھی ہتے مجلد جائے کے متعلق فوراً لشکر روانہ ہونے کے بیے مسلسل بیزیم ہو
تاکیدیں کیا کیے اسے بھی سننے رہے۔ خود بنیس نفیس بیٹیم کا انشکر کا مازو سا ان
فاری کرنا ، بھالت تپ اپنے اتھ سے علم شکر سنوار کر اسامہ کے باتھ میں دیا۔ یہ
فرائی کرنا ، بھالت تپ اپنے اتھ سے علم شکر سنوار کر اسامہ کے باتھ میں دیا۔ یہ
مری کو کسی طرح اسٹ کر کی روانئی دوک۔ دی جائے۔ اگر صفر سن ابو بکر نہ ہو سے
تو لشکر بلا بینے اور داریت لشکر کھول دینے پر وہ مسب تل میکے خلے۔ مگر خود
حضر سن ابو بکر نے ان کارکر دیا۔

حب ان لوگوست دیجا که انتکر مجینی پر ابو برسط بینی بین قوحزت عمر ابو برکر سلے بینی بین قوحزت عمر ابو برکرے باس آے اور بربان انصاران سے درخواست کی کہ اسامہ کو معرول کرے کسی اور کو اصر مقرد کیا جائے۔ مالانکہ زیادہ دن نہیں گڑ سے متع کہ ای اسامہ کی افری پر اعتراض کرنے کا صرابی کی اسکوں سے دیجے چکے تھے۔ وہ آ کفز سن کا طبط وعصنب اور اس کی وجہ سے مجاز شرید تکلیمن بیں مربع بی باندھے جا در اور سے ہوئے گئے سے باہر آنا، لو کی مانی بیال و گھائے قدم ، صومہ کی وجہ سے سبحال نہیں جاتا ۔ آپ کا مبر بر جانا ، محدث کی مانی بی مجرنا اور خرانا کہ :

﴿ اَ اللهِ وَاللهِ اللهِ ا نيل وقال كراك كى يركيا خبر بمع مبني جه ؟ الراكناتم السلم کے سرواد مقرر کیے جانے پر معتر من ہوتو کل اس کے باب زبد کے
مرواد مقرر کیے جانے پر بھی معتر من رہ بچکے ہو۔ خدا کی فتم زبد می
افسری کے لائن تھا اور اس کا بیٹا اسلم بھی انسری کے لائن ہے ۔ سول جو تھے کے ذریعے اپنے مکم کی
پوری پوری آکید کی تاکہ لوگ اعترامن سے بازر ہیں ، قبل وقال نہ کر ہیں ۔ بگر افسوس
بوری پوری تاکید کی تاکہ لوگ اعترامن سے بازر ہیں ، قبل وقال نہ کر ہیں ۔ بگر افسوس
بول کی یہ تمتا پولی نہ ہوئی ، رسول کے جینے ہی مجی اُسامہ کی مائنی نہ قبول کی اور
برسول کی یہ تمتا پولی نہ ہوئی ، رسول کے جینے ہی مجی اُسامہ کو ہٹا کر کسی دوسر کو افسر
برسول کے بعد معزرت ابو بر سے خواست گاری کی کہ اُسامہ کو ہٹا کر کسی دوسر کو افسر
مقرر کیا جائے لیکن حصر ست ابو بکر نے ان لوگوں کی اس درخواست کو اس طرح اُسے کی درخواست کو اس طرک کی دونا ست کو سات کو ملنوی کر دینے کی درخواست کھی کے دی متی ۔
دیا جس طرح سے کہ کی دونا سے میں ڈالومی پی کھی اور کہا :

" تھاری ان تھارے اتم ہی جیئے سنیاناس ہوتمھارا اے خطاب کے بیٹے! رسول تواسا مرکوا ضرمقرر کری اور تم مجھے مکم دیتے ہوکہ

ئے جھابائی سپر دمورضین حبنوں نے موکرا مامرکا اپنی تا لیفامت میں ذارکیا سپرا کھوں شے اسام کے اضر نباسے جائے پڑھ بارکے احتراض اور بہر کی خصب ناکی اور کھافٹ تب سسجد پر کشویٹ لائے اور خطبہ فرائے کا ذکر بھی کیا ہے۔ لاحظ ہو خبتات ابن صعد : سپرمنت علبیہ ، سپرمنت وطال وظیرہ۔

شد لاحظهومسبرت ملب ومسيرن دحانی اور تاديخ طبری بر ي واقعا من مسلسم اور ديگوكست • تاديخ ومسير

تکے اساساس جنگ ہیں ہرطرح کامیاب وصفور د ہے اور پیغیر سے جو پاڑئیں مسندہ ائی مستعمل کی متعین سب جنگ ہیں ایک مسلمان کچھ معنوں سے ۔ اپنے اب میمقال کو تعلی کیا اور اسس جنگ ہیں ایک مسلمان کچھ معتول نہ ہوا ۔ معتول نہوا ۔

بس الخبس معزول كردون ال

جب نشکر دوار بواتو بن مرادسپای اسامدے کر جیے جن بی ایک مراد سوار تھے۔ ایک اچی خامی نغداد صحابہ کی جنب خود رسول نے فرج میں رکھا تھا اسمامہ کے ساتھ جانے کا تاکیدی حکم دیا تھا نشکر کے ہماہ نہ جانا تھا نہ کئی حالانکہ رسالہ آب نے بڑی تاکید سے بہم فرایا تھا (جبیا کہ علّا مدیثہ برسان کتاب الملل وانحل مقدمہ چہارم میں رقسط از بن)

" اُسُامُ کا نشکر مبلد روانه کرور خدا لعنسن کرے اس برجواکسامہ کی مائختی سے گریز کرے "

آب بجھ کے ہیں کہ صحابہ نے اتبداء رسول کی زندگی ہیں جانے ہیں تسابلی برق اور آخر میں رسول کے بعرف جانے اور آخر میں رسول کے بعد حب آخر کا رسٹکر دوانہ ہوا بھی تولت کے ہماہ جا ہا ہے سے گریز کیا۔ فوج کے ساتھ نرگئے ،ای سیے تاکہ سیاست کے مستون (ستوار کئیں ، المفرل نے مہم رسول کی تعبیل پرسسیاست کو ترجے دی ،امور مملکت کا انتظام و الفرام منعدَم دکھا۔ رسول کے ناکیدی احکام ہیں لپشت ڈائے۔ وہ مجھنے تھے کہ ہماری ستی اور کا بل کی بنا پرلٹ کر کے ساتھ نہ جانے کی وجسے نشکر کی روائی ملتوی نہیں ہوگی ۔ اسٹر تو ہم حالے جانے کی وجسے نشکر کی روائی ملتوی نہیں ہوگی۔ اسٹوی نہیں ہوگی۔ اسٹوی نہیں ہوگی۔ اسٹون ہما ہے ہم ما خوال ہو ہا ہے ہم ما اندے ہیں تو ہما ہے آتے میں تو ہما ہے آتے میں موائی کے اسٹول کے بنی ہو جا ہوگا اور ایس نہ مالانسند کے بیے دل ہیں ہو جہا ہوگا اور ایس نکہ ملائنسند کے بیے دل ہیں جو تھا ہی کا خون ہو جا ہے گا۔ ساری امیدیں خاک جو تمالی اور ہی ہی اور ہمیشہ کے بیے خلا نت سے وہ م ہوجا بین گا در ہمیدیں خاک

حصرمت سرور کا کناست جا بہتنے منے کہ مدیندان لوگوں سے خالی ہوجائے۔ اکد ان کی عدم موجود گل ہیں امیرالمومنین کی خلا شت کے بیے کوئی رکا وط باتی رہے۔ اور سکون واحلینان کے ساتھ بنیر کسی اختلاف ونزاع کے امیر المونہن تخنیز خلافت پر تنمکن ہوجائیں جب بیصحابہ جنگ سے پلٹیں گے اور بہاں خلافت کامعالمہ طے موجیکا ہوگا۔ ببیت ہو چی ہوگی تو بھر نزاع واختلاف کا اتفین کوئی موقع ہی باقی نہ رےگا۔

اسامہ کوجب وہ ۱۱ برائے کے سن کے تھے افسر مقرد کرنے بیں آپ کی یہ مصابحت بھی کہ بعض کوگوں کر دن فراج بجھوڑ دی جائے بہتم دو ورکس سنبوں کو ان کی کرش کا مرہ مجھا دیا جائے نیز اگر اس سے ملنا جلنا وافعہ پین آسے آپ کسی شخص کوامیر مقرد فر ما بیل جوس ہیں بڑے بور ھے صحابیوں سے کم جونو بڑائی کے شخص کوامیر مقرد فر ما بیل جوس ہیں بڑے بور ہے صحابیوں سے کم جونو بڑائی کے لین یہ حاب رسول ہو کی طوت سے کسی زراع کا خدید بانی درہ ہے ۔ لیکن یہ حاب رسول ہو کی ان ما محت بین اسامہ کے اضر مقرد کرنے پراعز اضاب کرنا مثر وع کیے۔ رسول پر بطعن کرنے گئے ،ان کا ما محت بین کر ما نے ہیں ہے تک رائے وہاں کو می درسول می کرنے ہوئی وہ ان کا ما محت بین کر ما نے ہیں ہے تک کے بھر ہو گئے ۔ وہاں کو کی کھٹکا باتی نہ مقارد کیا ۔ یہاں تک کم بیغیم نے اسامہ کو معز ول کر کے کسی اور کو افسر مقرد کیا جا ہے ہوئی کا انسامہ کو معز ول کر کے کسی اور کو افسر مقرد کیا جا ہے۔ بچر ہوہت سے لوگ لائے کے مائے ذکے جیب اس کی کھٹے ۔ وہاں کسی اور کو افسر مقرد کیا جا ہے۔ بچر ہوہت سے لوگ لائے کے مائے ذکے جیب اس کی کو مائے ذکے جیب اس کی حقود کو اس کے دیو ہوہ ہے۔ اس کی حقود کی کھٹکا کا تھا دیں کہ کے مائے ذکے جیب اس کی حقود کی کھٹکا جا تھا۔ دی مقرد کیا جا ہے۔ بچر ہوہت سے لوگ لائے کے مائے ذکے جیب اس کی حقود کی سے کہتا ہوں کے کہتا ہے۔ اس کی حقود کی کھٹکا کے مائے ذکے جیب سے دیں کہتا ہے۔ کو سے کھٹل کے مائے ذکے جیب سے کوگ لائے کے مائے ذکے جیب سے کوگ لائے کے مائے دیے جیب سے کوگ لائے کے مائے دیے جیب ہوئی کے مائے دیے جیب سے کھٹک سے کوگ لائے کے مائے دیے جیب سے کوگ لائے کے مائے دیے جیب سے کھٹک کے مائے دیے جیب سے کوگ لائے کے مائے دیے جیب سے کھٹک کے مائے دیکھٹے۔

بہ پانچ بانش اس مرہ اُسامہ میں بیش آئیں جن ہیں صحابہ نے میاسی امور بیں اپنی دائے کومقدم رکھا اور نفوص پینم بر برعمل کرنے سے سیاسی اغراص میں

اے زیادہ تر دوشین نے عابرس ہی ک عمر مکھی ہے بعض نے ۱۸ برسس بعن نے ۱۹ برسس معن نے بیٹن برسس اکمی ہے . ۲۰ برسس صفیادہ کی عمر کا کدئی قائل نہیں -

| احکام بنیم کی کملی کالفسند کرکے آپ کے | پنےاجتہاد کومہ بر ماننے ہوئے مرکج ک <i>ار کو تھٹ</i> کا دیا: |
|--|--|
| رکی ماتحق میں محاذ جنگ پر رواز ہونے کا - |) رسول البيّد ني امُراه |
| ۔ ہے واجنہاد کو تعمیل مکرمیغمہ سے مہتر مانا۔ | علم دیا لبکن نه کئے سیاسی امور میں اپنی را |
| - ئے واجنہاد کو تغمیلِ مکم پیفیہ ہے مہتر مانا۔ ن کیا۔ د مرد دیتر اس اس مراس زیر | ۳ — انمامه کاختری پرملورا چی سه ام می انتهال ک |
| ر بعد کوسٹ ش کی کرنشکر کی روانگی ہی | ض رسول کے اُنتقال کے ملتوی کردی جائے۔ |
| ا ون تواسًامر کو معرول کردینے کے بیے | @ جباس میں ناکا می سازشیں کیں ۔ |
| | - W/ W - |

مكتوب مبر

ستة أسامة يصحابه كے نطانے كي مغدر

سیمی ہے کہ حزب ہردر کا نامت نے محابر کو محافی جائے۔ براک ہے مقابر کی مطری تاکید کی جیدا کہ آب نے ذکر فر لجا ہے۔ نیزا پ نے سخت بھی فرائی چنا بچہ اکسا مدسے فرا یا ہفا کہ صبح سویر ہے ہی اہل انہی پر چڑھائی کردو۔ آپ نے نام بھر کی ہماست بھی ندی نیز آپ نے اکسا مدسے فرا یا کہ مبلد جاؤ اور شہرا مبلد جا کہ اور شہرا میں کے بعد فوراً ہی دہول کی مقابر مبلد جائی نر رہی ۔ اسی وجہ سے محابہ کے دل ایسی مالست ہیں دیول کی مقابر کے جو دور مدینہ کے باہر مم کر انتظار کرتے دہے کہ کیا صوریت پیٹریا کی سے ۔ چو دی محابہ کو دسول کا بڑا خیال متھا ۔ بہت تعلق خاطر کے اصوریت بیٹریا کی سے ۔ چو دی محابہ کو دسول کا بڑا خیال متھا ۔ بہت تعلق خاطر

تفاای وج سے ان سے اہی خردگذاست ہوئی۔ ان کے سستی کرنے اور دوائی میں درنگ کرنے سے مقصد کیچے اور زبخا۔ دوباتوں ہیں صرف ایک بات بخی ۔ با دیول کو تندیست دیچے کر آنکھیں ٹھنڈی ہوں بااگر دسول کا کا انتقال ہوجا ہے تو آب کی تجہیر و تکفین ہیں میٹ کست کا میڑون حاصل کریں اور دسول کے بعدان کا جوما کم مقرر ہواس کے بیے واہ کو ہموار نبایش ۔ لہٰذا اس انتظار و تو فقت ہیں وہ معذور منے اوران کی کوئی خطا نہیں ۔

ره گیااسامه کی احتی بران کاطعنه زن بونا در آنخالبکه وه اس بادسیب رسول کے مربی احکام سن بیکے تفے۔ قولاً و نسلاً رسول کے استام و تاکید کو اپنی اسکھوں سے دیجہ بیکے تفے تواس کی وجہ مرت یہ تنی کہ کچھ صحابا درا دھیا عمر کے بچہ بورسے تفے اوراسا ربہت کم مسن ۔ تواد هیرا عمر کے لوگوں اور بور صوب کے دل کو یہ باسند کمی طرح گوار انہیں ہوسکتی کہ دہ نوجوان کی اطاعت گزاری کی فطری وطبی طور پر نوجوان کا حکم ما نے بروہ مہی تیار بنہیں ہوسکتے ۔ لبندا انفوں نے فطری وطبی طور پر نوجوان کا حکم ما نے بروہ مہی تیار بنہیں ہوسکتے ۔ لبندا انفوں نے اسکامہ کی مائتی کو جونا لیند کیا تو یہ ان کی موعنت نر منی بلکہ اقتصارے طبیعت بنیری اور مقتصارے طبیعت بنیری کیا ۔

رسول کے انتقال کے بعد انتقال کے بعد انتقال کے بعد انتقال کے بوسطالبہ کی انتقال کے بعد انتقال کے بعد انتقال کے ب کیا تو اس کے عذر میں بعض علما دیے فوابا ہے کہ ان لوگوں نے بہر موجا خفتر ابو کر بھی اسکا مسی معرولی کو معتبر شجھتے ہیں بھاری موافقات کریں گے۔ کیونکہ (بنا بران کے خیال کے) مصلحت اس کی مفتضی ہے۔

مگرانصاف نؤیہ ہے کہ اسلم کومعز دل کرنے کا جواکھوں نے مطالبہ کیا کھاان کے اس مطالبہ کی کوئی معنول دجہ میری مجہیں نہیں آتی دراکھا لبکہ دسول آئی ہاسٹ بربہنے کس قدر غینط وعصنی کا اظہار فرا بیکے متفے۔ جن لوگوں نے اسمامہ کی مرداری براعزام کیا تھاان پر کنٹا برہم ہوتے متھے کہ بخارگی مالت بیں آپ مربر بٹی با ندھے ہوئے چا درا وراسے ہوئے باہرا سے خطیہ فرما با اور خطیریں کانی زجرو تو بخ کی اہٰذا اس کے بعد بھی ان کے معذد ر ہونے کی وجہ خعا ہی بہتر جانتا ہے۔

کشکر کی روانگی کوروک دینے کی جوا مفول نے کوشش کی عصرت ابو بکر
سےاس کے بیے اصرار جو کیا باوجود کیے لئے لئو وہ بابر مختن اسلامیہ کی
انتہائی انتہام دیکھ جکے نظے تاکیدی احکام سن چکے تنفے تو وہ بابر مختن اسلامیہ کی
حفاظمت واحتیاط کے مدنظ کھا۔ ڈر نے تھے کہ حبب لشکر مدنیہ سے روانہ ہو
جا گا تو فوجی طافت یہاں موجود نہ دے کی توکہیں مشرکین بآر زبول دیں۔
یسول کی آ تکھ نبر ہوتے ہی نفا ن آ شکار ہوجیکا تھا۔ یہود و دنصاری کے ول تو ی
ہوگئے تھے روب کی مندو ٹو بیاں مرتد ہوجی تفییں اور بعین جاعتیں زکوا ہ
دینے سے انگار کر جبی تفییں الحین سب بانوں کو پیش نظر رکھ کو صحابہ نے حفرت
ابو بکر سے خواسی ظاہر کی کہ آ ب اگر اوسفر سے دوک دیں بیان حضرت ابو بکر
انگار کر دیا اور کہا:

ندا کی قتم مجھے اگر کوئی پرندہ جہبت لے جائے توزبادہ بہند ہے ،
 بدنسیت اس کے کہ بس رمول ہے حکم کو بولا کرنے سے پیشز کوئی اور کام مٹروع کردوں "

حفزت الوبكر كم سعلن مارسے علمار في بين بيان كيا ہے ۔ رہ گئے ان ك علاوہ اصحاب تو الفول ئے اس كے علاوہ اصحاب تو الفول ئے الشكر كو واليس بلا يعنے كا جو الدوہ ظاہر كيا تو اسلام كى بمبودى كى فاطرابيا جا ہے تھے حفزت الديكرو عمرو خيرہ دستكرا سام سكے ساتھ جونہ گئے تواس كى وج بينى كه وہ انتظام الديكرو عمرو خيرہ دستكرا سام سكے ساتھ جونہ گئے تواس كى وج بينى كه وہ انتظام

مملکت بیں مصروب تھے جملکت اسلامی کی نبیادیں مصنبوط کرنا حکومت کو قوی بنا نا ، حکومت کی حفاظمت مدفظر تھی جس کے بغیرنہ نز دین محفوظ رہ سکت ہے نہ دین والے ۔

آپ نے شہرستان کی ملل دنمل سے جو صدیت نقل کی ہے وہ مرس ہے۔ مسلسلۂ اسناد فدکور نہیں اور ملا مرحلی وسید وصلان سے اپنی سیر توں میں کہا ہے کہ مرائیہ انسام سے موقع پر دسول کے نے کوئی مدیث ہی ارشا دہنیں فرائی ماکر بطریق المسعنت کوئ صدیت آپ کے بیش نظر ہو تو بیان فرائیے ؟

> مە جواسب مكتوسب

آپ نے برتبلیم کیا کرٹ کا مسامہ کے ساتھ مانے بیں صحابہ نے تاخیر کی اور باوجود بجہ رسول ملد دوانہ ہونے کا حکم دے میکے سننے وہ مرتبہ کے بہر ماکر میٹر کئے ۔اور آگے مانے بیک مستی کرنے گئے۔

آب نے بہ بھی تسلیم بیا کہ صحابہ با دجود کہ اسکامہ کی افسری کے منعلق مرکج احکام بی پیرس عبکے سے اور اپنی آئکھوں سے دسول کا ابتنام نمبی دکھے بچکے ستے میں بھر مجی انھوں نے اسامہ کے افٹر مقرر کیے جانے پراعتراض کیا۔ آب یہ بہی تسلیم کیا کہ صحابہ سے حصرت ابو بکر سے نواہش کی کہ اسکامہ کومع ول کردیا جائے۔ درا نے البکہ وہ اسکامہ کی افسری پراعتراض کرنے کا حش د سجھے بھے متھے کہ دسول کس قدر برہم ہو سے اور اس کی وجہ سے بخار کہ جا بیں سرمری پٹی با ندسے جادرا وڑھے باہر تشریعت لائے اور خطیہ فرایا ، جس بیں سرمری پٹی با ندسے جادرا وڑھے باہر تشریعت لائے اور خطیہ فرایا ، جس بیں

كي مان كي نقيباً لائ سه.

كيت بن اس كسوائي مم ساكباكها؟

ہیں نے یہ سیام کیا کہ بعد رسول صحابہ نے حصرت ابو کہ سے خواہش کی کہ رسول مولٹ روانہ کر رہے تھے اس کی مواٹ روانہ کر رہے تھے اس کی روانہ کی دوک دی جائے ، آب کو بہ بھی سیام ہے کہ جب سٹکر روانہ وا تو بہت سے صحابی خود رسول نے اسامہ کی ماتھتی میں رکھ کرمانے کا حکم دہا تھا وہ نشکر کے ساتھ وزیر کئے ۔

آب نے بیتمام باتیں سیم کمیں جس طرع مور فین و محدثین ارباب سیر اس کے معترصت بیں۔ آب ہے ہے ہی فرمایا اس کے معترصت بیں۔ آب ہے ہے ہی احترات کیا اور آپ نے بہتی فرمایا ہے کہ وہ اس میں محذور نصے۔ آب کے بیان کا فلاصر یہ ہے کہ انفول سے ان تمام امور میں ایسے فیال وفکر کی بنا پر اسلام کی مصلحت کو مقدم رکھا۔ حکم پینیم کی وجہ سے جوفر بینہ ان پر عائد ہوتا کھا اس کی پر واہ ذکی۔ ہم مجی تو یہی

موصنوع کلام بمارا آپ کا تربہی ہے کہ صحابہ رسول کا ہر بہ حکم بجبا لاتے تھے با تنہیں ۔ پہلے آپ بھنے کھے کہ صحابہ نے رسول کے ہرحکم کی با بندی کی اور میں یہ کہنا مختاکہ مہر حکم کی با مبندی ہنیں کی اب آپ کا اعتراف کرنا کہ ان ز مذکورہ) احکام میٹیر کی امعنوں نے اطاعت نہ کی ہمارے ہی قول کی آلیند

سے ہارا ہی کما ٹامیٹ ہوتا ہے۔ اب رہ گبایہ کم صحابہ معذور سننے بانہیں ، ان احکام کی تعییل زکرسے میں ان کا عذر صبح محقایا علاماس سے مجست ہی نہیں یہ موصوع مجست سے خارج ہے ۔ یہ موصوع مجست سے خارج ہے ۔

جن طرح آپ کویٹ یم ہے کے صحاب نے سرتی اسامہ کے معاملہ میں تکم پنے ہم پی کیشت رکھا اور ا بینے عیال میں سلام کے بیے جومفید سمجھتے تھے اسس کوترجیع دی اسی طرح آب بریمیوں نہیں سیم کر بیتے کدا میرالمومنین کی خلافت وجانشینی کے متعلق جس قدر ارشا واست رسول شف منبی تھر بھاس تھیں پنی بر کی غدیر تم کے موقع پر اخر وہ توک میں جانے کے دفنت وغیرہ وغیرہ اس کو بھی صحاب نے مفکرا دیا اوران کی نظریں خلافت کا جواہتمام اسلام کے بیے مفید تھا اس کومفدم رکھا ۔ حکم پنی بوکا ما ننا ھزوری نہا ااور اسٹے نظر برخوا دنت کو اس لام کے بیے بہتر مجھا۔

اسمام کے اسرمقرد کیے جانے پرمعتر منین نے جواعز اص کیا تھا ان ک مانب سے معذرت كرنے ہوسے كب بے فرايا ہے كدا كفول سے اس بيد اعتراص كياكه اسامه كمسس ننصا ورصحابه كمجه أدمعير كمجه بوراه متح ورادهم اور بورسے لوگوں کے نفوس کسی فوجوان کی انخنی وا اَ بعداری سے عاد ٹا گریزاں ۔ مونغ ہیں۔ ان کی نظرسن کا نقا مناہے کہ وہ کسی نوجران کے نابعدار زنبیں ۔ تو مہی باست آب ان لوگوک کے متعلق کیوں نہیں کہتے حبنصوں نے امیرا لموشین ک ملانسند كم منعلق نصوص ببغير كو كفكراد باءاس يبي كدعل كمسسن تصافح وان منقا دروه لوك ادريرا اورتبن سال براسم مقد الفول ف بعينه ايطر بوتشت وفا سند دسول ^سل کوکم سسن مجها ، خلا دسند اور سرداری فوج میں تو زین اسمان کافرق ہے۔ بیل ونہار کا تفرقہ ہے حبب مرف ابک حنگ کے موقع برصحاب کی نظر کیس اکیس کم سسن کی مانخنی و تابعداری نبول شکرسکتی تخیس تو زندگی بھرکے بیے دبنی معاملات میں ایک نوموان کی اطاعت و فرما نبرد اوی كيسے گواراكرسكتى تقييں -

علاوہ اس کے ہوآ سپ نے فرا یا ہے کہ برٹرسوں ک نظر مندکسی نوجوان کی تابعداری کوار نہیں کرسکتی تو اگر آ ہے نے مطلعیًا یہ فرا بابیے بیمطلع آب کا کر چھی بوڑھا ہو وہ نوجوان کی اطاعت پرتیار نہیں ہوسکتا۔ تو تطعی صبح نہیں کی کوئکہ کا ل اللہ کا صبح نہیں کی کوئکہ کا ل اللہ کی اسلامی کی تابعداری ہوکہی گریز بہیں ابعداری سے جس کی تابعداری ہوکہی گریز بہیں کرستے۔ کرتے ۔

جیش اسامه سے تخاف کرنے والوں کے متعلق وہ جونفرہ تھا جے علامہ شہرستانی نے بطورسلاست مرسلا تخریر کیا ہے بعنی : لعن ادالله من تخلف من حدیث اسامہ سے تخلف کرے اس پر جومیش اسامہ سے تخلف کرے " تومرسل ہی نہیں بلکہ بسلداسنا دمی یہ مدیث کمتیب احادیث والسیریں ندکورہے چنانچہ علام جوم ہری نے کتاب اسقیفہ میں اس مدمیث کو در نے کیا ہے میں انحین کی عبارت نقل مجے دتیا ہول:

" تال: حسد شنا احسمه بن اسحات بن صالح ، عن احمه بن سيار ، عسن سعيد بن كشيرالان صاري ، عن رجاله ومن عبد الله بن عبد الرحمان بدات رسول الله صلى لله عليه وآله وسلم ، في مسرون موته أمتر اسامه بن وبيد بن حارشة عسلى عبد بن ونيه جلة المها حبر بن والانصار ، منهم ، الوبكر وعمر وابوع بيدة ابن الجرائ عبد الرحمان بن عوف ، ولملحة والزبير ، وامره أن يغير على مؤتة حيث قت المباوه زبيد وأن يغزو يغير على مؤتة حيث قت السامة وتشات ل الجيش وادي فلسطين ، فتثات اسامة وتشات ل الجيش بنشاقله ، وجبعل رسول الله صلى الله عليه وآله بن مرصله ، في مرصله بنشل وميخت ويؤكد الغول في

تنفية ذلك البعث، حستى تنال لسه اسامة: سأجي اُنت و أنمي اسّأذك لي أن امُسكث أيّامأُ عنى يَشْفيك الله تعالى ، فقال: احسرج وسرعلى بركسة الله وفقال: يارسول الله إن أنا حنوجت وأنت على هنالحاله خدوبت وني تلبي نشرحة ، منقال ، سسرعلى النعس والعانية ، فقال بارسول الله ؛ إني أكرد أن أسساسل عنك الركسان ، فقال : انفذ لما امسرتيك سِه ، شعر اعنمي عملى رسول الله صلى الله عليه وآلسه وسلم و تنام أسيامسة فتجهز للخسروج . فلسما أنياق وسول الله مسلمانله عليسه وآله دسلم ، سأل عن أسسامة و البعث فأخبر أنهم يتبعه زدن - نجعل يتول: أَسْنَسْ ذُوا بِعِيثِ اسْأَمَةُ لَعِنَ اللَّهُ مِنْ تَحْلَفَ عِنْهُ ، وكُور خلث، نخدرج اسامة واللواء عسلى رأسسه والصعبابة مبين بيديه، حستى اذا كان مبالحبوت سنزل دمعه : ابوبكرا دعسند، وْاكْسَاؤُالمْهِاجِرِين، ومِسْنَا الْمِنْصَار: اسسية مِبْتُ حصنبيرا ومبشيرين سعد وعنيدهم من الوجوء نجاءه يسول أم أيمن يتول له : ادحنل نبان رسول الله يبوت فغنام مسن منوره ، مسدحتل المسدينة واللواء معد ، فنجاء بدهدى ركزه بباب رسول الله، ورسول الله تدمات في تلك السساعة ، انتسامى بعين لفظه. ملام جرمری کمنے ہیں کہ مجھ سے بیان کیا احدین سماق بن مالے نے

انفول نے احدین سیار سے شنا ، انفول نے سعدین کشر ال**ضاری سے ،**اکھول نے اینے بزرگوں سے ،اکھول سے عبدالتدين عبدالرحن سے كر دسول الشدے اپنے مرص الموس بين اسامهن زيدبن حارث كومردارفوع مغردك اس فون بس اكثرمع زين دبسب برين وانصار بتھے۔ معترست ابو بكروي، ابوعببده حسب إح ،عيدالهمن بن عوف، طلحية زمېروعنيره ادررسول خاسامه كوتاكيدكى كه موت يرح حالى كروجهال تمقاري باب زيدقتل كية كئ ونيزواد تلطبن میں بھی جنگ کرو۔اسامہ سے ذراسستی سے کام لیا -ان کی --تى دىكى كرنشكروا ئے تھى سىتى كرنے ملكے ـ دمول كى حالت برون مقى مبى بنائد مقى مراس مالت بير مجى ك ك روانی کے متعلق تاکید نرماتے رہے آخر کاراکام نے رسول کی خدمست میں ومن کیا کہ یا رسول اللہ مجھے اما زست مل سکتی ہے کہ بیں اتنے دن کھہر ما وُل کہ آسیہ کوصحصت ہولے ۔ دسول کے سے فرمانا: ما وروانه مو - فدا كى ركبت محقار مصما المال رسب -اسًامه نے کہا اگر میں اس مال میں اَپ کو چھوڑ ماؤں گا تومیرے ول میں گہرا زحم رسبے گا ۔ اس برآب نے فرایا : چل کھرے ہو خلائمنين عاضيت وكاميابي نفييب كرس يجراسام اليحومن كيا يارسول الله! مجه بربرت شاق ب كمين ما وك ادر أسنه میں ہرسوارے آپ کی نیرست بوجیتار ہوں - رسول فانوا میں نے جو مکم دیا ہے اسے پورا کرو۔اس کے بعدا تحضرت کو

عش اکیا ۔ اسامہ نے مانے کی تیاری شروع کی جبب رمول کو بوسس آیا تو آسی اسامداورات کرے سناق در مافت کیا لوگوں نے بتایا کہ وہ مانے کی تیاری کررہے ہیں۔ آب نے فرمایا. كرا مام كالشكرملددوان كرو . خدا لعنست كرست اس بر جو اسامد کے لٹ کرے ساتھ زمائے۔ بار باراسی فقرے کودمراتے د ہے۔اسامہ دواز ہوئے۔ رابیت بسٹ کران کے مربر ہمرار ہا مقاا درصماران کے اردگرد تھے بیبال کے کربب دینہ سے بامرمقام بردست برهيني تواسام الترييطست ان كے ساتھ ابو كرو عمرا وراكنز دما برب بھی تھے اور انصار میں سے اسید بن حصیبر اورسشيران معدوينيره جومعززين انصاريس سن مخفي استف میں ام این کا قاصد اسامدے پاس بینام نے کرمینجا کرملدی او رسول کا ونشنی آخرہے راسامہ فولاً اٹھ کھڑسے ہوئے اور مدینہ میں ائے۔ علم کشکر بھی ساتھ تھا اسے دسول کے درازے کے ماسنے نفسب کر دیا اور کھیکسسائی وفنت دمول ہے ونما سے انتقال کیا تھا یہ

یہاں ککسے مدیث کی اصل عبادمت مخی ۔اس مدیمیش کومورمیین کی ایک جاست نے بھی نقل کیا ہے جنانچہ ابن ابی الحدیدمعتز لی نے مشرح نہج الباہ غہ ملہ ۲ معنی ۲۰ پربھی اس مدیبٹ کو بخرپر فرایا ہے ۔

مكتوب منبر٧

سربراسامہ کے متعلق ہم لوگ طولان گفتنگویں بڑگئے مبیسا کہ وافتہ فرطاس میں اجھاخاصہ طول ہوگیا تھا۔ اچھا اب دیگر موارد کا ذکر منہ رمائیے .

س

جواسب مكتوسب

پیغیرگامکم کدمارق (دین نے کاجانے وابے) کوشت ل کرڈالو

احجاوه روابت ملاحظ فرائي بيعاملات اعلام اورى ثيب الم

ئے نکھا ہے۔امام احمد بن صنبل کے لفظوں ہیں مسند حباد س صفحہ ۱۵ پر ابوسع بد خدری کی مدیشے درج کی سیے :

" ابوسعیدخدری فراتے میں کدابو بکر رسول کی خدمست میں اسے اورعمن کی یا رسول استر میراگر رفلاب وادی سے ہوا میں تے والااكب وشفاشك وشماك اورمبب يعضوع وشوع واف انسان كو تماز يرصف ديجيا . رسول من فرايا ، فوراً ما واور اسے قتل کر ڈالو ۔ ابو کر گئے مگر حب اس شخص کو اس حال میں پایا بینی نماز برشصته موست توانخیس انجها نه معلوم مواکدا سے متن كري ريول كى خدمت بي لبث آئے . معزت نے عمر مع كماك تم ماؤاسة متل كراد حفرت عمرك اوران كوجاس کاتنل گارہ فہ ہوا۔ دسول مے پیس پیٹ اسٹے اور آ کریومن کی بارسول الله! میں سے اسے مہست، خشوع وخصوع سے مناز يرصف ديجها اس ي مجا حيامعلوم نهوا كرمين اس متن كروں داب درمالست ماكب نے حصرت علیٌ كومكم دیا كرتم جاؤ اورماکراسے من کر ڈانور حصرت عل کے گراسے پایانہیں ، حصرمن علی دسول کی خدمت بیں پلیٹے اور عرمن کی یا دسول اللہ س كيا تووه ما حيكا تفايس في استنهين ديجيها ومالتماك نے فرمایا۔ اس شخص اوراس کے احماب کی مالت بر ہوگی کہ وہ قران يرمين ك مروه ال كے كلے سے نيچ نہيں ازے كا، دین سے بول نکل مائیں گے جس طرح تیزیدت کے بار ہو مِنْنَا ہے۔ان کا دین میں والیس آ نا اسی طرح کا ممکن ہوگا جس طرح مپلاموا تیراسوفارمی پیٹ نہیں سکتا ۔ ایخیب نٹریننے کرڈالو کہ وہ بہترین ملائق ہیں "

اولیا کی اجبریا میں اس سے روایت کی (جبیساکدابن جرح علائی کی اصابہ میں ببلسلہ تذکرہ ذی الشرب مذکورہے):

« اس کمنے بیں کہ رسول کے زانے میں ایک شخص مقاجس ک عبادت واجنهاديرمه بب مدتعب هواكزنا تحاسم فسي ایک مزنبدرسول سے اس کا نام نے کر ذکر کیا رسول اسے مہیں پیچانا بہے ہے اس کے صفتیں بیان کیں بنب بھی آب نہ میجان یا ہے سم اس کے متعلق گفتگو کرئی رہے تھے کہ ناگاہ ومشخص آنا دکھائی دیا. ہم سے دسول کی خدمت یں عرض ک یارسولی استدیمی و مشخص ہے۔ آنخصرت کے فرا : مم لوک مجھت ابسے سخص کا ذکر کردہے ہوجس کے جبرے بر شبیطان کی رنگسند ہے۔استے میں وہشخص ہا لکل ساستنے آگیا اور اگر کھرا ہوا گرسسام نے کیا رسول اللہ نے اس سے فرایا میں تھیں خدا کی قتم دے کر توجمینا ہوں کہ تم جب مجمع میں سنے تو الم سے یہ بات کی متی کہ اوری قوم میں مجھ ميد بهزيا ففل كوئي شخص بنبير اس مع جها إن مجروه وإن سے مِل مُنازير عصد للكار رسول سے فرايا كون ہے جوماکر اس کو قتل کر آئے۔حفرت ابو بکر سے کہا۔ بین وس خدمت کے بیے ما عز ہول یارسول انٹد وہ اس کے باس بہنے و کھاکہ ما زیراد راہے معزت ابو کرنے کہ

سبمان امتركياب ابيي يخف كوقتل كردل جونماز برطعتاب ويول الشرنے يوجھا كہوكيا كر آسئے ۔ اكفوں نے كہا بيں سے يسند مہيں كياكه نماز برط صفے موئے اسے قتل كروں - آب نماز يوں كے مّن سے منع فرایکے ہیں ورول استرے پھر صدا بلندی کم کون ہے جواس کو قتل کرسے عصر سند عمر بوسے میں ماہر ہوں بارسول المند وه بهی اس کے پاس بہنے اور دیجھاکہ وہ اپنی بکشانی زمین پر دسکھے ہے بعی سجدے ہیں ہے ۔ حفزت عرشے سوما کہ الو کمر مجهست انفل می زحب انهول نا تنل بنین کیا تومین کید کون وه والسيطائ - رسول مع يوجهاكموكيا موا؟ حصرت عمد جواب دیاکس سے اسے اس مال میں یا یاکروہ اپنی پیٹانی فرا كرميدك بين ركه بوئ يد معاس كاتل كرا كواران موا۔ بھر مفرست نے آوازدی کون سیسے جواس کو تنل کرے ؟ مفرت على في كما - بن - رمول التدف فرمايا: إل بشرطيك وہ مخفاً رہے اِ تھ مجی گئے حصرت علی اس کی طرف رواز ہوئے مگر وال پہنچ کرد بجھاکہ وہ جاجبکا ہے۔ رسول اللہ کی خدست میں والیں آئے - رسول اسدے یو جھا کہوکیا خرے یومن کیا بإرسول الله وه جاجيكا عقاء رسول الله ف ارشاد فراياكه الر یر پخف آج قنل کردبا جانا تومیری امسند کے کوئی دوشخف کجی آئیں میں اختلات زکرنے یہ

مافظ محربن موسی شراری نے بھی اس مدیریٹ کو اپنی کتا ب بیں جسے انھوں نے مینٹورب بن سنبال ، مغاتل بن سلیمان، پوسعت فطان ، قاسم بن سلام معاتل بن حیان، علی بن حرب، السدی ، مجابد ، تعاوه ، وکیع ، ابن جریح وغیره کی تغییروں سے استباطاکر کے لکھا ہے۔ جناب علامه ابن عبد مربرة طبی بطور مسلمات اس روایین کامرسلا ذکر کیا ہے۔ جناب علامه ابن عبد مربرة طبی نے اپنی کتاب عقدالفرید مبلداول بین اصحاب انجوار کے صنی بین ذکر کیا ہے۔ اور اس مدین میں ذکر کیا ہے۔ اور اس مدین کے اختتام پر بر بھی مذکور ہے کہ حصر مت مرور کا مناسند نے فرایا اور اس مدین کے اختتام بر بر بھی مذکور ہے کہ حصر مت مرور کا مناسند نے فرایا کہ بیالا سینگ ہے جو میری امسند بین نکل دیا ہے۔ اگر نم اسے قتل کی کرفی بھی دو آدمی ایم اختلاف ندکر تے بنی امرائیل بہتر فرقوں بین سب کے میں ما بین کے موت بین مبایل گئے موت بین مبایل گئے موت بین جائے گئے سب فرقے جہنم بیں جائیں گئے موت سب عرف جن بین جائیں گئے موت ایک ایک فرق جن بین جائیں گئے موت

اس سے ملتی مبلتی وہ روابہت ہے جسے اصحاب سنن شے مفرست علی سے نقل کیا ہے کہ :

" وسول م کے پاس ذریش کے کچھ لوگ آسے اور انھوں نے کہا کہ اسے تھڑ ا ہم آب کے بڑوسی اور ملیعت ہیں۔ ہما دے خلاس بہ جس سے کچھ لوگ آسے ہیں وہ دین ہیں رخبت میں سے کچھ لوگ آپ کے پاس ہیں آئے ہیں وہ دین ہیں رخبت کو کھے یا نفذ ہیں رخبت ہونے کی وجہ سے آپ کے پاس ہیں آئے ملک ہماری جائزار واموال کی حفاظمت سے جان براے مجھا گے ہیں ان کو آپ ہیں واپس کر دیجے اس پر دسالت مآئے نے حفزت ابو کمرسے پوچھا کر نم کیا گہتے ہو۔ بوسے یا دسول انٹریہ ہے کہتے ہیں۔ اس پر دسول کے جہرے کا دنگ منت پر ہوگیا۔ بھر حفزت عمری طرف مرف پوچھا تم کیا ہے ہو ہو جہا تم کیا ہے ہو منت پر ہوگیا۔ بھر حفزت عمری طرف مرف پوچھا تم کیا ہے ہو

انفول نے مجی بی کہا کہ یہ ہے جی بیں بہ آب کے بڑوی ہیں بھر رسول کا چہرہ متنبر ہوگیا آن خصرت نے ارشاد فرایا: اے گروہ قرایش! شم بخدا نفذ دند عالم بقینا تم پر ایک الیے شخص کومبعوث کرے گا جس کے دل کا ایمان میں دہ اسخان نے جہاہے وہ تقییں دین پر ہاندھ کر رکھے گا ۔ ابو بکر بولے میں ہوں وہ یارسول انٹر ، آپ نے فرایا نہیں ۔ حصرت عربو نے میں یا رسول اسٹر! فرایا نہیں ۔ لیکن وہ ہے جوجوتیاں گانٹھ رہاہے ۔ رسول المٹرنے حصرت علی کو ابنی جوتیاں دی تقییں کر اسے گانٹھ دو "

مكتوب مكتوب

فالباً حصرت ابو بكرا ورغم دونول يسمجه كدرسول اس شخص كوتش كرنے كا جوام فرمار ہے ہيں وہ امر استحبابی ہے وجوبی نہیں اوراى وج سے وہ دونول حصرات قتل كرنے ہازر ہے ۔ يا انفول نے یہ خيال كيا كداس كا قتل كرنا ہے تو واجب ليكن واجب كفائی ہے اى وج سے ان دونوں حصرات نے يہ موبة كر ہم نہيں قتل كرتے تو دومر ہے لوگ تو قتل ہى كر ڈا ليس كے اس كوقتل ذك سبا كريم نہيں قتل كرتے تو دومر ہے لوگ تو قتل ہى كر ڈا ليس كے اس كوقتل ذك سبا كريم نہيں قتل كرتے ہے واس فرحیت کو انوان كواس بات اور حصرات ابو بكر و عرجب بغير قتل كيے پليط آئے تو ان كواس بات اور حصرات ابو بكر و عرجب بغير قتل كے بيط آئے تو ان كواس بات كا بھى انديش ہد نہيں اس كے بھائل جا ہے كی وج سے حكم مبنيم فوست ہو ما ہے كا بحق انديش مطاح تو نہيں مال سے مطاح تو نہيں مال سے مطاح تو نہيں مال سے مطاح تو نہيں

کیا تفا ۔

جواسبب مكتوسب

امرحقققاً وجوب ہی کے بیے ہوتا ہے اور سوائے وجوب کے ذہن میں اور کچر نہیں آتا الملااس کا استجاب پر حمل کر ناجب ہی میرے ہوسکتا ہے جب کوئی قرید بھی موجو د ہوا در بیباں کوئی ایسا قربند نہیں ہے جس سے پنہ چلا کہ یہ حکم استخبابی ہے بلکہ بہاں توابیہ قرائ موجود ہیں جو ناکیدی طور بر بناتے بیں کہ بہاں معنی حقیق مراد ہے ۔ بعنی وجوب مقصود ہے نہ کہ بچھ اور للبذا ہیں کہ بہال معنی حقیق مراد ہے ۔ بعنی وجوب مقصود ہے نہ کہ بچھ اور للبذا آپ ان احادیث کو ایک گہری نظر سے ملاحظ فرایش آپ کو معلوم ہوگا کہ ہم جو کچھ کہ دہے ہیں وہی ورست ہے ۔ منجلد اور قرائ کے دسول کھاس فقرہ بیر عفور کیمے :

ی اوراس کے اصحاب قرآن پڑھیں سے گرقرآن ان کے گلے سے بنج نہ اترے گا۔ دہن سے بول نکل جائیں گے مسلاح نیر ہدفت سے با رہوجا تا ہے۔ بہجران کا دین کی طوت والیں آبالیا ہی محال ہے جس طرح جے تیر کا بہر سوفار میں بیٹ آنا۔ لہنڈ اسے اچھی طرح قتل کر ڈالو۔ یہ برترین خلائی ہے "
نیز دسول الشرکا یہ جلہ مجھی ملاحظہ فرائے کہ:

« اگر پرشخص تمثل کردبا جانا تومیری است سے کوئی دو آدمی بھی باہم اختلامت نہ کرنے :"

اس فتم کے جلوں کے بعد تھی کوئی شکب باتی رہ مباہا ہے کہ رسول مکا ھی، حکم وجوبی تفاکد استعبالی -ابسی عبارت نو وجوب اور ناکید شدیدی کے کیلے

اسستعال کی جاتی ہے۔

اگرآپ منداحدین اس صریف کو ملاحظ فرایس تو آب کومعلوم ہوگا کہ رسول نے برحکم مناص کرحفرست ابو بکر کو دیا تھا۔ان کے قتل ندکرنے بریجر مخصوص طور برحصر منت بھر کو حکم مخصوص کرے دیا جائے تو واجب کعنائی کہو تکر موجا سے گا؟

علاوہ اس کے مدیث سے اس امر کی بھی هراحت ہون ہے کہ حصر سن ابو بکر وعرفے اس شخف کے تتل کو جونا پسند کیا وہ اسی وجہ سے کہ وہ بہمت خصوع وخشوع سے نما زبڑہ مربا کھنا ۔ فغط بہی وجہ بھی اور کول سیب قتل سے باز رہنے کا دیھا ۔ لہٰذا بی او بحالت نما زاس کو قتل کرنے کا مکم دنیا بیند کریں اور حصر سن ابو بکر وعرکو ناگار ہواس کو قتل ندکر کے تغییل مکم بنجیم کو مقدم نہ جھیں ۔

پس یہ وا نغریمی منجلہ ان شواہد کے ہے جن سے ثبوت ملیا ہے کہ بی حفرات ملک ہے کہ بی میں اسلامی منجر اسلامی میں می حکم بیغم پر مجالا نے سے اپنی وائے برعمل کرنا زیادہ مبتر سمجھنے تھے ۔ حکم بیٹم بی میں ان کی والے تھی۔ ان کے نزدیک کوئی و تعست نہ تھی ۔ بس جو کچھے تھا ان کا احبتہا و، ان کی والے تھی۔

ش

مكتۇپىنىروم

آب بننه موار د میان فرمائیے کوئی مورد چپوٹریے نہیں کہ مجھے دواہ آپ سے التجاکر نی بڑے ۔ طول موجائے توکو ئی مضائفۃ نہیں ۔ مس

جواسب مكتوسب

مقاماستجهالصحابہ نے *عکم پیغیز ریم*ل نهک

بہسنت بہتر؛ منحلہ ان مواقع کے جہاں محابہ نے مکم بیٹی پرکی نالعنت کی توسیّے :صلح مدیبہ میں مخالعنت کی۔ جنگ حنین میں مخالعنت کی جنگ

حنین میں مال غنیمت جو ہاتھ آیا اس کی تقیم کے وقت مخالفت کی، جنگ برکے قیدی میں حب سامان رساختم ہورکے قیدی سے حب فدید لیا گیا ۔ غز وہ تبوک میں حب سامان رساختم ہوگیا۔ اور فاقد کی نومت آن اور بہتر ہم نے بعض اونٹوں کے نخر کرنے کا مکم دیا اس وقت مخالفت کی ۔ جنگ اکرے دن احد کی گھا بٹول میں جو حرکت میں مرز دہویئن وہ بھی مرام حکم سیفری کی مخالفت کھی ۔

سرزد ہوئیں وہ بھی سرامرحکم سپتمبر کی مخالعنست بھی ۔ ابوہرمیہ واے دن مبب انخفرست سے خوشخبری دی بھی ہراسس سٹخص کو جوخداسے موحد بن کرملا قاست کرے سنا فق کی مبیست پرنما ذہر لمیضے

کےروز -

حس وزکواہ کی در نوں آستوں ہیں۔ تہرے طلان کی آست میں تاویل کرے مخالعنت حکم سینچہرکی گئی۔ نوائل تہر رمضان کے منعلق جواما دسیشے پینچہ وارد ہیں ان میں کیفیت و کمیٹا تاویل کرکے مخالفسنت حکم مینیٹرکی گئی۔ کمینیت ادان جو سینچہ برے شغول ہے اس میں تغییر کرکے حکم پینیسراکی کی مخالفت کی گئی۔

مازجازہ یں پیزرے متنی تکبیری کہنے کا حکم دبا تھا ان کی تعدادیں کی سیشری کرمے حکم سنجیبر کی مخالعنت کی گئے۔

عُومِن کہاں ایک ذکر کیا جائے بکڑت موارد ہیں جہال مکم پینیر کی مرکبی مخانف میں پینیر کی مرکبی مخانف کرنا ۔ مرکبی مخانف کرنا ۔ مقام ابرائ میں دسول سے جو باتین ظہور بذیر ہو بین ان پرلب کتائی اور جیسے مساوں کے گھرکو مسبوس ملالینا ۔

ابوتراسش ہذگی کے دنبہ کے بارے میں بینبوں کے خلاف منھیلہ کرنا اور جیسے نھربن مجاج سلمی کو جلاوطن کرتا۔ حبسدہ بن سیم پر حار مارى كرنايه مهدا كامون پرتكان كانكانا -

کفیبت ترتیب جزیر ، مٹورئ کے ذرائعہ خلانسن کے مشار کو طے کرنا۔ مخصوص طریقے سے راست کو گھومنا ، لوگوں کے بھید لینا ، ان کی جامومی کرنا ، میراست جی عول ونعصیب ، اس کے علاوہ اور بے شارموار و جیں جہاں صحاب نے حکم بیمبر کو ٹھکرا دیا - زبر کستی سے کام لیا ۔ مصالے عامہ کومپیس نظر سرد کھا۔

ہم ہے اپن کتاسب سبیل الومنین بیں اکیس ستقل باب اس کی مذرکیا ہے ۔

امن کے ملا وہ اور بھی کمچھ ایسے نفوص ہیں (نفوس ملانست و الماست کے علاوہ) ہو مناص کرا میرالمومنین اورا ہل مبیت طاہرین کے متعلق وار دہوئے اوران نفوص پرصحاب نے عمل نہیں کیا بلکدان کی مخالفت کی صندیر عمل کیا جیسا کہ تلامش وتخبسس سے بند عبارا ہے۔

ظاہرہ کردب صحابہ نے ان تقوص پرعل بہیں کیا جوخلا نست کے سنعلق کنے ۔ بلکران تقوص کی من مائی کا ولیں کیں توان نقوص پر وہ کب عل کرسکتے تھے ۔ حسطرے خلافت کے سنعلق تقوص ہیں انتقوں نے ناویلیں کیں اپنی دائے ہ اجتہاد پر عمل کرنا اطاعت بیغیر کرنے اور مکم بیغیر ما نئے سے بہنر محجا اس طرح ان تقوص ہیں بھی اپنی واسٹ کو ترجے دی ۔

نے ملاحظ فرایے طبقات ابن سعد میں حالات حفزت عرجس سے آب کومعلوم ہوگا کی حفرت عمر تعجیدہ پرسب کمی ہے اس کے جرم کی گواہی مجی خدی اور نسوا سے ورقہ سے کوئی اس سے جرم کا حری بی تھا عدمادی فرادی مخی اس برکسی ہے اشغار مجی کہے جوابن معد نے مکھے ہیں ۔

مكتون منبر.٥

صحابه كامصلحت كومقدم عجمنا

کوئی باقیم دہمیرت اس بیں شک بہیں کرسکتا کرصحابہ نے ان متسام موار د میں عربی احکام سینے ہوئی العنت کی اور اپنی رائے واجبہا دکو ہم ہر سمجھا تواس میں ان کی بہت خواب نہ تھی بکیمصلحت عامہ کے خیال کے تھوں نے ایسا کیا۔ کیونکران تمام موار د میں ان کا مقصود یہ را کرامت کی جس میں سمجلائی زیادہ ہواور ملسن اسلام کے لیے جو زیادہ ہم تر ہوشوکت اسلام جس سے زیادہ بڑھے وہ کرنا چا ہیے۔ لہذا انھوں نے جو کچھ کیا اس میں ان پرکو ئی جرم عائد نہیں ہوتا۔خواہ وہ احکام سیقیم نہ کہا لائے ہوں۔ یا ان میں تاویل کے مرتکب ہوئے ہوں۔ بہرحال ان سے کوئی مواضعہ نہیں کیا جاسکتا۔

بانى موار دكى تفريج براصرار

ہم نے آپ کو زخمت دی مقی کدان تمام موارد کا ذکر فوائے جہاں صحاب نے پینیز کی مخالفت کی اپنی خودرائی سے کام بیا۔ آپ نے جواب میں مہمت کچھ موارد ذکر فرائے مائی سلسلمیں آپ فرائے ہیں حصاب علی اورا بلبیت طاہری ایک متعلق نصوص خلافت کے علادہ کچھ اور مجی نصوص بینجمبر نے فرائے اور جس طرح صحاب نے نصوص خلافت کو مظار دیا ای طرح ان نصوص خلافت کو مظار دیا ای طرح ان نصوص کا بھی نفید الا ذکر فرائے ۔ ان نصوص کو بھی نہ مانا کاش آپ ان نصوص کا بھی نفید الا ذکر فرائے ۔ مس

موصنوع كنت سے بام مروحانا

آپ نے تیلم کیا کہ ذکورہ بالا موارد بیں صمابہ نے پیٹیم میل کے تفوی کی مخالفنت کی۔ ہمارے کل بیانات کی آپ نے نفدین کی خالحوں نے مصلحت آپ کا پر کہنا کہ ایسا کرنے ہیں ان کی تیت اچھی مخی اورا کفوں نے مصلحت عامہ کومقدم سمجھا۔ وہ مہیشہ امست کی تعبلائی اور ملست کی بہتری اور شوکت اسلام کی ترق کے خوام شفد درہے۔ یہ توسیب محل بحث سے خادج ہے ہی سے آپ بھی ان کا رہنیں کر سکتے۔

آبپے نے دریا منت کیا تھا کہ صحابہ سے کمپ مکم مبیزیم زمانا اوراپنے لجہ تا وراسے پرمپلنا بہتر مجا ہم ہے دہ مقابات ذکر کرفیے ادراکپ نے مان بھی لیا اب ره گیا یه که ایخول سے کن وجوه سے حکم پینیم نه مانا عمم سپیم نه المنظ بین ان کی مزیت انجی تھی که بڑی اس کا کوئی سوال نہیں .

معقوب گای کی آخری سطرول میں خواہش کی ہے کہ میں ان نصوص کھیل ذکر کروں جوخصوصیت سے امرالمونین کے متعلق وار دہوئے میں اور جوان نصوص کے علاوہ بیں جوخلامنت سے تعلق رکھتے ہیں ۔ آب اس زمانہ میں امام سنن ہیں ۔ تمام سنن وا مادمیث کے جامع ہیں ۔ احادمیث وسنن کی تلامش و تحقیق میں آب نے بڑی محقیق کی ہیں لہٰذاکسی کو یہ وہم و گمان مجی تنہیں اور ندکسی کو یہ خلط ہی ہوسکتی ہے کہ وہ میرے اشارے کو آب سے زیا وہ سمجننا ہے ۔

تَنتَن بين إبكا مدمقابل كوئي بوسكتاب ؟ أب كاكوني جواب بن

سكتا ب ؟ مركز نهين -اصل بات يه جه كركس ف يح كها جه :

" وكسع مسائل عنن المسبود وهوعالع "

· بببت سے لڑک مانے بہم انتے ہو سے کس شے کے متعان

دریانت کرتے ہیں۔"

آب یقنیا جائے ہوں گے کہ بہترے صحابہ حفرت علی سے مینفی رکھتے تھے آپ کے دہمن ستھ دائفوں نے مفرت علی سے جوان اختیار کی آب کو اذہبیں دیں ،سب کوشتم کیا ،آب پر نظام کیا ،آپ کے والعین بنے ،آپ سے جنگ کی ۔خود آپ پر اور آپ کے اہل مبیت ایکاس سے جنگ کی ۔خود آپ پر اور آپ کے اہل مبیت ایکاس زانے کے بر دگوں کے مالات دیکھتے سے بریمی طور برمعلوم ہر اہے۔ حالاتکہ رسول اللہ نے فرایا تھا :

، حب نے میری اطاعت کی اس نے خداک اطاعت کی جس نے میری نافرانی کی اس سے خداک افاقت میری نافرانی کی اورجس سے علی کی افاقت

كى بقيناً اس نے ميرى اطاعىت كى اور حس نے على كى نافرمانى كى بے شکس اس نے میری نا فران کی "

نیز آنحفرت نے فرایا:

" جس نے مجھ سے مدل اختیار کی اس نے خدا سے مدائی اختیا ر ک اوراے عل انم ونیا میں سردار ہواور اکرست میں سروار ہو تم سے محبسن رحکھنے والا مجہ سے ممبست رکھنے والا ہے اور مجے سے محبست رکھنے والا خدا سے محبہت رکھنے والا ہیے ۔ اور بمخالا دئمن میرا دخمن اورمیرا دمثن خدا کا دمثن ہے اور الماكت اس كے بيے جوميرے لعدتم سے بعض ركھے يا

یر مجی آسید نے فرمایا:

* حس نے علی کودسشنام دی اس نے مجھے دسشنام دی اور ص نے مجھے دسشنام دی اس سے خدا کو رسشنام دی ا

يهمي آت تے فرايا:

حیں نے علی کو اذبیت وی اس نے مجھے اذبیت دی اور حیں نے مجھے از مینت دی اس سے خدا کو اذمیت دی یا

یہ مجی آب نے فرایا :

" حیں سے علیٰ کودوسسنٹ رکھا اس نے مجھے ووست رکھاا در جِي نے علیٰ سے بنفن رکھا اس نے مجھ سے بنفن رکھا " یہ مجی آئی نے فرمایا کہ:

ا سے علی اتم سے وہی محبت کرسے گاجوموس ہو گا اور تحقیب وی دشن رکھے گا جو سنافت ہوگا یا

يمين اب نے فرايا:

" خوایا تو دوست رکھاس کوجوعلی کو دوست رکھے ، زشن رکھ اس کوجوعلی کو دشن رکھے ، مد د کر اسس کی جوعل کی مدد کرے اور ذمیل دخوار کر اسس کوجوعل کی مدد ترک کرے !' ایک بار انخفارت کا نے معارست علی جناب سیّدہ اور حسن وصین کو

دىچە كەخرايا :

میں جنگ کرنے والا ہوں اس سے جوتم لوگوں سے جنگ کرے اور مجم صلی ہوں اس کے لیے جوتم سے صلی کرے یہ اور حب آپ نے ان حضرات کو جادر میں میا تھا توسٹ رہا یا : « بیں بر مرم بکیار ہوں اس سے جو ان سے بر مرم بکیار ہو اور محم صلی ہوں اس کے لیے جوان سے صلی کرے اور دشن ہوں اس کا جو ان سے وشنی ریکھے یہ

امی طرح کی بے شار امادیث وسنق ہیں جن ہیں سے کسی ایک کو بھی مہتیرے صحابہ نے نہیں مانا کسی ایک پر مجی عمل نرکیا، بلکہ اپنے ہوا وہوس کو مقدم سیجھتے ہوستے اور ذاتی اغراص کو ترجیح وسینتے ہوسئے ان تمام احادیث و سنن کے خلاصت و صند برعمل کیا ۔

ارباب بھیرت آبائے ہیں کہ تمام سنن واحا دیث جومفرت علی کی فضنیات و بزرگ میں وار د ہوئی ہیں وہ شل انفیں حریجی نصوص کے ہیں جواکب کی موالات کے واحب اوراکب کی مخالفنت کے حرام ہونے کے منعمت وار د ہوئی ۔ دونوں فتم کی حدیثیوں کا ایک ہی مطلب ہے ۔ کیونک والی حتی کی حدیثیں حدید ایک باست بردالات کرتی ہیں اور وہ یہ کہ خداور مول کے حتی کی حدیثیں حرف ایک باست بردالات کرتی ہیں اور وہ یہ کہ خداور مول کے

نزد کیک آب کی قدومن است بهبت ہی جلیل ،آب کی شان بہت ہی عظیم اور درجہ بہبت بلندے ۔

م عان اما دریت وسنن میں سے بہت کچھ انبدائ خطوط میں ذکر كي اور ونيس ذكر كي وه ب عدوحاب بن ان لوگول بين سے جن كى تكاه سنن واما دييت ميس بهت وسيع ب اوران ك معاني ومطالب بجي پوری طرح ماسنے ہیں اکب ہی انھانسے فرایس کہ ان اماد مبت وسنن يس كوئى اليى مدرب بهى بى جوامى المومنين اكم مخالفنت وعداوست اوراب سے جنگ کرنے کی امازست دہتی ہو۔ آسپ کی ایزار سانی ، آپ سے بنعق و عدادت مائز قرار دین مو- آب کی سخ من مظالم کے پہار کی اے مرمرمبر أسي كومرا معلا يكف كو مناسب بناى موادر شاسب بى مبين بكر محوا در عيب کے دونؤل حفلبول کے لیے سنست قرار دیتی ہو۔ ہرگز بنیں اور قبلغانہیں لبکن امل باست برے کرجولوگ ان با تول کے مراکب ہوئے انھول نے ان احادیث کے باوجود ان کے بکٹرست اور بتواتر ہو نے کے ذرہ برار برواہ نہیں کی ۔ان احادیث بیں سے کوئی مدیب کھی سباسی اغراض پوری کرنے ہیں ان سے بيلے مانع زبهوسکی په

ره لوگ ما سننے تھے کہ حفرت علی دسول کے مجائی ہیں ،آب کے ولی ہیں ، ولرت ہیں ، ولرت ہیں ، ہراذ ہیں ،آب کی حلات کے مرکز دہ ہیں آب کی امت کے ہادون یمیں ۔ آب کی ہارہ مگرکے کھو ہیں ۔ آب کی ذریت کے باب ہیں اوران تمام لوگول میں سب سے بہلے اسلام لانے والے ہیں ۔ سب سے زیادہ عمل خاص الا بمال ، سب سے زیادہ عمل مطحة والے سب سے زیادہ عمل کرنے والے سب سے زیادہ عمل کرنے والے سب سے زیادہ لیتین میں مجتز اسب

سے بڑھ کراسلام کی خاطر مشقت جیلنے والے ، بلاک بیں سب سے زیادہ عمرگی سے تابت قدم رہنے والے ، سب سے زیادہ دفعنا کل ومنا نسب کے مالک اسلام کے سب سے زیادہ دفعنا کل ومنا نسب کے مالک رکھنے والے ہیں۔ رفتار گفتار ، اخلاق وعادات تمام باتوں ہیں سب سے زیادہ رسول سے قرابت مرسول سے مثابہ ہیں ۔ قول و دخل اور خاموثی میں سب سے زیادہ مہر وافعنی میں دیکن ذاتی اغرامن ہی ان لوگوں کے بیے سب کچھے متحے ، ہردلیل بیمن مرسی متعے ۔ بردلیل بیمن مرسی متعے ۔ بردلیل بیمن مرسی کے متعے ۔ بردلیل بیمن مرسی کومندم مجھیں توکوں سا تعجب ہے ۔ حدمیت غدیر کونہ ما بین اور مقکرا دیں اور ابنی دلئے فقط ایک مدریت ہے ۔ حدمیت غدیر توان ہے شارا حادیت ہیں سے فقط ایک مدرسول میں اور جہالا کر مسال نے جانا اور میں اور جہالا کر درسول میں میں دیا ہو جہالہ کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ جیکے اپنی راسے واجتہاد کونز ہے دی ، اپنے مصام کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ جیکے اپنی راسے واجتہاد کونز ہے دی ، اپنے مصام کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ جیکے کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ جیکے کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کی دیا ہوں کو مقدم کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کیں کہ میں کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کیسے کیا کہ کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کومقدم کومقدم جانا ۔ حالا تکہ رسول میں کہ میں کومقدم کومق

میں تم بیں ایسی چیز مجور سے جانا ہوں کہ اگر تم اس سے متسک رہوگ توکبی گراہ نہ ہوگے۔ ایک تو کتاب خلاہے دوسرے میری عترمت و المبدیت "

پنبیب شرقے بیرتھی فرایا تفاکہ:

« میرے المبسیت کی مثال مخفارے درمیان ابسی ہے جبسی کمشنئ نوع ، جوکسٹن نوع پرموار ہوا وہ نؤ بچا اورجو نرموار ہوا ہوا ہوا ہوا ہے

ر متھارے درمیان میرے المبیت کی مثال ایس ہے جین بی ارائی کے بیے باب حظہ ، جواسس میں واخل ہوا خدانے اسے مخبی دیا ۔"

نیز به تمبی نرمایا نخاکه :

" ستارے روئے زین کے باشدول کے بیے امان ہیں غرقائی سے
اور میری عنزت واہل میت میری امست کے بیے اختلات سے
باعث امان ہیں ۔ بیں اگر کوئی فنبیلہ قبائل عرب سے میرے المبیت کا محاصف ہوگا تو وہ المبیس کا گروہ بن جائے گا !"
کا مخالعت ہوگا تو وہ المبیس کا گروہ بن جائے گا !"
اسی مبیری اور مکبڑسٹ مبیح مدیثین ہیں جن کومعاب نے مانا مگر ان پر عمل بیرا مدیدی۔ نہوے۔

مكتوب مبراه

حضرت على في رُزِسق غابني خلافت على الشيني كي احاد سيث سے است عاج كيوں نەمن رمايا؟

حق بنوبی واضع موگیا - خدا کاسشکرہ - البندایب اس ره گئ جس سے ذرا اشتباه باقی رہنا ہے اس کی نقاب کشائی جی ذرا اشتباه باقی رہنا ہے میں اس کا ذکر کرتا ہوں تاکہ آب اس کی نقاب کشائی جی قربایش اور وہ یہ ہے کہ حصر سن علی انے سفنیفہ کے دن حصر سن ابو کمراوران کی ہمیت کرنے والوں کے ایکے اپنی خلانسند و وصاببت کے متعلق کو کی نفس بھی سینسی ہیں گئی ہیں کہ کیوں ؟

جواسب مكتوسب

استسجاج نہ کرنے کے دجوہ

ساری دنیا جائی ہے کہ ترق حصرت علی سقیفہ ہیں موجود تھے اور زہ ہی کے مانے والوں میں کو ل) ایک بھی تھا۔ خواہ وہ بی ہائی سے ہوں یا غیر بی ہائی ۔ کوئی بھی نہ تو بیعیت کے و تعت موجود تھا اور نہ سفیفہ کے اندر ہی گیا وہ تو یا لکل اگل تھا کہ سنت کے و تعت موجود تھا اور نہ سفیفہ کے اندر ہی گیا معنت ترین مصبیبت نازل ہوئی تھی اسی میں مبتلا تھے ۔ آئی خرستا کے عنل کوئن کی معنت ترین مصبیبت نازل ہوئی تھی اسی میں مبتلا تھے ۔ آئی خرستا کے عنل کوئن کی فکر میں ہوئی اس و قت انحین کسی اور بات کا دھیان میں نہ تھا بیہا تاک کے حب سفیفہ والوں نے اپنا کام کرلیا تواب انھوں نے سبیت کو پہنتہ کرنے کا تہیں کی اور معند واکر سے بیا اور خلافت کی ترین موسیق کی اور معند واکر سے تعدد خلافت کو میروہ فعل و تول جس سے ان کی مجبت کی۔ ور ہوسکتی یا ان کے عفد خلافت کو میروہ فعل و تول جس سے ان کی مجبت کی۔ ور ہوسکتی یا ان کے عفد خلافت کو میروہ فعل و تول جس سے ان کی مجبت کی۔ ور ہوسکتی یا ان کے عفد خلافت کو میروہ بھانے کے بیدا ہوتا یا بیا کرلیا .

توامیالمونین کوسنیفه اورمیبیت ابی بکرا درمیبیت کیسے والول سے تعلق بی کیا تھا تاکہ ان پراکپ احتجاج فرائے اور وہ بھی حب کہ میجیت ہو جانے کے بعد حکومت کے کرتا دھرتا ہوری احتیاطی تدابیر کام بیں لارہے تھاور ادبامپ تومت وافتذارا علانیہ جروتشد دیرمت، رہے۔شنے۔

آئید ہی فرائیے آن کل اگرکوئی سخف مکومنت سے میکر لینیا چاہیے سلطنت

کاتخنة المن پر آماره موتوکیااس کے لیے آسان ہے اور کیا ارباب مکومت اس کواس کے مال ہر کا ارباب مکومت اس کواس کے مال برحمور دیناگواراکری گے۔ ہر گزنہیں اور قطعاً نہیں -ای طرح اس زمانہ کا آجل کے زمازے اندازہ کیجے۔

اس کے علاوہ آمیرالموسنیٹ سمجھ رہیے تھے کہ اب اگر ہیں احتباج مجی رہیے تھے کہ اب اگر ہیں احتباج مجی کرتا ہوں توسوا فنت وضاد کے کوئی فا مدہ ماصل نہ ہوگا اور اس فارک قت میں حق تعنی کہ گوارہ معنی لیکن ہے سی طرح منظور نہ تھا کہ فتن وضا درباہ ہو کہ امیرالمومنین اسلام برائج آنے دینا نہیں چاہئے تھے نہ کار توحید کی بربادی آپ کو گوارہ محنی مبیا کہ ہم گرسٹ داورات میں بیان کرچکے ہیں کہ آپ ان دون ایسے شدید ترین مشکلات سے دوج اور تھے کہ سی شخص کو مجی ان مصابح ومشکلات کا سامنا نہوا ہوگا۔

آپ کے کا ندھوں پر دو بارگاں تھے .ایک طوت تو خلا منت تماہم میں دصایا ہے بینی برائمیت دل کو خون کر دینے والی اواز اور عگر کو جاک کردینے والی اواز اور عگر کو جائے ہائے دیتی کردینے والی کواہ کے ساتھ آپ سے فریادی تھی ایک مختی دومری طاف فنند و فسادے اُسٹے ہوئے طوفان منتاثر کر لیسے تھے جزیراں کے باتھ سے فکل جانے کو اندلیث بھا ۔ مدینیا اور ایس کے منا فقین جو برط سے بن سے اکھڑ جانے کا اندلیث بھا ۔ مدینیا اور ایس کے منا فقین جو برط سے مرکزم میازی تھے ان کی طرف سے فنند و فساد ہر با ہو نے کا بڑا خطوہ لاحق تھا کرونکہ میازی تھے ان کی طرف سے فنند و فساد ہر با ہو نے کا بڑا خطوہ لاحق تھا اور اسلان کی حالت باکل اس تھیٹر کم جو بعد ان کا اثر مدبت برط صاحاً آ کھا ادر سالمان کی مالت باکل اس تھیٹر کم جو بی ہودی تھی جو جاڑے کی ادر سالمان کی مالت باکل اس تھیٹر کم بی جو بی ہودی تھی جو جاڑے کی سارک واقوں ہیں تھیٹر لیوں اور وحنی در ندول میں بھیٹری جو سے سے سارک راتوں ہیں تھیٹر لیے صوبو سے مسیلم کے ذاب ، طابع بن خو بلید ، سجاع بنت حریث ایسے صوبو سے مسیلم کے ذاب ، طابع بن خو بلید ، سجاع بنت حریث ایسے صوبو سے مسیلم کے ذاب ، طابع بن خو بلید ، سجاع بنت حریث ایسے صوبو سے مسیلم کے ذاب ، طابع بن خو بلید ، سجاع بنت حریث ایسے صوبو سے مسیلم کے ذاب ، طابع بن خو بلید ، سجاع بنت حریث ایسے صوبو سے مسیلم کے ذاب ، طابع بن خو بلید ، سجاع بنت حریث ایسے صوبو سے مسیلم کے ذاب ، طابع بن خو بلید ، سجاع بست میں جو شابھ کے دیشوں کے دیں میں جو بلید ، سیال کے دین واق کے دین ان کی میں کے دین کر بیٹ کے دین کی کے دین کی کو کی کو کی کے دین کے د

مدعیان نوت پیدا ہو چکے سفے اور ان کے ماننے والے اسلام کومٹانے
اورسلمانوں کی تباہی دربادی پرتے ہوئے سفے قسے دسے دکسری وعیرہ تاک بیں
تھے بنوئ اوربرت سے دشن عناصر جو محد وال محد اور بروان محد کے خون
کے پیاسے سفے ملت اسلام کی طرف سے خار دل میں رکھتے سفے ۔ برلا اللہ محم وعفتہ اورشد پدیفن وعناد در کھتے سمنے ، وہ اس فکرس سکھے کہ کسی طرح
اس کی بنیا و منہدم ہو جائے اور برا اکھر جاسے اور اس کے لیے برلی تیزی اور سرگری ان میں بیدا ہو جکی متی ۔

وہ سمجھنے ستھے کہ ہا ری اکرزویش برایش رسول کے اٹھ مانے سے موقع اتھ اللہ اس کے کہلت موقع التی الدرنبل اس کے کہلت اسسالامید کے اسور میں نظم بیدا ہو، حالات استوار ہوں اس مہلت سے پوکنانے ابتے ۔

سے کام بینے تو آپ کی مجسند پوری زہوتی اور زشیعیان امیالمونیں کے لیے کوئی اور دشیعیان امیالمونیں کے لیے کوئی اور سے منابل ہوتا ۔ آپ نے اپنے حق خال منت کی اور اپنے حق خال منت کو کمی محفوظ رکھا . خلامنت کو کمی محفوظ رکھا .

اورحیب آپ نے دیجا کہ اسلام کی مفاظمت اور دیمنوں کی دیمنی کا جواب موجودہ مالاست کے اندرصلی واشنی پر موقومت ہے توخود مصالحمت کی راہ لکالی اور امعن کے امن وامال المسند کے امن وامال المسند کی مفاظمت اور دین کوع زیز رکھتے ہوئے انجب م کو کا خاذ سے بہتر سمجھتے ہوئے اور مرح فاظمت اور دین کوع زیز رکھتے ہوئے انخا کہ جو رکا خاذ سے بہتر سمجھتے ہوئے اور مرح فاظم اے ۔ آپ نے مکام وقت سے صلیح کو کا در ایس مقدم رکھا جائے ۔ آپ نے مکام وقت سے صلیح کو کہ کہ اور اس مقدم رکھا جائے ۔ آپ نے مکام وقت سے صلیح کو کہ کہ اس وقت کے مالاست کو اور اس مقائے یا جمعت و تکوار کرنے کے منحل نہ منعے ۔ ایس ایس میں نہیں کہ آپ کے وقع ہوئے اور آپ کے حلفہ گوسٹس علمار آپ کے وحی ہوئے اور آپ کی وصایمت وجائی ہے مفاق جوم ہی ارشا داست پنجر ہیں ان کی تنہینے واشاعت کی وصایمت وجائی کے میں بڑی مکست سے کام بالکے ۔ جبیا کہ ظامل و تجب سے سے نہ ماہا ہے ۔ میں بڑی مکست سے کام بالکے ۔ جبیا کہ ظامل و تجب سے سے نہ ماہا ہے ۔

مكتوكنمبريه

حصزت على نے کے احتجاج فرمایا ؟

امام ٹے کہ احتجاج مسنسرمایا - آب کے آل واولاد ، آپ کے دوستدارول نے کن مواقع پراحتجاج کیا ۔ مہیں بھی بتائیے ۔

جواسب مکنونسپ

حصرت على اورآكي شيعه كااحتجاج المام الدان فوس اورارشا داسب بنيم كي نشروا شاعت مين ومنم يرا

کے آب کی وصابیت و خلافت کے متعلق فرائے تنے بڑی دل میں سے کام کیا ۔ چونکہ اصلام کی حفاظ سنہ جان سے بڑھ کر عزیز بھتی اور سلمانوں کے شیرازہ کا بھترناکسی طرح منظور زیخا۔ اس بیے آب نے بنصوص کا تذکرہ کرے ا پنے وشنوں سے حجاکہ امول نہیں لیا ۔ چنانچہ آب نے اپنے سکوست اختیار کرنے اوران نازک مالات میں اپنے عن کا مطالبہ نہ کرنے کی معدرت بھی بعض واقع برفرائی ہے چنانچہ فرائے ہیں ۔

• کمی انسان کواس وجہ سے عیب دہیں لنگایا جاسکتا ہے کہ اس سے اپنے حق کے ماصل کر نے میں دہرکی یعیب نواس وقت انگانا چاہئے جب النبان حق نہ رکھتے ہوئے زہر کسنی کسی چرز کوماصل کر ہے ؟

آپ نے نصوص کی نشر واشا عست میں ایسے طریعے اختیا رکیے جن سے حکمست کا پورا بورا منطام و ہوا۔ یا دکیجے۔ رحبہ والا روز جس دن آپ نے اسے ایسے ذباز خلا دنت ہیں لوگوں کو کو ذرکے میدان میں جمع کیا آگر خدیر کی یا د دلائی جائے۔ آپ نے لینے ضطر میں ارشاد فرایا :

" میں ہرمر دمسلمان کونتم دینا ہوں کہ جس کے غدیر خم میں اسپنے کانوں سے دسول کواعلان فرمائے شنا ہو وہ اُکھ کھڑا ہو۔ جو کچید سنا تخااس کی گواہی دے "

ا و آب کے یہ کہنے پر ننیں صحابی اٹھ کھر اسے ہوئے جن میں بارہ تو ایسے تقعے جو جن میں بارہ تو ایسے تقعے جو جنگ بدر میں مثر کیاسی دی جے جنگ بدر میں مثر کیا ہی دی جے انھوں مے خود اپنے کانوں سے رمول می کو ارشاد فرمائے سنا بھا۔

اس ناگفت بریرا شوب زائے میں حب كرحفرت عثان كے قتل اور مرو

شام ہیں فنند ونساد جاری رہنے کی وجہ سے فضا خراب بھی۔ زیادہ سے
زیادہ امبرالمومنین ہیں کرسکتے تھے اور رہی اُپ نے کیا۔ واقع ہے ہے کانہا اُل
ممکن صورست جواس و تسندا حقائ کرنے کی ہوسکتی تھی حکمت کے تمام
میہ وسنجھائے ہوئ وہ ہی تھی۔ کون اندازہ کرسکتا ہے امبرالمومنین عے
میرالعقل حکیما ندھ زعل کا کہ حبب ونیا عدیث غدیر کو بھولتی مباری تھی اور
تیریب تھا کہ کسی و مانع ہیں اس کی یا دہمی ہاتی ندر ہے آپ نے بھرے مجمع
تیریب تھا کہ کسی و مانع ہیں اس کی یا دہمی ہاتی ندر ہے آپ نے بھرے مجمع
سے کسس کی گواہی دلوا کراسے حیات تازہ کہنی اور رحبہ کے میدان میں لماؤں
کے سانے غدیر تم کے مونع پر رسول ہے۔ اہتمام کی نصو کرنسی کرے وہ نظر
یاد ولا دیا جب رسول ہے ایک لاکھ میسیس ہزار سلمالؤں کے درمیان بالائے
منبر حضر ست علی کا ہاتھ کی طرکر بلند کیا اور بورے مجمع کو دکھا کر بہنوا کر ارشاد
منبر حضر ست علی کا ہاتھ کی طرکر بلند کیا اور بورے مجمع کو دکھا کر بہنوا کر ارشاد
منبر حضر ست علی میرے ولی ہیں ۔ اسی واقعہ کے بعد مدر بیٹ غدیر امادیث بولیا تھا کہ بہنرین مصدان بن گئی۔

آب بؤرسند ما بین حکیم سلام سے طرز عمل پرکہ آب نے مجرے مجمع میں انتہائی ابتمام وانتظام و باکرصاف صاف لفظوں بین اس کا علان کیا تھا۔
اس کے بعد خور کیجے رسبہ کے ول امیرالمومنین کے حکست سے لبری طرز عمل پر دو توں وانتے کس قدر سطنے حلنے اور ایک دو مرسے پر پوری بچری حال بہت مسلحے ہیں و بال بغیر م سے کوفتم دے کر بوجھا کہ:
سکھتے ہیں و بال بغیر م سے مجمع کوفتم دے کر بوجھا کہ:
سکیا بین متھاری ما اؤں پر تم سے زیادہ قدرت واختیار نہیں وکھنا۔؟ "

جب سارے مجمع نے افزار کیا توآب نے فرایا کہ : "حب حب کا میں مولا ہوں اس کے علی بھی مولا ہیں " وی روش امرالومین میال می اختبار کرتے ہیں - رحبہ میں سلمانوں سے بن میں مرخط ملک اور مرقوم و قبیلہ کے افراد جی تصے فراتے ہیں اور تنم دیتے ہیں کرجس حیں نے مدیر کے میدان میں رسول کو اپنی آئھوں سے دیکھا ہو اور اپنے کاؤں سے ارشا و فرانے سنا ہو وہ اُسٹے اور الحقے کر گوائی دے - میں قدر حالا سند اجازت دے سکتے سنے امیرالمومئین نے اینا حق

جس قدر حالات اجازت دے سے الم اسلام میں سے ایک میں اسلام میں اور است میں کیا ۔ ساتھ می ساتھ سکون وسلات جنلانے میں کوئی وقیقہ فروگرات وسلات

روى كويمي إتهد عمان دوباجي إبرطال مقدم مجفة سق

اپی خلافت و وصایت سے نوگوں کومطلع کرنے اورارشا واسیب فیم جو آپ کی خلافت و مصایت سے نوگوں کومطلع کرنے اورارشا واسیب فیم جو آپ امرا لمومین کا مینیشد اچونکہ اوافقت والاعلم افراد کو وافقت کار بنانے کے بیتا پ ایسی می موریش اختیار فراتے جونہ توکسی منگلے کا سبب ہونہ ان سے بیزادی بیدا ہونے کا احتال ہو ۔

امیرالومنین برابراس مدیث کا تذکره فرمایا کی کررمالت مآب نے آپ سے فرمایا:

" آسے علی تم میرے بعد مبر مومن کے دلی ہو "
اور نہ جانے کتن مرتبہ آب ہے دمول کی یہ مدیث بیان کی کہ :
" اسے علی میرے نزد کیسے بخص وی منزلست ماصل ہے جو
مولی سے اردن کو بحق سوائے اس کے کہ میرسے بعد کوئی بنی
نہوگا !"

اور بار ا آب نے عدرِ تم کے موقع بر دیول کا ارسٹ د فرمائی ہوئ مدسیشہ دئیرائی-رسول نے وگوں سے خطاب کرکے یہ مجا تھا کہ:

" بیں تم مومین سے زیادہ مخفادے نئوس پر فدریت واختیا ر نہیں رکھنا ؟ مسب نے کہا ہے شکٹ اس پر آ مخصرت مسے فرمایا کرمس کا بیں ولی ہوں اس کے یہ علی ولی ہیں !!

اس کے علاوہ اور بھی بے شارحد شیں ہیں جن کی امبرالمومنین وایت فراتے وگوں سے بیان کرنے دہے آب بورے طور پر تغذ اور مسنندا فراو میں ان اصادمین کی اشاعست کی واس پڑا شوب زماند اور نازک مالاسند میں زباوہ سے زباوہ امبرالمومنین کے بیے بھی گؤاکش کھی کہ آب بہنچ ہوکے ان انوال کا تذکرہ فرما بیک اور اس طرح اینے حفدار خلافت تذکرہ فرما بیک اور اس طرح اینے حفدار خلافت موح کے ان معربوں کی دولیت فرما بیک اور اس طرح اینے حفدار خلافت موح کے کا فول تک بہنچا بیک اور امبرالمومنین سے اسے اکھاند درکھا منتی مالاسند نے امبازست دی اتنی اشاعست فرماتے دہے ۔

سٹوری کے دن اُسبب نے محالفین سکے بلے عذر کی کون کی گنجائش با تی درستے وی۔ طوا کا حوصت ولا نے میں کون سی باست اُ کھا رکھی۔ اِسنے حیس قدر

نصوصیات و کمالات منے ایک ایک کرے گنائے ، ابنے تمام طفائل و مناقب او دلاکراپنے حفد اُر طلانت منے ایک کرے گنائے ، ابنے تمام طفائل و مناقب او دلاکراپنے حفد اُر طلانت ہوئے و ظام کرکیا ۔ ہرطرت ان پراحتجاج فرایا۔
عجو حیب آب خو دسر برارائے مکومت ہوئے تو برابرا بی مظلومیت کا اظہار فرایا کیے ۔ مشروع ہی سے سنجی ظلانت ہوئے کو نابت کیا ۔ انبدا بیں ظلانت سے محروم دیمے جانے برائب کوجو صدم ہوا ، اذعیب سیمیں ، اللے منبراکپ سے محروم دیمے جانے برائب کوجو صدم ہوا ، اذعیب کا اللے منبراکپ سے

اس كا شكوه كيا يهال تك آب في ذايا:

و حتم مجدا اس مام خلادست كوزمروستى فلال شخص كم مهن ليا حالانكروه الجيحاط وانفت تخفأ كدهجع خلانست بيس وبي مسبكر مامل ہے جو آربا میں منح کوماصل ہوت ہے مجھ سے علوم کے درابة بب اوروه لبندمز است ميرى كه طائر خيال مى مجا تك بلندينين موسكتا - مُكِّرين في اس يريروه وال ديا ادراس سے بہلومتی امنتیار کی میں محبب کشمش وا منطراب میں تھا عجب کو مگوک حالمت بھی میری کسی اس کھے ہوئے بازوے حمار كرمينيوں باس كھٹا تۇب تارىجى يرمبركر درجينك برا بواصابرما سة اور جيوا موان بوماسة اورون انهائ اذبيت بين اس وفنك كب متبلار ب حب ككر صداولدعالم ے کن زہو۔ ہیں نے دیجھا کہ ان دونؤں باتوں ہیں صبرزیادہ ببنرے بیں نے صبر کیا مالانک انکھیں مبل رہی نیب اور کلا گھٹ راعقاكميرى دولت لكرى بع"

ر امتفا ارمیری دونت نساری ہے۔ اس پورے خطبۂ (شقشفتیہ) کے آخر نک آپ نے اس کا مانم کیا -نہ مانے کمتیٰ مزنبہ آپ نے ارشاد فرمایا ہوگا : ا پا سے والے ا قربیش اوران کو مدد بینجانے والول کے مقابلہ میں مجھ سے طالب اعانت ہول ۔ اکفول نے قطع رحم کیا اور میسری بندی مزلست کو حقیر ولیست بنایا اور ایسی چیز کے واسطے جو خیب تنایا اور ایسی چیز کے واسطے جو خیب تنامیر سے جیکھنے نے سے جیکھنے کے لیے ایکا کر بینچے ہیں ؟

"شع قالول الإإن في العق أن تاخسذه وفي المعتى أن سنزكسه "

كى كى خواك ف امرالمومين سكهاكد:

« است فرزندِ ابوطالب! آبِ اس امرخلادنت بس حرلیس معلوم موستے ہیں "

آئپ نے نسندمایا :

" بلکہ تم ضم نجرا زیادہ حربص ہو۔ میں تو ابنیاحق طلب کرد ا ہوں ، اور تم لوگ میرے اور میرے حق کے درمیان رکا وسط بن سے ہو۔"

نيزآب نے اکیب موقع پرفرمایا :

" منم مخدا میں مہیشہ اسپنے من سے دو کا گیا اور مہید مجھ پردوموں کو نرجے دی گئی جس وفنت سے رسول کی آنکے بند ہوئی کسس وقت سے لے کر آئ تک یا

ا كيك مرتبه أكب ف ارسفاد فرمايا ،

"وہ ہماراس ہے اگر ہما راسی ہیں دے دیاگیا تو طیر نہیں تو مچھرہم بھی جل کھڑے ہوں گے۔"

« لناحق منان العطيب الا، وإلارك بن العجاز الإميىل وان طال السديمية اكي خطر آب ن الشيخ على عقيل كو لكها اس س فرات بن " برلہ لینے واسے ہاری طرف سے قرمیش کو برلہ دیں انھوں نے ميرا فنطع رحمكيا اورميرسف كجالئ كى قومت وسطومن مجه سيحين

میں نے اینے گردوسیس نگاہ ڈال کوئ اینا مد گارنظرنہ کیا ہے دے محب میرے گھروائے مقے میں نے ان کا مرناگوارا نہ کیا خس و خاشاک برطے رہنے کے باوجود آ بھیں مبدر کھیں اور کل گھے ۔ انتخا مگریئے بریمبہورہوا سکوست امتیاد کرنے اور عُلق ب زياده تلخ محونث بيني ري في معركيا " ایک مرتبہ آیا نے فرایا :

· كمان بي وه لوگ جو ماريه موت اين كو راسخين في ہیں۔ حبوط بولتے ہیں ، رکرشی کرتے ہیں ، خداوند عالم نے بہبیں مرملند بنایا ، انھبیں سیسٹ کیا ۔ ہیں اپنی عطاوّں کے

> ے بنجائیلاف <u> ۲ منیج البالا غد جز۳ مسخر ۹۴ حینتیوال مکنوس</u> سيد منيج البلاغه جزادل خطيه ۳۵ صفحه سمه بنیج البلاغه جد نان معنه ۳۲

مالامال کیا ماخیں محردم دکھا۔ یمیں این آعوش رحمت میں لیا انفیں نکال باہر کیا۔ ہم سے ہدایت مانگی جاتی ہے اور کور نگاہیں دکشن کی مانی ہیں۔ امام قریش ہی سے ہوں کے اور وہ بھی بنی اٹنم کی اولار سے ، غیر بنی اعظم مزاداری نہیں اور نہ مکومت بغیران کے درست روسکتی ہے۔

جناب سترة كااحت جاج

جناب سید تا نے بھی بہت پر زورا حجان فرائے ہیں ۔ درخطے تو آپ کے
انی ایم بیت کے حال ہیں کہ اہل بیت علیم اسلام ان کا یاد کرنا اپنے بچی کے
لیے اسی طرح عزوری فزار دسیتے محتے جس طرح کلام مجید کایا دکرنا۔ اس حطیہ بی
آب نے ان لوگوں کی خبر لی ہے حضول نے خلائت کی عماریت کو اس حقیقی خبیاد
سے بیٹا کر سے حکم رکھا چنا کنے درائی ہیں :

ا وائے ہوان لوگوں پر اکفوں نے ملا دنت کو رسالت کی بنیا دا میوست کی نبو اور دوح المامین کی منزل اور دین و دنیا دون المح امورسے وافقت وبا خبر علی پر اتناعتاب کیوں ہے ؟

امورسے وافقت وبا خبر علی پر اتناعتاب کیوں ہے ؟

ان کا برعتا ہے محف ان کی تلوار کی بارط ہ سختی ہے روند ولیا نے ان کا برعتا ہے معالمہ میں انتہائی تشد دسے ورد داکس سزا دینے اور خدا کے معالمہ میں انتہائی تشد دسے کام بینے کی وج سے ہے ۔ فدا کی نتم اگر یہ لوگ ایک ساتھ اس سلسلے سے منسلک ہوجائے جو دسول علی کے انتھوں میں سلسلے سے منسلک ہوجائے جو دسول علی کے انتھوں میں ورسب کے مسب مل کر ان کے علق اطاعدت

بین آمائے تو علی انھیں باندھ کر رکھتے اور بہت سہل داسان عال سے نے کر طلنے ۔ نہ تو انھیں کوئی اذہبت ہوتی نہ لکلیف کاسامنا ہوتا اور علی انھیں سٹیری وخوشگوار جھیلئے ہوئے سیرومیراب بناکر لیٹائے اور طاہر و باطن بہر حال ان خیر خواہ رہنے ؟ ہسس موضوع میں عزرت طاہرہ کے کلام کا یہ منونہ ہے اس بر باتی حصرات کے احتماع کا فیاس کر لیمیے ۔ حصرات کے احتماع کا فیاس کر لیمیے ۔

سے ہو کرا حرمن عبدالعزیز جوہری کی کتاب السقنغ وخرک اور بلاغاسند السنارص فح ۳۳ -شیبرعلجا رہے طبری بیں اصحاح بیں علار پھلی سے بہا والا ہؤار ہیں اور و پیگرمیت سے علیما علام ہے اپنے مصنفاست میں ذکر کیا ہے -

مكتوب منبره

سلسد بیان کومکمل کرنے کے بیے میری النجاہے کہ آپ امیر المومنین و جناب سیدہ کے ماسوائے دیگر مفزات کے احتجاج ذکر فرمائیے۔ معمی جواسب مکنوسب

عبدالتدبن عباس كالمستسجاج

۱۰ اے ابن عہاس تم مانتے ہوکہ دسول کے بعد خلادنت سیخیں کس جیزنے تحردم دکھا ۔'' ابن عباسس کتے ہیں کہ:

« میں مے مناسب نہ جانا کر جواب دوں میں بولا: اے حصور ا اگر میں مہیں جاننا تو آسے تو جانتے ہی ہیں "

حعزست عمرنے کہا:

" لوگوں گو بہ باست گوارا نہ ہوئی کہ بنوست وخلافت و ونوں تم ہی پیں جمع ہوکررہ جا بین اور تم خوش خوش رہ کرا بنی قوم والوں کو روند و - البذا قراسیش سے خلافت کو اپنے سیے چنا اور وہ ہی خیال میں درستی بریمنے اور وہ موفق بھی ہوستے !!

ابن عباس كين مي كديس في ا:

» اسے حصوراً اگر مجھے بھی بوسلنے کی امبازست دہیں اورخفا نہ ہوں توکھے عرص کروں "

کو چھوٹوش کروں : حضرت عمرنے کہا :

- ال الكهو"

ابن عبامسس كجنة ہيں : سنب ميں سے كما :

"آب کا یہ کہنا کر قرلیش نے خلادن کواپنے لیے اختیار کیا اور اس نے یہ مونی بھی ہوئے لؤاگر قریش خدا کی مری سے اپنے بیے بداختیار کیے ہوئے (بین خدا بھی اکنیں خلادت کے بیے بداختیار کیے ہوئے دنیان کی رق خلادت کے بیے بہند کیے ہوتا) تولیقینا وہ حق بر سمے دنیان کی رق کی ما سکتی اور ندان پر مسد کیا جاتا ۔ آپ نے بہ جو کہا کہ قرلیش کی ما سکتی اور ندان پر مسد کیا جاتا ۔ آپ نے بہ جو کہا کہ قرلیش

والے راصی نہوئے کہ خلافت و نہوت دولؤں متھارے ہی اندر رہیں تر خدا و ندِ عالم نے ایک قوم کی اس راحتی نہونے بران الغاظ پیں نوصیعت کی ہے: ذلا ب انبھم کرھوا سا ان زل الله خار معملا ا عسمال ہے ، " انظوں نے نا پند کیا ان آیات کو جو خدا و ند عالم نے نازل کیں تو خدات کی ان کے سا رے اعال خاک میں ملا دیے "

اس برحفاست عمر بو لے:

" وائے ہوا کے ابن عباس مخھارے ارب میں مجھے کچے بابن معلوم ہوتی ری میں - مجھے توسیسند نہیں کہ واقعاً وہ مبح ہوں جس کی وجہ سے متھاری منز است میرے نز دیک کھٹ عائے "

ابن عبامسس بوسے:

"حصور ده کون ی این بین اگروه حق بجانب میں تب کوئی دی بیں کومیری منزلست آب کے دل سے جاتی رہے ۔ اگر دہ باطل پر ہیں تومیں ان سے کنارہ کئی پرتیار ہوں ؟

حفزمنت عمرتے کہا ؛

" مجھے بہ خبر پہنچ ہے کہ تم کہتے ہوکہ خلافسٹ کولوگوں نے ہم سے حسر کر کے ، باعیٰ ہوکر اور ازرا و ظلم پیمبر لیا!"

ابن عباس كيت بي كه بس بولا:

• مرکاراً ب کابرجلہ کہ ازراہ ظلم مجیرلیا توبہ ہر دانا اور نادان پر دکسٹن ہے ۔ دہ گیا ہوفقہ کہ • صدک وج سے » تواس کے متلن عمن ہے کہ جناب ادم سے مجی مسدکیا گیا مقا اور ہم تو امنی کی اولار ہیں جن سے حسد کیا گیا ؟

ننیری گفتگوس حصرست عرف کها:

الا اسابن عباس مين ترييم جنابهون كه على وانفأ مظلوم بي اور

ملافت ان تحيين كرظام كياكيا "

اسس پرابن عباس کھنے ہیں کہیں نے کہا :

« تؤحصنورخلانسند الفيس والسركيون ندكر دي "

اس برحصرت عرف میرے انف سے اپنا انفی کیا اور غرائے ہوئے آگے بڑھ گئے ۔ میر مقہر گئے میں قدم بڑھا کر پاس مینجا حصرت عربوے :

«اعابُن عَاس مِن تو بيسمِه المرن كم على كو لوكون في صغير لسن سمِه

كرخليفه نهر سوي في ديا "

ابن عباس كمن بي كداس يرمي بولا:

« مگرخداکی فتم خدا و دسول شے تواس وفتن اکفیں صغیرالسن نہ حاکم خدا و دسول شے حکم دیا تفاکہ جاکر آپ کے دو

ابو كرس سورة برارة ك لين م

ابن عباس کھتے ہیں کہ :

*اس پرحفزمن عمر نے مذہبیر دیا اور مبلدی سے آ گے بڑھ گئے ۔ میں ملیٹ آبا ٹ

ابن عباس اورحفزت عمری نه جانے اس مسئلہ پرکننی مرتب بابیت ہوی م صفحات مامیق میں وہ وانغر آپ الاحظ فرا چکے ہیں حب ابن عباس نے فوارج کے مقابلہ میں علی کی کوسٹس خصوصیاست وکرکر کے احتجاج فرمایا نھا بہرست ہی جلیل انشان اورطولانی مدسیہ ہے۔ اسی میں ابن عباس نے کہا تھا :
"حصرات سرور کا کناست نے اپنے بی علم سے کہا کہ تم میں کون
ایسا ہے جو دین و دنیا میں میرا ولی ہے ۔سب نے انکار کیا جرت میں ایسا ہے جو دین و دنیا میں میرا ولی ہے ۔سب نے انکار کیا جرت میں ایس کا ولی ہوں گا
ایسول اللہ حاس پر مرور کا کناست نے حصرت علی سے فرمایا
ایسول اللہ حاس پر مرور کا کناست نے حصرت علی سے فرمایا
تم دنیا و آخرست میں میرے ولی ہو "

م م كي ماران عباس نے كبا:

ورسول الدخنگ بنوک کے لیے روانہ ہوئے لوگ بھی ہمراہ تھے حضرت علی نے ہوجہا ۔ ہی ہی ساتھ مہوں ؟ رسول نے فرایا نہیں اس بچھزت علی رونے گئے ۔ رسول نے فرایا : اے علی کمیا تم کو یہ بات گوارا نہیں کرمیرے نز دیک بختاری دی منز ات ہو جو ارون کی منز ات بھی مولی کے نز دیک سوائے اس کے کرمیرے بعد کوئی نی نہوگا ۔ اے علی میراجا نا ممان نہیں حب مک تھیں ہیں بیاں اپنا جانثین جھوڑ کے نہ جاؤں "

ابن عبائسس کجنے ہیں کہ :

" اور رسول الله يمجى فرمايا كه اس على ! تم ميرس بعدم ون " ك ول مو"

ابن عبامسس کہتے ہیں :

" اور رسول نے فرمایا کرمیں کا ہیں مولا ہول آسس کے علی ا مجی مولا ہیں ہے ے منجذ ان لوگوں کے منجوں نے ابو کر کی مظامنت نہ الی خالد بن سعید کھی ہیں بنین ہینے کہ ایخیں انکا درہا ۔ حبیقات ابن سعد حبر کھا ہے کہ مبیب ابو کہ نے شام کی طوت لنگار ریاز کیا تو انتخاب کے مبیب ابو کہ نے شام کی طوت لنگار ریاز کیا تو انتخاب کے میں بر عرض کہا تھا کہ نے تاکہ کو اضافہ کو اصلام ہیں ، حضامت عمر اشنا نے تاکہ کو اضری ورخ جن الحالت ہیں وہ تخییں اچھی طرح صلام ہیں ، حضامت عمر اشنا ہیں جب بڑے سے کہ آخر ابو کہ نے آدی بھی کرعلم والیس منگا لیا ۔ خالد نے والیس کردیا اور کہا تحقارے افر بنا ہے سے نو تو تو سند بری مورک کرنے سے ہجے دئے ہوا ۔ حضامت ابو کہ نے اس میں منا کے گھرا کر مدید دست کرنا صلوم نہ اس کے گھرا کر مدید دست کرنا صلوم نہ ہونے بات کے حساب مدید و صند رست کی احد رکھ یا کہ عرکو میرا آنا اور معذد دست کرنا صلوم نہ ہونے باتے ۔ جس جس سنے مسئل می طوف مشکر کی وجا نئی کا ذکر کہا ہے ۔ اس وافغہ کی طرف مزد راشارہ کہا ہے ۔ یہ وا نغرم شہور وافغاست ہیں سے ہے ۔

ابی برب طا بری اوران کے دوستاران کے حالات کی جھان بین کیجے تو آپ ہوستاری اوران کے دوستاران کے حالات کی جھان بین کیجے تو آپ ہوستاری کا حب بھی موقع ملا انفول نے ابتھ سے بائے تہ دیا مختلفت طریقوں سے احتجاج فرایا کیجہ رصافت صافت لفظوں میں ، کمجی دوران تقریر بیں ،کمجی بھورست تقریر ،کمجی نیز بیں کمجی نظر میں ، حبیبا موقع ہوا اور نازک مالات نے حب صورست سے اجازیت دی خائل جیں دے۔

یمی وجریحتی کدا منجاج کرنے والے نے بطوراحنجان داستدلال امیرالمونب کے وصی میزیم ہونے کا اکثر دکرشینئر ذکر کیا جیا کہ حبتوے پنہ طبتا ہے۔

منڈی

مكتؤبٌ مُعبره

کن لوگول نے آپ کے دصی ہونے کا ذکر کیا اور کب احتجاج کیا ؟ شاہم می ایک مرتب جناب عائش کے سامنے اس کا ذکر کیا گیا مگر جناب عائشہ نے تردید کردی تی میساکہ ہم نبل میں بیان کرمیکے ہیں۔

جواسب مكتوسب

خودامیرالمومین شے برمرمنبر ذکر فرمایا۔ ہم اصل عبارسندصفیاست مامبن پرنفل کرھیے ہیں۔ نیزجس جس نے دعوست عشرہ والی مدمیث جس ہم امبرالمومنین ا کے وصی میغییر ہونے کی صاحب مساحت نفر کے کی سہے دوایینت کی ہے اس نے امبرالمومنین ہی کی طوف اس مدمیث کی ندمت دی سیے رفام امناد آپ ہی تک منہی ہوئے ہیں . آب ہی سب نے سنا اور آب ہی سے سب نے روایت کی حبی کا مطلب بہواکہ مننے اشخاص نے اس مدیث کی امیر المونین سے روایت کی سب سے آب نے اپنے دصی ہونے کا ذکر فرایا ، ہم اس مدیث کو گر شند سفحات پر ذکر کر میکے ہیں ،

ا میرالمونبن کی شهادست کے بعدالم من مجتبی سے جو خطب ارشاد فرا باس میں آسیے نے فرا اِسخفا:

* يس بني كا مست رزند بهول مين وحتى كا بيشا بهول !!

امام جعز صادق عليبسلام فرات بي كه:

• حصرت عُلُ رِيولُ كم ما تق ما كف رسالت ك يبياد وتى ويحية

اوراً وازسننے شھے "

نيزاب فراتے ہيں كه :

وحفرت مرور كائنات كفام الومين التفرايا الرس فالم الانبياً في مرى بنوت من مركب موت ، الربي لنبي توتم بني

کے وصی ، بنی کے وارث ہو "

ر برانقریًا جلدال بیت علیهاسلام سے بنوانزمنعول ہے اور المبیت و موادیان الی میت کے نزد کیسے معابہ کے زمانہ سے کرآن کک بدیبات یں سے موان ہے ۔ سے مجھی ماتی ہے ۔۔

جناب سلمان فارسی فرملت مین که:

میں نے رسول کو کہنے منا : میرے ومی، بیرے رازوں کی ملم اور مہنوین وہ فرد جے میں اپنے بعد معبور وں گا جومیرے وعدوں کو بول کرے کا اور مجھے میرے دبون سے مبکدوش بنائے گا وہ

على ابن ابى طالىب ہيں "

جناب ابوا يوب الفرارى فرمات مي كه:

" میں کے دسول اللہ کو کہتے سے خاکہ سیدہ سے فراہے منے کیا تم جانی ہیں کے دار ہے استدول منے کیا تم جانی نہیں کہ خداوند عالم سے دوستے زبین کے باشندول پرنسکاہ کی ان میں متحارے باب کو منتخب کیا اور مجھے کیا بچرد وہارہ نسکاہ کی اور متحارے شوم کو منتخب کیا اور مجھے دی کے ذریعہ حکم دیا تومیں نے ان کا نسکاے متحارے ساتھ کردیا اور انتھیں اپنا دھی نبایا "

بريده كيت بي كم بين ف رسول كو كيت مُنا:

" ہربنی کے بیے وصی اور دارست ہوا کرنا ہے اورمیرے ومی و وارست علی بن اہل طالب ہیں "

جناب ماربن یز برحعفی حبب امام محد با قریسے کوئی صدیث روامیت کرتے تو کہتے کہ مجھ سے وصی الاوصیاء وصیوں کے وصی نے بیان کیا (ملاحظ ہو

ميزان الاعتدال علامدوي مالات جابر)

ام نیرمنست حرایش بادنیدنے جنگ مِعنین کے موقع پر ایک نقر پر کی جس یس انفول نے اہل کوفہ کو معاویہ سے جنگ کرنے پرامجارا کھا۔ اس تقریر میں انفوں نے بریمی کہا کھا:

" اَوُ ، اَوُ ، ضلاتم پر رحمست نازل کرے۔اس امام کی طرف جو عاد**ل ہیں ،** وصی پینمبر ہیں ، دفا کرنے واسے اور صدیق اِکر ہیں " اسی طر**ے کی بوری تغری**ر ان کی تنی ۔

سك بلافاست النسار مسلك

یہ توسلف صالحین کا ذکر مقاحبھوں نے اپنے اپنے خطبوں میں اپنی مرتبوں میں وصیب کا تذکرہ کرکے اس کوستے کم کیا۔ اگران کے حالات کا جائزہ لیجیے تو آپ کومعلوم ہوگا کہ وہ وصی کا لفظ امیرالمونین کے لیے بوں استعمال کرتے تھے جیسے مسمبیات کے لیے اسمار کا استعمال ہوتا ہے۔ آپ کا نام ہی پڑگیا تھا وہی۔ حد تو ہے ہے کہ صاحب تاج العروس جلد ، صلا العنس تاج العروس میں لفظ ومی کے معنی بیان کرتے ہوئے کھتے ہیں :

« الوصي كغني لقب عليٌّ ؛"

وصی بر وزنِ عنی معزست علی کانفنب ہے۔ اشعار میں اس فدر کنزست ہے کے لیے لفظ وصی کا استعال کیا گیا ہے کہ کوئی حساب ہی نہیں ۔ ہم صرف چندشعرا پنے مفصد کی توضیح میں فرکر کیے فیتے ہیں۔ عبدائٹ رہی عباس بن عبرالطلاب کہتے ہیں ہے

وصيرسول اللهمن دون اهله ونارسه ان نيل علمن منازل

" آپ رمول طا کے وصی میں بلبیت میں آپ کے سوا اور کوئی وصی رسی اور اگر میدان جنگ میں وشن کی طون سے

مقابل كى طلب موتواكب مى شبسوار سنجاعت بن ا

منیروبن مارث بن عبد المطلب نے جنگ صفین بیں چید شعر کیے تھے حس بیں ال عوان کو معاور سے جنگ بر انجمارا تھا۔اس میں ایک شعر بھی تھا مناب میں ال عوان کو معاور سے جنگ بر انجمارا تھا۔اس میں ایک شعر بھی تھا

ے خادوعی رسول الله قائد کم وصهره رکتاب الله تدنشوا "بر رسول کے وال و اللہ عمارے قائد بیں - رسول کے وال

" به رسول انتراعے وقتی اور محصارے قامدا اور عداک کھلی ہوئی کتاب ہیں "

عبدالتدبن الى سغيان بن حريث بن عبدالمطب كميت بي الم

رمناعلی دانت صاحب خیب و صاحب بددیوم سالت کتاب ه دعی الدینی المصطفی دابن عده دنن داید انبیه و من دایت ادب د دومی الدینی المصطفی دابن عده دنن داید انبیه و من کابی خیروائی (حنجول نے خیروائی کوبینی اور برد والے (جن کی بدولت جنگ بدد میں فتح مول) جوبینی مداحضرت محد مصطفاع کے وصی اور ان کے چیا کے بیٹے ہیں کون ان سے قریب ال کامفالم کرسکتا ہے اورع دن وی وی دول ان سے قریب ہوسکتا ہے یہ

الوالمیثم بن تبہان صحالی پیمبڑنے (جوجنگب بدر میں بھی سر کیس رہ چک ہیں) جنگسے جمل کے موقع پر جند شعر کیے شقے ۔ ان میں میشعر بھی تھا ہے

الن السوحي إسساست و وليسنا سيرح المختفاء وساحت الاسيار « وحيّ بينيم بمار سے امام وحاکم بين - پروه المحكيا اور وأز ظامر بو گئے ؟

حریمی بن ثابت دوالشادین نے (بیری جنگب بدر میں سٹریک رہ چکیای) جنگہ جمل محمو نع برحیٰد شعر کے ،ان میں ایک مشعربہ تھا ہے

يا ومي الدبي مند أحسلت العد الأعدادي وسارس الأظفان " اب وصي وسار بناك في وثمنول كومنوك كردا ب بودج

نشین عورتس مقالم کے بیے جل کوری ہوئی میں "

الفين كے يواشفار يمي بي د

اعاتش خیی عن عسبی و عسیبه بمالیس نید استه است والسده وحی وسول الله من دون اهسله وانت علی ما کان من ذاك شاهده «است عائش اعلی کرشن اوران کی عیب بونی سے جو خفیف آن بی

منیں الکہ بخاری من گوست ہے بازرہو، وہ رسول خدا کے وی ہیں المبسیت ہیں ، آب کے سوا اور کوئی وسی رسول منیں اور علی کورول سے جو حضوصیت حاصل ہے تم خود اس کی چئے دید شاہر ہو !! عبدانشرین ہدیل بن و رفا خزاعی نے جنگب جمل میں بیسٹر کہا تھا ۔ یہ برزگ بہادر ترین صحابہ میں سے تقے ۔ یہ اور ان کے مجالی عبدالرحش جنگ صفین میں شہید ہوئے۔

یاقوم للخطنة العظان النی حدثت حدب الوصی ده اللحرب من آسی ما الدی ما اللحرب من آسی مدا مدا تقرم والوا بهتری مصیبت بے کرجس نے وصی رسول سے جنگ جھیر دی ہے اور جنگ کے لیے کوئی داوا نہیں "
خود امپر المومنین کے جنگ معنین کے موقع میر به سعی مرفر ما با :
ما کان بدونی انتسد دو انتسب برا ان بیت و نوا وصید دالانب توا
موسول کواگر بی خرمین نیائی ما تے کہ لوگوں نے آب کے ومی اور مقطوع النسل بین معاویہ کو سم پلر سمجھ بیا ہے تورسول اس بات مقطوع النسل بین معاویہ کو سمجھ بیا ہے تورسول اس بات مقطوع النسل بین معاویہ کو سمجھ بیا ہے تورسول اس بات

جرین عبدانٹر بجی صابی نے چند اسٹار سرجیل بن سمط کوتخریر کرکے بھیجے تنے اس میں امیر المومنین کا ذکر کرنے ہوئے کہتے ہیں: ہے دصی دسول انتہ من ددن احدہ وفارسہ الحابی بدہ بہرب المثل ماپ رسول خدائے وصی ہیں۔ اہلیبیت میں آب کے مواسے کوئی دوسرا وصی رسول مہیں ادر وہ جماعت کرتے والے متہ سوار ہیں جن سے مثل لولی جاتی ہے یہ عمر بن حارث انفاری نے چند شعر محد بن امیر المونین (جو محد بن حنیہ کے نام سے شہورہیں) کی مدح میں کہے تھے ،ان میں ایک شعر ہے ہمی ہے :۔۔
سمی الدنبی وسنسبہ الوصی ورابیت لونہا العدندم
« رحج من حنفیہ) بنی کے ہم نام اور وصی بنی (لینی ام المؤمنی)
کے مشابہ ہیں اور آپ کے علم کے بچر مربے کا دنگ خوش

جب فتل عثمان کے بعد لوگوں نے حفرت علی کی معیت کی اس موقع برعبدالرجمٰن بن جبیل نے بیش عرکیے تھے: ہے

لعمدي لفند بايعتمُ ذاحفيظة على الدين معرون العفان موفقاً علياً وحبيَّ المصطفىٰ وابن عمله واقل من صلى أخذا الدين والتقى " ابنى ذفر كى كوتم تم نے ابسے تحص كى مجيست كى جو دين كے معالم ميں بڑا باغيرست وحميست سے حس كى باكدامنى شہرةً ا فاق ہے اور توفيقات اللى حس كے شامل حال ميں "

" تم نے علی کی بعیت کی ہے جومحدمصطفیٰ کے وصی ادر ال کے جیا کے بیٹے ہیں اور سیلے نماز بڑھھنے والے میں اور صاحب دین و تقویٰ ہیں ! و

قبیلهٔ اُرُد کے ایک شخف نے جنگ جبل میں بیشعر کیے تھے ؛ مے هندا علی و هدو الوه بی المستاه یوم النجو الله الله ی دستال هندا بعدی الویل وعام واع دسی المشقی وی علی میں اور وہی وصی میں جنھیں رسول نے یوم نجو الله اینا جمائی بنایا تقا اور کہا تقا کہ یہ میرے بعد میرے ولی میں وی یاد رکھا اور جو بد مجنست تنے

وه مُصُلاً بينج 4

جنگ جبل ہیں بنی صنبہ کا ایک نوجوان جو جناب عائث کی طرف سے جنگ میں مشرکیا سے مصن سے نسکلا اور سے استعار تبطی مطرب بڑھے :

نحن بنوضبة أعداء على ذاك الذي يعرف قدم أبالومي رفارس الخيل على عهد المسنبي ما أنا عن نعندل على بالعلى لكنني أنعى ابن عفات النتي

"ہم بنوصنہ ہیں جوعلیؑ کے دسمن ہیں۔ وہی علی جوہمیشہ وی کھے گئے اور دسول کے زمانہ میں مسٹکر کے شہوار تھے ہیں علیؓ کے نفس دسٹرست سے اندھا نہیں ہوں کیکن ہیں عثمان کی خبرمرگٹ سنا نے آیا ہوں "

سعید من نتیں ہمدانی نے جو حضرت علی کے ساتھ جنگ میں سر کیا۔ خصابہ استعار کے نتھ ؛ ہے

أيه حوب اضرمت نبرانها وكريت يوم الوغى مراسها قل المومي أقبلت تحطانها فادع بها تكنيكها همدانها

هم بنوها وهم اخوانها

" برکون سی لطان کی اگ بھراکائی گئی ہے اور مبنگ کے دن نیزے ٹوسٹ ٹوسٹ گئے کہوڈی ہے کہ بڑو مخطان کل کے کل اُمڈ آ ہے ہیں آپ بی ہمدان کو پیکار ہے وہ آپ کی کفایت کریں گے کیونکہ وہ بنومخطان کے بیٹے اور بھائی ہیں ۔ نیا دہن لہیدانصاری نے جوامیرالمومین کے اصحاب سے ہیں جنگ مجل میں بیشعر کے بتھے: ہے كيف تنرى الأنضار في يوم الكلب إنا أناس لاسبا بي من عطب ولانبالي في الومي من عضب ولينعا الأنصار حبد لا لعسب هناعلي وابن عبدا لمطلب متصرة اليوم علىمن تدكذب

من يكسب البغي فبترما اكتسب

« اے امیرالمومنین کب اس شدید حنگے کے دن انصار کو کیسا یا رہے ہیں ہم اوگ ایسے ادمی ہیں جوموت سے مہیں ڈرتے اور ومی کے بادے میں ہم عفنب وعفسہ کی یر وا نہیں کرتے ۔ الضار کھیل تھی انہیں وہ حقیفتت و وا ^{ہیں} محامل بي سيعلى بي جو فرز ندعيد المطلب بي بمان ك آئ حموال كم منالم ميں مدد كريئ ميں حب الع بنا وسف كا أركاب كياأس خيبت بمراكباظ

حجربن عدی کسندی شے بی اسی دن برشعر کیے تھے : ہے باربنا سلم سن عليا سلم سنالبارك المضيا المومن الموحب والتقتسيا الاحظل السوأي ولاعنوبيا بلهاديًا مدنقاً مسهدياً واحفظه ربي واحفظ النبيا شيه فقندكان له دلسيا شع ارتضناه بعده وحسيا « پروردگار تو ہمارے بیے علی کومیح وسالم رکھ میمے و سالم دکھ ہارے لیے مبارک اور حنیا گستر ہستی کو جو مومن ہیں، موسد ہیں ، برہزگار ہیں جہل رائے والے مہیں نگراہ میں ملکہ مالیت کرنے والے توقیقات رہائی کے ماس برابيت بانته بي -ان كومعفظ ركه بروردگار اوران كي دم

سے بنی کومحفوظ رکھ کیونکھ ہے رسول کے ولی ہیں بچرا پنے بعد کے لیے بنی نے انھیں ومی بنا نا پسند کیا "

عمرین انجیدنے جنگ جمل کے دن امام سن کے خطبہ کی تعرفیت و توصیت میں جو آب نے ابن زبیر کے خطبہ کے بعد فرالیا مختا چند شعر را جھے۔ ایک شعر میں جو آب

واُلِی اللّه اُل بہنوم سبعا حسّام حبه ابن الموحي و ابن النجیب او خدا و ند مالم کو ہرگزگوارا تہیں کہ ابن زبیر وصی کے فرزندا و در ترافیت و معزز کے گئیست کی برا ہری کرنے گئیست کی برا ہری کرنے گئیست کی جنگ جمل کے موقع بریر شعرکہا تھا : سے احسان کی سب مستی تقود و السعد المدنی احسان کی استعمال کا استعمال کا المامی حسنی تقود و المستان کا المامی حسن زامند اللّه وسماہ الموحی

" میں اس ونسن کک تم کو تدینے کرتا دموں گا جب بک تم علی کی امامت کا افرار نہ کر لو۔ وہ علی جو بعد رسول فرلیش میں سب سب سب جنویں خوائے کمالات و ضعائل سے زیزیت بخشی اور ان کا نام وصی دکھا ہے "

الخيس زجرت بنگرمنبين كمونع بريداشعار كم نقى الله عسل المسد وسول المليك شمام المنعم وسول المليك شمام المنعم وسول المليك شمام المنعم وسول المليك و مسن مبعده حنايف تنا المقام المدعم علمية عديت وصي السنبي ويجالد عنه عواة الآمم و خلا ومست تازل كرے حضرت المرمجتبي برجو خدا كرسول منح اور جن ك ذريد نعتين تمام جويل (رحمن نازل بري خدا ك

رسول میراوران کے بعد ہار سے موجودہ خلیف برجوم سے بناہ ہیں ۔ میری مراد علی سے ہے جورسول کے دسی میں جس سے است کے گراہ لوگ بر مرسیکار ہیں "

التعت بن قبيس كندى كبتاب: -

أتانا الرسول دسول الامام فسر بهندمه المسلمونا وسول الوصي وهي السنبى له السبن والعمنل في المؤمنينا المرام المام كا قاصد ، اس ك آخ سے مسلما نون میں خوش كى المر دول گئ ، وصى كا قاصد آيا وه وصى جونئ كا ہے جے تمام مومنین میں سبقت و نضيلت ماصل ہے ؟

نیزید اشعار مجیاس اشعث کے بین: ہے

التاناالوسول رسول الوصي على المهذب من هاشم ونيرالسنبي وذي صهوه وحنير السبوية والعالم المرب إلى تاصداً إلى وصي رسول كا قاصد يني على كابح بني إثم بن (كالات سے) الاسسنة وبراسته بن بخش كوى ميں اور واماد بن اور تمام عالم اور حبله خان سے بهتر بن لا نمان بن عملان زرتی المصاری نے جنگ صفین بن براشعار كے:

کیعت المنتفری والوصی إسامنا لاكبت إلا حيرة و تخاذ لا في دروامعادية العذي ونابعوا دين الوصي لنحمدوه آجلا في دروامعادية العذي ونابعوا دين الوصي لنحمدوه آجلا في ديراگسندگ كيبي جبك وصي رسول بهار سے امام بن بهري هلا

کیونگر به براگسندگی ممکن ہے به صرف سرشننگی اور ایب دوسرے

کی مارد نہ کرنے کا نتیجہ ہے۔ گراہ معادیہ کوجھوٹر واور **ومی دیول ہ** کے دین کی ہیردی کر و تاکہ تمقارا انجام پسندیدہ ہو ؟ عبدالرحمٰن بن ذریب ہملی نے جسنداسٹیار کھے جن میں مع**اویہ کوعرا**ق کی قوجوں کی دھکی دی تھی۔

اند برتمام اشمار کنند میرونواریخ خصوماده کتابی جرحبنگ جیل و مینین برنامی گئی بی بی اوجودی ملابن ای الدید معتزل نے بی البلا غد جلد اقل بی برتمام اشار اکشا کرد سے بی اوران اشمار کونقل کرنے کے بعد لکھنے بی کوالیے استمار جن بین حصر سند کو وصی کمر کرمراد لیا گیا ہے شار بی بم سے بہاں حرصت وہ اشار درج کیے بین جو الخصوص جنگ جمل و مینین کے موانی بر کے گئے ۔

وهيي ريسول الله من دوك اهسله 💎 وقارسسه مسذكات في سألف المؤمن واول من صلى من المناس كلهم موى منبرة النسوان والله ذومنن « رمولِ خدام کے وصی میں المبیت میں آب کے سواکو اُل وصی مرول نہیں ربول کے شہوارمیب ران وغا ہی گزشتہ زانے الارتمام لوگول مين سوا جناب خديجر كاسب سيبياناز برجُر عصنے والے میں اور خداو مدعا لم مرجُرے احسانا سند والا ہے ۔ ز فرین حدید اساری منظمین : ہے نحوطواعليًّا وانصروه ذائه ومي وفي الاسلام أول أول " على كواي حلفتي الي لواوران كى مددكروكيو كسب وصى بي اورسب سے بيلے اسلام لانے والول بي اوّل بي " ابوالاسود دولي كبته بي : ٥ أحب معمدا حبأ شديدا وعباسا وحمدزة والوصيا " من حصرت محرمصطفي سيمبرت بي زياده محبت ركمنا جول اورعباسس سے اور حمزہ سے اور دھتی رسول سے " نعات می عجلان جوارصار کے شاعر ہیں اور ان سے سرداروں میں سے ایک سردار تنے ایک فصیدہ بیں کہتے ہیں جس بیں انھوں سے عمرو عاص سے خطاب کیا ؛۔۔

ے دخرکا یہ متحراوراس کے قبل حزیر کے دونوں شعرامام اسکانی نے اپن کتاب نعنی عثمانیہ ہمیں ڈکر کیا ہے اورامے ابن ابی اند بدشے شرح ہنے البلاط مبارس خدم مردم پرفعن کیا ہے۔ سے شرح شیج البلاط جلدح صفر ۱۱ و استیماب مالاسے بقال ۔

وکان هوانا بن عبل دامنه لاهدل لهامن حبث تندري ولاتدي و دان خدائ بيون الله دوان عبد و دان و دان

نفنل بن عباس نے چنداستعار کے تقے ال بین یہ دو سعر بھی تھے : ه الا إن حنبوالسناس سعد نبیهم دصی النبی المصطفیٰ عند ذی الذکو وأول من صلی وصد و منبسله وادل من أردی النواۃ لدی بدر

ا کاہ ہولوگوں یں بعدرسول اسب سے بہتر حصرت محد مصطفی ا بیغ بر خدا کے دھی ہیں۔ ہریا در کھنے والے کے نزدیک اور بیلے نماز بڑھنے والے ہیں اور رسول وعلی ایک، ہی جڑکی دوشا ہیں ہیں اور بیلے وہ شخص ہیں حنوں نے جنگ بدر میں مرکشوں کو بلاک کیا ؟

حسان بن نابت نے چندا شعار کیے تھے جن بیں بر بان انسازام المومنین ع معاری کال جلد مرسی

شده اس مشمرکو زمیراین میکارندیوفتیباست چرداری کیا ہے ادراس سے ابن ابی الحدید معنز لی نے مثرے ہنچے عبالعذ حلام صفرے ایرفق کیا ہے۔

ک مع مرائی کے : ہے

البيك وصن اولى بـ د منك من و من

حفظت رسول الله دينا رعمهده

الست أخاه في الهدى و وصبيه وأعلم منهم بالكتاب وبالسنا

« آب نے ہمارے درمیان دسول کی مفاطعت کی ادر اس عهد کی مفات

کی جورسول سے آپ سے متعلق کیا تھاا در آپ سے بڑھ کر رسول سے

زیادہ قربت وخصوصیت کون رکھ مکتا ہے آیا کار ہاست میں آ ب

ان کے وصی نہیں اور تمام لوگوں سے زیادہ قرآن وا مارسیف بنی کا علم رکھتے والے ہیں ؟ کا علم رکھتے والے ہیں "

كى شاع نے امام حن سے خطاب كر كے كہا ہے: ـــــ

يا أعبل المِثنام بيا ابن الوص أنت سبط البني وابن علي

ا تمام خلائق میں بزرگ و برزست اے دھی رسول کے فرند آب سبط بینبہ د اور علی کے بیٹے میں "

ام سنان برنت فیننم بن حن رشر مدّ حجیه نے جنداشدار حفرست

على ومخاطب كرك كه جن بين آب كى مراكى كان د

فتدكشت وبعد محسد دخلفاً لسا اوص البيك سا فلكنت ومنيبا

«آب رسول کے بعد ہمارے بیے رسول کے جانشین تھے رسول اسے انسان میں اور ی نے ایک میں ایک میں ایک میں اور ی کے میں ا نے آپ کو اپنا وصی بنایا ۔آب نے رسول کی تمام ہابتی بوری

يجيث داشعاربي حبعيس ملدى بين لكه مسكا اورخبنى كخالئ سوسكى

دالوصي السذي المسال التعبوبي سبد عوش المسة المنهام

اے ملاکھیے مرحمودالافنی منبوں نے کیست کے اسفار کی سڑے کمی ہے اس شعر کی شرح کوتے ہوئے

الکھتے ہیں کہ زمی سے مراد علی کرم سٹر وجہ ہیں کونکہ بغیر مندائ نے آپ کو یمی مقرد فرایا چنا بخیابی بریرہ

عددایت ہے کہ بغیر نے ارت اور فی المراس کے لیے وصی ہوا کرتا ہے اور علی میرے وصی ووارث

میں اور امام تر مزی نے بیٹر برسے روایت کی ہے آپ نے ارثاء فرایا مسن کسنت مولا ہ فلید فلا اور امام بخاری ہے موایت کی ہے کہ بب بغیرم طزوی تروک ہیں جانے

علی مسولاہ اور امام بخاری ہے سعدسے روایت کی ہے کہ بب بغیرم طزوی تروک ہیں جانے

مالے اور میرین میں علی کو اپنا فلید بنایا فوعلی سے کہا آپ مجھے عور قوں اور بچوں میں مجھور سے

عامل ہے جو ارون میں کو موئی ہے متی مواسے اس کر دیرے بعد کوئ نمی نہوگا ۔ یہ محمق ماس ہے جو اردن میں کوموئی ہے متی مواسے اس کر دیرے بعد کوئ نمی نہوگا ۔ یہ محمق میں کے مبدعلام رانی محقق میں کر صفر ست علی کو ومی دیول کہنا اکثر زمین ترکی زبان پر چڑھا ہوا تھا اوراس کے بوست میں انھوں نے مشہور شام کر کیڑ عرق کا شعر لیقاں کیا ہے مبورم انتی معقمات پر درے کرد ہے ہیں ،

کنیرین عبدالرحن بن الاسو دبن عامرا لخزای جوکنیرعز فا کے نام سیمشہور ہیں کہتے ہیں: ۔۔۔

وصي النبي المصطفى وابن عسه وفكاك اعسنان وضاحني مغارم «بيغر بغدا محرصطفى ك وصى اوراً ب كرج اك بيني ابن المالون كوازا وكرف والم ابن المالون كوازا وكرف والمح ابن المالون البخاص والمرتب المنال البخان البخان البخان البخان البخان البخان البخان المنال البخان المنال البخان المنال ا

بداهید دهیارلیس نهاندر نهانبلها مثلاً عوان د لا بکر فنلامثله اُخ دلامثله مسهر کماشد من موسی بهاردنه الازر

ومن قبله احلفتم لوصيه فحيث تجتميها الكرأعوانا ولم يكن المنود اذاعد الفناد وصهره وشديه ازرال نبي محسم

"اسس كے پہلے تم نے ان كے وصى كونو فناك معييب بن مبتلا كياجس كا الماز و نہيں لگا با جاسكنا تم نئ تى معيبة بس ان كيسلف لائے اليى معية بيں اس سے پہلے كہمى نہيں آئى۔ المہارِسترف كے موقع برعلى رسول كے بھائى اور داماد ہيں على جب ندكى معانى تھا نہ داماد - رسول كى نشيت ان كى وجہ سے اس طرت معنبوط ہوئى جس طرح بارون كى وجہ سے موسى كى نشيست معنبوط ہوئى ؟

دعیل بن علی سنزای صرب مظاوم کر بلاً کا مرتب کیتے ہوئے کہتے د : ہے

رآس ابن بنیت معسد و وصیه سیالاسرجال عسل نشاۃ یونع * { ہے لوگر اصفرت محدمصطفیٰ کی دھنست راور آسپ کے وحی کے فرزندکا سراس قابل مقاکد نیزے پر ابندکیا جائے ! ابوالطبیب متنبی کو حبب لوگوں نے بڑا مجلاکہا کہ تم ایرے عیرے کی مدح کرتے ہواور حفزت علی کی مدح میں تم نے کہی ایک سفر مجی مہیں کہا تو دہ کہتا ہے : ے

وتركت مدي للوصي تعبداً اذكان نور مستطيلا ساملا واذااستطال الشئ تام بغسه وصفات حنوء الشمس تذهب باطلاً

" یں نے وصی دسول امیرالمومنین کی مدع نہ کی تو جان ہوجھ کر ایسا کیا کیونکہ وہ ایسا نور ہیں جس کی روشنی عالم برسی پی ہوئی ہے اور تمام کا مُناست کو اپنے صلعہ میں گیے ہوئے ہے ۔ مبب کوئی شے المئد ہوجاتی ہے تواہد ہفا کی خود صامن بن جاتی ہے ۔ نورِخورسٹ پیدکی ٹنا وصفت کرنا ہنل عبیت ہے " (خورسٹ پداینے وہودکا خود معرب ہے)

مین نتنی ابوالفاسم طاہر بن الحبین بن طام علوی کی مرت لکھنے ہوئے کہتا ہے جیا کماک کے دلوان بین موجود ہے: ہے

هوابن رسول الله وابن وصيد وشبههما شههت بمدالتهاك

یدابوانفاسم رسول اوران کے دمی حصرت علی مے فرزند بیں اور ان دونوں سے مشابہ ہیں ا

میں نے ان کو ان ہزرگول سے جوتشبیہ دی ہے توہمت کچھ تحرفول کے بعد آرار پر کھ کے بول ہی نہیں رہسس جیسے بہت سے اشعار ہیں جس کی زکو کی انتہا ہے ندمد دحساب ۔

مكتوب مهاره

ہم نے سابن کے کسی مکتوب میں آپ سے عض کیا تھا کہ بعث تعصب است عاص آپ کے خرجب کے متعان یہ کہتے بچر نے ہیں کہ آپ کا خرجب انکسر اللہ اہل بہیت ہے کوئی تعان نہیں رکھتا نہ ان کی طرحت آپ کے خرجب کو منسوب کرنا میم ہے۔ آپ سے اس پر بھی رکھتی اوا لئے کا وعدہ تھا۔ اب وقدہ ایفا صنہ مائے۔ ان منعقباین کی کجواس کا جواب دیجے۔

س

جواب مِكتوب

مذبهب مثنيعه كاالمبيين ماخوذ مونا

ارباب نہم وبھیرست بدہی طور پر جانتے ہیں کہ فرقہ شیعہ کاسلعت سے
کے خلعت یک ابتدا ہے آج کے دن تک اصول دین افروج دین ہر
ایک ہیں بس ائر اہل بہت ہی کی طوت دجوج را۔ اصول وفروع اورت مان و
عریت سے جتنے مطالب مستفاد ہوتے ہیں یا سے مان کی وحدیث سے جتنے علیم
تعالی رکھتے ہیں غرص ہرجیزیں ان کی دائے کے تابع ہے ۔ ان کل چیزوں میں
صوت ائر طاہرین برا محول نے مجروس کیا ۔ انھیں کی طوت دجوع کیا۔

منزسب المبنيت مى كے قاعدوں سے وہ خدا كى عبا دت كرتے ہيں اس كانقرب ما مل كرتے ہيں اس كانقرب ما مل كرتے ہيں اس كانقرب ما مل كرنے ہيں اس خرمب كے علاوہ كول راہ ہى نظر نہيں آتى اور ندر سب كوا ختيار كرا الخين كوارا ہوگا.
گوارا ہوگا.

مرائیس امام کے زانے میں امرالمومنین کے عہد میں ، امام حسن کے عہد میں ، امام حسن کے عہد میں ، امام حین کے عہد میں امام موئی کا نام و امام علی رصنا م کے عہد میں ، امام موئی کا نام و والم علی رصنا م کے عہد میں ، امام محد تقی و علی نقی کے عہد میں ، امام محد تقی و علی نقی مے عہد میں ، امام میں عہد آیا ان گذت میں موام کے عہد میں موضوں مام کا بھی عہد آیا ان گذت میں مقید ما فطال مدیب ، بے شارصاصب ورج وصنبط وانفاق نے جن کی لغداد توانرسے میں موسے کر متی اپنے اپنے اپنے زانے کے امام کی صحبت میں جن کی لغداد توانرسے میں موسے کر متی اپنے اپنے زانے کے امام کی صحبت میں

بينه كران سے استفاره كركے ال اصول و فروع كوماصل كيا اور الفول نے اپنے بعد کے دوگوں سے بیان کیا ۔ اسی طرح ہرزما ندا ورم دنسل ہیں براصول وفروع نعل ہوتے رہے بہاں تک کہم کک بہنے انبذاہم مجی آج اسی مسلک بر ہیں جوائمہ الى بىيت كامسلك راكبونكم سے ان مے مهب كى ايس ايس چيزجز ئى جزئ بایس این ابار وامراد سے ماصل کیں اعفوں سے اپنے آباؤ اجداد سے امل کیں اس طرح نشوع سے برسلد عاری رہا۔ مہنسل وہرعہد میں جو دور مجی آیا دہ اینے الگے بزرگرں سے مامل کرنا ہوا گیا۔ آئ ہم شار کرے میسیس کہ سلفیت شید میں کتے افراد ائد طاہرین کی محبت سے فیصنیا ب سوے ،ان سے احکام دین کوسمنا ، ان کے استفا وہ کیا۔ توظاہرے کہ شارکر نامبل مہیں کس محلی کی باست ہے کہ ان کا حصار کرسکے۔ اس کا اندازہ لگانا ہو تو آب ان بیم شمار کتابوں سے دیگا ہے جوائر طاہرین کے ارثا داست وافاداست سے استفادہ کرکے اکمی ہیں ائم کا مربع سے معلوم کر کے ان سے من کر کے رہے ہیں رہمتاہیں کیا ہیں - ائمة طاہرین کے علوم کا دفر 'ان کی حکمتوں کا سرتم ہیں جوائمہ طاہرین ا كيهدمين صنبط تحريب لال كين أوران كي بعد سيعول كأ مرجع قرار إين -ای سے آپ کو نهیب الببینت اور دیگر مذامهب مسکین میں فرق و امتیاز مسلوم موجائے گا۔ ہم کو تو نہیں معلوم کہ ائمہ اربعہ کے مقلّدین میں سے كى اكب ئى بىران ائمە كى ئىرى كوئى كتاب ئالىيىت كى بوران ائمەسىك مظلمين في كنابي لكحب اورب عثار الكهين ليكن اس ونن لكعب حبب ان کا زارخنم ہوگیا انھیں رئیا سے رحضت ہوئے مدین گرر گیئ اورتقلب انخين جارول ائر بين منحفر كمجه لى كى - يد طرك داكباك فروع دين بين ليس الخبين مپاروں اماموں ہیں سے کسی ذکسی اکیب کی تقلید حزودی سے ۔

اورخودیہ انمداریہ اپنے ذما نے بیں ایسے ہی شخصے جیبے اور دیگر فقہاد محدثین اپنے طبقہ کے لوگوں بیں انھیں اس وقت کوئی انتیاز ہی زماصل تقا مامی وجہ سے ان کے زمانہ بیں کسی شخص کو بیٹ یال بھی پہیا نہوا کہ ان کے نتاوی ای مارے اکٹھا کرنے کی زنمت انتھائے جس طرح شعول نے اپنے انکہ معصوبین کے اقوال و قتاوی جس کرنے کا اہتمام کہا۔

شبیم تواول یوم ہی سے دبنی الور میں موائے ائم طاہری ایک کسی اور کی طرمت دجوع كرنا جائز بي مهر متقد تقع اسى دجه سے بس انفيں مے آستا مے بيگات مے امور دبن کے ماصل کرنے کے بیے لبس انجیس سے لونگائی میری وج بھی جو المغول نے ائمہ طاہریٰ سے سی ہوئی ہر باست اور ان کے اسب و زبان سے مکلے ہوستے ہرنفظ کو مدّون کرنے کے بیے پوری طاننت صرفت کی ، تنام توانا ئیاں کلم میں لاستے۔ اس بیے ناکربرعلم کا خزانہ اسکہ کے ارشاد است محفوظ ہوما ہیں۔جن کے متعلق ال کا عنقاد کھا کہ بس کہا عندالسّمیع ہیں اوران کے ماسواسب باطل۔ آسیمن انجیس کتابول سے اندازہ لگا بیس جوشیوں نے الم جعفر مارق کے زمانے میں مکھیں ۔ جومرست علم اصول کی ان چارسوکتا اوں سے کمی وگئی بی تعداد میں ہیں۔ مبیاک آپ ملد کی اس کی تغییل ملافظ فرایل کے . رو گئے آپ کے ا نمه ادبعر نوان انمهیں سے کسی ایک امام کو بھی کسی ایک سخف کی نظروں میں نہ تو وہ وقعیت حاصل ہو کی نرکسی سے ول میں ان کی عرصت پریا ہو کی جو وقعیست و ع دمت ائم البليت عليه السلام كي شيول كي نزد بك ربي بكرس بوجي توائی یا ایک ادابد می عورت کی نظروں سے دیکھے مانے ہیں جو درجیا تھیں ان كمرسف كبدويا جاراً بصنودان كے جيتے جى الخيس برع سندماص ديوسكى مبیاکه عَلامه ابن ملدون نے اینے مقدریں وضاصت کی ہے اور دیج علائے

اعلام نے بی ان کے قول کوسلیم کیا ہے اس کے اوجود بھی ہمیں اس بی کوئی شبہ بنہیں کدان ائمہ اربعہ کا دہی مذہب را ہوگا جو آئان کے ہیرووں کا ہے اور اس ندہب کو اور سی ندہب کو بیروان ائمہ اربعہ کا ایک منابوں میں مدون کر لیا کیونکہ ہیروان ائمہ اربعہ ایسی مدون کر لیا کیونکہ ہیروان ائمہ اربعہ اپنی کتابوں میں مدون کر لیا کیونکہ ہیروان ائمہ اربعہ اپنی کا اور کی معرفت رکھتے تھے جیسا کوشیعہ حضرات اپنی ایم ایک ندم ہیں ہوکر فعل کے اندم کے ندم ہیں۔ ایجی طرح واقف ہیں جس ندم ہی بی بی لیرا ہوکر فعل کے عادم کے اور کسی کا تقرب ان کے مدن نظر نہیں۔

تصنیف تالیف کی ابتدا سشیع*ول سے ہو*لئ

فرزندامام سن مجنبی اورصابری ایک فاصی ننداد نے اسے جائز قرار دیا پہلے
زاندیں تو بہی کشاکش رہی ایک جماعت جائز کہتی تھی دور ی اجائز بتاتی تھی
دوسرے دور بیں جب تا بعین کا زمان کا تر نتھا تو اس وقت ابن جریج نے مکہ
ہوے اور سب کا اجماع ہوگیا کہ فاصنا جائز ہے ۔ اس وقت ابن جریج نے مکہ
بیں مجا ہدادر عطار (تا بعین) سے استفادہ کرکے آثار میں اپنی کتاب تا لیعن کی امام عز الی اس کتاب کے متعلق فراتے تھے کہ ابہلی کتاب جو اسلام میں کمی
گئی دیکن جی جہ سے کہ یہ بہلی کتاب سے جے فیر شبعہ مسلم نے فاصلے ۔ ابن
جریح کے بعد معتم بن رائد صنعاتی نے بین میں ابنی کتاب تا لیعن کی تغیر الخبر مریح کے بعد معتم بن رائد صنعاتی نے بین میں ابنی کتاب تا لیعن کی تغیر الخبر المام مالک کی موطاء کا ہے ۔

مغدرہ فتے الباری ہیں ہے کہ دہم بن صبیح بہتے وہ بزرگ ہیں جنوں نے علوم جن کیے اور بہ زانہ تابین کے آخریں گزرے ہیں بہرطال چاہے دہم ابن صبیح بہتے مؤلف ہوں ابن جری بہتر نوانہ ابن جری بہتر نوانہ المن جری بہتر نوانہ المن ہوں یا ابن جری بہتر نوانہ اور ابھائی باست ہے کہ عمراق بی من مشیوں کے علاوہ سلمانوں کو کو تابیعت بنہیں ۔ مگر مفرست کی اور آب کے مشیعہ کو تو عمراقل ہی ہیں اس کا خیال پیدا ہوا ۔ اکفوں نے دو راق ل ہی میں تابیعت کا کام مثروع کردیا ۔ کتاب جسے امیرالموثین شدے مدوں کیا وہ قرآن مجید ہے ۔ محرست علی میں رسول کے دفن و کفن سے فان ع ہو سے تو آب ب نے معرف تو آب ہے ۔ بیا پیرا آب ہمدکیا کرجیب کاس فران جن نہ کوئی کام نہ کریں گے ۔ جنا پیرا آپ ہمدکیا کرجیب کاس فران جن نہ کوئی کام نہ کریں گے ۔ جنا پیرا آپ ہمدکیا کرجیب کاس فران جن نہ کوئی عام کوئی مطاق سے کوئی مقام کوئی مطاق سے کوئی میں رضوں کوئی بین رضوں کوئی بین رضوں کوئی بین رضوں کوئی بین منات کوئی کوئی میں بین میں ہیں ۔ آ داب سے متعلق کوئی داسیاب نزول کی مجی

آپ نے نفری کی نبر جو آبیں کسی جہت سے مشکل تقیں ان کی وضاحت جی کی ابن سیرین کہا کرنے کہ اگر حصر سن علی کا جمع کیا ہوا قسر آن مل ما آتو تما کی

اور سے ممکن نہ ہوسکا اور نہ ندکورہ بالا دموز وہ لکھ سے ،اس بنا پرامیرالموسین ان سے ممکن نہ ہوسکا اور نہ ندکورہ بالا دموز وہ لکھ سے ،اس بنا پرامیرالموسین کی جمع و ترتیب تفنیر سے زیادہ مشابر سمی اور جب اس قران کے جمع سے فارخ جوچکے تو اس نے جناب سیّرہ کی تسکین ولسلی اور بدر مزر گوار کا غم فلط کرنے ہو چکے تو اس سیّرہ کی اولاد طاہر می ایس مصحف خاطمہ کے نام سے مشہور ہے۔ اس میں امریا لمومنین سے امثال مکمنت کی بایش ، مواعظ ، نصار کے ، اخبار اور نواور جمع کیے سفے۔

اس کے بعد آپ نے ایک کتاب دیاست بی تالیعت کی۔ اس کا اس کے بعد آپ نے ایک کتاب ہوجائع کے نام سے شہود ہے نام صحیفہ کا حوالہ دیا ہے۔
کے اخری امیرالمومنین کی طرف منسوب کرکے اس صحیفہ کا حوالہ دیا ہے۔
اور اس سے دوائییں کی ہیں۔ سنجاران دوابات کے جو سخاری وسلم نے اس صحیفہ سے دوائیوں نے اہمنش سے دوائیوں نے اہمنش سے دوائیوں نے اہمنش سے دوائیوں نے اہمنش سے دوائیوں نے ایمن سے دوائیوں نے ایمن سے کی ہے ۔ وہ کی ہے اور اعمش نے ابراہیم تیمی سے انھوں نے اپنے باب سے کی ہے ۔ وہ کی ہی ہی ہو کی ہے ۔ وہ کی ہو کی ہے ۔ وہ کی ہے ۔ وہ کی ہے ۔ وہ کی ہو کی

" حصرمت على حرائے منے كه كلام مجيد كو حيورك كو لى كتاب

شعطبقاست ابن سعدجلد ۲ کتم ۲ صفحه ۱۰ - صواعق محزف ابن تجریک رباض النفرق حلمتا صغر ۱۹۸

ہمارے پاس بہیں جسے ہم بڑھا کریں سوائے اس صحیفہ کے کیے کہ کہ کراک نے اس محیفہ کے کہ کہ کہ کراک بے اس محیفہ کے کہ کہ کراک بے اس صحیفہ ہی کہ کراک ہے اور اس محیفہ ہیں یہ اور اسسنان الابل کے متعلق محرمیہ تھے اور ای صحیفہ ہیں یہ مجمع مرتوم سے آئی مرتوم محاکہ مرتب مورکا یا کسی فسادی کو بناہ وسے گا اس پر خدا اور طائکہ اور تنام انسانوں کی لعنت مہو ہے

یہ لوری مدسیت صبح بخاری مبلدم کتاب الفرائف کے باب إیشم مسن سبد المسن مسوالدید یہ ایم الفاظ کے ساتھ موجود ہے ۔ اور صبح کساتھ موجود ہے ۔ اور صبح کسلم مبلد اوّل کتاب الجج باب فضل المدینہ میں موجود ہے ۔ امر المام احمد نے مجی ایت مسندیں اس صحیفہ کا اکثر بیٹر مقامات پر المام احمد نے مجی ایت مسندیں اس صحیفہ کا اکثر بیٹر مقامات پر تذکرہ کیا ہے منبح ان کے مسند مبلداوّل صعفی ۱۰۰ بر طارق بن سنہا ہے دواست کی ہے طارق کہتے ہیں کہ:

میں نے ابرالومبن کو و کھاکہ آپ منبر پر فرادہ میں کہ ہا دسے ہاں کو کھاکہ آپ منبر پر فرادہ میں کہ ہا دسے ہاں کو کا کا اس کو لک کناب نہیں جسے ہم تفییں بیارہ کو کرسنا بی سوائے کلام مجید کے اوراس صحیفہ کے (وہ صحیفہ آپ کی تلواد میں مناکب دہا تھا) جسے ہیں نے دسول اسٹرسے ما مل کرکے لکھا ہے ۔

صفارنے عبدالملک سے روابیت کی ہے کہ: " امام محد ہا قرائے حفرنت ایبرالمومین کی کتاب طلب کی۔ ام مجھ صادق م اسے اپنے پدر بردگواد سے پاس لائے۔ وہ

مثل آ دمی کی ران کے صغیم اور نعبی ہو اُن تھی۔ اس میں یہ لکھا ہو ا عفا: حبب سنومرم النے تواس کی زوج کواس کے مکا ات اور زمینوں سے کچے زکے گا ۔ امام محد باقرائے دیجے کرسنہ مایا متم خدا برحضرت على كاخط بهاور رمول كالكهايا موايه سطبیوں کی ایک خاصی تعداد سے بھی امیر المومنین کی بیروی کی اور آب کے عبد میں کتا ہیں البعث کیں منجدان کے جناب سلمان فارس اور ابوذر غفاری ہیں ۔ جیسا کہ علامہ ابن سمبراً شوب سے تخریر فرایا ہے: ابنابى طاب سے بہلے مصنف حصرت على ابن ابى طالب میں بھرسلان فارسی بھرجناب ابوذر۔ اور ودمرے نوگ مبخل شیبات امیرالمومین اکے ابورا فع آزاد (ا غلام رسول اُللہ ہیں جوامیرالمومنین کے عبد ہیں مبیت المال کے نگران مھی رہے۔ یہ امیرالمومین اکے مخصوص موالیوں ہیں سے يتح اوراك كى قدر مسز لسن كى معرنت ركھتے تھے الحول في ايك كتاب سنن وفضايا بين فكمى بي يجيد الخول في حرف امیرالمومین کی مدیروں ہے ترتیب دیا تھا ، بیکتاب ہمارے اسلامت کے نز دبکسانتہائی عظمنت واحتزام کی نظروں سے ويحجى جانئ تنى اور ہارے اسلامت شے ابنے ابنے طرق واسا د سے اس کی روابیت کی ہے ،

انخیبی بین سے علی ابن ابی رافع ہیں داصا بہ بیں ان کے حالات میں لکھا ہے کہ بیجہد درسانیا کب میں پیدا ہوسے اور دسول السّٰدہی نے ان کا نام علی رکھا) ان کی ایک کتاب نئون نفذ میں ہے جسے انھوں نے موافق مذہب ا بلبسیت توریکیا ہے - ۱ بلبسیت علیہ انسانام اس کتاب کی بڑی نعظیم کرتے تھے اورا پنے شیعوں کواسی کتاب کی طرفت رجوع کرنے کی برایست فراتے ۔ موئی بن عبدالتّہ بن حسن فرانے ہیں کہ :

" میرے والدما جدے کسی نے مشت بدکامسلد برجیا والداجد فع میرے والد ما جدے کسی این واقع والی کتاب لاؤ کتاب لائی گئ اور آب شے اسے ہم لوگول کو مکھایا "

صاحب روضات البنات نے خیال کیا ہے کہ بدنقہ کی ہی گا سے جوشیوں ہیں لکھی گئ کی البنات میں المحالی ہوئی۔ جوشیوں ہیں لکھی گئ کی البنان الفیس علط فہی مہوئی۔

منجدان مصنفین شیعہ کے عبیدالشرین ابی رائع ہیں جوامبرالمومنین کے کا سب اوراک کے دسول الندسے مان کے دسول الندسے مدیثیں منیں انتجب سے دسول الندکی برحد میث موی ہے جو آنحفزت نے جناب جعز طبیار کے متعلن فرایا کہ :

" الشبهت ضَلقي رَحْكُلقي "

" تم صوربت وسيربت دواول بين مجه سے مشابه !

اس صیرینی کی ایک جماعست سے عبیدانٹربن ابی رافع سے دوابیت کی ہے۔ کی ہے۔ منجدان کے امام احدین صنبی سے مجا اپنی مسندیں نقل کیا ہے۔ ابن جرعسعنل نے اصابہ حتم اول میں عبیدانٹر اسم کے عنوان سے ان کے مالاست وکھے میں کیونکران کے اب ابو رافع کا نام سام متعا۔

انحیں عبیدالشرف ایک کتاب تالیعت کی لمس لیں ایر المومنین می ان تمام صحابیوں کا تذکرہ کیا ہے جوجنگب صغین میں امیرالموسنین کے ساتھ مشرکی سنتے ۔ ابن چو شعرابی اصاب میں اکثر ومیسینزاس سے لمقل کسیا ہے انجیب

یں سے ربید بن سیع بی انھول نے چوپا ہوں کی ذکو ہ کے متعلق مصرت امیرالمؤملی گا کی مدیر ایک کتا سب الیعن کی انھیں ہیں سے ایک عبداللہ بن حر فارسی میں جن کی ایک کتاب مدیریت میں لمعہ ہے جوانھوں نے امیرالمومین کی مدیروں سے جع کی۔

انخیں میں سے اصبغ بن نبانہ صحابی امپرالمومنین میں۔ یہ اصبغ ابن نبانہ تو بس امپرالمومنین میں۔ یہ اصبغ ابن نبانہ تو بس امپرالمومنین میں ہے امپرالمومنین سے امپرالمومنین سے امپرالمومنین سے مالک اشتر کو بخر بر فرایا۔ نیر اس وصیعت نامہ کی جو آب نے اپنے فرزند محد کے بیے لکھا بھا۔ ہما رے دوا ہ نے ان دونوں جہدنامہ و وصیعت کی ان ہی اصبغ بن نبانہ سے بسلسلہ استا د صعیمہ روابیت کی ہے۔

انخیب میں سے سلیم بن قیس بلالی محالی امیرالمونین بین انفول سنے امیرالمونین اور جناب سلمان فارس سے روانین کیں انفوں سے امام سنت بر ابیب کتاب مکمی جس کا ذکر امام محدا براہیم تعانی سے اپنی کتاب نیب میں کیا ہے ۔ چنانچے مکھتے ہیں :

* جملا اہل شیخ منصول نے ائمہ سے تخصیل علم کی یا صدیب بیر روایت کیں ۔ ال ہیں کو ئی اختلاف نہیں کہ سلیم بن تایس ہلا لی کی کتاب ال خبادی واصولی کتابوں میں سے ایک کتاب ہے جے اہل علم اورا حادیث اہل میہت کے حاملین نے روا بیت کی ہے۔ یہ کتاب نمام کسب اصول سے مقدم ہے اور ان اصولوں ہیں سے ہے جو تمام شیول کا مرجع ہے اور برایک کے نزدیک معتبد و معتبر ہے ۔ "

اس سے پہلے طبقہ میں ہمارے سلعت صالحین میں سے جننے حصرات میں جا البعث ہوئے البعث ہوئے البعث ہوئے البعث ہوئے الب تالیعت ہوئے ان کے مالاست اگر آپ دیجھنا جا ہیں تو آپ ہمارے علما کی وہ فہرسیں ملاحظ فرائیں اور وہ کتابیں دیکھیں جو انھوں نے رجال کے تذکرہ میں کسی ہیں -

دوسرے طبقہ لینی دور تا ہمین ہیں شیعوں ہیں جو صاحبان البیت گزرے بیں ان کا توکو آیا ندازہ ہی تہیں ہو سکتا حضوصاً اس رسالہ میں اننی گنجائش کہاں کرسسب کا تذکرہ ہو۔ان مصنفین کے مالاست اور ان کے اسا نبد کا تفعیلی میان دیکھنے کے لیے ہمارے علماکی فہرسیں اور فن رجال کی کتابوں کا مطالعہ کیا جائے کے

اس طبقہ کے مصنفین کے زمانہ میں اہل بہت ہے فریت و نیا مفور ہوری کئی ۔ پہلے تو ظالموں کے ظالم کے بادل اس نور کو ڈ ھانکے ہوئے کے قدیم ایک بھیرت کے ورد ناک المدید نے دشمنان آل محد کو بوری طرح رسوا کیا اورا رہا ب بھیرت کی نگاہوں سے ان کا وقادر صحصت ہو گیا ۔ اب ہر دل میں برسوال کا نٹاین کر کھٹنے لگا ، ہرسویے والے دما نے میں یہ فکر بہلا ہوئی کہ درسول کی آنکھ ہند ہوتے ہی اہل میں بین کہ میں میں ایک میں کہ کھوٹ بیدا ہوئی ۔ اسباب ایسے محفی تو سے مہیں کہ کھوٹ بیدا ہوئی۔ اسباب ایسے محفی تو سے مہیں کہ کھوٹ بیدا ہوئی۔ اسباب ایسے محفی تو سے مہیں کہ کھوٹ کے اسباب کیا ہوئے ۔ ونیا جان گئی کہ ان مصائب کی کھر دیزی کیونکر ہوئی کیونکر ہوئی کیونکر ہوئی کھا کہ بیاری کی ۔ اس حفیقت کے کہان سے ایک کھی کے اسباب کی ایسے میں نہ آئے ۔ ونیا جان گئی کہ ان مصائب کی گئی دیزی کی ون کہ ہوئی کھوٹ کے کہان سے نہ ہوئے کہ اہل برین کی کھوٹ کے دائل برین کی کھوٹ کے ان مسلمان کم کے بیاری کی ۔ اس حفیقت کے ان مسلمان کم کے بیاری کی ۔ اس حفیقت کے ان مسلمان کم کے بیاری کی ۔ اس حفیقت کے دائل برین کی کھوٹ کے بیاری کی ۔ اس حفیقت کے ان مسلمان کم کے بیاری کی ۔ اس حفیقت کے دائل برین کی کھوٹ کے دائل برین کی کھوٹ کے دائل برین کی کھوٹ کے دائل میں کا کہیا تا کہ کے بیاری کی ۔ اس حفیقت کے دائل برین کی کھوٹ کے دائل برین کی کھوٹ کے دائل میں کا کھوٹ کے دائل برین کی کھوٹ کیا کہ بیاری کی ۔ اس حفیقت کی دائل کی کھوٹ کے دائل برین کی کھوٹ کے دائل برین کی کھوٹ کی کھوٹ کو دائل کی دائل کھوٹ کے دائل کی دائل کے دائل کی دائل کے دائل کی دو ان کی دائل کی دو ان کی دائل کی دو ان کی دائل کی دائل کی دائل کی دائل کی دائل کی دائل کی دو کھوٹ کی دائل کی دو کر کی دائل کی دائل کی د

[.] سك چيپ فېرست مخاطئ كتاب منهنى المقابل بكتاب بنيج المقال وطيرو

برکوئی آئے ندائے پائے۔ نیزیہ کران کے خون احت کا بدل دیا مائے۔انسانی طبیبت کا خاصہ ہے کہ وطری طور پر مظاوم کا ساتھ دینی ہے اورظا لم سے نفرت کرتی ہے۔ کر بلا کے خوین وافنہ نے مسلمانوں کی آنکھوں پر بلے ہوئے برقے انظادية اب وه اكب سنة دوريس واخل روئ المعلى ان المين أرين العابدين كاطاعست كاول مي حذبه بهياموا اورامول وخروع دين فزان ومديث اور جله ننون اسلام بس الخيس ك در برجب سانى اختبار كريم ال تمام جيزون میں انھیں کی طوے رج ع کرا مے کیا۔ امام زمین العابدین کے بعد امام محر باقری والبستكى اختياركى - ان دوا مامول لينى المم زين العابدين وامام محر بازع ك اصحاب سزارا مصطان کی نعداد کا اندازه کرنا ممکن مہیں لیکن ایسے افراد من کے اسما اورمالاست مذكره كى كتابول بيل متون موسك وه تقريبًا چار مزار حضات حليل الفندار باب علم اصحاب بير وال حفزات كي تصنيفات كم ومبين وس مزار الك بويل مهارك محدثين في مردورين صبح اسساد سے ان سے رفاي كيسان يس اكثر اليك وش نقيب افراد ممى تقع حنصول في الم زبن العابرين والمام محد با قرم کا بھی زمانہ بایا۔اور امام مجمع زمادت میں کھی باریاب

چنانچرمنحان کے ابوسعبد ابان بن تعلب بن رباح ابور ی مشہور قاری فقیہ و محدست و معشراور اصولی ولغوی ہیں۔ یہ ثقہ تربن لوگوں ہیں سے ہیں بن اماموں سے بن اماموں سے مناموں سے مناموں سے ملاقات کا مثر من انحیں حاصل ہوا اور تینوں اماموں سے بکٹرت علوم کی انھوں نے روایت کی مختصراً اس سے اندازہ کر لیے کا تھوں نے صوب المحقومان سے بیش ہزارہ تینیں دوایت کی ہیں بعیبا کہ منہی المقال بیں علامہ میرزا محد نے ہسال کم مالات ابان شخر پر فرمایا۔ انھیں انکہ کی خدمت ہیں ہیں علامہ میرزا محد نے ہسال کے مالات ابان شخر پر فرمایا۔ انھیں انکہ کی خدمت ہیں

برانقرب او رمضوص منز لسنة ماصل تقي .

امام محرباقر ان الناس مرمایا تفاکه:

«مسجد لیں مبیطے اور لوگوں کو فتو ئی دو برمیری دل نمناہے کہ میں اپنے شیعوں میں بھارے جبیباسٹی دیکھوں یا

اورامام حعفرصادق السے ان سے فرمایا تضاکہ :

ا ابن مرینے سے بحدث د گفتگو کر و مجھے برہبت ہی محبوب ہے کہ میں بھارے مبیان شخص اینے محضوصین اور راولوں میں دیکھوں یک

برابان مب مدینہ آئے توطفے ٹوٹ کران کے گرد اُجائے اور سجد مہوی میں بیٹے ہر جال بیٹ اور سے منہوی میں بیٹے ہوئی دی جاتی۔

أمام معفرما وق الصيلم ابن ابى مبة سع فرايا كه :

وتم ابان بن تنالب کے پاس ماؤ-الفوں نے مجھ سے مربت

زیادہ صرفین کے ہیں۔ وہ جس عدیث کی تم سے روامیت

کریں تم میری حاف سے اس کی روا سے کرو !! امام جعزصاد ق اسے ابال بن عثمان سے فرمایا کہ :

« ابان بن تغلب نے مجے سے تیس ہزار مدشیں رواب کی بیتم ان مدیّر ں کی ان سے روابیت کر و !!

حبب برایان امام کی خدمست میں آنے توامام معفرصادق ان سے منظم فرماتے ، معما فرکرتے اور میں مدان کے لیے مجھانے کا حکم دبیتے اور بیری طرح منفوج ہو کریم کلام ہوتے ، حبب امام شے ان کے انتقال کی فہر مشمنی قوفرالیا : "منوب ہو کریم کلام ہوتے ، حبب امام شے ان کے انتقال کی فہر مشمنی قوفرالیا : "میرے ول کو بید صدم مینی یا یا "

ان کی وفاست سام ایت میں مولی -

ابان کی کمی مفیدنشا نبعت ہیں منجاران سے ابکب کتاب ہے جوغرائب قرآن کی تغییر میں انھوں نے مکھی ۔اس ہیں کلام مجید کی آیٹوں کے سٹوا ہومیں کہٹرست عوب کے امثغار ورج کیے ہیں ۔

ان کے بعد کے زائد میں عبدائر عن بن محد از دی کو فی گزرے میں ایکوں نے ابان بن تغلیب مارے میں ایکوں نے ابان بن تغلیب ، محد بن سائب کلی اور ابن روق عطیب مارے کی کتابوں کو جن کر کے ایک کتاب کی شکل دی ۔ جن جن مسئلوں میں ان حصراست سے اختلاصت کیا ہے۔ اختلاصت کیا ہے۔ اسے بھی لکھا اور جن جن خسکوں میں برمسب سنفق دہا ہے۔ کی معی وصناحت کی ۔

ہمارے اصحاب نے ان دونوں کتا ہوں سے معتبر اسناد اور مخلف طریق سے دوائیں کیں۔ کتاب الفضائی ہے ایک کتاب صفین ہے اصول میں بھی ایک کتاب الفضائی ہے کنز دیک مسلم طور پر اصول میں بھی ایک کتاب الفول نے لکھی جوز قد کا امیہ کے نز دیک مسلم طور پر احکام شرعبہ بیں مان مانی ہے۔ تغییل دیجینا ہو تو رجال کی کتا میں ملاحظ قرائے۔ منجلان کے ایک بڑرگ ابوجم و شمال ہیں بیہ ما دے سلمت صالحین کے مقات و ملم کے اعلام میں سے اکی بررگ جی سامان شاہی کے مجد رہے ۔ ائم تہ طام بری کی بارگاہ میں انصی برات تو رہ ما میں انصی برات تو رہ ما میں انتیان کی مدح و تنا فرائی ہے۔ جنا بچہ امام کا تول ہے کہ :

الم میں نفی نا فرائی ہے۔ جنا بچہ امام کا تول ہے کہ :

الم میں نفی یہ ایک میں ایک میں جیسے سلمان فارسی ا بنے زمانہ میں نفی ہیں جیسے سلمان فارسی ا بنے زمانہ میں نفی ہیں جیسے سلمان فارسی ا بنے زمانہ میں نفی ہیں۔

امام رصّا قرائے ہیں کہ :

" ابوهمزه ابینے زمائے میں ابینے ہیں جیبے نقان ابینے زمائہ میں ہے ال کی ایک کتاب نفیر العسند آن ہے۔ علام طبری نے اپنی تغییر جی البیان میں اکثر حکم اس نفیر سے نقل کیا ہے۔ اکفین کی کتاب النوادر کتاب الزم اور دسال حقوق مجی ہے۔ اکفوں نے ان کتابول کوامام زبن العابد بن سے روابیت کیا ہے۔ اکفوں نے انس اور شعبی سے بھی رواتیس کی ہیں اور ان سے و کیع ابونیم اور اس طبقہ کی ایک جا عسن کے مشید کستی دونوں نے مشیمی بیان کین ایراس طبقہ کی ایک جا عسن کے مشید کستی دونوں نے مشیمی بیان کین

الله اسساً لكم المع كانتير منسل لا اسساً لكم المع كانتيرك سدد ين اس كتاب ب نقل كانتيرك سدد

ان كا ذكر كبى بم صغاستِ ماسبن بين كريكِ بي -

چندناموراصحاب ایسے بین حنبول نے الم زین العابرین کا زمانہ تو زیایا کین امام محد باقر وجوع وجوع ان کی خدمت بیں باریا ہے شرف باب ہوئے منجاران کے ابوانقائم بربدین معاویہ عجلی ، ابو بھیرالاصغر لیبث بن مراد بختری مرادی ، ابوالیس زرارہ بن اعین ، ابوجوع محد بن مسلم بن رباح کوئی طالعی مقفی ہیں۔ ان کے علاوہ ایک پوری حما عن ہے ۔ انتی گنجائش نہیں کسب کا ذکر کیا جائے ۔ الدبت یہ چار حصرات بڑے علیل القدرا ورعظیم نرین شخصیت کے ماک بین ریبال یک کرخورامام جوع صادی اسے مان حصرات کے تذکرہ کے منت میں فرایا کہ :

" بيعفزات خدا ك ملال وموام برمندا مي ابن بي "

أكيب اورمو تع برطراباكه:

، میں کمی کو نہیں بانا جس نے ہارے ذکر کا احیار کیا ہو موائے زرارہ ، ابو بھیر لیٹ ، محد بن مسلم و بریدہ کے ۔اگر بیلوگ نہوتے تو کوئی بھی ہارے ذکر کو تازہ ندکرنا ''

ا کیب اور موقع پر فرمایا:

یعصرات دین کے محافظ اور میرے والد ماجد کے مقرد کردہ
 ملال وحرام اہلی پر ابین اور دنیا بیں مجی ہماری طرف سیفنت
 کرفے والے ہیں اور آخرت میں بھی ہے

امام جعوصادن عن بشوا لمخدس بالجنة كالماومة فراك المراس كم بعدان جارول حصرات كاذكركيا-

ا كيسا ورطولان كنتكوم ان كا ذكر فرائ مرسة امام ف كها:

ا میرے والدبزرگواریے ان حصرات کو ملال وحرام المی براین بنایا تھا بحصرات میرے والدبزرگوارے علم کے خزید واری ای ای طرح آن میں بحصرات میرے نزدیک وی مزلت رکھتے ہیں اور میرے دا ذول کے فرین دار ہیں - میرے والد بزرگوار کے برحق صحابی ہیں اور برمیرے سٹیول کے بیے زندگی میں مجی اور مرنے کے صحابی ہیں اور برمیرے شیول کے بیے زندگی میں مجی اور مرنے کے بعد مجی ستارے ہیں۔ الحق کے ذریعہ خدا ہر بدعت کو دورکرے کے بعد مجی ستارے ہیں۔ الحق کے ذریعہ خدا ہر بدعت کو دورکرے کا اور غالیول کا اور غالیول کی تاویلیں باطل ہوں گی ہو

اسس کے علاوہ بے شارار شاوات الم ہیں جن سے ان کا فضل و مشرف کراست ولا بیت ہوں سے ان کا فضل و مشرف کراست ولا بیت ولا بیت پوری طرح کا بہت و محتق ہے۔ انسوس کر اتن گخائش نہیں کر معنصلا بیان کیا جائے ہا وجود ان کی اس انجیبیت و جلا است قدر کے دشمنا اِن الم بیست نے ان پر بڑی بڑی تبری رکھیں میسا کہ ہم اپنی کتاب محتقر ال کلام فی مولعی الشیعہ من صدر الاسسلام میں میان کر بیکے ہیں۔

وشنول کی نہمت تراسیوں سے ان کی و تعت و علی ہے مزاست میں فرق نہیں ہوتا اور نداس و فعت میں فرق نہیں ہوتا اور نداس و فعت میں کی پیدا ہوتی ہے جوانھیں فعدا اور رسول کے نزدیک ماصل ہے ۔ جس طرح انبیاء سے حدد کرنے والوں نے حد کر کے انبیاء کا کچھ نہیں بھا را بلکم میکس ان انبیاء سے حدد کرنے والے کی علوے کر تبت ہی کے باعث ہوئے اور بجا سے اس کے کہ وہ حدد کرتے والے ان انبیاء کی شریعنوں پر کچھ انزا نداز ہوتے وہ اور دین کی اشاعت اور بم گھیسہ مغبولسیت کا میں سے کے اس سے کے میں اشاعت اور بم گھیسہ مغبولسیت کا میں سے ہے۔

الم جعزماد ق محمد مين علم ميش ازبيش ميدل حيكا تقااور جار مانب

سے شیعان محد وآل محد امام کی خدست ہیں بہنچ رہے تھے۔ امام پوری خدہ جینی سے بیش رہے تھے۔ امام پوری خدہ جینی سے بیش اتے ، بڑی توج فرماتے ، ان کو استوار بنانے بی آپ نے کوئی کوسٹ شاکھا در کھی اور علم کے دموز حکمت کی بار بیبوں ، حقائق امور سے آگا ، بنانے بیں کوئی دنیف فردگر است بہنیں کیا۔ جیسا کہ علامہ بہرستانی ملل و مخمل میں امام کا ذکر فرائے ہوئے رفنطراز ہیں ۔ چنانچہ و م محصن ہیں ؛ مام جفوصادی وین کا بے پایاں علم ، حکمت میں پوری طرح وست کا مرت اسے وستدگا ، رکھنے والے دنیا سے انتہائی بے غومن اور خوام شول سے محمل میں طور بر بے نیاز برزگ تھے ؟

اس کے بعد لکھنے ہیں :

"آبایک مدن کک مدن مین میں مقیم دہ اورا بے شینوں کو نیف کہنچاتے رہے اورا پنے دوستوں کو دموز وامرار علم تعلیم فرائے رہے بھراً سب واق تشریعیت لائے ۔ یہاں بھی مدلاں آپ کا تیام رہا ۔ کہی سلطنت کا خیال آب کے دل میں بہیا نہوا اور نہ خلافت کے لیے آپ نے کہی کی سے زاع کی۔ اسکسلدی علامہ مہرستان لکھتے ہیں کہ:

« بوتغف بېرمع دنند يس مؤسط سگائ والا بواست سامل كى لمت نېيں بوتى اور جوحقيقست كى جولى تك بلند بوچكا بواست ينجي گرمانے كاخوت لاحق نېيى بوتا "

ای طرح کی پوری عبارست ہے ان کی۔ ہیج توبیہ ہے کرحن ، انصاصب پسنداور معاند دونول کی زبان پر اگر رہتا ہیں۔

امام جعفرمادن سے بے شاراصحاب ہم گیرمشرست کے مالک مہوئے - وہ

سب کے سب ائمتہ ہدامیت ، تاریجیوں کے جراع ، علم کے دریا اور ہدامیت کے بخوم سلنے جن اصحاب کے اور ہدامیت کے بخوم سلنے جن اصحاب کے تعدد وی ہوسکے ان کی تعدد ویا رہزار تک بہنچتی ہے۔ اس میں عراق کے رہنے والے تنے اور عباز و فارس وشام کے بھی۔

یہ چاروں اصحاب بڑی سے ہور مصنفات والے ہیں ۔ ان کی مصنفات فرقراما میں منبی انتہائی شہرت رکھتی ہیں ۔ منبط ان مصنفات کے حروث اصول بیں جیار سوکتا ہیں ہیں ۔ منبط ان مصنفات کے حروث اصول بی جارسوکتا ہیں ہیں ۔ میں انتہائی ہم سابق میں بیان کر چکے ہیں کہ یہ جار سوتھا بینت چارک مصنفین کی ہیں جواسام جعفر صادق کا کے جمعہ میں انفیس کے تناوی جے کرکے لکمی گئیں اورانام کے بعدا تنسی برعمل کا دار و مدار د اپیمال سک کہ بعض علی سے اعلام میں ہولت کے بینے ان کا خلا حرکر ڈالا ۔ ان میں چار کتا ہیں میں اوران و اور د عرف میں شیول کا مرجع قرار پائیں ۔ صدراق ل سے سرتب ہوئیں اوران و اور کتا ہیں یہ ہیں۔ کانی ۔ تہذیب ۔ استبصار من لا محضرہ انفظیہ ۔

یہ جاروں کتابیں متواز ہیں اوران کا صبح ہونا قطعی ویفینی ہے۔ ان جاروں بین کانی مفدم عظیم تراور مہت خوجوں کی جام انتہائی کھوس کتاب ہے اس میں سولم ہزار ایک سوننا نوسے حدثین درج ہیں جو نغداد بین کل محام سند کی حدثیوں سے کہیں زیادہ ہیں۔ جبیا کہ شہید تانی نے ذکری میں تخریر فرایا ہے نیزا در علمائے اعلام نے وضاحت کی ہے۔

بسشام بن مکم جوامام حبفر صادق والمم موی کانلم کے اصحاب میں سے نصح است میں سے کے است کتابیں الیفت کیس سے کنے انتوں سنے کہنز سند کتابیں الیفت کیس مان میں انبیال کتابیں کا فی مشہور ہوئیں بہتمام بڑی کتابیں بولی نادراور سبت ہی مغید تضام بڑی کتابیں بولی نادراور سبت ہیں بولی نادراور سبت ہیں مغید تضام بولی کتابیں بولی نادراور سبت ہیں بولی نادراور سبت ہیں مغید تضام بولی کتابی کتابیں کتابی کتابی کتابیں کتابی کتابی

كمي كئيب اصول فردع ، توحيد، فلسفه عقليدين زادنه ملحدين ، نیچری ، قدربه ، جبربه ، امبرالمونین اورالبسیت کے متعلق فلوکرنے قالے خوارج ، نواصب ، حصرست علی کے وصی میٹیر ہونے سے انکارکرنے والے، آب کوموفرد کھنے والے ، آپ سے حنگ کرنے والے اور وہ لوگ جو مغضول كي تقايم نفل برمائز بمجنة بي ان مسب كى ردّ مي المحكى بي -یہ شام ازن تا ن کے وگوں میں برے پابے سے بررگ اور ملم کا م عكست البيدا ورحمه علوم عقلبه ولقلبه مين مسب مسيرط حرع المرسق ونغنه و حديبيت بين انتبازى درمير ركين متق تغنير ودعاء علوم وننون بأن الخبس تقدم حاصل تھا۔ بیہشام ان لوگوں میں سے ایک بیری حنیوں نے امامت بر محبث کی اور شاطر کرے ندسب کی تبلیع کی -انھوں سے الم حبطر صادق والم موی کا علم سے روایت کی ۔ ان معزات کے نزد کیب ان کی بڑی منزلست کفی ۔ ان کی مرح و ثنا میں زبان اما من کے ابیےالغاظ حرف ہوئے ہیں کہ آن مے علو سے مرتبت كالنوازه ي نهي كبا ما سكتا منروع شردع مين به فرقتهميد علق د کھتے تھے بچوالم جعفرصادق کی خدمست میں باریا بی کا مغرست حاصل ہوا اورآب کی برابیت سے معرضت وبھیرست کے مائل ہوئے کا کیے ہدامام وکالخا كازمانه إياا دراكب كتمام محابوب بب فائن وممتاز موسة

دیٹم نوں نے جو تور خدا کے بجہانے کی دن راست کوسٹش ہیں مصروت ر بتے ہیں اہل بہت سے حسد و دسٹنی ر کھنے کی بنابرا تھیں طرح طرح منہم کرلے کیسمی کی سبسیت ضداکا قائل بنایا ہے مگران کے ندبہب سے جس قدر ہم شیعہ وافقت ہوسکتے ہیں ہما رے نما لین نہیں۔ہما دے میش نظران کے اقوال و افعال ہیں۔ہمارے ندبہب کی تائید ہیں ان کر گرا لفت درمصنفات ہیں جن کا ہم اشارتا ذکر کرچکے ہیں اہذا ممکن ہی تہیں کہ غیروں کو جو ان کے مذم میم مشرب
سے دور کا بھی واسط تہیں رکھنے ان کے افرال کا علم ہوا ورہم لاعلم رہیں۔
ہمیں کچھ ستیدنہ ہو مالانکہ یہ ہمارے سلعت صالحیین اور سابقین ہیں سے ہیں۔
علاوہ اس کے شہرستان نے ملل و تحل ہیں جو عبار ست ان کی طون شوب
کر کے نقل کی ہے اس سے ہرگزیہ تابت مہیں ہوتا کہ بیعبماینسٹ کے قائل تنف ۔
میں اصل عبار ست نقل کیے و تتاہوں .

علامه تهرستاني <u>لکھتے</u> ہيں :

" مېشامېن مکم اصول ندېرىب يى بلى گېرانى ركھتے ہيں . انھوں ففرقه معتزله برجوالزام عائد كمييبي ان سي عناست ذبرشنا چاہیے دیشخص ان الزام سے اکے ہے جودشن اس برلگاتیں اوراس کے کلام سے جونشیہ ظامر ہوائی سے اس سے بھیے ہے یعی تشبیه کا فائل نہیں سے ادروہ یہ سے کہ اکفوں نے علات سے کہا کرجب تم یہ کہتے ہو کہ خدا عالم برسبب علم سے اور علم اس کاعین ذاسند سے تواس کا مطلب یہ ہوا کہ و ، عالم ہے مگر دیناکے عالموں کی طرح عالم مبیں ، تو مجریہ مجی کیوں نہایاں ماننے کہ وہ جم ہے لیکن اور اجسام کی طرح بنیں معولی عن والا مجی بھی سکتا ہے کہ اگریہ کلام مان بھی لیا جائے کہ ہشام ہی کا تھا تووہ بیطورمعا دھنہ ہے ۔ علامت سے بطورمعارصہ اکفول ہے ہ باست کبی بھی اور معارصہ میں کوئی باست کینے سے یہ منروری نہیں كراس باست كاانسان معنفذ بجى جو يكيونكر جوسكمّا سبت كربشام كا وامنى مقفدعلامت كما جائجنار بإجودب بيزمبلانا مغفودر بإجوكم

علات میں کتنے بان میں کس مدتک ان کا علم ہے ! من بدبراں اگر فرض بھی کر نیا جائے کہ ان کے اس حملہ سے ان کا قائل تیجا البی ہونا تابت ہونا ہے تو ہوسکتاہے کہ دہ قبل ہیں جب تک انفیں معرست زحاصل مونی تھی امام کی خدمت ہیں باریاب نہوے تھے، وہ الیا ہی عقیدہ ر کھنے ہوں کیونکہ ہم میلئے ہی کہ چکے ہیں کہ وہ ابتدا ، جہبیہ مسلک پر تھے ، کچھر بإبت أل محد سے الفيس بعبرت حاصل ہو أل اور الله طا مرس المحصوص ونامورا فراد ہیں سے ہوئے -ہمارے سلعت دخلعت دونوں ہیں سے کسی فرد نے مجی کوئی ایسی باست ان میں نہیں بائی جن کا دشن ان پر انہام رکھتے ہیں جس طرح وثمن نے زرارہ بن اعیُن ، محد بن مسلم ، مومن طاق اوران جیبے بزرگوں پرطرح طرح کہ تمیں ا برصیں ، غلط مسلط بانیں ان ک طرحت خسوب کر کے بیان کیں اور میں ان کے منعلق کوئی باست مجی طلاحث زمعلوم ہوسکی ایس طرع بشام كے متعلق تمی دشنوں سے اخرابرداز پال كبس اور غلط انتها ماست ديكھ مرحمين كوئ إست ان مين وهوزار صي على ندىلى باوجود كي ممن افي مسام تواما سُیاں ان حصرات کے حالات کی جمان بین میں صرت کر دیں ۔ سگر کو کی جیمز قاب*ل اعترامن نظرزاً ئی ۔ برسب دِشوں کی مرکمشی وعدادس*سند اوربہتان واشیاں بير ـ ولاتحسبن الله عشاف للاعدما بعدل الظالمون -« ظالمين جوكي كرنے ربتے بي ان سے خدا كو مركز غافل و كي " ملامر شہرستنان نے ایک اورالزام مشام پرلسگایا ہے اور وہ یہ ہے کہ مشام الومبیت امیلر منین می قائل ستنے بیالزام ایسا ہے جے سن کر زن بيرمرده يمى منس دے رمشام كو كعبلا ان خرا فاست و بهلات سے كيبا سبت ان كى طرف ايسى دكيك بالول كى نشبت دينا صدورم كى ناوانى ب

تودید کے متعلق ابک طرف ان کا وہ کلام چوملول سے خدا کو ببانگ دہ پا پاک و پاکیزہ اور ماہوں کی باتوں سے بلند و برتر ظاہر کرے دوسری طرف اما معن اور امیرالمومنین کے وہ خیالا سنجیں سے واضع طور برمعلوم آدکہ دسول ما علی سے انعمل متقا ادعا یا آب کی امعت و دعیب سندوں میں سے ایک خود میں سے ایک خود میں سے ایک خود میں میں ایک حقے اور خدا کے ان مبدوں میں سے ایک حقے جن برظام وجر کیا گیا ۔ جوا ہے حقوق کی حفاظ سند سے عاجز دہ ہے میم دم اس کے مارے و کی معین تھا نہ اسے دکھیں تھا نہ اسے دکھیں تھا نہ اسے دکھیں تھا نہ اسے دکھیں تھا نہ دولوں باتوں کے بعد مجھر برا انہام دکھنا کہ مشام علی کی خدا کی کے اس متھے کہاں تاک تاب تابل توجہ ہے۔

کہاں توعلامہ شہرستانی خودگواہی دیں کہنام اصول نزیب میں بڑے گہرے تھے اور وہ ال الزامات سے بری سنے جو دشن ان پرلگاتے ہیں۔ اس کے بعد ان کی طوست ان معاملات کی نسبت بھی دیتے ہیں کہ وہ حضرت علیؓ کی الوہ بیت کے قائل متھے۔ کمیا مشہرستانی کے کلام میں بیتنافض

نہیں ہے ؟ اور مشام ایسے عظم المرتب اساحب نصل وست رف بزرگ کی طون ال نہمادت کا مشوب کرنا مناسب ہے ؟ کون منصف

مزاع استسلیم کرے گا الیکن واقعہ توب ہے کہ مخالفین المبیت اور بیروان المبیبنت سے صدر کھنے اور ان پر مبرظام روا سمجھنے کی جہت سے سوا سے بہتان نزاشیوں اورانترا پرواز ہوں کے کسی باست کولیند ہی نہیں کرسکتے۔

امام موسی کاظر، علی رصنا، محر تعتی ،علی نعتی ،حن عسکری علیه السلام کے زمانہ میں نصنیعت و تالیعت کا سلسلہ بہت وسیع ہوجیکا تھا، بے شمار کتا ہیں

نگھیگیں-بربرسمری المئه طاہرین اورامحاب، نمد معصوبین سے روامیت کرنے

والے بھیل میکے تنفے انفول نے علم کی اشاعت پر کمر بالدھی اور علم کی ندوین میں کوئی کسر باتی ندر کھی علوم ومعارف جمع کرنے میں اپنی ساری صلاحبنوں سے کام لیا۔ محقق علیالرجمند معتبر میں فراتے ہیں کہ:

" امام محدثقی" کے المائرہ میں بڑھے نامورا فامش گزرے جیجے بن بن سعیداوران کے معالی حن احمد بن محد بن الی نصر برنظی ، احمد بن محد بن خالد برتی ، شاؤان ، ابوالعنعتل العی ، ابوب بن نوح ، احمد بن محد بن عیلی دخیر وجن کی فہرست بہت طولانی

ممقن فراتے ہیں کہ:

۱۰ ن حصرات کی کتابیں آئ علماریں نقل ہو آن جلی آرہی ہیں ان کتابوں کے دیکھنے سے بنہ جلتا ہے کہ کس قدر سے پایاں علوم کے حال منعے بید حفرات الح

میں کہنا ہوں کہ ہے مرت برتی کی کتابوں کو لیجے۔ تنہا ان کی موکتابیں میں ۔ برنظی کی ایک کتاب بڑی عظیم الشان کثاب ہے جو حاسے کے نام سے مشہورہے جسین بن معید کی نئیس مصنفات ہیں ۔

امام جعزمادن می اولادست جهاماموں کے جلنے نلامذہ گزدے اور انھوں نے مبنی کتابیں تالبعث کیں ان کا اندازہ بہیں ہوسکتا رجال کے مالات میں جوکتابیں اور فہرسیں ہیں ان بی ان کا اندازہ بہیں ہوسکتا رجال کے مالات ملاحظ فرائے میں جوکتابیں اور فہرسیں ہیں ان بیں ان جدمی است مالاحظ فرائے محدمی سسنان ، علی بن جزیار ، حسس بن محبوب ، حسن بن محدمین ساعت ، معمون بن محدمین ساعت ، معمون بن محدمین ساعت ، معمون بن محدمین معلی بن معمون بن محدمین معمود میا شی (جن کی مصنفات دوسو شاذان رجن کی مصنفات دوسو

سے بھی زیادہ ہیں) محدین عمیر ، احمد بن محد بن علینی ، (انھوں نے آمام جغرصادق كے سواصحاب سے مدینوں كوسے ما اور بیان كيا) تحدین على بن محبوب طاحین زيد ، عاربن موسى سابا ملى ، على بن نعمان ، حيين بن عبدالله ، احد بن عبدالله بن جبروان جوابن فانك نام مصنفهور بن مدفعة بن مندر في ،عبدالله بن على ملَى احنفول كابنى تالبعث المام حبغ صاوق كى خدرست بي پيشى كالورائ كل خدرست بي پيشى كالورائ كل خدا اور فرايا تفاكه ب " كيانتم نے ال اوگوں كى تمجى كونى اليسى كتاب ريكي ہے؟ " ابوعمروطبيب اعبداللدبن سعيد حفول في ابى كتاب امام رصا كى خدمت

میں سیش کی ۔ اوسس بن عبدالرحمن حضول فے اپنی البعث امام فعکری کے ملاحظیمی پیش ک

اكرسشيعان المحرك انكح بزركول اوراسلامت مالجبن كحمالات وصوند کرمعلوم کیے جابی اور پہملایا ما ئے کہ اسام مین کی نسس سے بقيه وامامول بس سع سرامام من كمنة كنة صحابي تنفي اورسرامام كي عبد میں کتے محابیوں نے کننی کئی کتابیں اکمیں اور حساب لیگایا مائے کہ وہ لوگ کتے مزاد شخص خوں نے ان کتا ہوں کے مصابین دوسروں سے بیان کیے اورامول وفروع دین کے متعلق جو آل محد کی مدیثیس تفیس ان کے حال بنے . مجراس پر عور کیا مائے کہ یہ علوم ایک جماعست سے دوسسری جماعت میں ایک اٹھ سے دومرے اتھ میں نو اسامول کے زوائے سے السلابعدسلمنتقل بون أعانب اندازه بوكا اسس ونت المحير كملين گی کم انگرالمبسین کا خرمسکس قدر متوانز سیے کھرکوئی شک نہ رہے گا۔ كهم اصول و فروع دبن بين جس طريقه برطاعت الهي كرت بي وه طريقه آل بغیر سے حاصل کیا ہوا اہل مبیت دیول سے ماخوذ ہے۔ اس میں دیمی شک کی گغانشس ہو گئ دشہ کی۔ ہاں ہسٹ دھری اور خوا م مخوا ہ کا بغض رکھنے والے یا انتہائی ماہل و کو ون النان شک کرے تو بات دوسری ہے۔ خدا کا شکر ہے کہ اس نے ہم توگوں کی اس طریقے کی طرف ہدایت کی اگر خدا وند مالم ہیں ہا بیت نہ کرتا تو ہم خود ہدا بین حاصل نہیں کرسکتے شخصے .

ش

مكتُوبٌ مُعبر ٤٩

 آپ کے ذریعے کتنی گرانفسند در نفرسند مجھ پر تازل کی ۔ بین کیا عوض کروں کہ آپ نے کتنا بڑا احدان مجھ پر فرایا ۔

> ، جوا<u>ب</u> مکتوب

یں گواہی دینا ہوں کہ اپ قامرہ دین و دانش کے اجدار ہیں .آپ نے شہاب سے زیادہ تابان دکھائی۔ اور محیط بحث و نظر کے بے بہاگو ہر غلطاں نکال لائے۔ بتحفین باریک نگای کو آپ نے پائے معران کا سہنجا دیا معائی کہ ہوں میں آپ کو نگاہ بہنی زعفی . نہ توی خدیات نے آپ کا دامن کھینچا اور نہ تفی اغلامی نے آپ کی داہ دو کی ۔ اختلات نظر نے آپ کو در ہم نکیا آپ تو بہاد سے بھی زیادہ توست بر داشت رکھتے ہیں .آپ کے دل کی و معن لامح و تو بہاد سے بر داشت رکھتے ہیں .آپ کے دل کی و معن لامح و کہ دامن کے دامن کی دامن کے دامن کے دامنے پر کوم گاگھ کے دامن گئے۔



اُن کی نسایِن مکسست ہے

مولائے کونین حبب جنگ بہروان سے فارغ ہو کر کوفر تشریب لائے تو ایک فیسے وبلیغ خطیہ دیاجس کا کچھ اقتباس دیا ما آہے:

بعدحمد خدا وصلوة محرواً لمحرست مایا:

« بیں سب سے بہلا مومن ہوں ، سب سے بہلا سلم سب سے بہلا مواد اور سب سے بہلا روزہ دار اسب سے بہلا روزہ دار اور سب سے اول جہاد کرنے والا ہوں یہ بیں خلائ کا کرت وجبل الترالمتین) اور اسس کی برمہنہ شمست برموں یہ شمست برموں یہ

میں ہی صدیق اکبراور فاروق اعظم امّت ہول اورباب مدینهٔ علم اور راس الحلم ہول میں ہی ہدایت کا جعندا، عدل سے فیصلہ کرنے والا ،اور فتوے دینے والا ، میں شمع دین مبین اور امیرالمؤمنین ہول میں امام المتّقین مدانوصیین اور بعدویہ الدین ہول ۔

میں خدا کا روسٹن سنارہ ہوں اور اس کے دشمنوں -

مے بیے سخنت عذاب ہوں۔

میں ہی وہ ناہیب اکنارسمندر ہوں جوخشک نہیں ہوتا اور میں قاتل المسفرکین اور دہلک الکافرین ہوں مومنوں کافسے یا درس اور نیکو کاروں کا راسست ماسردار، میں ہی اہل جہنم کواس کی طوست ہنکا نے والا اور میں ہی ان یر عذا ہے والا ہوں ۔

نیں دیگر صحف انبیار سلفت میں ایسلیا نام رکھتا ہوں اور توریت میں اور دیا ، عرب میں عسلی اور سے آن میں میں میں اور دیا ہوں میں میرانام ہے جس کو بہجانتا ہے جو بہجانتا ہے ۔ میں ہی وہ صاوق ہوں جس کی بیروی کا خدا نے مکم دیا ہے اور فرمایا ہے کہ سیتوں کے ساتھ ہوما و کیے

عمد بیاایہ السندین استوااتھواانٹہ وکونوا مع الصادفین اے بیان والو اللہ سے ڈرو اور سچوں کے ساتھ ہوجاؤ۔ رسورہ توب

سك ييسوب بمسسركروه

ہیں ہی صالح المومنین ہوں ا ورہیں ہی ونیا وا خرست ہیں خداکی طرحت سے یکار نے والا ہوں ۔

میں ہی مصداق لافتیٰ ، این الفتیٰ اوراخوالفتیٰ ہوں ۔ اور ہیں ہی ممر^وع "ھیک اتیٰ "ہوں ۔

میں ہی وجہ التّٰہ اور حبنہ التّٰہ موں اور ہیں ہی شانِ خداہوں۔ میرے پاس سب علم گردشتہ اور آئندہ ہے تاروز نبامسند میرے سوا امّسند ہیں کوئی اس کا دعی ہونہیں سکتا۔

الله تعالے نے میرے قلب کوروشن اور میرے عمل کوب ند فرایا ہے ۔ الله تعالے نے مجد کو مکمت عطاکی ہے اور اسی سے برورٹ کیا ہے .

جب سے ہیں پر اہوا ہوں جیٹم زدن کے لیے مٹرک مرتکب نہیں ہوا ادر حب سے دنیا میں آیا ہوں کہی خون نہیں کھایا۔ میں نے ہی صناد ہد (بڑے بڑے سردار) عرب اور ان کے شہواروں کو قتل کیا ہے اور ان کے سرکشوں اور بہاوروں کو فناکیا ہے۔

اے لوگو ا پرمچو مجھ سے علم محز ون اللی کی باست اوراس کی اس حکمت کی باست جو مجھ مین وخیرہ کی گئے ہے ۔

اَللّٰهُ مَّمَ صَلِي عَلَىٰ مُحَكِّبَيْدِ وَالْمِمُكِّبَدُ ﴿ كَالْبُ درى مِنْ ے مِنْكِ)

المن حنب الله الله كالبيلويين الترك قريب بوا .

A _